

प्रकाशक—

आगम अनुयोग प्रकाशन

पोस्ट बॉक्स ११४१

दिल्ली-७

प्रथमावृत्ति

वीर सदन २४६२

विजय सदन २०१३

ईश्वर मठ १६६९

मूल्य २५ रु०

मुद्रक —

उद्योगशाला प्रग.

हिमालय प्रिन्टर्स-६

समर्पण

जैनाग्रमों के
अध्ययन में
अभिरुचि रखनेवाले
जिज्ञासु, उनो को

-- मुनि कमल

विज्ञप्ति

पूव प्रकाशित सूचना क अनुसार अनुयोग शब्द सूची मी पुस्तक म दान की याचना थी किन्तु पृष्ठ मय्या अधिक् हा जान से अनुयोग शब्द सूची म क निपय परिगिष्ट पृथक् पुस्तिका के रूप म प्रकाशित करन की याचना है । यह पुस्तिका कवन जैनागम निर्देशिका क ग्रन्थ को ही दान का नियम है अन अय मरजन कवन इस पुस्तिका क लिए आवदन पत्र न भेजें ।

आगम अनुयोग—ग्रन्थराज का प्रकाशन कार्य चल रहा है निरट मविध्य म इसका प्रथम विभाग चरणानुयोग स्वाध्याय क लिए उपरुप हो सकया ।

श्री गानिभाई बनमाना गर के उदारता पूण मह्याग म यत् विनालबाद पुस्तक इस रूप मे इनन अल्प समय म आपक करकमला म पट्टनामक हैं इसकलिए हम उनके चिरञ्जन है ।

—मत्री

जैनागम-निर्देशिका

आगम-सूची

११ अंग आगम	पृ० संख्या	२६. नन्दीसूत्र	पृ० संख्या
१. आचारांग	१	२७. अनुयोगद्वार	८३२
२. सूत्रकृतांग	६३		८३१
३. स्थानांग	६७	४ छेद आगम	
४. समवायांग	२०१	२८. वृहत्कल्प	८४५
५. भगवतीसूत्र	२६१	२९. जीनकल्प	८५७
६. ज्ञाताधर्मकथा	४३१	३०. व्यवहार	८५६
७. उपामकदशा	४६७	३१. दशाश्रुतरांघ्र	८७३
८. अन्तकृद्दशा	४८३	३२. निशीथ	८७७
९. अनुरोत्तपपातिकदशा	४६७	३३. आवश्यक	७६३
१०. प्रश्नव्याकरण	५०३	३४. कल्पसूत्र	८६६
११. विपाक	५१३	१० प्रकीर्णक	
१२ उपांग आगम		३५. चतुष्करण	प्रकीर्णक ६१६
१२. औपपातिक	५२७	३६. आतुर-प्रत्याख्यान	... ६१६
१३. राजप्रदनीय	५४५	३७. महाप्रत्याख्यान	... ६२१
१४. जीवाभिगम	५६५	३८. भवतपरिज्ञा	... ६२४
१५. प्रज्ञापना	६२३	३९. तन्दुलवैचारिक	... ६२७
१६. जम्बूद्वीपप्रजप्ति	६७३	४०. संस्तारक	... ६३०
१७. चन्द्रप्रजप्ति.	७२६	४१. गच्छाचार	... ६३१
१८. सूर्यप्रजप्ति	७२६	४२. गणिविद्या	... ६३३
१९-२३ निरयाचनिकादि	७४५	४३. देवेन्द्रस्तव	... ६३५
२ मूल आगम		४४. मरणसमाधि	... ६३८
२४. दशवैकालिक	७५७	१ निर्युक्ति आगम	
२५. उत्तराध्ययन	७६७	४५. पिण्ड-निर्युक्ति	६४१

विषय-निर्देशन में प्रयुक्त आगमों की प्रतियाँ

१ आचारान्त —	आयमोदय समिति मूल
२ मूलदर्शन	जैनाचार्य श्री अनादिरत्नाक्ष जी स० ६ अगस्त १९३६ में सम्पादित
३ स्थानान्त	मुनि श्री बल्लभविनयजी सभादिन
४ समवायान्त	जैनधर्म प्रचारक सभा भावनगर
५ भगवती मूल	५० बेकरदास जी कीर्ती सम्पादित
६ ज्ञानाधर्म कथा	आयमोदय समिति मूल
७ उपवासक दशा	" "
८ अमृतदृशा	" "
९ अनुत्तरावशान्तिक	" "
१० प्रवक्तृवाक्य	" "
११ विराट	" "
१२ औपनिषदिक	" "
१३ रावप्रशनीय	" "
१४ जीवाभिगम	" "
१५ प्रजापिता	५० अमरानन्दस्य दूर्वाचन्द्र सम्पादित
१६ जम्बूद्वीप प्रशस्ति	आयमोदय समिति मूल
१७ चन्द्रप्रशस्ति — सूर्यप्रशस्ति	" "
१८ निरुपावहिकादि	" "
१९ दशर्वकात्रिक	जैनाचार्य श्री आचार्यजी जी स० सम्पादित

२१ नन्दीसूत्र	पूज्य श्री हस्तिमल जी म० संशोधित
२२ अनुयोग द्वार	जैनाचार्य श्री आत्माराम जी म० संपादित
२३ व्यवहार सूत्र	पूज्य श्री अमोलख ऋषि जी म०
२४ बृहत्कल्प सूत्र	डा० जीवराज घेलाभाई द्रोशी संपादित
२५ दशा श्रुतस्कंध	जैनाचार्य श्री आत्माराम जी म० संपादित
२६ निशीथ	मुनि श्री जिनविजय जी संपादित
२७ जीतकल्प	मुनि श्री पुण्यविजय जी म० संपादित
२८ दस प्रकीर्णक	आगमोदय समिति, सुरत
२९ विण्डनिर्युक्ति	गणित्वर्य श्री हंससागर जी म० संपादित
३० प्रवचन किरणावली	आचार्य विजयपद्म जी म० लिखित
३१ अभिधान राजेन्द्र कोश	
३२ अर्धमागधी कोश	
३३ पाइयसद् महणव	



प्रवचन-प्रभावना

श्रमूत्य आगम-निधि की सुरक्षा

वीर-निर्वाण के पश्चात् एक हजार वर्ष की अवधि में एक-एक युग लम्बे तीन दुर्मिक्ष आये और गये। इन दुर्मिक्षों में निर्ग्रन्थ श्रमणों से आगम-वाचना, पृच्छना-परिवर्तना और अनुप्रेक्षा न हो सकी। इसलिए क्रमशः प्रत्येक दुर्मिक्ष के अन्त में पाटलीपुत्र, मथुरा और वलभी में म० नन्दबाहु स्कंदिलाचार्य और आचार्य नागार्जुन की अध्यक्षता में आगमों की सुरक्षा के लिए श्रमण संघ ने वाचनाओं का आयोजन किया।^१ यहाँ तक श्रुतपरम्परा प्रचलित रही।^२

वीर-निर्वाण के ६८० वर्ष पश्चात् वलभी में देवधि गणि क्षमा श्रमण की अध्यक्षता में श्रमण-संघ ने आगमों को लिपिवद्ध किया।^३ लिखना और पुस्तक रखना निर्ग्रन्थ श्रमण के लिए यद्यपि सर्वथा निषिद्ध था, किन्तु देवधिगणि ने जब स्मृति-दीर्घत्व का स्वयं अनुभव किया तो आगमों की सुरक्षा के लिए संघ के समक्ष पुस्तक लेखन के अपवाद का नव विधान किया। आगमों के लिपिवद्ध होने के पश्चात् १४०० वर्ष की अवधि में दुष्काल के कुचक्र ने जैन संघ से अनेक आगम छीन

१ (क) पाटलीपुत्र वाचना वीर निर्वाण के १६० वर्ष पश्चात्

(ख) माथुरी वाचना वीर निर्वाण के ८२७ वर्ष पश्चात्

(ग) वालभी वाचना माथुरी वाचना के समकाल हुई है।

२ कुछ विद्वानों का मत है कि—माथुरी और वालभी वाचनाओं में आगम लिपिवद्ध हो गये थे।

३ वीर निर्वाण के ६६३ वर्ष पश्चात् वलभी में देवधि गणि ने आगम और प्रकीर्णक लिपिवद्ध करवाए। यह भी एक मान्यता है।

लिए । आचाराग का सातवां महत्परिज्ञा अध्ययन और दमर्मा प्रश्न व्याकरण अग पुनः टीकाकारों के पुनः म भी उपनयन नहीं थे । आग्यों के लेखनकाल में संकलित नदीमुख में जिन कालिक और उक्तकालिक सूत्रों की एक सम्बन्धी सूची अङ्कित है उनमें से अनेक आगम जनमान में अनुपलब्ध हैं ^१ ये आगम कद और कने अदृश्य हुए । इस सम्बन्ध में पुनः विवरण प्रस्तुत करने का माधन हमारे पास नहीं है ।

प्राकृतिक विषयों से जिन-जानी की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अधिष्ठापक देव-देवियों का है । चित्तु ह्मात-काल के प्रभाव से कहिए या हमारे दुर्भाग्य से कहिए वे भी आगम-सुरक्षा से रुबसा उदासीन रहे । फिर भी जेतनमेर पाटन आदि के विज्ञान ज्ञान मण्डार में प्रचुर अभूष्य आगम निधि सुरक्षित है । जिनजानी प्रसी जिज्ञासु जन उनक सहायकों एवं सरलकों के पदव आभारी रहेंगे ।

स्वाध्याय स्थापना

आगम निधि की सुरक्षा के लिए स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाना अत्यावश्यक है और इसके लिए एक व्यापक कार्यक्रम की आवश्यकता है । इस कार्यक्रम का उद्देश्य सधताधारण के लिए जनजातों का परस्पर समझाना तथा जन संधारण की जनजातों के स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करना है । इस कार्यक्रम के तीन प्रमुख अव हैं

१ अनुविध्य सध म जनजातों के स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ाया देना ।

२ जनजातों का वृत्तान्तिक पद्धति से सोचप्रिय प्रकाशन ।

१ स्थानाग म वगिन २ न्यायकर्म के स्वयं में उल्लेख प्रत्यक्षारण का स्वयं मध्या भिन्न है ।

२ व-प न्याय (मुद्रित दगा आदि अनेक प्रकीर्णक दण्ड ।

३ विश्व की प्रमुख भाषाओं में जैनग्रन्थों का प्रकाशन ।

और

४ विश्व के शोध संस्थानों को जैन आगमों का उपहार ।

स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाना

(क) प्रत्येक धर्म स्थान में एक आगम पुस्तकालय स्थापित कराना । यह धर्म-स्थान मन्दिर हो या उपाश्रय, स्थानक हो या शोधशाला । प्रत्येक क्षेत्र के स्थानीय संघ को आगम-स्वाध्याय के लिए उत्साहित करना । स्वाध्याय मण्डल की स्थापना करना । दर्यभर में समस्त आगमों का पारायण करनेवाले स्वाध्यायशील श्रमणोपासक को अ० भा० जैन संघ द्वारा सम्मानित या पुरस्कृत किया जाना ।

(ख) धर्मकथा करनेवाले श्रमणवर्ग या श्रमणोपासक वर्ग को जैन-ग्रन्थों का विज्ञान ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रबल प्रेरणा दी जाय । आगम ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए वे स्वयं उत्सुक बनें, ऐसा वातावरण बनाया जाय । प्रत्येक धर्म-कथक के लिए प्रति वर्ष किसी एक आगमिक विषय पर शोध निबन्ध लिखना अनिवार्य कर दिया जाय । जो धर्म कथक सर्वश्रेष्ठ महत्त्वपूर्ण निबन्ध लिखे उसे अ० भा० जैन संघ द्वारा सम्मानित किया जाय ।

(ग) आगम-पारायण का एक वार्षिक कार्यक्रम बनाया जाय और पारायण के माहात्म्य का इतना अधिक व्यापक विचार किया जाय कि— सर्वत्र वार्षिक पारायण प्रारम्भ हो जाय ।

जैनग्रन्थों के लोकप्रिय प्रकाशन

आगम प्रकाशन का कार्य वैज्ञानिक पद्धति से होना आवश्यक है ।

१ बृद्धों व अल्प-पठित स्वाध्याय प्रेमियों को बड़े सुवाच्य अक्षरों में प्रकाशित आगम प्रतियाँ प्रिय होती हैं ।

२ युवा व अपवयस्क स्वाध्यायशील व्यक्तियों को सूक्ष्माक्षरी में सघकाय संस्करण भिचिकर होते हैं ।

३ विद्वद्गण ■ लिए प्रौढ़ साहित्यिक सुनलित सरल भाषा में भागमों का अनुवाद प्रभावोत्पादक होता है ।

४ अल्प पठित पुरुष एवं महिलाओं के लिए सरल भाषा में भागमों का अनुवाद अधिक रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होता है ।

इस प्रकार भागमों को लोकप्रिय बनाने के लिए विविध प्रकार के संस्करणों का प्रकाशन आवश्यक है ।

विश्व के विद्यालयों को अनागमो का उपहार

विश्व की साहित्यिक भाषाओं में अनुवाद एवं मुद्रित अनागमो का अति शुद्ध संस्करण विश्व के विश्वविद्यालयों में पढ़ाना तथा आगमिक विषयों पर शोध निबंध लिखने वाले जन जनैतर बंधुओं को समान भाव से सम्मानित करना या पुरस्कृत करना । इस प्रकार भारतीय जन सच प्रवचन की प्रभावना करके अमूल्य आगम निधि की सुरक्षा करने में समर्थ हो सकेगा ।

अनागम निदेशिका में पतालीस भागमो का विषय निर्देशन

उपलब्ध पतालीस भागमों का अनागम निदेशिका में उपयोग किया है पत्तीस भागमो के अतिरिक्त तेरह भागमों में स्थानकथासी परम्परा से मौखिक मतभेद रखनेवाला कोई सदस्य नहीं है । यह निश्चय अनागम निदेशिका के आद्योवात अध्ययन से पाठक स्वयं कर सकये ।

अनागमो की रचना शैली

अनागमों की रचनाशैली चार प्रकार की है—

१ सवादात्मक शैली—

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से प्रश्न करता है और वह उसका उत्तर

देता है । यथा— भगवान महावीर और गौतम का संवाद । केशी गौतम का संवाद । राजा प्रदेशी और केशी मुनि का संवाद । राजा श्रेणिक और अनायी निर्ग्रन्थ का संवाद आदि ।

२ वर्णनात्मक शैली—

किसी श्रमण या श्रमणी तथा श्रमणोपासक या श्रमणोपासिका के जीवन का वर्णन । यथा—दस उपासकों का तथा अन्तकृत आत्माओं का वर्णन अथवा ऐसे अन्य सभी वर्णन ।

३ उपदेशात्मक शैली—

साधक या साधिका को किसी प्रकार का उपदेश देना । यथा—

जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ ।

जाविंदिया न हायंति, ताव धम्म समायरे ॥

४ विधि-निषेधात्मक शैली—

साधक के लिए किसी प्रकार का विधान या निषेध करना । यथा—

कप्पइ निगंथाणं आउंचण-पट्टगं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा ।
नो कप्पइ

निगंथीणं आउंचण-पट्टगं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा ।

जैनागमों के प्रमुख विषय—

१ आचार-सम्बन्धी विधि-निषेध ।

२ आचार-सम्बन्धी उपदेश ।

३ आचार-सम्बन्धी औत्सर्गिक और आपवादिक नियमों का विधान ।

४ प्रापदिचत्त विधान ।

५ भूगोल-खगोल वर्णन ।

६ तत्त्व-निरूपण ।

७ जैनधर्मानुयायी साधकों के जीवन ।

८ कनिष्ठ कथक ।

९ गुणागुण कमकर्मों का बचन ।

विषय निर्देशन में बाधाएँ

१ सत्र प्रथम आचारारण के प्रथम धुनस्तम्भ की समस्या सामने आई ।

यह समस्या थी सूत्र सभ्या की—

मेरे सामने आचारारण की इनकी प्रतियाँ हैं —

क जयन्त श० गुणिन सभ्यादिन प्रति देवनागरी लिपि सत्करण ।

ख प्रो० रघुजी भाई देवराज सभ्यादिन द्वितीय सत्करण ।

ग आगमोदय स मति सूरत ।

घ आचार्य श्री आचारारण श्री महाराज सभ्या देव ।

इन सब प्रतियाँ मे प्रथम धुनस्तम्भ के सूत्रों की सभ्या भिन्न भिन्न हैं अतः प्रत्येक सूत्र का आदि और अन्त समान नहीं है । (कम प्रति के सूत्रों का नहीं है—यह विषय करना सामान्यतया कठिन है । अनामक निम्न लिखित प्रथम धुनस्तम्भ की सूत्र सभ्या में एककरता नहीं है । अर्थात्—एक किसी प्रति के आधार सूत्र सभ्या नहीं दी है । एक सूत्रात्मक भिन्न भिन्न विषयों का उद्गारण सामान्यतया द्वारा किया है ।

२ सूत्रात्मक दण्डवत्तित उत्तराचरण प्रति में अनेक और भिन्न बाधाएँ ऐसी हैं जिनमें एक से अधिक विषय हैं । उन सब विषयों का निर्णय सम्मान्य द्वारा किया गया है ।

त्रित सभ्यवन का आलोचन एक ही विषय है उसका मैंने भी एक ही विषय किया है । यथा—सूत्रात्मक अ० ४ ३ ६ का विषय । मुख्य विषय का शीर्षक १२ प्वाइंट जोनों अंक में दिया है और उसके अन्त में विषय १२ प्वाइंट प्वाइंट में दिये हैं । यह कम अनामक निर्णय मे सच है ।

३ समानता के सूत्रों आगमोदय स मति सूरत की प्रति के अनुसार दिये हैं । इन सूत्रों में अनेक सूत्र ऐसे हैं जिनके अन्तर्गत अनेक सूत्र हैं ।

टीकाकार भ यत्र-तत्र इन सूत्रों की संख्या का निर्देश स्वयं करते हैं । टीकाकार सम्मत सूत्र-संख्या सम्पूर्ण स्थानांग की जानने के लिए बहुत बड़े उपक्रम की आवश्यकता थी, किन्तु मैं ऐसा न कर सका । फिर भी विषय निर्देशन में बहुत सावधानी बरती है । जहाँ तक हो सका है किसी विषय को छोड़ा नहीं है ।

४. समवायांग के सूत्रांक 'जैनधर्म प्रसारक समा भावनगर' से प्रकाशित प्रति के दिये हैं । इस प्रति में प्रत्येक समवाय के सूत्रांक क्रमशः दिये हैं । किन्तु टीकाकार प्रत्येक समवाय में कई सूत्र मानते हैं । जैनागम-निर्देशिका में प्रत्येक सूत्र का विषय निर्देशन किया है ।

५. भगवती सूत्र की एकमात्र प्रति पं० बेचरदास जी सम्पादित मेरे सामने है । अब तक प्रकाशित भगवती सूत्र की प्रतियों में सर्वशुद्ध यही संस्करण है । इसके प्रथम भाग में दो शतक हैं, प्रथम शतक की प्रश्नोत्तर संख्या ३२६ है और द्वितीय शतक की प्रश्नोत्तर संख्या ७६ है । तृतीय शतक से प्रत्येक उद्देशक की प्रश्नोत्तर संख्या दी गई है । इसलिए एकरूपता नहीं है । वर्णनात्मक सूत्रों के सूत्रांक और प्रश्नोत्तरांक भिन्न-भिन्न नहीं दिए हैं अतः यह पता नहीं चलता कि वास्तव में इस उद्देशक में प्रश्नोत्तर कितने हैं और सूत्र कितने हैं । इस प्रति में जहाँ-जाव-एवं-जहाँ आदि से संक्षिप्त पाठ दिए हैं उनमें प्रश्नांक या सूत्रांक कितने होते हैं । यह अंकित नहीं है इसलिए प्रश्नोत्तरों की निश्चित संख्या जानना सरल नहीं है ।

विषय निर्देशन में मैंने इसी प्रति का उपयोग किया है किन्तु प्रश्नोत्तरांकों की एकरूपता नहीं रह सकी ।

६. विषय-निर्देशन के लिए जिन प्रतियों का उपयोग किया है उनकी सूची अग्यत्र दी है । अनुवाद एवं टीका के शुद्ध संस्करण आगमों के अब तक अप्राप्य हैं । यही एक बहुत बड़ी कठिनाई विषय-निर्देशन में रही है ।

चोरासी आगम—

आगमों की संख्या के सम्बन्ध में तीन प्रमुख मायताभेद हैं —

१ ८४ आगम

२ ४५ आगम

३ ३२ आगम २६ उत्का लक्ष १० कालिक १२ भव—७१

७२ आश्रयक^१

७३ अतद्वृत्ता भव्य वाचना का

७४ प्रत्यक्षवाचन

७५ अनुत्तरोपपातिक वृत्ता

७६ वाच्य वृत्ता

७७ द्विगद्वि वृत्ता

७८ दीप्य वृत्ता

७९ स्वप्न भावना

८० चारण भावना

८१ तेजोनिस्तग

८२ आ गदिय भावना

८३ दृष्टिबिध भावना^२

८४ कल्याण कल विपाक के १५ अध्ययन

पाप कल विपाक के १५ अध्ययन^३

१ ये ७२ नाम तन्त्री सूत्र में उल्लेख हैं ।

२ ये ६ नाम स्थानाग सूत्र में हैं ।

३ ये ५ नाम व्यवहार सूत्र में हैं ।

४ यह पंचपत्रक समवाय में है ।

पैतालीस आगम—

१० प्रकीर्णक

११ अंग

१२ उपांग

६ छेद सूत्र—१. व्यवहार । २. बृहत्कल्प । ३. जीतकल्प ४. निशीथ ।
५. महानिशीथ । ६. दशा श्रुतस्कन्ध ।

६ मूल सूत्र—१. दशवैकालिक । २. उत्तराध्ययन । ३. नन्दीसूत्र ।
४. अनुयोग द्वार । ५. आवश्यक निर्युक्ति । ६. पिण्ड-निर्युक्ति ।

४५

वत्तीस आगम—

११ अंग

१२ उपांग

४ मूल सूत्र—१. दशवैकालिक । २. उत्तराध्ययन । ३. नन्दीसूत्र ।
४. अनुयोग द्वार ।

४ छेद सूत्र—१. व्यवहार । २. बृहत्कल्प । ३. निशीथ । ४. दशा
श्रुतस्कन्ध ।

३१

३२ वां आवश्यक

जैनागम निर्देशिका के प्रकाशन की पृष्ठभूमि

विश्व के भाषा-साहित्य में प्राकृत भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है, प्राकृत भाषा साहित्य के प्रकाशन की स्थिति ऐसी नहीं है और जैनागमों के प्रकाशन की स्थिति देखकर तो मन में ऐसा लगता है कि समाज का साक्षर एवं सम्पन्न वर्ग प्रवचन प्रभावना के प्रमुख अंग आगम साहित्य को प्रमुख न मानने की भयंकर भूल कर रहा है, क्योंकि भगवान महावीर की विश्वकल्याणकारिणी वाणी का प्रचार व प्रसार जैनागमों के विश्व-

व्यापी प्रचार व प्रसार से ही सम्भव है ।

क जर्मन आदि विदेशों के प्रमुख विश्वविद्यालयों में प्राकृत भाषाओं का अध्ययन हो रहा है ।

ख भारत के कतिपय विश्वविद्यालयों में प्राकृत भाषाओं का अध्ययन हो रहा है ।

ग अनेक भारतीय विद्वान् जनागमों के अध्ययन के लिए उत्सुक हैं ।

घ अनेक भारतीय छात्र जनागमों के अभिलिखित विषयों पर शोध निबंध लिखना चाहते हैं । किन्तु जनागमों का प्राथमिक परिचय प्राप्त करने के लिए कोई पुस्तक सुलभ नहीं है ।

बहुत दूरी पहले गुजराती भाषा में 'प्रबचन किरणावली' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी उसका संकलन प्राचीन पद्धति से हुआ था प्रत्येक गाथा या सूत्र का विषय क्या है यह उसमें नहीं लिखा गया है अतः हिन्दी भाषा भाषी जनता के हित के लिए जनागम विवशिका के संकलन का आयोजन किया गया है ।

अल्प धारणा शक्ति या अल्प आगम शक्ति

ह्राम काल (अवसर्पिणी काल) के प्रभाव से मानव की धारणा शक्ति का उत्तरोत्तर ह्राम होने लगा अतः जनागमों का लेखन प्रारम्भ हुआ और इस मुश्किल कला के युग में जनागमों का मुश्किल हो रहा है । इस ऐतिहासिक घटनाक्रम में जनागमों के लेखन का हेतु धारणा शक्ति का अल्प होना बताया गया है यह पक्षों तक संगत है यह शोध का विषय है । अतीत में बुद्धि के कारण बहुत लम्बे समय तक भ्रमण-भ्रमणियाँ जनागमों का पारायण न कर सके इसलिये उनका आगम-आन क्षुप्त होने लगा या यह ऐतिहासिक सत्य है । किन्तु उस समय अति की विस्मृति का कारण बुद्धि था—अल्प धारणा शक्ति नहीं । यद्यपि काल का प्रभाव अतिशय है और स्मृति शोक्ष्य की घटना के पीछे भी कुछ तथ्य अवश्य हैं फिर भी धारणा शक्ति का ह्रास इतना नहीं हुआ है कि—

बिना पुस्तक के हम आगम-ज्ञान को सुस्थिर न रख सकें ।

राजस्थानी भाषा के बृहत् काव्य बगड़ावत, तेजाजी आदि वर्तमान में भी राजस्थान के अनेक कृषकों को कण्ठस्थ हैं, वे उन काव्यों का यदा-कदा पारायण भी करते हैं, यद्यपि उन्हें अक्षर-ज्ञान नहीं है, फिर भी उनकी धारणा-शक्ति प्रबल है । इसी प्रकार राजस्थान की देवियाँ अपने सामाजिक गीतों को सदा कण्ठस्थ रखती हैं । वे सामाजिक प्रसंगों पर उनका पारायण करती रहती हैं । राजस्थानी भाषा के ये बृहत् काव्य और ये गीत अब तक लिपिबद्ध नहीं हुए हैं । कृषकों और स्त्रियों में अब तक भी श्रुत-परम्परा चल रही है । कृषकों और स्त्रियों से तो हमारे पूज्य संयमी श्रमण-श्रमणियों की धारणा-शक्ति निर्बल नहीं होनी चाहिए ।

हमारे पूज्य श्रमण श्रमणियों में आज स्मरण-शक्ति का चमत्कार दिखानेवाले कई शतावधानी और कई सहस्रावधानी हैं । इसलिए अतीत के समान आज भी जैनागमों का ज्ञान कण्ठस्थ करने की शक्ति हमारे पूज्य श्रमण-श्रमणियों में विद्यमान है । यदि आगम-भक्ति अधिक हो तो अतीत के स्वर्ण युग की पुनरावृत्ति असम्भव नहीं है ।

पुस्तक रखना अपवाद मार्ग है

पुस्तक परिग्रह है एवं असंयम का हेतु है ।^१ यह असंदिग्ध है । पर अनेक शताब्दियों से हमारे ऐसे संस्कार बन गए हैं कि—पुस्तक हमारे ज्ञान का साधन है । बिना पुस्तक के हम ज्ञानोपार्जन करने में असमर्थ हैं । इसलिए पुस्तक हमारी साधना का एक प्रमुख अंग बन गया है । अतीत में आचार्यों ने पुस्तक या लेखन अपवाद रूप में स्वीकार किया था वह अपवाद रूप आज प्रायः समाप्त हो गया है, यह उचित नहीं है । पुस्तक ज्ञान का साधन है और इस युग में बहुश्रुत होने के लिए पुस्तकों

का पठन-पाठन अनिवार्य है । यह मानने में भी किसी को कोई आपत्ति नहीं है । फिर भी पुस्तक का विवेकपूर्ण सीमित उपयोग ही उचित है । धम्मपोपासक वर्ग इस सम्बन्ध में अपने उत्तरदायित्व को समझे और निभाए तो पुस्तक का अपवाद रूप में उपयोग आज भी सम्भव है ।

पुस्तक लेखन और मुद्रण का विरोध

जैनगम जब सर्व प्रथम लिखे गए उस समय लिखने का घोर विरोध हुआ था । विरोध करनेवाला समयनिष्ठ सबधच्छ धम्मजर्ण था । अत आगम लेखन भी अपवाद रूप में ही स्वीकार किया गया और पुस्तक लेखन एवं पुस्तक के रखने के प्रायश्चित्त का सब विधान^१ हुआ । विरोध करनेवाले धम्मजर्ण की लेखन के विरोध में दी हुई युक्तियाँ^२ अहिंसा की दृष्टि से तर्कालम हैं । उनका जवाब न किसी के पास पड़े या और न आज ही है । पुन मे स्वर बदला और पुस्तक लिखने की महिमा^३

१ एक अरि लिखने या एक बार पुस्तक धारण का तथा एक पुस्तक रखने का बार अनु प्रायश्चित्त का विधान है ।

२ पुस्तक पचन में दी हुई युक्तियाँ विचारणीय हैं—

(क) जाल में पसा हुआ गुग्गु या कषा

(ख) जाल में पसा हुई मछली

(ग) घासी (जिन् आदि पीठन या प ड) में पसा हुआ निड कीट

(घ) बर्तन में पिटा हुआ घासी

(ङ) रूप आदि नरक पदार्थों में पसा हुआ घासी

(च) नर आदि जिन्म पदार्थों में पसा हुआ घासी

जैनगम में एक जाल में लिख पुस्तक रखीन में पसा हुआ घासी रिमो प्रसार उप नग मरना ।

न न नग दानमानुर्वि उ न भुजना नैव जटम्भभासम् ।

न रा न्ना उडिधि नना न य पण्डनीट विरस्य गामम् ॥

गाई गई। एक दिन जो असंघम का हेतु माना गया था। वही संघम' का हेतु मान लिया गया। फिर भी पुस्तक अपवाद रूप में ही ग्रहण किया गया—व्योंकि सभी श्रमण-श्रमणियों की समान धारणा-शक्ति नहीं होती। कुछ अल्पधारणा शक्तिवाले भी होते हैं। उनके लिए पुस्तक रखना उपयोगी था और आज भी उपयोगी है।

लेखन का स्थान मुद्रण ने लिया तो जैनागमों का भी मुद्रण होने लगा और मुद्रण का भी घोर विरोध हुआ।

विरोध करनेवालों ने कहा—

निर्ग्रन्थ प्रवचन के विरोधी मुद्रित प्रतियाँ प्राप्त करके छिद्रान्वेषण करेंगे और यत्र तत्र पारिभाषिक शब्दों का मनमाना अर्थ करके भ्रान्तियाँ पैदा करेंगे। अपवाद विधानों का रहस्य समझे बिना श्रमण संस्कृति का उपहास करेंगे। किन्तु इन तर्कों में कोई तथ्य नहीं है। आगम लेखन काल से कई शताब्दी पूर्व सात निम्हूच हो गये थे। ये सच प्रवचन-निम्हूच थे। प्रवचन उड़टाह की परिकल्पना भी बहुत पहले हो चुकी थी। ऐसी स्थिति में प्रकाशन का विरोध करके प्रकाशन से होनेवाले असाधारण लाभ से जन साधारण को वंचित रखना सर्वथा अनुचित है।

‘आगम-अभुयोग’ ग्रन्थराज के प्रकाशन में—

सांडेराव के स्थानकवासी संघ का महत्वपूर्ण योगदान

सांडेराव ऐतिहासिक नगर^१ है। बांकलीवास नगरके एक मोहल्ले का नाम है, स्थानकवासी जैनों की अधिक संख्या इसी मोहल्ले

१ उवगरण मंजमो पांत्याणमु अमंजमो, वज्जणं तु मंजमो।
कालंपट्टच्च चरण-कण्ठं अर्वाञ्छित्तिनिमित्तं गेहं न स्म मंजमो भवति ॥

२ सैंडेर गच्छ की उत्पत्ति ने उन नगर का सर्वथ गद्दा है, ऐसे ऐतिहासिक उल्लेख हैं। यहाँ ६५० जैनों के ४०० घर हैं, दो जैन मन्दिर हैं, दो जैन स्थानक हैं, राजकीय चिकित्सालय और प्राथमिक शाला है।

में है और वे सभी पोटवाल हैं । बडेवांस में भी स्थानकवासी जनों के कुछ घर हैं । उनमें कुछ घर ओसवाल हैं और कुछ घर बोरवाल हैं ।

स्वर्गीय स्वामीजी श्री दसतावरमलजी महाराज की आत्मव्य-
साधना का केन्द्र-साडेराव नगर ।

आप मेरे स्वर्गीय गुरुदेव श्री प्रताप च इजी म० सा० के गुरुदेव ॥
गुरुभाता थे । आपका आत्म ज्ञान एवं आत्मबल प्रसिद्ध था । आपने
सविन्य शांता के अनेक मुनियों व साध्वियों को ज्ञान दान दिया था ।
आपके आत्मव्य जीवन की अनेक दिव्य चमत्कारी घटनाएँ कुछ पुरख
सुनाया करते हैं । आपका जैन जनेतर जनतापर समान प्रभाव था ।
बम्बई क्षेत्र की पावन बरनेवाले प्रथम स्थानकवासी भ्रमण आप ही थे ।
पञ्जाब के नामा पटियाला क्षेत्र भी आपके चरण रज से पावन हुए थे
सारा गोकुल प्राप्त आपकी प्रमुख विहार भूमि रहा, आपका स्वर्गवास
इसी ऐतिहासिक नगर में हुआ ।

साडेरावने स्वामीजी महाराज के प्रमुख उपासक—

१ सा० धनन्धमल जी हीराजी पुनमिया बडावास

आपके अपने एक मठ० विठ्ठल पुत्र की स्मृति से आकलीवास से शिवालय
धर्म स्थानक का निर्माण करवाया, आपके सुपुत्र श्री ज्ञानमलजी और श्री
रात्रमलजी विद्यमान हैं दोनों माद्यों का धर्म प्रथम व गुरुभक्ति प्रशस्तगीय
है, एक निजी मोहरे का सावजनिक के हित में उपयोग करके दोनों भाई
पुण्योवाजन कर रहे हैं ।

२ सा० पोमानजी दत्तचन्दजी बाबलीवास

आप स्वामीजी महाराज के वरम भक्त, सरल स्वाभावी एवं परोप-
कारी आदक थे । आपका बहुत बड़ा परिवार हम समय विद्यमान है, जो
चोवटिया परिवार के नाम से प्रसिद्ध है, आपके सारे परिवार की धर्म पर
दृढ़ धडा है ।

३. शा, प्रतापजी कपूरजी, बांकलीवारा,

आप दृढ़धर्मी एवं विवेकी श्रावक थे, आपके चार पुत्रों में से तीन पुत्र इस समय विद्यमान हैं, बड़े पुत्र, श्री हिम्मतमल जी आपके पहले ही स्वर्गस्थ हो गये, आपके चारों पुत्रों का परिवार धर्मप्रेमी एवं सेवाभावी है ।

मेरे श्रमण-जीवन की जन्मभूमि,

आज से तीन युग पूर्व मेरे श्रमण-जीवन का जन्म इसी नगर में चतुर्विध संघ के समक्ष हुआ था, अतः यहाँ के सभी धार्मिक जन मेरे प्रति अगाध स्नेह एवं पूज्य भाव रखते हैं । मेरी शिक्षा-दीक्षा में यहाँ का संघ प्रमुख रहा है ।

सार्वजनिक हित के लिए शिक्षण-शाला की स्थापना

स्वर्गीय गुरुदेव श्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर संघ ने उदारता दिखाई और राजस्थान शिक्षा विभाग को बहुत बड़ी अर्थराशि अर्पित कर प्राथमिक शाला प्रारम्भ करवाई । कुछ समय से शिक्षकवर्ग की माध्यमिक शाला की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी, किन्तु स्थान की कमी थी, इसके लिए स्थानीय जैन दानवीरों ने उदारता दिखाकर चार विशाल कमरे बनवा दिए हैं, इनकी उदारता प्रशंसनीय है ।

‘आगम अनुयोग’ प्रकाशन की स्थापना,

पैंतालीस आगमों को चार अनुयोगों में विभक्त करना और प्रत्येक विषय का अनुयोगानुसार वर्गीकरण करना समय-साध्य एवं श्रमसाध्य रहा, संकलन कार्य में ही कई वर्ष बीत गये । श्रद्धेय कवि श्री तथा पं० वलसुख माई मालवणिया से दिशा निर्देशन मिला, और धैर्यपूर्वक कार्यरत रहने की प्रेरणा मिली । गणितानुयोग का अनुवाद डा० मोहनसिंहजी महता ने किया, चरणानुयोग का अनुवाद पं० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने किया, इस प्रकार कुछ कार्य-भार हल्का तो हुआ, किन्तु प्रकाशन पर्यन्त सारा

उत्तरदायित्व भुग निमाना था इसलिए मन हल्का नग हो पा रहा था ।

चारों अनुयोगों का प्रकाशन का कार्य सामान्य तथा बहुत बड़ी अथ-
रा न इसके लिए ज्योतिष भी दो वर्ष पत्र न सहित संपन्न पड़ा रहा ।
देहन्ती आनेपर धमरनेही मन्त्रन ताराचन्द प्रतापजी दशनाथ भाये आगम
अनुयोग का प्रकाशन का सबकुछ में विचार विनिमय हुआ फलस्वरूप
आगम अनुयोग प्रकाशन की स्थापना हुई । आपका सहयोग प्रारम्भ से
ही था अनुवाक काय भी आपकी ही प्रेरणा से सम्पन्न हुआ था इसलिए
प्रकाशन काय सम्पन्न करवाने की आपके मन में बड़ी लगन है आपके
उत्साह की देखकर डा० हिममतमल प्रमचन्दजी मेघराज जसराजजी
पूलचन्द चुम्नोत्तल जी निहामचन्द कपूरजी अश्वि ने प्रकाशन व्यय के
लिए विपुल वितरानि का सहज करवाने में तथा प्रकाशन काय में पूरा
सहयोग देने की दृढ़ प्रतिज्ञा की है आप सब भ० महावीर के प्रयत्नों
की प्रभावना करनेवाले सज्जन हैं ।

तपस्वी जी श्री गौरीलालजी महाराज का अनुभव सेवाभाव

तपस्वीजी स्व० दिवाकर श्री महाराज का प्रिय हैं और तपस्वी
श्री नैमीचन्दजी म० के शिष्य हैं आपने अतीत में बहुत तपश्चर्या की
है बतमान में आप ज्योतिष एवं मन्त्र शास्त्र विचारद कपोवद स्वामी
जी श्री कस्तूरचन्दजी म० के आत्मानुवर्ती हैं । मेरे साथ आपका तृतीय
वर्षाशत है आपके उदार सहयोग से ही मैं इस पुस्तक के तथा आगम
अनुयोग प्रकाशन के सक्ननादि कार्यों में सतन् रह सका हूँ । मेरे जीवन
में आपका यह सहयोग विरस्मरणीय रहेगा कपोवद होनेपर भी आपका
अग्रमन नाव एवं साहज आदरणीय व अनुकरणीय है ।

आगमज्ञ विद्वानों से विनम्र अनुरोध

अतः मे आगमज्ञ विद्वानों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे जनार्दन
निदेशिका का आलोचनात्मक निरीक्षण करके सशोधनाय सूचनाएं भेजें

प्राप्त सूचनाओं का उपयोग द्वितीय संस्करण में अवश्य किया जायगा । प्रस्तुत पुस्तक में कई कमियाँ रह गई हैं जिनका अब मैं स्वयं अनुभव कर रहा हूँ फिरभी ऐसी कई भूलें हो सकती हैं, जिनको ओर मेरा ध्यान न गया हो ।

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां ।

जानन्तु ते किमपि तान् प्रति नैव यत्नः ॥

विनम्र धृति नैवक

मुनि कन्हैयालाल “कमल”



સમિય તિ મજ્જમાસુરસ
 સમિય વા અસમિય વા સમિય હોતિ ઉત્તે ૮
 અસમિય તિ મજ્જમાસુરસ
 સમિય વા અસમિય વા અસમિય હોતિ ઉત્તે ૯

—માધારાંગ



चरणानुयोग-प्रधान आचाराङ्ग

श्रुतस्कंध	...	२
अध्ययन	...	२५
उद्देशक	८५
चूलिका	...	५
पद	...	१८०००
उपलब्ध पाठ		२५०० श्लोक परिमाण
मूलपाठ गद्य-मूत्र संख्या		४०१
,, पद्य गाथा संख्या		१५४

१ ब्रह्मचर्य श्रुतस्कंध	२ आचाराग्र श्रुतस्कंध	
अध्ययन ६	अध्ययन ...	१६
महापरिज्ञा अध्ययन लुप्त	उद्देशक	३४
उद्देशक ५१	चूलिका	४
सूत्र संख्या २२२	मूत्र संख्या	१७६
गाथा संख्या ... ११५	गाथा संख्या	३६

જિજ્ઞાસુવચનત્થુર્થ

નિઃશ્વસપ્રહસામણય જયદ્ સયા સરસભાવદેસણય ।
કુસમયમયતાસણય જિજ્ઞાસુવચનસાસણય ॥
જિજ્ઞાસુવચન અનુરક્તા જિજ્ઞાસુવચન જ કરતિ ભાવેણ ।
અમલતા ઘસકલિટ્ટા તે હોતિ પરિસસતારી ॥
શ્વાસમરણાણિ સહસ્રો અકામમરણાણિ શ્વય ય સહ્રાણિ ।
મરિહ્રિતિ તે શ્વાસા જિજ્ઞાસુવચન જ ન જાણતિ ॥



णमो चरित्तस्स

आचारांग विषय-सूची

प्रथमश्रुतस्कंध

प्रथम अध्ययन शास्त्रपरिज्ञा (जीव-संयम)

प्रथम जीव-अस्तित्व उद्देशक

सूत्राङ्क

- | | |
|------|---------------------------------|
| १ | उत्थानिका |
| २ | पूर्वभव के स्थान का अज्ञान |
| ३ | पूर्वभव और परभव का अज्ञान |
| ४ | पूर्वभव और परभव जानने के हेतु |
| ५ | आत्मवादी आदि |
| ६-१२ | कर्मबंध परिज्ञा |
| १३ | कर्मबंध परिज्ञा वाला ही मुनि है |

सूत्र संख्या १३

द्वितीय पृथ्वीकाय उद्देशक

अहिंसा

- | | | |
|----|-----------|------------------------------|
| १४ | पृथ्वीकाय | के हिंसक |
| १५ | क- | में जीवों का अस्तित्व |
| | ख- | की हिंसा से विरत मुनि |
| | ग- | की हिंसा से अविरत-द्रव्यनिगी |
| १६ | क- | की हिंसा |
| | ख- | " " के रेनु |

१७ व- पृथ्वीनाथ की हिमा का पत्र

स- , " के पत्र का ज्ञान

स- " का हिमर अथ अनेक जीवा का हिमर

प- " की बदना—अरे या उदाहरण

उ- " न न मुद्दिन का उदाहरण

स- " व हिमर का बदना का ज्ञान

१८ व- क धीमर का बदना का ज्ञान

स- की हिमा न हिमर ज्ञान का उदाहरण

न की पत्रिका काया की मुनि ज्ञान है

मूल मन्त्रा २

तृतीय अध्याय उद्देश

अहिमा

मन्त्राय परिज्ञा

१९ माया न बन्ने जाना ही अन्तार है

२० अहं—मन्त्र

२१ अहं न मुनि

२२ मन्त्र

२३ अन्तर्य मन्त्र का अन्तर्य

२४ व- अन्तर्य हिमा न हिमर मुनि

स- , अन्तर्य अन्तर्य

स- की परीक्षा

प- के पत्र

उ- का पत्र

स- के पत्र का ज्ञान

२५ जीवना हिमर अथ अनेक जीवा का हिमर

न मन्त्र के अन्तर्य अनेक जीव

२६ अन्तर्य जीवा का अन्तर्य

२१	अग्निदाय के मन्त्र
२२	अग्निदाय दिग्मा में प्रस्थापन
२३	अग्निदाय के मन्त्रों में अन्य मान्यताएँ
२४	" दिग्मा
२५	" मन्त्र में अनिष्टनाशन
२६ क	" दिग्मा की धेनु का ज्ञान
ग	" अग्निदाय की धेनु का ज्ञान
घ	" की दिग्मा में दिग्मा होने का उद्देश
ङ	" प्रविष्टा जाता की भुक्ति है

द्वितीय संख्या १३

चतुर्थ अग्निदाय उद्देशः

अहिता

२७ क	तेजस्व्याय परिज्ञा
ग	अग्निदायिक दीवों का परिज्ञा
२८	" " की धेनु का ज्ञान
२९	" " " प्रत्यक्षदर्शी
३०	अग्निदाय के हिमक
३१	" की दिग्मा न करने की प्रविष्टा
३२ क	" हिमक में विरत भुक्ति
ग	" " अतिरत द्रव्यनिर्मा
घ	" हिमक की परिज्ञा
ङ	" " के हेतु
च	" " का फल
छ	" " के फल का ज्ञान
३३	" का हिमक अन्य अनेक जीवों का हिमक से परितप्त प्राणी

३६ क	अभिजाय	के हिंसक को वेदना का अज्ञान
ख	,	के अहिंसक का वेदना का ज्ञान
ग		की हिंसा से विरत होने का उपदेश
घ		की परिज्ञा वाला ही मुनि है

मूल सख्या ८

पञ्चम वनस्पतिकार्य उद्देशक

४०	अनगर सञ्चल
४१	विषय सञ्चार
४२	सञ्चार का स्वभाव
४३	विषयी आराधन नहीं
४४-४५	प्रसक्त

अहिंसा

वनस्पतिकार्य परिज्ञा

४६ क	वनस्पतिकार्यिक जीवों की हिंसा से विरत मुनि
ख	, हिंसा से अचिरत इत्यतिगो
ग	वनस्पतिकार्यिक हिंसा की परिज्ञा
घ	हिंसा के हनु
ङ	हिंसा का कन
च	हिंसा के कन का ज्ञान
६	वनस्पतिकार्यिक हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
४७	मानव शरीर में वनस्पतिकार्य की तुलना
४८ क	वनस्पतिकार्य ने हिंसक को वेदना का अज्ञान
ख	अहिंसक को वेदना का ज्ञान
ग	की हिंसा से विरत होने का उपदेश
घ	परिज्ञा वाला ही मुनि है

मूल सख्या ९

षष्ठ त्रसकाय उद्देशक

त्रसकाय परिज्ञा

अहिंसा

- ४६-५० विविध त्रसजीव
- ५१ क प्राण, भूत, जीव और सत्त्व के विभिन्न सुख-दुख
ख त्रसजीवों का लक्षण
- ५२ क त्रसकायिक हिंसा के प्रयोजन
ख पृथ्वीकायादि के आश्रित त्रसकायिक जीव
- ५३ क त्रसकायिक हिंसा से विरत मुनि
ख " " अविरत द्रव्यलिङ्गी
ग " " की परिज्ञा
घ " " के हेतु
ङ " " का फल
च " " के फल का ज्ञान
छ त्रसकाय का हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
- ५४ " " की हिंसा के विभिन्न प्रयोजन
- ५५ क त्रसकाय के हिंसक को वेदना का अज्ञान
ख " अहिंसक को वेदना का ज्ञान
ग " की हिंसा से विरत होने का उपदेश
घ " परिज्ञा वाला ही मुनि है

सूत्र संख्या ७

सप्तम वायुकाय उद्देशक

अहिंसा

वायुकाय परिज्ञा

- ५६-५७ क वायुकायिक हिंसा से निवृत्त होने में समर्थ व्यक्ति
ख आत्म-समत्त्व

५८		वायुकाय का अहिंसक सयभी
५९	क	वायुकायिक हिंसा में विरत मुनि
	ख	अविरत द्रव्यनिशी
	ग	हिंसा की परिणा
	घ	हिंसा के हेतु
	ङ	का फल
	च	के फल का नाश
	छ	वायुकाय का हिंसक अन्य मनक जीवों का हिंसक
६०	क	से मर निम जीवा का सहार
	ख	के हिंसक को वेत्ना का अमान
	ग	के अहिंसक को वेत्ना का ज्ञान
	घ	की हिंसा से विरत होन का उपदेश
	ङ	की परिणा वाता ही मुनि है
६१		क हिंसक से प्रचुर कमवध
६२	क	सम्पक भी का लक्षण
	ख	छह वायकी हिंसा का सबका भागी ही मुनि है

सूत्र सख्या ०

द्वितीय अध्यायन लोकविजय
प्रथम स्वजन उद्देशक

६३	क	समाद के मूल कारण
	ख	विषयी जीव
६४		विवेक हीन
६५		अशरण भावना
६६		अप्रमाद का उपदेश (अनिच भावना)
६७		परिग्रह (अशरण भावना)
६८		
६९	उ०	अ मोपदेग

सूत्र सख्या १०

द्वितीय अद्वैता उद्देशक

३३	सुक्ति
३४	व्यक्तिगी
३५-३६	अमन्त्र
३७ क	अहिमा (हिमा के मन्त्रों का परिचय या उद्देश)
ख	सुविन्यास

सूत्र संख्या ५

तृतीय मदनियेष उद्देशक

३८	गोत्रमन्त्र नियेष
३९	भामा विवेक प्रमत्त
४०	विषयी की विवर्तिन प्रमत्तता
४१ क	मन्त्र-उद्देश
ख	मन्त्र
ग	जीवन
घ	मुक्त-जीवन
ङ	वध-जीवन
च	अव्ययी
छ	मयनि मोह
ज	परतीक्षिक-माध्वस्य
४२	ब्रान्तिव

{ न
न
न

सूत्र संख्या ६

चतुर्थ भोगसक्ति उद्देशक

४३ क	भोग के रोग
ख	अमरुत भावना
ग	एकत्व

घ	भाषाभक्ति
८४	ममति-माह
८५ क	भाषा विरक्ति
ख	परिषद् की निशाना
ग	रक्षा-माह
घ	अविषक
ङ	अप्रवाद, रवी मे भावना
८६ क	कामच्छा भवकर है
ख	अहिमा
ग	समय का वाचन
घ	आहार

सूत्र सप्त्या ४

पवन लोचनिध्या उद्देशक

८७	आहार
८८ क	
ख	मध्य
८९ क	व्य विषय
ख	मानमान
९० क	
ख	व्यय
९१ क	मार्ग का परिष्कार
ख	वागद विनये पर न हय न विनये पर न लोच
ग	वागद-मार्ग का निवृत्ति
९२ क	आरम्भ
ख	आरोह माग

श्रु०१, अ०२. उ०६ सू०१०१ ११

६३ क	कामभोग
ख	आयु
ग	कामी-व्यक्ति
६४ क	सर्वज्ञ
ख	विषयगृह
ग	"
घ	मुक्ति
ङ	पंडित
६५ क	"
ख	आश्रय
ग	आसक्ति
६६	सावद्य चिकित्सा का नि

सूत्र संख्या-१०

पण्ड अममत्व उद्देश

६७	अहिंसक
६८ क	हिंसक
ख	असंयत वक्ता
ग	प्रमत्त श्रमण
घ	परिज्ञा कर्मोपशमन
६९ क	मुनि-अममत्व
ख	लोकसंज्ञा
ग	रति-अरति
१०० क	लौकिक सुखों का नि
ख	मुक्ति
ग	रुक्ष-शुष्क आहार
१०१ क	गन्ध दर्वस मनि

	ख	लोक सयोज का त्याग मोक्षमात्र
१०२	क	दुःख परिज्ञा
	ख	कर्म
	ग	परमात्म
	घ	उपदेश (समभाव)
१०३	क	धर्मोपदान
	ख	धर्मोपदेशक
	ग	अङ्कित
१०४	क	आचीन
	ख	हिमा मोक्षमार्ग का परिचय
१०५	क	उपदेश
	ख	बानशीव

सूत्र संख्या ६

तृतीय शीतोष्णीय अध्ययन

प्रथम भाष्यसुप्त उद्देशक

१०६	भावनिद्रा भाव जागरण (अमुनि मुनि)	
१०७	क	अज्ञान
	ख	अहिमा
	ग	
१०८	क	आत्मज्ञ आत्मा (मुनि)
	ख	समाप्त के कारण राग द्वेष
१०९	क	धीन उच्छ्वसनीय
	ख	धैर्य (भाव जागरण)
	ग	जगत्सु (धर्म)
११०	क	मयम (अग्रमत्त)
	ख	मगप्रती

ग-	दुःख का कारण-आरम्भ
घ-	जन्म मरण (मायावी-प्रमादी)
ङ-	उपेक्षाभाव
च-	अप्रमत्त-वेदज्ञ
छ-	मयम (मन्त्रज्ञ)
ज-	कर्ममुक्त आत्मा
झ-	कर्म-उपाधि
ञ-	कर्म (जागृति)
१११ क-	„ (हिमा)
ख-	„ (गग-द्वेष)
ग-	लोवसजा का त्याग

सूत्र संख्या ६

द्वितीय दुःखानुभव उद्दे

११२ क-	जन्म-जरा
ख-	ममत्त्व
ग-	मभ्यग्दर्शी (पाप निषेध)
घ-	स्नेहपाश
ङ-	जन्म-मरण
च-	बाल
छ-	आतकदर्शी
ज-	कर्म
झ-	मुक्त मुनि
ञ-	भय (मुनि)
ट-	परमदर्शी
ड-	कर्म
११३ क-	मत्त

ग	उपरत म शाही कमलधय
११६ क	परिच,
ग	गिना (चानो का पानी म भरने का उदाहरण)
११७ क	सुपावा निपन
ग	अमार भोग
ग	अ म मरण
घ	अहिमा
ङ	भोग निदा (स्त्री विरति)
च	सम्यक्
छ	कण्ठ निजय (हिमा)
ज	छोप
झ	परिवह और धोक का त्याग
ञ	अहिमा का उपदेग

सूच संख्या ४

तृतीय अभिया उद्देशक

११६ क	अप्रमा का उपदेग
ग	अहिमा (ममत्त्व)
ग	विनिक्तिमा (मति)
११७ क	ममत्त्व
ग	अप्रमा
ग	सात्वतु न
घ	मात्र मात्रा
ङ	रूप निगति
च	मति जायति
११८ क	अथ तीव्रिया की मा पनाम

१ पूर्वमव का विस्मृति और परमव की कोई संभावना नह

२ जीव का अतीत और भविष्य अचिन्त्य है ।

३ जीव का अतीत और भविष्य समान है ।

४ सर्वज्ञ का मत

स- अनासक्ति

ग- सयम-कच्छप का उदाहरण

घ- आत्मा की मित्रता

११६ क- मोक्ष

ख- आत्मदान

ग- सत्य (मात्र-समात्र)

घ- श्रेय-मोक्ष

१२० प्रमाद

१२१ क- दुःख

ख- प्रपञ्चमुक्त मुनि

सूत्र संह्या ६

चतुर्थ कषाय-वमन उद्देशक

१२२ कषाय-वमन

१२३ ज्ञान (अणु-संसार)

१२४ क- प्रमत्त को भय, अप्रमत्त को अभय

ख- कर्म (मोह) क्षय-उपशम

ग- मोक्ष (लोक-संयोग)

घ- मयम मोक्ष-महायान

१२५ क- कर्म (एक का क्षय होने पर सब)

ख- आज्ञा

ग- लोक ज्ञान (आज्ञा)

घ- हिमा (अम्य-मयम)

१२६ क- कषाय का ज्ञान

ख- कर्म-उपाधि (सर्वज्ञ)

सूत्र संह्या ५

धनुष्यं सम्मन्त्रय अच्ययन

प्रथम सम्मन्त्रवाद उद्देशक

१२३ अहिंसा धर्म मन्त्रायम है

१२४ क धर्म म दृढता

ख निर्वै (वैगम्य)

ग लोकवर्णा निवेद

१२५ क

ख धर्मोपदेश

ग भोगी का तम धर्म

१२६ क हस्त धर्म की आराधना

ख अप्रमाद का उद्देश

मूल मन्त्रा ४

द्वितीय धर्मप्रभाषी परीक्षा उद्देशक

१२७ क कर्मव्यय एवं कर्मव्यय के हेतुओं में समानता

ख श्रावक—सर्वर

१२८ क धर्म म अप्रमाद

ख म धर्मव्यभाषी है

ग धर्म धर्म

१२९ क , सर्वक म

ख कर्म वेदना

ग धर्मवेदनी और कवनी का समान धर्म

१३० क अहिंसा की परिभाषा

मूल मन्त्रा ५

तृतीय अनवद्य तप उद्देशक

१३१ क उवेना माव वाता विग है

ख	अहिंसा
ग	दुःख-परिज्ञा
१३६ क	आज्ञा-पंडित
ख	समाधि—जीर्णकाष्ठ का उदाहरण
१३७ क	दुःख क्रोधमूलक है
ख	अनिदान (पापकर्मों से निवृत्ति)

सूत्र संख्या ३

चतुर्थ संक्षेप वचन उद्देशक

१३८ क	सयम-तपश्चर्या में वृद्धि
ख	वीरमार्ग
ग	तप से कृशता
घ	ब्रह्मचर्य
१३९	बाल-मोहान्ध
१४० क	सम्यक्त्व
ख	बुद्ध (आरम्भ से उपरत)
ग	निष्कर्मदर्शी (आरम्भ से उपरत)
घ	वेदवित् (कर्मबन्ध से निवृत्ति)
१४१ क	सत्य
ख	सर्वज्ञ को कोई उपाधि नहीं

सूत्र संख्या ४

पंचम लोकसार-अध्ययन

प्रथम एकचर उद्देश्यक

१४२ क	हिंसा (अर्थ-अनर्थ) हिंसक की गति
ख	विषयेच्छा का त्याग अति कठिन

१. इस अध्ययन का दूसरा नाम “अवन्नि” है। अध-
धारणाद्—आचा० टीका,

१४३	व	मोह, वात-जीव, कुशाघ बिंदु का उदाहरण
	ख	मोह से जन्म-मरण
१४४		सनाय से संसार का ज्ञान
१४५	क	ब्रह्मचर्य
	ख	भोग दुःख का हेतु
१४६	क	आत्मनि मे नरक
	ख	हिमा, हिमक का जन्म मरण
	ग	वान-जीव
	घ	एक वर्षा
	ङ	भविष्य से भोग मानने का

सूत्र सप्तम ३

द्वितीय विरत मुनि उद्देशक

१४७	क	निर्दोष आहार
	ख	अप्रमाद
	ग	विभिन्न प्रकार का दुःख
१४८		नगर दरीर
१४९		रत्नत्रय की आराधना
१५०		परिग्रह महाभय है
१५१	क	अपरिग्रह
	ख	वरम चण्डू क निग्न प्रत्यक्ष
	ग	ब्रह्मचर्य
	घ	अप्रमत्त होन का उद्देश

सूत्र अष्टम ३

तृतीय अपरिग्रह उद्देशक

१५२	क	अपरिग्रह
	ख	समता धर्म

ग	वीर्यं— आत्म-शक्ति
१५३	संयम के चार भागे
१५४	शील आराधना
१५५ क	आत्मदमन (बाह्य शत्रु आत्म-शत्रु)
ख	परिज्ञा
ग	रूप-आसक्ति (हिंसा)
घ	मुनि
ङ	अहिंसा (कर्म)
च	समत्व
छ	अहिंसा
ज	अनामकत (स्त्री ने विरक्ति)
१५६ क	वमुमान् (तपोधन)
ख	सम्यक्त्व
ग	मुनिधर्म, विरति
घ	सम्यक्त्व (रुक्ष आहार)
ङ	मुनि ससार-समुद्र उत्तीर्ण है

मूत्र संग्रह ५

चतुर्थ अव्यक्त उद्देशक

१५७	अव्यक्त (अगीतार्थ) एकल विहारी
१५८ क	हित-शिक्षा देने पर कुपित
ख	महामोह
ग	कुशल दर्शन, भ० का आशिर्वाद, वाधा न हो
घ	अहिंसा
१५९-क	कर्म (इस भव में भोगने योग्य और प्रायश्चित्त से शुद्ध होने योग्य कर्म)
ख	अप्रमाद

१६०	क	कमक्षय के लिये प्रयत्न
	ख	स्त्री के मसग का निषेध
	ग	स्त्री से विरक्त होने के उपाय
	घ	स्त्री सुप्त से पूर्व या पश्चात् कष्ट आवश्यकभावी है
	ङ	सूद का निमित्त—स्त्री
	च	स्त्री-कथा स्त्री दान तथा ममत्व स्वागत व तर्कीत एव स्त्री की अभिलाषा का निषेध
	छ	मुनिधर्म

मूत्र सत्या ४

पचम ह्रदोपम उद्देशक

१६१	क	आचार्य को अलाञ्छ्य की उपमा
	ख	के समान अमण
१६२	क	विभक्तिस्ता (अममाधि)
	ख	आचार्य का अनुसरण न करने पर श
१६३		जो जिन प्रवेष्टित है वह सत्य है
१६४	क	ऋद्धा के चार भागे
	ख	सम्यक्ता का भिन्न-मध्यक परिणामन
	ग	निध्या की का विगत अमध्यक परिणामन
	घ	सम्यक् चिन्तन से कमणय
	ङ	ज्ञान भाव का निषेध
१६५		अहिंसा का मनोविज्ञान
१६६	क	मात्मा विज्ञानात्मा
	ख	ज्ञान और आत्मा अभिन है

मूत्र सत्या ५

षष्ठ उभाग वजन उद्देशक

१६७	क	आज्ञा धर्म
-----	---	------------

	ख	गुरु के तत्त्वावधान में रहना	
१६८	क	तत्त्वदर्शन	
	ख	जिनाजा की आराधना	
	ग	प्रवाद-परीक्षा	
	घ	वस्तु स्वरूप का बोध	
१६९	क	स्वसिद्धान्त और परसिद्धान्त का ज्ञान	
	ख	गुप्तात्मा समयी	१
	ग	अप्रमाद	
१७०	क	सर्वत्र आश्रय	
	ख	अकर्मा होने के लिये प्रयत्न	
	ग	कर्म-चक्र	
१७१	क	गति-आगति	
	ख	भोक्षमुख	
१७२		मुक्तात्मा का स्वरूप	

सूत्र संख्या ६

पण्ड धूत अध्ययन

प्रथम स्वजन विधूनन उद्देशक

१७३	क	उपदेश	
	ख	मुक्तिमार्ग का कथन	
	ग	सकलपू व्यक्ति	
	घ	कमलाच्छादित जलाशय और कूर्म का उ०	
	ङ	रुध्र का उदाहरण	
	च	सोलह रोग	
	छ	जन्म-मरण का अन्त	
१७४	क	दुःख (मोहान्ध)	
	ख	हिंसा	

१७५ क	दुग्ध
ख	सावय चिकित्सा का निषेध
१७६ क	धूतवाद
ख	अनेन मुनि हुए
१७७ क	दीक्षा
ख	अक्षरग मावना

सूत्र सप्त्या २

द्वितीय कर्म विधूनन उद्देशक

१७८	कुपील
१७९	
१८०	महामुनि
१८१ क	सम्पद हृष्टि
ख	मग्न
ग	आज्ञाधम
घ	सयम
ङ	एकवर्षा—निर्दोष आहार परीपह सद्गता

सूत्र सप्त्या ४

तृतीय उपकरण-शरीर विधूनन उद्देशक

१८२	अधेन परीपह
१८३ क	प्रज्ञा का प्रभाव (कृष्ण शरीर)
ख	कृपाय मुक्त
१८४ क	अरति
ख	धर्म को द्वीप की उपमा
ग	मुनि (पंडित)
घ	पक्षीशिशु (धावक) की तपह शिष्य का बालन और शिष्य

सूत्र सप्त्या ३

चतुर्थ गौरवत्रिक विधूनन उद्देशक

१८५	कुशिष्य
१८६	बाल
१८७	पाप-श्रमण का जन्म-मरण
१८८	कुशिष्य
१८९ क	धर्मानुशासन
ख	आज्ञा विराधक हिंसक है
१९० क	पाप-श्रमण
ख	संयमोपदेश

सूत्र संख्या ६

पंचम उपसर्ग-सन्मान विधूनन उद्देशक

१९१ क	उपसर्ग-सहन
ख	धर्मोपदेश
१९२ क	धर्मोपदेशक (श्रोता की अवज्ञा न करे)
ख	मुनि को द्वीप की उपमा
ग	भिक्षु की संयम साधना
घ	सम्पददर्शी
ङ	परिग्रह
च	भिक्षु
छ	कपाय विजय
१९३ क	मरण (आत्म शत्रुओं के साथ आत्मा का)
ख	पारगामी मुनि (पादपोषगमन)

सूत्र संख्या ३

सप्तम महा परिज्ञा अध्ययन^१
अष्टम विमोक्ष अध्ययन
प्रथम असमनोज विमोक्ष उद्देशक

१२४

मिश्र का व्यवहार

१२५

१२६ क

ख

ग

अन्य तीर्थिक

अन्य तीर्थिका का कथन अहेतुक है

१२७ क

ख

ग

घ

ङ

आनुग्रह मुनि

मुक्ति (वचनमुक्ति)

धर्म (ग्रामवास और अरण्य)

महाजन^२ (तीन याम)

पापकर्मों से निवृत्ति

१२८

दण्ड हिमा (औदृगिक हिमा)

द्वितीय अवलम्बनीय विमोक्ष उद्देशक

१२९

औदृगिक आदि छ दोष सहित आचार वस्तु पात्र कर्मनि
संलग्न करने का निषेध

२००

औदृगिक आदि दोष जानने के हेतु

२०१

उपमग सहन (मोन विधान)

२०२

असमनोज की आहारार्थ देने का निषेध -

१ (क) यह अध्ययन अनुग्रहार्थ है

(ख) समराध्याग टिका में यह आचार्य का आठवा अवलम्ब माना गया है

(ग) आचार्य मिश्र लिखते हैं कि अध्ययन के ८८ मत बड़े गये हैं किन्तु
समराध्याग टिका में ७७ तक बड़े गये हैं

२ आचार्य टिका

२०३ समनोज्ञ को आहारादि देने का विधान

सूत्र संख्या १०

तृतीय अंग चेष्टा भाषित उद्देशक

२०४ क दीक्षा (मध्यम वय मे)

ख समता

ग अपरिग्रही

घ अग्रंथ (निग्रंथ)

ङ एक चर्या

२०५ क आहार से शरीरोपचय (परीपह से शरीर क्षय)

ख इन्द्रियों की क्षीणता

२०६ क दया (श्रमण)

ख भिक्षु के लक्षण

२०७ क शीत से कम्पित भिक्षुओंको देखकर गृहस्थ की आशंका

ख भिक्षु का यथार्थ कथन, अग्नि से तपने का निषेध

सूत्र संख्या ४

चतुर्थ वेहानसादि मरण उद्देशक

२०८ क तीन वस्त्र और एक पात्रधारी श्रमण का आचार

ख चौथा वस्त्र लेने का संकल्प न करे

ग तीन वस्त्र न हो तो निर्दोष वस्त्र ले

घ जैसे वस्त्र मिले वैसे ले

ङ वस्त्रों को धोए अथवा रंगे नहीं

च धोए हुए या रंगे हुवे वस्त्र पहने नहीं

छ अन्य ग्राम जाते समय वस्त्र पिछावे नहीं

२०९ क ग्रीष्म ऋतु आने पर जीर्णवस्त्र डालदे (परठदे)

ख आवश्यकता हो तो अल्प वस्त्र रखे

- ग अचरक बने
२१० क उपकरण साधक उपस्थिता है
■ सचेत अचेन अवस्थामे समत्व रखे
२११ असह्य शीतादिका उपभोग होनेपर वैधानम धरण मरे

सूत्र सप्तम ४

पञ्चम स्नान-भक्त परिज्ञा उद्देशक

- २१२ क दा वस्त्र और एक पात्रघाटी धमण का आचार
ग पूर्वोक्त सूत्र के समान
२१३ क अस्वस्थ एवं अशक्त होनेपर भी अभिज्ञत आहारादि न ले
ल वैवाह्य का अभिग्रह
ग वैशाह्य (सेवा) क चार भागे
घ मरणपर्यन्त अभिग्रह का इच्छा से वासन करे

सूत्र सप्तम ५

षष्ठ एकत्व भावना इगित मरण उद्देशक

- २१४ एक वस्त्र और एकपात्रघाटी धमण का आचार
२१५ पूर्वोक्त सूत्र २१० के समान
२१६ अस्वास्थ्य-रूप
२१७ अस्वस्थ एवं अशक्त होने पर इगित मरण से मरण
२१८ इगित मरण का मत्त्व

सूत्र सप्तम ६

सप्तम पट्टिमा पादपोषणमा उद्देशक

- २१९ अनन परोषह और लज्जा परोषह न सह्यक तो एक कटी-
वस्त्र लेने का विधान
२२० अचेन नग

- २२१ दैयावृत्य के चारभांगे
२२२ पादपोषगमन मरण की विधि

सूत्र संख्या ६

अष्टम भक्त, इंगित, पादपोषगमन मरण उद्देशक
गाथा १-२५, भक्त परिज्ञा, इंगित और पादपोषमरण की विधि

नवम उपधान श्रुत अध्ययन

गाथांक प्रथम चर्या उद्देशक

- १ दीक्षा के अनन्तर भ० महावीर का हेमन्त ऋतु में विहार
- २ भ० महावीर का देवदूष्यवस्त्र-धारण पूर्व तीर्थकारों का अनुसरण मात्र था
- ३ भ० महावीर को चार मास पर्यन्त भ्रमर आदि जन्तुओं का उपसर्ग रहा
- ४ भ० के म्बन्ध पर तेरह मास देवदूष्य वस्त्र रहा, पश्चात् वे अचेलक हो गये
- ५ भ० महावीर को आक्रोश परीपह एवं वध परीपह हुआ
- ६ भ० महावीर को स्त्रियों के द्वारा अनेक उपसर्ग हुए
- ७-१० भ० महावीर का मौन विहार
- ११ भ० महावीर ने दो वर्ष पूर्व ही सचित्त का त्याग कर दिया था
- १२ भ० महावीर ने छ काय के आरंभ का परित्याग कर दिया था
- १३ भ० महावीर द्वारा पुनर्जन्म का प्ररूपण
- १४-१६ " " " कर्म सिद्धान्त का प्रतिपादन
- १७ " " " अहिंसा का आचरण और अन्नह्यका परित्याग

अ० महावीर द्वारा पुनश्चम का प्रक्षेपण

- १८ आचाराग आहार का त्याग
 १९ पर (गृहस्थ) क वस्त्र और पर (श्रद्धस्थ) क पात्रका त्याग
 २० परिमिन आहार ग्रहण एवं सात्र सुत्रताने का त्याग
 २१ की इर्ष्या (विहार विधि)
 २२ हाथ तेरह मास परधान देव दूष्य वस्त्र का परिधान
 २३ उपसहार

द्वितीय शाय्या उद्देशक

गाथांक

- १ ३ अ० महावीर का विविध वसतिपा मे विहार
 ४ की तेरह वष पयन साधना
 ५ ६ के निद्रायाग
 ७ के सपात्रि का उपसग
 ८ १४ को चोर चार आत्रि पुरुषा द्वारा उपनग
 १५ का शीत परीषह सहन करना
 १६ उपसहार

तृतीय परीषह उद्देशक

गाथांक

- १ अ० महावीर के वृषस्पग आदि परीषद
 २ का लाट देश के वस्यभूमि और शुभ्रभूमि म विहार
 ३ १३ के (लाट देन मे) उपमग भगवान को पुद्ग के मोचपर स्थित हाथी की उपमा (दुष्टजनो को नरक की उपमा ग्राम नटक)

१४ उपसंहार

चतुर्थ आतङ्कित उद्देशक

गाथांक भ० महावीर की तपश्चर्या

१-२ भ० महावीर की मिताहार करने की प्रतिज्ञा और रोगों-
की चिकित्सा न करवाने की प्रतिज्ञा

३ भ० महावीर का अल्पभाषण

४ " " की शीत और ग्रीष्म ऋतु में ध्यान साधना

५ " " ने आठ मास तक निरस अन्न ग्रहण किया था

६-७ " " के विविध प्रकार के तप

८ " " का त्रिकरण से पापकर्म-परित्याग

९-१३ " " की पिण्डैषणा

१४ " " के ध्यानासन

१५-१६ " " का अप्रमत्त जीवन

१७ उपसंहार

द्वितीय श्रुतस्कंध

प्रथमा चूलिका

प्रथम पिण्डैषणा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

सूत्रांक

- १ क सचित मिश्रित आहार लेने का निषेध
ख असावधानी से लेने पर निरवद्य भूमि में डालने (परठने)
का विधान
- २ क सजीव (अप्रासुक) फलियों के लेने का निषेध
ख निर्जीव (प्रासुक) " " विधान

- ३ क अथवा या अथवात्र गान्ति आन्ति क लेने का निषेध
ख अनेक बार पक्व या तीन बार पक्व विधान
- ४ क भिक्षा समय की प्रवेग विधि
ख गौधभूमि म
ग स्वाध्याय भूमि म
घ ब्रह्मानुष्ठान विहार की विधि
- ५ क भिक्षु अथवा भिक्षुणी अन्यनीचिक को और गृहस्थ को
आहार न दे और न स्निगात
ख पारिवारिक-अपारिवारिक को आहार न दे और न स्निगात
- ६ क एक स्वधर्मों के निमित्त बने हुए (औद्गुणिक) आहार
लेने का निषेध
ख अनक स्वधर्मियों के
लेने का निषेध
ग एक स्वधर्मिणी क
लेने का निषेध
घ अनेक स्वधर्मिणियों के
लेने का निषेध
- ७ क धर्मणादि को गिनकर बनाये हुए (औद्गुणिक) आहार
के लेने का निषेध
ख पुरुषान्तर कृत (अथ पुरुषसेवित) आदि होनेपर लेने
का विधान
- ८ क धर्मणादि को गिने बिना बनाये हुए (औद्गुणिक) आहार
के लेने का निषेध
ख पुरुषान्तर कृत (अथ पुरुषसेवित) आदि होनेपर लेने
का विधान
- ९ भिक्षु अथवा भिक्षुणी का नित्यपिण्ड अथ पिण्ड अथ

भाग और चतुर्थ भाग दिये जाने वाले कुलों में प्रवेश निषेध

सूत्र संख्या ६

द्वितीय उद्देशक

- १० क पर्वदिन या विशेष प्रसंग में जहाँ नियत परिमाण में श्रमणादि को आहार दिया जाता हो, वहाँ से भिक्षु अथवा भिक्षुणी को आहार लेने का निषेध
- ख पुरुषान्तरकृत आदि होनेपर लेने का विधान
- ११ उग्रकुल आदि कुलों से शुद्ध आहार लेने का विधान
- १२ क सामुहिक भोज, मृतक-भोज, उत्सव-भोजादि में जहाँ नियत परिमाण में श्रमणादि को आहार दिया जाता हो वहाँ से भिक्षु अथवा भिक्षुणी को आहार लेने का निषेध
- ख पुरुषान्तरकृत आदि होनेपर लेने का विधान
- १३ क संखडि (जीमनवार) में जाने का निषेध
- ख आचाकर्म, औद्देशिक, मिश्रित, क्रीत, उधार लाया हुआ आहार लेने का निषेध

सूत्र संख्या ४

तृतीय उद्देशक

- १४ रोगोत्पत्ति की संभावना से संखडि भोजन लेने का निषेध
- १५ स्थानाभाव आदि अनेक दोषों की संभावना से संखडि में जाने का निषेध
- १६ क संखडि के समय अन्य कुलों में भी जाने का निषेध
- ख पश्चात् अन्य कुलों से शुद्ध आहार लेने का विधान
- १७ संखडि के निमित्त किसी ग्राम आदि में जाने का निषेध
- १८ संदिग्ध आहार लेने का निषेध

१९	क	गृह प्रवेग विधि
	ख	गौचभूमि प्रवेग विधि
	ग	स्वाध्याय भूमि प्रवेग विधि
	घ	ग्रामानुष्ठान विहार की विधि
२०	क	वर्षा पञ्चरत्न रत्न वर्षा के समय भिक्षादि गृह प्रवेगविधि
	ख	गौचभूमि प्रवेग विधि
	ग	स्वाध्यायभूमि
	घ	ग्रामानुष्ठान विहार की

सूत्र सप्त्या *

चतुर्थ उद्देशक

२१		निर्दिष्ट कुन्नी म आहार के लिए जाने का निषेध
२२	क	जिम सन्धि मे—भासादि बना हो जाने के माग म जीवन्तु हो श्रमणादि की भीड़ क कारण प्रवण निष्क्रमण न हो सकता हो स्वाध्याय न हो सकता हो ता उमम जाने का निषेध
	ख	जहाँ उन बात न हो वहाँ जाने का विधान
२३		जहाँ न य दुःख जाती हो वहाँ आहार के लिए जाने की विधि
२४		आगन्तुक अनिधि मुनियों के साथ आहार के लिए जाने की विधि

सूत्र सप्त्या *

पचम उद्देशक

२५		अग्रजिह्व लेने का निषेध
२६	क	भिक्षा के लिए समयावस्र जान का विधान

- य विषम मार्गं यद्यपि सीधा ह्यं तो भी उस मार्ग ने भिक्षा के लिए जाने का निषेध
- ग विषम मार्ग में गिर जानेपर अशुभ पुद्गलों से निपटारी के लिए पंछने की विधि
- २७ क सीधे मार्ग में यदि उन्मत्त या हिंसक पशु आदि हों तो उस मार्ग ने भिक्षा के लिये जाने का निषेध
- ग सीधे मार्ग में यदि गड्ढे आदि हों तो उस मार्ग ने भिक्षा के लिये जाने का निषेध
- २८ क भिक्षाकाल में आज्ञा लिये बिना गृहद्वार मोलने का निषेध
- ग आज्ञा लेकर गृहद्वार मोलने का विधान
- २९ पूर्वं प्रविष्ट तथा पदचात् प्रविष्ट भ्रमण को भिगी घर में सम्मिलित आहार प्राप्त हो तो उसके परिभोग की विधि
- ३० जिम गृह में पूर्वं प्रविष्ट भ्रमण हो उस गृह में भिक्षार्थ जाने की विधि

सूत्र संख्या ६

पण्ड उद्देशक

- ३१ कुचकुट आदि जिस मार्ग में दाना चुगते हों उस मार्ग से भिक्षार्थ जाने का निषेध
- ३२ क गृहस्थ के घर में निर्दिष्ट स्थानों में गड़े रहने का तथा दधर उधर देगने का निषेध
- ग अविधि से याचना करने का निषेध
- ग गृहस्थ को कठोर वचन कहने का निषेध
- ३३ कालत्रय में औद्देशिक आहार लेने का निषेध
- ३४ क दाता यदि अविधि से आहार दे तो लेने का निषेध
- ख विधि से दे तो लेने का विधान
- ३५ कालत्रय में पिष्ट या भिन्न अप्राप्तुक दे तो लेने का निषेध
- ३६ अग्निपर रखा हुआ आहार लेने का निषेध

सप्तम उद्देशक

- ३७ क ऊँच स्थानों में रखा हुआ आहार दे तो लेने का निषेध
 म ऊँच स्थान से आगर उतारने वाज को हानेवाणी हानिसे
 ग नीचे स्थान में आहार निकालकर दे तो लेने का निषेध
- ३८ क मिट्टी का आच्छादन तोड़कर दे तो लेने का निषेध
 ल पृथ्वीकाय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध
 ग जलकाय पर " " "
 घ अग्निकाय पर " " "
- ३९ अशुद्ध आहार को भूष आदि में डाल कर दे तो लेने का निषेध
- ४० क वनस्पतिकाय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध
 म मृत्तिकाय पर " " "
- ४१ पानी लेने की विधि
- ४२ क मत्तीय दृष्टी आदिपर रखे हुए वस्त्र में पानी दे तो लेने का निषेध
 ल मत्तीय दृष्टी आदि से मिश्रित पानी दे तो लेने का निषेध
- सूत्र सप्तम ६

अष्टम उद्देशक

- ४३ जालादि का अशुद्ध (मषिण) एवं ओद्वेगिक पानी लेने का निषेध
- ४४ अम्लादि को आमलिक पुरक मष भूषने का निषेध
- ४५ क माला आदि अशुद्ध लेने का निषेध
 म विषमनी " "
 ग अशुद्ध आदि अशुद्ध पान लेने का निषेध
 घ अशुद्ध " प्रशान्त "
 ड अशुद्ध " मरुतु "
 च उदर " "

४६		आमडाग-आदि अपक्व या अर्धपक्व लेने का निषेध	
४७	क	इक्षु खंड आदि अप्राप्तुक लेने का निषेध	
	ख	उत्पल	" "
४८	क	अग्रबीज	" "
	ख	इक्षु	" "
	ग	लशुन	" "
	घ	अस्तिक	" "
	ङ	कण	" "

सूत्र संख्या ६

नवम उद्देशक

४९	औद्देशिक आहार लेने का निषेध
५०	जहाँ श्रमण के स्वकुल के तथा स्वसुर कुल के रहते हों वहाँ आहार के लिए जाने की विधि
५१	जहाँ मांसादि बना हो वहाँ आहार के लिए जाने का निषेध
५२	आहार खाने की विधि
५३	पानी पीने की विधि
५४	अधिक आहार के परिभोग की विधि
५५	किसी को देने के लिए निकाले हुए आहार के लेने की विधि

सूत्र संख्या ७

दशम उद्देशक

५६	श्रमण समूह के लिए प्राप्त आहार के परिभोग की विधि
५७	सरस आहार को छिपाने का निषेध
५८	क इक्षु आदि अल्प खाद्य अधिक त्याज्य पदार्थ लेने का निषेध
	ख बहु अस्थिक आदि के परिभोग की विधि

५६ अग्रामुक लवण के सेने का निषेध मूल में लिए हुए के परिभोग की तथा टालने (परठने) की विधि

सूत्र सख्या ४

एकादश उद्देशक

६० स्नान के निमित्त मिले हुए आहार के सर्वथ में माया करने का निषेध

६१ सूत्र ६० के समान

६२ सात पिण्डघणा

- क अल्पिप्त हाथ एवं अल्पिप्त पात्र से आहार लेना
 ल निष्ठ हाथ एवं लिप्त पात्र से आहार लेना
 म अल्पिप्त और निष्ठ पात्र या निष्ठ हाथ और अल्पिप्त पात्र से आहार लेना
 घ पश्चात् कम दोषरहित आहार लेना
 ङ भोजन से पूर्व घोड़े हुए हाथ सुकने के पश्चात् आहार लेना
 च स्वयं या दूसरे के लिए पात्र में भिया हुआ आहार लेना
 छ डालने योग्य आहार लेना

सात पार्श्वघणा

पिण्डघणा के सामान

- ज आहार के स्नान में पानी समझना
 ६३ पन्निमाधारी की निन्दा का निषेध

सूत्र सख्या ५

द्वितीय शम्पयणा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- ६४ क पत्थरों के अङ्गे आग्नि जिस उपाख्य में हो उसमें टहरने का निषेध

१. परिष्कार के लिये यदि किसी उपाधय में न हो, उतने उपाधय का विधान
२. मूल उपाधयों के निमित्त होने हुए औद्योगिक उपाधयमें ठहरने का निषेध
३. अनेक उपाधयों के निमित्त होने हुए औद्योगिक उपाधय में ठहरने का निषेध
४. मूल उपाधयों के निमित्त होने हुए औद्योगिक उपाधय में ठहरने का निषेध
५. अनेक उपाधयों के निमित्त होने हुए औद्योगिक उपाधय में ठहरने का निषेध
६. धमनों की फिनारी करने बनाने हुए औद्योगिक उपाधय में ठहरने का निषेध
७. धमनों के गिने बिना बनाने हुए औद्योगिक उपाधय में ठहरने का निषेध
८. भिक्षु के निमित्त सम्मेलन कराने हुए औद्योगिक उपाधय में ठहरने का निषेध
९. भिक्षु के निमित्त कुछ परिवर्तन कराने हुए औद्योगिक उपाधय में ठहरने का निषेध
१०. भिक्षु के निमित्त कंदमूलादि स्थानांतरित किये जायें ऐसे उपाधय में ठहरने का निषेध
११. पुष्पाग्निरूप आदि होनेपर ठहरने का विधान
१२. भिक्षु के निमित्त पीठ-फाक आदि स्थानांतरित किए जायें ऐसे उपाधय में ठहरने का निषेध
१३. क. बहुत ऊँचे मकानों में या तलघरों में ठहरने का निषेध
ग. ऐसे स्थानों में ठहरने से होनेवाली हानियाँ
१४. क. स्त्री आदि वाले उपाधय में ठहरने का निषेध
ग. ऐसे स्थानों में ठहरने से होनेवाली हानियाँ

- ६८ क जिस उपाधय मे मृन्मय रहना हो ऐसे उपाधय म टहरने का निषेध
- स ऐसे उपाधय म कहन आदि का उाउव होता है
- ६९ ऐसे उपाधय म अग्निबाध का आरम्भ होता है
- ७० अणुजन तन्त्रियाँ को देखने स मन मिटून जाना है
- ७१ ऐसे उपाधय मे ओजस्वी पुत्र प्राप्ति निमित्त मैथुन क विप्र श्रिया निमन्त्रण देती है

मूत्र सत्या म

द्वितीय उद्देशक

- ७२ ऐसे उपाधय मे भिक्षु के स्वेद का दुर्गन्ध के प्रति शीघ्र बादि गृहस्थ को धृषा होनी है
- ७३ ऐसे उपाधय म गृहस्थ या भिक्षु क निमित्त बने हुए गरम भोजन पर भिक्षु का मन चसता है
- ७४ ऐसे उपाधय मे भिक्षु के निमित्त कण्ड भेदन और अग्नि का आरम्भ जाना है
- ७५ ऐसे उपाधय म मसमूत्रादि मे निवृत्त होने के लिए रात्रि मे द्वार ओलनेपर चोरा क घुसने की सम्भावना अथवा भ्रम से साधु को चोर मान लेना चोर क मन्त्र मे भाषा का विषय
- ७६ क जीव जन्तुवाला तृण पत्ताल आदि जिस उपाधय मे हो, उसमे ठहरने का निषेध
- स जीव जन्तु रहित तृण पत्ताल आदि जिस उपाधय मे हो उसमे ठहरने का विधान
- ७७ जिन स्थानो म स्वधर्मी अधिक आगे हो उन स्थानो म अधिक टहरने का निषेध

- ७८ जिन स्थानों में मासकल्प या वर्षावास रह चुके हों,
उनमें पुनः रहने का निषेध
- ७९ उक्त स्थान में दो तीन मास का व्यवधान किये बिना
ठहरने का निषेध
- ८० श्रमण या गृहस्थ के निमित्त बनवाये हुए स्थान में अन्य
मतानुयायी श्रमणों के ठहरनेपर भिक्षु के ठहरने का विधान
- ८१ उक्त स्थान में अन्य मतानुयायि श्रमण न ठहरे हों तो
भिक्षु के ठहरने का निषेध
- ८२ गृहस्थ अपने लिए बनवाया हुआ मकान साधुओं को
समर्पित करे और अपने लिए दूसरा मकान बनवावे तो
उसमें ठहरने का निषेध
- ८३ श्रमणादि की गिनती करके बनवाये हुए एवं समर्पित
किये हुए स्थान में ठहरने का निषेध
- ८४ सूत्र ८१ के समान
- ८५ एक भिक्षु के निमित्त निर्माण कराए हुए एवं समर्पित
किए हुए स्थान में ठहरने का निषेध
- ८६ गृहस्थ ने अपने लिए मकान बनवाया हो और अपने
लिए ही अग्नि का आरंभ किया हो, ऐसे स्थान में ठहरने
का विधान

सूत्र संख्या १५

तृतीय उद्देशक

- ८७ उपाश्रय के दोषों का कथन, और उनकी यथार्थता
- ८८ बहुत छोटे द्वार वाले उपाश्रय में अथवा अनेक श्रमण
जहां ठहरे हुए हों, ऐसे उपाश्रय में ठहरने की विधि
- ८९ उपाश्रय के लिए आज्ञा प्राप्त करने की विधि
- ९० क शय्यातर का नाम गोत्र पूछना

- न गम्यात्तर क घर से आहार लेने का निषेध
- ६१ त्रिम उपाधय मे गृहस्थ का निवाग हो अग्नि-पानी का आरम हो स्वाध्याय स्थान का अमान हो उसमे ठहरने का निषेध
- ६२ गृहस्थ के घर मे होकर उपाधय म आने का नाग हो तो उस उपाधय मे ठहरने का निषेध
- ६३ गृहस्थ के घर मे गृहकलह होता है
- ६४ तेल मदन होता है
- ६५ स्नानादि होता है
- ६६ अलम्बीका होती है
- ६७ नग्न या अध नग्न स्त्रियां होती है
- ६८ विकार बधक भित्ति बिज होते हैं
- ६९ क जीव जन्तु वाला सस्तारक लेने का निषेध
- ज भारी
- ग प्रपण के अयोग्य
- घ सिपिल बधवाता
- ङ जीव जन्तु रहित लघु प्रत्यर्पण योग्य एवं दृढ सस्तारक लेने का विधान

चार सस्तारक पद्धिमा

- १०० १ प्रथमा पद्धिमा—सस्तारको का नाम देकर किसी एक सस्तारक का ग्रहण करना
- १०१ २ द्वितीया पद्धिमा—इन सस्तारको मे से अमुक एक सस्तारक ग्रहण करना
- ३ तृतीया पद्धिमा—उपाधय मे विद्यमान सस्तारक ग्रहण करना अथवा उ बटुक वासन आदि से रात्रि व्यतीत करना

- १०२ ४ चतुर्थी पडिमा—शिला या काष्ठ का संस्तारक लेना
अन्यथा उत्कटुक आसनादि से रात्रि व्यतीत करना
- १०३ पडिमा घारी की निन्दा का निषेध
- १०४ जीव-जन्तु सहित संस्तारक प्रत्यर्पित नहीं करना
- १०५ जीव-जन्तु रहित संस्तारक प्रत्यर्पित करना
- १०६ मल-मूत्र डालने की भूमि का देखना, न देखने से होनेवाली हानियाँ
- १०७ आचार्य आदि के शय्यास्थल को छोड़कर अन्यत्र शय्या-स्थल देखना
- १०८ क जीव-जन्तु रहित शय्यापर बैठना
ख बैठने से पूर्व शरीर का प्रमार्जन करना
- १०९ क एक-दूसरे का परस्पर स्पर्श न हो ऐसी शय्या पर सोना
ख मुँह ढककर उच्छ्वास आदि लेना
ग मलद्वार के ऊपर हाथ देकर अपानवायु छोड़ना
- ११० सम-विपम शय्या में समभाव रखना
- सूत्र संख्या २४

तृतीय इर्षा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- १११ वर्षाकाल में विहार का निषेध
- ११२ क अयोग्य स्थान में वर्षावास न करना
ख योग्य " " करना
- ११३ वर्षाकाल के पश्चात् भी मार्ग में जीव जन्तु अधिक हों तो विहार न करना
- ११४ क जीव-जन्तु वाले मार्ग में न चलना
ख अन्यमार्ग के अभाव में वसजीवों की रक्षा करते हुए चलना

- ग बीज आनि वनस्पतिवान्न माग म न चलना
 घ अय माग क अभाव म स्थावर जीवो की रक्षा करते हुए चलना
- ११५ क म्लच्छ आनि क उपद्रव वान्न माग म विहार म करना
 ख अय माग से विहार करने का विधान
- ११६ क अराजक आनि प्रदेशों में होकर बिगार काने का निषेध
 ख अय माग स विहार करने का विधान
- ११७ क अनेक दिनों म साधने योग्य अटवी में होकर जाने का निषेध
 ■ ऐसी अटवी में होकर जाने में हमेवासी हानिया
- ११८ क कीनानि लोप पुन अथवा सुदूर गामिनी लोका म बठने का निषेध
 ख नियमगामिनी लोका म बैठने का विधान व बठने की विधि
- ११९ नाव म बठने की विधि—कवस्थाकलय

सूत्र सख्या ६

द्वितीय उद्देशक

- १२० नाव में बठने क पश्चात् किमा के उपकरण ग्रहण न कर
 १२१ अजिक भार के कारण यदि कोई मुनि को लोका से नीचे गिरावे तो समाविभाव रखने का उपपन्न
- १२२ क लोका में गिराए जाने से पश्चात् शरीर के अवयवों का परस्पर स्पर्श न करे
 ख नवकी न लगावे काल आदि म पानी न जाने द
 ग निकलने म बठिनाई मानूम व तो उपाधि का परिष्कार करे किनारे पहुँचने पर जलो का लो स्रग् रहै
 घ गोला शरीर सूखने पर जाने विहार करे

- १२३ क वात करते हुए चलने का निषेध
 ख पानी के अल्प-प्रवाह को पार करना
- १२४ क पानी को पार करने की विधि
 ख पानी को पार करते समय अवयवों का परस्पर स्पर्श निषेध
 ग ठण्डक के लिये गहरे पानी में जाने का निषेध, किनारे पहुंचने पर ज्यों का त्यों खड़ा रहना
 घ गीला शरीर सूखने पर आगे विहार करना
- १२५ क कीचड़ से भरे हुए पावों को हरे घास से घिसते हुए चलने का निषेध
 ख हरे घास रहित मार्ग में चलने का विधान
 ग किले की टूटी दिवार आदि मार्ग में हो तो उस मार्ग से जाने का निषेध
 अन्य मार्ग के अभाव में उस मार्ग से जाना पड़े तो उसकी विधि
 घ धान्य की गाड़ियां आदि जिस मार्ग से जा रही हो उस मार्ग से जाने का निषेध
 ङ जिस मार्ग में छावनी हो उस मार्ग से जाने का निषेध
 च अन्य मार्ग के अभाव में—उस मार्ग से जाते समय यदि उपसर्ग हो तो समभाव रखने का उपदेश
- १२६ पथिकों के प्रश्नों का उत्तर न देना

सूत्र संख्या ७

तृतीय उद्देशक

- १२७ क गढ़, किला आदि दिखाते हुए चलने का निषेध
 ख कच्छ आदि दिखाते हुए चलने का निषेध

- दिशाने से स्यादि प्राणिया को होने वाला भय
 ग गुरुदेव के साथ विवेक पूरक चमने का विधान
 २८ क आचार उपाध्याय के हस्त आदि अवयवों में स्थान करने
 हुए चमने का निषेध
 ग आचार उपाध्याय—पवित्रों के प्रश्नों का उत्तर दे रहें
 हो उन समय बीचने बोलने का निषेध
 ग ज्ञानइंडो के हस्तादि अवयवों में स्थान करते हुए चमने का
 निषेध
 घ ज्ञानइंड—पवित्रों के प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं। उन समय
 बीचने बोलने का निषेध
 २९ क भिन्नु अथवा भिन्नुनी में कुछ पवित्र—मनुष्य पशु आदि के
 सम्बन्ध में पूछे तो उत्तर देने का निषेध
 ग भिन्नु अथवा भिन्नुनी में कुछ पवित्र जन्म कष्ट आदि ॥
 सम्बन्ध में पूछे तो उत्तर देने का निषेध
 ग भिन्नु अथवा भिन्नुनी में कुछ पवित्र पाम्य की गाहियाँ के
 सम्बन्ध में पूछे तो उत्तर देने का निषेध
 घ छात्रनी आदि के सम्बन्ध में पूछे तो उत्तर देने का निषेध
 क भिन्नु अथवा भिन्नुनी में कुछ पवित्र काम विननी दूर है
 ऐसा पूछे तो उत्तर देने का निषेध
 घ भिन्नु अथवा भिन्नुनी में कुछ पवित्र अमुक गाव का मार्ग
 विननी दूर है ऐसा पूछे तो उत्तर देने का निषेध
 ३० क उभयतः साह आदि विम साध में ॥ उभये जाने
 की विधि
 ग विम अथवा म चरा का उपद्रव हो उस अथवी ॥ पार
 होने की विधि

- १३१ भिक्षु अथवा भिक्षुणी के उपकरण मार्ग में चीर छीनें तो उस समय के लिए समाधिभाव रखने का उपदेश तथा उस समय के लिए कुछ विशेष सूचनाएँ

सूत्र संख्या ५

चतुर्थ भाषा जात श्रद्धययन

प्रथम वचन विभक्ति उद्देशक

- १३२ क कठोर वचन और निश्चित वचन का निषेध
 ख सोलह प्रकार के वचनों का विवेक पूर्वक प्रयोग
 ग चार प्रकार की भाषा के सम्बन्ध में तीनकाल के तीर्थंकरों की समान प्ररूपणा, भाषा का पीद्गलिक रूप
- १३३ क भाषा का त्रैकालिक रूप
 ख सावद्य- यावत्- प्राणियों का घात करने वाली चारों भाषाओं का निषेध
 ग असावद्य यावत्-प्राणियों का घात नहीं करने वाली सत्य और व्यवहार भाषा के प्रयोग का विधान
- १३४ क पुरुष को अप्रिय सम्बोधन करने का निषेध
 ख " प्रिय " " विधान
 ग स्त्रियों " अप्रिय " " निषेध
 घ " प्रिय " " विधान
- १३५ क आकाश आदि को देव कहने का निषेध
 ख वर्षा धान्य आदि के सम्बन्ध में "हो या न हो" ऐसी भाषा के प्रयोग का निषेध
 ग राजा की जय पराजय कहने का निषेध
 ग आकाशादि के संबन्ध में विवेकपूर्ण भाषा का प्रयोग

सूत्र संख्या ४

द्वितीय क्रोधादि उत्पत्ति वर्जन उद्देशक

- १३६ क रोगी या अंगविकल को कुपित करने वाले वाक्य न कहना

ल न करने वाले वाक्य कहना

ग बिसे आदि को देखकर सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध

घ निरवद्य विधान

१३७ न आहार के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध

ल निरवद्य विधान

१३८ क मनुष्य पशु आदि के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध

ल मनुष्य पशु निरवद्य विधान

ग गाय बैल के सावद्य निषेध

घ निरवद्य विधान

ङ उद्यान में खड़े बने वृक्षों के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध

च उद्यान या वन में लगे बड़े वृक्षों के सम्बन्ध में निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान

छ फलों के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध

ज निरवद्य विधान

झ धातु के सम्बन्ध में सावद्य निषेध

ञ निरवद्य विधान

१३९ क शब्द सुनकर सावद्य भाषा का प्रयोग न करना

ल निरवद्य न करना

ग रूप देखकर सावद्य न करना

घ निरवद्य करना

ङ वक्ष्य श्रवण सावद्य न करना

च निरवद्य करना

छ रस का आश्वासनकर सावद्य न करना

ज निरवद्य करना

भ स्पर्श के पश्चात् सावद्य " " न करना
 ब " " निग्वद्य " " करना

१४० विवेक पूर्वक बोलने का उपदेश

सूत्र संख्या ५

पंचम वस्त्रैपणा अध्ययन

प्रथम वस्त्र ग्रहण विधि उद्देशक

- १४१ क छह प्रकार के वस्त्र
 ख निर्ग्रन्थ के लिए एक वस्त्र का विधान
 ग निर्ग्रन्थी के लिए चार चद्दर का विधान
 घ चार चद्दर का परिमाण
- १४२ वस्त्र के लिये अर्ध यांजत से अधिक जाने का निषेध
- १४३ क एक स्वधर्मों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध
- ख अनेक स्वधर्मियों के उद्देश्य से " "
- ग एक स्वधर्मिनी के " " "
- घ अनेक स्वधर्मिनियों के " " "
- ङ श्रमणादि को गिनकर उनके निमित्त बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध
- च पुरुषान्तरकृत आदि होने पर लेने का विधान
- छ श्रमण समूह के लिए बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध
- ज पुरुषान्तरकृत आदि होनेपर लेने का विधान
- १४४ क भिक्षु के निमित्त क्रीत, धीत आदि दोष सहित वस्त्र लेने का निषेध
- ख पुरुषान्तरकृत आदि होनेपर लेने का विधान

१४५	क	बहुमूल्य वस्त्र लेने का निषेध
	ख	चर्म " " "
		चार वस्त्र पट्टिमा
		प्रथमा पट्टिमा—छह प्रकार के वस्त्रों में से किसी एक प्रकार के वस्त्र का सकल्प करके लेना, स्वयं याचना करना बिना याचना किए दे तो लेना
		द्वितीया पट्टिमा—दण्ड वस्त्र का मनसे सकल्प करके लेना
		तृतीया पट्टिमा—परिभुक्त वस्त्र सना
		चतुर्थी पट्टिमा—कँकने योग्य वस्त्र सना
	क	पट्टिमा धारी की निन्दा का निषेध
	ख	वस्त्र लेने की विधि
१४७	क	औषध जल सहित धारण लेने का निषेध
	ख	" रहित " विधान
	ग	टिबाउ आदि गुल सम्पन्न वस्त्र लेने का विधान
	घ	वस्त्र को नवीन दिमाने के लिए प्रयत्न न करे
	ङ	" "
	च	मुगन्धित करने " "
१४८	क	वस्त्र को मुगाने की विधि
	ख	" "
	ग	" "
	घ	" "
	ङ	" "

सूत्र सख्या ७

द्वितीय वस्त्र धारण विधि उद्देशक

१४९	क	यथा प्राप्त वस्त्र धारण करने का विधान
	ख	घोने व रचने का निषेध

- ग भिक्षा के समय सारे वस्त्र साथ में लेजाने का विधान
 घ स्वाध्याय स्थान में जाते " " " "
 ङ शौच-स्थल में जाते " " " "
 च वर्षा घुंभर रजघात हो तो ग-घ-ङ में निर्दिष्ट समयों में सारे वस्त्र साथ लेजाने का निषेध
- १५० क किसी श्रमण से अल्पकाल के लिए याचित वस्त्र के प्रत्यर्पण की विधि
- ख मायापूर्वक अल्पकाल के लिए वस्त्र याचना का निषेध
- १५१ क शोभनीय वस्त्र को अशोभनीय और अशोभनीय वस्त्र को शोभनीय बनाने का निषेध
- ख अन्य वस्त्र के प्रलोभन से स्वकीय वस्त्र का विनिमय आदि न करे
- ग अन्य वस्त्र के प्रलोभन से दृढ़ वस्त्र को फाड़कर न फेंके
- घ वस्त्र छीनने वाले चोर के भय से उन्मार्ग गमन का निषेध
- ङ अटवी में " " " "
- च " चोरों का उपद्रव होनेपर समभाव रखने का उपदेश

सूत्र संख्या ३

पठ पात्रैषणा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

१५२

तीन प्रकार के पात्र

- क निर्ग्रन्थ के लिए एक पात्र का विधान
- ख पात्र के लिए आधे योजन से आगे जाने का निषेध
- ग एक स्वधर्मी के उद्देश्यसे बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
- घ अनेक स्वधर्मियों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र

- इ एक स्वर्णमिनी के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
- च अनेक स्वर्णमिनियों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
- छ श्रमणों को गिनकर बनाये या बनवाये पात्र लेने का निषेध
- ज श्रमण समूह के लिए बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
- झ बहुमूल्य पात्र लेने का निषेध
- झ बहुमूल्य वस्तुओं से बने हुए पात्र लेने का निषेध

चार पात्र पट्टिमा

प्रथम पट्टिमा—तीन प्रकार के पात्रों से ३ द्विती एव प्रकार के पात्र का नवत्प करके लेना स्वयं वाचना करे या बिना वाचना के मिले तो ग्रहण करना

द्वितीय पट्टिमा—देखने के पश्चात् उपयुक्त पात्र लेना

तृतीय पट्टिमा—फटने योग्य पात्र लेना

चतुर्थ पट्टिमा—परि भुषण पात्र लेना

ट पट्टिमाधारी की निम्दा का निषेध

ठ पात्र वाचना विधि

१५३ पात्र का प्रमात्रन करके निशार्थ जाने का विधान

१५४ क सचित्त शीतल जल दूधरे पात्र में लेकर खाली किया हुआ पात्र दे तो लेने का निषेध

ख निशार्थ जाने समय सारे पात्र साथ ले जाने का विधान

ग स्वाध्याय स्थान में जाने समय सारे पात्र साथ ले जाने का विधान

- घ शौच स्थान में जाते समय सारे पात्र साथ ले जाने का विधान
 ङ वर्षा, धुंवर व रजघात के समय ख-ग-घ में निर्दिष्ट स्थानों में सारे पात्र ले जाने का निषेध

सूत्र संख्या ३

सप्तम अवग्रह प्रतिमा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- १५५ अदत्तादान लेने का सर्वथा निषेध
 साथी मुनियों के छत्र आदि भी आज्ञापूर्वक लेने का विधान
 १५६ क धर्मशाला आदि में ठहरने के लिये जितने काल की आज्ञा ले उतने काल तक ठहरना
 ख स्वयं के लाये हुए आहार के लिए स्वधर्मी श्रमण को निमंत्रण दे, दूसरे के लाये हुए आहार के लिए निमंत्रण न दे
 १५७ क स्वयं के लाये हुए पीढा आदि के लिए स्वधर्मी श्रमणको निमंत्रण देना, दूसरे के लाये हुए के लिए निमंत्रण न देना
 ख सुई, कैंची आदि के प्रत्यपर्ण की विधि
 १५८ क सजीव भूमि की आज्ञा न लेना
 ख स्तूप आदि की आज्ञा न लेना
 ग भीत पर बने स्थानादि की आज्ञा न लेना
 घ ऊँचे बने स्थानादि की आज्ञा न लेना
 ङ गृहस्थादि जहाँ रहते हो ऐसे उपाश्रय की आज्ञा न लेना
 च गृहस्थ के घर में होकर उपाश्रय में जाने का मार्ग हो ऐसे उपाश्रय की आज्ञा न लेना

घ तेने उपाधय म से टहरने से होने वाली हानियां
ज भित्तिविन धान उपाधय की आना न लेना

सूत्र सप्तम ४

द्वितीय उद्देश

- ११६ यथागता आनि स्थाना मे पुन निवसित धमन की अश्रिय
न मने इस प्रकार आत्मा लेकर रहना
- ११७ क आस्रवन मे ओष-अन्तु सहित आस्र लेने का निषेध
ख आस्रवन म प्रामुक् आस्र लेने का विधान
ग आस्रवन मे अत्रामुक् आस्र लेने का निषेध
घ आस्रवन मे ओष अन्तु सहित आस्र लण्ड लेने का निषेध
ङ आस्रवन म अत्रामुक् अथ प्रामुक् आस्र लण्ड लेने का निषेध
च आस्रवन म प्रामुक् आस्र-लण्ड लेने का विधान
ज इष्टु वन म अप्रामुक् इष्टु लेने का निषेध
झ इष्टु वन मे प्रामुक् इष्टु लेने का विधान
ञ इष्टु वन मे प्रामुक् इष्टु-लण्ड लेने का विधान
ट लण्ड वन के तीन विरह्य आस्रवन के समान

११८ सात अवग्रह पट्टिमा

प्रथम पट्टिमा—आत्मा काम वसन टहरना
द्वितीय पट्टिमा—अन्त के लिए निर्दोष स्थान की आत्मा
लगा और उमीम टहरना
तृतीय पट्टिमा मय के लिए निर्दोष स्थान की आत्मा
लगा किन्तु उसमे टहरना नही
चतुर्थ पट्टिमा—अन्त के लिए आत्मा नही लूना किन्तु
अन्त से याचित उपाधय में टहरना
पंचम पट्टिमा—केवल अपने लिए स्थान की याचना
कथ्या अन्त के लिए नही
षष्ठ पट्टिमा—याचित स्थान मे शय्या सुस्तारक होगा

नवम निषीधिका अध्ययन प्रथम उद्देशक
निषीधिका* सप्तैकक

- १६४ क जीव-जन्तुवासे स्थान में स्वाध्याय करने का निषेध
द्वितीय गर्भपक्षा अध्ययन-श्रुति ६४ के म में च पयन्त और
श्रुति ६१ की पुनरावृत्ति
ख एक से अधिक स्वाध्याय स्थान में जाकेँ तो बैठने की विधि
सूत्र सप्त्या ९

दशम उच्चार-प्रध्वषण अध्ययन प्रथम उद्देशक
तृतीय उच्चार प्रध्वषण सप्तैकक

- १६५ क मनवेन मे व्यचिन्ध क्षमच क वास मनोत्सग क लिए स्वय
का वस्त्र सट या पात्र न हो तो स्वधर्मी धमण से
वाचना का विधान
ख जीव-जन्तुवासी भूमि में मनोत्सग करने का निषेध
ग जीव जन्तु रहित विधान
घ एक स्वधर्मी के लिए बनाई हुई जीवभूमि में मनोत्सग
का निषेध
ङ अनेक स्वधर्मियो
च एक स्वधर्मिनी
छ अनेक स्वधर्मिनियो
ज यमणानि को गिनकर
झ पुरयान्तर वृत्त होनेपर मनोत्सग का विधान
ञ धमण श्रुति के लिए बनाई हुई जीवभूमि में मनोत्सग
करने का निषेध

अ	बीजादि दोषयुक्त उष्णार-प्रश्रवणभूमि में मलोत्सर्ग निषेध		
इ	कंदादि जिम भूमि में स्थानांतरित किए गए हों ऐसी भूमि में		
उ	अनेक पदार्थ जिम भूमि में	"	"
ए	सजीव भूमि में मलोत्सर्ग करने का निषेध		
१६६ क	जिम भूमि में कंदादी फेंके जाते हों ऐसी भूमि में म० नि०		
ख	" " में गांभी आदि धान्य बिखरे हों	"	"
ग	" " में कचरे का ढेर हों	"	"
घ	भोजन बनाने के स्थान में मलोत्सर्ग करने का निषेध		
ङ	इमजान में	"	"
च	घगीचे आदि में	"	"
छ	अट्टानिका आदि में	"	"
ज	निराहे चौराहे आदि में	"	"
झ	फोयला आदि बनाने के स्थान में	"	"
झ	जलाशयों में	"	"
ट	स्थानों में	"	"
ठ	घाक पैदा होने वाले स्थानों में	"	"
ड	धान्यादि पैदा होने वाले स्थानों में	"	"
ढ	पत्र, पुष्प फलादि पैदा होने वाले स्थानों में	"	"
१६७	एकान्त स्थान में मलोत्सर्ग की विधि		

सूत्र संख्या ३

इग्यारहवां शब्द अध्ययन. प्रथम उद्देशक
चतुर्थ शब्द सप्तकक

१६८ क	मृदंग आदि बाद्य सुनने के लिए जाने का निषेध		
ख	वीणा	"	"
ग	ताल	"	"
घ	शंस	"	"

१६६	क	किने आदि मे होनेवाला सगीत सुनने का निषेध
	ख	कच्छ
	ग	झाध
	घ	झपीचे
	ङ	झट्टानिका
	च	तिराहे चौराहे
	छ	भैसे आदि बाधने के स्थानो मे होनेवाला सगीत सुनने का निषेध
	ज	मैसे आदिके के युद्धस्थलो मे
	झ	विवाह स्थलो मे
१७०	क	कथा
	ख	कलह
	ग	कद
	घ	दाकट आदि के समुद्र मे
	ङ	मनोःसव मे
	च	सभी प्रकार के शब्दो मे आसक्ति रखने का निषेध

सूत्र सख्या ३

झारहुवा रूप अध्ययन प्रथम उद्देशक
पचम रूप सप्तौकक

१७१	क	गूपी हुई फूल भालाए आदि अवलोकनाय जाने का निषेध
	ख	किने
	ग	कच्छ
	घ	झपीचे
	ङ	झट्टानिका
	च	तिराहे चौराहे
	छ	भैसे आदि बाधने के स्थान

ज	मैसे आदि के युद्ध के स्थल अवलोकनार्थ जानेका निषेध		
झ	विवाह स्थल	"	"
ञ	कथा	"	"
ट	कलह	"	"
ठ	वध	"	"
ड	शकट आदि का समूह	"	"
ढ	महोत्सव	"	"
ण	सभी प्रकार के रूपों में आसक्ति रखने का निषेध		

सूत्र संख्या १

तेरहवां परक्रिया अध्ययन. प्रथम उद्देशक
षष्ठ परक्रिया सप्तैकक

१७२ क	गृहस्थ से पैरों का प्रमार्जन न कराना	
ख	"	मर्दन "
ग	"	स्पर्श "
घ	"	मालिश "
ङ	"	के लेपन "
च	गृहस्थ से पैरों का न धुलाना	
छ	" " पैरों के विलेपन न कराना	
ज	" " पैरों के धूप न दिलाना	
झ	गृहस्थ से पैरों के कांटे न निकलवाना	
ञ	गृहस्थ से पैरों का पीप न निकलवाना	
क	" " शरीर का प्रमार्जन न कराना	
ख	" " व्रण का मर्दन न कराना	
ग	पैर विषयक ग से ञ तक की पुनरावृत्ति	
क	गृहस्थ से गड़ (फोड़ा) आदि का शस्त्र से छेदन न कराना	

स	गृहस्थ से गड(फोडा)आदि का शस्त्र से रफ्त न निकालना
ग	आदि का प्रमाजन न करवाना
घ	आदि का मदन न करवाना
ङ	पैर विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
क	गृहस्थ से गरीर का मैल साफ न करवाना
ख	शान्ति आदि का मैल साफ न करवाना
ग	नखे बाल आदि न कटवाना
घ	नील जू न निकलवाना
क	गो० या पलंग पर सेटाकर गृहस्थ पैरो का प्रमाजन करे तो न करवाना
ख	गो० या पलंग पर सटानर गृहस्थ पैरो का मदन करे तो न करवाना
ग	पैर विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
घ	गो० या पलंगपर सेटाकर गृहस्थ हार आदि पहनाये ता न पहनना
ख	आराम या उद्यान मे लजाकर गृहस्थ पैरो का प्रमाजन करे तो न करवाना
ङ	पर विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
क	साधु दूसरे साधु से अकारण पैरो का प्रमाजन न करावे
ख	पर विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
ङ	काय विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
ठ	वस्त्र विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
ड	गड विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
इ	वपदे०न विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
ण	स्व० विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
त	साम्ब जू विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति

१७३ क गृहस्थ ने मंग निकित्ता न करवाना
न गृहस्थ ने कदादि निकित्ता न करवाना

सूत्र संख्या २

चौदहवां अन्योऽन्य क्रिया अध्ययन. प्रथम उद्देशक
सप्तम अन्योऽन्य क्रिया सप्तैकक

१७४ क गन्ध निर्गन् साधु ने पंरों का प्रमाज्जन न करवाना
न सूत्र १७२-१७३ की पुनरावृत्ति

सूत्र संख्या १

तृतीय चूला

पंदरहवां भावना अध्ययन. प्रथम उद्देशक

१७५ भ० महावीर के कल्याण (पूर्वभव का देहत्याग, और
गर्भावतरण, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, और मोक्ष)

१७६ भ० महावीर का गर्भावतरण

" गर्भ साहरण

" जन्म

" जन्मोत्सव

" नाम करण

" सवर्धन

" तारुण्य

" के तीन नाम

" के पिता के तीन नाम

" की माता के तीन नाम

" के काका का नाम

" के बड़े भ्राता का नाम

" की बड़ी भगिनी का नाम

अ० महावीर की आर्या का नाम

	"	"	पुत्री के दो नाम
१७७	"	"	दोहित्री के दो नाम
१७८	"		के माना रिता का स्वर्णनाम
	"	"	निर्वाण
१७९	"		का वर्णनाम
	"	"	अभिनिष्पन्न
	"		को मनपर्यव शानोत्पत्ति
	"		का अभिग्रह
	"	"	कुमार प्राप्त गमन
	"		की उत्पृष्ट मायना
	"		का उपसर्ग सहन
	"		के केचन जानोत्पत्ति
	"		के केचन ज्ञान का महोत्सव
	"		का धर्मस्थान

१८० अ० महावीर का पाच महाविन प्रकपच

प्रथम महाविन की पाच भावना

द्वितीय "

तृतीय "

चतुर्थ "

पंचम "

मूल सख्या ६

चतुर्थी चूला

सोलहवा विमुक्ति अध्ययन प्रथम उद्देशक

गाथाक

१ अनित्य भावना

- ७ मुनि की जागी की उगमा
- ८ मुनि की जागी की उगमा
- ९-१० मुनि के जमेना का योगमा की उगमा
- ९ मुनि मरमा की मरे जपुत्र की उगमा
- १० मरमा की मरमा की उगमा
- ११ मरमा की मुनि
- १२ मरमा की मुनि

तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेदयं

णमो दंसणस्स

द्रव्यानुयोग-प्रधान सूत्रकृतांग

श्रुतस्कन्ध	२
अध्ययन	२३
उद्देशक	३३
पद	३६०००
उपलब्ध पाठ परिमाण श्लोक	२१००
गद्य सूत्र	८५
पद्य "	७१६

प्रथम श्रुतस्कन्ध

द्वितीय श्रुतस्कन्ध

अध्ययन	१६	अध्ययन	७
उद्देशक	२६	उद्देशक	७
गद्य सूत्र	४	गद्य सूत्र	८१
पद्य "	६३१	पद्य "	८८

પ્રથમ અભિવ્યંજન

અભિવ્યંજન	અક્ષરક	માથાક	અભિવ્યંજન	અક્ષરક	માથાક
૧	૧	૨૭	૨	૧	૨૭
	૨	૩૨		૨	૧૫
	૩	૧૬		૩	૧૬
	૪	૩૩		૪	૩૦
૨	૧	૨૨		૧	૨૬
	૨	૩૨		૨	૩૬
	૩	૨૨		૩	૨૮
૩	૧	૧૭		૧	૩૮
	૨	૨૨		૨	૨૨
	૩	૨૧		૩	૨૩
	૪	૨૨		૪	૨૭
૪	૧	૩૧		૧	૨૫
	૨	૨૨		૨	૪ મુલ

દ્વિતીય અભિવ્યંજન

અભિવ્યંજન	અક્ષરક	માથાક	અભિવ્યંજન	અક્ષરક	માથાક
૧	૧	૧૫	૨	૧	૩૩
૨	૧	૪૨		૨	૫૫
૩	૧	૬૨		૩	૮૧ મુલ
૪	૧	૬૭			

सूत्रकृतांग विषयसूची

प्रथम श्रुतस्कंध

प्रथम समय अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गाथांक

- १ बंधन तोड़ने के लिए प्रेरणा
- २ परिग्रह के सर्वथा त्याग से मुक्ति
- ३ हिंसा से वीर वृद्धि
- ४ आसक्त व्यवित का जीवन
- ५ धन और परिवार को अग्राता एवं जीवन को अल्प जानने वाला कर्म मुक्त होता है
- ६ मताग्रही एवं आसक्त श्रमण ब्राह्मण
- ७-८ १ पंचमहाभूतवाद
- ६-११ २ आत्माहृतवाद
एकात्मवाद का परिहार
- १२ ३ देहात्मवाद
- १३ ४ अकारकवाद
- १४ देहात्मवाद और अकारकवाद का परिहार
- १५-१६ ५ आत्म पण्डवाद
- १७ पंच स्कंधवाद
- १८ चार धातुवाद
- १९-२० ६ अफलवाद
पूर्वाक्तवादियों का निष्फल जीवन

द्वितीय उद्देशक

भाषाक

- १ १३ निवर्तिवाद और उसका परिहार
१४ २० अज्ञानवाद और उसका परिहार
२१ २३ ज्ञानवाद
२४ ३२ क्रियावाद और उसका निरसन

तृतीय उद्देशक

भाषाक

- १ ४ आधाकर्म आहार का निषेध
५ १० जगत्कर्मत्ववान् और उसका लक्षण
११ १३ नैरात्मिकवाद का परिहार
१४ १६ अनुष्ठानवाद का निरसन

चतुर्थ उद्देशक

भाषाक

- १ ३ परिग्रही अमर्षो की सगति का निषेध
४ शुद्ध आहार लेने का विधान
५ ९ मोक्षवाद निरसन
७ असवज्ञवाद का निरसन
८ १० अहिंसा
११ चर्या आसन शय्या भक्षणान्न ममिति का पामन
१२ कषाय जय
१३ १ ममिति ५ सवर

द्वितीय वैतालीय अध्ययन

प्रथम उद्देशक

भाषाक

- १ बोध प्राप्ति के लिए प्रेरणा मानवभाव की दुर्लभता
२ आयु की अनिश्चयता

- १४ सुपाप्मन क पञ्चान विहार करने का मन्त्रा निषेध (द्वितीय विधि)
- १५ १६ गुरुपूज मन्त्राची विधि (वमनि एषणा)
- १७ निषेध वसति (वमनि एषणा)
- १८ राज-मन्त्र का निषेध (उत्थोक्तमेवी विशेषण)
- १९ कथन निषेध (अष्टारु पाप से)
- २० समयाची वमन की आचार विधि
- २१ मन्त्र निषेध
- २२ नरक गति से जाने वाल और मोन वति व जान वाल
- २३ २४ उत्तम धर्म का आराधन
- २५ विषय वास्तनायन विषय प्राप्त करने वाला ही धर्मापन है
- २६ धार्मिक ही दूसरे को धार्मिक बना सकता है
- २७ मृत भागो क स्मरण का निषेध (धोवा महाजन)
- २८ विद्वान् प्रत्यक्ष वृष्टि की मरिच्यवाणी आदि का कथन धर्मोपासन के उपाय बनान का और मन्त्र का निषेध अनुत्तर धर्म क आराधन का उपदेश (भाषा विधि)
- २९ कथन विषय का उपदेश समया की महिमा
- ३० क मन्त्र निषेध
- ल मन्त्रा-मन्त्र धर्म ही इन्मि विषय का उपदेश
- ग धर्म कथा की दृष्टि
- ३१ म मन्त्रा-वसति भाषाविधि का अर्थवा या अनाचार ही मन्त्रधर्म का कारण है
- ३२ गुरु का निर्दिष्ट भुक्ति भाग
- तृतीय उद्देश

भाषा

- १ सवर और निजरा से ही वसति की भुक्ति
- २ स्त्री त्यागी-स्त्री भाग से ही भुक्ति राज का कारण भोग महाजन महाजन है

- ३ महाव्रतों की रत्नों से तुलना-रत्नों का धारक राजा होता है
और महाव्रतों का धारक महात्मा होता है—महाव्रत
- ४ सुखैषी एवं कामी पुरुष समाधि के रहस्य को नहीं समझ सकता
- ५ आत्म बलहीन साधक को दुर्बल बल की उपमा, संयम-भार
- ६ कामभोग निवृत्त होने का उपदेश
- ७ विषयों से निवृत्त होने का उपदेश, कामी की दुर्दशा
- ८ आसक्त पुरुष की अकाल मृत्यु
- ९ क हिंसक की गति
ख बाल तपस्वी की गति
- १० बालजन की मान्यता, जीवन में पापाचरण
वर्तमान सुख की कामना, पुनर्जन्म के प्रति अनास्था
- ११ सर्वज्ञ की वाणीपर श्रद्धा करने का उपदेश, मोहान्ध की अश्रद्धा
- १२ क स्तुति-पूजा का निषेध
ख समत्व का उपदेश
- १३ समभावी एवं सुव्रती पुरुष की देवगति
- १४ क संयम में पुरुषार्थ करने का उपदेश
ख इर्या का निषेध
ग शुद्ध आहार लेने का उपदेश
- १५ संवर धर्म और तप के आचरण का उपदेश
त्रिगुप्त होकर परमार्थ के लिये प्रयत्न करने का उपदेश
- १६ वित्त, पशु और स्वजन-रक्षक नहीं है (अशरण भावना)
- १७ मृत्यु आनेपर एकाकी जाना पड़ता है, घनादि से रक्षा नहीं होती
- १८ कर्मानुसार दुःख, जन्म-जरा-मरण एवं भव भ्रमण (कर्म-फल)
- १९ मनुष्य जन्म और बोधि की दुर्लभता का चिंतन
सभी तीर्थकरों का समान कथन
- २०-२२ गुणों के सम्बन्ध में तीर्थकरों की और उनके अनुयायियों की
समान प्ररूपणा—एक वाक्यता

तृतीय उपसर्ग अध्ययन

प्रथम प्रतिकूल-उपसर्ग उद्देशक

भाषाक

- १ भीरु मिथु को निगुणत्व की ओर उपसर्गों का महारणी धीवृण की उपमा
- २ १ भीरु मिथु को कायर पुरर की ओर उपसर्गों को योद्धा या यद्ध की विभीषिका की उपमा
- ४ गानगाङ्गिन अमर को राग्यहीन क्षत्रिय की उपमा शीतपरीषह
- ५ दीप्ति और विरासा से पीड़ित मिथु को पानी ■ अभाव से तन्कनी हुई मच्छन्नी की उपमा उष्ण विरासा परीषह
- ६ आशोक याचा परीषह
- ७ आशोक परीषह भीरु मिथु को सधाम भीरु की उपमा
- ८ वध परीषह पीडित मिथु को कुत्त के कात्ने पर अग्निनाह क समान बनना
- ९ १० आकाश परीषह—शेही पुरुषों के क्रूर वचन
- ११ क्रूर वचनों का वन
- १२ १ वन मन्त्रक परीषह २ तृष्णस्त्र परीषह उपसर्ग अन्य प्रवक्ष्य दुःख से परलोक के प्रति अनास्था
- १३ केतलोच और ब्रह्मपथ के नष्ट से पीड़ित मिथु को ज्ञान में फसी हुई मच्छन्नी की उपमा
- १४ १५ वध परीषह—अनाथ पुरुषों द्वारा किये गये उपसर्ग
- १६ वध परीषह घर से निकली हुई फूटा स्त्री के स्वजन के समान दण्ड मुष्टि आदि द्वारा प्रताड़ित मिथु का स्वजन स्मरण
- १७ उपसर्ग पीडित मिथु का सधम छोड़कर पलायन बाण विड गजराज क पलायन के समान है

द्वितीय उद्देशक-अनुकूल उपसर्ग

गाथांक

- १ अनुकूल उपसर्गों में संयम की अधिक हानि
 - २-६ विविध प्रकार के अनुकूल उपसर्गों में संयम त्यागकर पुनः गृही बनना
 - १० भिक्षु को परिवार का मोह बांध लेता है यथा-वृद्ध को खता
 - ११ भिक्षु के गृहस्थ बनने पर परिवार वालों का घेरे रहना
 - १२ स्वजन स्नेह समुद्र की तरह दुस्तर है, रनेह वंघन से दुःख
 - १३ स्वजन संसर्ग महाश्रय, परम श्रवण के पश्चात् असंयमी जीवन की वृद्धा का निषेध
 - १४ वृद्धों का आवर्तों से हटना और अबुद्धों का आवर्तों में फँसना
 - १५-१८ राजा आदि द्वारा भिक्षु से भोग भोगने का आग्रह
 - १९ भिक्षु को प्रलोभन, यथा—चाँवलों का सूत्रर को प्रलोभन ✓
 - २० ऊँचे मार्ग में यथा-दुर्बल वृषभ का गिरना, तथैव संयम मार्ग में आत्मबल हीन श्रमण का गिरना
 - २१ संयमी जीवन और तपश्चर्या के कष्टों से पीड़ित भिक्षु का संयमी जीवन से पतन, यथा-ऊँचे मार्ग में वृद्ध वृषभ का पतन
 - २२ भागों में आसक्त भिक्षु का पुनः गृही जीवन स्वीकार करना
- तृतीय उद्देशक-परवादी वचन जन्य श्रद्धात्म दुःख

गाथांक

- १-५ संयम भीरु और युद्ध भीरु की तुलना
- ६-७ युद्धवीर और संयमवीर की तुलना
- ८-९ आक्षेप वचन कहनेवाले अन्यतीर्थी समाधिभावको प्राप्त नहीं होते
- १०-१५ वांस के अग्रभाग के समान. अन्य तीर्थियों को दुर्बल आक्षेप का विवेक पूर्ण प्रत्युत्तर

- १६ दान के सम्बन्ध में अय्यतीविक का आक्षेप बचन
- १७ अय्य तीविकों की स्वयं मित्रि के लिये धृष्टता
- १८ परास्त्र अय्यतीविकों का गाली-दान
- १९ परतीविकों के साथ विचक पूर्वक दान करने का विधान
- २० श्रान्त सेवा
- २१ उपसम सहन करने का उपदेश

अनुय उद्देशक यथावस्थित अथ प्ररूपण

गाथाक

१

- १ मित्रि के सम्बन्ध में विविध पापताएँ—
१ जन से मित्रि
- २ २ सभी की आहार न लाने से और रामगुप्त की आहार लाने से मित्रि हुई
- ३ बाहक और तारायन ऋषि ने पानी पीकर मित्रि प्राप्त की
- ४ ४ धामिल ऋषि देविल ऋषि दीनायन ऋषि और पाराशर ऋषि ने पानी पीने से और वनस्पति के ल ने से मित्रि कही है
- ५ भारवाही गन्ध के समान समयभार से भिक्षु का दुखी होना गृष्टसर्वी पशुके समान शिविल श्रमण को शिवण प्राप्त नहीं होता
- ६ ७ मित्र्यामाग और आयमाग का अंतर आयमाग ग्रहण करने बिना सोह बनिये की तरह दुखी होना
- ८ पचाय्य मयी समयमी
- ९ ११ मित्रियों के सम्बन्ध में पारस्विकों के अभिप्राय
- १० सुखी का परचात्ताप
- ११ धीर पुरुष का जीवन
- १२ स्त्री वनरणी १० के समान दुस्तर है
- १३ स्त्री स्वाधी की भर्मात्र की प्राप्ति
- १४ उपसम सहना समुद्र के समान दुस्तर है

सप्तम सुशील परिभाषा अध्ययन प्रथम-उद्देशक

साधक

- १ ३ हिमक—जिन जीविकाओं की हिंसा करना है उही जीविकाओं से उत्पन्न होकर वेदना भागना है
- ४ कमक
- ५ ७ अग्निशाय के आरम्भ में निवृत्त होने का उपदेश
- ८ १० वनशक्तिशाय की हिंसा और उमड़ा फल
- ११ क मनुष्यमय और बोधि की दुःखमय
ख दुःखमय समार से मुक्त के निवेदित किये गये प्रयत्नों से भी दुःख होता है
- १२ क पर समय—ममक स्थान से मोन
ख ध्यान जन सवन से भी
ग मज्ज से मोन
- १३ क स्वभमय—प्राण वात के स्नान से मोन नहीं
ख ममक में स्थान से मोन नहीं
ग अचरीधी का मय मोन आहार से अचरमय
- १४ १७ जगत्प्राण से मुक्ति की विद्या मायना
- १८ १९ मन हवन से मुक्ति की विद्या मायना
- २० हिंसा का फल और अहिंसा
- २१ अमय आहार स्नान वस्त्र प्रसाधन और वस्त्र परिवर्तन का निवेद
- २२ स्नान वस्त्र आहार और मंत्र का निवेद
- २३ रम मीन का अनाधुना
- २४ तरंग आहार के निवेद पर से अचरमय करने का और अचरमय कीवन का निवेद

- २५ सरस आहार के लिये दाता की प्रशंसा न करना
 २६ दाता का प्रशंसक, पार्श्वस्थ एवं कुशील है उसका संयम निस्तारहै
 २७ अज्ञात कुल की भिक्षा लेने का विधान, पूजा-प्रतिष्ठा के लिये तपश्चर्या न करना. शब्द रूप आदि में आसक्ति न रखना
 २८ संग परित्याग, सहिष्णु, रत्नत्रय की साधना, अनासक्ति एवं अभयदान के सम्बन्ध में उपदेश, समभाव से संयम पालन का उपदेश
 २९ संयम निर्वाह के लिये आहार. पाप-निवृत्ति, उपसर्ग-सहन. संयम व मोक्ष सूचि. कर्म शत्रु का दमन
 ३० उपसर्ग सहन और राग-द्वेष की निवृत्ति से सर्वथा कर्मक्षय एवं मोक्ष

अष्टम वीर्य ग्रन्थयन

प्रथम उद्देशक

गाथांक

- १ वीर्य के दो भेद, वीर्य का भावार्थ
 २ कर्मवीर्य और अकर्म वीर्य
 ३ प्रमाद कर्म और अप्रमाद अकर्म
 प्रमाद बालवीर्य, अप्रमाद पंडितवीर्य
 बाल-वीर्य
 ४ बाल जीव का शस्त्राम्यास और मंत्र साधना
 ५ सुख के लिये मायावी जीवों द्वारा धन और प्राणों का हरण
 ६ असंयमी की मानसिक हिंसा
 ७ हिंसा से वैर परम्परा की वृद्धि
 ८ साम्प्रदायिक कर्म-बालजीवन के अनेक पापकृत्य

पंडित बीय

- ६ बालजीव का सकल बीय समाप्त पंडित का अक्रम बीय प्रारम्भ
- १० बंधन मुक्त साधक द्वारा कम बंधन का छेदन
- ११ रत्नत्रय की साधना से मोक्ष बालबीय से दुःख और अशुभ विचारों की हृदि
- १२ १३ उच्चपन्न और स्वजन सम्बन्ध की अधिव्यवस्था समम व और आर्यधर्माधरण के लिए उपदेश
- १४ गुरु निर्दिष्ट धर्म का आचरण पाप कर्मों का प्रत्याख्यान
- १५ आयु के अन्तिम क्षणों में सन्तुष्टि करना
- १६ क्रम के अंग सकोच की भाँति पापकर्मों का सकोच करना
- १७ शरीर मन और इन्द्रिया का नियन्त्रण भाषाशेष का असेवन
- १८ कथय विजय का उपदेश
- १९ अहिंसा सत्य और अस्तेय धर्म हैं
- २० अहिंसा शत्रु का उपदेश
- २१ पापकर्मों का विकारण से निषेध
- २२ असम्यग्दर्शों वीर पुरुषों का दान और तप कमबल का हेतु है
- २३ सम्यग्दर्शों वीर पुरुषों का दान और तप कमबल का हेतु है
- २४ पूजा प्रतिष्ठा के लिये किया गया तप तप नदी तप की गुण रत्न के उपदेश आत्म प्रशंसा निषेध
- २५ अलगभोजन अप्रभावण क्षमा अलोभ इन्द्रियदमन और अनासक्ति का उपदेश
- २६ मन वजन और काया का नियन्त्रण मोक्ष धर्म का परीक्षण सहने का उपदेश
- नयम धर्म अध्ययन
- प्रथम उद्देशक

गाथांक

- १ धर्म स्वरूप की धृष्टि और उपदेश
- २ ३ सभी जातियों के मनुष्य परिवर्तनीय हिंसक एवं विषय मोक्ष हैं

- ४ धन का भोग स्वजन और कर्मफल का भोग संग्रहकर्ता भोगता है
- ५-६ पाप का फल भोगते समय कोई रक्षक नहीं बनता, रत्नभय की आराधना, ममत्व और अहंकार का त्याग, जिनभाषित धर्म का अनुष्ठान
- ७ वाह्य और आन्तर परिरह का त्याग, संयम का पालन
- ८-९ विविध प्रकार के जीव, जीवहिंसा और परिरह का निषेध
- १०-११ मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिरह, कषाय तथा क्षय कर्म-यम के हेतु हैं अतः इनका त्याग करना
- १२-१३ अनाचारों का त्याग
- १४ दोषयुक्त आहार का त्याग
- १५ अनाचारों का त्याग
- १६ सांसारिक वार्ता, पापकार्य की प्रशंसा, निमित्त कथन और शय्यातर के आहार का निषेध
- १७-१८ अनाचारों का त्याग
- १९ हरे घाग आदि पर मलोत्तमर्ग का निषेध तथा बीजादि अप्रासुक (सजीव) को निकाल कर प्रामुक (निर्जीव) जल से गुदा प्रधानन का निषेध
- २०-२१ अनाचारों का त्याग
- २२ यश के लिये प्रयत्न न करना
- २३ स्वधर्मी को सदोष अन्न-जल देने का निषेध
- २४ निर्ग्रथ महावीर का उपदेश
- २५-२७ भाषा विवेक
- २८ कुशील की संगति न करना
- २९ अकारण गृहस्थ के घर में बैठने का, बच्चों के खेल खेलने का और अधिक हंसने का निषेध

- ३० विषयो मे अनाशक्ति भिक्षाचरी म अप्रमाद और उपमर्ग सहने का उपदेश
 ३१ चर्ष परीषह
 ३२ गुरुजनो से इच्छा निरोध सीसना
 ३३ योग्य गुरु की उपासना
 ३४ गृहवास मे सम्बन्धु ज्ञान साधना समभव नहीं अन्न प्रशब्दा का उपदेश
 ३५ अनामकिन, असावध अनुष्ठान और सर्व अनाचारो का निषेध
 ३६ मोक्ष पर्यंत कषाय का त्याग

दशम समाधि आभ्यसन

प्रथम उद्देशक

गाथाक

- १ धर्म ध्वज के लिए प्रेरणा, निदान और हिंसा का निषेध ममम पालन
 २ प्राणानिपात विरमण तथा मदताशन विरमण का उपदेश
 ३ आश्रय का निषेध और धन धान्य सचय का निषेध
 ४ स्त्री परिस्वाग का उपदेश
 ५ बालजीव का भव भ्रमण
 ६ भाव समाधि और प्राणानिपात विरति का उपदेश
 ७ ममत्व का उपदेश, पूजा प्रणिष्ठा के इच्छुक और उपमर्ग पीडित का मदम मे पनन
 ८ आश्रम आहार और स्त्री का त्याग
 ९ हिंसक को दुष्टि
 १० धन मन्थन आमन्त्रितया वापकथा का निषेध विषेत्पूरुषभाषण का उपदेश
 ११ आध्यात्म आहार का निषेध

- १२ एकत्व भावना
 १३ मैथुन और परिग्रह से निवृत्त को ही समाधि भाव की प्राप्ति
 १४ परीपह सहन
 १५ वचन गुप्ति और शुद्ध लेश्या रखने का उपदेश, गृह निर्माण और स्त्री-सम्पर्क निषेध
 १६ अक्रियावाद से मोक्ष कहने वाले धर्मज्ञ नहीं हैं
 १७ विश्व में कई क्रियावादी, कई अक्रियावादी और कई बालक की बलि देने वाले हैं
 १८ अर्थासक्त व्यधित
 १९ अशरण भावना
 २० जिस प्रकार मृग सिंह से दूर रहता है, इसी प्रकार धार्मिक व्यक्ति को पाप से दूर रहना चाहिये
 २१ अहिंसा का उपदेश
 २२ मृपावाद निषेध
 २३ संदोष आहार, परिग्रह और यशः कीर्ति की कामना का निषेध
 २४ निरपेक्ष होने का उपदेश. शरीर का ममत्व, निदान, जन्म-मरण की आशा का त्यागी मुक्त होता है

एकादश मार्ग अध्ययन :

प्रथम उद्देशक

गाथांक

- १-२ मोक्ष मार्ग के लिये प्रश्न
 ३-६ मुनने के लिए प्रेरणा
 ७-१२ हृत्काय की रक्षा के लिये विरति का उपदेश
 १३-१५ पिण्डपणा, आधाकर्म आहार का निषेध
 १६ उपाश्रय का निर्माण कराने के लिये अनुमति न देना
 १७-२१ दान-पुण्य के कार्यों में विधि-निषेध का प्रयोग न करना, विधि-निषेध के प्रयोग से होने वाली हानियां

- २२ मोनार्थों च द्रमा के समान प्रधान पुरुष है
 २३ सम्पन्नत्व द्वीप है
 २४ शुद्ध धर्मोपदेशक
 २५ अपने आपको बद्ध मानने वाला समाधि को प्राप्ति नहीं होता
 २६ औद्योगिक आहार करने वाला भाव समाधि को प्राप्ति नहीं होता
 २७ २८ विषय लोभ—पापी होता है
 २९ जमाव नाविक के समान शुद्ध भाव के विराग के की दृष्टि
 ३० ३१ मिथ्यादृष्टि धमन की दृष्टि
 ३२ कल्पित कविता पत्र में आत्मा का उद्धार
 ३३ इन्द्रिय विषय का उपदेश
 ३४ ३५ निवास का इच्छुक कर्मावर्तों का परित्याग करे
 ३६ गति के सम्बन्ध में सम्पूर्ण तीव्रकरों की समान प्रवृत्ति
 ३७ महागति के समान सन्धारी की दृष्टि
 ३८ जीवन पवन शुद्ध आहार लेने का उपदेश

द्वितीय समवसरण अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गाथाक

- १ काव्य वाच
 २ अज्ञानवाणी
 ३ ५ विनयवाणी
 ६ अक्रियावाणी
 ७ मन्त्र गूयवाच अक्रियावाच है
 ८ अक्रियावाणी का अज्ञान
 ९ निमित्तगाम्य का अध्ययन गूयवाच के सिद्धांत से विरुद्ध है
 १० अक्रियावाणी द्वारा निमित्त गाम्य के अध्ययन का निषेध
 ११ गान्धर्व क्रियावाच से मुक्ति नहीं अपितु सत्त्व सम्भन ज्ञान
 किया से मुक्ति है

- १२ मिथ्यात्व से संसार की वृद्धि
 १३ देव दानवों का भवभ्रमण
 १४ अंगनाओं के अनुराग से भवभ्रमण
 १५ कर्मक्षय बालजीव नहीं कर सकता है, संतोपी मेधावी पापकर्म नहीं करता
 १६ बुद्ध पुरुषों का ही मोक्ष होता है
 १७ कुट्ट लोग एकान्त ज्ञानवादी हैं—किन्तु धीर पुरुष पापकर्मों से सर्वथा विरत हैं
 १८ आत्मसमदर्शी को दीक्षा ग्रहण करने के लिए उपदेश
 १९ धर्मोपदेशक ही रक्षक है, धर्मोपदेशक के समीप ही निवास करने का विधान
 २० आत्मदर्शी ही लोकदर्शी है, जो संसार और मोक्ष का ज्ञाता है, वह जन्म मरण का ज्ञाता है
 २१ जो नरक की वेदना जानता है वह आश्रय संवर और निर्जरा को जानता है
 २२ अनासक्त रहने का उपदेश
 त्रयोदश यथातथ्य अध्ययन
 प्रथम उद्देशक

गाथांक

- १ शील और अशील का रहस्य, शांति (मोक्ष) और अशांति (बंध) का रहस्य सुनने के लिए प्रेरणा
 २-४ समाधि मार्ग पर न चलने वाले निन्हवों का अविनय
 ५ क्रोधान्ध का दुःखमय जीवन
 ६ क्रोधी समभाव को प्राप्त नहीं होता, सुशिष्य के लक्षण, आज्ञा पालन, पापकर्म भिरु, लज्जावान, श्रद्धालु और अमायावी होना

- ८ अभिमानी तपस्वी का तप निरर्थक है
 ९ ज्ञान का मद करने वाला अज्ञानी
 १० सच्चा धर्मण गुह्य आहार लेनेवाला एवं विरभिमानी होता है
 ११ दुर्गति से रक्षा रत्नत्रय की साधना से होती है जाति कुल से नहीं
 १२ पूजा प्रतिष्ठा के दृष्टिकोण अभिमानी धर्मण की भिक्षाचर्या केवल आजीविता एवं भवभ्रमण का हेतु
 १३ मन्त्रे मायु के लक्षण मद करने वाला सुखी धर्मण भी मन्त्रा धर्मण नहीं
 १४ ज्ञान-मन्त्रा नाम मद करने वाला निन्दक धर्मण मान है उसको समाधि प्राप्ति नहीं होती
 १५ १६ मद न करने वाला ही पंडित है एवं मोक्ष प्राप्ति है
 १७ गुह्य आहार लेना
 १८ मयम म अरति और अमयम म रति का निषेध भाषा विवेक और एकत्व भावना का उपदेश
 १९ २० उपदेश देने की पद्धति
 २१ हिमा और माया के त्याग का उपदेश

चतुर्विंश प्रथम अध्याय
 प्रथम उद्देशक

पायाक

- १ अपरिग्रह ब्रह्मचर्य आश्रमालिन और अप्रमाण का उपदेश
 २ ३ अविनयी निष्य की दुर्गति मन्त्री पात्रक को उपमा
 ४ ५ गुरुकुल निवास का उपदेश
 ६ वायदा से राग-द्वेष विद्रोह और विनिष्ठा का निषेध
 ७ भूल स्वीकार न करके बोध करने वाला धर्मण सुख नहीं होता

- ८-१२ हित शिक्षा देने वाले पर शोध न करना अपितु प्रमत्त होना
 १३ जिन वचनों से धर्म के स्वरूप का ज्ञान
 १४ प्राणातिपात विरमण
 १५ प्रश्न पूछने की विधि
 १६ प्राणातिपात विरमण, नमिति, गुप्ति और अप्रमाद का उपदेश
 १७ आचार का ज्ञान एवं शुद्ध आहार लेनेवाला मुक्त होता है
 १८ विवेकपूर्वक प्रश्नों का उत्तर देने वाला धर्मोपदेशक मुक्त होता है
 १९ प्रश्नों का यथार्थ उत्तर देना, आत्म प्रशमा और अन्य का उपहास न करे, आशीर्वाद न दे
 २० आशीर्वाद न दे, मग्न प्रयोग और अधर्मोपदेश का निषेध, निस्पृह रहने का उपदेश
 २१ हास्य, अप्रिय मत्य, प्रतिष्ठा की कामना और कषाय का निषेध
 २२ भाषा विवेक और समभाव का उपदेश
 २३ प्रश्नों का सक्षिप्त एवं मरस भाषा में उत्तर देना
 २४ प्रश्न का उत्तर विस्तृत देना ही तो भी निर्दोष भाषा में देना
 २५ आगमोक्त सिद्धान्तों का उपदेष्टा भाव समाधि को प्राप्त होता है
 २६ सूत्र का यथार्थ अर्थ करना
 २७ सूत्र का शुद्ध उच्चारण और यथार्थ अर्थ करने वाला तपस्वी भाव समाधि को प्राप्त होता है

पंचदश आदान अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गाथांक

१ दर्शनावरणीय के क्षय से त्रिकालज्ञ होना

- २ मलय मिटाने वाला-सर्वत्र नहीं होता
- ३ सवज्ञोक्त मत्स्य ही सुभाषित है, मंत्रीभाव का उपदेश
- ४ अविरोध ही अमण धर्म है, धर्म भावना का उपदेश
- ५ भावना से आत्म मुक्ति एवं निर्वाण
- ६ ७ पाप स्वरूप का ज्ञाता और नये पाप कर्मों को न करने वाला कर्मों से मुक्त होता है
- ८ ९ स्थियों के मोह से मुक्त पुरुष ही मुक्त होता है
- १० मोक्षमार्ग का दास ही मुक्त होता है
- ११ धर्मोपदेश का प्रत्येक प्राणी पर धिन् २ प्रभाव, मुक्तपुरुष का लक्षण
- १२ स्त्री सग से भयभ्रमण
- १३ प्राणीभाव के साथ अविरोध रखने वाला परमार्थ दर्शी है
- १४ अनाजाली ही माग दर्शक है, मोह का अंत ही समार का अन्त है
- १५ कृष्ण मूला खाने वाला निध्वाय अमण मुक्त होता है
- १६ १७ शिवपद और स्वर्ग का अविकारी मनुष्य है अमनुष्य (देव तिर्यच आदि) नहीं—मनुष्य भव की दुखभना
- १८ बोधि और सुख सत्या दुःख है
- १९ धर्मोपदेशक का भव भ्रमण नहीं होता
- २० मुक्त का पुनर्गमन नहीं होता तीर्थंकर और गणधर शक्र के नेत्र हैं
- २१ कालमय कथित समय के पालने से निर्वाण की प्राप्ति
- २२ पापकर्मों का अकर्ता ही मुक्त होता है
- २३ २४ समय से शिवपद और स्वर्ग
- २५ रत्नत्रय की वराधना से भव भ्रमण नहीं होता

पोडश गाथा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

अनगार के चार पर्याय

माहण श्रमण भिक्षु और निर्ग्रन्थ.

माहण की व्याख्या

श्रमण की व्याख्या

भिक्षु की व्याख्या

निर्ग्रन्थ की व्याख्या

या ४

द्वितीय श्रुत स्कन्ध

प्रथम पुंडरीक अध्ययन

प्रथम उद्देशक

पुष्करिणी (वापिका) में अनेक कमल, मध्यभाग में एक पद्मवर पुंडरीक

पुंडरीक के उद्धार के लिए पूर्व दिशा से प्रयत्नशील प्रथम पुरुष

" " दक्षिण " " द्वितीय "

" " पश्चिम " " तृतीय "

" " उत्तर " " चतुर्थ "

" का केवल आह्वान से उद्धार करने वाला पंचम "

म० महावीर द्वारा निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को निमंत्रण और उनके सामने दृष्टांत के भाव का कथन

दृष्टांत और

दार्ष्टान्तिक

१ पुष्करिणी

१ मनुष्य लोक

२ उदक

२ कर्म

३ पंक

३ विषय भोग

४ नाना प्रकार के कमल

४ नाना प्रकार के मनुष्य

५ पञ्चवर पृथ्वी

५ राजा प्रमुख पुरुष

६ एक निम्न चार पुरुष

६ भाव एक निम्न चारोपिक

७ तट

७ उत्तम धर्म

८ नम्र म्पिन पाँचवीं पुरुष

८ धर्म तीर्थ

९ शब्द

९ धर्म नया

१० पृथ्वी का बाह्य धाना १० निर्वाण

८ राजा राजसभा, धर्मोपदेश देहात्मवादी द्वारा देहात्मवाद का प्रतिपादन

आत्मा और शरीर को विन्न विन्न दिग्वात के लिए मुक्ति युक्त प्रदान

शरीर के प्रतीक

आत्मा के प्रतीक

१ कोश

१ अग्नि

२ मूत्र

२ शलाका

३ मूत्र

३ अस्थि

४ करण

४ आत्मक

५ दन्ति

५ नवनील

६ निज

६ तन

७ दन्तु

७ रज

८ अरणि

८ अग्नि

दिवा, अकिमा सुहृन्, दुष्कृन् आदि का निषेध

देहात्मवादी साक्ष्य समक्ष का विषयमोक्षध जीवन

१० राजा राजसभा धर्मोपदेशक, पञ्चमहाभूतवादी द्वारा पञ्च महाभूतवाद का प्रतिपादन किया अकिमा, सुहृन्-दुष्कृन् आदि का निषेध

पञ्चमहाभूतवादी समक्ष का भागमय जीवन

११ राजा, राजसभा धर्मोपदेशक, ईश्वर का

ईश्वर कर्तव्य का प्रतिपादन, क्रिया अक्रिया, सुकृत-दुष्कृत आदि का निषेध

ईश्वर कारणिकवादी श्रमण का भोगमय जीवन

१२ राजा, राजसभा, धर्मोपदेशक, नियतिवादी द्वारा नियतिवाद का प्रतिपादन. क्रिया-अक्रिया, सुकृत-दुष्कृत आदि का निषेध

१३ भिक्षावृत्ति स्वीकार करना तथा एकत्व भावना भावित श्रमण का तत्त्वज्ञान

१४ गृहस्थ और अन्य तीर्थिकका सावद्य जीवन.

श्रमण का निरवद्य जीवन.

१५ छ जीवनीकाय की हिंसा का युक्तिपूर्वक निषेध, समस्त तीर्थ-करों द्वारा अहिंसा का प्रतिपादन

क प्राणातिपात से विरत और अनाचार सेवन न करनेवाला भिक्षु

ख संयम साधना से भिक्षु का स्वर्ग या सिद्धलोक में गमन

ग अनासक्त पाप-विरत भिक्षु

घ प्राणातिपात से सर्वथा विरत भिक्षु

ङ काम भोग से सर्वथा विरत भिक्षु

च क्रोधादिपूर्वक की गई सांपरायिक क्रिया से सर्वथा विरत भिक्षु

छ क्रीत आदि दोष रहित आहार लेने वाला भिक्षु

ज गृहस्थ के निमित्त बने हुए आहार को अनासक्त होकर खाने-वाला और समस्त कार्य यथा समय करनेवाला भिक्षु

झ निस्पृह होकर धर्मोपदेश करनेवाला भिक्षु

ञ उक्त सर्वगुण संपन्न भिक्षु के उपदेश से भव्य आत्माओं का उद्धार

श्रमण के गुण

श्रमण के चौदह पर्याय वाची

द्वितीय क्रिया-स्थान अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- १९ दो प्रकार के स्थान
 १ धर्म स्थान २ अधर्म स्थान
 १ उपशान्त स्थान २ अनुपशान्त स्थान

तेरह क्रियास्थान

अधर्म स्थान

- १७ प्रथम अर्थ-दण्ड की व्याख्या
 १८ द्वितीय अनर्थ-दण्ड ..
 १९ तृतीय हिमा-दण्ड ..
 २० चतुर्थ अकस्मात् दण्ड की व्याख्या
 २१ पञ्चम दृष्टि विपर्यस्त दण्ड ..
 २२ षष्ठ सृष्टावाद प्रत्यक्षिक क्रियास्थान की व्याख्या
 २३ सप्तम सदत्तादान प्रत्यक्षिक की व्याख्या
 २४ अष्टम अध्वारम ..
 २५ नवम मान ..
 २६ दशम मित्र दोष ..
 २७ एकादश भाया ..
 २८ द्वादश मोक्ष ..
 २९ त्रयोदश धर्मस्थान, धर्माधिक क्रियास्थान की व्याख्या
 ३० पापशास्त्रो के नाम
 पापशास्त्रो के अध्ययनकर्त्ताओं की गति
 ३१ पापात्माओं के चतुर्दश पाप कार्य
 ३२ क महापापियों के कार्य, भोगमय जीवन बिनाभेवाने अनर्थ हैं, घूर्त हैं

त- अघर्म पक्ष हेय है

- ३३ धर्म पक्ष उपादेय है
 ३४ मिश्र पक्ष हेय है
 ३५-३७ अघर्म पक्ष (महा आरंभी गृहस्थों का वर्णन)
 ३८ धर्म पक्ष (मुनि जीवन का वर्णन)
 ३९ मिश्र पक्ष (धार्मिक गृहस्थों का वर्णन) यह मिश्र पक्ष उपादेय है
 ४० अघर्म पक्ष के आराधक ३६३ वादी
 ४१ हिंसा के समर्थकों का भवभ्रमण, अहिंसा के समर्थकों की मद्गति
 ४२ वारह क्रिया स्थान सेवियों का भवभ्रमण, तेरहवें क्रियास्थान सेवियों की मिद गति

सूत्र संख्या २७

तृतीय आहार परिज्ञा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- ४३ चार प्रकार के बीज, पृथ्वी योनिक वनस्पतियों का आहार वनस्पतियों की उत्पत्ति के कारण. वनस्पति में जीव के अस्तित्व की युक्ति पूर्वक सिद्धि
 ४४ वृक्ष योनिक वृक्षों के जीवों का आहार, वृक्षयोनिक वृक्षों में जीवों की उत्पत्ति का कारण
 ४५ वृक्ष योनिक वृक्षों में जीवों की उत्पत्तिका कारण, वृक्षयोनिक वृक्षों का आहार, वृक्ष योनिक वृक्ष के जीवों का शरीर
 ४६ वृक्ष के दक्ष अवयवों में भिन्न-भिन्न जीव और उन जीवों का आहार
 ४७ अध्यारुह वृक्षों की उत्पत्ति का कारण
 " का आहार

- ४८ अर्ध्याकृष्टाणी का कारण
योनिज
तृणा की उत्पत्ति का कारण
का आहार
का शरीर
- ४९ यानिज
तृणा व जीवा की उत्पत्ति का कारण
योनिज
तृण व जीवा का आहार
शरीर
- ५० दश अवयवा व भिन्न भिन्न जीव
उन जीवा का आहार और उन जीवों के शरीर
- ५१ तृण वनस्पति की उत्पत्ति का कारण
का आहार और शरीर
- ५२ पृथ्वी यानिज तृणा की उत्पत्ति व कारण
का आहार और शरीर
- ५३ तृण योनिज तृणों के दश अवयवों से भिन्न भिन्न जीव और
शरीर
- ५४ क आय काय काय आदि वनस्पतियों की उत्पत्ति का कारण
उनका आहार और शरीर सूत्र ४४ ४५ ४६ की पुनरावृत्ति
ख उक्त योनिक वनस्पतियों की उत्पत्ति का कारण
का आहार और शरीर
सूत्र ४४ ४५ ४६ की पुनरावृत्ति
- ग औषधि और हरित वनस्पतियों के सम्बन्ध से सूत्र ४३ ४४
४५ ४६ की पुनरावृत्ति
- घ उदक यानिज अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ उनकी उत्पत्ति,
आहार और शरीर

- ५५ पृथ्वी योनिक वृक्ष, वृक्ष योनिक वृक्ष और वृक्ष योनिक मूल-
इस प्रकार सबके ३-३ विकल्प हैं,
- ५६ पाँच प्रकार के मनुष्य, इनकी उत्पत्ति, आहार और शरीर
- ५७ जलचर जीवों की उत्पत्ति, आहार और शरीर
- स्थलचर " " " " "
- उपरिसर्प " " " " "
- भूजपरिसर्प " " " " "
- क्षेत्र " " " " "
- ५८ नाना प्रकार की योनियों में पैदा होने वाले जीवों की उत्पत्ति
आहार और शरीर
- ५९ वायु योनिक अप्काय में विविध प्रकार के जीवों की उत्पत्ति
आहार और शरीर
- ६० क- त्रस-स्थावर जीवों के शरीरों में अग्निकाय की उत्पत्ति
 " " " आहार और शरीर "
- ख- " " " वायुकाय की "
- ६१ " " " पृथ्वीकाय की "
- ६२ सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्त्वों की अनेक योनियों में "
इन जीवों की उत्पत्ति आहार और शरीरों का ज्ञाता मुनि
आहारिगुप्त आदि गुणों का धारक बने

सूत्र संख्या २०

चतुर्थ प्रत्याख्यान अध्ययन

प्रथम उद्देशक

६३ अप्रत्याख्याती आत्मा द्वारा सर्वदा पापकर्मों का उपार्जन

६४ प्रश्न— अव्यक्त विज्ञान वाले प्राणी पापकर्मों का उपार्जन कैसे

उत्तर— वे छ काय की हिंसासे एवं पापों से विरत नहीं हैं बघक का दृष्टान्त

६५ प्रश्न— जा प्राणी महष्ट या अधुत है उनके साथ वीर किस प्रकार हो सकता है ?

६६ उत्तर— मज्जी और बमनी का दृष्टान्त

६७ प्रश्न— मनुष्य सयत विरत आदि गुण सम्पन्न किस प्रकार हो सकता है ?

६८ उत्तर— छ काय की हिंसासे विरत भिणु एकान्त पवित है

सूत्र सप्त्या ६

पञ्चम आचार श्रुत अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गाथाक

- १ अनाचार सेवन न करने का उद्देश
- २ ५ जगन के संवेध में एकान्त वचन का प्रयोग न करना
- ३ ७ एवेदिद्व तया पचदिद्व की हिंसा के सम्बन्ध में एकान्त वचन का प्रयोग न करना
- ४ ८ आषाकम आहार सेवी के
- १० ११ भीमारिकादि शरीरों के
- १२ लोक और अलोक का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
- १३ जीव और अजीव का
- १४ अम और अवम का
- १५ बन्ध और मोक्ष का
- १६ पुण्य और पाप का
- १७ आश्रय और सवर का
- १८ वेत्ता और निवृत्त का
- १९ क्रिया और अक्रिया का

२०	क्रोध और मान का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
२१	माया और लोभ का
२२	राग और द्वेष का
२३	चार गति वाले ससार का
२४	देव और देवी का
२५	सिद्धि और असिद्धि का
२६	सिद्धि स्थान का
२७	साधु और असाधु का
२८-२९	कल्याण और पाप का
३०	जगत् और प्राणियों का
३१	साधुता के सम्बन्ध में सही दृष्टि रखने का उपदेश
३२	दान की प्राप्ति के सम्बन्ध में सही दृष्टि रखने का उपदेश
३३	मोक्ष पर्यन्त जिनोपदिष्ट धर्म की आराधना

षष्ठ आर्द्रकीय अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गाथांक

- १-२६ गोशालक आर्द्रकुमार संवाद
भ० महावीर के सम्बन्ध में गोशालक के आक्षेप

आक्षेप के विषय—

- क- भ० महावीर पहले एकचारी थे अब अनेकचारी हैं
ख- धर्मोपदेश—भ० महावीर की आजीविका है
ग- महावीर डरपोक हैं
घ- महावीर लाभार्थी वैश्य जैसा है

आर्द्र कुमार द्वारा आक्षेपों का समाधान

- २७-४२ शाक्य भिक्षुओं के साथ आर्द्र कुमार का संवाद

घाद के विषय

क वध्य प्राणी को जड़ वस्तु मानने पर हिमा नहीं होती

ग गानव भिक्षुओं को भाजन देने से पुण्य और स्वर्ग

आत्रकुमार का समाधान

४३ ४६ ब्राह्मणों के साथ आत्रकुमार का सवाद

वा० का विषय—ब्रह्मभोज करवाने से पुण्य और स्वर्ग प्राप्त होगा है आत्रकुमार द्वारा समाधान

४७ ५२ एक दृष्टि से क साथ आत्रकुमार का सवाद

वा० का विषय—एकस्मिन् आत्रकुमार द्वारा समाधान

५३ ५५ इति तापसों के साथ आत्रकुमार का सवाद

वा० का विषय—हिमा निर्दोष है

आत्रकुमार द्वारा समाधान

सप्तम नासदीय अध्ययन

प्रथम उद्देशक

६८ गजगृह का उपनगर नासदा

६९ नव मायापति का धार्मिक जीवन

७० मेमद्विषा—उदकमाया हस्तिनाम—वनसङ्ग

७१ म० मोक्ष और पार्श्वार्थ वेदान पुत्र का मित्र और सवा

७२ ७३ ऐनाम पुत्र द्वारा कुमार पुत्र निश्चय की प्रवाह्यान पद्धति की आलोचना

७४ म० मोक्ष द्वारा पार्श्वार्थ वेदान पुत्र की मायता का मन्त्र

७५ ७६ पा० ऐनाम पुत्र का जश श० के सम्बन्ध से प्रश्न

म० मोक्ष द्वारा समाधान

७७ पा० वेदान पुत्र का श्वरक की प्रवाह्यान पद्धति के सम्बन्ध में प्रश्न

- ७८ भ० गोतम का पार्श्वपत्य स्वधियों से प्रतिप्रश्न
 ७९ भ० गोतम द्वारा समाधान
 ८० भ० गोतम का आदर किये बिना ही पा० पेडान पुत्र का
 गमन
 ८१ भ० गोतम का पार्श्वपत्य पेडान पुत्र को गोकना, तथा
 भ० महावीर के पास लेजाकर पंच महाजन स्वीकार करवाना
-

द्रव्यानुयोग-प्रधान स्थानांग

(ज्ञानांग-न्यसरांग का ज्ञान धर्म स्थिति होता है)

भूगर्भस्थ	१
स्थान	१०
उद्देशक	२१
पद	२२०००
उत्पत्ति का परिमाण ज्ञान	२२००
मध्य मूल	१००
पद मूल	१००

आगमों का अध्ययन काल

१	वर्ष के दीर्घ को	साधारण प्रश्न
२	"	मूल प्रश्न
३	"	ज्ञानाभूगर्भस्थ, पृथ्वी का व्यवहार
४	"	स्थानांग, मननायांग
१०	"	भगवती मूल
११	"	मुद्रिका विमानादि पाँच साध्यम
१२	"	जगत्प्राप्ति आदि पाँच साध्यम
१३	"	उत्पत्ति भूत आदि चार साध्यम
१४	"	आशिमि भावना
१५	"	दृष्टिमि भावना
१६	"	चारण भावना
१७	"	महा स्वप्न भावना
१८	"	तेजो निर्मल
१९	"	दृष्टियाद
२०	वर्ष के दीर्घ को	शेष सर्व आगम

प्रश्न	प्रश्नक	प्रश्नक सूत्र मन्त्र	प्रश्नक ध्यान क सूत्र
१	१	३६	३६
२	१	७६	२०
	२	८०	४
	३	८४	१४
	४	११८	१४
३	१	१२२	३४
	२	१६७	१४
	३	१६०	२३
	४	२३६	४४
४	१	२७७	६३
	२	३१०	१३
	३	३३६	२६
	४	३८८	४६
५	१	४११	२३
	२	४४०	७६
	३	४७६	३६
६	१	५४०	६६
७	१	५८३	५३
८	१	६६०	६७
९	१	७०३	८१
१०	१	७८३	८०

गघ	रम	म्यर्ग
गुग्ग	मुग्ग	बृग्ग
दीर्घ	ह्रस्व	वृत्त
त्रिकोण	चतुष्कोण	त्रिम्बोर्ण
महत्वाकार	कृत्वा	मीन
मोक्षिण	हाम्बि	मुक्क
मुग्ग	दुर्ग	विक्क
चतु	चत्वार	आम्भ
मधु	कवन्	दुग्
हीन	ऊन	वृक्
मधु	मिन्ध	वृक्

४८ वाग

४९ वागविरति

२० अक्षरविहीन वाग के ६ आर, उम्भविहीन वाग के ६ आर

२१ व नीचीन दण्डों की वक्ता

न अक्षर निद्रिका की वक्ता

अक्षर निद्रिका की

नीचीन दण्डों के अक्षरनिद्रिका की वक्ता

अक्षरनिद्रिका की वक्ता

ग अक्षरनिद्रिका की वक्ता

नीचीन दण्डों के अक्षरनिद्रिका की वक्ता

अक्षर निद्रिका की वक्ता

नीचीन दण्डों के अक्षरनिद्रिका की वक्ता

अक्षर निद्रिका की वक्ता

नीचीन दण्डों के अक्षरनिद्रिका की वक्ता

व कृत्वा व विहा की वक्ता

नीचीन दण्डों के कृत्वाविहा की वक्ता

गघ	रम	स्पग
गुगळ	गुरुष	बुरुष
दीध	ह्रस्व	उत्त
त्रिकाण	चतुष्कोण	विस्तीर्ण
मन्वाकार	कृष्ण	नीम
लोहित	हार्ति	गुह्य
मुगध	दुग्ध	निक्क
कटु	वपाय	आम्ब
मधुर	वक्त्र	मृ
नील	उष्ण	१६
लघु	स्निग्ध	रग

४८ पाप

४९ पापविरति

५० अवसरिणी काल के ६ आरे = सविनी काल के ६ अ र

५१ क चौबीस दण्डों की वगणा

ख भव मिट्टिकों की वगणा

असद मिट्टिकों की

चौबीस दण्डों में भवमिट्टिकों की वगणा

असदमिट्टिकों की वगणा

ग सम्यग्दृष्टियों की वगणा

चौबीस दण्डों में सम्यग्दृष्टियों की वगणा

सम्यग् दृष्टियों की वगणा

चौबीस दण्डों में सम्यग्दृष्टियों की वगणा

सम्यग् मिथ्यादृष्टियों की वगणा

चौबीस दण्डों में सम्यग् मिथ्यादृष्टियों की वगणा

घ कृष्ण पाण्डिकों की वगणा

चौबीस दण्डों में कृष्णपाण्डिकों की वगणा

- ५२ जम्बूद्वीप की परिधि
 ५३ अतिम तीर्थंकर महावीर अकेले मुक्त हुए
 ५४ अनुत्तर देवों की अवगाहना
 ५५ आर्द्रा नक्षत्र का तारा
 चित्रा " " "
 स्वाति " " "
 ५६ पुद्गल
 एक प्रदेशावगाढ पुद्गल
 एक समय स्थिति वाला पुद्गल
 एक वर्ण वाला पुद्गल
 " ग्रंथ " "
 " रस " "
 " स्पष्ट " "

सूत्र संख्या ५६

द्वितीय स्थान
 प्रथम उद्देशक
 लोक में दो प्रकार के पदार्थ
 जीव-अजीव
 जीव
 सयोनि, अयोनि
 सायु, अनायु
 सेन्द्रिय, अनेन्द्रिय
 सवेदक, अवेदक
 सरूपी, अरूपी
 सपुद्गल, अपुद्गल

समान प्राप्ति असमान प्राप्ति

गाम्भिर्य गाम्भिर्य

अज्ञेय

१८ आकाश तो आकाश पद अथवा

१९ अथ मान पृथ्वी पद

आकाश मकर केन्द्रा निजरा

क्रिया विचार

१० क दो प्रकार की क्रिया

जीव क्रिया दो प्रकार का

अज्ञेय

ख दो प्रकार की क्रिया

कारिणी क्रिया दो प्रकार की

आधिकारिणी

ग दो प्रकार की क्रिया

आधिकारिणी क्रिया दो प्रकार की

पारितोषिणी

घ दो प्रकार की क्रिया

प्राणान्तरिकक्रिया दो प्रकार की

अप्रचाल्यक्रिया

ङ दो प्रकार की क्रिया

आरम्भिक क्रिया दो प्रकार की

परिष्कार

च दो प्रकार की क्रिया

माया प्रत्यक्षिकी क्रिया दो प्रकार की

मिथ्याज्ञान

छ दो प्रकार की क्रिया

दृष्टिका क्रिया दो प्रकार की

पृष्टिका „ „ „

ज- दो प्रकार की क्रिया

प्रातीत्यकी क्रिया दो प्रकार की

सामन्तोपनिपातिकी „ „

भ- दो प्रकार की क्रिया

स्वाहस्तिकी क्रिया दो प्रकार की

नैमृष्टिकी „ „ „

व- दो प्रकार की क्रिया

आज्ञापनिका क्रिया दो प्रकार की

वैदाग्णिणी „ „ „

ट- दो प्रकार की क्रिया

अनाभोग प्रत्यया क्रिया दो प्रकार की

अनवकाशा „ „ „

ठ- दो प्रकार की क्रिया

अनायुवत आदानता क्रिया दो प्रकार की

„ प्रमार्जनता „ „ „

ड- दो प्रकार की क्रिया

प्रेम प्रत्ययिका क्रिया दो प्रकार की

द्वेष „ „ „

६१ क-ख- गृही दो प्रकार की

६२ क-ख- प्रत्याख्यान दो प्रकार के

६३ मुक्त होने के दो कारण

६४ क- केवली कथित धर्म का श्रवण

ग- बोधि की प्राप्ति

ग- अनगार प्रव्रज्या

घ- ब्रह्मचर्य वास

४ समय

५ मन्त्र

६ मनिज्ञान-यावन-कवन ज्ञान की प्राप्ति न होने के दो कारण

६५ कवनी कविनि घम का अवन भवितु मनिज्ञान-यावन-नेवन ज्ञान प्राप्ति होने के दो कारण

६६ मुख ६८ के ममान

६७ समय (काय चक्र) के दो भेद

६८ इन्द्राद " "

६९ दो प्रकार के दण्ड

चौथीय दण्डको दो प्रकार के दण्ड

७० क दान दो प्रकार के

ख सम्प्रदान " "

ग नियम सम्प्रदान " "

घ अभिगम " "

ङ मिथ्या दान " "

च अभिप्रति मिथ्या दान

छ अनभिप्रति " "

ज्ञान के दो भेद

७१ क प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद

ख कवन ज्ञान , ,

ग अवस्थ कवन ज्ञान

घ सजोषी अवस्थ कवन ज्ञान के

ङ अज्ञानी " "

च मिद कवन ज्ञान "

छ अनन्तर मिद कवन ज्ञान

ज परपर , ,



द न वृद्ध दोषिन हृद्यस्य क्षाणं वपाय नीतराम समयम दो प्रकार का
प वैवरी

क भ मज्जावी वैवरी

म अजोही वैवरी

७३ क ञ दो प्रकार के पृष्ठीकाय यावन अवस्थान काय

क ञ

उ पृष्ठीकाय

ज ञ

भ पृष्ठीकाय

न हृद्य

७४ काल के दो भ

आकाश

७५ चौबीस दृष्टि के दो प्रकार

विषयगति प्राप्त जीवों के दो गरीर

चौबीस दृष्टि के दो कारणों से गरीर की रचना

गरीर प्राप्ति के दो कारण

दो प्रकार के काय

जन्म काय के दो भ

स्वावर

दिग्ग विचार

७६ पूर्व और उत्तर दिग्ग म करने योग्य नाय—

(१६) प्रत्यक्षा मंडन दिग्ग उपस्थापन महभोज महवाम
स्वाध्याय के निष्ठ आत्मे विरोध आदेन अध्यापन के लिए
आत्मे आलोचना प्रतिक्रमण दिग्ग महीं अतिचार त्याग के
लिए सकल्प अतिचार शुद्धि पुन अतिचार सेवन न करने की

प्रतिज्ञा, प्रायश्चित्त, संलेखना, पादपोषगमन

सूत्र संख्या २०

द्वितीय उद्देशक

- ७७- चौबीस दंडकों में वेदना
 ७८- चौबीस दंडकों में गति, आगति
 ७९- चौबीस दंडकों में भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक
 " " अनतरोपपन्नक, परपरोपपन्नक
 " " गति प्राप्त, अगति प्राप्त
 " " प्रथमसमयोत्पन्न-अप्रथमसमयोत्पन्न
 " " आहारक, अनाहारक
 " " श्वासोच्छ्वास सहित, श्वासोच्छ्वास रहित
 " " सेन्द्रिय, अनेन्द्रिय
 " " पर्याप्त, अपर्याप्त.
 " " संजी, असंजी
 " " भापा सहित, भापा रहित
 " " सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि
 " " अल्पसंसार भ्रमण वाले, अनंत संसार भ्रमण वाले
 " " संख्येय समय की स्थिति वाले
 " " असंख्येय समय की स्थिति वाले
 " " सुलभ बांधि, दुर्लभ बांधि
 " " कृष्णपाक्षिक, शुक्लपाक्षिक
 " " चरिम, अचरिम
- ८० क- अधोलोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
 तिर्यक्लोक " "
 ऊर्ध्व लोक " "
 सम्पूर्ण लोक " "

म ज्योतिष का ज्ञाना दो प्रकार से जानता है
विषय लोक

—व लोक

मध्युण लोक

ग १ प्रकार से आत्मा का मुक्तता है

घ २ प्रकार से

ङ ३ प्रकार से

च ४ प्रकार से

छ ५ प्रकार से

ज ६ प्रकार से

झ ७ प्रकार से आत्मा विषय प्रकाश करता है

झ ८ प्रकार से

ट ९ प्रकार से

ड १० प्रकार से

ण ११ प्रकार से

त १२ प्रकार से परिणाम करता है

थ १३ प्रकार से

द १४ प्रकार से

ध १५ प्रकार से

न १६ प्रकार से—दावन—

प १७ प्रकार से

फ १८ प्रकार से

ब १९ प्रकार से

भ २० प्रकार से

म २१ प्रकार से

न २२ प्रकार से

म २३ प्रकार से

दो प्रकार क रस
स्पर्श

८४ क आचार दो प्रकार का है
नो शानाचार
नो दशनाचार
नो चारिवाचार

ख ६ सूत्र प्रणिमा दो प्रकार की
ग सामायिक

८५ क वा का उपपन्न
उत्पन्न
अपन्न
की गम म उत्पत्ति
का गम मे आहार
की हृदि
हानि
का सक्रिय
गम्यतर म गमन
ममुखात्
की गम म वायव्य वर्याय
वा गम म निगमन
का गम म मरण
ग का चमि ममि मग्नामम लरी ६
का रज बीष म उत्पत्ति
ग ग प्रमाण की स्थिति
बाध स्थिति
भव
ग का आयु

दो प्रकार का कालायु

„ भवायु

„ के कर्म

„ का पूर्णायु

„ परिवर्तन वाला आयु

८६

जम्बुद्वीप में—दो-दो समान क्षेत्र

३ सूत्र—मेरु पर्वत से उत्तर दक्षिण में दो-दो क्षेत्र

१ सूत्र— „ पूर्व-पश्चिम में „

१ सूत्र— „ उत्तर-दक्षिण में „

दो समान वृक्ष

१ सूत्र—दो कुरुओं में दो वृक्ष दो देव

१ सूत्र—दो वृक्षों पर पल्योपम स्थिति वाले दो देव

८७

क- जम्बुद्वीप में—दो दो समान वर्षाधर पर्वत

३ सूत्र—मेरुपर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो दो वर्षाधर पर्वत

१ सूत्र— „ „ दो वृत्तवैताढ्य पर्वत

दो दो देव

१ सूत्र—वृत्त वैताढ्य पर्वतों पर पल्योपम स्थिति वाले दो दो देव

ख- जम्बुद्वीप में—दो दो समान वक्षस्कार पर्वत

१ सूत्र—मेरुपर्वत से दक्षिण में दो वक्षस्कार पर्वत

१ सूत्र— „ उत्तर

जम्बुद्वीप में दो दो समान दीर्घ वैताढ्य पर्वत

२ सूत्र—मेरुपर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो दो दीर्घ वैताढ्य पर्वत, दो दो समान गुफा

२ सूत्र—दो दीर्घ वैताढ्य पर्वतों पर दो दो समान गुफा, दो दो देव

२ सूत्र—इन गुफाओं में पल्योपम स्थितिवाले दो दो देव

ग जम्बुद्वीप मे दो दो समान ब्रू

बल्ल (होरा) हिमवत बषधर पवन पर दो ब्रू

महा हिमवत बषधर पवन पर दो ब्रू

निपय

नीलवत

रुक्मी

गिबरी

८८ क जम्बुद्वीप मे दो दो समान महा ब्रू

१ सूत्र—बुल्ल हिमवत बषधर पवन पर दो महा ब्रू

गिबरी

दो-दो देव

इन ब्रू पर पत्नोपम स्थिति बाने दो दो देव

१ सूत्र—महा हिमवत बषधर पवन पर दो महा ब्रू

रुक्मी

नो दो देव

इन ब्रू पर पत्नोपम स्थिति बाने दो दो देव

१ सूत्र—निपय बषधर पवन पर दो महाब्रू

नीलवत

दा दा देव

इन ब्रू पर पत्नोपम स्थिति बाने दो दो देव

न जम्बुद्वीप मे दो-दो नन्दि

महा हिमवत बषधर पवन के महाब्रू से निकल ने वाली

दो नन्दि

निपय

तिनिच्छ

नीलवत

केमरी

रुक्मी

महा पौंडरिक

ग जम्बुद्वीप के दो दो समान प्रपात ब्रू

भरत क्षेत्र में दो समान प्रपात इह		
हिमवन्त वर्ष	"	"
हरिवर्ष	"	"
महाविदेह	"	"
रम्यक् वर्ष	"	"
हिरण्यवन्त वर्ष	"	"
ऐरवत वर्ष	"	"

घ- जम्बुद्वीप में दो दो समान नदियां

भरत क्षेत्र में दो महानदियां	
हिमवन्त वर्ष	"
हरिवर्ष	"
महाविदेह	"
रम्यक् वर्ष	"
हिरण्य वर्ष	"
ऐरवत क्षेत्र	"

८६ क- जम्बुद्वीप में एक साथ उत्पन्न होने वाले उत्तम पुरुषों के दो दो वंश

भरत ऐरवत क्षेत्र में त्रिकालवर्ती दो अरिहन्त वंश

व-	"	"	चक्रवर्ती	"
ग-	"	"	दशार	"
घ-	"	"	दो अरिहन्त थे, हैं और होंगे	
ङ-	"	"	चक्रवर्ती	"
च-	"	"	वलदेव	"
छ-	"	"	वासुदेव	"

ज- जम्बुद्वीप में कालचक्र का अनुभव

झ- देवकुरु-उत्तर कुरु में सुपम-सुपम काल का अनुभव

ञ- हरिवर्ष-रम्यक् वर्ष में सुपम "

ट हिमवतवप हिरण्यवत वप मे शुषम दुषम वान का अनुभव

ठ गूब वि० पश्चिम विदेह म

ड भरत एरवत म छहो काता का अनुभव

६० जम्बुद्वीप के चन्द्र मूय आदि

दो चन्द्र दा मूय

हृत्तिका से भरणी पयल २८ मन्त्र को दा

अग्नि मे यम पय न मन्त्रो व अघिपति दो दो

अगारक मे भावकनु पयल दो दो ग्रह

६१ जम्बुद्वीप वेत्तिका की ऊचाई

लक्षण समुद्र का हृत्ताकार विष्कम्भ

वेत्तिका की ऊचाई

६२ क धानकी लण्ठ द्वीप के पूर्वाध मे सूत्र ८६ मे ८९ तक क समान

ल धानकी लण्ठ द्वीप के पश्चिमाध मे सूत्र ८६ मे ८९ तक क समान

ग हृत्त और देवो के नामा मे अन्तर

घ धानकी लण्ठ द्वीप मे वप-क्षेत्र हृत्त देव वपधर पवन

हृत्त अताड्य पवत वक्षस्कार पवन कूट ग्रह ग्रहवानी देवी

महानन्ती आनर नन्ती पञ्चवर्ती विजय विजया की राज

धानियों के नाम मेह पवत क वनस्पत अग्निदेक गिता

मेह जूला

६३ कालोन्वि समुद्र क वेत्तिका की ऊचाई

पुष्करवर द्वीप के पूवभाग का वपन

पश्चिमभाग

द्वीप— वेत्तिका की ऊचाई

समस्त द्वीप समुद्रो के बदिका की ऊचाई

६४ क १० सूत्र भवनवासी देवो के २० इन्द्र

ख १६ सूत्र-व्यनर देवो के ३३ इन्द्र

ग १ सूत्र ज्योतिषी , का २

ध- ५ मूत्र-वैमानिक देवता के १० पुत्र

उ- महाशुक्र और सहस्रार कला के विमानों के दो वंश

च- प्रेयेयक देवों की जंजाई

मूत्र-संख्या १३

चतुर्थ उद्देशक

६५ क- समय वाचक पचास नाम

ग- ग्रामादि वसति मूचक चवदह नाम

आराम आदि वाग " चार "

वाणी आदि जनामय " आठ "

प्रकीर्णक " छियालीस

जीव है अजीव है

ग- छाया आदि दश नाम जीव हैं, अजीव हैं

घ- राशि-जीव, अजीव

६६ क- दो प्रकार के बंध

ग- दो कारण से पापकर्म का बंध होता है

ग- " " " पापकर्मों की उदीरणा होती है

घ- " " " " का वेदन होता है

उ- " " " " की निर्जरा होती है

६७ क- दो प्रकार से आत्मा शरीर का स्पर्श करके निकलता है

" " " " को कंपित " " "

" " " " का भेदन " " "

" " " " संकोच " " "

" " " " को आत्मप्रदेशों से पृथक् करके

निकलता है

६८ दो प्रकार से आत्मा केवली कथित धर्म का भ्रवण करता है

- यावत्-मनः पर्यव ज्ञान प्राप्त होता है

६६ दो प्रकार का जीवमित्र कान

१०० शोथीय दण्डों में दो प्रकार का शोथ-वाहन मिथ्या ज्ञान उभय

१०१ क दो प्रकार के मसारी जीव

ख

मय

ग

के १४ भूष

१०२ अ० मन्वाचार ने दो दो मरणा का निषेध किया है

क मरण निषेध के ५ भूष

ख कारण में दो प्रकार के मरण का विधान

ग वाष्पोगमन मरण दो प्रकार का है

घ भक्षण प्रत्यागमन

१०३ क लोक दो प्रकार का है

ख म जनन दो हैं

ग

गाम्बन

१०४ क बाघी दो प्रकार की

ख

कुंड

क

ग

साह

का

घ

मूर्त

"

क

१०५ क नागावस्त्रीय कम दो प्रकार का

ख

दगनावस्त्रीय

ग

वस्त्रीय

घ

माह्नीय

ङ

आनु

च

नाम

छ

गोत्र

ज

अनराध

१०६ क मूर्च्छा दो प्रकार की

ख

प्रम मूर्च्छा

ग- द्वेप मूर्च्छा दो प्रकार की

१०७ क- आराधना "

ख- धर्मा राधना "

ग- केवली आराधना

१०८ क- दो तीर्थकर नील कमल के समान वर्ण वाले

ख- " " प्रियंगु " " "

ग- " " पद्मगौर " " "

घ- " " चन्द्रगौर " " "

१०९ सत्य प्रवाद पूर्व के दो वस्तु हैं

११० क- पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के दो तारे

ख- उत्तराभाद्रपदा " "

ग- पूर्वा फाल्गुनी " "

घ- उत्तरा " " "

१११ मनुष्य क्षेत्र में दो समुद्र

११२ सातवीं नक में जाने वाले दो चक्रवर्ती

११३ क- नागकुमार आदि भवनवासी देवों की स्थिति

ख- सौधर्म कल्प के देवों की उत्कृष्ट "

ग- ईशान " " " "

घ- सनत्कुमार " " जघन्य "

ङ- माहेन्द्र " " " "

११४ दो कल्पों में देवियाँ हैं

११५ " " देवों की तेजोलेश्या है

११६ क- " " के देव काय परिचारक हैं

ख- " " " स्पर्श "

ग- " " " रूप "

घ- " " " शब्द "

ङ- " " " मन "

- ११७ दा स्थाना म जीवों द्वारा पापदम क पुण्यमा का वेदाधिक
चपन-यावन् निजरा
- ११८ क दो प्रयोगो स्वयं
ग ने प्रयोगावगाड पुण्यन
ग दा समय की स्थितिवाले पुण्यन
घ दो गुण काव-यावन ने गुण कन् पुण्यन

सूत्र मन्त्रा १३

तृतीय स्थान

प्रथम उद्गक

- ११९ क-ग तीन प्रकार क ग
- १२० क-ग तीन प्रकार की विदुष्या-वर्द्धि गति
- १२१ उद्गीत दण्डों के सख्या ये स तीन प्रकार
- १२२ तीन प्रकार की परिचारणा
- १२३ क का मयुन
ख-ग मयुन सेवन करने वाल तीन ग
- १२४ क सोऽह दण्ड। मे तीन प्रकार के योग
ख प्रमाण
ग करण
घ चौबीस
- १२५ छ अन्दाधु दण्ड के तीन कारण
ख नीर्पायु
ग अगुम दीपायु
घ शुभनीर्पायु
- १२६ क तीन गुप्ति
सपन मनुष्या की तीन गुप्ति
ख सानह दण्डों मे तीन अगुप्ति
ग तीन प्रकार के दण्ड

घ- सोलह दण्डकों में तीन प्रकार के दण्ड

१२७ क- तीन प्रकार की गर्हा

ख- " के प्रत्याख्यान

१२८ क-ख- तीन प्रकार के वृक्ष इमी प्रकार तीन प्रकार के पुरुष

ग-घ- " " पुरुष

ङ- तीन प्रकार के पुरुष

च- उत्तम पुरुष तीन प्रकार के

छ- मध्यम " "

ज- जघन्य " "

१२९ क- तीन प्रकार के मच्छ

" " अंडज मच्छ

" " पोतज मच्छ

ख- " " पक्षी

" " अंडज पक्षी

" " पोतज पक्षी

ग- " " उरपरिसर्प

घ- " " भुजपरिसर्प

१३० क- तीन प्रकार की स्त्रियाँ

" " तिर्यंच स्त्रियाँ

" " मनुष्य "

ख- " " के पुरुष

" " तिर्यंच पुरुष

" " मनुष्य "

ग- " " नपुंसक

" " तिर्यंच नपुंस

" " मनुष्य "

१३१ " " तिर्यंच "

ग- तीन कारणों में देवताओं के शीतलकामिनी होते हैं

न- " शीतलकामिनी देव मनुष्य योनि में होते हैं

१३५ तीन का प्रत्युपकार दुष्टकर है

१३६ तीन कारणों में अनकार मकार का अंत करना है

१३७ क- तीन प्रकार की अमपिणी

ग- " उत्तमपिणी

१३८ क- तीन कारणों में अन्विष्ट पुद्गल चिन्ते होते हैं

ग- तीन प्रकार की उपधि

ग- पद्मदृष्टियों में तीन प्रकार की उपधि

ग- तीन प्रकार का परिग्रह

ग- शीतल दृष्टियों में तीन प्रकार का परिग्रह

ग- तीन प्रकार का परिग्रह

ग- शीतल दृष्टियों में तीन प्रकार का परिग्रह

१३९ क- तीन प्रकार का प्रणिधान

ग- " सुप्रणिधान

ग- मंथन मनुष्यों का तीन प्रकार का सुप्रणिधान

ग- तीन प्रकार का दुष्प्रणिधान

ग- शीतल दृष्टियों में तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान

१४० क- तीन प्रकार की योनी

ग- नव दंडकों में तीन प्रकार की योनि

ग- तीन प्रकार की योनी

ग- दश दंडकों में तीन प्रकार की योनी

ग- तीन प्रकार की योनी

ग- " "

कूमोन्नित योनि में उत्पन्न होने वाले तीन प्रकार के उत्तम पुरुष

१४१ तीन प्रकार के तृण वनस्पतिकाम

१४२ अट्टाई द्वीप में तीर्थ

अथमहिषियो की तीन परिपद्

स- सप्त भवनेन्द्रो की परिपदाये-क-के समान

स- सर्व व्यतरेन्द्रो " "

उ- सर्व वैमानिकेन्द्रो " "

१५५ क- तीन वाम

ख- केवलो कविन धर्म का श्रवण-वाचन-सु सुत्र महिमान-वाक्य
केवल ज्ञान की प्राप्ति तीन वाम म होती है

ग- तीन वय

घ- स के समान—तीन वय म होती है

१५६ क- तीन प्रकार की बोधी

स- ' ' क बुद्ध

ग- ' ' का माह

घ- ' ' के मूर्त

१५७ क- ध—तीन प्रकार की प्रवस्था

१५८ क- तीन प्रकार के निर्बंध सङ्गोपयोग रहित हैं

स- ' ' ' सहित और रहित भी हैं

१५९ क- नवदीनित को ऐदोपस्थापनीय चारित्र्य देने का समय
तीन प्रकार का

स- तीन प्रकार के स्थविर

१६० क- मन के तीन विकल्प तीन प्रकार के पुरुष

ख- गमन क्रिया ' '

अनीन काल "

वचमान "

मविष्य ' '

ग- गमन क्रिया का निषेध तीन प्रकार के पुरुष

अनीन काल " "

वचमान " "

भविष्य काल	तीन	प्रकार	के	पुरुष
घ- आगमन क्रिया	तीन	प्रकार	के	पुरुष
अतीत काल	"	"	"	"
वर्तमान "	"	"	"	"
भविष्य "	"	"	"	"
ङ- आगमन क्रिया का निषेध.	तीन	प्रकार	के	पुरुष ^३
अतीत काल	"	"	"	"
वर्तमान	"	"	"	"
भविष्य	"	"	"	"
च- खड़ा होना, खड़ा न होना	तीन	प्रकार	के :	
छ- बैठना, न बैठना				"
ज- हिंसा करना, हिंसा न करना				"
झ- छेदन करना, छेदन न करना				"
ञ- बोलना, न बोलना				"
ट- भाषण करना, न करना				"
ठ- देना, न देना				"
ड- गाना, न खाना				"
ढ- प्राप्त करना, प्राप्त न करना				"
ण- पीना, न पीना				"
त- सोना, न सोना				"
थ- लड़ना, न लड़ना				"
द- जीतना, न जीतना				"
ध- हारना, न हारना				"
न- सुनना, न सुनना				"
प- रूप देखना, रूप न देखना				"
फ- सूँघना, न सूँघना				"
ब- रसास्वादन करना, रसास्वादन न करना				

भ स्पर्श करना स्पर्श न करना तीन प्रकार के पुरुष
प्रत्येक विकल्प के साथ अतीत वर्तमान और भविष्य काल
का प्रयोग

१६१ क वृत्तिल को प्राप्त होने वाले तीन स्थान
मुत्तीन

१६२ क तीन प्रकार के समारी जीव
त्व सब

ग छ

१६३ क तीन प्रकार की लोक स्थिति
छ तीन स्थिति

ग तीन स्थिति में जीवा की गति

घ आपत्ति

ङ व्युत्पत्ति

च का आकार

छ की दृष्टि

ज हानि

झ गति पर्याप्त

ञ का समुत्पत्ति

ट की वानकृत अवस्था

॥ का दान का बोध

ड नान

॥ जीव

१६४ क तीन प्रकार के वन

ग स्थावर

१६५ क अद्वय है

छ अभेद

अदाह

घ-	तीन	अग्राह्य
ङ-	"	अनर्घ
च-	"	अमध्य
छ-	"	अप्रदेश
ज-		अविभाज्य

१६६ दुःख के सम्बन्ध में तीन प्रश्नोत्तर

१६७ दुःख की वेदना के सम्बन्ध में अन्य तीर्थियों का मन्तव्य और उसका निराकरण

सूत्र संख्या १५

तृतीय उद्देशक

१६८- (१) तीन कारणों से मायावी आलोचना नहीं करता

क-	"	"	"	प्रतिक्रमण	"
ख-	"	"	"	निन्दा	"
घ-	"	"	"	गर्हा	"
ङ-	"	"	"	बुरे विचारों का नाश	"
च-	"	"	"	विशुद्धि	"
छ-	"	"	"	योग्य प्रायश्चित्त स्वीकार	"

(२) तीन कारणों से आलोचना नहीं करता-क-से-छ-तक के समान

(३) " " " "

(१) क-तीन कारणों से मायावी आलोचना करता है

ख-	"	"	प्रतिक्रमण
ग-	"	"	निन्दा
घ-	"	"	गर्हा
ङ-	"	"	बुरे विचारों का नाश करता है
च-	"	"	शुद्धि करता है
छ-	"	"	योग्य प्रायश्चित्त स्वीकार करता है

(२) तीन कारणोंसे मायावी आलोचना करता है-क-से-द-तक के समान

(३) " " " " "

१६६ तीन प्रकार के पुरुष

१७० क- निर्णय विधियों के बन्ध वस्त्र तीन प्रकार के

ख- " " बन्ध "

१७१ वस्त्र धारण करने के तीन कारण

१७२ क- धारण रसा करने वाले तीन

ख- ग्लान निर्णय को पानी की तीन दक्षि माया-कल्पती है

१७३ तीन कारणों से साधवि निर्णय की विस्मयी करने पर
आज्ञा का उत्पन्न नहीं होता

१७४ क- तीन प्रकार की अनुज्ञा (शस्त्र पढ़ने की आज्ञा)

ख- ' समनुज्ञा " "

ग ' ' उपमपदा (अग्न्य गण ॥ आचार्य को आचार्य
मानना)

घ- का विग्रह (गण धाडना)

१७५ क तीन प्रकार के वचन

ख ' के अवचन

ग " के मन

घ ' के अमन

१७६ क अन्न दृष्टि के तीन कारण

ख महा

१७७ तीन कारणों से नवीन उत्पन्न देव इच्छा होने हुए भी
मनुष्य लोक में नहीं आसक्तता

१७८ क देवताओं की तीन कामनाएँ

ख तीन कारणों से देवता दुःखी होता है

१७९ क अयन (मरण) को जान लेना है

स- तीन कारणों से देवता उद्भिन्न होता है

१८० क- विमानों के तीन प्रकार के आकार

ख- " " " आधार

ग- तीन प्रकार के विमान

१८१ क- सोलह दंष्ट्रों में तीन दृष्टियां

ख- तीन प्रकार की दुर्गती

ग- " " मुगती

घ- दुर्गति प्राप्त तीन

ङ- मुगति " "

१८२ क- एक उपवास करने वाले को तीन प्रकार का पानी कल्पता है

ख- दो " " " "

ग- तीन " " " "

घ- तीन प्रकार का उपहृत (वरत्तन में निकालकर रखे हुये भोजन को लेने का अभिग्रह)

ङ- " " अवगृहीत (पानी में लिये हुए भोजन को लेने का अभिग्रह)

च- तीन प्रकार का ऊनोदर तप

छ- " " उपकरण ऊनोदर तप

ज- निग्रंथ के लिये तीन अहितकारी कार्य

झ- " " हितकारी "

ञ- तीन प्रकार के शल्य

ट- तेजोलेख्या की तीन प्रकार से साधना

ठ- त्रैमासिकी भिक्षु प्रतिमा की विधि

ड- एक रात्रिकी भिक्षु प्रतिमा की सम्यक् आराधना न करने से-
-होने वाली तीन विपदायें

ढ- एक रात्रि की " " करने " संपदायें

१८३ अट्ठाई द्वीप में तीन-तीन कर्मभूमि क्षेत्र

- १- तीन कारणों से देवता उद्विग्न होता है
- २- विमानों के तीन प्रकार के आकार
 - ३- " " " आकार
- १- तीन प्रकार के विमान
 - २- सोलह दंडकों में तीन दृष्टियां
 - ३- तीन प्रकार की दुर्गंती
 - ४- " " " मुगंती
 - ५- दुर्गंति प्राप्त तीन
 - ६- मुगंति " "
 - ७- एक उपवास करने वाले को तीन प्रकार का पानी कल्पता है
 - ८- दो " " " "
 - ९- तीन " " " "
 - १०- तीन प्रकार का उपहृत (वरतन में निकालकर रखे हुये भोजन को लेने का अभिग्रह)
 - ११- " " अवशृहीत (थाली में लिये हुए भोजन को लेने का अभिग्रह)
 - १२- तीन प्रकार का ऊनोदर तप
 - १३- " " उपकरण ऊनोदर तप
 - १४- निर्ग्रय के लिये तीन अहितकारी कार्य
 - १५- " " हितकारी "
 - १६- तीन प्रकार के शल्य
 - १७- तेजोलेख्या की तीन प्रकार से साधना
 - १८- त्रैमासिकी भिक्षु प्रतिमा की विधि
 - १९- एक रात्रिकी भिक्षु प्रतिमा की सम्यक् आराधना न करने से-
 - २०- एक रात्रि की " " होने वाली तीन विपदायें
 - २१- " " " " " " संपदायें
 - २२- अट्टाई द्वीप में तीन-तीन कर्मभूमि क्षेत्र

- क जम्बुद्वीप में तीन कमभूमि क्षेत्र
 ख घातकी खड द्वीप के पूर्वांश में तीन कमभूमि क्षेत्र
 ग पश्चिमाध में
 ग पुष्करवर द्वीपाध के पूर्वांश में
 घ पश्चिमाध में
- १८४ क तीन प्रकार के दहन
 ख की दहो
 ग का प्रयोग
- १८५ क का व्यवसाय
 ख
 ग
 घ इह लौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का
 छ लौकिक
 घ बहिर्
 छ सामयिक
 ज अर्थोत्पत्ति के तीन कारण
- १८६ क तीन प्रकार के पुद्गल
 ख नरको के तीन आधार
 ग आधारों के सम्बन्ध में नरों की अपेक्षा में विचार
- १८७ क तीन प्रकार का मिथ्यत्व
 ख की ब्रह्मिया
 ग प्रयोग किया
 घ भामुनायिकी किया
 छ का अज्ञान
 च अविनय
 द अज्ञान

१८८ क- तीन प्रकार का धर्म

ख-	"	"	उपक्रम
ग-	"	"	"
घ-	"	"	उभयोपक्रम
ङ-	"		का वैयावृत्य
च-	"		का अनुग्रह
छ-	"	"	अनुशासन
ज-	"	"	उपालम्भ

१८९ क- तीन प्रकार की कथा

ख-	"	का विनिश्चय
----	---	-------------

१९० पर्युपासना के फल की परम्परा

सूत्र संख्या २३

चतुर्थ उद्देशक

१९१ क- प्रतिमाधारी तीन प्रकार के उपाश्रयों की प्रतिलेखना करे

ख-	"	"	"	"	आज्ञा ले
ग-					में प्रवेश करे
घ-	"	"	"	"	संस्तारकों की प्रतिलेखना करे
ङ-	"	"	"	"	आज्ञा ले

१९२ क- तीन प्रकार का काल

ख-	"	"	"	समय
ग-	"	"	"	आवलिका-यावत्-तीन प्रकार का अवसर्पिणी काल
घ-	"	"		के पुद्गल

१९३ क-ग-" " के वचन

१९४ क- तीन प्रकार की प्रज्ञापना

ख-	"	"	के सम्यक्
ग-	"	"	उपघात

घ	तीन प्रकार की विमुक्ति
११५ क	तीन प्रकार की आराधना
ख	नाना आराधना
ग	दश आराधना
घ	चार आराधना
ङ	के सत्त्व
च	असत्त्व
छ	अनिष्टम
ज	व्यतिष्ठम
झ	अनिष्टार
ञ	अनाचार

११६ प्रायश्चित्त

११७ महाई द्वीप में तीन-तीन अक्षयभूमियाँ

क	नम्बद्वीप के मेरु से दक्षिण में तीन अक्षयभूमियाँ
ख	उत्तर
ग	पातलीश्वर द्वीप के पूर्वार्ध में मेरु से दक्षिण में
घ	पश्चिमाध में उत्तर में
ङ	पुष्करवर् द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में दक्षिण में
च	पश्चिमाध में उत्तर में

अर्थात् द्वीप में तीन-तीन-क्षेत्र करने पर एक के समान

वद परपराग

महा-ह

देव

महानन्द्या

अनरन्ध्या

११८ क प्रायश्चित्त भूकर्म के तीन प्रकार

- ख- सार्वदेशिक भूकम्प के तीन कारण
 १९९ क- तीन प्रकार के किल्विपिक देव
 ख- किल्विपिक देवों का स्थान
 २०० क- शक्रेन्द्र के वाह्य परिपद् के देवों की स्थिति
 ख- „ आम्यंतर „ देवियों „
 ग- ईशानेन्द्र के वाह्य „ „ „
 २०१ क- तीन प्रकार का प्रायश्चित्त
 ख- अनुद्धातिको को (गुरु) प्रायश्चित्त
 ग- „ पारचिक „
 ग- „ अनवस्याप्य „
 २०२ क- तीन शिक्षा के अयोग्य
 ख- „ मुडित करने के „
 ग- „ शिक्षा „ „
 घ- „ उपस्थापना „ „
 ङ- „ सहभोज „ „
 च- „ सहवास „ „
 २०३ क ख- „ वाचना „ „
 ग- „ दुर्वोध्य
 घ- „ सुख बोध्य
 २०४ „ माडलिक पर्वत
 २०५ „ परिमाण में सबसे महान्
 २०६ क-न-„ प्रकार की कल्प स्थिति
 २०७ क- चौदह दंडको में तीन शरीर
 ख- सात „ „ „ „
 २०८ क- तीन गुरु प्रत्यनीक
 ख- „ गति „

- | | | | |
|-----|-----|-------------------|-------------------------|
| व | तीन | समूह | प्रयत्नीक |
| घ | | अनुकंपा | |
| ऊ | | भाव | |
| च | | श्रुत | |
| २०६ | क | तीन | विश्वग |
| | ख | | माध्यम |
| २१० | | निग्रह | की महानिजरा के तीन कारण |
| २११ | | तीन प्रकार का | पुद्गल प्रतिघात |
| २१२ | | | के चतु |
| २१३ | | का | अभिमतानम-वशाथ मान |
| २१४ | क | तीन प्रकार की | श्रद्धा |
| | ख | | देवश्रद्धा |
| | ग | ध | राश्रद्धा |
| | घ | | गणि श्रद्धा |
| २१५ | | तीन प्रकार के | मन |
| २१६ | | | कारण |
| २१७ | | | धम |
| २१८ | | की | व्यावृत्ति निवृत्ति |
| २१९ | | का | धन |
| २२० | क | तीन प्रकार के | जिन |
| | ख | | नेवली |
| | ग | | अरिहन् |
| २२१ | क | तीन दुग्ध चानी से | या |
| | ख | | सुग्ध |
| | ग | | दुग्ध गामिनी |
| | घ | | सुग्ध |
| | ऊ | | सक्लिष्ट |

च- तीन असंक्लिष्ट लेश्या

छ- " मनोज्ञ "

ज- " अमनोज्ञ "

झ- " अविशुद्ध "

ञ- " विशुद्ध "

ट- " अप्रशस्त "

ठ- " प्रशस्त "

ड- " शीत-रुक्ष "

ढ- " उष्ण-स्निग्ध "

२२२ क- तीन प्रकार के मरण

ख- " " " बाल मरण

ग- " " " पंडित मरण

घ- " " " बाल-पंडित मरण

२२३ क- अव्यवसित के लिए तीन अहितकारी

ख- व्यवसित " " हितकारी

२२४ प्रत्येक पृथ्वी के तीन वलय

२२५ उन्नीस दंडकों में तीन समय की विग्रहगति

२२६ क्षीण मोह अरहंत के तीन कर्मप्रकृतियों का एक साथ क्षय

२२७ क- अभिजित के तीन तारे

ख- श्रवण " " "

ग- अश्विनी " " "

घ- भरणी " " "

ङ- मृगशिर " " "

च- पुष्य " " "

छ- जेष्ठा " " "

२२८ भगवान धर्मनाथ और भगवान शान्तिनाथ का अन्तर

- २२६ भ० महावीर के पञ्चान् होने धान तीन गुण पुष्प
 २३० भ० महावीर के चौदह पूर्वी मुनि
 २३१ तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती थे
 २३२ श्रद्धेयक देवों के तीन विमान प्रस्तुत
 २३३ जीवों द्वारा तीन प्रकार की पाप कम प्रकृतियों के पुद्गलों
 का नैकालिक अवन—यावत् निजरा सूत्र ११७ के समान
 २३४ क तीन प्रदेयी स्वयं
 ल , प्रदेयावगात्र पुद्गल
 ग , समय की स्थितिलाले पुद्गल
 घ , गुण काले पुद्गल यावत्-तीन गुण स्वे पुद्गल

सूत्र सख्या ५४

अनुर्थ-स्थान

प्रथम उद्देशक

- २३५ चार अनविद्या सिद्ध मनि प्राप्त होने के कणाय
 उन्नत प्रणत
 २३६ क चार प्रकार के हान इसी प्रकार चार प्रकार के पुष्प
 उन्नत परिणत प्रणत परिणत
 ग चार प्रकार के रुध इसी प्रकार चार प्रकार के पुष्प
 उन्नत मन प्रणतमन
 घ चार प्रकार के पुष्प
 उन्नत प्रणत
 ह- चार प्रकार व मन्त्र
 ख की प्रज्ञा
 ए की दृष्टि
 ज का धीनश्चार
 झ , का व्यवहार

ट- चार प्रकार का पराक्रम

ऋजु-वक्र

ठ-	चार	प्रकार	के	वृक्ष, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
ड-	"	"	"	"
ढ-	"	"	"	"
ण-	"	"	"	पुरुष
त-	"	"	"	सकल्प
थ-	"	"	की	प्रज्ञा ^{ज्ञान}
द-	"	"	की	दृष्टि
ध-	"	"	का	शीलाचार
न-	"	"	"	व्यवहार
प-	"	"	"	पराक्रम

२३७ पडिमायुक्त अणगार के कल्प्य चार भाषा

२३८ चार भाषा

शुद्ध-अशुद्ध परिणत रूपमन

२३९ क- चार प्रकार के वस्त्र, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

ख- " " " " " " " "

ग- चार प्रकार के वस्त्र, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

घ- चार प्रकार के वस्त्र " " " "

ङ- " " " सकल्प-यावत्-पराक्रम, सूत्र २३६ के समान

२४० चार प्रकार के पुत्र

सत्य-असत्य

२४१ क- चार प्रकार के मंकल्प-यावत्-पराक्रम, सूत्र २३६ के समान

शुचि-अशुचि

ख- चार प्रकार के वस्त्र, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष, परिणत-

यान्त-गराक्रम सूत्र २३६ के समान

फलदान

२४२ फलदान—चार प्रकार के बीरक (मजरी) इसी प्रकार
चार प्रकार के पुष्प

२४३ तप—चार प्रकार क धुन, इसी प्रकार चार प्रकार के भिक्षु

२४४ चार प्रकार का कृष्ण वनस्पतिदाय

२४५ चार कारणा से नैरिखी वा मनुष्य लोक में न आमरता,

२४६ निर्द्विषयो को कल्पनीय चार चहरें और उनका परिमाण

२४७ चार ध्यान, प्रत्येक ध्यान के चार चार प्रकार, ध्यान के
लक्षण आलवन और अनुप्रेक्षा

२४८ चार प्रकार की वैव स्मिति

ल , का सवास मेषुल

२४९ क- चौबीस दृष्टको में चार कथाय

ल- चौबीस दृष्टको में कथायो के चार आधार स्थान

ग , , की उत्पत्ति के चार कारण

घ - चार प्रकार का त्रीध

च-छ , , मान

ज क , , माया

झ-ट , , सीमा

२५० क (चौबीस दृष्टको में) अनीत काल में आठ कर्म प्रवृत्तियों के
चयन के चार करण

वर्तमान ,

मविष्य ,

ल चौबीस दृष्टको में सीव काल में आठ कर्म प्रवृत्तियों के उप-
चयन के चार कारण

ग- चौबीस दण्डकों में (तिन काल में) आठ कर्म प्रकृतियों के
बंध के चार कारण

घ-	„	„	„	„	उदीरणा	„
ङ-	„	„	„	„	वेदना	„
च-	„	„	„	„	निर्जरा	„

२५१ क- चार पडिमा

२५२ क- चार अस्तिकाय

„ अरूपि „

वय एवं श्रुत से पक्व या अपक्व

२५३ चार प्रकार के फल, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

२५४ क- „ „ का सत्य

ख- „ „ की मृपा

ग- „ „ का प्रणिधान

घ- „ „ का सुप्रणिधान

ङ- „ „ „ दुष्प्रणिधान

१६ पंचेन्द्रिय दंडकों में „

२५५ क- सद् व्यवहार (चार प्रकार के पुरुष)

ख- दोष दर्शन „ „ „

ग- „ कथन „ „ „

घ- „ उपशमन „ „ „

आभ्यन्तर तप विनय—चार प्रकार के पुरुष

१ अभ्युत्थान, २ वंदना, ३ सत्कार, ४ सम्मान,

५ पूजन, ६ स्वाध्याय, ७ वाचना देना, ८ पूछना, ९ बार-बार

१० पूछना, ११ व्याख्या करना, १२ सूत्र, अर्थ, तदुभय,

२५६ क- भवनेन्द्रों के लोकपाल

ख- वैमानिकेन्द्रों „ „

- ग चार प्रकार के वायु कुमार
 २५७ चार प्रकार के देव
 २५८ , , , प्रमाण
 २५९ की देविषा
 चार रिशा कुमारियाँ
 , विद्युत् ,
 २६० देव स्थिति चार पत्नोपम
 वाकेन्द्र की मध्यम परिपद् के देवों की स्थिति
 , , , देवियों , ,
 २६१ चार प्रकार का ससार
 २६२ , दृष्टिवाद
 २६३ कल चार प्रकार का प्रायश्चित्त
 २६४ , , , काम
 २६५ , , पुण्यस परिणमन
 २६६ चार महावन
 भरत ऐरवत के बाईस तीर्थकरों द्वारा चार महाजनो का कथन
 महा विदेह के मर्ष भरहृतो , ,
 २६७ क चार दूमति
 ख दूमति
 ग दूमति प्राप्त जीव
 घ दूमति
 २६८ क अहन्तो के सब प्रथम (प्रथम समय के) चार घाति नमों का क्षय
 ख- सिद्धो , , , अघाति , ,
 २६९ हास्योत्पत्ति के चार कारण

२७० चार प्रकार की विशेषता, इसी प्रकार स्त्री अथवा पुरुष की विशेषता

२७१ " " के भृत्य

२७२ " ; की लोकोत्तर पुरुष की विशेषता

२७३ समस्त लोक पालो की अग्रमहिषियाँ

" इन्द्रो की "

२७४ चार गोरस की विकृतियाँ

" स्नेह "

" महा "

२७५ वस्त्रावृत देह या गुप्तेन्द्रिय

क- चार प्रकार के घर, इसी प्रकार चार के पुरुष, वस्त्रावृत देह या गुप्तेन्द्रिय

ख- चार प्रकार की कूटागार शाला इसी प्रकार चार प्रकार-
की शिखा

२७६ शरीर की अवगाहना

चार प्रकार की अवगाहना

२७७ चार अगवाह्य प्रज्ञप्तिर्याँ

सूत्र संख्या ४३

द्वितीय उद्देशक

२७८ कषाय निग्रह

क- चार प्रति सलीन

" अप्रति मलीन

मन आदि का निग्रह

ग- चार प्रति सलीन

" अप्रति सलीन

२७९ (१७) चार चार प्रकार के पुरुष. दीन-अदीन

१ परिणत २ रूप ३ मन ४ मरुत ५ प्रज्ञा ६ दृष्टि ७ ज्ञाना
चार ८ व्यवहार ९ पराक्रम १० दृष्टि ११ ज्ञानि १२ भाषी
१३ अवभाषी १४ सुखा १५ पर्याप्त १६ परिवार

२८० (१८) आद्य-अनाद्य चार चार प्रकार के पुरुष
(१९) परिणत ज्ञानि की पुनरावृत्ति और १ भाव

२८१ धर्मा

क चार प्रकार के रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

ख ज्ञानि-ज्ञान म धर्म

चार प्रकार के रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

ग ज्ञानि और ज्ञान म धर्म

चार प्रकार के रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

घ अति और कम म धर्म

चार प्रकार के रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

ङ रूप और मन म धर्म

चार प्रकार के रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

च रूप और मन म धर्म

चार प्रकार के रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

ज ज्ञान-अज्ञान धर्म—भीत और विविध स्वभाव

चार प्रकार के दृष्टि इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

झ मन मन दृष्टि और मरुत

चार प्रकार के रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

ञ मन मन मन और मरुत

चार प्रकार के रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

ट मन मन मन और मरुत

चार प्रकार के दृष्टि इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

- ठ- भद्र, मंद, मृदु और संकीर्ण के लक्षण. चार गाथा
- २८२ क- चार विकथा, चार स्त्री कथा, चार भक्त कथा, चार देश कथा,
चार राज कथा
ख- चार धर्मकथा, चार आक्षेपिनी कथा, चार विक्षेपणी कथा,
चार संवेगनी कथा, चार निर्वेदिनी कथा
- २८३ क- दुर्वल शरीर और दृढ़ भाव. चार प्रकार के पुरुष
ख- " " शरीर " " "
ग- ज्ञान दर्शन की उत्पत्ति " " "
- २८४ निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के ज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति में बाधक चार कारण .
- २८५ क- चार प्रतिपदाओं में अस्वाध्याय
ख- चार संध्याओं में "
ग- स्वाध्याय के चार काल
- २८६ चार प्रकार की लोकस्थिति
- २८७ क- विविध प्रकार का जीवन, चार प्रकार के पुरुष
ख- भव भ्रमण का अंत " " "
ग- क्रोध या अज्ञान " " "
घ- आत्म दमन " " "
- २८८ चार प्रकार की गर्हा
- २८९ क- संतुष्ट या समर्थ
ख- सरलता और वक्रता-चार प्रकार के मार्ग, इसी प्रकार चार
प्रकार के पुरुष
ग- क्षेम और अक्षेम-चार प्रकार के मार्ग, इसी प्रकार "
घ- क्षेम और अक्षेमरूप- " " "
ङ- अनुकूल और प्रतिकूल स्वभाव-चार प्रकार के शंख, इसी
प्रकार चार प्रकार के पुरुष
च- अनुकूल और प्रतिकूल स्वभाव
छ- चार प्रकार की धूमशिखा, इसी प्रकार चार प्रकार की स्त्रियाँ

अ चार प्रकार की अग्नि-विधा इसी प्रकार चार प्रकार की विधा
म अग्नि-विधा

उ अग्नि-विधा

२६० निद्रा-निद्रा-विधियों के साथ चार प्रकार से जान करे ता आत्मा
का उन्मथन नहीं होगा

२६१ अग्नि-विधा-विधियों के चार नाम

य चार प्रकार के अग्नि-विधियों का आचरण

२६२ अग्नि-विधा-विधियों के स्वभाव चार प्रकार के पुराण

न अग्नि-विधा-विधियों चार प्रकार का सेवा इसी प्रकार चार प्रकार
के पुराण

२६३ अग्नि-विधा

अ चार प्रकार का अग्नि-विधा इसी प्रकार चार प्रकार की भाषा
मान्य करने वाला की गति

न अग्नि-विधा

चार प्रकार के अग्नि-विधा इसी प्रकार चार प्रकार के मान
मान्य करने वाला की गति

ग अग्नि-विधा

चार प्रकार के अग्नि-विधा इसी प्रकार चार प्रकार के भाषा
मान्य करने वाला की गति

२६४ अग्नि-विधा-विधियों का समाचार

न अग्नि-विधा-विधियों की भाषा

ग अग्नि-विधा-विधियों के भाषा

२६५ अग्नि-विधा-विधियों का आचार

२६६ अग्नि-विधा

अ अग्नि-विधा-विधियों के भाषा

न अग्नि-विधा-विधियों के भाषा

- ग- चार प्रकार का बंधनोपक्रम
 घ- " " " उदीरणोपक्रम
 ङ- " " " उपशमनोपक्रम
 च- चार प्रकार का विपरिणमनोपक्रम
 छ- " " " अल्प-बहुत्व
 ज- " " " संक्रम—एक अवस्था से दूसरी अवस्था
 ज- " " " निधत्त-दृढतर बंधन
 ञ- " " " निकाचित-दृढतम बंधन

- २६७ चार एक संख्यावाले
 २६८ " बहु "
 २६९ " सर्व "
 ३०० पर्वत
 मानुषोत्तर के चार दिशाओं में चार कूट
 ३०१ जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में अतीत ७

- " " " " वर्तमान ७
 " " " " आगामी ७

- ३०२ अकर्मभूमि क्षेत्र
 क- जम्बूद्वीप में चार अकर्म भूमि
 ख- पर्वत
 जम्बूद्वीप में चार वैताड्य पर्वत
 ग- पर्वतवासी देव और उनकी स्थिति
 चार देवों के नाम
 घ- क्षेत्र
 जम्बूद्वीप में चार महाविदेह

मह निषत्-नीलवन वषधर पवता की ऊचाई

* वषधर पवन

ज वषधर पवन—

१ अम्बुदाय के महपवन म गृह म और सीमा म के उत्तर मे
चार वषधर पवन

दक्षिण मे

"

३

पश्चिम म

४

उत्तर म

५

चार विन्ध्यायो म " "

मन्विन्ध्या म (तीन काम म) चार चार

उत्तम पुरषो की उत्पत्ति

७

महपवन पर चार वन

८

अभिषेक गिताय

९ मह पवन का उपर स चौगाई

१० धानका नन् दाय पूर्वार्द्ध मे—सूत्र ३०१ से ३०९ तक
क समान

११ पुष्कर वर जोर क पश्चिमाध म—सूत्र २०१ से २०२

तक क समान

२०६

अम्बुदाय क द्वार

अम्बुदाय क चार द्वार द्वारा का चौदावें द्वार पर रहने वान
चार देव उनकी स्थिति

२०४

(३) सूत्र अन्तर्गत क (एक वन)

अम्बु जोर क महपवन म च महपवन वषधर पवन के चार
विन्ध्यायो मे (सवण समुद्र मे) २८ अन्तर्गत उन अन्तर
द्वारा मे रहने वाले मनुष्य (७) सूत्र अन्तर्गत के (एक वन)
अम्बुदाय क महपवन क चार विन्ध्यायो मे (सवण समुद्र म)
२८ अन्तर्गत उनमे रहने वान मनुष्य

३०५ क- पाताल कलश

चार महापाताल कलश इन कलशों में चार देव. देवों की स्थिति

ख- आवास पर्वत. देव

समुद्रीप के ल

र वेलंघर नागराज आवास

सब निषिद्ध नीलवत वषधर पवतो की ऊँचाई

३ वषधर पवत

४ व रस्कार पवत—

१ जम्बूद्वीप के मेरुपवन से पूव में और सीता नदी के उत्तर में
चार वरस्कार पवत

दक्षिण में

२

पश्चिम में

४

उत्तर में

५

चार विदिशाओं में

६

मन्त्रिण म (तीन काम में) चार चार
उत्तम पुरुषों की उत्पत्ति

७

मेरुपवत पर चार वन

८

अभिषेक गिलास

९ मेरु पवत की उपर म चौड़ाई

१० धानकी खड द्वीप पूर्वादि में मूत्र ३०१ से ३०२ तक
के समान

११ पुष्कर वर द्वीप के पश्चिमाध म—मूत्र ३०१ से ३०२
तक के समान

३०३

जम्बूद्वीप के द्वार

जम्बू द्वीप के चार द्वार द्वारों की चौड़ाई द्वारों पर रहने वाले
चार देव उनकी स्थिति

३०४

(३) मूत्र अन्तर्गो के (एक जमे)

जम्बू द्वीप के मेरुपवन में चार सद्भिपवन वषधर पवत के चार
विनिगात्रा में (लवण समुद्र में) २८ अन्तर्गो उन अन्तर
द्वीपों में रहने वाले मनुष्य (३) मूत्र अन्तर्गो के (एक जमे)
जम्बूद्वीप के मेरुपवत के चार विनिगात्रों में (लवण समुद्र में)
२८ अन्तर्गो उनमें रहने वाले मनुष्य

- चार प्रकार के वृक्ष, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
- ३१४ विश्राम स्थल
चार प्रकार के लौकिक विश्राम
 ,, लोकोत्तर ,,
लौकिक और लोकोत्तर विकास-ह्रास
- ३१५ चार प्रकार के पुरुष
- ३१६ चौबीस दण्डकों में चार प्रकार के युग्म
- ३१७ चार प्रकार के पराक्रमी पुरुष
- ३१८ प्रशस्त और अप्रशस्त अभिप्राय, चार प्रकार के पुरुष
- ३१९ चार लेश्या—१० भवन पति १ पृथ्वी १ अप १ वायु
१ वन; (१४ दंडकों में चार लेश्या)
- ३२० क- धर्म युक्त और धर्म अयुक्त
युक्त-अयुक्त, परिणत, रूप और शोभा ये चार विकल्प
चार प्रकार के यान, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
- ख- चार प्रकार की गालकी, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
“क” के चार विकल्पों की पुनरावृत्ति
- ग- कार्य बनाने वाला और कार्य बिगाड़ने वाला
चार प्रकार के सारथी, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
- घ- चार प्रकार के अश्व, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
“क” के चार विकल्पों की पुनरावृत्ति
- ङ- चार प्रकार के गज, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
“क” के चार विकल्पों की पुनरावृत्ति
- च- मोक्ष मार्ग गामी, और संसार मार्ग गामी, चार प्रकार के
मार्गगामी या उन्मार्गगामी, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
- छ- गुण सम्पन्न और गुण अ सम्पन्न
चार प्रकार के पुष्प, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

मिह्रासय के द्वारो के आगे चार मुख्य मंडप चार
मंडप चार अष्टाडे चार मणिपोठिका चार सिंहासन
विजय दूष्य चार वज्रमय अकुल चार चैत्य स्तूप चार
प्रतिमा चार चैत्य रुक्ष चार महेन्द्र ध्वज चार
पुष्करिणिया पुष्करिणिया का परिमाण चार सोपान
सोरण चार वनमंड चार दधिमुखपवन पवतो की
आदि

चार रतिकर पवन पवनों की ऊँचाई आदि
ईगाने इ की चार अग्रमहिवियो की चार चार
समस्त

३०५ चार प्रकार का सत्य

३०६ आजीविन सम्प्रदाय में चार प्रकार का तप

३१० क चार प्रकार का समय
ख- त्याग
ग की अनिच्छना

सूत्र सत्या ३३

तृतीय उद्देशक

३११ चार प्रकार का बोध वाधी की गति

३१२ गल और रूप

क चार प्रकार के पक्षी इमी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
विद्वान्त और अविद्वान्त

ख चार प्रकार के पुरुष

ग

प्रीति और अप्रीति

घ चार प्रकार के पुरुष

ङ

३१३ पण्डितकार भाव

ज धृष्ट और अधृष्ट

१ जानि-कुल २ जाति बल ३ जाति रूप

४ धृष्ट ५ नील ६ चरित्र

१ कुल बल २ कुल रूप ३ कुल धृष्ट

४ शील ५ चरित्र

१ धृष्ट रूप २ बल धृष्ट ३ बल नील ४ धृष्ट रूप

१ रूप धृष्ट २ रूप शील ३ रूप चरित्र

१ धृष्ट नील २ धृष्ट चरित्र

१ शील चरित्र

कुल सख्या २१ चार प्रकार के पुरुष

झ मधुरता

चार प्रकार की मधुरता इसी प्रकार चार प्रकार के आचार

ञ आ न सेवा पर सेवा चार प्रकार के पुरुष

ट सेवा करने वाला और सेवा नहीं करने वाला चार प्रकार

के पुरुष

ठ काय करने वाला अभिमान नहीं करने वाला चार प्रकार

के पुरुष

ड गण गण का काय

ड गण के योग्य सामग्री का मन्थन करने वाला किन्तु अभिमान

नहीं करने वाला चार प्रकार के पुरुष

ण गण की शोभा बढ़ावे वाला किन्तु अभिमान नहीं करने वाला

चार प्रकार के पुरुष

त गण की शुद्धि करने वाला किन्तु अभिमान नहीं करने वाला

चार प्रकार के पुरुष

थ निग और धम का त्याग धीमयी

द धर्म और गण का त्याग

ध धर्म प्रेम और धर्म में रहना चार प्रकार के पुरुष

न- चार प्रकार के आचार्य

प- " अंतेवामी

फ- " निर्ग्रन्थ

ब- " निर्ग्रन्थियां

भ- " श्रमणोपासक

म- " श्रमणोपासिकाएं

३२१ क.ग " श्रमणोपासक

३२२ मोक्षार्थ कल्प में उत्पन्न होने वाले भ० महावीर के श्रावकों की स्थिति

३२३ सशजानदेव के मनुष्य लोक में न आने के चार कारण
" " " आने के चार कारण

३२४ क- लोक में अंधकार होने के चार कारण

ग- " उत्थान " "

घ- देवलोक में अंधकार " "

— ————

- स- लौकिक, पञ्च-दरिद्र और बेगवान चार भग
 लोकोत्तर पक्ष ज्ञान रहित और ज्ञानवान "
- ग- अमम्यय व्रति और सम्यग् व्रति "
- घ- अपव्ययी मितव्ययी "
- ङ- पुनर्निर्वाणी और मुनर्निर्वाणी "
- च- प्राण प्राण "
- छ- लौकिक पक्ष-अन्धकार और प्रकाश
 लाकोत्तर पक्ष भजान , ज्ञान "
- ज- लौकिक पक्ष दुःखी , सुखी
 लाकोत्तर पक्ष भजानी , ज्ञानी "
- झ- अज्ञानानदी और ज्ञानानदी
 अज्ञानाभिमानो ज्ञानाभिमानो '
- झ- पाप कार्यों का त्यागी और पाप कर्मों का ज्ञानी चार भग
- ट- , किन्तु गृहस्थाधी नदी
- ड- ज्ञानी '
- ड- इहलोक सुखी और परलोक सुखी योगी
- ड- इहलोक और हानी
 ज्ञान दान की इच्छा हानी और राज देव की इच्छा हानी
 चार प्रकार के पुरुष
 लौकिक पक्ष बेगवान और बेग रहित
 लाकोत्तर पक्ष मुणी और अजगुणी
 विनीत अविनीत
 चार प्रकार के अश्व इमी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
 थरुठा जाति कुल जाति वन, जाति रुप, जाति दल, कुल-बल-
 कुल रूप कुल जय बल रूप, वन-जय
 चार प्रकार के अश्व, इमी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

उन्नत (वर्द्धमान) परिणाम और अवनत (हायमान) परिणाम

चार प्रकार के पुरुष

३२८ क-य- चार समान परिमाण वाले

३२९ क- उर्ध्वलोक में दो शरीर वाले चार

ख- अधो " " "

ग- तिरछे " " "

३३० लज्जा, चंचलता, स्थिरता, चार प्रकार के पुरुष

३३१ अभिग्रह

चार शय्या प्रतिमा

" वस्त्र "

" " "

" स्थान "

स अंगोपान्त से अक्षर करने वाले चार
नियन्तक स उद्योग

ऊ०

सूत्र सप्त्या २३

चतुष्टय उद्देशक

३४० चार प्रकार के प्रचारा

३४१ नगदिक का चार प्रकार का आहार
नियम

मनुष्या

स्था

३४२ चार प्रकार के आगिषिष और उनकी गति

३४३ चार प्रकार की व्याधिषा
चिकित्सा

स भौतिक पण-व्यय

माफोमर पण अनिवार

व्यय करने वाला व्यय का रंग करने वाला

अनिवार मयन करने वाला अनिवार का स्मरण करने वाला

ग भौतिक पण-व्यय करने वाला व्यय की रक्षा करने वाला

माफोमर पण अनिवार मयन करने वाला अनिवार मेरी का
मयन न करने वाला

घ भौतिक पण व्यय करने वाला व्यय का उपहार करने वाला

माफोमर पण अनिवार मयन करने वाला अनिवार की
प्र उद्दिष्टन से गुट्टि करने वाला

स्था के चार चार प्रकार के पुरुष

च भौतिक व्यय अन्य व्यय

माफोमर व्यय एक के मयन अनिवारी की आलोचना न
करने वाला

प्रभेद क चार चार विभक्त

३४७ चार प्रकार क भव

३४८ क चार और अचार

चार प्रकार क करह इसी प्रकार चार प्रकार के आचार

न मनाना और मुष्णना

चार प्रकार क ह्म इसी प्रकार चार प्रकार के आचार

न वाग्म्य अयोग्य आचार और वाग्म्य अयोग्य विषय

चार प्रकार के ह्म इसी प्रकार चार प्रकार के आचार

घ भिन्नाचर्य

चार प्रकार के भव इसी प्रकार चार प्रकार के भिन्नाचर

ङ धर्म की वचारित ह्मना और निवर्तना

चार प्रकार क नीच इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

च अथ गुण और अधिक गुण

चार प्रकार क नीच इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

छ मन लेन

चार प्रकार के पत्र

ज मन या अधिक स्नेह

चार प्रकार की चटाई

३५० क चार प्रकार के अनुपपन्न

ख सुप्रसाली

३५१ ममत्व और अममत्व

चार प्रकार के पक्ष इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

३५२ क लौकिक पक्ष कृण्हे और पुष्टदेह

लोकोत्तर पक्ष ह्म कषाय और अह्म कषाय

ख दुर्बल और मज्जल देह दुर्बल और सबल आत्मा

मनिन हृदय, पवित्र हृदय

चार प्रकार के कृष्ण इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

३६१ क चार प्रकार क उपमय

न उपमय देवहृत्

ग मानवहृत्

घ नियमहृत्

ङ स्वयहृत्

३६२ क ग चार प्रकार क कर्म

३६३ का सग

३६४ क की बुद्धि

न मनि

३६५ क क सगरी जीव

न सव

३६६ क मित्त गुरु चार प्रकार के पुरुष

■ मयन असुयन

३६७ क गति—आगति नियम वचन द्वय की शक्ति आगति

न मनुष्य जी

३६८ क के द्वय जीवा की रक्षा म चार प्रकार का समय

न हिमा असमय

३६९ मालिन मयन म चार विधा

३७० क विद्यमान गुण का नाश होने के चार कारण

न गुण का हृदय के चार कारण

३७१ क जीवीम मयन म चार कारण म गरीर की उ पति

न रचना

३७२ धम क चार साधन

मलिन हृदय पवित्र हृदय

चार प्रकार क कुम्भ इसी प्रकार चार प्रकार के पुष्प

३६१ क चार प्रकार क उपसंग

ल उपसंग देवहृत

ग मानवहृत

घ नियत्रहृत

ङ स्वयहृत

३६२ क ग चार प्रकार क वस

३६३ ना संग

३६४ क की बुद्धि

ल मति

३६५ क के समानी जीव

ल इ सब

३६६ क मित्र गुरु चार प्रकार के पुष्प

ल मयन समुपन

३६७ क गति—आगति नियत्र पञ्चद्रिय की गति आपति

ल मनुष्य की

३६८ क देर्गद्रिय जीवा की रक्षा स चार प्रकार का समय

ल हिमा असमय

३६९ मान लब्धता स चार विधा

३७० क विद्यमान सुख ना नाग जाने क चार कारण

ल गुणा की उद्वि क चार क रण

३७१ क चौबीस लोको स चार कारणा स शरीर की उत्पत्ति

ल रचना

३७२ धम स चार साधन

३७३ नमस्कार संघ के चार कारण
 नियंत्रण " "
 मनुष्य " "
 देवानु " "

३७४ चार प्रकार के राज
 " " नृप
 " " का महीन
 " " मान्य
 " " के अलंकार
 " " का अभिनय

३७५ क- मनुष्य और मातृद्रव्य के विमानों के चार वर्ण
 ग- महाशुक्र और महाभार कल्प के देवों की ऊर्ध्व

३७६ क- चार प्रकार के उदक गर्भ
 ग- " " "

३७७ " " का मानव

३७८ उत्पाद पूर्वके चार मूल वस्तु

३७९ चार प्रकार के काव्य

३८० नैरविकों और वायुकायिकों में चार समुद्रघात

३८१ भ० अरिष्ट नैमिष के चौदह पूर्वी मुनि

३८२ भ० महावीर के बादलवि गम्पन्न मुनि

३८३ नीचे के चार कल्पों की संस्थिति

मध्य " " "

ऊपर " " "

३८४ विभिन्न रम्याले चार समुद्र

३८५ चार प्रकार के आवर्त, दश प्रकार चार प्रकार का क्रोध
 क्रोध करने वालों की गति

३८६ नक्षत्रों के तारे

३ ३ अन्तर्गत पुनर्गता जीव उत्पत्ति का चार चार तारे
 का स्वभाव न पारम्य के पुनर्गता का वैज्ञानिक चयन
 उपर्युक्त
 वर
 उत्पत्ति
 वर
 निम्न

३८० पुनर्गता
 चार उत्पत्ति का स्वभाव अन्त
 उत्पत्ति का पुनर्गता
 समय की विनिर्माण पुनर्गता
 पुनर्गता-वर्तन चार चार पुनर्गता

समय अन्तर्गत ४४

पश्चिम स्वामी
 प्रथम उत्पत्ति
 ३८६ क पश्चिम स्वामी
 ल अन्तर्गत
 ३९० क पश्चिम-वर्तन मन्त अन्तर्गत
 च पश्चिम ३ के जीवों की अन्तर्गत
 " " का उत्पत्ति
 की उत्पत्ति
 उत्पत्ति
 मन्त का अन्तर्गत
 च पश्चिम ३ का अन्तर्गत जीवों के अन्तर्गत-वर्तन-मन्त
 उत्पत्ति के विनि
 च पश्चिम ३ का अन्तर्गत जीवों के अन्तर्गत-वर्तन विनि के लिए

- ४०० पाच निपट्या पाच आत्रय स्थान
 ४०१ क पाच प्रकार के ज्योतिषी दव
 ल पाच प्रकार के देव
 ४०२ की परिचारणा
 ४०३ क चमरे-द्र की पाच अग्रमद्विषया
 ल दले-द्र
 ४०४ क भवने दो की पाच पाच मेनाए पाच पाच सेनाधिपति
 ल वैमानिके-द्रो
 ४०५ क गऊ-द्र के अग्र्यन्तर परिपत्र के देवो की स्थिति
 ल ईगान-द्र की देविता
 ४०६ पाच प्रकार का प्रतिवध
 ४०७ की आशीर्विदा
 ४०८ के राज्य विद्व
 ४०९ क छत्रम्बाजम्बा मे परिपद्र सहने के पाच कारण
 ल सवनाजम्बा मे
 ४१० क व पाच प्रकार के हेतु
 इ छ महतु
 अ केवली के पाच पुत्र
 ४११ क म० पद्मप्रभ के पाच वस्त्राधिक
 ल म० पुण्यदन
 ग म० शास्त्र नाथ
 घ म० विमल नाथ
 ङ म० अनन नाथ
 च म० वध नाथ
 छ म० गानि नाथ
 ज म० कर्षु नाथ
 झ म० अर नाथ

इ एक (इकोनॉमिक) दृष्टिकोण से पेजव्यवस्था का निष्कर्ष है।

४२० पांच प्रकार की परिक्षा

४२१ वा व्यवहार

४२२ क सुप्त समय के पांच जागृत

अथर्वसूक्तं क सूक्तं

ए संसयन क पात्र आशुत

जाग्रत पाश्चात्त्याग्रत

४२३ क क्षम क्षय के पाच कारण

४५

४२४ पञ्च मानिकी मिश्र वटिका की विधि

४२५ पाँच प्रकार की संश्लेष एपिजा

Figure 1

४२६ वापि की दुःखभरता के पाच कारण

सत्यमेव जयते

४२७ पाच इन्द्रिय जय

ग्रन्थ

प्राथम्य संयोज

अभिलेख

४२६ पाष प्रकरि का मयंस

४२६ क ऐक्यिय जीवों की रक्षा से प्राप्त प्रकार का सदस

ऐरेन्थिज जीवा की हिसा से पाच प्रकार का असयम

Y3. क पनट्टय जीना रसा सयम

सं	दिना	विवरण
----	------	-------

यह क मव प्राण मव जीव और मवा की रक्षा करने से पाच प्रकार

आ सप्तम



अथ ५५

४३८ आचार और उपाध्याय के नाम के ३ अक्षर

४३९ के प्रथम ह्रस्व के ३ बागम

मू० संख्या १३

तृतीय उद्गात

४४० पाच प्रकार के अक्षरान् अनुध

४४१ पाच अक्षरान्

४४२ त्रि

४४३ क र्ग न्या के विषय

ल म

न

४४४ क अक्षर के मे मू० (अक्षर) का

अक्षर

विशेषता

ल पाच प्रकार के अक्षर मूल के

न वा

प अक्षर

४४५ क के विषय

ल पुनः

न व

प मूल

उ विषय

व मूल

४४६ क विषय विषयों के वर्ण करने वाले पाच प्रकार के वर्ण

ल एवम्

४४७ पाच विधा (आध्या) स्थान

४४८ विधि

४४९ प्रकार के पाच

स ज्ञान-नय—अविभाग

ग अन्त

घ

४६३ पाच प्रकार के ज्ञान

४६४ ज्ञानावरणीय कम

४६५ स्वाध्याय

४६६ प्रत्यास्थान

४६७ प्रतिबोध

४६८ क मूल बाधना के पाच कारण

ख तीव्र

४६९ क मोघम और ईमान कल्प के विमानों के पाच वन

ख की ऊँचाई

ग ब्रह्मलोक और लातक देवों की ऊँचाई

घ चौबीस दण्डों में पाच वन और पाच रस के पुद्गलों का
(अनात्मिक) वध

४७० मन्त्रिणी

क जम्बूद्वीप के मरुपर्वत से दक्षिण में गया में मन्दमे घासी
पाच दिशा

ख जमुना

ग मिथु

घ रत्न

ङ रत्नवती

४७१ शुभरावस्थ में दीक्षित होने वाले पाच तीव्रकर

४७२ सभी द्रव स्थानों में पाँच पाँच सभा

४७३ पाच-पाच त रा बाल पाच नक्षत्र

४७४ क पाच स्थानों में पापकर्मा के पुद्गलों का चक्र

उपनयन

वध

४८३ क ग छह प्रकार के सब धीव

४८४ तुष वनस्पतिकार्य

४८५ स्थान दुलभ

४८६ र द्विषो के विषय

४८७ क छत्र सदर

ख अमबर

४८८ क छत्र प्रकार का मुख

ख मुख

४८९ प्रायश्चित्त

४९० क-ख के मनुष्य

४९१ क ख

४९२ क अवमणि के छह आरा

ख उ त विषी

४९३ क अम्बुद्वीप के भग्न एरवत म —

१ जमीन उ त विषी के मुमममुममा आरा म मनुष्या की ऊचाई और आयु

२ वतमान अवमणि के

३ १ गामो उत्तमविषी के

ग अम्बुद्वीप क दक्कुरु और उत्तरकुरु म क के समान पुनरावृत्ति

ग धानकी खण्ण द्वीप के पूर्वाध और पश्चिमाध म क के समान पुनरावृत्ति

४९४ छह प्रकार के महान

४९५ सम्मान

४९६ मरुप य आ मा क ६ अन्तिवारी

अव गाम , हितकारी

४९७ क छह प्रकार के जाति आय

ग- ८१ अक्षर के दूध गाने

४६८ " " दो ओर गाने

४६९ ग- १०० दिना

ग- ८१ शिवाजी के जीवों की गाने

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

" " " " अक्षर

५०० ग- निर्देश के अक्षर गाने के ६ कारण

ग- " " अक्षर न गाने, " "

५०१ उम्माद होने के ६ कारण

५०२ प्रमाद के ६ कारण

५०३ ग- ६ प्रकार की प्रमाद प्रतिवेगना-धर्मापकरणों को देने में आलस्य करना

ग- ६ प्रकार की अप्रमाद प्रतिवेगना-धर्मापकरणों को देने में आलस्य न करना

५०४ छह निदया, दो (२०-२१वें) दण्डों में

- ५०५ क गङ्गा के साथ लोकापाल की छह अवमहिषिया
 ल यम
- ५०६ ईशाने के मध्य परिषद् के देवी की स्थिति
- ५०७ छह न्तिक कुमारियाँ, छह विजय कुमारियाँ
- ५०८ क वन्ध नायेड की छह अवमहिषिया—
 ल भुवानन्द
 ग गेप (नीति उत्तर) भवनेडा की ६ अवमहिषिया
- ५०९ क घन नायेड का ६ महान् नामाय देवियाँ
 ल भुवानन्द
 ग गेप (दक्षिण उत्तर) भवनेडा की ६ हजार नामाय देवियाँ
- ५१० पति के भक्त
 क छह प्रकार की अवग्रह मणि
 ल ईश मणि
 ग अवग्रह मणि
 घ धारणा
- ५११ तप के भक्त
 क छह प्रकार का वायु तप
 ल आत्मन्तर तप
- ५१२ विवाह
- ५१३ के सुप्राणी
- ५१४ लक्षणा मणि—छह प्रकार की विमानियाँ
- ५१५ क रत्नप्रभा के छह नरकावासो के साथ
 ल परप्रभा
- ५१६ ब्रह्मन्तर से छह विमान प्रसन्न
- ५१७ क नन्द के साथ तीन मुह्य रहनेवाले छह नक्षत्र
 ल के साथ पद्म मुह्य रहनेवाले छह नक्षत्र
 घ पनासिम

- ५२७ निर्देश विधियाँ के छह अवलम्ब वचन
- ५२८ क-य-मातु मर्त्या (प्रवर्धित) के छह प्रकार
- ५२९ क-य के छह पाठक
- ५३० छह प्रकार की कला स्थिति
- ५३१ म० मर्त्या की दीक्षा के पूर्व का ठग
 ' ' ' कथन ज्ञान में " " तब
 ' ' ' विधान में " " "
- ५३२ क मर्त्याकुमार और माहन्त्र कला के विधानों की ऊर्ध्व
 ल- ' ' ' देखो की ऊर्ध्व
- ५३३ क भाजन का परिणाम छह प्रकार का
 ल विषय ' ' ' "
- ५३४ ६ प्रकार के प्रदान
- ५३५ क सभी दण्डस्थानों का उत्कृष्ट विरह काल
 ल मानवी नरक ' "
 म मित्र मणि " " "
- ५३६ आनुकूल्य
- क छह प्रकार का आनुकूल्य
- ल वैकीर्ण दण्डों में छह प्रकार का आनुकूल्य
- म मान्यता मान्य पूर्व आगामी अथवा आनुकूल्य
- ५३७ छह प्रकार के भाषा
- ५३८ का प्रतिक्रिया
- ५३९ छह भाषा वचन नम्र
- ५४० क छह स्थानों में पाप कर्मों के पुनर्गणों का वचन
 ' ' " उपचयन
 " " " वचन
 " " " उदीरणा

एतं स्वानो मे वाग कर्मा की मेदना
" " " निर्जग

स- एतं प्रदेयित्वा स्वयं

" प्रदेयित्वात् पुद्गल

" गमयती स्थितिमानं पुद्गल

" गुण काले पुद्गल-वायु-रस-गुण इमे पुद्गल

सूत्र सप्तम ६६

सप्तम स्वान. एक उद्देशक

५४१ गल मे निकलने के मान कारण

५४२ मान प्रकार के विभक्त ज्ञान

५४३ ग- " " की गति (जीवोत्पत्ति के स्थान) .

ग- अज्ञान की मान गति. मान आगति

ग- गीतज्ञ " " "

घ- जरापुत्र " " "

ङ- रमज " " "

च- मन्वेदज " " "

छ- समुद्भिज " " "

ज- उद्भिज " " "

५४४ संय अगस्त्या

क- आचार्य और उपाध्याय के गुण में मान संयत् स्थान

ग- " " " " " " अगस्त्य "

५४५ क- मात पिण्डपणा

ग- " पाणपणा

ग- सात अवग्रह पट्टिमा

घ- " मत्प्रेक्षक आचारात् श्रुतस्कन्ध दो. चूलिका दो में

ङ- " महा अध्ययन सूत्रकृतात् श्रुतस्कन्ध दो में

च- सप्त सप्तमिका निशु प्रतिमा का परिमाण

५४६ क अधोनीक मे सात पृथ्वी (मरक)

ख पनीचि

ग धनवात

घ तनुवान

ङ- अरकाशान्तर

अनका समायोग कम

ध मात पृथ्वी के नाम

छ गोत्र

५४७ सात स्तूप (बान्द) वायुकाय

५४८ सस्थान

५४९ भवस्थान

५५० व प्रवार मे अक्षय (छत्रस्थ) की पहचान

ख सवज

५५१ क मूल गात्र

ख वास्तव गोत्र क सात धन

ग गोनम

घ वन

ङ कुस

च कोमिक

छ मन्त्र

ज वशिष्ठ

५५२ सात भूत नय

५५३ व मात स्वर

स्थान

जीव निधित

अजीव

संज्ञा

ਸਾਨੂੰ ਸੁਧਰੋ ਖੇ ਸੌਨ ਚਾਨ

ਸੀ.ਸੀ. ਗਰਮ ਵੀ ਜਾਨ-ਸਾਹ ਖੁੰਝਾ

मानव सभ्यता के विकास में योगदान

ਸ੍ਰੀ ਸ੍ਰੀ ਤਾਰਾ

ਸਿਧਾਂਤ ਅਤੇ ਸੰਸਾਰ

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मेघ के जल गुण

“ “ **श्रीमद्भगवद्गीता**

" नो क्षा भविति (भार्या)

गान्धन कस्मे शान्ती मित्रो पं मरु मे हने यनों ता ज्ञान

मान प्रदाय के गुरु गुरु

१११५-३, ११५१११

स्वर संज्ञा पूर्ण

२५४ मान प्रकाश का नियम

२४२. क. जम्बुद्वीप में मात क्षेत्र

॥ " " " नमो भगवते वासुदेवाय

ग. लवण भण्ड में मिलने वाली मात्र नशिया

7- " " " " " "

7- धानवी मण्ड हॉल के मुराब के नाम क्षेत्र

५- " " " " " " " वर्षभर पर्यंत

१५. गवयण समुद्र में मिलनेवाली मात नदियाँ

अ. वासोद ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

न- पातकी गूट द्रोण के पश्चिमान में गान क्षेत्र

अ- " " " " " " यथार पयंत

ट- नवग्रह समुद्र में मिलने वाला मात्र नक्षत्र

४- कालिदास " " " " "

६- पुष्कर पर द्विगिक के पूवति न गति क्षत्र

[illegible]

- ण कुंकरोन्धि म मिलने वाला सान नन्दिया
 त बाना मधु मे मिलने वाली सान नन्दिया
 य पुष्कर वर दीपध मे पन्चमाध के ठ-म-न-न-क के समान
 ११६ क जम्बूद्वीप क चरु की अतीत उन्मेषिणी मे सात कुत्तकर
 ल वनमान अवसर्पिणी
 ग आगामी उन्मेषिणी
 ११७ मान प्रकार की दह नीति
 ११८ चक्रवर्ती क मान एकद्विग रान
 पचन्ध
 ११९ कुंठे मान क सान म रण
 अल्ल
 १२० सान प्रकार के समायी न व
 १२१ जातु धाय के सान राग्य
 १२२ क-त सान प्रकार क सब जाय
 १२३ ब्रह्मस्त चक्रवर्ती का आयु और गति
 १२४ म० मन्त्रित-य सक्ति दीप्ति होन बातें सात स्थिति
 १२५ मान प्रकार के दान
 १२६ ह्यस्य कीराण के मान कम प्रकृतिवा का वेग
 १२७ अमयन क बानने क अतीत मान पन्ध
 मयन योग्य
 १२८ म० अट्ठाशीर की ऊंचाई
 १२९ मान विक्रय
 १३० आवाय और उपाध्याय के गण क सात अन्विष्य
 १३१ क मान प्रकार का गयम
 ल अमयम
 म बारम
 घ अनारम

५- भान प्रकाश का सारंभ

६- " " " सनातन

७- " " " समारंभ

८- " " " अममारंभ

१७२ षोडश में रहे हुए मान्यों की स्थिति

१७३ ग- सादर अन्वेष की स्थिति

ग- धानुता प्रभा के नैरविकों की उत्कृष्ट स्थिति

ग- एक प्रभा के नैरविकों की जगत् स्थिति

१७४ क- ईशानेन्द्र के आत्मन्यार परिषद के देवों की स्थिति

ग- ईशानेन्द्र के अग्रमहिषियों की स्थिति

ग- शीघ्र में वर्ण में परिगृहीत देवियों की उत्कृष्ट स्थिति

१७५ मारुत्यन देव और उनका परिवार

आदित्य " " "

मरुगोम " " "

तुषित " " "

१७६ क- शनैन्द्र के वरुण लोकमान की मात्र अग्रमहिषियां

ग- ईशानेन्द्र के मोम " " " "

ग- " " यम " " " "

१७७ क- गनकुमार कल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति

ग- माहेन्द्र " " " "

ग- ब्रह्मलोक " " " "

१७८ ब्रह्मलोक कला में विमानों की ऊंचाई

१७९ भवनवामी देवों की ऊंचाई

व्यंतर " "

ज्योतिषी " "

सोघर्म कल्प के " "

ईशान कल्प के " "

१८० क मनीषर द्वीप म मान द्वीप

■ समुद्र

१८१ मान जगिया

१८२ मय देकेर्णों की मान भाग सेना और मान मान सेनाशिवि

३८ के कन्द प्रवेष्ट कन्द क देरों की मन्त्र

१८४ वचन क मान विद्वत्

१८५ क मान प्रकार का प्रगल्भ मन दिनय

ख अग्रगन्त

ग प्रगल्भ वचन

घ अग्रगन्त

ङ प्रगल्भ काय

च अग्रगन्त

छ लोकापचार

१८६ मान समुद्रधान

१८७ क म० महावीर के मान प्रवचन निहा

ख निहवा के मान जम नगर

१८८ गाना केन्द्रीय कम क मान अनुभाव

१८९ क मया नगर के मान तारे

ख पुत्र निगा के द्वारस्थान मान नभय

ग दक्षिण निगा मे

घ पश्चिम

ङ उत्तर

१९० क वधस्कार पर्वत

अम्बुनीप म सोमनय वधस्कार पर्वत पर मान कूट

ख वधमान

१९१ द्वीनिय की कुल कोटी

५६२	मान स्थानों में मान कर्मों के पुद्गलों का भौतिक चयन	
	" "	उपचयन
	" "	बंध
	" "	उदीरणा
	" "	वेदना
	" "	निर्जरा

५६३ मान प्रदेयिक स्थान

- " प्रदेयावगाह पुद्गल
- " नमन की स्थिति वाले पुद्गल
- " गुण काले पुद्गल-मायन्-मान गुण स्पर्श पुद्गल
- " " "

सूत्र संख्या ३३

अष्टम स्थान. एक उद्देशक

५६४ एकाकी विहार प्रतिमा के योग्य आठ प्रकार के अनगार

५६५ क- आठ प्रकार की योगियाँ

ग- अंठजों की आठ गतियाँ. आठ आगतियाँ

ग- पंताज " " " " "

घ- जरागुज " " " " "

५६६ चौबीस दण्डकों में आठ कर्म प्रकृतियों का भौतिक चयन

"	"	"	उपचयन
"	"	"	बंध
"	"	"	उदीरणा
"	"	"	वेदना
"	"	"	निर्जरा

५६७ क- मायावी के आलोचना न करने के आठ कारण

ख- " " " " "

- ग ज्ञानोचना करने वाला आराधक
 ज्ञानोचना न करने वाला विराधक
 घ आराधक और विराधक की गति में अन्तर

५६८ क आठ सवर

ख आठ असवर

५६९ आठ स्थान

६०० आठ प्रकार की लोक स्थिति

६०१ गति स्थान

६०२ प्रत्येक मशानिधि की ऊँचाई

६०३ आठ समिति

६०४ क ज्ञानोचना (प्रायश्चित्त) सुनने योग्य अणुवार के आठ गुण

ख आरम्भ दोषों की ज्ञानोचना करनेवाले

६०५ आठ प्रकार का प्रायश्चित्त

६०६ आठ मन्त्र स्थान

६०७ आठ अविद्यावादी

६०८ आठ प्रकार का त्रिमित्त

६०९ आठ प्रकार की वचन विमति

६१० क अक्षर आठ स्थानों की गुरुरूप से नहीं जानता

ख सवर्ण आठ स्थानों की गुरुरूप से जानता है

६११ आठ प्रकार की आयुर्वेद

६१२ क गण्ड की आठ अक्षरविधियाँ

ख ईशानेन्द्र

ग गण्ड के सोम लोकपाल की आठ अक्षरविधियाँ

घ ईशानेन्द्र के यक्षमण

ङ यह—आठ महावह

६१३ आठ प्रकार की गुरु अनस्पृश्या

- ६३३ प्रत्येक चक्रवर्ती के कारिणी राज का प्रमाण
- ६३४ मगध के योजना का प्रमाण
- ६३५ जम्बूद्वीप के मेरुपवन वन के मध्यभाग का विष्कम्भ और ऊंचाई
- ६३६ निम्न गुफा की ऊंचाई
साठ प्रपात
- ६३७ वनस्कार पवन
- क जम्बूद्वीप के मेरुपवन से पूव में सीता महानदी के किनारे आठ वनस्कार पवन
- ख जम्बूद्वीप के मेरुपवन से पश्चिम में सीता महानदी के किनारे आठ वनस्कार पवन
चक्रवर्ती विजय
- ग जम्बूद्वीप के मेरुपवन से पूर्व से सीता नदी के उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय
- घ जम्बूद्वीप के मेरुपवन से पूव से सीतानदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय
- ङ जम्बूद्वीप के मेरुपवन में पश्चिम में सीतानदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय
- च जम्बूद्वीप में मेरुपवन में पश्चिम में सीता महानदी के उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय
- छ राजधानियाँ
- जम्बूद्वीप में मेरुपवन से पूर्व से सीता महानदी के उत्तर में आठ राजधानियाँ
- झ जम्बूद्वीप के मेरुपवन से पूव से सीता महानदी के दक्षिण में आठ राजधानियाँ
- ञ जम्बूद्वीप के मेरुपवन से पश्चिम में सीता महानदी के दक्षिण में आठ राजधानियाँ

४- जम्बूद्वीप के मध्यभाग में पश्चिम में सीता नदी के उत्तर में
आठ सप्तशतिका

६३८ ५- जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में उग्रपृष्ठ आठ अश्विनी
ये, ई, और होमे

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में उग्रपृष्ठ आठ सप्तशतिका
ये, ई, और होमे

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में उग्रपृष्ठ आठ सप्तशतिका
ये, ई, और होमे

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में उग्रपृष्ठ आठ सप्तशतिका
ये, ई, और होमे

५- जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के दक्षिण में 'क' गुण की पुनरावृत्ति

ग- " पश्चिम में " दक्षिण " " "

प- " " " उत्तर " " "

६३९ ५- जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में आठ दीर्घ चैतारूप
पर्वत

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में आठ निमित्त गुफा

" " " " " गण्ड प्रपात गुफा

" " " " " कृष्णनाथ देव

" " " " " वृद्धमाता देव

" " " " " गंगा कुण्ड

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ मिथु कुण्ड

" " " " " गंगा नदी

" " " " " मिथु नदी

" " " " " श्रुतमकुट पर्वत

ग- " " " दक्षिण में दीर्घ चैतारूप पर्वत

" " " " " तिमिर गुफा

उदुद्वीप के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण में दीव बनाद्वयवन

तमिष गुफा

सप्तप्रधान गुफा

कृत्तमान देव

कृत्यमात्र देव

रक्षा बंध

रक्षावती बंध

रक्षा नदी

रक्षावती नदी

शृंगम कुट पवन

शृंगम कुट देव

॥ जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत में पश्चिम में सीता नदी ॥ उत्तर में

ब के समान

घ

दक्षिण में

६४० मेरु जूनिवा का विष्णुम्भ

६४१ क घातकी नदी द्वीप के पूर्वाध में घातकी नदी की ऊंचाई

क मध्यभाग का विष्णुम्भ

ख गैर मुख ६३६ म ६४० तक समान

ग घातकी नदी द्वीप के पश्चिमाध में महाधानकी नदी की ऊंचाई

गघ ग के समान

घ पुष्करा द्वीप के पूर्वाध में पथजल की ऊंचाई गैर क ल

के समान

ङ पश्चिमाध में महाधान नदी की ऊंचाई

६४२ क जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर मन्थान वन में बाँध लगा हुआ द्वीप

ख जम्बूद्वीप की जगति की ऊंचाई विष्णुम्भ

६८३ ग- समुद्रतीर के मेरु पर्वत में दक्षिण में महा निम्बवत पर्वत पर
पर्वत पर आठ कुट

ग- " " उत्तर में स्थित " " "

ग- " " पूर्व में स्थित पर्वत पर आठ कुट इन पर
रत्ने वाली दिना कुमारियों की स्थिति

घ- समुद्रतीर में मेरुपर्वत में दक्षिण में स्थित पर्वत पर आठ कुट

ङ- समुद्रतीर के मेरुपर्वत में पश्चिम में स्थित पर्वत पर आठ कुट

च- " " उत्तर में " " "

इन पर रत्ने वाली दिना कुमारियों की स्थिति

छ- अधोपार्श्व में आठ दिना कुमारियाँ

ज- उत्पत्ति के " " "

६८४ क- आठ कल्पों में नियोज और मनुष्यों का उत्थान

ग- " " आठ दृष्ट

ग- " दृष्टी के " पारिवर्तनिक विमान

६८५ अष्ट अष्टमिका अष्ट प्रणिमा का परिभाषा

६८६ क- आठ प्रकाश के समान तीव्र

ग- " " " नय " "

ग- " " " " " "

६८७ " " का समय

६८८ आठ पृथ्वियाँ

ग- ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के मध्यभाग की मोटाई

ग- " " " " आठ नाम

६८९ प्रमाद त्याग करके करने योग्य आठ शुभ कार्य

६९० महायुक्त और महत्कार कल्प में विमानों की ऊँचाई

६९१ न० अष्टि नेमी के बाद—नव्य सम्पन्न मुनि

- ६५२ केवली समुन्धात की स्थिति
 ६५३ अनुत्तर विमानों से उत्पन्न होने वाले म० महावीर के मुनि
 ६५४ आठ प्रकार के व्युत्तर देव और उनके आठ चमकृत
 ६५५ रत्नप्रभा से मूल विमान की ऊँचाई
 ६५६ अ० वा स्पष्ट करके गति करने वाले आठ नक्षत्र
 ६५७ क अन्तर्द्वीप के द्वारों की ऊँचाई
 ल सब द्वीप समुद्रों के द्वारों की ऊँचाई
 ६५८ क पुरुष वेन्नोय कथ की जयय दध स्थिति
 ल मनीकीर्ति नाम कम की
 ग उ अ मोच कम की
 ६५९ चौद्विज की कुलकोटी
 ६६० क आठ स्थानों में पापकर्म के पुनर्गति का वकालिक क्षयन
 उपचयन
 दध
 उन्नीरणा
 वेन्ना
 निजरा

ख आठ प्रदेशी स्वयं

आठ प्रदेशावगात्र पुनर्गम

गमय की स्थितिवाले

मूल जाने-यावन आठ गुणरूपे पुनर्गम

सत्र सकला ६७

नवम स्थान एवं उद्देशक

- ६६१ मभीनी निवृत्त वा विमभागी करने के नौ कारण
 ६६२ ब्रह्मचर्य (आचारान्तर प्रथम ध्युत स्वर) के नव अध्ययन
 ६६३ नव ब्रह्मचर्य गुणि

६६४ भ० जनिमन्दन और भ० सुमतिनाथ का प्रकाश

६६५ नव प्रकाश

६६६ नव प्रकाश के समान प्रीति

प्रयोगात् में नव की कवि, नव की ज्ञानि

प्रकाश " " " "

मेरुप्रकाश " " " "

दागुनाय " " " "

नवप्रकाश " " " "

श्रीशिव " " " "

श्रीशिव " " " "

नवप्रकाश " " " "

नवप्रकाश " " " "

नवप्रकाश " " " "

म- नव प्रकाश के समान प्रीति

म- " " का समान प्रीति की अवगाहना (जरीर का प्रमाण)

प- नागरिक प्रीति की प्रेरणात्मक अवस्था

६६७ रोमोन्वति के नव काव्य

६६८ नव प्रकाश का दर्शनावरणीय रूप

६६९ न- अभिजित का चन्द्र के नाव गीत काव्य

म- चन्द्र के नाव उत्तर की ओर में योग करने वाले नव नक्षत्र

६७० नवप्रकाश में ताशों की उगाई

६७१ जम्बूद्वीप में नव योजन के मन्त्रों का वैरागिक प्रवेश

६७२ जम्बूद्वीप के भवन में दश अवस्थापिणी में नव वनदेश-नव

कामुद्वीपों के पिता, देश वर्णन नवप्रकाश के समान

६७३ प्रत्येक निधि का विष्णुमन्त्र, चक्रवर्ती की नव निधि

६७४ नव विष्णु

६७५ नदी के नव द्वार

६७६ नव प्रकार का वन

- ६७७ नव पाप स्थान
 ६७८ नव पाप श्रुत
 ६७९ नव त्रिपुण आचार्य
 ६८० भ० महावीर के नव गण
 ६८१ ' ' निर्घवा की नव कोटि शुद्ध भिला
 ६८२ ईशानेश्वर क बहल लोचनान की नव अग्रमहिषिया
 ६८३ क ईशानेश्वर की अग्रमहिषियों की स्थिति
 ल ईशान कल्प मे दक्षिणा की स्थिति
 ६८४ नव देव-निवाय
 अग्न्याश्विन देव और उनका परिवार
 अग्निश्वा " " "
 शिवा " " "
 ६८५ नव दैवजन्म विमान प्रस्तर
 ६८६ नव प्रकार का आनु परिणाम
 ६८७ नव नवमिषा भिक्षु श्रमिषा का परिमाण
 ६८८ नव प्रकार का प्रायश्चित्त
 ६८९ क जमुदीप क दक्षिण भरण मे दीप वैताद्वय पर्वतपर नव कूट
 ल ' निषय " " "
 ग महा पर्वत पर नन्दन वन मे नव कूट
 घ मा पर्वत अश्वत्थार पर्वत पर नव कूट
 ङ ' कल्प मे दीप वैताद्वय पर्वतपर नव कूट
 च मुखज मे ' ' ' कूट
 शप सूत्र ६३७ के ' ग ' मे ' च तत्र के विजया मे दीप वैताद्वय पर्वत पर नव नव कूट

क- जम्बुद्वीप के विद्युत्प्रभ वधाम्बार पर्वतपर नव कुट

ख- " " पद्मप्रभ " "

शेष सूत्र ६३७ के "ग" में "घ" तथा के विजयो में दीर्घ
धैराक्ष्य पर्वतो पर नव-नव कुट

ग- जम्बुद्वीप के मेरुपर्वत में ऊपर में भीमवध पर्वत पर पर्वत पर
नव कुट

घ- जम्बुद्वीप के मेरुपर्वत में पृथ्वी में दीर्घ धैराक्ष्य पर्वत पर
नव कुट

६६० म. पाटवं नाम की ऊचाई

६६१ भ० महावीर के तीर्थ में तीर्थकर गोप नाम पर्वत बांधने वाले

६६२ आगार्या उम्मापिणी में होनेवाले नव तीर्थकरों में नाम

६६३ महापद्म शक्ति

६६४ कट्ट के नाम तीर्थ में योग कारमेयवि नव नक्षत्र

६६५ आनन आदि चार श्रेयस्वोक्तों में विमानों की ऊचाई

६६६ विमल वाहन कुलकर की ऊचाई

६६७ भ० श्रुगभदेव का तीर्थ प्रथमन कान

६६८ वनदनादि ४ अर्वाक्षियों का आयाम विष्णुम्भ

६६९ शुक्र महाशक्त की नव विनिया

७०० नव कणाम वेदनीय कर्म की नव प्रकृतियाँ

७०१ क- चतुरिन्द्रियों की कुलकोटी

ख- भुजगों की "

७०२ नव स्वानों में पापकर्म के पुद्गलों का श्रैकानिक नयन

" " " " उपचयन

" " " " वंघ

" " " " उदीरणा

वेत्ता
निजरा

- ७०३ नव प्रपेक्षी स्वयं
नव प्रदेगाधगाढ पुद्गल
नव समय की स्थितिवाले पुद्गल
नव गुण काय यावत्-नव गुण को पुद्गल

सूत्र सख्या ४३

दशम स्थान एष उद्देशक

- ७०४ दश प्रकार की लोक स्थिति
७०५ का नाम
७०६ अतीत काल में इन्धियों के दश विषय
वर्तमान
आपायी
७०७ अस्मिन् पुद्गल का दश कारणों से ध्वन
७०८ लोकोपपत्ति के दश कारण
७०९ क दश प्रकार का समय
ल अमयम
ग सवर
घ असवर
७१० क्षतिमान के दश कारण
७११ दश प्रकार की समाधि
असमाधि
७१२ व प्रवर्ज्या
ख का धर्मधर्म
ग की वधाहृत्य
७१३ क का जीव परिणाम
ख जीव

- ७२२ सव दृष्ट वस्तुत्व पवनो की ऊचाई और विष्कम्भ
- ७२३ अम्बुगीय के दण क्षेत्र
- ७२४ मानुषोत्तर पवत के मूल का विष्कम्भ
- ७२५ क सव अवनय पवनो की ऊचाई सत्यान और विष्कम्भ
 ल सव दधिमुस पवना की ऊचाई और विष्कम्भ
 ग सव रतिकर
- ७२६ क हचक वर पवत के मूल का और ऊपर का विष्कम्भ
 ल कडल
- ७२७ दश प्रकार का द्रव्यानुयोग
- ७२८ सव ह १ और लोकपालो के उत्पानपवना का परिमाण
- ७२९ क दान्तर वनस्पतिकाय की उद्भूत अवसाहना
 ल जलचर पक्षेभ्यः नियन्त्रो की
 ग अरपरिमय
- ७३० भ० सभवनाय और भ० अभिनन्दन का अन्तर
- ७ १ दश प्रकार का मनन
- ७३२ उत्पान पूर्व की दस वस्तु
 अस्तिनास्तिप्रधान पूर्व की दण गुलवस्तु
- ७३३ क दण प्रकार की प्रतिमयना
 ल आलोचना के दण क्षेत्र
 ग दण गुण युक्त अथवा आत्मन्वीषी की आलोचना कर सरता है
 घ दण प्रकार का प्रायश्चित्त
- ७३४ दण प्रकार का मिथ्यात्व
- ७३५ भ० धर्म प्रम का पुषाणु और ननि
 म० नमि नाय
 म० धम नाय

पुष्पसिद्ध धानुदेव ..

भ० नेमिनाथ की ऊर्ध्व, शीर धातु

कृष्ण धानुदेव की ..

७३६ क- दश भवनवासी देव

ग- भवनवासी देवों के संक्षेप

७३७ दश प्रकार का मृग

७३८ क- " " " उपपन्न (दीप)

ग- " " " विजोधि

७३९ " " " मयवेन

७४० " " " दल

७४१ क- " " " मन्व

ग- " " " कृपा

ग- " " " अमन्वायना

७४२ दृष्टिवाद के दश नाम

७४३ क- दश प्रकार के दान्य

ग- " " " दीप

ग- " " " विदीप

७४४ " " " शुद्ध यन्त्र

७४५ क- " " " दान

ग- " " " गति

७४६ " " " के मुट

७४७ " " " की संग्या

७४८ " " " के प्रत्याग्यान

७४९ " " " की समाचारी

७५० भगवान महावीर के दश स्वप्न

७५१ दश प्रकार का सम्यग्दर्शन

७५२ दश संज्ञा

- ७१३ दण प्रकार की नरक वेदना
- ७१४ क द्वादश दण पदार्थों को पूणरूप से नष्टी जानना
ख मवज्ञ ' " " ' जानना है
- ७१५ क दण-दण (आत्मी के नाम)
ख कम विपाक दण क दण अभ्ययन
ग उपामक "
- घ अन्तर्दण '
- ङ अनृतरोपमातिष्ठ "
- च आचार दण
- छ प्रश्नव्याकरण दण "
- ज वध '
- झ द्विष्टि '
- ञ दोष
- ट न रेपिन '
- ७१६ उत्तमपिणी नाम का परिमाण
अवमपिणी
- ७१७ क चौबीस दण्डों में अनन्तरोपामक आदि दण प्रकार
ख पक्षप्रभा के नरकावान
ग अनप्रभा में जघन स्थिति
घ पक्षप्रभा में उत्तृष्ट स्थिति
ङ भूमप्रभा में जघन स्थिति
च अमर कुमाग आदि भवनवासियों की जघन स्थिति
छ वादक वनस्थिति का की उत्तृष्ट स्थिति
ज स्थान दण की जघन स्थिति
झ- अहनाक कल्प में उत्तृष्ट स्थिति
ञ मानक कल्प में जघन स्थिति
- ७१८ आत्महितकारी शुभकर्म कर्म के दण कारण

- ७५६ दश प्रकार का जादूमा (कानना) प्रयोग
 ७६० " " " धर्म
 ७६१ " " के हगदिर
 ७६२ " " " पुत्र
 ७६३ केदनी (गर्भज) के दश गर्भोत्पृ
 ७६४ क- ममय क्षेत्र में दश कुरुक्षेत्र
 ग- इनमें दश महा द्रुम
 ग- इनपर रहनेवाले दश महत्त्विक देव और उनकी स्थिति
 ७६५ क- मुक्तान के दश लक्षण
 ग- दुष्कृतान " " "
 ७६६ मुग्ध मुग्धा नाम के प्रथम आरा में भोगोपभोग की सामग्री देनेवाले दश कला द्रव्य
 ७६७ क- जम्बुद्वीप के भरण में-अतीत उत्सर्पिणी में दश कुलकर
 ग- " " " आगामी " " " "
 ७६८ क- जम्बुद्वीप के मेरुपर्वत में पूर्व में गीतानदी के दोनों किनारे दश बदरकार पर्वत
 " " " " पश्चिम में " " "
 ग- घातकी गण्ड के पूर्वार्ध में "क" के समान
 र- " " " पश्चिमार्ध में " " "
 घ- पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में " " "
 छ- " " " पश्चिमार्ध में " " "
 ७६९ क- इन्द्राचिष्टिन दश कला
 ग- दश इन्द्रों के दश पारिव्यानिक विमान
 ७७० दश दशमिका भिक्षु प्रतिमा का परिमाण
 ७७१ क- दश प्रकार के संसारी जीव
 ख-ग- " " " सर्व " "
 ७७२ क्षतायु पुरुष की दश दशा

- ७७३ दण प्रहार की तुल्यनम्पत्रिकाय
 ७७४ क विद्याधर श्रिया का विष्कम्भ
 ख श्रिमिदीन
 ७७५ पक्षेय विद्याना की ऊर्चाई
 ७७६ तैशान्या मे मय्य होने के दण प्रमाण
 ७७७ दण शान्धय
 ७७८ रत्नप्रभा के रत्न काण्ड का बाह्य
 बख
 शेष १४ बाण्डों का बाण्ड रत्न काण्ड के समान
 ७७९ क मन्त्रीय समुहों का उद्भव
 ख मन्त्र महा इहा
 ग कुम्भो
 घ मीठा-मीठा नष्टिया के मुख मून का उद्भव
 ७८० क पट्ट के बाह्य मण्डन से दण्ड चण्ड मण्डन से भ्रमण करने
 वाला मण्डन
 ख शान्धनर
 ७८१ नान हृदि कान्ध बान्ध न्ग मन्त्र
 ७८२ क मन्धनवर नियम पक्षेय का कुल बोली
 ख उरपरिष्ठन
 ७८३ क दण स्थानों मे वापकमों के पुष्पानों का प्रकाशित चयन
 उपचयन
 बख
 उन्नीरणा
 वेन्ना
 नित्ररा
 ख दण प्रेणी स्वय
 दण प्रेणावधान पुष्पान
 दण समय की स्थितिवाले पुष्पान
 दण गुण वाले पुष्पान-वाकन-दण गुण स्ने पुष्पान

द्रव्यानुयोग प्रधान समवायात्

उपलब्ध पाठ १६१७ इति प्रमाणम्

नव बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, परिचयाद्भन पत्र

१ प्रियदर्शी	विजयभूति	सभूत	मोरा	माय	कनक
२ सुकान्त	पञ्चक	गभट्ट	कनकभूत	लू	विजय
३ नागदन्त	धनदन्त	सुदर्शन	भद्रक	समान	भद्र
४ अमोघार्ति	समुद्रदन्त	धेयान	योगन	रत्ना	सुप्रभु
५ जगत्	कविधान	कृष्ण	राजगृह	रम्यनराज	सुदर्शन
६ धर्ममेन	प्रियमित्र	नमोदन्त	काईदी	नाथोन्नाम	धानंद
७ अपमर्ति	मार्गानि	आगारत	प्रेमांश	मोष्टी	संन
८ राजवर्ति	पुनस्तु	समुद्र	मिथिला	परमार्थ	पद्म
९ —	मोदन्त	द्रवमेन	द्वितीया	नाथ	राम

यामुदेव यल०यामु०विता यल०देव-माता यामुदेव-माता प्रतियामुदेव

त्रिपृष्ठ	प्रजापति	भद्रा	गृध्राक्षरी	अक्षयव
द्विपृष्ठ	ब्रह्मा	गुह्यता	समा	गारक
स्वर्धम्	भोम	गुपना	पृथो	मेरुत
पुष्पोत्तम	रुद्र	गुह्यशाना	सोना	गधुतदभ
पुष्पसिद्ध	शिव	विजय	अमृता	निशुभ
पुष्पपुरीक	गह्वाशिव	देवयती	लक्ष्मीमति	वनि
दत्ता	अग्निशिख	जयन्ती	जेषमति	प्रहाद
नारायण	दशरथ	अभ्राजिता	कैकेया	रावण
कृष्ण	समुद्रव	देहिणी	देवयती	जरासंध

समवायाङ्ग सूत्र संख्या

१	४३ ।	२	२३ ।	३	२४ ।	४	१८ ।	५	२२ ।
६	१७ ।	७	२३ ।	८	१८ ।	९	२० ।	१०	२५ ।
११	१६ ।	१२	२० ।	१३	१७ ।	१४	१८ ।	१५	१६ ।
१६	१६ ।	१७	२१ ।	१८	१८ ।	१९	१५ ।	२०	१७ ।
२१	१४ ।	२२	१७ ।	२३	१३ ।	२४	१५ ।	२५	१८ ।
२६	११ ।	२७	१५ ।	२८	१४ ।	२९	१८ ।	३०	१९ ।
३१	१८ ।	३२	२४ ।	३३	१४ ।	३४	६ ।	३५	६ ।
३६	४ ।	३७	५ ।	३८	४ ।	३९	४ ।	४०	८ ।
४१	३ ।	४२	१० ।	४३	५ ।	४४	४ ।	४५	८ ।
४६	३ ।	४७	२ ।	४८	३ ।	४९	३ ।	५०	७ ।
५१	५ ।	५२	५ ।	५३	४ ।	५४	४ ।	५५	६ ।
५६	२ ।	५७	५ ।	५८	६ ।	५९	३ ।	६०	६ ।
६१	४ ।	६२	५ ।	६३	४ ।	६४	६ ।	६५	३ ।
६६	६ ।	६७	८ ।	६८	५ ।	६९	३ ।	७०	५ ।
७१	४ ।	७२	८ ।	७३	२ ।	७४	४ ।	७५	३ ।
७६	२ ।	७७	४ ।	७८	४ ।	७९	४ ।	८०	७ ।
८१	३ ।	८२	४ ।	८३	५ ।	८४	१७ ।	८५	४ ।
८६	३ ।	८७	७ ।	८८	६ ।	८९	४ ।	९०	५ ।
९१	४ ।	९२	४ ।	९३	३ ।	९४	२ ।	९५	५ ।
९६	५ ।	९७	४ ।	९८	७ ।	९९	७ ।	१००	८ ।

१०१	१५०	३ ।	१०२	२००	३ ।	१०३	२५०	२ ।
१०४	३००	५ ।	१०५	३५०	२ ।	१०६	४००	५ ।
१०७	४५०	७ ।	१०८	५००	८ ।	१०९	६००	६ ।
११०	७००	६ ।	१११	८००	५ ।	११२	९००	७ ।
११३	१०००	१० ।	११४	११००	५ ।	११५	२०००	१ ।
११६	३०००	१ ।	११७	४०००	१ ।	११८	५०००	१ ।
११९	६०००	१ ।	१२०	७०००	१ ।	१२१	८०००	१ ।
१२२	९०००	१ ।	१२३	१००००	१ ।			

१२४ एक भाग में मूत्र	१ ।	१२५ दो भाग में	१ ।
१२६ तीन भाग में	१ ।	१२७ चार भाग में	१ ।
१२८ पाँच भाग में	१ ।	१२९ छह भाग में	१ ।
१३० सात भाग में	१ ।	१३१ आठ भाग में	१ ।
१३२ नव भाग में	१ ।	१३३ दस भाग में	१ ।
१३४ एक लख में मूत्र	१ ।	१३५ एक लखों लखों में	१ ।

मूत्र १३६ में १४८ मर्गना एक डर मूत्र । १४९ में मूत्र में ५ डर मूत्र
 १५० ५ । १५१ १ । १५२ १ । १५३ ४ । १५४ ४ ।
 १५५ २ । १५६ १ । १५७ २१ । १५८ १७ । १५९ २६ ।
 १६० १ ।

कुल योग—गमवाय १३५ । मूत्र १०४६
 ग्यारह गो वैवीग ११३५

तहमेयं	भंते !	निग्गंथं	पावयणं
अवितहमेयं	भंते !	निग्गंथं	पावयणं
असंदिद्धमेयं	भंते !	निग्गंथं	पावयणं

- ५ असह्य वर्ष की आयुवाले कुछ निषच पचेन्द्रियो की स्थिति
- ६ असह्य वर्ष की आयुवाले कुछ शनी मनुष्यों की स्थिति
- ७ सौरभ कल्प के कुछ देवा की स्थिति
- ८ ईगान कल्प के देवा की स्थिति
- ९ सोषम कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- १० ईगान कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ११ मनकुमार कल्प के देवों की अषय स्थिति
- १२ मन्हेत्र कल्प के देवों की अषय स्थिति
- १३ शुभ आन् विमानवामी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
-
- १ शुभ आन् विमानवामी देवा का स्वासोच्छ्वाम काल
- १ शुभान् विमानवामी देवों का आहारेष्ट्य करण
- १ कुछ गवतिष्टिकों की दो भव से मुक्ति

सूय भाषा २३

तृतीय समवाय

- १ दड
- २ मृत्ति
- ३ गन्ध
- ४ रस
- ५ विरागता
-
- १ सृगतिग न तत्र के तारे
- २ पुण्य नगत्र के तारे
- ३ त्र ग न तत्र के तारे
- ४ अभिजित नगत्र के तारे
- ५ ध्रुव न तत्र के तारे

९ अश्विनी नक्षत्र के तारे

७ भरिणी नक्षत्र के तारे

●

१ रत्नप्रभा के कुट्ट नैऋतिकों की स्थिति

२ शङ्खप्रभा के कुट्ट नैऋतिकों की स्थिति

३ शङ्खप्रभा के कुट्ट नैऋतिकों की स्थिति

४ कुट्ट अमृतकुमारों की स्थिति

५ अमृत्य तारों की आयुधानि मंजी निवेन पंचेन्द्रियों की स्थिति

६ अमृत्य तारों की आयुधानि मंजी मनुष्यों की छत्राष्ट स्थिति

७ मीधम-हृन्नाम कल्प के कुट्ट देवों की स्थिति

८ मनःकुमार-मातृष्ट कल्प के कुट्ट देवों की स्थिति

९ आभकर आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

१ आभकर आदि विमानवासी देवों का ध्यामोन्मत्ताग तान

१ आभकर आदि विमानवासी देवों का आहारेन्द्रा तान

१ कुट्ट भवनिद्रिकों की मीन तान में भुजित

सूत्र संग्रह २४

चतुर्थ समवाय

१ कपाय

२ ध्यान

३ विकथा

४ मन्त्रा

५ वध

६ योजन का परिमाण

●

१ अनुराधा नक्षत्र के तारे

समवायांग विषय-सूची

प्रथम समवाय

१ आत्मा	२ अनात्मा
३ दण्ड	४ सदण्ड
५ क्रिया	६ अक्रिया
७ लोक	८ अपात्र
धर्म	१० अग्रम
११ पुण्य	१२ पाप
१३ वय	१४ मोक्ष
१५ आश्रय	१६ मवर
१७ बदना	१८ निर्मेरा

१ जम्बूद्वीप की लम्बाई चौड़ाई (आयाम विस्त्रम्भ)

२ अश्लिष्टान लम्कायाम की लम्बाई चौड़ाई

३ पालक विमान की लम्बाई चौड़ाई

४ सर्वायमिद विमान की लम्बाई चौड़ाई

●

१ आर्द्रा नक्षत्र का तारा

२ चित्रा नक्षत्र का तारा

●

३ स्वाति नक्षत्र का तारा

१ रत्नप्रभा के कुछ नैरविकी की स्थिति

२ रत्नप्रभा के कुछ नैरविकी की उत्कृष्ट स्थिति

३ शक्रराप्रभा के कुछ नैरविकी की अचानक स्थिति

४ कुम्भ अमुरकुमारों की स्थिति

५ कुम्भ अमुरकुमारों की उत्कृष्ट स्थिति

६ नाग कुमारा आदि की स्थिति

७ अचानक बरों की आयुवाद मज्जी निर्देश पचेन्द्रिय की स्थिति

- ८ अतंग्य वरों की क्षामुसने मनुष्यों की स्थिति
- ९ व्यतर देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- १० ज्योतिषी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ११ मोघमं कल्प के देवों की अधन्य स्थिति
- १२ मोघमं कल्प के देवों की स्थिति
- १३ ईशान कल्प के देवों की अधन्य स्थिति
- १४ ईशान कल्प के देवों की स्थिति
- १५ नागर आदि देवों की स्थिति



- १ नागर आदि देवों का द्यामोन्मत्तम काल
- १ नागर आदि देवों का आशारेन्द्रा काल
- १ कुछ भवगिदिकों की एक भवमे मुक्ति

मृगमेतया ४३

द्वितीय समवाय

- १ दट
- २ राशि
- ३ नधन



- १ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तारे
- २ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तारे
- ३ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तारे
- ४ उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तारे



- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ शर्कराप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुरकुमारों की स्थिति
- ४ नागकुमार आदि की उत्कृष्ट स्थिति

- ५ असुर्य वय की आयुवाले कुछ निधन पंचेन्द्रों की स्थिति
- ६ असुर्य वय की आयुवाले कुछ सभी मनुष्यों की स्थिति
- ७ सोयम कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ८ ईशान कल्प के देवों की स्थिति
- ९ सोयम कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- १० ईशान कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ११ सप्तकुमार कल्प के देवों की अवयव स्थिति
- १२ सप्तकल्प के देवों की अवयव स्थिति
- १३ शुभ आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
-
- १ शुभ आदि विमानवासी देवों का स्वामीच्छवाम काल
- १ शुभादि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ त्वमिन्द्रियों की दो भव से मुक्ति

सूत्र नाम २३

तृतीय समवाय

- १ दंड
- २ मुक्ति
- ३ तप
- ४ तप
- ५ विरागता
-
- १ सृष्टिगर्भ न इव के तारे
- २ सृष्टिगर्भ न इव के तारे
- ३ सृष्टिगर्भ न इव के तारे
- ४ अभिजित न इव के तारे
- ५ सृष्टिगर्भ न इव के तारे

६ अश्विनी नक्षत्र के तारे

७ भरिणी नक्षत्र के तारे

●

१ रत्नप्रभा के कुछ नैरविकों की स्थिति

२ शर्कराप्रभा के कुछ नैरविकों की स्थिति

३ चानुरा प्रभा के कुछ नैरविकों की स्थिति

४ कुछ अमूरकुमारों की स्थिति

५ अमर्य तप की आनुमाने मशी निर्जन पनेन्द्रियों की स्थिति

६ अमर्य तप की आनुमाने मशी मनुष्यों की उग्रहृष्ट स्थिति

७ गीधर्म-रंजान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

८ मनस्कुमार-मार्गन्द कल्प के कुछ देवों की स्थिति

९ आभकर आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

१ आभकर आदि विमानवासी देवों का द्वासीरुद्रात्म काल

२ आभकर आदि विमानवासी देवों का आहाररुद्रा काल

३ कुछ भवनिद्रिकों की तीन भव में मुक्ति

मृत्वी मंग्या २४

चतुर्थ समवाय

१ गणाय

२ ध्यान

३ विकथा

४ सजा

५ वध

६ योजन का परिमाण

●

१ अनुराधा नक्षत्र के तारे

२ पूर्वाषाढा नक्षत्र के तारे

३ उत्तराषाढा नक्षत्र के तारे

● १ रत्नप्रभा के कुक्ष नैरयिका की स्थिति

२ वायुवाय्रभा के कुक्ष नैरयिका की स्थिति

३ कुक्ष अमृतकुमार के स्थिति

४ श्रीराम ईशान कल्प के कुक्ष देवा की स्थिति

५ सनत्कुमार वाह्म कल्प के देवा की स्थिति

६ कृत्ति आदि विमानवासी देवा की स्थिति

● १ कृत्ति आदि विमानवासी देवा का स्वामोच्छवास काल

१ कृत्ति आदि विमानवासी देवा का आहारेच्छा काल

१ कुक्ष भव तिष्ठिका की चार भव से मुक्ति

सूक्त सप्तशतिका

पञ्चम सप्तशतिका

१ विद्या

२ महाव्रत

३ कामगुण

४ आश्रय द्वार

५ मन्दर द्वार

६ निजरा स्थान

७ सन्निधि

८ अस्मिता

● १ गोहिणी नक्षत्र के तारे

२ पुनर्वसु नक्षत्र के तारे

३ हस्त नक्षत्र के तारे

४ विशाखा नक्षत्र के तारे

५ गनिष्ठा नक्षत्र के तारे

●

१ चानुका प्रभा के कुछ नक्षत्रों की स्थिति

२ रत्नप्रभा के कुछ नक्षत्रों की स्थिति

३ कुछ अन्य कुम्हारों की स्थिति

४ मोक्षमं-द्वैतान वरुण के देशों की स्थिति

५ नक्षत्रप्रभा-प्रभा के देशों की स्थिति

६ वान आदि विमानवासी देशों की स्थिति

●

१ वान आदि विमानवासी देशों का श्वामोन्मृग्य रूप

१ वान आदि विमानवासी देशों का आश्विन-रूप

१ कुछ भवविद्धिओं की वान भव में स्थिति

सूत्र संख्या ३२

पठ समवाय

१ निष्ठा

२ जीव-निकाय

३ बाह्य रूप

४ आन्तरिक रूप

५ छायास्थित समुद्रघात

६ अश्विग्रह

●

१ कृत्तिका नक्षत्र के तारे

२ अश्विग्रह नक्षत्र के तारे

●

१ रत्नप्रभा के कुछ नक्षत्रों

२ चानुकाप्रभा के कुछ नक्षत्रों

- ४ सोधम ईगान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ सनत्कुमार माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ स्वयम्भू आदि विमानवासी देवों की स्थिति
-
- १ स्वयम्भू अग्नि विमानवासी देवों का श्वागोच्छ्रवाम काल
- १ स्वयम्भू अग्नि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धि का की छह भव से मुक्ति

सूत्र सरणी १०

सप्तम समवाय

- १ भयस्मान
- २ समुदधात
- ३ म० महावीर की ऊर्चाई
- ४ अम्बूद्वीप के वषधर पर्वत
- ५ अम्बूद्वीप के वष-क्षेत्र
- ६ क्षीणमोह गुणस्थान में वेदने योग्य कम प्रकृतियाँ
-
- १ मघा नक्षत्र के तारे
- २ पूवर्णिशा के द्वार वाले नक्षत्र
- ३ दक्षिणदिशा के द्वार वाले नक्षत्र
- ४ पश्चिमदिशा के द्वार वाले नक्षत्र
- उत्तरदिशा के द्वार वाले नक्षत्र
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरविकों की स्थिति
- २ वानुकाप्रभा के कुछ नैरविका की स्थिति
- ३ पक प्रभा के कुछ नैरविकों की स्थिति
- ४ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ५ सोधम ईगान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

- ६ मन्त्रकुमार कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ७ माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ८ ब्रह्मलोक कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ९ नम आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

- १ नम आदि विमानवासी देवों का आशुतोषाचार्य काल
- २ नम आदि विमानवासी देवों का आशुतोषाचार्य काल
- ३ कुछ भवनिद्रिकों की मान भव में मुक्ति

सप्तमः सर्गः २३

अष्टमः सर्गः

- १ मदस्थान
- २ प्रवचन माता
- ३ व्योम देवों के चैत्यवृक्षों की ऊँचाई
- ४ जम्बूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष की ऊँचाई
- ५ कूट शाल्मली-गरुडायाम की ऊँचाई
- ६ जम्बूद्वीप-जगती की ऊँचाई
- ७ केयली समुद्रघात के समय
- ८ भ० पादवंताय के गण
- ९ भ० पादवंताय के गणधर
- १० चन्द्र के साथ योग

●

- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ पङ्कप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सीधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ ब्रह्मलोक कल्प के कुछ देवों की स्थिति

१ अग्नि आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

१ अग्नि आदि विमानवासी देवों का स्वर्गाभिषेक का वृत्त

१ अग्नि आदि विमानवासी देवों का आह्वान का वृत्त

१ कुछ भव विद्विषों की बातें एवं न मुक्ति

सूक्त मन्त्र १३

नवमः सर्गः

१ ब्रह्मचर्य मुक्ति

२ ब्रह्मचर्य अमुक्ति

३ आचारान्त-ब्रह्मचर्य अमुक्ति का अध्ययन

४ म० पादवनाश की ऊर्ध्व

५ चन्द्र के साथ अभिषेक नवमः का योगफल

६ उत्तरदिशि से चन्द्र के साथ योग करने वाले

७ रत्नप्रभा के ऊपरी समभुजा में तारात्रा की ऊर्ध्व

●

१ लवण समुद्र में अम्बुद्वीप में प्रवेश करने वाले मत्स्यो की अवगाहना

●

१ विजय द्वार के एक एक पार्श्व में होने वाले भूमिधर

●

१ व्यन्तर देवों की सुधर्मा सभा की ऊर्ध्व

●

१ दशनाभरणीय की उत्तर प्रवृत्तियाँ

●

१ रत्नप्रभा के कुछ नैऋतिको की स्थिति

२ पद्मप्रभा के कुछ नैऋतिका की स्थिति

३ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति

४ सोम ईशान कल्प के देवों की स्थिति

- ५ प्रतापीक कल्प के देवों की स्थिति
- ६ पद्म आदि विमानवासी देवों की स्थिति
-
- १ पद्म आदि विमानवासी देवों का स्थानोत्सृष्ट काल
- १ पद्म आदि विमानवासी देवों का उत्सृष्ट काल
- १ कुछ भव निद्रियों की नव भव में स्थिति

मृग संख्या २०

दशम समवाय

- १ धर्मल-धर्म
- २ चित्तमयायि स्थान
- ३ मेरुपर्वत के भूत का विष्कम्भ
- ४ भ० अरिष्टनेमी की ऊचाई
- ५ कृष्ण धामदेव की ऊचाई
- ६ राम धनदेव की ऊचाई
-
- १ ज्ञानवृद्धि करने वाले नक्षत्र
-
- १ अकर्मभूमि मनुष्यों के कल्प-वृक्ष
-
- १ रत्नप्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति
- २ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ पंकप्रभा के नरकावास
- ४ पंकप्रभा के कुछ नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति
- ५ धूमप्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति
- ६ कुछ अमुर कुमारों की जघन्य स्थिति
- ७ नाग कुमार आदि कुछ भवनवासी देवों की जघन्य स्थिति
- ८ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति

६ अचि आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

१ अचि आदि विमानवासी देवों का इशानाच्छ्रवण काल

१ अचि आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल

१ कुछ एक मिथिकों की बाढ भय से भुक्ति

मूत्र सख्या १६

नवम समवाय

१ ब्रह्मचर्य गुणि

२ ब्रह्मचर्य अगुणि

३ लावाराङ्ग ब्रह्मचर्य क्षुत्तरकथ के अध्ययन

४ अ० पादवताप की ऊचाई

५ चन्द्र के मास अभिजित नक्षत्र का योगजान

६ उत्तरदिशा में चन्द्र के मास योग करने वाले

७ रत्नप्रभा के ऊपरी समभूभाग से लावारा की ऊचाई

●

१ लवण समुद्र में अम्बुदीप में प्रवेश करने वाले यस्त्वों की अवगहर्ण

●

१ विजय द्वार के एक एक पाद्व म होने वाले भूविषय

●

१ अत्यन्त देवा की सुषर्मा मभा की ऊचाई

●

१ दत्तनावरभीष की उत्तर अङ्गुनियाँ

●

१ रत्नप्रभा के कुछ नैरवियों की स्थिति

२ पद्मप्रभा के कुछ नैरवियों की स्थिति

३ कुछ अगुर कुमारों की स्थिति

४ मौषर्म-ईशान कला के देवा की स्थिति

- १ ब्रह्म आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ ब्रह्म आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की इग्यारह भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १६

वारह्वां समवाय

- १ भिक्षु प्रतिमा
- २ श्रमणों के व्यवहार-संभोग
- ३ वदना के आवर्त
- ४ विजया राजधानी का विष्कम्भ
- ५ राम बलदेव का पूर्णायु
- ६ मेरु पर्वत की झूलिका का विष्कम्भ
- ७ जम्बूद्वीप-जगती के मूल का विष्कम्भ
- ८ जघन्य रात्रि के मुहूर्त
- ९ जघन्य दिन के मुहूर्त
- १० सर्वार्थसिद्ध विमान से ईषत्प्राग्भारा :
- ११ ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के नाम
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ धूम्रप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ लांतक कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ महेन्द्र आदि विमानवासी देवों की स्थिति
-
- १ महेन्द्र आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास का
- १ महेन्द्र आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल

१ बुद्ध भवमिदिकों की बारह भव से मुक्ति

सूत्र संख्या २०

सरहवा समवाय

- १ विद्यास्थान
- २ मोक्षम ईशान कर्म का विमान प्रमाण
- ३ मोक्षमोक्षननन विमान का आगम विद्वम्भ
- ४ ईशान कर्मनन विमान का आगम विद्वम्भ
- ५ अक्षर निरुच वचि देवा की बुद्धकाग
- ६ आगाम बुद्ध का वस्तु
- ७ गनी निरुच वचि देवा का वस्तु
- ८ मोक्षम ईशान का विमान

- १ अक्षर निरुच वचि देवा की स्थिति
- २ बुद्धम ईशान कर्म का स्थिति
- ३ बुद्ध वस्तु बुद्धकाग का स्थिति
- ४ मोक्षम ईशान कर्म का स्थिति
- ५ अक्षर निरुच वचि देवा की स्थिति
- ६ अक्षर निरुच वचि देवा की स्थिति
- ७ अक्षर निरुच वचि देवा की स्थिति
- ८ अक्षर निरुच वचि देवा की स्थिति

- १ अक्षर निरुच वचि देवा की स्थिति
- २ अक्षर निरुच वचि देवा की स्थिति
- ३ बुद्ध भवमिदिकों की बारह भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १०

चौदहवा समवाय

- १ बुद्धकाग
- २ बुद्ध
- ३ अक्षर निरुच वचि देवा की स्थिति

- ४ भ० महावीर की उत्कृष्ट भ्रमण संपदा
- ५ गुणस्थान
- ६ भरत और ऐरवत क्षेत्र की जीवा का आयाम
- ७ चक्रवर्ती के रत्न
- ८ जम्बूद्वीप के लवणसमुद्र में मिलने वाली नदियाँ

७

- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधम-ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ लांतक कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ६ महाशुक्र कल्प के देवों की जघन्य स्थिति
- ७ श्रीकांत आदि विमानवासी देवों की स्थिति

७

- १ श्रीकांत आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ श्रीकांत आदि विमानवासी देवों का आहारच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की चौदह भवों से मुक्ति

सूत्र संख्या १७

पन्द्रहवां समवाय

- १ परमाधार्मिक देव
- २ भ० नमिनाथ की ऊँचाई
- ३ कृष्णपक्ष में ध्रुवराहु द्वारा प्रतिदिन चन्द्रकला का आवरण
- ४ शुक्लपक्ष में ध्रुवराहु द्वारा प्रतिदिन चन्द्रकला का अनावरण
- ५ शतभिषादि छह नक्षत्रों का चन्द्र के साथ योग काल
- ६ चैत्र तथा आश्विन में दिन के मुहूर्त
- ७ चैत्र तथा आश्विन में रात्रि के मुहूर्त

८ विद्यानुग्रहाद के वस्तु

९ मन्त्री मनुष्य म घोष

●

१ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिका की स्थिति

२ धूमप्रभा के कुछ नैरयिका की स्थिति

३ कुछ अमुर कुमारों का स्थिति

४ सोपर्व ईगान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

५ मन्दागुह कल्प के कुछ देवों की स्थिति

६ नद आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

१ नद आदि विमानवासी देवों का स्वाभोष्ठवान कान

१ नद आदि विमानवासी देवों का आहारेभ्यु कान

१ कुछ भवमिडिका की पट्टह मय से मुक्ति

सूत्र मन्त्रा १८

सोलहदा समवाय

१ सूत्रहनाय मोनरुव मध्यमन की माचार्य

२ कथाय के मय

३ मय पवन के नाम

४ भ० पाशवनाय की उत्कृष्ट धर्मन सपदा

५ आत्मप्रवाद पुत्र के वस्तु

६ चमरद और मन्त्र के अवनारिकानयन का आशाम विष्कम्भ

७ लवण समुद्र के मय से जल की रुद्धि

●

१ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

२ धूमप्रभा के कुछ नैरयिका की स्थिति

३ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति

- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ महाशुक्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ आवर्त आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
-
- १ आवर्त आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ आवर्त आदि विमानवासी देवों का आहारेन्द्रा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की सोलह भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १६

सत्रहवां समवाय

- १ असंयम
- २ संयम
- ३ मानुषोत्तर पर्वत की ऊँचाई
- ४ सर्व वेलंघर अनुवेलंघर नागराजों के आवास पर्वतों की ऊँचाई
- ५ लवण समुद्र के मध्यभाग में पानी की गहराई
- ६ चारण मुनियों की तिरछी गति
- ७ चमरेन्द्र के तिगिच्छ कूट उत्पात पर्वत की ऊँचाई
- ८ वलेन्द्र के रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत की ऊँचाई
- ९ मरण के प्रकार
- १० सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में कर्म प्रकृतियों का बंध
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों स्थिति
- ३ तमः प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ४ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ५ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ महाशुक्र कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति

- ७ सहस्रार कल्प के कुछ देवों की जय व स्थिति
- ८ सामान आदि विमानवासी देवों की स्थिति
-
- १ सामान आदि विमानवासी देवों का स्वामोन्मत्तवास काल
- १ सामान आदि विमानवासी देवों का आहारेष्ट काल
- १ कुछ नरविकों की महत्त्व वय से मुक्ति

सूत्र सारवा २१

अष्टारहवीं समवाय

- १ ब्रह्मचर्य
- २ भ० अरिष्टमयी की उत्कृष्ट धर्म मन्त्र
- ३ सब माधुर्या के आचार मन्त्र
- ४ शूलिकः महिष आचाराङ्ग के पद
- ५ ब्राह्मी लिपि के प्रकार
- ६ अग्नि माग्नि प्रवाद क वस्तु
- ७ धूमप्रभा का वाहय मोटाई
- ८ पौषमान व गवि क मूल
- ९ अषाढमास के दिन व मूल
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नरविकों की स्थिति
- २ धूमप्रभा के कुछ नरविकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति
- ४ पौषमान ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ सहस्रार कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ६ आनन कल्प के देवों की जय व स्थिति
- ७ कान आदि विमानवासी देवों की स्थिति
-

- १ काल आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ काल आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धियों की अट्टारह भव से मुक्ति

सूत्र संख्या २१

उन्नीसवां समवाय

- १ ज्ञाताधर्मकथा—प्रथम श्रुतस्कंध के अध्ययन
- २ जम्बूद्वीप में सूर्य का ताप क्षेत्र
- ३ शुक्र महाग्रह के साथ भ्रमण करनेवाले नक्षत्र
- ४ एक कला का परिमाण
- ५ राज्यपद पाने के पश्चात् प्रव्रज्या लेनेवाले तीर्थकर

●

- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमः प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ आनत कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ६ प्राणत कल्प के कुछ देवों की जघन्य स्थिति
- ७ आनत आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

- १ आनत आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ आनत आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धियों की उन्नीस भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १२

वीसवां समवाय

- १ असमाधि स्थान

- २ भ० मुनिमुद्रन की ऊर्चाई
- ३ सब धनोदधि का बाहुल्य
- ४ प्राणन दबन्द्र के सामानिक देव
- ५ नपुमक देवनीय की वषरिधति
- ६ पर्याप्त्यान पूर्व के वस्तु
- ७ उत्तमपिणी और अवमपिणी—वातचक्र—का परिमाण

-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
 - २ तम प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
 - ३ कुछ अमुरकुमारों की स्थिति
 - ४ सौत्रम ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
 - ५ प्राणन कल्प के कुछ देवों की उ कृष्ट स्थिति
 - ६ आरपन कल्प के कुछ देवों की प्रचय स्थिति
 - ७ सान आदि विमानवासी देवों की स्थिति

-
- १ सान आदि विमानवासी देवों का स्वासाच्छवास काल
 - १ मात आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
 - १ कुछ भवनिष्ठिकों की बीस भव में मुक्ति

मूत्र मन्त्रा १०

इक्कीसवा समवाय

- १ सबल दीप
 - २ अष्टम गुणस्थान में कमप्रकृतियों की मत्ता
 - ३ अवमपिणी के पाचवें छट्टे आरे के वर्षों का परिमाण
 - ४ उत्तमपिणी के पट्टे और दूसरे आरे के वर्षों का परिमाण
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
 - २ तम प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ आरण कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ अच्युत कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ७ श्रीवत्स आदि विमानवासी देवों की स्थिति
-
- १ श्री वत्स आदि विमानवासी देवों का स्वासोच्छ्वास काल
- १ श्री वत्स आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भव सिद्धिकों की इक्कीस भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १४

बावीसवां समवाय

- १ परिपह
- २ दृष्टिवाद में स्वसिद्धान्त के सूत्र ✓
- ३ दृष्टिवाद में आजीविक सिद्धान्त के सूत्र ✓
- ४ दृष्टिवाद में त्रैराशिक मत के सूत्र
- ५ दृष्टिवाद में नय चतुष्क के सूत्र
- ६ पुद्गल परिणाम के प्रकार
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमःप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ तमस्तमप्रभा के कुछ नैरयिकों की जघन्य स्थिति
- ४ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ५ सौधर्म-ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ अच्युत कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ७ नीचे के तीन ग्रैवेयक विमानों की स्थिति
- ८ महित आदि विमानवासी देवों की स्थिति
-
- १ महित आदि विमानवासी देवों का स्वासोच्छ्वास काल

- १ मन्त्रि आनि विमानवाना दवा का आहारेच्छा काव
- १ कुल भवदिका की बावीस भव छ मुक्ति

सूत्र सप्त्या १०

तेईसवा समवाय

- १ सूत्र कृताग-११ अनुसंधान के अध्ययन
- २ सूत्रों ३ के समय कवनज्ञान ज्ञान काव तीथकर
- ३ पूर्वभक्त म लक्षणा अन्ना का अध्ययन करनेवाले इस अवसंधिणी के तीथकर
- ४ पूर्वभक्त म साहजिक राज्य करनेवाले इस अवसंधिणी के तीथकर

- १ रत्नप्रता के कुल भवदिका का स्थिति
- २ लक्षणा के कुल भवदिकों की स्थिति
- ३ कुल भवत कुमारों की स्थिति
- ४ तीथम लक्षण के कुल देवा की स्थिति
- ५ तीन मध्यम भवदिक देवा की स्थिति
- ६ तीन अग्रम भवदिक स्त्रियों की उद्घृष्ट स्थिति

- १ प्रवेष्टक दवा का स्वाभाविकता काव
- १ प्रवेष्टक स्त्रियों का आहारेच्छा काव
- १ कुल भवदिका का तेईस भवम मुक्ति

सूत्र सप्त्या १३

तीसवा समवाय

- १ देवादिदेव
- २ लघु हिमालय वषट्ठर पर्वत की जीवाका आवास
- ३ गिरिरी वषट्ठर पर्वत की जीवाका आवास

४ इन्द्रवाले देवस्थान

५ सूर्य के उत्तरायण होने पर पौरुषी छाया का परिमाण

६ गंगा नदी के प्रवाह का विस्तार

७ सिन्धु नदी के प्रवाह का विस्तार

८ रक्ता नदी के प्रवाह का विस्तार

९ रक्तवती नदी के प्रवाह का विस्तार

●

१ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

२ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति

४ सोधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

५ नीचे के तीसरे ग्रैवेयकों की स्थिति

६ नीचे के दूसरे ग्रैवेयकों की स्थिति

○

१ उक्त ग्रैवेयकों का श्वासोच्छ्वास काल

१ उक्त ग्रैवेयकों का आहारेच्छा काल

१ कुछ भवसिद्धिकों की चौबीस भवसे मुक्ति

सूत्र संख्या १८

पच्चीसवां समवाय

१ पाँच महाव्रत की भावना

२ भ० मल्लीनाथ की ऊंचाई

३ सर्व महान् वैताढ्य पर्वतों की ऊंचाई और उद्बेध

४ शर्करा प्रभा के नरकावास

५ चूलिका सहित आचारांग के अध्ययन

६ अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय में बंधने वाली नाम कर्म की प्रकृतियाँ

- ७ गंगा नदी के प्रपात का परिमाण
मिथु नदी के प्रपात का परिमाण
- ८ रत्ना नदी के प्रपात का परिमाण
रत्नवती नदी के प्रपात का परिमाण
- ९ सौकश-दुमार पूर्व के वस्तु
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ मध्यम प्रथम संवेयकों की स्थिति
-
- १ मध्यम प्रथम संवेयकों का द्वासोच्छ्वास काल
- १ मध्यम प्रथम संवेयकों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवमिष्टिकों की पञ्चीम भव से मुक्ति

सूत्र सख्या १७

छत्थीसवा समवाय

- १ दशाधुन्यकष इहृत्कल्प और व्यवहार के उद्देशक
- २ अभाव सिद्धिक जीवों के सत्ता में मोहनीय की कर्म प्रवृत्तिषा
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ मध्यम दूसरे संवेयकों की स्थिति
- ६ मध्यम प्रथम संवेयकों की स्थिति
-
- १ उक्त संवेयकों का द्वासोच्छ्वास काल

- १ उक्त ग्रंथेयकों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की छब्बीस भव से मुक्ति

सूत्र संख्या ११

सत्तावीसवां समवाय

- १ अनगार गुण
- २ जम्बूद्वीप में नक्षत्रों का व्यवहार
- ३ नक्षत्रमास के दिन-रात
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के विमानों का बाहल्य
- ५ वेदक सम्यक्त्व के बंध से विरत जीव के सत्ता में मोहनीय की उत्तर प्रकृतियाँ
- ६ श्रावण शुक्ला सप्तमी को पौरुषी का प्रमाण
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों का स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ मध्यम तीसरे ग्रंथेयक देवों की स्थिति
- ६ मध्यम दूसरे ग्रंथेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति
-
- १ उक्त ग्रंथेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ उक्त ग्रंथेयक देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की सत्तावीस भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १२

अट्ठावीसवां समवाय

- १ आचार प्रकल्प
- २ भवसिद्धिक जीवों के सत्ता में मोहनीय की प्रकृतियाँ

- ३ ईशान कल्प के विमान
- ४ देवगणि बाधने वाले जीव के नामकर्म की उत्तरप्रकृतियों का वष
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ समस्तमा के कुछ नैरयिका की स्थिति
- ३ कुछ अमुरकुमारा की स्थिति
- ४ सौधन ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ ऊपर के प्रथम प्रियेयको की स्थिति
- ६ मध्यम हमरे प्रियेयको की स्थिति
-
- १ उक्त प्रियेयको का श्वासोच्छ्वास काल
- १ उक्त प्रियेयका का बाहारेच्छा काल
- १ कुछ भवमिदिकों की अद्वावीस यमों से मुक्ति

सूत्र मर्यादा १३

उत्तरीसवा समवाय

- १ पापधुन
- २ आषाढ मास के दिन रात
- ३ भाद्रपद मास के दिन रात
- ४ कार्तिक मास के दिन रात
- ५ पौष मास के दिन रात
- ६ फाल्गुन मास के दिन रात
- ७ वैशाख मास के दिन रात
- ८ चैत्र दिन के गृहन
- ९ सम्पूर्ण जीव के विमान नामी देवों से उत्पन्न होने से पूर्व तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्म की प्रकृतियों का नियमा वषन
-
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिका की स्थिति

- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के देवों की स्थिति
- ५ मध्यम ऊपर के ग्रैवेयक देवों की स्थिति
- ६ ऊपर के प्रथम ग्रैवेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति

७

- १ उक्त ग्रैवेयक देवों का स्वातोच्छ्वास काल
- १ उक्त ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की उनत्तीस भवों से मुक्ति

सूत्र संख्या १६

तीसवां समवाय

- १ मोहनीय स्थान
- २ स्थविर मंडित पुत्र का श्रमण पर्याय
- ३ एक अहोरात्र के मुहूर्त
- ४ तीस मुहूर्तों के नाम
- ५ भ० अरहनाथ की ऊंचाई
- ६ महन्नार देवेन्द्र के सामानिक देव
- ७ भ० पार्श्वनाथ का गृहवास
- ८ भ० महावीर का गृहवास
- ९ रत्नप्रभा के नरकावास

१०

- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुर देवों की स्थिति
- ४ ऊपर के तृतीय ग्रैवेयक देवों की स्थिति
- ५ ऊपर के द्वितीय ग्रैवेयक देवों की स्थिति
- ६ रत्नप्रभा के नरकावास

११

४ सौधर्मकल्प के विमान

५ रेवती नक्षत्र के तारे

६ नाट्य के विविध भेद

१ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

२ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति

४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

५ चार अनुत्तर विमानवासी देवों की स्थिति

१ चार अनुत्तर विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल

१ चार अनुत्तर विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल

१ कुछ भवसिद्धिकों की वत्तीस भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १४

तेतीसवां समवाय

१ आशातना

२ चमरचंचा राजधानी के बाहर दोनों ओर के भूमिघर

३ महाविदेह का विष्कम्भ

४ बाह्य तृतीय मंडल से सूर्यदर्शन की दूरी का अन्तर

१ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

२ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

३ अप्रतिष्ठान नरकावास के नैरयिकों की स्थिति

४ कुछ असुर कुमारों की स्थिति

५ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

६ चार अनुत्तर विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति

७ सर्वार्थसिद्ध विमान के देवों की स्थिति

१. सर्वार्थसिद्ध विमान के देवों का श्वासोच्छ्वास काल

सैंतीसवां समाय

- १ भ० कुंथुनाथ के गणधर
भ० अरहनाथ के गणधर
- २ हेमवंत क्षेत्र की जीवा का आयाम
हिरण्यवत क्षेत्र की जीवा का आयाम
- ३ चार अनुत्तर विमानों के प्राकारों की ऊँचाई
- ४ धुद्रिका विमानप्रविभक्ति के प्रथम वर्ग के उद्देशक
- ५ कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन पौरुषी-प्रमाण

अड़तीसवां समाय

- १ भ० पार्श्वनाथ की उत्कृष्ट श्रमणी सम्पदा
- २ हेमवत क्षेत्र की जीवा का धनुष्य
हिरण्यवत क्षेत्र की जीवा का धनुष्य
- ३ मेरु पर्वत के द्वितीय कांड की ऊँचाई
- ४ धुद्रिका विमान प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग के उद्देशक

उनचालीसवां समाय

- १ भ० नमिनाथ के अवधिज्ञानी मुनि
- २ समय क्षेत्र के कुल पर्वत
- ३ द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ और सप्तम नरक के नरकावास
- ४ ज्ञानावरणीय, मोहनीय, गोत्र और आयुर्कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ

चालीसवां समाय

- १ भ० अरिपूनेमी की श्रमणी सम्पदा
- २ मेरु चूलिका की ऊँचाई
- ३ भ० शांतिनाथ की ऊँचाई
- ४ भूतानन्द नागकुमारेन्द्र के भवन
- ५ धुद्रिका विमानप्रविभक्ति के तृतीय वर्ग के उद्देशक

६ काष्णुण पुनिमा का पौष्णी प्रमाण

■ कार्निव पुनिमा को पौष्णी प्रमाण

८ मन्गुष्ट कल्प क विमान

इकतालीसवाँ समवाय

१ म० समिनाथ की श्रमणी सम्पत्ति

२ प्रथम पंचम पण्ड और मन्म नरक क नरकावास

३ मन्गुष्टा विमान प्रविमक्ति क प्रथम वय क उद्गच्छ

बियालीसवाँ समवाय

१ म० मन्गुष्ट का श्रमण पर्याप्त

२ जम्बुद्वीप क पुष्पात्त से गोम्पुम आवासन वन क पवित्रमान का अन्तर

३ क जम्बुद्वीप क पवित्रमान से मन्म नरक वन क उत्तरान्त का अन्तर
म जम्बुद्वीप क पवित्रमान से मन्म वन क पुष्पात्त का अन्तर

म जम्बुद्वीप क मन्म नरक से मन्मीम वन क दण्डिमान का अन्तर

४ कान्त समुद्र क कट-सूत्र

५ मन्मद्वीप जम्बुद्वीप का उद्गच्छ स्थिति

६ नामास की उत्तर प्रवृत्ति

७ लवण समुद्र क कटावका की रोकनकाद काण्डुमार म्ब

८ मन्मद्वीप विमान प्रविमक्ति से द्वितीय वय क उद्गच्छ

९ अथर्वविद्या क पौष्णी और द्वितीय वय का संयुक्त परिमाण

१० उत्तरविद्या क प्रथम तथा द्वितीय वय का परिमाण

सयालीसवाँ समवाय

१ कर्म विनाश क अध्ययन

२ प्रथम पंचम और पंचम नरक क नरकावास

३ जम्बुद्वीप क पुष्पात्त से गोम्पुम आवासनवन क पुष्पात्त का अन्तर

- ४ क- जम्बूद्वीप के दक्षिणान्त से दक्षिणान्त से दक्षिणान्त का अंतर
- ख- जम्बूद्वीप के पश्चिमान्त से शंखपर्वत के पश्चिमान्त का अंतर
- ग- जम्बूद्वीप के उत्तरान्त से दक्षिण पर्वत के उत्तरान्त का अंतर
- ५ महालिया विमान-प्रविभक्ति में तृतीय वर्ग में उद्देशक

चौवालीसवां समवाय

- १ ऋषिभाषित के अध्ययन
- २ भ० विमलनाथ के सिद्ध होनेवाले शिष्य-प्रशिष्यों की परम्परा
- ३ धरण नागेन्द्र के भवन
- ४ महालिका विमान प्रविभक्ति में चतुर्थ वर्ग के उद्देशक

पैंतालीसवां समवाय

- १ समय क्षेत्र का आयाम-विष्कम्भ
- २ सीमंतक नरकावास का आयाम-विष्कम्भ
- ३ उडुविमान का आयाम-विष्कम्भ
- ४ ईपत् प्राग्भारा पृथ्वी का आयाम-विष्कम्भ
- ५ भ० अरहनाथ की ऊंचाई
- ६ मेरु पर्वत का चारों दिशाओं से अन्तर
- ७ घातकी खंड और पुष्करार्द्ध के नक्षत्रों का चन्द्रमा के साथ योगकाल
- ८ महालिका विमान-प्रविभक्ति में पाँचवे वर्ग के उद्देशक

छियालीसवां समवाय

- १ दृष्टिवाद के मातृकापद
- २ ब्राह्मी लिपि के मातृकाक्षर
- ३ प्रभंजन वायुकुमार के भवन

सैंतालीसवां समवाय

- १ आम्यन्तर मण्डल से सूर्य दर्शन का अन्तर

२ स्वविर अग्निभूति का गृह्वान

अज्ञतात्तीमवा समवाय

१ चक्रवर्ती के प्रमुख नगर

२ २० धमनाथ के गणधर

३ मूनमदल का विष्णुम्भ

अनपथासवा समवाय

१ मज्जिमज्झिका मिथु प्रणिमा क न्वि

२ दवहुद उत्तरहुद मे वात्यकान क न्वि

३ वीन्ध्या की स्थिति

पद्यासवा समवाय

१ म० मुनिमुचन की धमना सम्पत्ति

२ म० अनननाथ की ऊचाई

३ पुन्यालम वामुन्धे की ऊचाई

४ मव गीय वनाग्या के मून का विष्णुम्भ

५ सानर कल्प के विमान

६ क निर्मित्त गुफा का व्यापार

स लङ्घनपान गुफा की व्यापार

७ सब काचनय पवना क गिन्धरी का विष्णुम्भ

इवाधनेवा समवाय

१ साचाराम प्रथम अनम्भन के अन्धयनो के उद्गार

२ चमरुड की मुधर्मा मभा क म्भ

३ वनर का मुधर्मा मभा क म्भ

४ मुप्रभ वनर क आनु

५ दगनावरणाय कम का उत्तर प्रहृतिवा

दावनवां समवाय

- १ मोहनीय कर्म के नाम
- २ गोस्तूप आवास पर्वत के पूर्वान्त से बलया मुख पाताल कलश के पश्चिमान्त का अन्तर
- ३ क- दगभास आवास पर्वत के दक्षिणान्त से केतुग पाताल कलश के उत्तरान्त का अन्तर
- ख- शंग्र आवास पर्वत के पश्चिमान्त से यूपक पाताल कलश के पूर्वान्त का अन्तर
- ग- दगसीम आवाम पर्वत के उत्तरान्त से ईशर पाताल कलश के दक्षिणान्त का अन्तर
- ४ जानावरणीय, नामकर्म और अंतराय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ सौधर्म सनत्कुमार और माहेन्द्र के विमान

त्रेपनवां समवाय

- १ क- देवकुरु क्षेत्र की जीवा का आयाम
- ख- उत्तरकुरुक्षेत्र की जीवा का आयाम
- २ क- महा हिमवत वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम
- ख- रुक्मी वर्षधर पर्वत की जीवाका आयाम
- ३ भ० महावीर के अनुत्तर देवलोकों में उत्पन्न होने वाले शिष्य
- ४ सम्मूर्द्धिम उरपरिसर्प की स्थिति

चोपनवां समवाय

- १ क- भरत क्षेत्र में उत्सर्पिणी में उत्तम पुरुष
- भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी में उत्तम पुरुष
- ख- ऐरवत क्षेत्र में उत्सर्पिणी में उत्तम पुरुष
- ऐरवत क्षेत्र में अवसर्पिणी में उत्तम पुरुष
- २ भ० अरिष्ट नेमीनाथ का छद्मस्थ पर्याय
- ३ भ० महावीर के एकदिन के प्रवचन
- ३ भ० अनन्तनाथ के गणधर

एकपनची समवाय

- १ भ० मन्नानाथ का आगु
- २ मेरठवन व पश्चिमान्त में विजय द्वार के पश्चिमान्त का अन्तर
- ३ व मेरठवन व उत्तरान्त से विजय द्वार के उत्तरान्त का अन्तर
- ४ मन्नाथन के पूर्वांत में अन्त द्वार के पूर्वांत का अन्तर
- ५ मेरठवन के दक्षिणान्त में अन्त द्वार व दक्षिणान्त का अन्तर
- ४ भ० महावीर व अन्त द्वार
- ५ प्रथम द्वितीय मण्ड के अन्तर्वर्त्य
- ६ द्वावर्त्यमयी नाम और आगुधन की उत्तर प्रवृत्ति

द्वपनची समवाय

- १ शम्भुजी म नगरी का अन्त के साथ बीच
- २ भ० विमलनाथ के अन्त द्वार

सत्तावनची समवाय

- १ आचार्य (पूर्विका की ओर) मूर्च्छनाग और सदाग के अन्तर्वर्त्य
- २ गाम्भूष आचार्य पवन के पुराण से अन्तर्वर्त्य पञ्चाग कर्मा के मध्यभाग का अन्तर
- ३ व अन्तर्वर्त्य आचार्य पवन के दक्षिणान्त से केतुक पञ्चाग कर्मा के मध्यभाग का अन्तर
- ४ गाम्भूष आचार्य पवन व पश्चिमान्त से मूर्च्छनाग कर्मा के मध्यभाग का अन्तर
- ५ दक्षिणीय आचार्य पवन के उत्तरान्त में ईश्वर पञ्चाग कर्मा के मध्यभाग का अन्तर
- ४ भ० मल्मीनाथ के अन्त पञ्चागानी

५ क- महाहिमवत पर्वत के धनुष्य की परिधि

ख- रुक्मी पर्वत के धनुष्य की परिधि

अठावनवां समवाय

१ प्रथम द्वितीय और पंचम नरक के नरकावास

२ ज्ञानावरणीय, वेदनीय, आयु, नाम और अन्तराय कर्म की उत्तर प्रकृतियां

३ क- गोस्तुभ आवास पर्वत के पश्चिमान्त से बलयामुख पाताल कलश का मध्यभाग का अन्तर

ख- दकभास पर्वत के उत्तरान्त से केतुक पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर

ग- शंख आवास पर्वत के पूर्वान्त से यूपक पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर

घ- दकसौम आवास पर्वत के दक्षिणान्त से ईसर पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर

उनसठवां समवाय

१ चन्द्र संवत्सर के दिन-रात

२ भ० सम्भवनाथ का गृहवास

३ भ० मल्लीनाथ के अवधिज्ञानी

साठवां समवाय

१ एक मण्डल में सूर्य के रहने का समय

२ लवण समुद्र के ज्वार-भाटे को रोकने वाले नागकुमार

३ भ० विमलनाथ की ऊँचाई

४ बलेन्द्र के सामानिक देव

५ ब्रह्म देवेन्द्र के सामानिक देव

६ मोक्षमं देवान कल्प के निष्ठा

द्वसठवाँ समवाय

- १ पच वर्गिय यग के अनुष्ठान
- २ मेरु पर्वत के प्रथम काष्ठ की ऊँचाई
- ३ चन्द्र विमान के समान
- ४ सूर्य विमान के समान

बासठवाँ समवाय

- १ पच वर्गिय युग की पूर्णिमाय और अमावस्याय
- २ भ० वासुदेव के गण और गणधर
- ३ गुह्यपक्ष का भाग—रुद्रि
- ४ वृष्णपक्ष की भाग—हानि
- ५ क सौष्ठम कल्प के प्रथम प्रस्तर में विमान
- ६ ईशान कल्प के प्रथम प्रस्तर में विमान
- ७ सब ब्रह्मणिक देवा के विमान प्रस्तर

त्रसठवाँ समवाय

- १ भ० अथर्ववेद का गुह्यकाल
- २ क हविष्य क मनुष्य का बाल्यकाल
- ३ गम्यक काल के मनुष्य का बाल्यकाल
- ४ निषध पर्वत पर सूर्य के मण्डल
- ५ नीलवर्ण पर्वत पर सूर्य के मण्डल

चोसठवाँ समवाय

- १ अष्ट अष्टमिका मि तु पश्चिमा क त्रि रात
- २ अमर काल का अवन
- ३ चमर क सामानिक देव
- ४ मरु दक्षिण पर्वत का उमेय—ऊँचाई
- ५ सौष्ठम ईशान और ब्रह्मणिक कल्प के विमान

६ चक्रवर्ती के मुक्तामणी हार की सरें

पैंसठवाँ-समवाय

- १ जम्बूद्वीप में सूर्य मण्डल
- २ स्थविर मौर्यपुत्र का गृहवास
- ३ सौधमयितंसक विमान के भीम नगर

छासठवाँ समवाय

- १ दक्षिणार्ध मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र
- २ दक्षिणार्ध मनुष्य क्षेत्र के सूर्य
- ३ उत्तरार्ध मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र
- ४ उत्तरार्ध मनुष्य क्षेत्र के सूर्य
- ५ भ० श्रेयांसनाथ के गण-गणधर
- ६ मतिज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति

सड़सठवाँ समवाय

- १ पंच वर्षीय युग के नक्षत्र-माम
- २ हेमवत की वाहा का आयाम
- ३ हैरण्यवत की वाहा का आयाम
- ४ मेरु पर्वत के पूर्वान्त से गीतम द्वीप के पूर्वान्त का अन्तर
- ५ सर्व नक्षत्रों के मीमा विष्कम्भ का समांश

अड़सठवाँ समवाय

- १ धातकी खंडद्वीप के चक्रवर्तीविजय और राजधानियाँ
- २ धातकी खंडद्वीप में तीन काल में उत्कृष्ट तीर्थंकर
- ३ धातकी खंडद्वीप में तीन काल में चक्रवर्ती, वलदेव और वासुदेव
- ४ क- पुष्कर वर द्वीपार्ध में तीन काल में चक्रवर्ती विजय राजधानियाँ
ख- पुष्कर वर द्वीपार्ध में तीन काल में उत्कृष्ट तीर्थंकर
ग- पुष्कर वर द्वीपार्ध में तीन काल में चक्रवर्ती, वलदेव और वासुदेव
- ५ भ० विमलनाथ की श्रमण सम्पदा

उत्तररथी समवाय

- १ नमय शेष म मेरु की छात्रर वेप वर्षर परन
- २ मेरु वरत व गन्धमान् मे शीनम द्वीप के गन्धमान् का वर
- ३ मोहनीय की छोटकर रथ तान वरों की उत्तर कर्म शक्ति

सितरथी समवाय

- १ भ० महावीर के वरानाम के दिन राग
- २ भ० वाञ्छनाय की धमय सम्पदा
- ३ भ० कामुपुण्य की ऊँचाई
- ४ मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति
- ५ मोहनीय के सामानिक देव

दुर्गतरथी समवाय

- १ सूर्य की जाहति का काम
- २ वीर्य प्रवाद के प्राप्ति
- ३ भ० वाञ्छनाय का गृहशाम काम
- ४ तानर वरवर्णों का गृहशाम काम

बहतरथी समवाय

- १ सुवर्ण कुमार के भवन
- ४ लवण समुद्र की वाञ्छना की रोनेवाले नानुमार
- ३ भ० महावीर का आयु
- ४ रथविर भवभ्रमता का आयु
- ५ क पुष्कराव म चन्द्र
- ५ पुष्कराव म सूर्य
- ६ चक्रवर्ती क पुर
- ७ दुष्ट की कलावे
- ८ सम्मुखिभ मेवर की उत्कृष्ट स्थिति

तिहत्तरवाँ समवाय

- १ क- हरिवर्ष की जीवा
- ख- रम्यक् वर्ष की जीवा
- २ विजय बलदेव का आयु

चौहत्तरवाँ समवाय

- १ स्थविर अग्निभूति का आयु
- २ निपथ पर्वत के तिगिच्छ द्रह से सीतोदा नदी का उद्गम प्रवाह
- ३ नीलवत पर्वत के सीता नदी का उद्गम प्रवाह
- ४ चतुर्थ नरक के अतिरिक्त छहों नरकों के नरकावास

पचहत्तरवाँ समवाय

- १ भ० सुविधिनाथ के सामान्य केवली
- २ भ० शीतलनाथ का गृहवास काल
- ३ भ० शांतिनाथ का गृहवास काल

छिहत्तरवाँ समवाय

- १ विद्युत्कुमार के भवन
- २ क- द्वीप कुमार के भवन
- ख- दिशा कुमार के भवन
- ग- उदधि कुमार के भवन
- घ- स्तनित कुमार के भवन
- ङ- अग्निकुमार के भवन

सतहत्तरवाँ समवाय

- १ भरत चक्री की कुमारावस्था
- २ स्थविर अकंपित का आयु
- ३ क- सूर्य के उत्तरायण होने पर दिन की हानि-वृद्धि
- ख- सूर्य के दक्षिणायन होने पर दिन की हानि-वृद्धि

अटहत्तरवाँ समवाय

- १ वैश्रमण गक्रन्द के लोकपाल के आधिपत्य में सुवर्ण कुमार और दीप कुमार के भवन
- २ स्थविर अकपित का आयु
- ३ मूय के उत्तरायन में लौटते समय दिन रात की हानि
- ४ मूय के दक्षिणायन से लौटते समय दिन रात की हानि

उनहत्तरवाँ समवाय

- १ बलयांमुल्य पानान् कलम के अधस्तनभाग में रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अन्तर
- २ क केतु पाताल कनका के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अन्तर
- ख मूषक पाताल बलदा के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अन्तर
- ग ईमर पाताल कनका के अधस्तनभाग में रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अन्तर
- ३ तम प्रभा के मध्यभाग में तम प्रभा के अधोवर्ती धनोदधि का अन्तर
- ४ जम्बू द्वीप के प्रत्येक द्वार का अन्तर

अस्सीवाँ समवाय

- १ भ० श्रेयामनाथ की ऊँचाई
- २ त्रिशूट वासुदेव की ऊँचाई
- ३ अचल धनदेव की ऊँचाई
- ४ त्रिशूट वासुदेव का राज्यकाल
- ५ अप्वहृम काट का वाहृत्य
- ४ ईशानन्द के सामानिक देव
- ७ जम्बूद्वीप में आम्पतर मण्डन में—मूर्खोदय

इक्यासीवाँ समवाय

- १ नवनवमिका भिक्षु प्रतिमा के दिन
- २ भ० कुंथुनाथ के मनः पर्यव ज्ञातीं
- ३ व्याख्या प्रज्ञप्ति के अध्ययन

वयासीवाँ समवाय

- १ जम्बूद्वीप में सूर्य के गमनागमन के मण्डल
- २ भ० महावीर का गर्भ साहरण काल
- ३ महाहिमवन्त पर्वत के उपरितनभाग से सौगंधिक काण्ड के अध-
स्तन भाग का अन्तर
- ४ रुक्मि पर्वत के उपरितन भाग के सौगंधिक काण्ड के अधस्तन
भाग का अन्तर

तयासीवाँ समवाय

- १ भ० महावीर के गर्भसाहरण का दिन
- २ भ० शीतलनाथ के गण-गणवर
- ३ स्थविर मण्डितपुत्र की आयु
- ४ भ० ऋषभदेव का गृहवास काल
- ५ भरत चक्रवर्ती का गृहवास काल

चौरासीवाँ समवाय

- १ समस्त नरकावास
- २ भ० ऋषभदेव का सर्वायु
- ३ क- भरत चक्रवर्ती का सर्वायु
ख- बाहुवली का सर्वायु
ग- ब्राह्मी का सर्वायु
घ- सुन्दरी का सर्वायु
- ४ भ० श्रेयांसनाथ का सर्वायु
- ५ त्रिपृष्ठ वासुदेव का सर्वायु

- ६ शकल क गामानिक देव
- ७ गभी बाह्य मरुतों की ऊँचाई
- ८ गभी अन्तर पर्वतों की ऊँचाई
- ९ क हृदि वय की ओरा की परिधि
- १० गम्भय वय की ओरा की परिधि
- ११ एक बहुल वायु क ऊपरीभाग व नीच के भाग का अन्तर
- १२ व्याकृत प्रचलि क वय
- १३ नागकुमार क भवन
- १४ प्रकीर्णकी का अपिचयस सख्या
- १५ ओरायोनी
- १६ पूरु व क्षीय प्रहेनिका पदम का पुनर्धार
- १७ म० अक्षमण्ड की समग्र मन्त्रा
- १८ सब विमान

एकचामीवाँ समवाय

- १ पुनिका महिन आचारण के उद्गार
- २ धानकी मण्ड क मरु पर्वत की ऊँचाई
- ३ दक्ष मन्त्राक पवन की ऊँचाई
- ४ नन्तवन के अग्रमन भाग व सीधिक वायु के अवलन भाग का अन्तर

द्विपामीवाँ समवाय

- १ म० सुविधिनाथ क वय मण्डर
- २ म० सुगन्धनाथ के वानि मुनि
- ३ द्वितीय नरक के मध्यभाग से द्वितीय धनोदधि का अन्तर

सत्तासीवाँ समवाय

- १ मेरु पवन क पुवान्न से वास्तुव आवास पर्वत के परिमार्ग का अन्तर

- २ मेरु पर्वत के दक्षिण चरमान्त से दगमास पर्वत के उत्तर चरमान्त का अन्तर
- ३ मेरु पर्वत के पश्चिमान्त से शंख आवास पर्वत के पूर्व चरमान्त का अन्तर
- ४ मेरु पर्वत के उत्तर चरमान्त से दगसीम आवास पर्वत के दक्षिण चरमान्त का अन्तर
- ५ ज्ञानावरणीय और अन्तराय को छोड़कर शेष छह कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ
- ६ महाहिमवत कूट के ऊपरी भाग से सौगंधिक काण्ड के अधोभाग का अन्तर
- ७ स्वमी कूट के ऊपरी भाग से सौगंधिक काण्ड के अधोभाग का अन्तर

अठासीवाँ समवाय

- १ क- एक चन्द्र के ग्रह
ख- एक सूर्य के ग्रह
- २ दृष्टिवाद के सूत्र
- ३ मेरुपर्वत के पूर्वान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वान्त का अन्तर
- ४ क- मेरु पर्वत के दक्षिणान्त से दगभास आवास पर्वत के दक्षिणान्त का अन्तर
ख- मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से शंखपर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर
ग- मेरुपर्वत के उत्तरान्त से दकसीम आवास पर्वत के उत्तरान्त का अन्तर

- ५ उत्तरायन में दिन-रात की हानि-वृद्धि
- ६ दक्षिणायन में दिन-रात की हानि-वृद्धि

नवासीवाँ समवाय

- १ भ० ऋषभदेव का निर्वाण-काल
- २ भ० महावीर का निर्वाण-काल

- ३ हरिनेल चरवर्ती का राज्य बाल
- ४ भ० शातिनाथ की उत्कृष्ट समची सम्पत्ति

नरदेवी समवाय

- १ भ० शोचननाथ की ऊर्बाई
- २ भ० अश्विननाथ के गण गणधर
- ३ भ० शातिनाथ के गण गणधर
- ४ स्वयम्भु बाभुनेव की निमित्तव्य बाल
- ५ मधुवन ब्रह्मदेव पवन के निमित्त से सौमित्र बाल के अपत्यन भाग का मगर

द्वयानन्देवी समवाय

- १ बभार्य प्रतिमा
 - २ बभार्य मधुन की परिधि
 - ३ भ० बभार्य के अवधिजानी कुनि
 - ४ भाव और शान्त कर्म को छोड़कर गण छोड़ बभार्य की उत्तरप्रतिमा
- ### मानवदेवी समवाय

- १ मधु प्रतिमा
- २ स्वयम्भु दुग्धभूति का भाव
- ३ मेरु पवन के मध्यभाग से दक्षिण भाग पवन के दक्षिण भाग का भाग
- ४ म मेरु पवन के मध्यभाग से दक्षिण भाग पवन का उत्तर भाग
- ५ मेरु पवन के मध्यभाग से दक्षिण भाग पवन के दक्षिण भाग का भाग
- ६ मेरु पवन के मध्यभाग से दक्षिण भाग पवन के दक्षिण भाग का भाग
- ७ मेरु पवन के मध्यभाग से दक्षिण भाग पवन के दक्षिण भाग का भाग
- ८ मेरु पवन के मध्यभाग से दक्षिण भाग पवन के दक्षिण भाग का भाग

निरानन्देवी समवाय

- १ भ० बभार्य के गण गणधर

- २- भ० शांतिनाथ के चौदहपूर्वी शिष्य
३ दिन-रात की हानि-वृद्धि जिस मण्डल में होती है

चौरानवेवाँ समवाय

- १ क- निपध पर्वत की जीवा का आयाम
ख- नीलवंत पर्वत की जीवा का आयाम
२ भ० अजितनाथ के अवधिज्ञानी मुनि

पंचानवेवाँ समवाय

- १ भ० सुपार्श्वनाथ के गण-गणवर
२ जम्बूद्वीप के अंतिमभाग से (चारों दिशा में) चारों पाताल कलशों का अन्तर
३ लवण समुद्र के दोनों पार्श्व में उद्वेध और उत्सेध की हानि का प्रमाण

- ४- भ० कुंथुनाथ की परमायु
५ स्थविर मीयें पुत्र की सर्वायु

छानवेवाँ समवाय

- १ चक्रवर्ती के ग्राम
२ वायुकुमार के भवन
३ दण्ड का अंगुल प्रमाण

- ४ क- धनुष का अंगुल प्रमाण
ख- नालिका का अंगुल प्रमाण
ग- अक्ष का अंगुल प्रमाण
घ- मूसल का अंगुल प्रमाण

- ५ आभ्यन्तर मण्डल में प्रथम मूर्हत की छाया-का प्रमाण

सत्तानवेवाँ समवाय

- १ मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से गोस्तुभ आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर

- ५ मेरु पर्वत के उत्तरान्त से दक्षिण पर्वत के उत्तरान्त का अन्तर
- ३ मेरु पर्वत के पूर्वान्त से पश्चिम पर्वत के पूर्वान्त का अन्तर
- ४ मेरु पर्वत के दक्षिणान्त पर्वत से दक्षिण पर्वत के दक्षिणान्त का अन्तर
- ५ आठ रमों का उत्तर अष्टनिधौ
- ६ दक्षिण पर्वतों का आठ

अष्टानवैधौ समवाय

- १ नन्दवन के ऊपरी भाग से पुरुषवन के अगोभाग का अन्तर
- २ मेरु पर्वत के पश्चिमान्त से आग्नेय भाग पर्वत के पूर्वान्त का अन्तर
- ३ मेरु पर्वत के उत्तरान्त से दक्षिण पर्वत के दक्षिणान्त का अन्तर
- ४ मेरु पर्वत के पूर्वान्त से पश्चिम पर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर
- ५ मेरु पर्वत के दक्षिणान्त से दक्षिण पर्वत के उत्तरान्त का अन्तर
- ६ दक्षिण पर्वत के अष्टान्त का आठ
- ७ उत्तरपर्वत उत्तरपर्वत मन्दन से पश्चिम पर्वत का दक्षिण-दक्षि
- ८ दक्षिणपर्वत उत्तरपर्वत मन्दन से पश्चिम पर्वत की दक्षिण-दक्षि
- ९ रविवर से उत्तर पर्वत नन्दन के नारे

निम्नानवैधौ समवाय

- १ मेरु पर्वत का उत्तर
- २ नन्दवन के पूर्वान्त से पश्चिमान्त का अन्तर
- ३ नन्दवन के दक्षिणान्त से उत्तरान्त का अन्तर
- ४ उत्तरपर्वत से अष्टम मुख मन्दन का आठम दिग्दर्श
- ५ दक्षिण पर्वत मन्दन का आठम दिग्दर्श
- ६ उत्तरपर्वत मन्दन का आठम दिग्दर्श
- ७ उत्तरपर्वत से अष्टम भाग के अष्टम मुख से अष्टम दिग्दर्श के ऊपरी भाग का अन्तर

सौवां समवाय

- १ दश, दशमिका भिक्षु प्रतिमा के दिन
- २ शतभिषा नक्षत्र के तारे
- ३ भ० सुविधिनाथ की ऊँचाई
- ४ भ० पार्श्वनाथ की आयु
- ५ स्थविर आर्य सुधर्मा की आयु
- ६ सभी दीर्घ वैताढ्य पर्वतों की ऊँचाई
- ७ क- सभी चुल्ल हिमवन्त पर्वतों की ऊँचाई
ख- सभी शिखरी पर्वतों की ऊँचाई
- ८ सभी कंचनग पर्वतों की ऊँचाई, उद्वेध और मूल का विष्कम्भ

डेढसोवाँ समवाय

- १ भ० चन्द्रप्रभ की ऊँचाई
- २ आरण कल्प के विमान
- ३ अच्युत कल्प के विमान

दो सोवाँ समवाय

- १ भ० सुपार्श्वनाथ की ऊँचाई
- २ सभी महा हिमवन्त पर्वतों की ऊँचाई और उद्वेध
- ३ जम्बूद्वीप के कांचनगिरी

ढाई सोवाँ समवाय

- १ भ० पद्मप्रभ की ऊँचाई
- २ असुर कुमार के प्रासादों की ऊँचाई

तीन सोवाँ समवाय

- १ भ० सुमतिनाथ की ऊँचाई
- २ भ० अरिष्टनेमी का गृहवास काल
- ३ विमानों (वैमानिक देवों के) के प्राकारों की ऊँचाई

४ भ० महावीर के चौदह पूर्वो मुनि

५ पाचसी धनुष की कपावानों के जोवप्रभे की खटाहना

साठ तीन सोवा समवाय

१ भ० पाश्वनाथ के चौदह पूवधारी मुनि

२ भ० अभिनन्दन की ऊचाई

चार सोवा समवाय

१ भ० सम्भवनाथ की ऊचाई

२ क सभी निषध वषधर पवतो की ऊचाई

ख सभी नीमवन वषधर पवतो की ऊचाई

३ सभी वषम्कार पवतो की ऊचाई और उदवेध

४ आनन प्राणन कल्प के विमान

५ भ० महावीर के उद्दृष्ट बाने मुनि

साठ चार सोवा समवाय

१ भ० अजितनाथ की ऊचाई

२ सगर चक्रवर्ती की ऊचाई

पाच सोवा समवाय

१ सब वषम्कार पवतो की ऊचाई उदवेध

२ मय वषधर पवता क कूटा की ऊचाई उदवेध

३ भ० श्रुपभन्ध की ऊचाई

४ भरत चक्रवर्ती की ऊचाई

५ क मामनय पवन की ऊचाई और उदवेध

ख मधमालन पवन की ऊचाई और उदवेध

ग विजयप्रम पवन की ऊचाई

घ माममवन पवत की ऊचाई

६ हरि हरिस्मृह कूटो का छोडकर क्षेत्र सभी कूटों की ऊचाई और मूल का विष्कम्भ

७ वलकूट को छोड़कर सर्व नन्दन कूटों की ऊंचाई और मूल का विष्कम्भ

८ सोधर्म-ईशान कल्प के विमानों की ऊंचाई

छ सोवाँ समवाय

१ क- सनत्कुमार कल्प के विमानों की ऊंचाई

ख- माहेन्द्र कल्प के विमानों की "

२ चुल्ल हिमवत कूट के सर्वोपरि भाग से अधोभाग का अन्तर

३ शिखरी कूट के सर्वोपरिभाग से अधोभाग का अन्तर

४ भ० पाश्वनाथ के वादी मुनि

५ अभिचंद्र कुलकर की ऊंचाई

६ भ० वासुपूज्य के माथ दीक्षित होनेवाले पुरुष

सात सोवाँ समवाय

१ क- ब्रह्मकल्प के विमानों की ऊंचाई

ख- लांतक कल्प के विमानों की ऊंचाई

२ भ० महावीर के केवली शिष्य

३ भ० अरिष्ट नेमिनाथ का केवली पर्याय

४ महाहिमवत कूट के ऊपरी तल से अधस्तल का अन्तर

५ रुक्मि कूट के ऊपरी तल से अधस्तल का अन्तर

आठ सोवाँ समवाय

१ क- महाशुक्र कल्प के विमानों की ऊंचाई

ख- सहस्रार कल्प के विमानों की ऊंचाई

२ रत्नप्रभा के प्रथम काण्ड में व्यतर देवों के भौमेय त्रिहार-नगर

३ भ० महावीर के अनुत्तर विमान से उत्पन्न होनेवाले शिष्य

४ रत्नप्रभा के ऊपरीतल से सूर्य के विमान का अन्तर

५ भ० अरिष्टनेमी के उत्कृष्ट वादी मुनि

नौ सोवा समवाय

- १ व आनन कल्प के विमाना की ऊचाई
- स प्राणन कल्प के विमाना की ऊचाई
- ग आरण कल्प के विमाना की ऊचाई
- घ अच्यन कल्प के विमाना की ऊचाई
- २ निषय कूट के ऊपरी तल से अग्रतल का अंतर
- ३ नीनवन कूट के ऊपरी तल से अग्रतल का अंतर
- ४ विमान वाहन कुलकर की ऊचाई
- ५ रत्नप्रभा के ऊपरी तल से ताराग्रो की ऊचाई
- ६ निषय पर्वत के शिखर से (रत्नप्रभा के) प्रथम काण्ड के मध्य भाग का अंतर
- ७ नीनवन के शिखर से (रत्नप्रभा के) प्रथम काण्ड के मध्यभाग का अंतर

एक हजारवाँ समवाय

- १ मय पदयक विमाना की ऊचाई
- २ मय पदक पर्वता की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ३ क विचकूट की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ख विचिचकूट की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ४ मय इस वनस्पति पर्वतों की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ५ त्रि विष्कम्भ कूटों की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ६ वनकूट की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ७ म० अष्टि नदीनाथ की ऊचाई
- ८ म० पाशनाथ के कवली शिखर
- ९ म० पाशनाथ के मुक्त शिखर
- १ क पदग्रह का आयाम
- ख पदग्रह का आयाम

इग्यारह सोवाँ समवाय

- १ अनुत्तरोपपातिक देवों के विमानों की ऊँचाई
- २ भ० पार्श्वनाथ के वैक्रिय लब्धिवाले शिष्य

दो हजारवाँ समवाय

- १ महापद्मद्रह का आयाम
- २ महापुण्डरीकद्रह का आयाम

तीन हजार वाँ समवाय

- १ रत्नप्रभा के वज्रकाण्ड के चरमान्न से लोहिताक्ष काण्ड के चरमान्त का अन्तर

चार हजारवाँ समवाय

- १ क- तिगिच्छ द्रह का आयाम
- ख- केसरि द्रह का आयाम

पाँच हजारवाँ समवाय

- १ धरणीतल में मेरु के मध्यभाग से अन्तिम भाग का अन्तर

छ हजारवाँ समवाय

- १ सहस्रार कल्प के विमान

सात हजारवाँ समवाय

- १ रत्नकाण्ड (रत्नप्रभा) के ऊपरीतल से पुलक काण्ड के अत्र-स्तल का अन्तर

आठ हजारवाँ समवाय

- १ क- हरिवर्ष का विस्तार
- ख- रम्यक् वर्ष का विस्तार

नौ हजारवाँ समवाय

- १ दक्षिणार्ध भरत की जीवा का आयाम

दस हजारवाँ समवाय

१ मेदवत का विष्कम्भ

एक लाखवाँ-मावत-आठ लाखवाँ समवाय

१ जम्बूद्वीप का आयाम विष्कम्भ

१ लवण समुद्र का चक्रवात विष्कम्भ

१ भ० पाम्बनाथ की आदिता गणना

१ धानभी लण्ड द्वीप का चक्रवात विष्कम्भ

१ लवण समुद्र के पूरान्त में पश्चिमा त का अन्तर

१ भरत चक्रवर्ती का राज्य काल

१ जम्बूद्वीप की पूर्व वेदिता में धानकी लण्ड के पश्चिमान्त का अन्तर

१ माहन्द्र बरु के विमान

कोटि समवाय

१ भ० अदितनाथ के अवधिमान्ती

१ पुरुषविष्ट वामुदव का आयु

कोटिकोटि समवाय

१ भ० गंगापीर का पाणिन व जव में आयुष्य वर्षाव

१ भ० ज्योत्स्ना गीर भ० गंगापीर का अन्तर

सूत्र समवाय १०००० म १००००००—श्राद्धयोग का परिचय

१०१ व दो गीत

म कीर्तन गीत में वर्तमान अवधिमान्ती

म मरुत का मरुत भवनायाम, सत्र विमान

म गंगापीर कीर नरुता म वदना

१२० व म नारायण का वचन

म पुरुषविष्टादिनाथों का वचन याज्ञिक मनुष्यायाम का वचन

म अदितनाथ का वचन

- घ- ज्योतिष्कावासों का वर्णन
 ङ- वैमानिकावासों का वर्णन
 १५१ चौबीस दण्डकों में स्थिति
 १५२ पाँच शरीर का विस्तृत वर्णन
 १५३ क- अवधिज्ञान का विस्तृत वर्णन
 ख- वेदना का विस्तृत वर्णन
 ग- लेश्या का विस्तृत वर्णन
 घ- आहार का विस्तृत वर्णन
 १५४ चौबीस दण्डक में विरह का विस्तृत वर्णन
 १५५ क- चौबीस दण्डक में संघयण का वर्णन
 ख- चौबीस दण्डक में संठाण का वर्णन
 १५६ चौबीस दण्डक में वेदों का वर्णन
 १५७ क- कल्पसूत्रान्तर्गत समवसरण वर्णन
 ख- जम्बूद्वीप के भरत में अतीत उत्सर्पिणी के कुलकर
 ग- जम्बूद्वीप के भरत में अतीत अवसर्पिणी के कुलकर
 घ- जम्बूद्वीप के भरत में इस अवसर्पिणी के कुलकर
 ङ- सात कुलकरों की भार्याएँ
 च- जम्बूद्वीप के भरत में इस अवसर्पिणी के २४ तीर्थकरों के पिता
 छ- चौबीस तीर्थकरों की माताएं
 ज- चौबीस तीर्थकर
 झ- चौबीस तीर्थकरों के पूर्वभव के नाम
 ञ- चौबीस तीर्थकरों की शिविकाएं
 ट- चौबीस तीर्थकरों की जन्मभूमियाँ
 ठ- चौबीस तीर्थकरों के देवदूत
 ड- चौबीस तीर्थकरों के साथ दीक्षित होनेवाले
 ढ- चौबीस तीर्थकरों के दीक्षा समय के तप
 ण- चौबीस तीर्थकरों के प्रथम भिक्षा दाता

- त चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम भिक्षा भिजने का समय
 थ चौबीस तीर्थंकरों की प्रथम भिक्षा में भिजने वाले पदार्थ
 द चौबीस तीर्थंकरों के चैत्यवृक्ष
 ध चौबीस तीर्थंकरों के चैत्यवृक्षों की ऊँचाई
 न चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम शिष्य
 प चौबीस तीर्थंकरों की प्रथम भिक्षा

११८४ जम्बूद्वीप के भरत में इस अवसरपिण्डी में चक्रवर्तिन्या के पिता
 ल ब्राह्म चक्रवर्तिन्या की मानाए
 ल ब्राह्म चक्रवर्ती
 व ब्राह्म चक्रवर्तिन्या के स्त्री रत्न
 - जम्बूद्वीप के भरत में इस अवसरपिण्डी में तो ब्रह्मदेव और तो
 वासुदेव के पिता

- ब तो वासुदेव की मानाए
 द तो ब्रह्मदेव की मानाए
 ज तो गगन मन्त्र
 झ तो ब्रह्मदेव-वासुदेव के पुरुषार्थ के नाम
 ञ तो ब्रह्म वासुदेव के धर्माचार
 ट तो वासुदेव की निम्न भूमि
 ठ तो वासुदेव के निम्न के तो वारण
 ड तो प्रतिवासादेव
 ङ तो वासुदेवों की गति
 ल तो ब्रह्मदेवों का गति

११९ क जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसरपिण्डी के चौबीस तीर्थंकर
 ल जम्बूद्वीप के भरत में आगामी उत्सर्पिणी के सात कुत्तर
 ग जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में दण कुत्तर
 घ जम्बूद्वीप के भरत में आगामी उत्सर्पिणी में चौबीस तीर्थंकर
 ङ चौबीस तीर्थंकरों के पुरुषार्थ के नाम

- च- चौबीस तीर्थकरों के पिता
- छ- चौबीस तीर्थकरों की माताएं
- ज- चौबीस तीर्थकरों के शिष्य
- झ- चौबीस तीर्थकरों की शिष्याएं
- ञ- चौबीस तीर्थकरों को प्रथम भिक्षा देने वाले
- ट- चौबीस तीर्थकरों के चैत्यवृक्ष
- ठ- जम्बूद्वीप के भरत में आगामी उत्सर्पिणी में
वारह चक्रवर्ती
- ड- चक्रवर्तियों के पिता
- ढ- चक्रवर्तियों की माताएं
- ण- चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न
- त- नो बलदेव नो वामुदेव
- थ- नो बलदेव-नो वामुदेवों के पिता
- द- नो बलदेव की माताएं
- ध- नो वामुदेव की माताएं
- न- नो दशार मण्डल
- प- नो बलदेव-वामुदेवों के पूर्वभव के नाम
- फ- नो निदान भूमियां
- ब- नो निदान के कारण
- भ- नो प्रति वासुदेव
- म- जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में-
चौबीस तीर्थकर
- य- वारह चक्रवर्ती
- र- वारह चक्रवर्तियों के पिता
- ल- वारह चक्रवर्तियों की माताएं
- व- वारह चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न
- श- नो बलदेव-नो वामुदेवों के पिता

ए नो वनन्व वा माताए
 म नो वामुन्नेव बी माताए
 हु ना दगार मन्व
 दा नो प्रदिशामुन्नेव
 ज नो वामुन्नेवो क पूरमव के नाम
 क ना वामुन्नेवो क पूरमव के चर्मावाव
 ख नो वामुन्नेवो नो विमान भूमिदा
 आ विमान क कारव

१६० उपमन्त्र-समवायानि म वपितु मरिप्प विगव

सुयक्खाए	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
सुपण्णत्ते	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
सुभासिए	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
सुविणीए	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
सुभाविए	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
अणुत्तरे	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे

णमो णाणस्म

सर्वानुयोगमय भगवती सूत्र

श्रुत स्कंध	१
शतक अवान्तर, शतक	१३८
उद्देशक	१६२७
प्रश्नोत्तर	३६०००
पद	२८८०००
गद्य सूत्र	५२६३
पद्य "	७२

भगवती सूत्र शतक, उद्देशक और सूत्रसंख्या सूचक तालिका

शतक	उ०	सूत्र	श०	उ०	सूत्र	श०	उ०	सूत्र	शतक	उद्देशक	सूत्र
१	१०	३२६	११	१२	१३४	२१	८ वर्ग	१५	३१	२८	४१
२	१०	७६	१२	१०	१७३	२२	६ ,	६	३२	२८	३३
३	१०	१५६	१३	१०	१४७	२३	५ ,	५	३३	अ१२-१२४	१३६
४	१०	६	१४	१०	६७	२४	२४	३३६	३४	वा१२ १२४	१५४
५	१०	१८६	१५	०	४६	२५	१२	५८१	३५	न्त१२ १२४	१२४
६	१०	१६०	१६	१४	६८	२६	१२	४३	३६	र१२ १२४	१२४
७	१०	१४६	१७	१४	७०	२७	११	११	३७	श१२ १२४	१२४
८	१०	४६०	१८	१०	१३३	२८	११	१४	३८	त१२ १२४	१२४
९	३४	१६६	१९	१०	६६	२९	११	१५	३९	क१२ १२४	१२४
१०	३४	७२	२०	१०	१०१	३०	११	५०	४०	हं२१-१८७	१८७

१४८

श० सू० उ०
४१ १६६ २२२

११११

१००

१०१

गणधर यत्र

गणधर नाम	पाय	न त्र	पिला	माता	गोत्र	पु. वि. डि.	म. वि. डि.	पु. वि. डि.
१ हरभूति	गुम्हार पाय	स्नेहा	कमलनि	पुष्पी	गौमय	१०	१०	१०
२ अर्जुनभूति		कृतिता				११	११	११
३ आरुभूति		रत्नाति				१२	१२	१२
४ लोत्ताभूति	कोत्ताभूति	सकल	भन नि	बाण्णी	रक्षा	१३	१३	१३
५ लुभनी	लोत्ताभूति	हरिणी	भस्मिल	मरिवा	अग्निदेव	१४	१४	१४
६ मरिग	लोत्ताभूति	गया	भानेय	भिक्षा	कणिष्ठ	१५	१५	१५
७ गौडभूति		रोहिणी	मौव		वाराण	१६	१६	१६
८ मरुति	मिथिला	जगन्नाथ	देव	कपरी	गौमय	१७	१७	१७
९ लोत्ताभूति	लोत्ताभूति	कृतिता	कृ	जग	कणिष्ठ	१८	१८	१८
१० लोत्ताभूति	लोत्ताभूति	कृतिता	कृ	जग	कणिष्ठ	१९	१९	१९
११ लोत्ताभूति	लोत्ताभूति	कृतिता	कृ	जग	कणिष्ठ	२०	२०	२०

गणधर गणधर की माता कनका गोत्र का गोत्रावरण धारण

णमो संजयाणं

भगवती विषय सूची

प्रथम शतक

उत्थानिका

क- नमस्कार मंत्र

ख- ब्राह्मी लिपि को नमस्कार

ग- श्रुत को नमस्कार

घ- दस उद्देशकों के नाम

ङ- प्रश्नोत्थान

भ० महावीर और गौतम गणधर का संक्षिप्त परिचय
प्रश्न के लिए उद्यत गौतम गणधर

प्रथम चलन उद्देशक

१ चलमान चलित आदि ६ प्रश्नों के उत्तर

२ नौ पदों में से चार पद एकार्थ और पांच पद नानार्थ वाले हैं
चौबीस दण्डकों में स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार और कर्म
पुद्गल व बन्ध आदि

३ नैरयिकों की स्थिति

४ नैरयिकों का श्वासोच्छ्वास

५ नैरयिक आहारार्थी

६ आहृत पुद्गलों का परिणमन ४ प्रश्नोत्तर

७ नैरयिकों द्वारा आहृत पुद्गलों के चित आदि ६ प्रश्नोत्तर

८ " कर्मद्रव्य वर्गणा के पुद्गलों का भेदन. आहार. द्रव्यवर्गणा

९ " " पुद्गलों का चयन उपचयन

१० नैरयिकों द्वारा कर्मद्रव्य वर्गणा के पुद्गलों की उदीरणां

इसी प्रकार—वेदना, निर्जरा के प्रश्न

नैरयिकों के अपवनन, मन्त्रमण निषत्त और निराचिन के
(तीन कान के) प्रश्न

११ नैरयिकों द्वारा सौत्रम कामच रूप में पुद्गलों का ग्रहण

१२ दृष्टीत पुद्गल की उन्मीरणा

इसी प्रकार—वेष्णा और नित्ररा

१३ नैरयिकों द्वारा अचनिन बसों का अपवन

१४ क की उन्मीरणा

ख का वेष्ण

ग अपवनन

घ मन्त्रमण

ङ निषत्त

च निराचिन

१५ चमित की नित्ररा

१६ अमुर कुमारों की स्थिति

१७ का स्वासोच्छवास काल

१८ आहारार्थी

१९ आहारेच्छा का समय

२० आहार के पुद्गल

२१ के आहार के पुद्गलों का परिणमन

२२ पूर्व आहृत पुद्गलों की परिणति

दोष प्रश्नोत्तर ७ में १५ के समान

२३ नाग कुमारों की स्थिति

२४ का स्वासोच्छवास काल

२५ नागकुमार आहारार्थी

२६ क नागकुमारों के आहारेच्छा का समय

दोष प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान

ख सूदन कुमार III स्तनिन कुमार पयत अमुर कुमार के समान

- २७ पृथ्वी कायिकों की स्थिति
 २८ " " का श्वासोच्छ्वास काल.
 २९ " कायिक आहारार्थी
 ३० " कायिकों के आहारेच्छा का समय
 ३१ " " " आहार के द्रव्य
 ख- " " " " लेने की दिशा
 ३२ क- " " में " का परिणमन,
 शेष प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान
 ख- अप्काय से वनस्पतिकाय पर्यंत पृथ्वीकाय के समान
 ३३ स्थिति और श्वासोच्छ्वास प्रत्येक का भिन्न भिन्न,
 ३४ क- द्वीन्द्रियों की स्थिति
 ख- " का श्वासोच्छ्वास काल
 ३५ द्वीन्द्रिय आहारार्थी
 शेष प्रश्नोत्तर ३०-३१ के समान
 ३६ द्वीन्द्रियों के आहार का परिमाण
 ३७ " " " ग्राह्य अग्राह्य विभाग और उसका अल्पबहुत्व
 ३८ " " " परिणमन
 ३९ " " पूर्व आहत पुद्गलों की परिणति,
 शेष प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान
 ४० क- त्रीन्द्रियों की स्थिति
 ख- चतुरिन्द्रियों " " शेष प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान
 ४१ क- त्रीन्द्रियों चतुरिन्द्रियों के आहार का ग्राह्य-अग्राह्य विभाग
 और उसका अल्प-बहुत्व.
 ख- त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय के आहार का परिणमन
 ४२ क- पंचेन्द्रिय तिर्यचों की भिन्न-भिन्न स्थिति
 ख- उच्छ्वास की विभिन्न मात्रा

- ग पञ्चेन्द्रिय तृषचा ने आहार का समय
नेप प्रश्नोत्तर ४० ४१ के समान
- ४३ क मनुष्या की भिन्न भिन्न स्थिति
ख लच्छवास की विभिन्न माया
ग मनुष्या के आहार का समय
घ परिणामन
नप प्रश्नोत्तर ७ स १५ के समान
- ४४ क अन्तर देखो की भिन्न भिन्न स्थिति
ख दोष प्रश्नोत्तर २४ २५ २६ के समान
- ४५ क उद्यानिषी देहों की भिन्न भिन्न स्थिति
ख का स्वासोच्छ्वास काय
ग क आहार का समय
नेप प्रश्नोत्तर ७ स १५ के समान
- ४६ क ईमानिक देवा की भिन्न भिन्न स्थिति
ख का स्वासोच्छ्वास काय
ग के आहार का समय भिन्न भिन्न
नप प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान
आमारम्भ आदि
- ४७ आमारम्भ पण्डरी उममारम्भ और अनारम्भ जीव
- ४८ जीवा का आमारम्भ आदि होना यकिन सपन
- ४९ ५० जीवीन दण्डका म आमारम्भ आदि
- ५१ मनेय जीवा म आमारम्भ आदि
ज्ञानादि
- ५४ ५५ गान दण्डन चारिव लप और मयम का दह भव परमव औ
उमयमव से अम्निव का नाम्निव
अमवृत्त अनगर
- ५६ अमवृत्त अनगर के निर्वाण का निरोध

५७ " " " दृढकर्म बन्धन,

संवृत अनगार

५८ संवृत अनगार का निर्वाण

५९ " " के सिथिल कर्म बंधन.

असंयत जीव

६०-६१ असंयत अव्रत जीवों की देवगति और उसके कारण
व्यंतरदेव

६२ क- व्यंतर देवों के रमणीय देव लोक,

ख- ' ' ' की स्थिति

द्वितीय दुःख उद्देशक

६३ उत्थानिका

४४ जीव का स्वयंकृत दुःख वेदन, (एक जीव की अपेक्षा)

६५ " " " " का कारण

ख- चौबीस दण्डकों में—जीव का स्वयंकृत दुःख वेदन

६६ जीवों का स्वयंकृत दुःख वेदन (बहुत जीवों की अपेक्षा)

६७ क- जीवों के स्वयंकृत दुःख वेदन का कारण

ख- चौबीस दण्डकों में जीवों का स्वयंकृत दुःख वेदन

आयुवेदन

६८ क- जीव का स्वयंकृत आयुवेदन, (एक जीव की अपेक्षा)

ख- " " " " " का कारण

ग- चौबीस दण्डकों में स्वयंकृत आयुवेदन

घ- जीवों का स्वयंकृत आयुवेदन (बहुत जीवों की अपेक्षा)

ङ- " " " " " का कारण

च- चौबीस दण्डकों में स्वयंकृत आयुवेदन

चौबीस दण्डकों में—आहार, शरीर, स्वासोच्छ्वास, कर्म, वर्ण
लेश्या, वेदना, क्रिया, आयु और उत्पन्न होने का विचार

३६ ७०४ नरसिवा म समान आगर

न

शरीर

ग

इवाभास्त्वाम

घ

आगर शरीर और इवाभास्त्वाम के समान

न होने का कारण

७१ ७२

समान कम न होने का कारण

७१ ७४

कष

५७ ७५

सत्या

७ ७८

देना

७६ ८०

किया

८१ ८२

आयु और माय उल्लस न होने का कारण

८३ क अशुभ कुमारों से अगर अगौर इवाभास्त्वाम देना किया

आयु और उत्पन्न करने में समानता

ग कम कष और सेवा म विविधता

ग इमी प्रकार मायकुमार म धात्र्यन्वविन कुमार एवं अशुभ

कुमारों के समान

८४ पृथ्वीकापित्री के आगर कम कष और सत्या नरसिंको के समान

८५ ८६

म समान बनना होने का कारण

८७ ८८ क

किया

■ अशुभो अन्व नाना नरसिंको के समान

८९ सत्या ■ मायिन चर्च सिव तक पृथ्वीकापित्री के समान

९० पृथ्वीकापित्री के आहार आ नरसिंको के समान

किन्तु सत्या से भिन्नता

९१ ९२

म समान किया न होने के कारण

९३ क मनुष्या से शरीर से देना पयन्त नरसिंको के समान किन्तु

आहार और किया से भिन्नता

ख- आहार में समानता न होने का कारण

६४-६५ क- मनुष्यों में समान क्रिया न होने का कारण

ख- आयु और उत्पन्न होना नैरयिकों के समान

६६ क- व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक देवों में आहारादि
नैरयिकों के समान किन्तु वेदना में भिन्नता

ख- व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिकों में वेदना समान न होने
का कारण

६७ चौबीस दण्डकों में सलेश्य जीवों के आहारादि की समा-
नता और भिन्नता

६८ लेश्या वर्णन,

६९ चार प्रकार का संसार संस्थान काल

१०० नैरयिकों " " " "

१०१ तिर्यचों " " " "

१०२ मनुष्यों और देवों " "

१०३ नैरयिकों के संसार संस्थान काल का अल्प-बहुत्व

१०४ तिर्यचों के " " " "

१०५ मनुष्य और देवों के " " "

१०६ चारों गतियों के संसार संस्थान काल का अल्प-बहुत्व

१०७ जीव की अंतःक्रिया (मुक्ति)

उपपात

१०८ क- देवगति पाने योग्य असंयत जीवों का उपपात

ख- अखण्ड संयमियों का उपपात

ग- खंडित " " "

घ- अखण्ड संयमान्यमियों (श्रावकों) का उपपात

ङ- खंडित संयमासंयमियों (श्रावकों) का उपपात

च- असंज्ञी-अमैयुनिक नृष्टि-जीवों " "

छ- तापसों का उपपात

ज- कांदर्पिकों का "

य क्षम बन्ध और परिणमन के द्वारा सबज

ष कुल धर्म का मोक्ष किये बिना मुक्ति नहीं

१५६ १५७ पुद्गल की भौतिक स्थिति

१५६ ५ ५५५

१५६ १६० कुम्हारधारी बेबन समय महर बहावन ओर समिति
गृहित के पानन से मुक्ति नहीं

१६१ कर्जला की ही सुनिन्द

१६२ सगरमाथा की मुक्ति प्रस्ताव १५६ व १५७ तक प्रत्येक प्रश्नोत्तर में तीन-तीन दिवस

१६३ वाचमी पुन मयझ ३

षष्ठम पृष्ठोऽहमव

श्री श्रीमद्गणेशाय नमः

१९८ मान शुद्धिघा (मान नरुष)

१६१ मान नगरी क आस्थापन

११६ भद्रनाथजी सेवा व आश्रम

१६७. दुग्धीराजका के आवास यात्रन ज्योतिषी देवा क भागम

१६ दिवान बाग

५१६ वाश्या इषट्कां सं वि गतिं चादि हस स्थान

गणतन्त्र का क समकालीन म स्थिति ग्यान

१७० १३९ ४५२ ॥ ३ ॥ १००० मिथुनि सात नैरविता म विषाद के
३३ भाग

१७ १३३ दस पात्र ॥ २ अश्वत्थना वाग्न नरदिता म कपाय के
३३ भाषि

१७६ नमःपहा ष नीन धनीन

१७६ श्रीमद्गीतारवाय मंत्रालय के कपाय के २७ अ प

- १७६ नैरयिक असंघयणी है
 १७७ असंघयणी नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
 १७८ नैरयिकों का संस्थान
 १७९ हुंड संस्थानवाले नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
 १८० रत्नप्रभा में एक लेश्या
 १८१ कापोत लेश्यावाले नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
 १८२ रत्नप्रभा के नैरयिकों में तीन दृष्टि
 १८३ सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
 सममिथ्यादृष्टि नैरयिकों में कपाय के ८० भांगे
 १८४ नैरयिक ज्ञानी भी हैं, अज्ञानी भी हैं
 १८५ ज्ञानी और अज्ञानी नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
 १८६ नैरयिकों में तीन योग
 १८७ तीन योग वाले नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
 १८८ नैरयिकों में साकारोपयोग और अनाकारोपयोग
 १८९ क- दोनों उपयोगवाले नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
 ख- शेष ६ नारकों में रत्न-प्रभा के समान
 ग- लेश्या में भिन्नता
 १९० क- अमुर कुमारों की स्थिति
 ख- अमुर कुमारों में कपाय के प्रतिलोम भांगे
 ग- शेष भवनवानी देव अमुर कुमारों के समान
 १९१ क- पृथ्वीकायिकों की स्थिति
 ख- पृथ्वीकायिकों की स्थिति
 १९२ क- पृथ्वीकायिकों में कपाय के भांगे नहीं
 तेजोलेद्यावाले पृथ्वीकायिकों में कपाय के ८० भांगे
 ख- अष्कायिकों में कपाय के भांगे नहीं
 ग- तेजकायिकों में " " "
 घ- वायुकायिकों में " " "



- ६ वनस्पतिकारिको मे
 १६३ क विकलेन्द्रियो मे स्थिति आदि दश स्थान
 स कषाय के भागो मे वविध्य
 १६४ क तिसत्र पचन्द्रियो मे स्थिति आदि दश स्थान
 स कषाय के भागो मे वविध्य
 १६५ क मनुष्यों मे स्थिति आदि दश स्थान
 स कषाय के भागो मे वविध्य
 १६६ क व्यतर आदि तीन दण्डो मे स्थिति आदि दश स्थान
 स कषाय के भागो मे वविध्य

पृष्ठ याधन्त उद्गक

मूर्ध

- १६७ उन्ध्यास्त के समय समान दूरी से मूप दान
 १६८ २०१ क उन्ध्यास्त के समय समान दूरी से प्रकाश क्षेत्र
 स ताप क्षेत्र
 स स्पष्ट

- २०२ छाक सम्पाक
 लोकात और अलोकात का स्पष्ट
 २०३ दृष्टि निगाहो मे स्पष्ट

- २०४ द्वीप-समुद्र
 द्वीप न और सागरात का स्पष्ट
 २०५ ७२ निगाहा मे स्पष्ट

- २०६ क्रिया विचार
 जीव द्वारा प्राणानिपान क्रिया
 २०७ प्राणानिपान क्रिया का दृष्टि निगाहा मे स्पष्ट
 २०८ कृन है वह क्रिया है
 २०९ क्रिया आत्मवृत्त है

- २१० क्रिया सदा (तीन काल में) अनुक्रमपूर्वक कृत है
- २११-२१४ उन्नीस दण्डकों में प्राणातिपात क्रिया ।
प्रश्नोत्तर २०६ से २१० के समान
- २१५ चौबीस दण्डकों में प्राणातिपात यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य
भ० महावीर और आर्यरोह
भ० महावीर से आर्यरोह के ८ प्रश्न
- २१६ पूर्व या पश्चात् लोक-अलोक
- २१७ क- पूर्व या पश्चात् जीव-अजीव
ख- " " भवसिद्धि-अभवसिद्धि
ग- " " सिद्ध-असिद्धि
घ- " " सिद्ध-असिद्धि
- २१८ " " अंड-कुर्कुटी
- २१९ " " लोकांत-अलोकांत
- २२० " " लोकांत-सप्तम अवकाशांतर आदि
- २२१ " " लोकांत-सर्वकाल
- २२२ क- " " अलोकांत के साथ २२०-२२१ के समान
ख- " " सप्तम अवकाशांतर सप्तम तनुवात
प्र० २२०-२२१ के समान
- २२३ " " सप्तम तनुवात सप्तम घनवात
प्र० २२०-२२१ के समान (तीन काल में समान)
लोक स्थिति
- २२४-२२५ क- आठ प्रकार की लोकस्थिति
ख- भशक का उदाहरण
- २२६ जीव और पुद्गल
जीव और पुद्गल का सम्बन्ध
- २२७ सद्धिद्र नाव का उदाहरण

मन-साध

२२८ २३० श्रेष्ठ काय का गणन भी अविद्यमान

सामान्य नरसिंह उद्देश

२३१ शीर्षीय शब्दों में उद्देश्य वस्तुओं

२३२ साधारण

२३३ उद्देश्य

२३४ साधारण

२३५ व

व

२३६ उद्देश्यमान

विशेष गति

२३७ शीर्षीय शब्दों में विद्यमान गति और अविद्यमान गति

२३८ जीव विद्यमान गति प्राप्त भी है और अविद्यमान गति प्राप्त भी है

२३९ उद्देश्य शब्दों में विद्यमान गति और अविद्यमान गति प्राप्त भी है

साधारण मय व साधारण का अनुभव

२४० महर्षि श्व कायन मय में गुरु विद्यमान या अनुभव या अनुभव कायना

गर्भ विचार

२४१ २४२ गर्भ में उद्देश्य जीव अविद्यमान गति और अविद्यमान

२४३ २४४ मयनी और मयनी

२४५ व मय प्रथम साधारण

२४६ साधारण

२४७ स्थित व मयमयानी का अभाव

२४८ साधारण का परिणाम

२४९ २४६ वयनाहार का अभाव

२५१ गमय्य आद्य व मय अय

२५२ " " " पितृ "

मातृ-पितृ अंगों की जीवन पर्यंत स्थिति,

२५४ गर्भगत जीव की नरकोत्पत्ति के हेतु-अहेतु

२५-२५६ " " "देवलोकोत्पत्ति के " "

२५८ क- गर्भगत जीव का जयन उत्थान आदि माता के समान

ख- कर्मानुसार प्रसव

ग- " प्रशस्त-अप्रशस्त वर्ण, रूप, गंध, रस, स्पर्श आदि

अष्टम बाल उद्देशक

२५९ एकांत बाल जीव की चार गति में उत्पत्ति

२६० एकांत पंडित की दो गति

२६१ बाल-पंडित की एक देव गति

क्रिया विचार

२४२-२६५ मृग-घातक पुरुषों लगनेवाली क्रियाएँ

२६६-२६७ आग लगाने वाले को लगने वाली क्रियाएँ

२६८-२७१ मृग-घातक पुरुष को लगनेवाली क्रियाएँ

२७२-२७४ पुरुष-घातक " " " "

वीर्य विचार

२७५-२७६ जीव सवीर्य भी है, अवीर्य भी है

२७७-२७९ चौबीस दण्डक के जीव सवीर्य भी है और अवीर्य भी

नवम गुरुत्व उद्देशक

२८० जीव का गुरुत्व और उसके कारण

२८१ जीव का लघुत्व और उसके कारण

२८२ क- जीव की संसार वृद्धि और उसके कारण

ख- " " " हानि " " "

ग- " का " लम्बा होना " " "

घ- " " " छोटा होना " " "

ङ- " " " भ्रमण " " "

च जीवका अन और उसके कारण

२८३ सज्जन अवकाशान्तर अगुरु तनु

२८४ न तनुवान गुरु तनु

स घनवान

ग घनान्वित

घ घृष्णा

ऊ सब अवकाशान्तर अगुरु तनु

ख डाल मनु और तनु गुरु तनु

२८५ श्रीयोग दण्ड मे श्रीधर का तनु और गुरु

२८६ चार अस्तित्व का अगुरु तनु

२८७ पुद्गलान्वित का अगुरु-अगुरु

२८८ २९० छत्र तनु का गुरुतनु

समाप्त तनु का अगुरुतनु

२९१ न हृत्ति का अगुरु तनु

स चार दण्ड का

घ पांच पाद का

घ तान अज्ञान का

ङ चार मणि का

च औगर्भिक आदि चार गरीर का गुरु तनु

छ कामण गरीर का अगुरु तनु

ज दो योग का

झ मकाराध्याय का

ञ अनात्मयोग का

ट सब द्रव्य

ठ सब प्रयोग

ड सब पर्याय

ढ अतीत का

ण- अनागत काल का अगुरुलघुत्व

त- सर्व " " " "

नीग्रंथ जीवन

निर्ग्रंथों के लिए लघुता आदि प्रशस्त है

" " अक्रोध " " "

२६४ निर्ग्रंथों की अन्तः क्रिया के दो विकल्प

अन्य तीर्थियों की मान्यता

२६५ अन्य तीर्थी—एक समय में एक जीव के दो आयु का बंध

भ० का महावीर—

एक समय में एक जीव के एक ही आयु का बंध

पार्श्वपत्य कालास्यवेपी अणगार और स्थिवर

२६६-२६७ क- सामायिक—सामायिक का अर्थ

ख- प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान " "

ग- संयम —संयम " "

घ- संवर —संवर " "

अ- विवेक —विवेक " "

च- व्युत्सर्ग —व्युत्सर्ग " "

कालास्यवेपी के इन प्रश्नों का स्थिवरों द्वारा समाधान

२६८ क्रोधादि की निंदा का प्रयोजन

२६९ गृही संयम और उसका प्रतिफल

३०० कालायस्वेशी द्वारा पंचमहाव्रत धर्म की स्वीकृति

क्रिया विचार

३०१-३०२ श्रेष्ठ, दरिद्र, कृपण और क्षत्रिय को समान अप्रत्याख्यान

क्रिया लगती है,

आहार विचार

३०३-३०४ आवाकर्म आहार करनेवाले निर्ग्रंथ के दृढ कर्मों का बंध होता है

३०५ ३०६ आमुक्त एषणीय आहार करने वाले निषध के शिथिल कर्मों का बध होता है

३०७ क अस्थिर में परिवर्तन होता है

ख स्थिर में परिवर्तन नहीं होता है

ग बाल और पटित शास्त्रन है

घ बालरूपन और पटितरूपन अशास्त्रन है

दशमं खेलन उद्देशक

काम्य तीर्थिका का मायभाष्य

३०८ क्षणमान अचरित यावत् निर्जीवमान अनिर्जीव

३०९ दो परमाणु पुद्गला का न विपक्षना

३१० तीन परमाणु पुद्गलों का विपक्षना

३११ पांच परमाणु पुद्गलों के विपक्षने से कमवध

३१२ ३१३ कोमले से बूध या पदधातु माया

३१४ ३१५ बूध क्रिया या पदचाल क्रिया इ म का हेतु है

३१६ अदृश्य इ म है

३१७ ३२४ अ० महावीर द्वारा इन भाग्य साम्प्रदायों का समाधान

काम्य तीर्थिका की मायता और उमका विराकरण

३२५ क एक समय में दो क्रिया

ख एक क्रिया

उपपात विरह

३२६ चौबीस दण्डकों में उपपात विरह

द्वितीय शतक

प्रथम उच्छ्वास-सकंदक उद्देशक

१ ५ पुम्बीकाद-यावत्-ववस्वनिष्ठा के स्वामोच्छ्वास का पौद्गलिक रूप

६-७ चौबीस दण्डकवर्तीजीवोंके श्वासोच्छ्वास का पौद्गलिक रूप

८ वायुकाय वायुकाय का ही श्वासोच्छ्वास लेता है

९ " " में उत्पन्न होता है

१० वायुकाय के जीव आघात से मरते हैं

११-१२ " " सशरीरी एवं अशरीरी भी मरते हैं

प्रासुक भोजी अनगर

१३ अनिरुद्ध भववाले प्रासुक भोजी (मृतादि) निर्ग्रन्थ को पुनः मनुष्य भव की प्राप्ति

१४-१५ उस निर्ग्रन्थ के छह नाम

१६ निरुद्ध भववाले प्रासुक भोजी निर्ग्रन्थ की मुक्ति

१७ उस निर्ग्रन्थ के छह नाम

स्कंदक परिव्राजक

२८ क- स्कंदक परिव्राजक का संक्षिप्त परिचय

क- स्कंदक से पिंगल निर्ग्रन्थ के प्रश्न

ग- लोक सान्त अनन्त

घ- जीव " "

ङ- सिद्धि " "

च- सिद्ध " "

छ- संसार वृद्धि करने वाला मरण

ज- समाधान के लिए भ० महावीर के समीप स्कंदक का गमन

झ- भ० महावीर के कथन से स्कंदक के स्वागत के लिये श्री गौतम-
गणधर का जाना

ञ- भ० महावीर के समीप गौतम के साथ-साथ स्कंदक का पहुँचना

ट- भ० महावीर द्वारा स्कंदक के (पिंगल निर्ग्रन्थ के प्रश्नों से उत्पन्न)
संशयों का समाधान

ठ- भ० महावीर के समीप स्कंदक का प्रवज्या ग्रहण

ड- स्कंदक का एकादशांग अध्ययन, भिक्षु पडिमाओं की आराधना.

गुणरत्नमवतसर उपकी आराधना मलेमणा पादपोगमन अथ
देवनोक मे समन महाविदेह य निर्वाण

द्वितीय समुदघात उद्देशक

१६ क सात समुदघात

ए चौकीस दण्डको मे मनुदघात

२० अनगार द्वारा केवलो समुदघात

तृतीय पृथ्वी उद्देशक

२१ मान पृथ्विया का वजन

२२ मय प्राणियो की सवय उत्पत्ति

चतुर्थ इन्द्रिय उद्देशक

२३ इन्द्रियो का वजन

पंचम अम्य तीर्थिक उद्देशक

२४ क जय तीर्थिक एक समय म दो के का वेन्त

ए भ० मन्वावीर—एक समय मे एक वेद का वेन्त
गभ विषय

२५ उदक गभ का जयय उद्घुष्ट काल परिमाण

२६ तिदक यानि मे गभ का जय २ उद्घुष्ट काल परिमाण

२७ मनुषी गभ का जय य उद्घुष्ट काल परिमाण

२८ गभ म मरकर पुन गभ मे उत्पन्न हो तो उद्घुष्ट गभकाल
परिमाण

२९ मानुषी और नियय स्त्री मे बीय की जयय उद्घुष्ट स्थिति

३० एव मय मे एक जीव के उद्घुष्ट पिता

३१ ३२ एक मय म एक जीव के उद्घुष्ट पुत्र

३३ मयपुन सेवन से होने वाला असवम

तुमिका नगरी

३४ क तुमिका नगरी के भावकों का परिचय

ख- पार्श्वपत्य स्थविरों का परिचय

ग- श्रावकों का धर्मश्रवण

घ- स्थविरों से श्रावकों के प्रश्न

३५ १- समय का फल

२- तप का फल

३- देवलोक में उत्पन्न होने का कारण

४- काश्यप स्थविर का उत्तर

क- स्थविरों का तुंगिका नगरी से विहार

ख- राजगृह में भ० महावीर और गौतम

ग- गौतम की भिक्षाचर्या

ङ- स्थविरों की योग्यता के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा

च- भ० महावीर द्वारा स्थविरों की योग्यता का समर्थन

३७-४६ पर्युपासना के फल की परम्परा

राजगृह के बाहर गर्मपानी का कुण्ड

४७ क- अन्य तीर्थिक राजगृह के बाहर यह गर्मपानी का कुण्ड अनेक योजन का लम्बा चौड़ा है

ख- भ० महावीर-इस “महातपोपतीर प्रभव” भरने का परिमाण ५०० योजन है

षष्ठ भाषा उद्देशक

४८ अवधारिणी भाषा

सप्तम देव उद्देशक

४९ चार प्रकार के देव

५० भवनवासी देवों के स्थान-यावत्-वैमानिक देवों के स्थान

अष्टम चमरचंचा उद्देशक

५१ क- चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा

ख- अरुणवर द्वीप, अरुणवर समुद्र

- ग त्रिगिच्छक कूट उत्पान पवन की ऊचाई और उद्वेग
 घ गोस्तूभ आवाग पवत
 ङ पदमकर वदिका
 च श्रामाद-धनमक की ऊचाई और विष्कम्भ
 छ अरुणीय ममुद्र मे चमरचना राजधानी
 ज राजधानी का आवास विष्कम्भ
 झ प्रकार आदि की ऊचाई और विष्कम्भ
 ञ राजधानी के द्वारा की ऊचाई विष्कम्भ और परिलेख
 ट ईशान कोण मे त्रिनशूह
 ठ उपपत्ति मभा अभिषेक मभा आदि

नवम समयक्षेत्र उद्देशक

५२ नवम क्षेत्र का परिमाण

दशम अस्तिकाय उद्देशक

५३ पचास्तिकाय

५४ ५७ पचास्तिकाय के वण नव रस, स्पष्ट आदि

५८ ६२ धर्मास्तिकाय के प्रदेश धर्मास्तिकाय नहीं है

६३ ६४ उत्पान आदि स जीव भाव का वणन

६५ दो प्रकार का आकाश

६६ लोकानाश

६७ अलोकानाश

६८ लोकानाश मे वण नव रस स्पष्ट आदि

६९ पचास्तिकाय की महानता

७० अधोलोक का धर्मास्तिकाय मे स्पष्ट

७१ त्रिगन्धोक का धर्मास्तिकाय मे स्पष्ट

७२ उध्वनोक का धर्मास्तिकाय मे स्पष्ट

७३ रत्नप्रभा का धर्मास्तिकाय मे स्पष्ट

७४-८५ क- रत्नप्रभा के घनोदधि आदि से धर्मास्तिकाय का स्पर्श

ख- इसी प्रकार धर्मास्तिकाय और लोकाकाश ,,

तृतीय शतक

प्रथम चमर विकुर्वणा उद्देशक

- १ गाथा (दश उद्देशकों के विषय)
- २ भोका नगरी में भ० महावीर का पदार्पण
- ३ क- चमरेन्द्र की विकुर्वणा के सम्बन्ध में अग्निभूति की जिज्ञासा
 - ख- भ० महावीर द्वारा चमरेन्द्र की ऋद्धि का वर्णन
 - ग- चमरेन्द्र की वैक्रिय करने की पद्धति का संक्षिप्त परिचय
 - घ- चमरेन्द्र की वैक्रिय शक्ति का वर्णन
- ४ चमरेन्द्र के सामानिक देवों की विकुर्वणा शक्ति
- ५ चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिगुणक देवों की विकुर्वणा शक्ति
- ६ चमरेन्द्र की अग्रमहीपियों की विकुर्वणा शक्ति
- ७ क- अग्निभूति का वायुभूति के समीप गमन
 - ख- वायुभूति के सामने अग्निभूति द्वारा चमरेन्द्र आदि की विकुर्वणा शक्ति का वर्णन
 - ग- अग्निभूति के कथन के प्रति वायुभूति की अश्रद्धा
 - घ- वायुभूति का भ० महावीर के समीप गमन
 - ङ- भ० महावीर द्वारा अग्निभूति के कथन का समर्थन
 - च- वायुभूति का अग्निभूति से क्षमायाचन
- ८ क- अग्निभूति और वायुभूति का भ० महावीर के समीप सह आगमन
 - ख- वैरोचनेन्द्र के सम्बन्ध में वायुभूति की जिज्ञासा
 - ग- भ० महावीर द्वारा चमरेन्द्र आदि के समान वैरोचनेन्द्र आदि की विकुर्वणा शक्ति का वर्णन

- ६ क धरम-नामकमारेन्द्र आदि की विरुद्धता व सम्बन्ध में अग्निभूति की विज्ञप्ति
- ख भ० महावीर द्वारा धरम-न्द्र आदि की विरुद्धता का वर्णन
- ग अग्नि के ईश्वर के सम्बन्ध में अग्निभूति की विज्ञप्ति और
- घ० महावीर द्वारा समाधान
- घ उत्तर व कदा के सम्बन्ध में वायुभूति की विज्ञप्ति और
- भ० महावीर द्वारा समाधान
- १० क राजा का विरुद्धता गति के सम्बन्ध में अग्निभूति की विज्ञप्ति
- ख भ० महावीर द्वारा गच्छ की कृति का वर्णन
- ग गच्छ आदि की विरुद्धता गति का वर्णन
- ११ क भ० महावीर का शिष्य निषक गच्छ के सामानिक देवत्व में उत्पन्न
- ख निषक देव की विरुद्धता गति
- १२ क गच्छ के अन्य सामानिक देव की विरुद्धता गति
- ख गच्छ व आयस्विण देव की विरुद्धता गति
- ग गच्छ के लोकपाल देव की विरुद्धता गति
- घ गच्छ व अश्वमेधीयों की विरुद्धता गति
- १३ क ईशानेश्वर की विरुद्धता गति के सम्बन्ध में वायुभूति की विज्ञप्ति
- ख भ० महावीर द्वारा ईशानेश्वर की विरुद्धता का वर्णन
- १४ क भ० महावीर का शिष्य कन्दम ईशानेश्वर के सामानिक देव रूप में उत्पन्न
- ख कन्दम सामानिक देव की विरुद्धता गति
- ग अन्य सामानिक देव आयस्विण लोकपाल और अश्वमेधीयों की विरुद्धता गति
- १५ क भ० महावीर का भावा नगरी में विहार
- ख भ० महावीर का राजगृह में पलायन
- ग भ० महावीर की वस्त्रा के निम्ने ईशानेश्वर का आगमन

- घ- ईशानेन्द्र की दिव्य ऋद्धि के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा
 ड- भ० महावीर द्वारा समाधान
 १६ दिव्य ऋद्धि का ईशानेन्द्र के शरीर में प्रवेश
 १७ क- ईशानेन्द्र का पूर्व भव
 ख- ताम्रलिप्ती नगरी में मौर्यपुत्र नाथापति द्वारा प्रणामा प्रव्रज्या का ग्रहण करना
 ग- मौर्यपुत्र का अभिग्रह
 घ- प्रणामा प्रव्रज्या की विधि
 ड- मौर्यपुत्र का अपरनाम तामली
 च- तामली का पादपोषगमन अनशन
 छ- इन्द्ररहित बलिचंचा राजधानी के अनेक असुरों द्वारा तामली से वैरोचनेन्द्र पद के लिये निदान करने का आग्रह
 ज- तामली की अस्वीकृति
 झ- तामली का ईशानेन्द्र होना
 ञ- बलिचंचा राजधानी के असुरों द्वारा तामली के शव का अपमान
 ट- ईशानेन्द्र के सामने ईशान कल्पवासी देवों द्वारा बलिचंचावासी असुरों के कुकृत्य की चर्चा
 ठ- ईशानेन्द्र द्वारा बलिचंचा राजधानी भष्म
 ड- बलिचंचा राजधानीवासी असुरों द्वारा ईशानेन्द्र से क्षमा याचना
 १८ ईशानेन्द्र की स्थिति
 १९ ईशानेन्द्र का च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण
 २०-२१ शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र के विमानों की ऊंचाई में अन्तर
 २२-२५ शक्रेन्द्र का ईशानेन्द्र के पास और ईशानेन्द्र का शक्रेन्द्र के पास गमन
 २६ शक्रेन्द्र-ईशानेन्द्र के और ईशानेन्द्र-शक्रेन्द्र के चारों ओर देखने में समर्थ
 २७ शक्रेन्द्र-ईशानेन्द्र से और ईशानेन्द्र-शक्रेन्द्र से वार्तालाप करने में समर्थ

- ६२ शत्रु ३ और चमरे ३ की अश्व उच्च गति का कालमान और
अल्प-बहुत्व
- ६३ वयस की अश्व उच्च गति का कालमान और अल्प बहुत्व
- ६४ क गत ३ वयस और चमरे ३ की अश्व-उच्च गति का कालमान
और अल्प बहुत्व
- ल चमरे ३ की चिन्ता
- म चमरे ३ का भ० महावीर की चरण कुन्ता के लिए आगमन
- ६५ तीव्रतम गति में अश्वों के जान का कारण
तत्तीय शिवा उद्देशक
- ६६ क राजगृह भ० महावीर
- ल किया क सम्भव में मद्रिगपुत्र की शिक्षा
- म पाच प्रकार की शिवा
- ६७ दो प्रकार की वायिकी शिवा
- ६८ नौ प्रकार की आधिकरजिकी शिवा
- ६९ दस प्रकार का प्रादुषिकी शिवा
- ७० दो प्रकार की परिणामनिकी शिवा
- ७१ नौ प्रकार की प्राण नपान शिवा
- ७२ शिवा और केन्ता की पूर्वापरता
- ७३ ७४ अमल निशवा की शिवा के दो कारण
आव का कपन आदि
- ७५ जीव का कम्पन यावत्-परिणमन शिवा
- ७६ अल शिवा के समय कपन-यावत् परिणमन शिवा का अभाव
- ७७ कपन यावत् परिणमन शिवा के कारण
- ७८ जीव की निश्चिन्ता दत्ता
- ७९ निश्चिन्ता का निर्वाण
- ८० क निर्वाण के कारण
- लोके के लोके का उदाहरण

ग- तप्ततवेपर उदक विन्दु के नष्ट होने का उदाहरण

घ- रिक्त नौका का उदाहरण

ङ- संवृत अणुगार की इयावही क्रिया तथा अकर्म दशा

प्रमत्त और अप्रमत्त संयम

८१ एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से प्रमत्त संयम की स्थिति

८२ एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से अप्रमत्त संयम की स्थिति

लवण समुद्र में ज्वार-भाटा

८३ लवण समुद्र में ज्वार-भाटा आने का कारण

चतुर्थ यान उद्देशक

८४ अणुगार देवरूप यान को देखता भी है और नहीं भी देखता है
देवरूप यान की चोभंगी

८५ क- अणुगार देवीरूप यान को देख भी संकता है और नहीं भी
देख सकता है

ख- देवीरूपी यान की चोभंगी

८६ क- अणुगार देव-देवीरूप यान को देख सकता है और नहीं भी
देख सकता है

ख- देव-देवी रूप यान की चोभंगी

८७-८८ क अणुगार वृक्ष के अन्दर-बाहर दोनों भागों को देख सकता है

ख- मूल और कंद की चोभंगी

ग- मूल और स्कंध की चोभंगी

घ- मूल और बीज की चोभंगी-यावत्

ङ- फल और बीज की चोभंगी—४५ भागे

वायुकाय

८९ वायुकाय की पताकारूप में विकुर्वणा

९० विकुर्वितरूप वायुकाय की गति का परिमाण

९१-९४ वायुकाय की गति के सम्बन्ध में विविध विकल्प

- २८ २९ गङ्गा और ईशानेन्द्र का एक-दूसरे के काय में परस्पर सहयोग
 ३० ३१ गङ्गा और ईशानेन्द्र के विवाह का मनकुमारे द्वारा निषेध
 ३२ ३३ मनकुमार भवसिद्धि-भावत् चमर है
 ३४ मनकुमार देव के स्थिति
 ३५ मनकुमार का मन्त्रबिन्दु में काम और निर्वाण

द्वितीय चमरोत्पात्त उद्गाहक

- ३६ क रात्रिपूजा में भ० महाचार और गौतम तथा पत्तिपद्
 ल भ० म और क नामक चमरों का साठव प्रज्ञान और पुन
 कथ्यमानमन
 ३७ ३८ अमुरो का न प्रभा क बीच में निवास स्थान
 ३९ ४१ क मानवी पृथ्वी पथन अमुरा के जाने का सामध्य
 ल तृतीय पृथ्वी पथन अमुरा का सकारण समन
 ४२ ४४ क अमु १ का नन्दावत रूप में समन
 ग अमु १ का अग्निहृता के पक्ष के-माण प्रमणा में निषेध लोक
 में आनमन
 ४५ ४७ क अमुरो का उष्यलोक में अच्युत देव लोक पथन समन सामध्य
 ल अमु १ का गौतम पथ न सकारण समन
 ४८ ५० क मुरा द्वारा वमानिक देवा के रत्ना का अपहरण
 ल रत्ना के अपहरण से अमुरा के शरीर में व्याप
 ग वमानक अमराका के साथ अमुरा का ऐन्द्रिक स्वरूप मन्त्र
 ५१ अ न न पृथिवी अवसविणी के पश्चात् अमुरा का गौतम
 पथ न समन
 ५२ अ न न अदिनी निष्ठा में अमुरो का गौतम आदि में समन
 ५३ म अदि अमुरा का गौतम में समन
 ५४ चमरों का गौतम में समन
 ५५ चमरों की सक्रिय अदि का चमरेन्द्र के शरीर में पुन प्रवेश
 ५६ क चमरेन्द्र का पुनमन

- ख- जंबूद्वीप. भरत क्षेत्र. विंध्यगिरि की तलहटी. बेमेल सन्निवेश
 ग- पूरण गाथापति का "दानामा प्रव्रज्या" ग्रहण करना
 घ- पूरण का अभिग्रह
 ङ- दानामा प्रव्रज्या के विधि-विधान
 च- पूरण का पादपोषगमन अनशन
 छ- भ० महावीर के छद्मस्य जीवन का इष्यारवां वर्ष
 ज- संसुमारपुर के बाहर अशोक वन में भ० महावीर द्वारा एक
 रात्री की भिक्षु प्रतिमा की आराधना
 झ- पूरण का चमरेन्द्र के रूप में उपपात
 ञ- चमरेन्द्र द्वारा सौधर्म कल्प के शक्रेन्द्र का अवलोकन
 ट- चमरेन्द्र का रोष
 ठ- भ० महावीर की निश्रा में चमरेन्द्र का सौधर्म कल्प में गमन
 ड- चमरेन्द्र का शक्रेन्द्र को ललकारना
 ढ- शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र पर वज्रप्रहार
 ण- चमरेन्द्र का पलायन और शक्रेन्द्र का पीछा करना
 त- भ० महावीर के चरणों की शरण में चमरेन्द्र का पहुँचना
 थ- शक्रेन्द्र का अवधि प्रयोग और वज्र को पकड़ना
 द- शक्रेन्द्र का भ० महावीर से क्षमा याचना
 ध- शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र को अभयदान और शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र
 को न पकड़ सकने का कारण

५७-५८ पुद्गलगति और दिव्यगति का अन्तर

- ५९ क- शक्रेन्द्र की उर्ध्वगति और चमरेन्द्र की अधोगति तीव्र होती है
 ख- इन्द्र और वज्र की गति में अन्तर
 ६० उर्ध्व, अधो व मध्यलोक में शक्रेन्द्र की गति का अल्प-बहुत्व
 ६१ क- ऊर्ध्व, अधो व मध्यलोक में चमरेन्द्र की गति का अल्प-बहुत्व
 ख- वज्र की गति का अल्प-बहुत्व

- ६२ शमेन्द्र और चमेन्द्र की अयो-ऊर्ध्व गति का कालमान और
अल्प-बहुत्व
- ६३ वज्र की अयो ऊर्ध्व गति का कालमान और अल्प बहुत्व
- ६४ क- शशङ्क वज्र और चमेन्द्र की अयो-ऊर्ध्व गति का कालमान
और अल्प बहुत्व
ख- चमेन्द्र की चिन्ता
ग- चमेन्द्र का भ० महावीर की चरण बदना के लिए आगमन
- ६५ सौधर्म पात्र में अनुरोह जाने का कारण
तृतीय विद्या उद्देशक
- ६६ क- शशङ्क भ० महावीर
ख- क्रिया के सम्बन्ध में सङ्गिपुत्र की शिक्षा
ग- पात्र प्रकार की शिक्षा
- ६७ दो प्रकार की काविकी शिक्षा
- ६८ दो प्रकार की आपिकरक्षिकी शिक्षा
- ६९ दो प्रकार की प्राङ्गिकी शिक्षा
- ७० दो प्रकार की परिणामिकी शिक्षा
- ७१ दो प्रकार की प्राणानिपान शिक्षा
- ७२ क्रिया और वेदना का पूर्वपरिणाम
- ७३-७४ धर्म निर्णय की शिक्षा के दो कारण
पात्र का कथन आदि
- ७५ अर्थ का कथन-याचन-परिणाम शिक्षा
- ७६ मन शिक्षा के समय कथन याचन परिणाम शिक्षा का समापन
- ७७ कथन-याचन परिणाम शिक्षा के कारण
- ७८ पात्र की निष्क्रिय दशा
- ७९ निष्क्रिय का निवारण
- ८० क- निर्वाण के कारण
ख- पूरे के अङ्गों का उदाहरण

ग- तप्ततवेपर उदक बिन्दु के नष्ट होने का उदाहरण

घ- रिक्त नौका का उदाहरण

ङ- संवृत अणगार की इयाविही क्रिया तथा अकर्म दशा

प्रमत्त और अप्रमत्त संयम

८१ एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से प्रमत्त संयत की स्थिति

८२ एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से अप्रमत्त संयत की स्थिति

लवण समुद्र में ज्वार-भाटा

८३ लवण समुद्र में ज्वार-भाटा आने का कारण

चतुर्थ यान उद्देशक

८४ अणगार देवरूप यान को देखता भी है और नहीं भी देखता है
देवरूप यान की चोभंगी

८५ क- अणगार देवीरूप यान को देख भी संकता है और नहीं भी
देख सकता है

ख- देवीरूपी यान की चोभंगी

८६ क- अणगार देव-देवीरूप यान को देख सकता है और नहीं भी
देख सकता है

ख- देव-देवी रूप यान की चोभंगी

८७-८८ क अणगार नृश के अन्दर-बाहुर दोनों भागों को देख सकता है

ख- मूल और कंद की चोभंगी

ग- मूल और स्कन्ध की चोभंगी

घ- मूल और वीज की चोभंगी-यावत्

ङ- फल और वीज की चोभंगी—४५ भागे

वायुकाय

८९ वायुकाय की पताकारूप में विकुर्वणा

९० विकुर्वितरूप वायुकाय की गति का परिमाण

९१-९४ वायुकाय की गति के सम्बन्ध में विविध विकल्प

मय

- ६५ बलाहक (मय) का स्त्रीरूप में परिणमन
- ६६ बलाहक (मय) का स्त्रीरूप में मयन
- ६७ बलाहक (मय) का पर श्रद्धि में मयन
- ६८ बलाहक बलाहक ही है
- ६९ बलाहक का यान आदि क रूप में मयन

कल्याण के मय

- १०० १०२ चौबिस दण्डना में लेपाइनों के अनुकूल भाषा का उगति अणगार विकर्षण
- १०३ १०४ बाह्य पुद्गलों का ग्रहण करने की हुई विकृतिना से अणगारका संभारगिरि उल्लसम
- १०५ क बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करने की हुई विकृतिना ■ अणगार का संभारगिरि प्रवेग
- ल बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करने की हुई विकृतिना से अणगार का संभारगिरि पवन को सम विषम रूप में परिवर्तन
- १०६ माया अणगार ही विकृतिना करता है
- १०७ क विकृतिना क कारण
- ल मायी अनाराधक-अमाया आराधक
- पञ्चम स्त्री जहदाक
- १०८ १०९ अणगार की स्त्रीरूप में विकृतिना
- ११० अणगार की सक्रिय सामर्थ्य
- १११ अणगार का जाल तलवार बाधकर आकाश में मयन
- ११२ अणगार का सक्रिय सामर्थ्य
- ११३ १२४ अणगार की विकृतिना के विविधरूप
- १२५ १२६ मायी और अमायी अणगार की देव गति

षष्ठ नगर उद्देशक

- १२७-१२९ राजगृह स्थित मिथ्या दृष्टि अणगार की वैक्रिय लब्धि से
वाराणसी विकुर्वण तथा विभंग ज्ञान से विपरीत दर्शन
- १३०-१३३ भावित आत्मा अणगार की विकुर्वणा का मायी मिथ्या दृष्टि
के विभंगज्ञान से विपरीत दर्शन
- १३४-१३६ भावित आत्मा अणगार की विकुर्वणा का अमायी सम्यग्दृष्टि के
अवधिज्ञान से यथार्थ दर्शन
- १४० भावित आत्मा अणगार द्वारा ग्राम, नगर आदि की विकुर्वणा
- १४१ भावित आत्मा अणगार का वैक्रिय सामर्थ्य
चमरेन्द्र
- १४२ चमरेन्द्र के आत्मरक्षक देवी का परिवार
- सप्तम लोकपाल उद्देशक
- १४३ शक्रेंद्र के चार लोकपाल
- १४४ चार लोकपालों के चार विमान
- १४५ क- सोम लोकपाल के संध्यप्रभ महाविमान का स्थान
ख- संध्यप्रभ महाविमान की लम्बाई, चौड़ाई और परिधि
ग- सोमाराजधानी की लम्बाई-चौड़ाई
घ- सोम लोकपाल के आज्ञावर्ती देव-देवियाँ
ङ- सोमलोकपाल के तत्वावधान में होनेवाले कार्य
च- सोम लोकपाल के अपत्यरूप देवी के नाम
छ- सोमलोकपाल की स्थिति
ज- सोमलोकपाल के अपत्यरूप देवी की स्थिति
- १४६ क- यम लोकपाल के वाशिष्ठ विमान का स्थान और लम्बाई-चौड़ाई
ख- —यावत्— प्रश्नोत्तरांक १४५ ग के समान
ग- यम लोकपाल के आज्ञानुवर्ती देव-देवियाँ
घ- यम लोकपाल के तत्वावधान में होने वाले कार्य

- इ यमलोकपाल के अपत्यरूप देवा के नाम
 च यमलोकपाल की स्थिति
 छ यम लोकपाल के अपत्यरूप देवों की स्थिति

१४० क वरुण लोकपाल के सत्त्वजल महाविमान का स्थान
 सत्त्वजल महाविमान की सम्बाई चौड़ाई

॥ १४५ के समान

- घ वरुण लोकपाल के आपानुवर्ती देव देखियाँ
 ङ वरुण लोकपाल के तत्त्वावधान में होने वाले कार्य
 च वरुण लोकपाल के छान्दस्य देवों के नाम
 छ वरुण लोकपाल की स्थिति
 ज वरुण लोकपाल के अपत्यरूप देवों की स्थिति

१४८ क वैधमन लोकपाल के वरुण महाविमान का स्थान
 ख वरुण महाविमान की सम्बाई चौड़ाई
 ग वैधमन की राजधानी का समान १४५ के समान
 घ वैधमन लोकपाल के आपानुवर्ती देव देखियाँ
 ङ वैधमन लोकपाल के तत्त्वावधान में होने वाले कार्य
 च वैधमन लोकपाल के आपत्यरूप देवों के नाम
 छ वैधमन लोकपाल की स्थिति
 ज वैधमन लोकपाल के अपत्यरूप देवों की स्थिति

अष्टम देवाधिपति उद्गार

१४९ अश्वि कुमार के दण्ड अधिपति

१५० क अश्वि कुमार के दण्ड अधिपति

ख अश्वि कुमार के दण्ड अधिपति

॥ अश्वि कुमार के दण्ड अधिपति

घ अश्वि कुमार के दण्ड अधिपति

ङ अश्वि कुमार के दण्ड अधिपति

- च- उदधिकुमारों के दश अधिपति
 छ- दिशा कुमारों के दश अधिपति
 ज- वायु कुमारों के दश अधिपति
 झ- स्तनित कुमारों के दश अधिपति
 ञ- दक्षिण दिशा के भवनपतियों के लोकपाल
 १५१ क- पिशाचों के दो अधिपति-यावत्-पतंगदेव के दो अधिपति
 ख- ज्योतिषी देवों के दो अधिपति
 १५२ सौधर्म-ईशानकल्प के दश अधिपति-यावत्-सहस्रगार
 पर्यंत दश अधिपति
 आनतादि चार कल्प के दो अधिपति
 नवम इन्द्रिय उद्देशक
 १५३ पाच इन्द्रियों के विषय
 दशम परिषद् उद्देशक
 १५४ चमरेन्द्र की तीन सभायें-यावत्-अच्युत पर्यन्त तीन सभायें
 चतुर्थ शतक
 चार लोकपाल-विमान उद्देशक
 १ ईशानेन्द्र के चार लोकपाल
 २ चार लोकपालों के चार विमान
 ३ क- सोम लोकपाल के सुमन महाविमान का स्थान लम्बाई-
 चौड़ाई आदि
 ख- शेष तीन विमानों के तीन उद्देशक
 ग- चारों लोकपालों की स्थिति
 घ- चारों लोकपालों के अपत्यरूप देवों की स्थिति
 चार लोकपाल-राजधानी उद्देशक
 ४ चार लोकपालों की चार राजधानियां

नवम-नैरयिक उद्देशक

५ नैरयिक नैरयिका मे उत्पन्न हुआ है

दशम तैश्या उद्देशक

६ नौनजया का अयोध वाकर कुण्ड तैश्या का नील तैश्या रूप मे परिणामन

पचम शतक

प्रथम सूय उद्देशक

१ क क्षपा नगरी पुणभद्र चैत्य

ख य० मङ्गावीर और गोपम

२ सूय का उदयास्त भिन्न भिन्न दिशाओ मे

३ जम्बुद्वीप मे दिक्क और राधिया

४ ६ जम्बुद्वीप मे दिक्क और रात्रि का परिमाण

नील अक्षुर्ण

१० ११ जम्बुद्वीप मे वर्षा अक्षु

१२ क जम्बुद्वीप मे हेमन्त अक्षु

ख जम्बुद्वीप मे शीघ्र अक्षु

अवन

१३ क जम्बुद्वीप मे अवन

ख जम्बुद्वीप मे युव यावन् सागरीपम

१४ क जम्बुद्वीप मे उ भविषी काल

ख जम्बुद्वीप मे अवसविषी काल

अवनसमुद्र

१५ अवन समुद्र मे भूयोन्म सूर्याग्नि

१६ अवन समुद्र मे उत्तमपिणी अवमपिणी

धातकी खंड

१७ धातकी खंड में सूर्योदय-सूर्यास्त

१८-१९ धातकी खंड में दिवस-रात्रि

२० धातकी खंड में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी

कालोद समुद्र

लवण के समान

पुष्करार्ध द्वीप

२१ धातकी खंड के समान

द्वितीय वायु उद्देशक

२२ चार प्रकार के वायु

२३ भिन्न-भिन्न दिशाओं में वायु का वहन

२४ द्वीप में चार प्रकार का वायु

२५ समुद्र में चार प्रकार का वायु

२६-२८ द्वीप और समुद्र के वायु का परस्पर विपर्यास

२९ चार प्रकार के वायु

३० वायु की स्वाभाविक गति

३१ चार प्रकार के वायु का वहन

३२ वायु की वैक्रिय गति

३३-३४ वायु कुमार द्वारा वायु की उदीरणा

३५ वायु का श्वासोच्छ्वास

ओदन आदि

३६ ओदन, कुल्माप और सुरा के पूर्व शरीर

३७ लोहा, तांबा आदि के पूर्व शरीर

३८ अस्थि, चर्म आदि के पूर्व शरीर

३९ इंगाल आदि के पूर्व शरीर

लवण मसुदा

४० लवण मसुदा का विवरण और परिधि
तृतीय जालप्रथिका उद्देशक

४१ क अन्य तीर्थिक — एक समय में दो आधु का वेदन
जाल प्रथिका का उद्देशक

ख भ० महावीर — एक समय में एक आधु का वेदन
मृ खला का उद्देशक

४२ ४३ चौबीस दंड में आधुष्य मस्तिन चौबी का गवन

४४ कर्मानुसार यानि का आधुवचन
चतुर्थ जाल उद्देशक

४५ छपस्य मनुष्य का आनाथ गद्द मुनता

४६ छपस्य मनुष्य का स्पष्ट मन्द मुनता

४७ छपस्य मनुष्य का समीपवर्ती गद्द मुनता

४८ ४९ कवनी समीप और दूर दाना प्रकार का गद्द मुनता है

५० छपस्य मनुष्य हुनता है

५१ कवनी हँसन नहीं ?

५२ न हँसने का कारण

५३ उन्मील दण्डक में न जाने जाने जाय यानि आठ कम बाधने है

५४ क छपस्य मनुष्य नी ब ऊष मता है

ख कवनी नीद ब ऊष नहीं सत

ग नीद-ऊष न जाने का कारण

५५ उन्मील दण्डक में नीद ब ऊष मता यानि चौबी के ७८ कम
हरिणगमेपी २३

५६ ब हरिणगमेपी दंड द्वारा गम साहरण

ख गम साहरण की चौबीसी

५७ हरिणगमेपी दंड का नन्दाय में गमसाहरण सामर्थ्य

आर्य अतिमुक्तक

- ५८ क- भ० महावीर का अंतेवासी अतिमुक्त कुमार श्रमण
 ख- अतिमुक्त की नौका क्रीड़ा
 ग- अतिमुक्त की इसी भव में मुक्ति
 घ- अतिमुक्तक की निंदा न करने तथा सेवा करने के लिए
 भ० महावीर का आदेश

देव आगमन

- ५९ क- भ० महावीर के समीप दो देवों का महाशुक्र कल्प में आगमन
 ख- भ० महावीर और देवों का मन से प्रश्नोत्तर करना
 ग- देवों के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा
 घ- गौतम और देवों का वार्तालाप
 ङ- देवों का स्वस्थान गमन

६०-६३ देवों को जो संयत कहना उचित है

६४ देवताओं की भाषा अर्धमागधी भाषा है
 केवली और छद्मस्थ

६५ केवली को मुक्त आत्मा का ज्ञान

६६ क- छद्मस्थ को मुक्त वात्मा का अज्ञान

ख- दो साधनों ने छद्मस्थ को ज्ञान होता है

६७ जिनसे ज्ञान मुक्त छद्मस्थ ज्ञान प्राप्त करता है

६८ चार प्रकार के प्रमाण

६९ क- केवली को अंतिम कर्म वर्गणा का ज्ञान

ख- छद्मस्थ को अंतिम कर्म वर्गणा का अज्ञान

७० केवली का उत्कृष्ट मनोबल व वचनबल

७१-७२ वैमानिक देवों का उत्कृष्ट मनोबल व वचनबल

७३-७६ अनुत्तर देव और केवली का आलाप-संलाप

७७ अनुत्तर देव उपज्ञांत मोही हैं

- ७८ ७९ केवली का अनीन्द्रिय ज्ञान
 ८० ८१ केवली का आकाश प्रदेशावगाहन सामर्थ्य
 चौदह पुर्वी
 ८२ ८३ चौदह पूवघारी का तन्त्रिनामर्थ्य
 पञ्चम छत्रस्थ उद्देशक
 ८४ छत्रस्थ की मयम से निद्रि
 छत्र्य तीर्थिक—
 ८५ ८६ सभी प्राणी एवं भूत वेदना का वेदन करते हैं
 भ० महावीर—
 सभी प्राणी एवं भूत और अनेकभूत वेदना का वेदन करते हैं
 ८७ ८८ चौदस लङ्क से दशों प्रकार की वेदना का वेदन
 मसार मङ्गल
 कलकर आदि
 ८९ क जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र
 ल इस अवसरविणी मे सात कुनकर हुए
 ग तीर्थहरो के माता पिता
 घ चक्रवर्ती की माता और स्त्री रत्न
 ङ वनदेव वामुन्व वामुदेव के माता पिता
 च प्रनिवामुन्व, सभी समवायाय के समान
 षष्ठ आयु उद्देशक
 ९० अल्पायु के तीन कारण
 ९१ दीर्घायु के तीन कारण
 ९२ अशुभ दीर्घायु के तीन कारण
 ९३ शुभ दीर्घायु के तीन कारण
 क्रिया विचार
 ९४ क चोरी मे गये हुए मास को गोर करने मे लगनेवाली विधि

ख- चोरी में गया माल मिलने पर लगनेवाली क्रियाएँ

६५ विक्रेता और क्रेता को लगने वाली, क्रियाएँ
विक्रेता के बीजक देने पर किन्तु क्रेता के माल न जाने तक
लगनेवाली क्रियाएँ

६६ क्रेता के घर माल पहुँचने पर क्रेता को और विक्रेता को
लगनेवाली क्रियाएँ

६७ क्रेता के मूल्य देने या न देने पर लगनेवाली क्रियाएँ
अग्निकाय—कर्मबंधन

६८ अग्नि प्रज्वलित करनेवाले के अधिक कर्म बंध
अग्नि शांत करनेवाले के अल्प कर्म बंध
क्रिया विचार

६९-१०० शिकारी, धनुष, प्रत्यंचा आदि को लगनेवाली क्रियाएँ

१०१ अन्य तीर्थिक—

चार सौ पांच सौ योजन का मनुष्य लोक है

भ० महावीर—

चार सौ पांच सौ योजन का निरयलोक है

१०२ नैरयिकों का वैक्रिय

आधाकर्म आहार

१०३ क- आधाकर्म आहार का सेवी आलोचना करे तो आराधक

आधाकर्म आहार का सेवी आलोचना न करे तो अनाराधक

ख- क्रीत " "

ग- स्थापित " "

घ- रचित " "

ङ- कांतार भक्त " "

च- दुर्भिक्ष भक्त " "

छ- वादलिका भक्त " "

ज- ग्लान भक्त " "

म- वायानर भक्त

"

"

ज- रात्रिभक्त

"

"

मन के दो-दो बिलस

१०४ वाचावम आहार को नित्याय कहकर आशान प्रगन करने
माना घनागधक

१०५ आशानम आशान को अनवद्य ' ' "

मन के दो-दो बिलस

१०६ मनस नित्य आशान मन उग-गोप की सीत मन से मुनि
मृगागदी

१०७ मृगागदी से कम मन

सप्तम पुद्गल कवन उद्देशक

१०८ परमाणु-पुद्गल का कवन

१०९ १११ व - नान और वनु प्रदेगी स्वयं का कवन

न पच प्रणीत वाचन-अनन प्रदेगी स्वयं का कवन

११२ ११३ प मातृ पुद्गल वाचन अनन्य प्रदेगी स्वयं का अविधार
म हान न ।

११४ अनन प्रणीत स्वयं का अविधार मे ऐदन

अनन प्रणीत स्वयं का अविधार मे ऐदन

अनन प्रणीत स्वयं का वाचन मे आद होना

अनन प्रणीत स्वयं का वृत्तवाचन मेध से नीचा होना

११५ परमाणु पुद्गल अनन अमध्य और अप्रदेगी हैं

११६ ११७ नी प्रदेगी स्वयं माध समध्य और मप्रदेगी हैं

नीन प्रणीत स्वयं अनन समध्य और मप्रदेगी हैं

११८ सम्यान सम्यान और अनन प्रदेगी स्वयं माध समध्य
और मप्रदेगी हैं

११६-१२१क- परमाणु पुद्गल का स्पर्शन-नव विकल्प

ख- दो प्रदेशी-यावत्-अनत प्रदेशी स्कंध का स्पर्शन

१२२ परमाणु पुद्गल-यावत्-अनंत प्रदेशी स्कंध की स्थिति

१२३ एक प्रदेशावगाढ पुद्गल-यावत्-असंख्यप्रदेशावगाढ पुद्गल का कंपन

१२४ एक प्रदेशावगाढ-पुद्गल-यावत्-असंख्यप्रदेशावगाढ पुद्गल का निष्कम्प

१२५ क- एक गुण काले पुद्गल की स्थिति

ख- यावत्-अनंतगुण काले पुद्गल की स्थिति

ग- शेष वर्णन—गघ, रस, रपर्ज की स्थिति

घ- सूक्ष्म परिणत पुद्गल की स्थिति

ङ- वादर परिणत पुद्गल की स्थिति

१२६ शब्द परिणत पुद्गल की स्थिति

अशब्द परिणत पुद्गल की स्थिति

१२७ स्कंध से परमाणु पुद्गल के विभक्त होने का काल

१२८ द्विप्रदेशी-यावत्-अनत प्रदेशी स्कंध के विभक्त होने का काल

१२९ एक प्रदेशावगाढ पुद्गल-यावत्-असंख्य प्रदेशावगाढ पुद्गल का कंपन काल

१३० क- एक प्रदेशावगाढ पुद्गल-यावत्-असंख्य प्रदेशावगाढ पुद्गल का निष्कम्पन काल

ख- वर्णादि परिणत तथा सूक्ष्म-वादर परिणत पुद्गल का काल

१३१ शब्द परिणत पुद्गल का काल

१३२ अशब्द परिणत पुद्गल का काल

आयु अल्प-बहुत्व

१३३ द्रव्यादि चार प्रकार के आयु का अल्प-बहुत्व परिग्रह

१३४-१३६ चौबीस दण्डक में आरंभ-परिग्रह

हनु अहनु

१४० १४६ हनु-अहनु के आठ मुख

अष्टम निर्घोषो पुत्र उद्देशक

१४६ भ० के शिष्य नारदपुत्र और निर्घोषो पुत्र के प्रश्नोत्तर

१५० नारदपुत्र का मन सब पुद्गल सार, समष्टि, संप्रदेश है
निर्घोषपुत्र का साधनवाद—

१५१ इत्यादि आदि का पुद्गल में अल्प-बहुत्व
जीवों की हृदि हानि

१५२ जीव घटने नहीं हैं सदा समान रहने हैं ।

१५३ चौबीस दण्डक व जीव बटते भी हैं घटने भी हैं और
समान भी रहने हैं

१५४ मिट्ट घटने नहीं हैं

१५५ चौबीस दण्डक व जीवों का हानि हृदि और अवस्थिति काल

१५६ मिट्टों का हृदि और अवस्थिति काल

१५७ व जीवों का मोक्षव्यतिरिक्त व विरक्त

ल चौबीस दण्डक व जीवों का मोक्षव्यतिरिक्त

१५८ मिट्ट मोक्षव्यतिरिक्त है

१५९ जीवों का मोक्षव्यतिरिक्त काल

१६० चौबीस दण्डक व जीवों मोक्षव्यतिरिक्त काल

१६१ मिट्टों का मोक्षव्यतिरिक्त काल

नवम राजगृह उद्देशक

१७० राजगृह नगर को व्याख्या

महात्मा और अधिका

१६३ १६४ प्रकाश और अन्धकार का गुणानुभव

१६५ १७० चौबीस दण्डक व—प्रकाश और अन्धकार अथवा पुद्गलों
का गुणानुभव

समय ज्ञान

१७१-१७४ चौबीस दण्डक में समय का ज्ञान

पार्श्वपत्य और महावीर

१७५-१७६क-पार्श्वपत्य स्थविरों का भ० महावीर से प्रश्न

असंख्य लोक में अनन्त रात्रि-दिन

ख- लोक के सम्बन्ध में भ० पार्श्वनाथ और भ० महावीर का एकमत

ग- पार्श्वपत्य स्थविरों का पंच महाव्रत ग्रहण

कुछ पार्श्वपत्यों की मुक्ति और कुछ की देवगति .

देवलोक

१७७ चार प्रकार के देवलोक

दशम चंद्र उद्देशक

चम्पा नगरी चन्द्र वर्णन

पंचम शतक प्रथम उद्देशक के समान

सूर्य के स्थान में चन्द्र का कथन

षष्ठ शतक

प्रथम वेदना उद्देशक

१ क- वेदना और निर्जरा की समानता

ख- महावेदना और अल्प वेदना में प्रशस्त वेदना की उत्तमता

२ छड़ी-सातवीं नरक में महावेदना

३ नैरयिकों और श्रमण निर्ग्रथों के निर्जरा की तुलना

४ क- वस्त्र का उदाहरण

ख- एरण का उदाहरण

ग- घास के पूले का उदाहरण

घ- लोहे के गोले का उदाहरण

जीव और करण

५-११ चार प्रकार के करण

वेदना और निर्जरा

१२ १३ वेदना और निर्जरा की चोमणी
नैरयिको व यमयो के निर्जरा की तुलना

द्वितीय आहार उद्देशक

१४ राजरुह नगर आहार वषण

तृतीय महा आश्रय उद्देशक

१५ मरु आश्रय वाले के मरुस्थ-ध

१६ वस्त्र का उदाहरण

१७ अल्प आश्रय वाले के अल्पवध

१८ वस्त्र का उदाहरण

वस्त्र और पुद्गलोपचय जीव और कर्मोपचय

१९-२० कर्मों के दो प्रकार का पुद्गलोपचय

जीव के प्रयोग से कर्मोपचय

२१ जीवीय दण्डक से प्रयोग से कर्मोपचय

२२ वस्त्र के पुद्गलोपचय तादि-मान्त

२३ जीव के कर्मोपचय की चोमणी

२४ जीव के कर्मोपचय तादि अनन्त न होने का कारण

२५ वस्त्र तादि-मान आदि चोमणी

२६ २७ जीव तादि मान आदि चोमणी

कर्मों की स्थिति

२८ आठ वध प्रहृतिषा

२९ आठ वध प्रहृतिषा की स्थिति

कर्मों के बाधन वारे

३०-३१ तीन वेदवान जीवों के आठ कर्मों का वषण

- ३२ संयत आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ३३ सम्यग्दृष्टि जीवों के आठ कर्मों का बन्धन
 ३४ संज्ञी आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ३५ भव सिद्धि आदि के कर्मों का बन्धन
 ३६ चक्षु दर्शन आदि दर्शन वाले जीवों के आठ कर्मों का बन्धन
 ३७ पर्याप्त आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ३८ भापक आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ३९ परित्त आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ४० आभिनिबोधिक ज्ञानी आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ४१ मति अज्ञानी आदि के आठ कर्मों बन्धन
 ४२ मनयोगी आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ४३ साकारोपयुक्त आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ४४ आहारक आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ४५ सूक्ष्म आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ४६ चरिम आदि के आठ कर्मों का बन्धन
 ४७ वेदकों का अल्प-बहुत्व

चतुर्थ सप्रदेशक उद्देशक

- ४८ काल की अपेक्षा जीव के सप्रदेश-अप्रदेश का चिन्तन
 ४९ चौबीस दण्डक में काल की अपेक्षा जीव के सप्रदेश-अप्रदेश का चिन्तन
 ५० काल की अपेक्षा जीवों के सप्रदेश-अप्रदेश का चिन्तन
 ५१-५२ चौबीस दण्डक में काल की अपेक्षा जीवों के सप्रदेश-अप्रदेश भागों का चिन्तन

प्रत्याख्यान और आयुष्य

- ५३ जीव प्रत्याख्यानी आदि है
 ५४ चौबीस दण्डक के जीव प्रत्याख्यानी आदि हैं
 ५५ चौबीस दण्डकों के जीव प्रत्याख्यान आदि के ज्ञाता-अज्ञाता हैं

५६ चौबीस दण्डको के जीव प्रत्यास्थान आदि के कर्ता हैं

५७ चौबीस दण्डक के जीवा का प्रत्यास्थान आदि से आमुष्म व

पचम तमस्काय उद्देशक

५८ ५९ तमस्काय पानी है

६० तमस्काय का आदि अम्न

६१ तमस्काय का सस्थान

६२ तमस्काय का विष्कम्भ

६३ तमस्काय की मोटाई

६४-६५ तमस्काय में घर ग्राम आदि नहीं हैं

६६ तमस्काय में शेष हैं

६७ तमस्काय के क्षूण देशादि हैं

६८ तमस्काय में गात्र बीज है

६९ गात्र बीज देव आदि करते हैं

७० तमस्काय में स्तुत शृङ्खो व अग्नि का निषेध

७१ ७२ तमस्काय में चन्द्र सूर्य और चन्द्र भूय की प्रभा आदि नहीं हैं

७३ तमस्काय का कल परम कृष्ण

७४ तमस्काय के तेरह नाम

७५ तमस्काय का परिवर्तन

७६ तमस्काय में जिन जीवों की उत्पत्ति और अनुत्पत्ति
कृष्ण राजि

७७ आठ कृष्ण राजियाँ

७८ आठ कृष्ण राजियाँ व स्थान

७९ कृष्णराजियाँ वा आवास विष्कम्भ और परिधि

८० कृष्णराजियाँ की मोटाई

८१ ८२ कृष्णराजियों में घर ग्राम आदि नहीं हैं

८३ कृष्णराजियाँ में शेष है

८४ कृष्णराजी की रचना देव करते हैं

- ८५ कृष्णराजियों में गाज-बीज हैं
 ८६ कृष्णराजियों में स्थूल अष्काय आदि नहीं हैं
 ८७-८८ कृष्णराजियों में चन्द्र, सूर्य आदि व उनकी प्रभा नहीं हैं
 ८९ कृष्णराजियों का वर्ण परम कृष्ण
 ९० कृष्णराजियों के आठ नाम
 ९१ कृष्णराजियों का परिणमन
 ९२ कृष्णराजियों में किन-किन जीवों की उत्पत्ति-अनुत्पत्ति

लोकान्तिक देव

- ९३ क- आठ कृष्णराजियों के आठ अवकाशान्तरों में आठ लोकान्तिक विमान

ख- अर्चि विमान का स्थान

- ९४ अर्चिमाली विमान का स्थान
 ९५ रिप्ट विमान का स्थान
 ९६ सारस्वत देवों का विमान
 ९७ आदित्य देवों का विमान-यावत्-
 ९८ रिप्ट देवों का विमान
 ९९ सारस्वत आदित्य आदि देवों का परिवार
 १०० लोकान्तिक विमानों का आधार
 १०१ लोकान्तिक विमानों की स्थिति
 १०२ लोकान्तिक विमानों से लोकान्त का अन्तर

षष्ठ भव्य उद्देशक

- १०३-१०४ सात पृथ्वियाँ-यावत्-
 पांच अनुत्तर विमान

- १०५-११० चौबीस दंडक में मारणान्तिक समुद्घात के पश्चात् अर्थात् उत्पन्न होने पर आहार, आहार परिणमन और शरीर रचना

सप्तम शाली उद्देशक

- १११ शानी श्रीहि आदि धायो की स्थिति
 ११२ कलाद मसूर आदि धायो की स्थिति
 ११३ अलमी कुयुम आदि धायो की स्थिति

गणनीय काल

- ११४ एक मुहूर्त के स्वासोच्छ्वास
 एक अहोरात्र के मुहूर्त
 एक पक्ष के अहोरात्र
 एक मास के पक्ष
 एक ऋतु के मास
 एक अयन के ऋतु
 एक सवसर के अयन
 एक युग के सवसर
 नौ वर्ष के युग-यावन तीस प्रह्निका
 ११५ दो प्रकार का औपमिक काल
 ११६ परमायम और सागरोदय का वजन
 सुयमा-सुयमा का वजन
 ११७ दस अवर्मागो के प्रथम भारे का वजन

अष्टम पृथ्वी उद्देशक

- ११८ आठ पृथ्वियाँ
 ११९ १२५ गान पृथ्विया का वजन पण्डितक पथम तपस्या
 उद्गात गुरु ६८ से ७२ व समान
 १२६ १३१ गोदमकर यावन गर्वाय मित्र विमान पर्वत का वजन
 पण्डितक पथम तपस्या उद्गात गुरु ६८ से ७२ व समान
 १३२ बीरीय दण्ड म दण्ड प्रकार का धातुवध
 १३३ बीरीय दण्ड म दण्ड प्रकार का निधन वध

१३४-१३५ चौबीस दण्डक में वारह आलापक

१३६ लवण समुद्र का वर्णन

१३७ द्वीप-समुद्रों के नाम

नवम कर्म उद्देशक

१३८ ज्ञानावरणीय के बंध के समय बंधनेवाली प्रकृतियाँ

महर्षिक देव और विकुर्वणा

१३९-१४० बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके महर्षिक देव का वैक्रिय करना

१४१ देवलोकवर्ती पुद्गलों को ग्रहण करके महर्षिक देव का वैक्रिय करना

१४२-१४३ वर्ण विपर्यय करने में महर्षिक देव का सामर्थ्य

देवता का जानना और देखना

१४४ अशुद्ध लेख्यावाले देवों का जानना और देखना (आठ विकल्प)

१४५-१४८ विशुद्ध लेख्यावाले देवों का जानना और देखना

दशम अन्य यूथिक उद्देशक

अन्य यूथिक

राजगृह में जितने जीव हैं उतने जीवों को भी सुख-दुःख होने में समर्थ नहीं हैं

महावीर

लोक के सभी जीवों को कोई सुख-दुःख देने में समर्थ नहीं है

१४९ क जीव की व्याख्या

ख चौबीस दंडक में जीव चैतन्य है

१५० क जीव की व्याख्या

ख चौबीस दंडक के जीव प्राणधारी हैं

१५१ चौबीस दण्डक के जीव भवसिद्धिक भी हैं, अबवसिद्धिक भी हैं
अन्य यूथिक

१५२ सभी प्राणी एकान्त दुःख का वेदन करते हैं

महावीर

सभी प्राणी सभी मुख सभी दुःख का वेदन करने हैं

मुख दुःख के वेदन का हनु

१२३ चौबीस दण्डन के जीव समीपवर्ति पुष्पना का आहार करते हैं

कबली इन्द्रिया द्वारा नहा जानना है

इन्द्रिया डाल न जानने का हनु

सप्तम सतक

प्रथम आहार उद्देशक

१ उत्पत्तिका

२ क परमेश प्राप्ति के प्रारम्भिक समय में जीव के आहारक और
अनाहारक होने का निश्चय

ख चौबीस दण्डन के जीव के आहारक-अनाहारक होने का ध्यान

३ जीव के अनाहारक का प्रथम और अन्तिम समय
काक सम्बन्ध

४ क लोक का सम्बन्ध

ख साम्बन्ध लोक में जीव-अजीव के जाना हैं केवली हैं वे सिद्ध-
बुद्ध और मुक्त होते हैं

क्रिया विचार

५ क अमणोपायक की सापरायिक क्रिया

ख सापरायिक क्रिया के हेतु

प्रचलम्बान

६ ७ प्रथम जन्तुवन के अतिचारों की मर्यादा

अमण की आहार देने का कल

८ ॥ अमण को आहार देने का अमणोपायक को फल

कर्म रहित जीव की गति

१० ११ कर्म रहित जीव की गति के छ प्रकार

- १२ कर्मरहित की गति के सम्बंध में मृतिका से लिप्त तुम्बे का उदाहरण
- १३ कर्मरहित की गति के सम्बंध में पकी हुई फलियों का उदाहरण
- १४ कर्मरहित की गति के सम्बंध में धूम का उदाहरण
- १५ कर्मरहित की गति के संबंध में घनुप-वाण का उदाहरण
दुःखी और दुःख
- १६-१७ दुःखी ही दुःख से युक्त है
क- चौबीस दण्ड के दुःखी जीव ही दुःख से युक्त हैं
ख- दुःख के संबंध में पांच विकल्प
क्रिया विचार
- १८ अणगार की इरियावही क्रिया
श्रमण का आहार
- १९ अंगार, धूम और संयोजना दोषों की व्याख्या
- २० दोषरहित आहार
- २१ क्षेत्रातिक्रान्त आदि सदोष आहार
- २२ शस्त्रातीत शस्त्रपरिणत आदि आहार के विशेषणों की व्याख्या
- द्वितीय विरति उद्देशक
प्रत्याख्यान
- २३ सुप्रत्याख्यान और दुष्प्रत्याख्यान की विचारणा
- २४ दो प्रकार के प्रत्याख्यान
- २५ मूल गुण प्रत्याख्यान दो प्रकार का
- २६ सर्व मूल गुण प्रत्याख्यान पांच प्रकार का
- २७ देश मूल गुण प्रत्याख्यान पांच प्रकार का
- २८ उत्तरगुण प्रत्याख्यान दो प्रकार का
- २९ सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान दश प्रकार का
- ३० देश उत्तरगुण प्रत्याख्यान दश प्रकार का

- ३१ जीव प्रत्यास्थानी और अप्रत्यास्थानी है
- ३२ चौबीस दण्डक में प्रत्यास्थानी और अप्रत्यास्थानी की विचारणा
- ३३ मूलगुण प्रत्यास्थानी आदि का अल्प बहुत्व
- ३४ ४३ चौबीस दण्डक में मूलगुण प्रत्यास्थानी का अल्प-बहुत्व
समय असमय आदि
- ४४ क जीव समय असमय और समनासमय भी है
ख चौबीस दण्डक में समय आदि हैं
ग समय आदि की अल्प बहुत्व
- ४५ चौबीस दण्डक में प्रत्यास्थानी आदि
- ४६ प्रत्यास्थानी आदि का अल्प बहुत्व
जिव शास्वत या अशास्वत
- ४७ जीव की शास्वत या अशास्वत मानना सापेक्ष है
- ४८ चौबीस दण्डक में जीव का शास्वत या अशास्वत मानना
सापेक्ष है
- तृतीय स्थावर उद्देशक
- ४९ वनस्पतिकार्य अल्पाहारी और महा आहारी
- ५० शीघ्र ऋतु में वनस्पति के पुष्पिन फलित होने का कारण
- ५१ मूल कद यावन बीज भिन्न भिन्न जीवों से व्याप्त है
- ५२ वनस्पतिकार्य का आहार और परिणमना
- ५३ आतू आग्नि अनन्य जीवस्थानी वनस्पतियाँ हैं
श्रेयसा और कम
- ५४ न अल्प कम और महाकम का कारण
ख चौबीस दण्डक में तस्या तथा अल्प कम का विचार
- ५५ वेदना और निजरा की भिन्नता
- ५६ चौबीस दण्डक में वेदना और निजरा की भिन्नता
- ५७ ५८ क वन्या और निजरा की भिन्नता तीन कारों की अपेक्षा से
विचार

ख- इसी प्रकार चौबीस दण्डक में 'क' के समान

- ५६ वेदना और निर्जरा का विभिन्न समय
 ६० चौबीस दण्डक में वेदना और निर्जरा का विभिन्न समय
 ६१ जीव को शास्वत या अशास्वत मानना सापेक्ष है
 ६२ चौबीस दण्डक में जीव को शास्वत या अशास्वत मानना सापेक्ष है

चतुर्थ जीव उद्देशक

- ६३ राजगृह-उत्थानिका
 ६४ छ प्रकार के संसार स्थित जीव
 ६५ पृथ्वी के छ भेद, छ भेदों की स्थिति, भवस्थिति, काय स्थिति, निर्लेपकाल, अनगार सम्बन्धि विचार, सम्यक्त्व क्रिया और मिथ्यात्व किया

पंचम पक्षी उद्देशक

- ६६ तीन प्रकार का योनि संग्रह

षष्ठ आयु उद्देशक

- ६७ क- राजगृह
 ख- चौबीस दण्डक के जीव इसी भव में आयु बंध करते हैं
 ६८ चौबीस दण्डक के जीव उत्पन्न होने के पश्चात् आयु का वेदन करते हैं
 ६९-७० चौबीस दण्डक के जीवों की अल्प या महा वेदना
 ७१ क- जीव के अनाभोग में आयु-बंध
 ख- चौबीस दण्डक में अनाभोग (अनुपयोग) से आयु का बंध वेदनीय कर्म
 ७२ क- प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शनशाल्य से जीव के कर्कश वेदनीय कर्म का बंध
 ख- इसी प्रकार चौबीस दण्डक में 'क' के समान

- ७३ क जीव के अकृश वेदनीय कम का वध
 ख अकृश वेदनीय कम के वध का हेतु
 ग इसी प्रकार चौबीस दण्डक में न ख के समान
- ७४ अज्ञाता वेदनीय कम का अस्तित्व
- ७५ न अज्ञाता वेदनीय के वध का हेतु
 ग चौबीस दण्डक में अज्ञाता वेदनीय के वध का हेतु
 काल चक्र
- ७६ इस भवसिंघी ने दुषमदुषमा आरे का वर्णन
- ७७ छट्ठ आरे के मनुष्यों का आहार
- ७४ छट्ठ आरे के मनुष्यों की गति
- ७५ छट्ठ आरे के स्वापदों की गति
- ७६ छट्ठ आरे के पक्षियों की गति
- सप्तम अण्गार उद्देशक
- ७७ क सहित अण्गार की हरियावही क्रिया
 ख हरियावही क्रिया के हेतु
 काम भोग
- ७८ काम एषी है
- ७९ काम सचित भी है अचित भी है
- ८० काम जीव भी है अजीव भी है
- ८१ काम जीवों को होता है
- ८२ काम दो प्रकार के है
- ८३ ८६ भोग प्रश्नोत्तरांक ७८ से ८१ के समान
- ८७ भोग तीन प्रकार के है
- ८८ काम भोग पांच प्रकार के हैं
- ८९ क जीव कामी भी है भोगी भी है
 ख जीवों ने कामी भोगी होने का हेतु
- ९० ९२ चौबीस दण्डक में कामी भोगी

- ६३ कामी-भोगी का अल्प-बहुत्व
- ६४ क- उत्थानादि से छद्मस्थ का भोग सामर्थ्य
ख- भोगों के त्याग से निर्जरा
- ६५ अधो अवधि ज्ञानी का भोग सामर्थ्य
- ६० परमावधि ज्ञानी का उसी भव से मोक्ष
- ६७ केवल ज्ञानी का उसी भव से मोक्ष
- ६८ असंज्ञी जीवों की अकाम वेदना
- ६९ संज्ञी जीवों की अकाम वेदना
- १०० संज्ञी जीवों की तीव्रेच्छापूर्वक वेदना
- अष्टम छद्मस्थ उद्देशक
- १०१ छद्मस्थ की केवल संयम, संवर, ब्रह्मचर्य और समिति-गुप्तिके पालन से मुक्ति नहीं होती
- जीव
- १०२ हाथी और कुंथुवे का जीव समान है
सुख और दुःख
- १०३ चौबीस दण्डक में पापकर्म से दुःख, और कर्म निर्जरा से सुख संज्ञा
- १०४ चौबीस दण्डक में दश संज्ञा वेदना
- १०५ तरक में दश प्रकार की वेदना क्रिया विचार
- १०६ हाथी और कुंथुवे की समान अप्रत्याख्यान क्रिया आधाकर्म आहार
- १०७ आधाकर्म आहार करने वाले के कर्म प्रकृतियों का वंघन नवम असंवृत उद्देशक
- १०८ बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके असंवृत साधु का वैक्रिय करना

- १०६ समीपवर्ती पुद्गलों की ग्रहण करके असह्य साधु का वैक्य करना
महाशिवो कृष्ण सधाम और रघु मुशल सधाम
- ११० महागिना-वटक सधाम का वपन
- १११ महागिला वटक नाम का हेतु
- ११२ महागिला-वटक म मनुष्यों का सहार
- ११३ महाशिवो-वटक म मरे हुए मनुष्यों की गति
- ११४ रघु-मुशल सधाम में जन-मराजय
- ११५ रघु-मुशल सधाम नाम का हेतु
- ११६ रघु मुशल सधाम म मनुष्यों का सहार
- ११७ रघु-मुशल सधाम में मरे हुए मनुष्यों की गति
- ११८ काविक के साथ शक्रेन्द्र और चमरेन्द्र क सहयोग का हेतु
- ११९ दुष्ट म मरने वाले सभी स्वयं में नहीं जाते
- १२० वैशाली मिशामी नाम पीत्र वरुण का सधाम में भजन
- १२१ क वरुण का अभिग्रह
ख वरुण पर प्रहार
ग वरुण का युद्ध में प्रत्यावर्तन
घ वरुण की आलोचना एवं मृत्यु
ङ वरुण क बालनिग्र की आलोचना
- १२२ वरुण की देवगति
- १२३ वरुण के मित्र का महाविदेह में जन्म
- १२४ यम्य और उमक मित्र की मुक्ति
दशम अन्य तीर्थिक उद्देशक
- १२५ क राजपूत
ख कालादात्री आदि अन्य तीर्थिक
ग पचाभिर्काय के मन्त्र में अन्य तीर्थिकों का प्रश्न और गौतम
गणधर का समाधान

२६ क- पुद्गलास्तिकाय के कर्मबंध नहीं होता

ख- कालोदायी का प्रव्रज्या ग्रहण

२७ पापकर्मों का अशुभ फल

२८ अशुभ कर्मफल के संबंध में विषमिश्रित भोजन का उदाहरण

२९ शुभ कर्मों का शुभ फल

३० क- शुभ कर्मफल के संबंध में औपधिमिश्रित आहार का उदाहरण

ख- प्राणातिपात विरति का फल

३१ अग्निकाय को प्रदिप्त अथवा उपशांत करने वाले के कर्मबंध की विचारणा

३२ अचित पुद्गलों का प्रकाश

३३ क- तेजोलेश्या के पुद्गलों का प्रकाश

ख- कालोदायी की अन्तिम आराधना एवं मुक्ति

अष्टम शतक

प्रथम पुद्गल उद्देशक

१ क- राजगृह

ख- तीन प्रकार के पुद्गल

२-१७ चौबीस दण्डक में प्रयोग परिणत पुद्गल

१८-२५ चौबीस दण्डक में-सूक्ष्म वादर तथा पर्याप्ता-अपर्याप्ता की अपेक्षा प्रयोग

२६ क- चौबीस दण्डक में सूक्ष्म पर्याप्ता-अपर्याप्ता की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल

ख- चौबीस दण्डक में वादर पर्याप्ता-अपर्याप्ता की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल

ग- चौबीस दण्डक में इन्द्रियों की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल

घ- चौबीस दण्डक में शरीरों की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल

इ चौबीस दण्डक में वण, गंध, रस स्पृश और सन्धान की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल

च चौबीस दण्डक में शरीर तथा वण, गंध, रस स्पृश सन्धान की अपेक्षा से प्रयोग परिणत पुद्गल

छ चौबीस दण्डक में इन्द्रिया तथा वर्णादि की अपेक्षा से प्रयोग परिणत

२६ मिश्रपरिणत पुद्गल प्रश्नोत्तराक २ से ३१ तक के समान नव दण्डक (विकल्प)

२७ विभ्रमापरिणत पुद्गल प्रश्नोत्तराक २ से ३१ तक के समान नव दण्डक (विकल्प)

२८ एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

२९ ३४ तीन योग की अपेक्षा एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

३५ ४६ पांच शरीर की अपेक्षा एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

५० ५१ एक द्रव्य के मिश्र परिणत पुद्गल

५२ एक द्रव्य के विभ्रमा परिणत पुद्गल

५३ ५७ एक द्रव्य के वण, गंध, रस स्पृश तथा सन्धान परिणत पुद्गल

५८ ६० दो द्रव्यों के प्रयोग मिश्र तथा विभ्रमा परिणत पुद्गल

५९ ६१ तीन योग का अपेक्षा दो द्रव्यों के प्रयोग परिणत पुद्गल

६२ मिश्र परिणत दो द्रव्य

६३ विभ्रमा परिणत दो द्रव्य

६४ तीन द्रव्यों के प्रयोग मिश्र तथा विभ्रमा परिणत पुद्गल

६५ तीन योग का अपेक्षा तीन द्रव्यों के परिणत पुद्गल

६६ ७६ चार पांच छह सात अठार द्रव्य परिणत पुद्गल

७० नव प्रकार के पुद्गलों का अन्त-वस्तुत्व

द्वितीय आशिविष उद्देशक

७१ दो प्रकार के आशिविष

७२-७४ जाति आशिविष चार प्रकार के

७५-८५ चौबीस दण्डक में कर्म आशिविष का विचार

छद्मस्थ और सर्वज्ञ

८६ क- छद्मस्थ दश वस्तुओं को नहीं जानता

ख- सर्वज्ञ दश वस्तुओं को जानता है

ज्ञान का विस्तृत वर्णन

८७ पांच प्रकार का ज्ञान

८८ मतिज्ञान चार प्रकार का

८९ तीन प्रकार का अज्ञान

९० मति अज्ञान चार प्रकार का

९१ अवग्रह दो प्रकार का

९२ श्रुत अज्ञान

९३ विभंग ज्ञान (ज्ञान का संस्थान)

९४-९९ चौबीस दण्डक में ज्ञानी-अज्ञानी

१०० सिद्ध-केवलज्ञानी

१०१-१०४ पांच गति में ज्ञानी-अज्ञानी

१०५-१०७ इन्द्रिय वर्गणा में ज्ञानी-अज्ञानी

१०८-१०९ काय वर्गणा में ज्ञानी-अज्ञानी

११०-११२ सूक्ष्म आदि में ज्ञानी-अज्ञानी

११३-१२० चौबीस दण्डक के पर्याप्त-अपर्याप्त में ज्ञानी-अज्ञानी

१२१-१२४ चार गति के भवस्थ जीवों में ज्ञानी-अज्ञानी

१२५-१२७ भवसिद्धिक आदि में ज्ञानी-अज्ञानी

१२८ संज्ञी आदि में ज्ञानी-अज्ञानी

१२९-१३६ दश प्रकार की लब्धियों के भेद

१३७-१५६ दश लब्धि सहित तथा दश लब्धि रहित में ज्ञानी-अज्ञानी

- १६० १६१ साकारावयुक्त में ज्ञानी-अज्ञानी
 १६२ १६३ अनाकारोद्युक्त में ज्ञानी अज्ञानी
 १६४ योग वश्या में ज्ञानी अज्ञानी
 १६५ १६६ भेदया वश्या में ज्ञानी-अज्ञानी
 १६७ १६८ वश्या वश्या में ज्ञानी अज्ञानी
 १६९ वेद वश्या में ज्ञानी-अज्ञानी
 १७० १७१ आहारक वश्या में ज्ञानी-अज्ञानी
 १७२ १७३ पाच ज्ञान का विषय
 १७४ १७५ तीन अज्ञान का विषय
 १८० ज्ञानी की स्थिति
 १८१ पाच ज्ञान की स्थिति
 १८२ १८४ पाच ज्ञान तीन अज्ञान के पदों
 १८५ पाच ज्ञान के पदों का अल्प-बहुत्व
 १८६ तीन अज्ञान के पदों का अल्प-बहुत्व
 १८७ पाच ज्ञान-तीन अज्ञान के पदों का अल्प-बहुत्व
 तृतीय सूक्त उद्देशक
 १८८ तीन प्रकार के कृष्ण
 १८९ मन्वेय जीव वात रूप अनेक प्रकार के
 १९० असन्वेय जीव वात रूप दो प्रकार के
 १९१ क एक बीजवाले रूप अनेक प्रकार के
 ल अनेक बीजवाले रूप अनेक प्रकार के
 १९२ अनंत बीजवाले कृष्ण अनेक प्रकार के
 तीव्र प्रदूषण
 १९३ देह का मूष्मन्तर स्रष्ट भी जीव प्रदेय से भाग्य है
 १९४ जीव प्रदेयों को शम्भ से पीडा नहीं हानती
 पृथ्वा
 १९५ आठ पृथ्विया
 १९६ आठ पृथ्विया का चरम अचरम विचार

चतुर्थ क्रिया उद्देशक

१६७ क- राजगृह

ख- पांच प्रकार की क्रिया

पंचम आजीविक उद्देशक

१६८ क- राजगृह. स्थविर

ख- श्रावक सामायिक के पश्चात् अपने ही उपकरणों की शोध करता है

२६६ श्रावक के ममत्व भाव का प्रत्याख्यान नहीं है

२०० सामायिक व्रत स्वीकार करने पर भी स्त्री उसी की स्त्री है

२०१ श्रावक का प्रेम वचन अविच्छिन्न है

२०२ प्राणातिपात के प्रत्याख्यान का स्वरूप

२०३ अतीत-कालीन प्रतिक्रमण के भागे

२०४ वर्तमान-कालीन संवर के भागे

२०५ भविष्य कालीन प्रत्याख्यान के भागे

२०६ क- स्थूल मृपावाद प्रत्याख्यान के भागे

ख- स्थूल अदत्तादान प्रत्याख्यान के भागे

ग- स्थूल मैथुन प्रत्याख्यान के भागे

स्थूल परिग्रह प्रत्याख्यान के भागे

२०७ आजीविक का सिद्धान्त

२०८ आजीविक दारह श्रमणोपासक

२०९ श्रावकों के त्याज्य पद्रह कर्मादान
देवलोक

२१० चार प्रकार के देवलोक

षष्ठ प्रासुक-आहारादि उद्देशक

२११ उत्तम श्रमण को शुद्ध आहार देने से एकान्त निर्जरा

- २१२ उत्तम धमण को अशुद्ध आहार देने से अधिक निजरा और
अप पाप
- २१३ असयन को शुद्ध जषवा अशुद्ध आहार देने से एकान पाप
- २१४ २१५ गृहस्थ ने जिस धमण के निमित्त आहार दिया है वह धमण
न मिले तो उस आहार को एकांत स्थान में परठने का
विधान
दश धमणों के निमित्त दिये हुये हुए आहार की भी वही
विधि है
- २१६ पात्र गुच्छा रजोहरण चोलपट्ट कवच वण्ड मस्तारक आदि
के सम्बन्ध में भी पूर्वोक्त विधि
- २१७ २२२ आराधक नियम
- २२३ आराधक नियमी
- २२४ क आराधक होने का हेतु
ख द्विष्टमान रोम आन् द्विष्ट माने जाते हैं
ग इक्षुमान तूण आन् दग्ध माने जाते हैं
घ प्रक्षिप्यमान वस्त्र प्रभिष्ट माने जाते हैं
ङ रज्यमान धरुण रक्त माने जाने हैं
प्रकाण्डक
- २२५ दीपक में ज्योति जलती है
- २२६ प्रवर्तित घर में ज्योति जलती है
क्रिया विचार
- २२७ औदारिक शरीर सम्बन्धि क्रिया
- २२८ चौबीस दण्डक में औदारिक शरीर सम्बन्धि क्रिया
- २२९ औदारिक शरीर सम्बन्धि एक जीव द्वारा क्रिया
- २३० चौबीस दण्डक में औदारिक शरीर सम्बन्धि एक जीव द्वारा
क्रिया
- २३१ औदारिक शरीर सम्बन्धि बनेक जीवों द्वारा क्रिया

- २३२ चौबीस दण्डक में औदारिक शरीर सम्बन्धि अनेक जीवों द्वारा क्रिया
- २३३ अनेक जीवों के औदारिक शरीर से होने वाली क्रियायें
- २३४ चौबीस दण्डक में अनेक जीवों के औदारिक शरीर से होने वाली क्रियायें
- २३५ क- वैक्रिय आदि शरीर सम्बन्धि क्रियायें
 ख- वैक्रिय आदि शरीरों से होने वाली क्रियायें
 ग- प्रत्येक शरीर के चार-चार विकल्प

सप्तम अदात्तान उद्देशक

- २३६ राजगृह. गुणशील चैत्य. भ० महावीर
 अन्यतीर्थिक और स्थविरों का संवाद
- २३७-२४७ अन्य तीर्थिक
 सभी स्थविर असंयत हैं क्योंकि वे अदत्त लेते हैं

२४८-२४९ स्थविर

- क- हम दत्त लेते हैं इसलिये संयत हैं
 ख- किन्तु तुम सब असंयत हो

२५०-२५१ अन्य तीर्थिक

सभी स्थविर बाल हैं

२५२-२५६ स्थविर

- क- हम सभी कार्य विवेक पूर्वक करते हैं, इसलिये बाल नहीं हैं
 तुम सब बाल हों
 ख- स्थविरों द्वारा "गति प्रपात" अध्ययन की रचना

२५७ पांच प्रकार का गति प्रपात

अष्टम प्रत्यनीक उद्देशक

- २५८ तीन प्रकार के गुरु प्रत्यनीक
 २५९ तीन प्रकार के गति प्रत्यनीक

- २६० तीन प्रत्यनीक
 २६१ तीन प्रकार के अनुकम्पा प्रत्यनीक
 २६२ तीन प्रकार के श्रुत प्रत्यनीक
 २६३ तीन प्रकार के भाव प्रत्यनीक
 व्यवहार
 २६४ पांच प्रकार का व्यवहार
 २६५ व्यवहार का फल
 कर्मकर्म
 २६६ इत्याधिक और सापराधिक कर्म व ध
 २६७ २६८ इत्याधिक कर्म वाचने वाले (अनेक विधान)
 २७० २७२ इत्याधिक कर्म के भागे
 २७३ २७५ सापराधिक कर्म वाचनेवाले
 २७६ २७८ सापराधिक कर्म के भागे
 कर्म प्रकृतिया
 २७९ आठ वम प्रकृतिया
 पराध
 २८० २८१ व सावीस परीपद
 ल चार कर्म के उन्म से सावीस परीपद
 २८७ २८८ कर्मानुसार पराध का निषय
 सूर्य ज्ञान
 २८३ मूय ज्ञान—प्रात मध्याह्न साय
 २८४ २८५ मय की सवन गमान ऊचाई
 समीप और दूर में मूय के दिखाई देने का हेतु
 २८६ ३०१ मय का प्रमाण शेष
 ३०२ मय का नाप क्षेत्र
 ३०३ मानुषास्त पवन क अंदर चंद्र मूय आदि
 ३०४ मानुषोत्तर पवन के बाहर चंद्र मूय आदि

नवम प्रयोग बन्ध उद्देशक

- ३०५ दो प्रकार के बन्ध
 ३०६ दो प्रकार के विस्त्रमा बन्ध
 ३०७-३१० तीन प्रकार के अनादि विस्त्रमा बन्ध
 ३११ तीन प्रकार के सादि विस्त्रमा बन्ध
 ३१२ बन्धन प्रत्ययिक बन्ध
 ३१३ भाजन प्रत्ययिक बन्ध
 ३१४ परिणाम प्रत्ययिक बन्ध
 ३१५ क- तीन प्रकार का प्रयोग बन्ध
 ख- चार प्रकार का सादि सान्त बन्ध
 ३१६ आलापन बन्ध
 ३१७ चार प्रकार का आलीन बन्ध
 ३१८-४०८ दो प्रकार का शरीर बन्ध
 ४०९ देश बन्धक, सर्व बन्धक और अवन्धक की अल्प-बहुत्व

दशम आराधना उद्देशक

- ४१० क- राजगृह. अन्य तीर्थिक
 ख- अन्य तीर्थिक—शील ही श्रेय है. श्रुत ही श्रेय है
 ग- महावीर—शील और श्रुत सम्पन्न के चार भांगे
 आराधक-विराधक
 ४११ तीन प्रकार की आराधना
 ४१२ ज्ञान आराधना तीन प्रकार की
 ४१३ क- दर्शन आराधना तीन प्रकार की
 ख- चारित्र्य आराधना तीन प्रकार की
 ४१४-४१६ तीन आराधनाओं का परस्पर सम्बन्ध
 ४१७-४२२ तीन आराधनाओं के आराधकों का मोक्ष
 पुद्गल परिणाम
 ४२३-४२५ क- पांच प्रकार का पुद्गल परिणाम

स वर्णादि पुद्गल परिणाम के भेद

४२६ ४३० क पुद्गलास्तिकाय का एक प्रदेश-भावत

स पुद्गलास्तिकाय के अनन्त प्रत्येग

४३१ लोकाकाश के प्रदेश

४३२ एक जीव के प्रत्येग

कर्म प्रकृतियाँ

४३३ आठ कम प्रकृतियाँ

४३४ चौबीस दण्डक में आठ कम प्रकृतियाँ

४३५ ४३६ आठ कर्मों के अविभाज्य अणु

चौबीस दण्डक में आठ कर्मों के अविभाज्य अणु

४३७ जीव के एक एक प्रत्येग पर आठ कर्मों का आवरण

४३८ ४३९ चौबीस दण्डक में प्रत्येक जीव के एक एक प्रदेश पर आठ कर्मों का आवरण

४४० ४४३ आठ कर्मों का परस्पर सम्बन्ध

भीष्ट विचार

४४४ जीव पुद्गली है या पुद्गल इसका निर्णय

४४५ चौबीस दण्डक के जीव पुद्गली है या पुद्गल इसका निर्णय

४४६ सिद्ध पुद्गली है या पुद्गल इसका निर्णय

नवम शतक

प्रथम अम्बू उद्देशक

१ क अम्बूद्वीप भिविना नगरी भाविमद चतुर्ध्व म महावीर और गौतम

॥ अम्बूद्वीप का स्थान

ग अम्बूद्वीप का संस्थान-भावत

घ अम्बूद्वीप के पूर्व-पश्चिम में चौन्ह नाम दण्डक हजार नदियाँ

द्वितीय ज्योतिषीदेव उद्देशक

२-४ क- राजगृह

ख- अढाईद्वीप में प्रकाश करने वाले चन्द्र-सूर्य

तृतीय से तीसवाँ पर्यन्त अन्तरद्वीप उद्देशक

५ अढाईस अन्तरद्वीप

इकतीसवाँ असोच्चा उद्देशक

६ क- राजगृह

ख- केवली आदि से धर्म श्रवण किये बिना धर्म की प्राप्ति

७-१७ इसी प्रकार बोधि प्राप्ति, बोधि प्राप्ति का हेतु,

प्रव्रज्या प्राप्ति, प्रव्रज्या प्राप्ति का हेतु,

ब्रह्मचर्य धारण करना, ब्रह्मचर्य धारण करने का हेतु

संयमप्राप्ति, संयम प्राप्ति का हेतु,

संवर प्राप्ति, संवर प्राप्ति का हेतु,

आभिनिवोधक ज्ञान, आभिनिवोधक ज्ञान का हेतु,

श्रुत ज्ञान, श्रुत ज्ञान का हेतु,

अवधि ज्ञान, अवधिज्ञान का हेतु,

मनः पर्यव ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान का हेतु,

केवल ज्ञान, केवल ज्ञान का हेतु,

१८ बोधि आदि की प्राप्ति और उसके हेतु

१९ क- विभंग ज्ञान की उत्पत्ति, सम्यक्त्व की प्राप्ति

ख- चारित्र्य स्वीकार, अवधिज्ञान की प्राप्ति

२० अवधिज्ञानियों में लेश्या

२१ अवधिज्ञानियों में ज्ञान

२२ अवधिज्ञानियों में साकारोपयोग

२३ अवधिज्ञानियों में योग

२४ अवधिज्ञानियों में उपयोग

२५ अवधिज्ञानियों का संघयण

- २६ अवधिज्ञानियों का संस्थान
- २७ अवधिज्ञानियों की ऊँचाई
- २८ अवधिज्ञानियों का आयु
- २९ अवधिज्ञानियों में बड़
- ३० अवधिज्ञानियों में कथाय
- ३१ अवधिज्ञानियों के अध्ययनसाध
- ३२ अवधिज्ञानियों की मुक्ति
- ३३ अवधिज्ञानियों का कथावस्तु
- ३४ अधुत्वा कवनी धर्मोद्देश नहीं करते
- ३५ अधुत्वा कवनी दीक्षा नहीं देते
- ३६ अधुत्वा कवनी मित्र हान हैं
- ३७ अधुत्वा कवनों का समाविष्ट स्थान
- ३८ एक समय में अधुत्वा कवनों की संस्था धर्म ध्वस्त
- ३९ कवनी आदि में धर्म ध्वस्त करके धर्म की प्राप्ति
- ४० केवली आदि में धर्म ध्वस्त करके मध्यमव की प्राप्ति
- ४१ कवनी आदि में धर्मध्वस्त करके अवधिज्ञान की प्राप्ति
- ४२ अवधिज्ञानियों में लज्जा
- ४३ अवधिज्ञानियों में ज्ञान पचन अवधिज्ञानियों का आयुष्य
- ४४ अवधिज्ञानियों में बड़
- ४५ अवधिज्ञानियों में कथाय
- ४६ केवली आदि में धर्मध्वस्त करके धर्मोद्देश कर
- ४७ ४८ कवनी आदि में धर्मध्वस्त करके दीक्षा दे
- ४९ ५० कवनी आदि में धर्मध्वस्त करनेवाला मित्र हान है
- ५१ अधुत्वा कवनों का समाविष्ट स्थान
- ५२ एक समय में अधुत्वा कवनों की संस्था

वत्तीसवाँ गांगेय उद्देशक

५५ वाणिज्य ग्राम, दूतिपलाश चैत्य, भ० महावीर और पार्श्वपत्य गांगेय

जन्म-मरण

५६-५८ चौबीस दण्डक में-जीवों की सांतर (अंतर सहित) निरंतर (अंतर रहित) उत्पत्ति

५९-६२ चौबीस दण्डक में जीवों का सांतर-निरंतर ज्यवन (मरण)

६३ चार प्रकार का प्रवेशनक

६४-७७ क- नैरयिक प्रवेशनक

ख- एक संयोगी-यावत्-सप्तसंयोगी विकल्प

७८ नैरयिक प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

७९-८२ तिर्यच योनिक प्रवेशनक

एक संयोगी-यावत्-पंच संयोगी विकल्प

८३ तिर्यच योनिक प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

८४-८६ क- मनुष्य प्रवेशनक

ख- एक मनुष्य-आवत्-असंख्यात मनुष्य

८७ मनुष्य प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

८८-९० क- देव प्रवेशनक

ख- एक देव-यावत्-असंख्य देव

९१ देव प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

९२ सर्व प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

जन्म-मरण

९३ क- चौबीस दण्डक के जीवों का सान्तर-निरन्तर उत्पन्न होना

ख- चौबीस दण्डक के जीवों का सान्तर-निरन्तर मरण

९४ चौबीस दण्डक में विद्यमान की उत्पत्ति

९५ चौबीस दण्डक में विद्यमान का मरण

९६ क- प्रश्नोत्तर ९६-९७ की पुनरावृत्ति

न अन्गान और उदवर्तन के हेतु

२६ म० महावीर स्वयं जाता है

१०० १०२ खोखोत दण्डक के बीच स्वयं उत्पन्न होते हैं

१०३ क दासर्वाण्य गाय का पंच महाजन ग्रहण

ल दासर्वाण्य गाय का निर्वाण

तेनीसर्वा कूड ग्राम उद्देशक

मुवाक

१ मगध कुरुग्राम बुद्धमाल जैन और भरत मातृण

मगध मातृणो म० महावीर का पदार्थ

२ ३ म० महावीर की वदना के लिए कुरुग्राम और देवानन्दा का गमन

४ देवानन्दा के स्नान में दुग्धारा का दण्ड

५ दुग्धारा का हेतु पुनः-स्नेह

६ श्रद्धावदन का प्रवृत्ता ग्रहण एवं मुक्ति

७ क देवानन्दा का प्रवृत्ता साधना

८ २२ जत्रिय कूड ग्राम अमाती जत्रिय कुमार

जमाना का म० महावीर की वदना के लिए जाना

२३ २६ अमाती की पान्थमा पुण्यो के साथ प्रवृत्ता

३० अमाती का म० महावीर से स्वतंत्र विचरण के लिये अनुमति प्राप्त करना

पाचमी मुनियों के साथ अमाती का विहार

३१ ३२ अमाती का धावन्दा नगर के कोण्डक जैन में गमन

म० महावीर का चम्पानगरी, पूर्णमद जैन में गमन

३३ अन्वय अमाती और उनकी विपरीत प्रवृत्ता

३४ गौतम अमाती महाद मवाद का विषय

नोर और जीव का सम्बन्ध या अशास्त्र होना

अमाती की आशंका

३५ म० महावीर द्वारा समाधान

३६ क- जमाली की विराधकता

ख- जमाली की किल्बिषिक देवरूप में उत्पत्ति और स्थिति

३७ भ० महावीर का जमाली के संबंध में गौतम को कथन

३८ किल्बिषिक देवों की स्थिति

३९-४१ किल्बिषिक देवों का निवासस्थान

४२ किल्बिषिक देव होने के हेतु

४३ किल्बिषिक देवों की भव परम्परा

४४ जमाली की साधना के संबंध में भ० महावीर से गौतम का प्रश्न

४५ जमाली की लातंक कल्प में उत्पत्ति

४६ जमाली का कुछ भवों के पश्चात् निर्वाण

चोतीसवां पुरुष घातक उद्देश्यक

१०४ क- राजगृह

ख- पुरुष को मारनेवाला पुरुष से भिन्न की भी हत्या करता है

ग- पुरुष से भिन्न की हत्या का हेतु

१०५ क- अश्व को मारनेवाला अश्व से भिन्न को भी मारता है

१०६ क- व्रस को मारनेवाला व्रस से भिन्न को भी मारता है

ख- व्रस से भिन्न को मारने का हेतु

१०७ क- ऋषि को मारनेवाला ऋषि से भिन्न को भी मारता है

ख- ऋषि से भिन्न को मारने का हेतु

वैरभाव

१०८ पुरुष को मारनेवाला पुरुष और पुरुष से भिन्न के साथ भी वैर बांधता है (इसके अनेक विकल्प)

१०९ ऋषि के सम्बंध में प्रश्नोत्तरांक १०८ की पुनरावृत्ति

श्वासोच्छ्वास

११० पृथ्वीकाय आदि के श्वासोच्छ्वास का विचार

१११ पृथ्वीकाय आदि के श्वासोच्छ्वास के समय लगनेवाली क्रियाएँ

११२ वायुकाय से होनेवाली क्रियाएँ

दशम सतक

प्रथम दिशा उद्देशक

- १-२ पूर्वादि दिशाएँ जीव अजीव रूप है
- ३ दश दिशाएँ
- ४ दश दिशाया के नाम
- ५ क दिशाय जीव अजीव के दश प्रदेशरूप है
ख तर्क इव-वाचन अनिर्दिश्य क दश प्रदेशरूप है
- ६ रूपी अजीव चार प्रकार का
- ७ अरूपी अजीव सात प्रकार का
- ८ आग्नेया दिशा जीवरूप नहीं है
- ९ क दिशा विदिशातो के जीव-अजीवरूप
- १० पाच प्रकार क शरीर

द्वितीय सतक अष्टगार उद्देशक

- १० कपाय भाव म सञ्जन अष्टगार का लगनेवाली क्रियाएँ
- ११ क अकपाय भाव म सञ्जन अष्टगार को लगनेवाली क्रियाएँ
ख द्वारारबिही अथवा सापराधिवी क्रियाया क हेतु
- १२ ज्ञान प्रकार का यात्रियाँ
- १३ तीन प्रकार की बदनाय
- १४ भिन्नु पडिमा
- १५ क अज्ञाय स्थान की आनाचना म आनाचना
ख अज्ञाय स्थान की आनाचना न करने से विराधना

तृतीय आत्म श्रद्धि उद्देशक

- क राजश्रद्ध
- ख एक श्रद्ध म चार पाच देवादासा के उन्मथन का मामध्व
- १७ अन्य श्रद्धि देव की शक्ति
- १८ महाश्रद्ध देव की शक्ति

- १६-२० देव विमोहित करके दूसरे देव के मध्य में होकर जाता है
 २१-२२ महर्द्धिक देव का दूसरे देव के मध्य में होकर गमन
 २३ अल्प ऋद्धि वाले देव का देवी के मध्य में होकर गमन-यावत्
 २४ महर्द्धिक देव का देवी के मध्य में होकर गमन
 २५-२६ अल्प ऋद्धिवाली देवी का देवी के मध्य में होकर गमन
 २७-२८ महर्द्धिक देवी का देवी के मध्य में होकर गमन
 उदर वायु
 २९ घोड़े के पेट में कर्कट वायु
 ३० बारह प्रकार की भाषा

चतुर्थ श्यामहस्ती अगार उद्देशक

- ३१ क- वाणिज्यग्राम, दुतिपलाश चैत्य, भ० महावीर और इन्द्रभृति
 ख- श्याम हस्ती अगार और गौतम का संवाद
 ३२ क- असुर कुमार के त्रायस्त्रिंशक देव
 ख- जम्बूद्वीप, भरत, काकंदी, तेतीस श्रमणोपासक
 ग- सभी श्रमणोपासक विराधक हुए और वे त्रायस्त्रिंशक देव हुए
 ३३ क- संदिग्ध गौतम का भ० महावीर के समीप समाधान के लिये उप-
 स्थित होना
 ख- अशुरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों का पद शाश्वत है
 ३४ क- बलेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव
 ख- जम्बूद्वीप, भरत, वेमेल संनिवेश, तेतीस श्रमणोपासक विराधक
 हुए और वे सभी त्रायस्त्रिंशक देव हुए,
 ग- धरणेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव शेष भवनवासी एवं व्यंतर देवों के
 त्रायस्त्रिंशक देव
 ३५ क- शकेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव
 ख- जम्बूद्वीप, भरत, पलाशक संनिवेश, तेतीस श्रमणोपासक आरा-
 धक अवस्था में मरकर त्रायस्त्रिंशक देव हुए

- ग शत्रुघ्न के त्रायस्त्रिंशक देवों का पद शास्वत है
- ३६ क ईशानेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव
 ख अम्बुद्वीप भरत चम्पानगरी तृतीय धर्मोपासक आराध्य
 अवस्था में मरकर त्रायस्त्रिंशक देव हुए
 ग ईशानेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों का पद शास्वत है
 घ अम्बुद्वीप परमेश्वर इसी प्रकार समस्त
 पञ्चम देव उद्देशक
- ३७ राजगृह गुणगोत्र चण्ड भ० महावीर और स्वविर
- ३८ क चमरेन्द्र की पाच अग्रमहीपियों के नाम
 ख मर्यादा का हेतु भाष्यक चैत्यरत्न
 ग जिन अस्थियों का सम्मान
- ४० क चमरेन्द्र के सोमलोकपाल की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ग चार हजार देवियों का एक कृतिक वय कहा जाना है
 घ सोमा शनष्कानी सोम लोकपाल की मधुन मर्यादा मर्यादा का हेतु
 पूषवत
- ४१ क्षत्र लोकपालों का वंशज सोम लोकपाल के समान
- ४२ बरोचने की पाच अग्रमहीपियों के नाम परिवार पूषवत
- ४३ बलीन्द्र के चार लोकपालों का वंशज
- ४४ धरमेन्द्र की छह अग्रमहीपियों के नाम
- ४५ धरमेन्द्र के कामवाल लोकपाल की चार अग्रमहीपियों के नाम
- ४६ भुगानन्द की छह अग्रमहीपियों के नाम
- ४७ भुगाने क नामवित्त लोकपाल की चार अग्रमहीपियों के नाम
 गय वंशज धरमेन्द्र के लोकपालों के समान
- ४८ कालेन्द्र की अग्रमहीपियों के नाम
- ४९ मुरुषेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम
- ५० पूषमन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम

- ५१ भीम की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ५२ किन्नरेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम
 किम्पुरुषेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ५३ सत्पुरुषेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ५४ अतिकायेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ५५ गीतरतीन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ५६ क- चन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ख- सूर्य की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ५७ ग्रंगारक ग्रह की चार अग्रमहीपियों के नाम
 ५८ शेष अठ्यासीमहाग्रहों का वर्णन
 ५९ क- शक्रेन्द्र की आठ अग्रमहीपियों के नाम
 ख- प्रत्येक अग्रमहीपी का परिवार
 ग- एक लाख अट्ठाईस हजार देवियों का एक शुटिक वर्ग
 ६० शेष वर्णन चमरेन्द्र के समान
 ६१ ईशानेन्द्र की आठ अग्रमहीपियों के नाम. लोकपालों का वर्णन
 षष्ठ सभा उद्देशक
 ४२ शक्र की सुधर्मा सभा
 ६३ शक्रेन्द्र का सुख
 सप्तम से चौतीसवें पर्यन्त अन्तर्द्वीप उद्देशक
 ६४ उत्तर दिशा के अट्ठाईस (एकोरुक से शुद्धदन्त) अन्तर्द्वीपों का वर्णन
 इग्यारहवाँ शतक
 प्रथम उत्पल उद्देशक
 १ क- राजगृह
 ख- उत्पल के जीव
 २ उत्पल में उत्पन्न होने वाले जीवों की पूर्व-गति

- ३ उत्पल में एक समय में उत्पन्न होने वाले जीव
- ४ उत्पल के जीवों को निकालने में लगनेवाला काल
- ५ उत्पल के जीवों की अवगाहना
- ६ उत्पल के जीवों के सानकर्मों का बंध
- ७ उत्पल के जीवों के आशुक्रम का बंध (आठ विकल्प)
- ८ उत्पल के जीवों के आठ कर्मों का वैदक
- ९ उत्पल के जीवों का शान्त अनागत वेग
- १० उत्पल के जीवों के आठ कर्मों का उभय
- ११ उत्पल के जीवों के आठ कर्मों की उद्दीरण
- १२ उत्पल के जीवों में लक्ष्मी (अस्मी विकल्प)
- १३ उत्पल के जीवों में लक्ष्मी
- १४ उत्पल के जीवों में शान्त-अनागत
- १५ उत्पल के जीवों में योग
- १६ उत्पल के जीवों में उपवास
- १७ उत्पल के जीवों का वषट्क रस स्वन
- १८ उत्पल के जीवों का स्वामोद्वेग (२६ विकल्प)
- १९ उत्पल के जीवों का स्वामोद्वेग (आठ विकल्प)
- २० उत्पल के जीवों में विरति अविरति
- २१ उत्पल के जीवों में विरति
- २२ उत्पल के जीवों के सान आठ कर्मों का बंध
- २३ उत्पल के जीवों में चार सान (अस्मी विकल्प)
- २४ उत्पल के जीवों में चार कषाय (अस्मी विकल्प)
- २५ उत्पल के जीवों में बंध
- २६ उत्पल के जीवों में बंधों का बंध
- २७ उत्पल के जीवों में बंध
- २८ उत्पल के जीवों में बंध
- २९ उत्पल के जीवों का उत्पल के रूप में रहने का बंध में उत्पल मान

३०-३४ उत्पल के जीवों में पृथ्वीकाय आदि से गमनागमन का काल

३५ उत्पल के जीवों का आहार

३६ उत्पल के जीवों की आयु

३७ उत्पल के जीवों में समुद्धात

३८ उत्पल के जीवों का उद्वर्तन (मरण)

३९ उत्पल में सर्व जीवों की उत्पत्ति

द्वितीय शालूक उद्देशक

४० क- शालूक में जीव

ख- शेष उत्पल के समान

तृतीय पलाश उद्देशक

४१ क- पलाश में जीव

ख- शेष उत्पल के समान

ग- पलाश में लेश्या

चतुर्थ कुंभिक उद्देशक

४२ क- कुंभिक में जीव

ख- शेष उत्पल के समान

ग- स्थिति में विवेचना

पंचम नालिक उद्देशक

४३ क- नालिक में जीव

ख- शेष उत्पल के समान

षष्ठ पद्म उद्देशक

४४ क- पद्म में जीव

ख- शेष उत्पल के समान

सप्तम कणिक उद्देशक

४५ क- कणिक में जीव

स गेप उत्पल के समान
अष्टम नलिन उद्देशम

४६ क नलिन में जीव

ख गेप उत्पल के समान
नवम शिव राजपि उद्देशक

सूचक

१ क हस्तिनापुर सहभाज वन

ख शिवराज धारिणी पट्टराजी शिवभद्र पुत्र

२ शिवराज का दिश प्रोक्त प्रजया सेने का स्वरूप

३ शिवभद्र की राज्याभिषेक

४ शिवराज की प्रजया

५ शिव राजपि का अभिषेक

६ शिव राजपि की तपश्चर्या

७ शिव राजपि की विभगमान

८ सात द्वीप समुद्र का गान

९ भ० महावीर का पलायन इन्द्रभूति की आशंका

१० भ० महावीर द्वारा समाधान

अनाई द्वीप के द्वय

११ अम्बुद्वीप में वन गध रम स्वयमुत्पन्न इष्य

१२ लवण समुद्र में वन गध रम स्वयमुत्पन्न इष्य

१३ घातकी लण-वाहन-स्वयम्भुरमण समुद्र में वर्णाग्नि मुत्पन्न इष्य

१४ भ० महावीर का शिवराजपि के विभगमान के समर्थ में वधाय कथन

१५ शिवराजपि का विपरीत कथन भ० महावीर का वधाय कथन

१६ सांक्तिन शिवराजपि

१७ १८ समाधान के लिये शिवराजपि का भ० महावीर के समीप आगमन

६ भ० महावीर के समीप शिवराजर्षि की दीक्षा तथा अन्तिम साधना

२० वज्ररूपभ नाराच संघयणवाला सिद्ध होता है

दशम लोक उद्देशक

४७ क- राजगृह

ख- चार प्रकार का लोक

४८-५० क्षेत्रलोक तीन प्रकार का

५२ अधोलोक का संस्थान

५३ तिर्यग्लोक का संस्थान

५४ उर्ध्वलोक का संस्थान

५५ लोक का संस्थान

५६ अलोक का संस्थान

५७-५८ तीनों लोक जीव, जीव के देश और प्रदेश रूप हैं

५९ सम्पूर्ण लोक जीव, जीव के देश और प्रदेश रूप हैं

६० अलोक जीव, जीव के देश और प्रदेश रूप है

६१-६२ तीन लोक में से प्रत्येक लोक के एक आकाश प्रदेश में जीव, जीव के देश और प्रदेश हैं

६३ सम्पूर्ण लोक का एक आकाश प्रदेश, जीव के देश, जीव के प्रदेश रूप हैं

६४ अलोक का प्रत्येक आकाश प्रदेश जीव-अजीव नहीं है

६५ द्रव्य आदि से तीनों लोक, लोक और अलोक का विचार

६६ लोक का विस्तार—चार दिक्कुमारियों का रूपक

६७ अलोक का विस्तार—आठ दिक्कुमारियों का रूपक

६८ लोक के एक आकाश प्रदेश में जीव के प्रदेशों का परस्पर संबंध और एक दूसरे को पीड़ा न पहुँचाना, नर्तकी का रूपक

६९ एक आकाश प्रदेश में रहे हुए जीव प्रदेशों का अल्प-बहुत्व

एकादश काल उद्देशक

- ७० वाणिज्य ग्राम दुर्गिष्वग्राम चै व, य० महावीर से सुरार्ण धेन्डी का प्रश्न
- ७१ चार प्रकार का काव
- ७२ क दो प्रकार का प्रमाण काल
ख उत्कृष्ट पौरुषी जघन्य पौरुषी
- ७३ मुहूर्त क एक ही बाबीस भाग हानि वृद्धि से उत्कृष्ट तथा जघन्य पौरुषी
- ७४ अठारह मुहूर्त के दिन में उत्कृष्ट पौरुषी
बारह मुहूर्त के दिन में जघन्य पौरुषी
इसी प्रकार रात्रि की पौरुषियाँ समझना
- ७५ अषाढ़ पूर्णिमा की सबसे बड़ा दिन,
पाप पूर्णिमा की सबसे छोटा दिन,
इसी प्रकार रात्रि
- ७६ समान दिन समान रात्रि
- ७७ यथापु निजलि काम
- ७८ यत्पु की व्याख्या
- ७९ अष्टाश्विन ममय-शावन उत्सविणी
- ८० पन्थापम और मागरोपम का अर्थोचन
- ८१ नैरयित्री की-शावन-अश्विनीतिथि के देवों की स्थिति
- ८२ पन्थापम एवं मागरोपम का अर्थवच
अर्थवच का हेतु
महादत्त वर्णन

सूत्राक

- १-६ इम्तिनामपुर, महामासचन, बल राजा, प्रभावती रानी,
मिहस्पन्ध
राजा द्वारा स्वप्नजन कथन
- ७-१० स्वप्नपाठको की निमन्त्रण

- ११ स्वप्नपाठकों को प्रीतिदान एवं उनका विसर्जन
- २२ गर्भ रक्षा, पुत्र जन्म
- १३ वधाई
- १४ जन्मोत्सव, नामकरण
- १५ पंचधाय से पुत्र का पालन
- १६ महाबल का अध्ययन काल
- १७-१८ महाबल का आठ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण व प्रीतिदान (दहेज)
- १९ धर्मघोष अणगार के समीप वाणी श्रवण, वैराग्य, राज्याभिषेक दीक्षा ग्रहण, तपश्चर्या, संलेखना, ब्रह्मलोक में उत्पत्ति, महाबल देव की स्थिति, सुदर्शन को जातिस्मरण, सुदर्शन की प्रव्रज्या, श्रमण पर्याय, मुक्ति

द्वादश आलभिका उद्देशक

सूत्रांक

- १ क- आलभिका नगरी, शंखवन चैत्य, ऋषिभद्र प्रमुख श्रमणोपासक
ख- श्रमणोपासकों में परस्पर चर्चा
ग- देवताओं की जघन्य स्थिति
घ- देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति
ङ- ऋषिभद्र के कथनपर श्रमणोपासकों की अश्रद्धा
- २ क- भ० महावीर का पदार्पण
ख- देवताओं की स्थिति के सम्बन्ध में भ० महावीर का समाधान
- ३ गौतम की जिज्ञासा, ऋषिभद्र प्रव्रज्या स्वीकार करने में असमर्थ
- ४ ऋषिभद्र की सीधर्म के अरुणाभ विमान में उत्पत्ति
- ५ ऋषिभद्र देव का ज्यवन, महाविदेह में जन्म और मुक्ति

बारहवीं शतक

प्रथम शत उद्देशक

- १ क- सावत्री नगरी, कोष्ठक चैत्य, राम प्रमुख भग्नोपासक, उत्पत्ता
भग्नोपासिका पोम्बली भग्नोपासक
- ख म० महावीर की भग्नोपासना
- २ क भग्नोपासको द्वारा पाण्डित्य पोषण करने का निर्णय,
चार प्रकार का आहार निष्पन्न हुआ
- ख शत्रु का संहार चारों आहार के त्याग का संहार
- ३ ४ पोम्बली का शत्रु को भोजन के विषय निषेध
- ५ पोम्बली की उत्पत्ता की वदना
- ६ ८ पोम्बली को पोषण के सचय में दात का निषेध
- ६ म० महावीर की वदना के लिये पाण्डित्य दात का गमन
- १० भग्न भग्नोपासक का म० महावीर की वदना के लिये गमन
- ११ म० महावीर का दात की निशान करने के लिये आदेश
- १ ८ तीन प्रकार की जागरिका
- ख जागरिका की व्याख्या
- २ जोष ॥ कम वचन
- ३ मान माया, और मोक्ष से वर्ण वचन
- ४ दात में भग्नोपासको की दाया दातना एवं स्वस्थान गमन
- ५ गौतम की विज्ञाना का समाधान
- दात प्रत्यक्षा स्वीकार करने में समर्थ नहीं है

द्वितीय जयती उद्देशक

सूर्यक

- १ क कोशाभी नगरी, चन्द्रावतन चैत्य
- ख महावानीक राजा का वीर, शत्रुवानीक राजा का पुत्र, चन्द्रराज

की पुत्री का पुत्र, जयंती श्रमणोपासिका का भतीजा,
उदायन राजा

ग- सहस्रानीक राजा के पुत्र की पत्नि, शतानीक राजा की पत्नि,
चेष्टक राजा की पुत्री, उदाई राजा की माता, जयंती श्रमणो
पासिका की भोजाई, मृगावती देवी

घ- सहस्रानीक राजा की पुत्री, शतानीक राजा की भगिनी, उदाई
राजा की पितृपुत्रा-भुवा, मृगावती देवी की नणंद, भ० महावीर
को सर्व प्रथम वसती देनेवाली जयंती श्रमणोपासिका

प्रश्नोत्तरांक

२ क- मृगावती और जयंती सहित भ० महावीर की वंदना के लिये
राजा उदाई का गमन, भ० महावीर और जयंती के प्रश्नोत्तर

ख- प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य

- ३ जीव के भारीपने के हेतु
- ४ जीव का भव्यत्व स्वाभाविक है
- ५ सर्व भव्य जीव मुक्त होंगे
- ६ संसार भव्य जीवों से रिक्त नहीं होगा, रिक्त न होने का हेतु
- ७ जीव का सोना या जागना सहेतुक श्रेष्ठ है
- ८ जीव का सबल होना या निर्वल होना सापेक्ष श्रेष्ठ है
- ९ उद्यमी होना या आलसी होना सापेक्ष श्रेष्ठ है
- १० पंचेन्द्रिय वशवर्ती का संसार भ्रमण
- ११ जयंती की प्रव्रज्या

तृतीय पृथ्वी उद्देशक

१२ सात पृथ्वियाँ

१३ सात पृथ्वियों के गोत्र

चतुर्थ पुद्गल उद्देशक

१४-२४ द्विप्रदेशिक स्कंध-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंध के अनेक विकल्प

और उनकी स्थापना

२५ अनन्तानन्त पुद्गल परिवत्त

२६ सात प्रकार का पुद्गल परिवत्त

२७ चौबीस दण्ड म पुद्गल परिवत्त

२८ ३६ चौबीस दण्ड म औन्नतिक पुद्गल परिवत्त

चौबीस दण्ड मे क्विय पुद्गल परिवत्त यावत् आन प्राण पुद्गल परिवत्त

४० औन्नतिक पुद्गल परिवत्त की व्याख्या यावत् आन प्राण पुद्गल परिवत्त की व्याख्या

४१ औन्नतिक पुद्गल परिवत्त का निष्पत्ति काय बावत्-आन प्राण पुद्गल परिवत्त का निष्पत्ति काय

४२ औन्नतिक पुद्गल परिवत्त काय का मल-बहुत्व

४३ पुद्गल परिवत्तों का अल्प बहुत्व

वचन अतिपात उद्देशक

४४ ४६ प्राणानिपात-यावन मिष्यान्गनशय म वर्णादि कीत है

५० प्राणानिपात निरमल यावन मिष्यान्गनशय त्याग वर्णादि नहीं है

५१ सात प्रकार की मति मे वर्णादि नहीं है

५२ अवग्रहादि चार म वर्णादि नहीं है

५३ उ घातादि पाँच मे वर्णादि नहीं है

५४ मज्जम अवगाता नरा म वर्णादि नहीं है

५५ अ ८ पुत्रिया म औन्न चनवान-ननुवाता म वर्णादि है

५६ चौबीस दण्ड मे वर्णादि है

५७ क वर्माग्निनाय यावन जीवाग्निनाय मे वर्णादि नहीं है

ख पुद्गलान्मिताय मे वर्णादि है

ग आनावरणीय-यावन अन्तराय म वर्णादि है

५८ क इत्य सख्या मे वर्णा - है

- ख- भाव लेख्या में वर्णादि नहीं हैं
- ग- तीन दृष्टियों में वर्णादि नहीं हैं
- घ- चार दर्शनों में वर्णादि नहीं हैं
- ङ- पांच ज्ञानों में वर्णादि नहीं हैं
- च- चार संज्ञाओं में वर्णादि नहीं हैं
- छ- पांच शरीरों में वर्णादि हैं
- ज- तीन योगों में वर्णादि हैं
- झ- साकारोपयोग और निराकारोपयोग में वर्णादि नहीं हैं

- ५६ सर्व द्रव्यों में वर्णादि हैं
- ६० गर्भस्थ जीव में वर्णादि हैं
- ६१ जीव और जगत् का कर्मों से विविधरूप में परिणमन

षष्ठ राहु उद्देशक

- ६२ क- राहु के सम्बन्ध में जनसाधारण की भ्रान्त धारणा
- ख- राहुदेव का वर्णन
- ग- राहु के नाम
- घ- राहु का विमान
- ङ- पूर्व-पश्चिम में गमन करता हुआ राहु चन्द्र के उद्योत को आवृत्त करता है
- ६३ दो प्रकार का राहु
- ६४ राहुसे चन्द्र और सूर्य के आवृत्त होने का जघन्य उत्कृष्ट काल
- ६५ चन्द्र को शशि कहने का हेतु
- ६६ सूर्य को आदित्य कहने का हेतु
- ६७ चन्द्र के अग्रमहीपिया
- ६८ सूर्य और चन्द्र के काम-भोग

सप्तम लोक उद्देशक

- ६९ लोक का आयाम-विष्कम्भ

७० क लोक के सब आकाश प्रान्तों में सब जीवों का जन्म मरण
ख भजाव्रज का उदाहरण

७१ ८२ चौबीस दण्डक में सब जीवों का जन्म मरण

८३ सब जीव सब जीवों के माता पिता आदि सम्बन्धी हो चुके हैं

८४ सब जीवों के सन्तु आदि हो चुके हैं

८५ सब जीव सब जीवों के राजा आदि हो चुके हैं

८६ सब जीव सब जीवों के दास आदि हो चुके हैं

अष्टम नाग उद्देशक

८७ ९१ क महर्षिक देव की सप हाथी मणी और वृक्षरूप में उत्पत्ति

ख सप आदि रूप में अर्चा पूजा

ग सप आदि का एक भव करके मोक्ष में जाना

९२ ९४ चानर आदि सिंह आदि और काक आदि की तरफ में
उत्पत्ति

नवम देव उद्देशक

९५ पाच प्रकार के देव

९६ भव्य द्रव्य देव कहने का हेतु

९७ नरदेव कहने का हेतु

९८ धर्मदेव कहने का हेतु

९९ देवाधिदेव कहने का हेतु

१०० भावदेव कहने का हेतु

१०१ भव्य द्रव्य देव की उत्पत्ति

१०२ १०४ नरदेव की उत्पत्ति

१०५ धर्मदेव की उत्पत्ति

१०६ १०८ देवाधिदेव की उत्पत्ति

१०९ भवदेव की उत्पत्ति

११० भव्य द्रव्य देव की स्थिति

- १११ नरदेव की स्थिति
 ११२ धर्मदेव की स्थिति
 ११३ देवाधिदेव की स्थिति
 ११४ भावदेव की स्थिति
 ११५ क- भव्य द्रव्य देव की विकुर्वणा शक्ति
 ख- नरदेव की विकुर्वणा शक्ति
 ग- धर्मदेव की विकुर्वणा शक्ति
 ११६ देवाधिदेव की विकुर्वणा शक्ति
 ११७ भावदेव की विकुर्वणा शक्ति
 ११८ भव्य द्रव्य देव की मरणोत्तर गति
 ११९ नरदेव की मरणोत्तर गति
 १२० धर्मदेव की मरणोत्तर गति
 १२१ देवाधिदेव की मरणोत्तर गति
 १२२ भावदेव की मरणोत्तर गति
 १२३ भव्य द्रव्य देव का अन्तर
 १२४ नरदेव का अन्तर
 १२५ धर्मदेव का अन्तर
 १२६ देवाधिदेव का अन्तर
 १२७ भावदेव का अन्तर
 १२८ पांच देवों का अल्प-बहुत्व
 १२९ भावदेवों का अल्प-बहुत्व
 दशम आत्मा उद्देशक
 १३० आठ प्रकार का आत्मा
 १३१-१३४ आठ आत्माओं का परस्पर सम्बन्ध
 १३५ आठ आत्माओं का अल्प-बहुत्व
 १३६ आत्मा ज्ञान स्वरूप है

- १३७ जीवीन दण्ड में आमा का रूप
 १३८ आमा ज्ञान स्वरूप है
 १३९ जीवान दण्ड में आमा दानरूप है
 १४० १४४ रत्नप्रभा-आवन ईश प्राप्ति द्वारा पृथ्वी सम्पन्न रूप है
 १४१ क तब परमाणु यात्रा अनन्त प्रवेशिक स्वरूप सम्पन्न रूप है
 म सम्पन्न रूप करने का हेतु

तेरहवा शतक

प्रथम पद्यी उद्देशक

- १ क राशिपू
 ल मान धृ स्वया
 २ क रत्नप्रभा के नरकावास
 ३ रत्नप्रभा के सम्पन्न योजना विस्तार जाने नरकावासी में एक समय में उन्नत होने वाले जीव (उन्नतजीवीन विस्तार)
 ४ रत्नप्रभा के नरकावासी में एक समय में उन्नत बनने वाले जीव
 ५ रत्न का म नाशजीवा की मत्ता
 ६ रत्नप्रभा के जलमयता योजना विस्तार जाने नरकावासी में एक समय में जीवा की उत्पत्ति उन्नत जीव मत्ता
 ७ १२ नरका प्रभु यवन लभ प्रभा का वपन
 १३ क सप्तम नरक के वाच नरकावास
 म नरकावास का वपन
 १४ वाच नरकावास में एक समय में जीवा की उत्पत्ति उन्नत जीव मत्ता
 १५ रत्नप्रभा के सम्पन्न योजना विस्तार जाने नरकावासी में सम्पन्न दृष्टि ज्ञान की उत्पत्ति
 १६ १७ क सम्पन्न दृष्टि ज्ञान का उन्नत बनने

ख- सम्यग्दृष्टि आदि का अविरह

ग- शर्करा प्रभा-यावत्-तमः प्रभा में रत्नप्रभा के समान

घ- रत्नप्रभा के असंख्याता योजन वाले नरकावासों में सम्यग्दृष्टि आदि की उत्पत्ति, उद्वर्तन, सत्ता

१८ सप्तम पृथ्वी के पांच नरकावासों में मिथ्यादृष्टि की उत्पत्ति, उद्वर्तन, सत्ता

१९-२१ अन्य लेश्यावाले कृष्ण, नील, कापोत लेश्या रूप में परिणत होकर नरक में उत्पन्न होते हैं

द्वितीय देव उद्देशक

२२ चार प्रकार के देव

२३ दश प्रकार के भवनवासी देव

२४ असुर कुमारों के आवास

२५ संख्यात या असंख्यात योजन वाले आवासों में एक समय में उत्पन्न होने वाले जीव

२६ नागकुमार-यावत् स्तनित कुमार असुर कुमारों के समान

२७ व्यंतर देवों के समान

२८ व्यंतर देवों के आवासों में एक समय में उत्पाद, उद्वर्तन और सत्ता

२९ क- ज्योतिषिक देवों के आवास

ख- ज्योतिषी देवों के आवासों में एक समय में जीवों का उपपात, उद्वर्तन और मरण

३०-३५ सौधर्म-यावत्-सर्वार्थसिद्ध विमानों में एक समय में जीवों का उपपात, च्यवन, और सत्ता

३६ कृष्णादि लेश्यावाले जीव देवों में कृष्णादि लेश्यारूप में परिणत होने पर उत्पन्न होते हैं

तृतीय नरक उद्देशक

नरक और नैरयिक

३७ नैरयिक अनन्तराहारी हैं

चतुर्थ पृथ्वी उद्देशक

- ३८ सात पृथ्वीया
 ३९ सात नरको के नरकावासों की सस्या तथा नैरथिकों के कर्मादि
 ४० सात नरका के नैरथिकों का पृथ्वी यावत् वनस्पति का लक्षणानुभव
 ४१ सात नरकों की बाह्य रूप बौद्धि
 ४२ समस्त नरकावासों के समीपवर्ती यावत् वनस्पति का पिक जीवा
 के वन और वेदना
 साक
 ४३ लोक का मध्यभाग
 ४४ अधोलोक का मध्यभाग
 ४५ उच्चलोक का मध्यभाग
 ४६ त्रिदश लोक का मध्यभाग
 दिशा
 ४७ ४८ विद्या विदिशा विचार
 अस्तिकाय
 ५० पचास्त्रिकाय रूप लोक
 ५१ ५५ पचास्त्रिकायों की प्रवृत्ति
 ५६ ६६ क पचास्त्रिकाय के प्रदेशों का परस्पर स्पष्ट
 त्व पचास्त्रिकाय के प्रदेशों का काल समयों से स्पष्ट
 ६७ क पचास्त्रिकाय द्रव्यों का पचास्त्रिकाय के प्रदेशों से स्पष्ट
 त्व पचास्त्रिकाय द्रव्यों का काल समयों से स्पष्ट
 ६८ ७५ क प्रत्येक अस्तिकाय के एक प्रदेश में अथवा अस्तिकायों के प्रदेशों
 का अस्तित्व
 ख प्रत्येक अस्तिकाय के एक प्रदेश में काल समयों का अस्तित्व
 ७६ ७७ क एक अस्तिकाय के स्थान में अथवा अस्तिकायों के प्रदेशों का
 अस्तित्व
 ख एक अस्तिकाय के स्थान में काल समय का अस्तित्व

७८-७९ एक स्थावर जीव के स्थान में अन्य स्थावर जीवों का अस्तित्व
 ८० क- प्रत्येक अस्तिकाय के स्थान में एक पुरुष का बैठना-उठना
 असम्भव

ख- कृत्वागार शाला का उदाहरण
 लोक वर्णन

८१ क- लोक का समभाग

ख- लोक का संक्षिप्त भाग

८२ लोक का वक्रभाग

८३ लोक का संस्थान

८४ तीनों लोक की अल्प-बहुत्व

पंचम आहार उद्देशक

८५ नैरयिक अचित्ताहारी है

षष्ठ उपपात उद्देशक

८६ क- राजगृह

ख- नैरयिक सान्तर और निरन्तर उत्पन्न होते हैं

८७ क- असुरेन्द्र के चमरचंच आवास की दूरी

ख- चमरचंच आवास का आयाम-विष्कम्भ

ग- चमरचंच आवास के प्राकार की ऊंचाई

८८ क- मनुष्यलोक में चार प्रकार के लयन

ख- चमरचंच आवास केवल क्रीडाघर है

राजा उदायन

१ क- चम्पा नगरी, पूषभ चैत्य, न० महावीर

ख- सिन्धु मौवीरदेश (सोलह देश) वीतिभय नगर (१६० नगर)
 मृगवन उद्यान, उदायन राजा, प्रभावती रानी, अभीचीकुमार.

भाषेत्र (भागिनय) केशीकुमार, महात्मन आदि ऋग राजा

२ क पोषणाना मे सम जागरणा करन समय राजा उपायन का एक सकल्प

स भ० महाशेर का सुवदन मे पदापन

ग राजा उपायन का दानाथ गमन एक प्रव्रज्या के निचे निवेदन

३ अभाचीकुमारक निय उपायन का शुभमकल्प और केनीकुमार को रा-याभिषेक

४ क राजा उपायन का प्रव्रज्या ग्रहण

स पद्मावती की शुभकामना

५ क अभाचीकुमार की मानसिक वेदना

स अभाचीकुमार का काशिक क समीप गमन

ग अभाचीकुमार का पारवृत्ति

घ अभाचीकुमार का अपुर कुमार देव होना

ङ एक पय की स्थिति

च अभाची का महाविदेह म अम और मोन

सप्तम भाषा उद्देशक

प्रनोछाक

८६ क राजगृ

■ भाषा का वीरगलिक रूप

८० भाषा रूपी है

८१ भाषा अचित है

८२ भाषा अजीवरूप है

८३ भाषा जीव के तानी है

८४ बोलने समय भाषा है

८५ भाषा का भजन

८६ चार प्रकार की भाषा

मन

- ६७ मन पुद्गलरूप है
 ६८ मनन के समय मन है
 ६९ मन का भेदन
 १००- चार प्रकार का मन

काया

- १०१ काया का अत्मा ने कथञ्चित् भिन्नाभिन्न संवद
 १०२ क- काया कथञ्चित् रूपी-अरूपी
 ख- काया कथञ्चित् सचित्त-अचित्त
 ग- काया कथञ्चित् जीवरूप-अजीवरूप
 घ- काया जीव और अजीव दोनों के होती है
 १०३ काया और जीव के संवद से पूर्व या पश्चात् भी काय
 १०४ काय का भेदन
 नात प्रकार की काया

मरण

- १०५ पांच प्रकार का मरण
 १०६ पांच प्रकार का आवीचिक मरण
 १०७ क- चार प्रकार का द्रव्य आवीचिक मरण
 ख- चार प्रकार का क्षेत्र आवीचिक मरण
 ग- चार प्रकार का काल आवीचिक मरण
 घ- चार प्रकार का भाव आवीचिक मरण
 १०८-१०९ नैरयिक क्षेत्र आवीचिक मरण कहने का हेतु
 ११० पांच प्रकार का अवधिमरण
 १११ चार प्रकार का द्रव्य अवधिमरण
 ११२ क- नैरयिक द्रव्य अवधिमरण कहने का हेतु
 ख- क्षेत्र अवधिमरण
 ग- काल अवधिमरण

ध- भव अवधिमरण

ड- भाव अवधिमरण

११३ पाच प्रकार का आत्यन्तिक मरण

११४ चार प्रकार का द्रव्य आत्यन्तिक मरण

११५ क- नैरयिक द्रव्य आत्यन्तिक मरण कहने का हेतु

ख- क्षेप आत्यन्तिक मरण

ग- काल आत्यन्तिक मरण

घ- भव आत्यन्तिक मरण

ङ- भाव आत्यन्तिक मरण

११६ बारह प्रकार का बालमरण

११७ दो प्रकार का पश्चित्त मरण

११८ दो प्रकार का पादपोगमन मरण

११९ दो प्रकार का भक्षणप्रत्यास्थान मरण

अष्टम कर्मप्रवृत्ति उद्देशक

१२० आठ कम प्रवृत्तिवाँ हैं

नवम अणुगार वैश्विय उद्देशक

१२१ भावित आत्मा अणुगार का वैश्विय सन्धि ॥ आकाश गमन का सामर्थ्य

१२२ भावित आत्मा अणुगार की वैश्विय सन्धि से रूप विकुर्वता

१२३ अणुगार द्वारा विविधव्यो की विकुर्वता का सामर्थ्य

१२४ अणुगार द्वारा पञ्चगमन के रूप की विकुर्वता का सामर्थ्य

१२५ अणुगार द्वारा जलौटा के समान गति का सामर्थ्य

१२६ अणुगार द्वारा बीजवाक्क पक्षि के समान गति का सामर्थ्य

१२७ अणुगार द्वारा विहालक पक्षी के समान गति का सामर्थ्य

१२८ अणुगार द्वारा जीवजीवक पक्षी के समान गति का सामर्थ्य

१२९ अणुगार द्वारा हंस पक्षी के समान गति का सामर्थ्य

- १३० अणगार द्वारा समुद्रवायस पत्नी के समान गति का सामर्थ्य
 १३१ अणगार द्वारा चक्रहस्त पुरुष के समान गति का सामर्थ्य
 १३२ अणगार द्वारा रत्नहस्त पुरुष के समान गति का सामर्थ्य
 १३३ अणगार द्वारा विस भंजिका गति का सामर्थ्य
 १३४ अणगार द्वारा मृणाल भंजिका गति का सामर्थ्य
 १६५ अणगार द्वारा वनखंड के रूप में गमन करने का सामर्थ्य
 १३६ अणगार द्वारा पुष्करणी रूप में गमन करने का सामर्थ्य
 १३७ अणगार द्वारा पुष्करणी रूप विकुर्वणा सामर्थ्य
 १३८ माया सहित-अणगार की विकुर्वणा-यावत्-आराधना

दशम समुद्घात उद्देशक

- १३९ छह द्वाचस्थिक समुद्घात

चौदहवाँ शतक

प्रथम चरम उद्देशक

- १ भावित आत्मा अनगार जिम लेश्या में मृत्यु को प्राप्त होता है उसी लेश्यावाले देवावास में उत्पन्न होता है
- २ भावित आत्मा अणगार की असुरकुमारावास-यावत्-वैमानिका-वासपर्यन्त प्रश्नाक एक के समान

विग्रहगति

- ३ क- नैरयिक-यावत्-वैमानिक की उत्कृष्ट तीन समय की विग्रहगति
- ख- एकेन्द्रियों की चार समय की विग्रह गति
- ग- तरुण पुरुष की मुष्टि का उदाहरण

आयुबंध

- ४ चौबीस दण्डक में अनन्तरोपपन्नक तथा परंपरोपपन्नक
- ५ अनन्तरोपपन्नक प्रथम नैरयिकों के आयु-बंध का निषेध
- ६ परपरोपपन्नक नैरयिक के आयु-बंध

- ७ चौबीस दण्ड में अनन्तरोगन्ध और परम्परारोगन्ध के आयु का वष
- ८ चौबीस दण्ड में अनन्तरनिर्गन्ध और परम्परा निर्गन्ध जीव
- ९-११ चौबीस दण्ड में अनन्तर निर्गन्ध और परम्परा निर्गन्ध जीवों का आयु-वष
- १२ क चौबीस दण्ड में परम्पर रोगोपपन्नक और अनन्तर रोगोपपन्नक ल- चौबीस दण्ड में अनन्तर रोगोपपन्नक जीवों में आयुवर्ष का निदेश
- ग- चौबीस दण्ड में परम्पर रोगोपपन्नक जीवों में आयुवर्ष
- घ- चौबीस दण्ड में अनन्तर विग्रह गतिशाल्य रोगोपपन्नक जीवों में आयु वष का निदेश

द्वितीय उन्माद उद्देशक

- १३ दो प्रकार का उन्माद
- १४ १५ चौबीस दण्ड में उन्माद परमार्थ विचार
- १६ इन्द्र द्वारा दृष्टि
- १७ दृष्टि का वायव्यम
- १८ अमुरा-यावत वैमानिका द्वारा दृष्टि
- १९ दृष्टि के हेतु तमस्कण्ड
- २० ईशानेन्द्र द्वारा तमस्कण्ड की रचना
- २१ क अमुरा यावत वैमानिका द्वारा तमस्कण्ड की रचना
- ख तमस्कण्ड की रचना के हेतु

तृतीय शरीर उद्देशक

मण्डनानि

- २२ क महाकाय देव का भाविन आत्मा अनन्तर के मध्य में होकर गर्भ

ख-अनगार के मध्य में होकर गमन करने के हेतु

२३ असुर-यावत्-वैमानिक देव का भावित आत्मा अनगार के मध्य में होकर गमन करना
विनय विचार

२४-२६ चौबीस दण्डकों में विनय
मध्यगति

२७ अल्पऋद्धिवाले देव का महर्घिक देव के मध्य में होकर गमन करना

२८ समान ऋद्धिवाले देव का समान ऋद्धिवाले देव में होकर गमन करना

२९-३० शस्त्र प्रहार करने के पूर्व या पश्चात् देवगति
पुद्गल

३१ तैरयिकों का पुद्गलानुभव
चतुर्थ पुद्गल उद्देशक

३२-३३ अतीत, अनागत और वर्तमान में पुद्गल परिणमन

३४ अतीत, अनागत और वर्तमान में पुद्गल स्कंध का परिणमन

३५ अतीत, अनागत और वर्तमान में जीव का परिणमन

३६ पुद्गल कथंचित् शास्वत-अशास्वत

३७ परमाणु कथंचित् चरम-अचरम

३८ दो प्रकार के परिणाम

पंचम अग्नि उद्देशक

३९-४२ चौबीस दण्डक के जीव अग्नि के मध्य में होकर गमन करते हैं

४३-४६ चौबीस दण्डक के जीवों को दश प्रकार के अनुभव
देव वैक्रेय

५०-५१ महर्घिक देव का पर्वतोत्लंघन

षष्ठ आहार उद्देशक

- ५२ चोवीस दण्डक के जीवा का आहार, परिमाण योनि, स्थिति
 ५३ चोवीस दण्डक के जीवों का बीच और अवीचि द्वयो का
 आहार
 ५४ शक्र-द्र के रत्निगृह का वनन
 ५५ ईगाने-उके रत्निगृह का वनन

सप्तम गौतम आश्वासन उद्देशक

- ५६ केवल ज्ञान की प्राप्ति न होने से विन्न गौतम को भ० महावीर
 का आश्वासन
 ५७ भ० महावीर और गौतम के ज्ञान से अनुसर देवों के ज्ञान
 की तुलना
 ५८ ६४ छह प्रकार के मुख्य
 ६५ भक्त प्रत्याश्यानी अनगार की आहार से आसक्ति और सत्य
 ६६ क लव सप्तम देव
 ल धाम्य काटने का उदाहरण
 ६७ अनुत्तरोपपत्तिक देव
 ६८ अनुत्तरोपपत्तिक देवों के गुभकम
 अष्टम अंतर उद्देशक
 ६९ सात नरका का अंतर
 ७० सप्तम नरक से अचोक का अंतर
 ७१ रत्नपद्मा से ज्योतिषिक देवों का वन्तर
 ७२ ज्योतिषिक देवों से अनुत्तर विमान पय त प्रत्येक देवलोक
 का अंतर
 गृह
 ७३ शालवृक्ष की पुत्रा अर्चा महाविदेह म जम और विर्वाण
 ७४ शालयष्टिका—शालवृक्ष के समान

- ७६ अम्बरयष्टिका — शालवृक्ष के समान
परिवाजक
- ८० अंबह परिवाजक
देव सामर्थ्य
- ८१ अव्यावाध देव का वैक्रिय सामर्थ्य
- ८२ इन्द्र की स्फूर्ति
- ८३ जृम्भक देव-वर्णन
- ८४ जृम्भक देवों के दशनाम
- ८५ जृम्भक देवों का निवासस्थान
- ८६ जृम्भक देव की स्थिति
नवम अणगार उद्देशक
- ८७ भावित आत्मा अनगार का ज्ञान
पुद्गल
- ८८ पुद्गल स्कंध का प्रकाश
- ८९ चन्द्र-सूर्य के विमानों के पुद्गल
- ९०-९२ चौबीस दण्डक के जीवों को सुख-दुःख देनेवाले पुद्गल
- ९३ क- चौबीस दण्डक के जीवों को इष्ट-अनिष्ट पुद्गल
ख- इसी प्रकार कांत, प्रिय और मनीज पुद्गल
देव सामर्थ्य
- ९४ मर्हदिक देव का भापा सामर्थ्य
भापा
- ९५ भापा की एकता
ज्योतिषी देव
- ९६ सूर्य का भावार्थ
- ९७ सूर्य की प्रभा
श्रमण और देव
- ९८ श्रमणों के सुख से देवताओं के सुख की तुलना

दशम केवली उद्देशक
६६ १११ केवली क ज्ञान की व्यापकता

पद्महर्षी शतक

प्रथम उद्देशक

- १ क भगवती भगवा काष्ठक चै प आत्राविक उपाधिक हात्ताहता
कमकारी
- ख गोशालक के समान छद्म निराचर का आगमन
- ग छद्म प्रकार निमित्त भवता गात दशवा नृप
- घ छद्म प्रकार का कलाश
- २ क भ० महावीर का पर्णपत्र
- ख गोशालक का अपने आपको जिन कहना
- ग भ० महावीर ने गीतम की जिज्ञासा पुनि के लिये गोशालक
का जीवन हस्तात मुताया
- ३ क माता पिता क स्वभावाम क पश्चात भ० महावीर की दीक्षा
- ख प्रथम वर्षावाम अभिषेकम स
- ग द्वितीय वर्षावाम रात्रगृह मे
- घ भ० महावीर का विजय साध्यापति के घर पर प्रथम मासो
पवाम का पारणा
- ङ पाच प्रकार की दिव्य वर्षा
- च गोशालक का विजय साध्यापति के घर आगमन
- छ आनन्द साध्यापति के घर भ० महावीर के द्वितीय मासोपवाम
का पारणा
- ज मुनेन्द्र साध्यापति के घर भ० महावीर के तृतीय मासोपवाम
का पारणा
- झ बहुजन साध्यापति के घर भ० महावीर के चतुर्थ मासोपवाम का
पारणा

- क- भ० महावीर का गोशालक को शिष्यरूप में स्वीकार करना
 ख- भ० महावीर और गोशालक का प्रणीत भूमि में छह वर्ष तक विचरण
- क- भ० महावीर और गोशालक का सिद्धार्थ ग्रामसे कूर्मग्राम की ओर विहार
- ख- मार्ग में तिल के पीधे को लक्ष्य करके गोशालक का भ० महावीर से प्रश्न
- ग- भ० महावीर के कथन को अस्वीकार करके गोशालक ने तिल के पीधे को उखाड़ फेंकना
- घ- दिव्य उदक तृप्ति से तिल के पीधे का पुनः प्रत्यारोपण
- क- कूर्मग्राम के बाहर गोशालक का वैश्यायन वाल तपस्वी से विवाद
- ख- वैश्यायन वाल तपस्वी द्वारा गोशालक पर तेजोलेश्या का प्रक्षेपण
- ग- भ० महावीर द्वारा शीतलेश्या से गोशालक का रक्षण
- घ- भ० महावीर का गोशालक को तेजोलेश्या की साधना का कथन
- क- भ० महावीर का गोशालक के साथ सिद्धार्थ ग्राम की ओर विहार
- ख- भ० महावीर से अलग होकर गोशालक द्वारा तिल के पीधे का निरीक्षण, परीक्षण और परिवर्तवाद के सिद्धान्त का निरूपण
- ग- गोशालक का भगवान ने पुनर्मिलन और भगवान् से अपने पूर्ववृत्त का परिश्रवण
- गोशालक को तेजोलेश्या की प्राप्ति
- क- छह दिशाचरों द्वारा गोशालक का शिष्यत्व स्वीकार
- ख- शिष्य परिवार के साथ गोशालक का स्वतंत्र विचरण

ग गोशास्त्र के सम्बन्ध में भ० महावीर का स्वीकरण

१० क- गोशास्त्र और ज्ञानन्द का मिलन

ख- भगवान् को तेजोनेश्वर से सम्बन्ध करने का गोशास्त्र का दृष्टि निरूपण

ग दण्डिक का दृष्टान्त

११ गोशास्त्र के सामर्थ्य के सम्बन्ध में ज्ञानन्द की निशाना

१२ भ० महावीर का गौतम को गोशास्त्र में विवाद करने का निषेधादेश

१३ क भगवान् के समीप गोशास्त्र का स्वमत दर्ज

ख- श्रीरथोत्तर महाकथ का प्रमाण

ग ज्ञान सिद्ध भवान्परित स्तन मनुष्य भव

घ- ज्ञान शरीरान्तर प्रवेश

१४ भ० महावीर का गोशास्त्र से आत्मगोपन का निषेध

१५ भगवान् के प्रति गोशास्त्र के आकाश वचन

१६ क सर्वानुभूति अनगार का गोशास्त्र को सत्य स्वरूप

ख गोशास्त्र द्वारा सर्वानुभूति अनगार पर तेजोनेश्वर का प्रहार

१७ लुप्तकथ अनगार पर भी तेजोनेश्वर का प्रहार

१८ गोशास्त्र द्वारा भ० महावीर पर तेजोनेश्वर का प्रणेपण

१९ भ० महावीर का धर्मका का आदेश

२० गोशास्त्र और स्वर्णों के प्रश्नोत्तर

२१ निरुद्ध गोशास्त्र का बोध

२२ गोशास्त्र का दृष्टान्त का यद्वा जाना

२३ तेजोनेश्वर का सामर्थ्य

२४ चार प्रकार के पानक

२५ चार प्रकार के अधानक

२६ दधानपानी

२७ स्वधापानी

- २८ फलियों का पाणी
- २९ शुद्धपाणी'पूर्णभद्र और माणिभद्र देव की साधना
- ३०-३१ गोशालक और अयंपुलक आजीविकोपासक का मिलन
- ३२ मृत्यु महोत्सव करने के लिये गोशालक का स्थविरों को आदेश
- ३३ गोशालक को सम्यक्त्व की प्राप्ति
- ३४ अन्तिम संस्कार के सम्बन्ध में गोशालक का नया आदेश
- ३५ क- मंडिक ग्राम. साणकोष्ठक चैत्य. मालुकावन
ख- भ० महावीर को पित्तज्वर और रक्तातिसार की वेदना
ग- सिंह अनगार की आशंका
घ- सिंह अनगार को रेवती के घर से बिजोरा पाक लाने के लिये
भ० महावीर की आज्ञा
- ३६ सर्वानुभूति अनगार की सहस्रार कल्प में उत्पत्ति, महाविदेह में जन्म और मुक्ति
- ३७ सुनक्षत्र अनगार की अच्युत देवलोक में उत्पत्ति, महाविदेह में जन्म और मुक्ति
- ३८ गोशालक की अच्युत देवलोक में उत्पत्ति, गोशालक देव की स्थिति
- ३९- क- जम्बूद्वीप, भरत, विंध्याचल पर्वत, पुड्गदेश, शतद्वार नगर, संभूति राजा, भद्रा भार्या की कुक्षिसे गोशालक की आत्मा का जन्म
ख- महापद्म, देवसेन और विमलवाहन ये, तीन राजकुमार
- ४० महापद्म और देवसेन नाम देने का हेतु
- ४१ विमल वाहन नाम देने का हेतु
- ४२ विमल वाहन का श्रमणनिग्रंथों के साथ अनार्य व्यवहार
- ४३-४४ विमल वाहन के रथ से सुमंगल अनगार का अधः पतन
- ४५ सुमंगल अनगार के तपतेज से विमल वाहन का भष्म होना
- ४६ सुमंगल अनगार की सर्वार्थसिद्ध में उत्पत्ति तदनन्तर

महाविन्दु म जन्म और मृत्ति

४७ क विमल मान्न वा भवधमन

ख अमृताय भरत शिखाचन पवन नेत्रेल प्राप्त मे वाहून कदा के रूप म जन्म मरण क पन्चात अमिनुसार दब होना पुन भवधमन

४८ ४९ महाविन्दु म जन्म और निर्वाण

सोलहवाँ शतक

प्रथम अधिकरण उद्देशक

१ क बायुशाय की उत्पत्ति और मरण

ख बायुशाय क जीव का गरीर सहित भवा नर

२ क इगान कारिका (मगड़ी) म अग्निकाय की जघन उद्देश्य स्थिति

ख इगान कारिका म बायुशायिक जीवो की उत्पत्ति शिखा विचार

३ क नप्यमोहे का उच्चा नीचा करने म मगनेवाली विद्या

ख न ह मट्टी मगाना घण हयोडा एरण अगार आदि जिन जीवा के गरीरो म बने है उन जीवा को मगनेवाली विद्याए

४ क नप्यमान का एरण पर रचने स सवनवाली विद्याए

ख मोह मगाना घन हवा । एरण एरणवाट्ट होशी और अधिकरण गाना आदि जिन जीवा क गरीरो स बने है उन जीवा को मगनेवाली विद्याए

५ क अधिकरण हिमा

जीव अधिकरणी (हिमा का हेतु) और अधिकरण

ख अधिकरणी और अधिकरण कहने का हेतु

६ चौबीस दन्त के जीव अधिकरणी और अधिकरण

७ क अदिविती की अपेक्षा जीव साधिकरणी

- ख- चौबीस दण्डक के जीव साधिकरणी
- ८ क- अविरति की अपेक्षा जीव आत्माधिकरणी पराधिकरणी और तदुभयाधिकरणी
- ख- चौबीस दण्डक के जीव आत्म पर और तदुभयाधिकरणी है
- ९ क- अविरती की अपेक्षा जीवों का आत्म पर और तदुभय प्रयोग से अधिकरण
- ख- चौबीस दण्डक के जीवों का अविरती की अपेक्षा आत्म पर और तदुभयप्रयोग से अधिकरण
- १० शरीर
- पाच प्रकार का शरीर
- ११ इन्द्रियां, पाच इन्द्रिया योग
- १२ तीन प्रकार के योग
- १३ औदारिक शरीर का वधक अधिकरण और अधिकरणी
- १४ क- औदारिक शरीर के वधक दण्डक अधिकरणी और अधिकरण
- ख- वैक्रिय शरीर के वधक, दण्डक, अधिकरणी और अधिकरण
- १५ क- आहारक शरीर के वधक अधिकरणी और अधिकरण प्रमाद
- ग- तैजस शरीर के वधक-प्रदोत्तराक १३ के समान
- ग- कामण शरीर के वधक-प्रदोत्तराक १३ के समान
- १६ पञ्चेन्द्रिय के वधक प्रदोत्तराक १३ के समान
- १७ क- तीन योग के वधक प्रदोत्तराक १३ के समान
- ख- चौबीस दण्डक में तीन योग के वधक
- ग- उन्नीस दण्डक में चवनयोग
- द्वितीय जरा उद्देशक
- १८-१९ क- जीवों को जरा और शोक
- ख- चौबीस दण्डक में जरा और शोक

त- असत्री जीवों में शोक का अभाव, शोक न होने का कारण

२० शकेन्द्र

भ० महावीर के समीप शकेन्द्र का आगमन

२१ २२ पाच प्रकार के अवग्रह

२३ शकेन्द्र मत्स्यवादी

२४ शकेन्द्र सत्य आदि चार भाषा का भाषक है

२५ शकेन्द्र सावय एवं निरवयु भाषी है

२६ शक्रेन्द्र अवसिद्धिक आदि

२७ क चैतन्य कृत कर्म चैतन्य कृत होने के कारण

ख- चौबीस दण्डक में चैतन्यकृत कर्म

तृतीय कर्म उद्देशक

२८ क आठ कर्म प्रकृतियां

ख चौबीस दण्डक में आठ कर्म प्रकृतियां

२९ ज्ञानावरण का वेदक, आठ कर्म प्रकृतियों का वेदक

३० क भ० महावीर का राजगृह के गुप्तपाल चैतन्य से बिहार

ख उल्लुङ्गीर नगर के एक उम्भूक चैतन्य में पधारे

त्रिपा त्रिषार

३१ कापोरमग में स्थित मुनि के अक्ष काटने वाले बँस को और मुनि को लगनेवाली क्रियाएँ

चतुर्थ जावतिय उद्देशक

३२ ३६ नैमित्तिक व नि यभोत्ता श्रमण की निजरा अधिक

३७ क अग्नि निजरा होने का हेतु

■ वृद्ध वडियार का उदाहरण

ग तरण वडियार का उदाहरण

घ धाम क पूने का उदाहरण

ङ तप्त तव पर पानी क बिन्दु का उदाहरण

पंचम गंगदत्त उद्देशक

- ३८ क- उल्लुक तीर नगर-गुक जम्बूक चैत्य में भ० महावीर पवारे
शक्रेन्द्र का आगमन
ख- बाह्यपुद्गल ग्रहण किये बिना देव का आगमन असम्भव
ग- १ गमन २ भाषण ३ उत्तरदान ४ पलक भ्रमकना ५ शरीर
के अवयवों का संकोच-विकास ६ स्थान शय्या निषद्याभोग
७ विक्रिया ८ परिचर्या का न होना
- ३९ क- शक्र का उत्सुकतापूर्वक नमन
ख- महाशुक्रकल्प में सम्यग्दृष्टि गंगदत्तदेव की उत्पत्ति और
उसका मिथ्यादृष्टि देव के साथ वाद
ग- वाद का विषय-परिणामप्राप्त पुद्गल परिणत या अपरिणत
घ- गंगदत्तदेव का भ० महावीर के समीप आगमन
- ४० गंगदत्त देव का भ० महावीर से प्रश्न
- ४१ क- गंगदत्त देव की जिज्ञासा में भवसिद्धि हूँ या अभवसिद्धि क
ख- भ० महावीर के सम्मुख गंगदत्त देव का नाट्यप्रदर्शन
ग- गंगदत्त देव का स्वस्थान गमन
- ४२ गंगदत्त देव की दिव्य ऋद्धि के सम्बन्ध में कूटागार शाला
का दृष्टान्त
- ४३ दिव्य ऋद्धि प्राप्त होने का कारण
- ४४ क- जम्बूद्वीप, भरत, हस्तिनापुर, सहस्रात्रवन
ख- गंगदत्त गृहपति
ग- भ० मुनिसुवत का पदार्पण
घ- गंगदत्त का दर्शनार्थ गमन
- ४५ गंगदत्त की प्रतिबोध
- ४६ गंगदत्त की दीक्षा और अन्तिम आराधना
- ४७ गंगदत्त देव की स्थिति
- ४८ गंगदत्त देव का ज्यवन महाविदेह में जन्म और निर्वाण

षष्ठ स्वप्न उद्देशक

- ४६ पाच प्रकार का स्वप्न
 ५० स्वप्न देखने का समय
 ५१ जीव मुप्त जागृत और मुप्त जागृत
 ५२ ५३ चौबीस दण्डक के जीव मुप्त जागृत और मुप्त जागृत
 ५४ सृष्ट्यादि का मर्यामत्य स्वप्न
 ५५ जीव-मृत्यु मसृष्ट्य और मरुतामरुत
 ५६ ब्रह्मात्म्य प्रकृत के स्वप्न
 ५७ तीस प्रकार के महाम्बप्न
 ५८ स्वप्न और महाम्बप्न की संयुक्त सख्या
 ५९ तीर्थंकर की माता के स्वप्न
 ६० धनवर्ती की माता के स्वप्न
 ६१ वासुदेवकी माता के स्वप्न
 ६२ बलदेव की माता के स्वप्न
 ६३ मद्रस्तिक की माता के स्वप्न
 ६४ ६५ भ० महावीर की छयम्य अवस्था के स्वप्न और उनका कल
 ६६ ८० मुक्त होने वालों के स्वप्न
 ८१ कोट्यु-यावत केनरीपु के पुद्गल का वायु के साथ वहन
 सप्तम उपयोग उद्देशक
 ८२ दो प्रकार के उपयोग
 अष्टम लोक उद्देशक
 ८३ लोक की महावना-यावन परिधि
 ८४ ८७ लोक के पूर्वान् आदि जीव नहीं किन्तु जीवदेग जीव
 प्रणेन अजीव अजीवदेग और अजीवप्रदेग हैं
 ८८ रत्नप्रभा के पूर्वान् आदि से-यावन् ईषाप्रभाभारा के पूर्वान्
 आदि यमन्त
 ८९ पुद्गल

एक समय में परमाणु की गति

६० क्रिया विचार

वर्षा की जानकारी के लिए हाथ पसारनेवाले को लगने वाली क्रियाएं

६१ क- देव का अलोक में हाथ पसारना सम्भव नहीं

ख- हाथ न पसारसकने का हेतु

नवम बलिन्द्र उद्देशक

६२ क- बलिन्द्र (वैरोचनेन्द्र) की सुधर्मा सभा

ख- बलिचंचा राजधानी का विष्कम्भ

ग- बलिन्द्र की स्थिति

दशम अवधिज्ञान उद्देशक

६३ दो प्रकार का अवधिज्ञान

एकादशम द्वीपकुमार उद्देशक

६४ द्वीपकुमारों का समान आहार, समान उच्छ्वास-निश्वास

६५ द्वीपकुमारों के चार लेश्या

६६ चार लेश्यावाले द्वीपकुमारों का अल्प-बहुत्व

६७ चार लेश्यावाले द्वीपकुमारों में अल्प-अधिक-महर्धिक की अल्प-बहुत्व

द्वादशम उदधिकुमार उद्देशक

६८ उदधि कुमारों के सम्बन्ध में—एकादश उद्देशक के समान

त्रयोदशम दिक्कुमार उद्देशक

६९ दिक्कुमारों के संबन्ध में—एकादश उद्देशक के समान

सतरहवाँ शतक

प्रथम कुंजर उद्देशक

१ क- राजगृह, भ० महावीर और गौतम

ख- उदायी हस्ती का पूर्वभव

- २ उन्नीसी इन्ना का परमप
- ३ उन्नीसी इन्ना का नृपति भव महाविद्वत् में वाम और निराम
- ३ भूतानन्द इन्नी का पूर्वभव और परभव उन्नीस व समान किया किया
- ५ क ताद वृत्त्यर चडकर तादकर गिराने वाले को लगने वाला किया
- म तादहन और तादहन जिन जीवा के दरीर में बना है उन जीवा को लगने वाला किया
- ६ गिरान हुए ताद पन में यदि बांध बंध रहे—१ क गिराने वाला पुण्य का ताद कन के जीवों को ३ ताद पन के जीवा का ४ ताद पन के उपकारों जीवा को लगने वाली किया
- ७ क वृत्त-सूत्र नितान्त वान को तथा गिरानवान्त का लगने वाला किया
- म कन मून तथा बांध आदि के उत्तर जिन जीवा से बन हुए हैं उन जीवा को लगने वाली किया
- ८ गिरान हुए वृत्त में यदि जीवबन्ध है तो १ कन गिराने वाला पुण्य का २ मून तथा बांध आदि के जीवा को ३ मून आदि के उपकारों जीवा को लगने वाली किया
- ९ कन का कन्द द्विजान्त वान पुण्य का प्रस्ताव ६ के समान
- १० गिरान हुए कन्द में यदि जीवबन्ध है तो प्रस्ताव ६ के समान
- ११ १० गिरान द्विज जीव वान
- १४ कन कन्द का मे औदारिक दरीर का बंध एक जीव को लगने वाली किया
- १५ क कन कन्द का मे औदारिक दरीर के बंध वृत्त से जीवों को लगने वाली किया
- म गण १ १२ के बंधों को लगने वाली किया
- म पाचा द्विजान्त के बंधों को लगने वाली किया

घ- एक वचन और बहु वचन की अपेक्षा से छद्मवीस विकल्प

१६ छह प्रकार के भाव

१७ दो प्रकार के औदयिक भाव

द्वितीय संयत उद्देशक

१८ क- संयत-विरत धार्मिक, असंयत-अविरत अधार्मिक और संयता-संयत-धर्माधार्मिक

ख- धर्म में स्थित होने का हेतु

१९ जीव धर्म, अधर्म और धर्माधर्म में स्थित हैं
अन्य तीर्थिक

२०-२१ चौबीस दण्डक के जीव धर्म, अधर्म और धर्माधर्म में स्थित हैं

२२ अन्य तीर्थिकों की मान्यता—एक जीव के वध की अविरति
जिसके है वह बालपंडित है

२३ जीव बाल, पंडित और बालपंडित है

२४-२५ चौबीस दण्डक के जीव बाल, पंडित और बाल पंडित हैं
अन्य तीर्थिक

२६ अन्य तीर्थिकों की मान्यता—जीव और जीवात्मा कथंचित्
भिन्न है

भ० महावीर की मान्यता—जीव और जीवात्मा भिन्न हैं
वैक्रेय शक्ति

२७ क- देवरूपी रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है,

ख- अरूपी रूप की विकुर्वणा नहीं कर सकता

२८ अरूपी रूप की विकुर्वणा न कर सकने का हेतु

तृतीय शैलेपी उद्देशक

२९ शैलेपी अनगार का पर प्रयोग के बिना कंपन नहीं

३० पांच प्रकार की एजना-कम्पन

३१-३५ एजना और एजना के हेतु

३६-४३ तीन प्रकार की चलना चलना क हेतु

वर्णन बोध

४४ संवत्-यावन-भारतानिब बहिषाभनिया का अत्रिम वन भाग

अनुयं क्रिया उद्देशक

४५ क- रात्रि

ल प्राणानिगान क्रिया

४६ क सृष्ट क्रिया बीबीम दण्डक म सृष्ट क्रिया

ल व्यापान और मध्यापाउम क्रिया का दिना विचार

४७ ४८ क्षयावाद भरतागन मैयुन और परिग्रह सम्बन्धी क्रिया

४९ बीबीम दण्डक म उत्पन्न क्रियायें

५० क्षेत्र म सृष्ट क्रिया प्राणानिगान-यावन परिग्रह से

५१ इदेन सृष्ट क्रिया प्राणानिगान यावन परिग्रह से
हु ल

५२ क आत्महृत्त हु ल

ल बीबीम दण्डक म आत्महृत्त हु ल

५३ क आत्महृत्त हु ल का वेदन

ल बीबीम दण्डक मे आत्महृत्त हु ल का वेदन

५४ क आत्महृत्त वेदना

५५ क आत्महृत्त वेदना का वेदन

ल बीबीम दण्डक मे आत्महृत्त वेदना का वेदन

पञ्चम सुधर्मा सभा उद्देशक

५६ क ईगानेद्र की सुधर्मा सभा-यावत

ल ईगानेद्र की स्थिति

षष्ठ पृथ्वी कायिक उद्देशक

५७ क पृथ्वीकायिक जीव का उत्पन्न होने से पुन या पश्चात् भारत
ग्रहण करना

ल उत्पन्नमा पृथ्वी का जीव सौचम कल्प की पृथ्वी मे उत्पन्न

जीव—रत्न प्रभा पृथ्वी से ईशानकल्प की पृथ्वी में उत्पन्न
जीव-यावत्-ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी में उत्पन्न जीव

ग- आहार ग्रहण का हेतु

सप्तम पृथ्वी कायिक उद्देशक

५८ सौधर्म कल्प की पृथ्वी से रत्नप्रभा की पृथ्वी में उत्पन्न जीव-
यावत्-तम प्रभाः पृथ्वी में उत्पन्न जीव

अष्टम अप्कायिक उद्देशक

५९ क- अप्कायिक जीवों का उत्पन्न होने के पूर्व या पश्चात् आहार
ग्रहण करना

ख- आहार ग्रहण का हेतु

ग- रत्नप्रभा पृथ्वी में से अप्कायिक जीवका सौधर्मकल्प में अप्का-
यिक रूप में उत्पन्न होना

नवम अप्कायिक उद्देशक

६० सौधर्म कल्प से अप्कायिक जीव का रत्नप्रभा में अप्कायिक
रूप में उत्पन्न होना-यावत्-तमस्तमप्रभा में उत्पन्न होना
दशम वायुकायिक उद्देशक

६१ रत्नप्रभा से वायुकायिक जीवका सौधर्म कल्प में वायुकायिक
रूप में उत्पन्न होना

एकादश वायुकायिक उद्देशक

६२ सौधर्म कल्प से वायुकायिक जीव का रत्नप्रभा में-यावत्-
तमस्तमप्रभा में वायुकायिक जीव का उत्पन्न होना

द्वादश एकेन्द्रिय उद्देशक

६३ सर्वे एकेन्द्रियों का आहार, उच्छ्वास-यावत्-आयु उत्पत्ति
सम्बन्धी वर्णन

६४ एकेन्द्रियों की लेश्या

६५ लेश्यावाले एकेन्द्रियों का अल्प-बहुत्व

- ६६ मेरवावान एकेन्द्रियों की श्रद्धि का अल्प-बहुत्व
त्रयोदश नागकुमार उद्देशक
- ६७ नागकुमारों का आहार-यावत्-श्रद्धि का अल्प-बहुत्व
चतुर्विंश मुवर्णकुमार उद्देशक
- ६८ मुवर्णकुमारों का आहार-यावत्-श्रद्धि का अल्प-बहुत्व
पञ्चदश-विद्युत्कुमार उद्देशक
- ६९ विद्युत्कुमारों का आहार-यावत्-श्रद्धि-अल्प-बहुत्व
षोडश वायुकुमार उद्देशक
- ७० वायुकुमारों का आहार-यावत्-श्रद्धि-अल्प-बहुत्व
सप्तदश अग्निकुमार उद्देशक
- ७१ अग्निकुमारों का आहार-यावत्-श्रद्धि-अल्प-बहुत्व

अठाहरवीं शतक

प्रथम प्रथम उद्देशक

- १ क जीव जीवभाव से अप्रथम है
न जीवीम दण्डक क जीव जीवभाव से अप्रथम है
- २ मिद्ध मिद्धभाव से प्रथम है
- ३ क समस्त जीव जीवभाव से अप्रथम है
न जीवीम दण्डक के समस्त जीव जीवभाव से अप्रथम है
- ४ समस्त मिद्ध मिद्धभाव से अप्रथम है
- ५-१६ १ जीव २ आहारक, ३ अवमिद्धक ४ सञ्जी, ५ लेख्या, ६ दृष्टि,
७ समस्त ८ कषाय ९ ज्ञान, १० योग, ११ उपयोग, १२ वेद
१३ शरीर १४ पर्वान्त
उक्त द्वारा से एक वचन बहु वचन की अपेक्षा चौबीस दण्डको
से प्रथमापथम भाव की विचारणा
- २० ३५ १ जीव २ आहारक ३ अवमिद्धक ४ सञ्जी ५ लेख्या ६ दृष्टि
७ समस्त ८ कषाय ९ ज्ञान १० योग ११ उपयोग १२ वेद

१३ शरीर १४ पर्याप्त

उक्त द्वारों में एक वचन बहु वचन की अपेक्षा चौबीस दण्डकों में चरमाचरम की विचारणा

सूत्रांक द्वितीय विशाखा उद्देशक

१ विशाखा नगरी, बहुपुत्रिक चैत्य, भ० महावीर का पदार्पण, शकेन्द्र का आगमन नाट्य प्रदर्शन

२ क- भ० गौतम को शकेन्द्र की ऋद्धि तथा पूर्वभव की जिज्ञासा
ख- भ० महावीर द्वारा समाधान

३ क- हस्तिनापुर, सहस्रान्नवन, कार्तिक सेठ, एक हजार आठ व्या-
पारियों में प्रमुख

ख- भ० मुनि सुवत का पदार्पण

४ कार्तिक सेठ का धर्मश्रवण और वैराग्य

५-७ एक हजार आठ वर्णिकों के साथ कार्तिक सेठ का प्रव्रज्या ग्रहण
चौदहपूर्व, का अध्ययन, तपश्चर्या, अन्तिम आराधना, शकेन्द्र
रूप में उत्पन्न होना, पश्चात् महाविदेह में जन्म और निर्वाण
तृतीय माकंदीपुत्र उद्देशक

८ क- राजगृह, गुणशील चैत्य, भ० महावीर से माकंदीपुत्र अनंगार
के प्रश्न

ख- कापोत लेश्या वाले पृथ्वीकायिक जीव का मनुष्यभव प्राप्त
करके मुक्त होना

९-१० क- कापोत लेश्यावाले अप्कायिक और वनस्पतिकायिक जीव का
मनुष्यभव प्राप्त करके मुक्त होना

ख- भ० महावीर के प्राप्त समाधान के सम्बन्ध में माकंदीपुत्र
की स्थविरों से वार्ता

ग- भ० महावीर के समीप समाधान के लिये स्थविरों का आगमन

घ- माकंदीपुत्र से स्थविरों का धमा याचन

- ११ भाविन आत्मा अनपार के सर्वलोकव्यापी चरम निर्जरा पुद्गल
- १२ उपपाद्यपुत्रन ह्यस्य का निर्जरा पुद्गलों को जानना
- १३-१५ क पुद्गलों का आहार करना
 म चौबीस दण्डक के जीवा को निर्जरा पुद्गलों का ज्ञान तथा
 निर्जरा पुद्गलता का आहार करना
- १६ २० दो प्रकार का कथ
- २१ चौबीस दण्डक के जीवा का भाववच
- २२-२३ चौबीस दण्डका में जानावरनीय-यावन-अनराज की मूल उत्तर
 प्रहृतिषो का कथ
- २४ अनन्य तथा भविष्य के कर्मों में भिन्नता
 धनुष काम का उदाहरण
- २५ चौबीस दण्डक के अनोत तथा भविष्य के कर्मों में भिन्नता
- २६ चौबीस दण्डक के जीवा द्वारा आहाररूप में पृथ्वी पुद्गलों
 की आहाररूप में परिणति तथा निर्जरा
- २७ अनिमूढम निजरित पुद्गल
 क्षणुर्य प्राणातिपात उद्देशक
- २८ क- राजपुत्र
 स अडाग्न पाप पृथ्वीकाय-यावन वनस्पतिकाय, चर्मास्तिकाय,
 -यावन-मरमाणु पुद्गल होतेही अवस्थाशाल अनपार और
 स्पून-शरीरपारी वेद्विधादि इनमें से कुछ जीव क परिभोग
 में आते हैं और कुछ परिभोग में नहीं आते हैं
- म ऐसा कहन का हनु
- २९ चार प्रकार का कथाय
- ३० कृतयुग्मादि चार राति
- ३१ ३३ चौबीस दण्डक में कृतयुग्मादि चार राति
- ३४ स्त्री दण्डको में कृतयुग्मादि चार राति
- ३५ अन्य और उन्मृष्ट बापुनाले अनेक वद्विजीव

पंचम असुर कुमार उद्देशक

३६ क- एक असुरकुमारावास में दो प्रकार के असुरकुमार

एक दर्शनीय और एक अदर्शनीय

ख- दर्शनीय और अदर्शनीय होने का हेतु

ग- विभूषित और अविभूषित मनुष्य का उद्धारहण

३७ नागकुमार आदि भवनवासी देव व्यन्तरदेव

३८ क- एक नरकावास में दो प्रकार के नैरयिक, एक महाकर्मा और एक अल्पकर्मा

ख- नैरयिकों के अल्पकर्मा और महाकर्मा होने का हेतु

३९ सोलह दण्डकों में अल्पकर्मा और महाकर्मा जीव

४०-४१ चौबीस दण्डक में मृत्यु से कुछ समय पूर्व दो प्रकार की आयु का बंध

४२-४३ देवताओं की इष्ट और अनिष्ट विकुर्वणा

षष्ठ गुड़ वर्णादि उद्देशक

४४ निश्चय और व्यवहार नय सै गुड़ के वर्ण आदि

४५ निश्चय और व्यवहार से भ्रमर के वर्णादि

४६ निश्चय और व्यवहार नयसे सुकपिच्छ के वर्णादि

ख- मंजिष्ठ, हल्दी, शंख, कुष्ठ, मृतकलेवर, निम्ब, सूँट, कपित्थ, इमली, खांड, यज्ञ, नवनीत, लोह, उलूकपत्र, हिम, अग्नि, तेल, आदि का निश्चय और व्यवहारनय से वर्ण, गंध, रस और स्पर्श

४७ निश्चय और व्यवहारनय से राख के वर्णादि

४८ परमाणु के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श

४९-५० द्विप्रदेशिक स्कन्ध-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध के वर्ण आदि सप्तम केवली उद्देशक

५१ क- राजगृह-भ० महावीर और गौतम गणधर

ख अन्वयतीर्थिक

अन्वय तीर्थ की मान्यता

यक्षाविष्ट बेवती की कृपा एवं मित्र भाषा

भ० महावीर की मान्यता

केवली यक्षाविष्ट नहीं हुआ

बेवती की तत्त्व और असत्वाख्या भाषा

५२ उपधि

तीन प्रकार की उपधि

५३ चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की उपधि

५४ क- तीन प्रकार की उपधि

ख चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की उपधि

परिमह

५५ तीन प्रकार का परिमह

५६ चौबीस दण्डक में तीन प्रकार का परिमह

५७ ६० क तीन प्रकार के प्रणिधान

ख चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के प्रणिधान

६१ क तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान

ख चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान

६२-६३ क तीन प्रकार का सुप्रणिधान

ख सोलह दण्डक में तीन प्रकार का सुप्रणिधान

६४ ६५ क राजगुरु गुणशील चैत्य

ख अन्वयतीर्थिक —

महुरु अमणोरामक भ० महावीर का बदलपण, महुरु का

भ० महावीर की बदना के लिये जाना, माग में महुरु ॥ अम-

तीर्थिको का अस्त्रिकाय के मरुच में प्रश्न

ग अ य तीर्थिको में महुरु के प्रणिप्रश्न

६६ महुरु के यवार्थ उत्तर के प्रणि भ० महावीर का साधुवाद

- ६७ मद्रुक की अन्तिम साधना और निर्वाण
देवताओं का वैक्रेय सामर्थ्य
- ६८ विकुर्वितरूपों द्वारा देवता का युद्ध सामर्थ्य
- ६९ वैक्रेय शरीरों का एक जीव के साथ सम्बन्ध
- ७० वैक्रेय शरीरों के अन्तरों का एक जीव के साथ सम्बन्ध
- ७१ शरीरों के मध्य अन्तरों का शस्त्रादि से छेदन संभव नहीं
देवासुर संग्राम
- ७२ देवामुर संग्राम की संभावना
- ७३ देवासुर संग्राम में शस्त्ररूप परिणत पदार्थ
- ७४ असुरों के विकुर्वित शस्त्र
- ७५-७६ देवताओं का गमन सामर्थ्य
- ७७-८० क- देवताओं के पुण्यकर्म का अर्थ
ख- असुरकुमार-यावत्-अनुत्तर देवों के कर्मज्य का भिन्न २ काल
अष्टम अन्नगार क्रिया उद्देशक
- ८१ क- राजगृह, भ० गीतम
- ख- भावित आत्मा अन्नगार की ऐर्यापथिकी क्रिया
- ८२ अन्य तीर्थिकों ने भ० गीतम को एकान्त असंयत-यावत्-एकान्त-
वाल कहा
- ८३ अन्य तीर्थिकों ने एकान्त असंयत तथा वाल कहने का कारण
वताया
- ८४ भ० गीतम ने एकान्त असंयत-यावत्-एकान्त वाल कहने का
कारण वताया
- ८५ अन्य तीर्थिकों को यथार्थ उत्तर देने पर भ० महावीर ने भ०
गीतम को साधुवाद दिया
- ८७ छद्मस्थ का परमाणुज्ञान-दो विकल्प
- ८८ द्विप्रदेशिक स्कन्ध-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध के सम्बन्ध में
प्रदोत्तरांक ८७ के समान दो विकल्प

- ८६ अनन्त प्रदेनिक स्वरूप के सम्बन्ध में चार विवृत्य
- ६० अवधिज्ञानी का परमावगुणान प्रनोत्तराक ७ ८ ६ के समान विवृत्य
- ६१ परमावधिज्ञानी तथा दान का भिन्न भिन्न समय
- ६२ वैकनज्ञानी के ज्ञान तथा दान का भिन्न भिन्न समय
- नवम भव्य द्रव्य उद्देशक
- ६३ ६४ चौबीस दण्डक व भव्य द्रव्य जीव
- ६५ ६६ चौबीस दण्डक के भव्य द्रव्य जीवों की स्थिति
- दशम सोमिल उद्देशक
- वैश्वी और पुद्गल
- भावित आत्मा अनन्तर की वैश्वी सन्धि का सामर्थ्य
- ६८ वायु और पुद्गल
- परमावगुणान अनन्त प्रदेनिक स्वरूप से वायु का स्पर्श
- ६९ वस्ति (मन्त्रक) और वायुकाय
- १०० १०१ रत्नप्रभा वायव्य ईषत्प्राग्भागी पृथ्वी के नीचे अयोध्य सम्बद्ध द्रव्य
- १०२ व वाणिज्यप्रदाय दूतिपन्नास जैव चार वेद आदि ब्राह्मण गाम्भी में निपुण सामिल ब्राह्मण उमर पाच सौ शिष्य भ० महावीर का पदार्पण
- ल निव्य परिवार सहित सोमिल का भ० महावीर के समीप आगमन
- १०४ ११० यात्रा यापनाय अन्याबाध और प्रामुख विहार के सम्बन्ध में भगवान् से प्रश्न
- १११ ११५ क सरसव मास कलत्य और एव अनेक के सम्बन्ध में भगवान् का स्पष्टीकरण
- क सोमिल को बोध की प्राप्ति
- ११६ सोमिल की अन्तिम माधना और निर्वाण

उन्नीसवाँ शतक

प्रथम लेश्या उद्देशक

१ छ प्रकार की लेश्या

द्वितीय गर्भ उद्देशक

२ कृष्णलेश्यावाला कृष्णलेश्यावाले गर्भ को उत्पन्न करता है
तृतीय पृथ्वी उद्देशक

३ क- राजगृह

ख- पृथ्वीकाय के जीवों के प्रत्येक शरीर का बंध

४-१८ पृथ्वीकायिक जीवों की निम्नांकित विषयों से विचारणा—
लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, उपयोग, आहार, स्पर्श, प्राणातिपात-
यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य, उत्पाद, स्थिति समुद्धात, उद्वर्तना

१९ क- अप्कायिक जीवों की पृथ्वीकायिकों के समान विचारणा

ख- स्थिति में भिन्नता

२० क- अग्निकायिकों की पृथ्वीकायिकों के समान विचारणा

ख- उपपात, स्थिति और उद्वर्तना में भिन्नता

ग- वायुकायिकों में समुद्धात की विशेषता, शेष अग्निकाय
के समान२१ वनस्पतिकायिकों में शरीर, आहार, स्थिति में भिन्नता,
शेष अग्निकाय के समान

२२ पृथ्वीकायिक आदि की अवगाहना का अल्प-बहुत्व

२३-२७ पृथ्वीकायिक आदि परस्पर सूक्ष्मता

२८-३१ पृथ्वीकायिक आदि की परस्पर स्थूलता

३२ पृथ्वीकाय के शरीर का प्रमाण

३३ क- पृथ्वीकाय के शरीर की सूक्ष्म अवगाहना

ख- चक्रवर्ती की द्रामी द्वारा पृथ्वीपिंड पीसने का उदाहरण

३४ पृथ्वीकाय की वेदना, वृद्धपर तरुण पुरुष के प्रहार का दृष्टान्त

३५ अन्नाद्य-यावन-वस्त्रनिर्वाय की वेदना वृष्णीनाय ■ समान
चतुर्थ महाशय उद्देशक

३६ ५४ चौबीस दण्डक में—महा आशय, महाक्रिया, महा वेदना
और महानिजरा का विचार
पञ्चम चरम उद्देशक

५५ ५७ श्रीवास दण्डक में अस्मात् तया उद्भूतात् के हाथ-हाथ
महाकर्म किया
आशय और वेदना का विचार

५८ ५ दो प्रकार की वेदना
ल चौबीस दण्डक में दो प्रकार की वेदना
षष्ठ द्वीप उद्देशक

५९ द्वीप समुद्र के स्थान सस्थान आदि का विचार
सप्तम भवन उद्देशक

६० ६१ अनुरकुमारों के भवनाशयों की श्रवण तथा स्पर्श
भवनाशयों का परिचय

६२ ६३ अक्षरवासों का स्पर्श परिचय

६४ ज्योतिष्वावासों का स्पर्श परिचय

६५ ६७ मोक्षम कर्म के विमानों की मन्वा सब विमानावासों का
स्पर्श परिचय

अष्टम निष्कृति उद्देशक

६८ चौबीस दण्डक में एकेन्द्रिय-यावन पंचेन्द्रिय निर्हृति

चौबीस दण्डक में कर्म निर्हृति

चौबीस दण्डक में शरीर निर्हृति

चौबीस दण्डक में मर्मादय निर्हृति

चौबीस दण्डक में भाषा निर्हृति

चौबीस दण्डक में मन निर्हृति

चौबीस दण्डक में कषाय निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में वर्ण निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में संस्थान निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में संज्ञा निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में लेश्या निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में दृष्टि निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में ज्ञान निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में अज्ञान निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में योग निवृत्ति
 चौबीस दण्डक में उपयोग निवृत्ति
 नवम करण उद्देशक

६६ पांच प्रकार का करण

७० चौबीस दण्डक में पांच प्रकार का करण

७१ चौबीस दण्डक में शरीर करण

७२ चौबीस दण्डक में इन्द्रिय करण

चौबीस दण्डक में भाषा करण

चौबीस दण्डक में कषाय करण

चौबीस दण्डक में समुद्धात करण

चौबीस दण्डक में संज्ञा करण

चौबीस दण्डक में लेश्या करण

चौबीस दण्डक में दृष्टि करण

चौबीस दण्डक में वेद करण

७३ चौबीस दण्डक में एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रिय प्राणातिपात करण

७४ पांच प्रकार का पुद्गल करण

७५ पांच प्रकार का वर्ण करण

पाच प्रकार का स्पश करण

७६ पाच प्रकार का संस्थान करण

दशम व्यतर उद्देशक

७७ व्यतरों का आहार उच्छ्वाम-यावत महर्षिक अर्थाधिक व्यस्य
बहुत्थ

बीसवाँ शतक

प्रथम वेद्विद्रिय उद्देशक

१ वेद्विद्रियादि जीवों के शरीरबन्ध का क्रम

२ वेद्विद्रियादि जीवों के दृष्टि ज्ञान योग, आहार में भिन्नता—
शेष अग्निकायवत

३ वेद्विद्रियादि जीवों की स्थिति में भिन्नता

४ सर्वावसिद्ध पयस्य पचेद्रिय जीवों के शरीर बन्ध लेख्या दृष्टि
ज्ञान अज्ञान योग में भिन्नता शेष वेद्विद्रिय के समान

५ पचेद्रियों में सज्ञा प्रज्ञा मन और वचन

६ पचेद्रियों में दृष्ट-अनिष्ट रूप गन्ध, रस स्पर्श का अनुभव

७ पचेद्रिय में प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशक्त स्थिति
समुद्घात और उद्घातना शेष वेद्विद्रियों के समान

द्वितीय आकाश उद्देशक

८ दो प्रकार का आकाश

९ क आकाश जीव जीवदेशरूप है

■ धर्मास्तिकाय यावत् पुद्गलास्तिकाय कितना बड़ा है

१० क अधालोक की महानता

ग्व ईश्वरान्तरा पृथ्वी की महानता

११ १५ पचास्तिकाय के पर्यायवाची

तृतीय प्राणवध उद्देशक

१६ क अठारह पाप

ख- अठारह पाप विरति

ग- चार बुद्धि

घ- चार अवग्रहादि

ङ- पांच उत्थानादि

च- चौबीस नैरयिकत्व आदि

छ- आठ कर्म

ज- छह लेश्या

झ- तीन दृष्टि

झ- चार दशन

ट- पांच ज्ञान

ठ- तीन अज्ञान

ड- चार संज्ञा

ढ- पांच शरीर

ण- तीन योग

त- दो उपयोग

इन सबका आत्मा के साथ परिणमन है

१७ गर्भ में उत्पन्न जीव के वर्णादि

चतुर्थ उपचय उद्देशक

१८ पांच प्रकार का इन्द्रियोपचय

पंचम परमाणु उद्देशक

१९ परमाणु के सोलह विकल्प

२० वर्णादि की अपेक्षा द्विप्रदेशिक स्कंध के बियालीस विकल्प

२१ वर्णादि की अपेक्षा त्रिप्रदेशिक स्कंध के एक सो बियालीस विकल्प

२२ वर्णादि की अपेक्षा चतुष्प्रदेशिक स्कंध के दो सो बार्दिस विकल्प

२३ वर्णादि की अपेक्षा पंच प्रदेशिक स्कंध के तीन सो चौबीस विकल्प

२४ वर्णादि की अपेक्षा षष्ठ प्रदेशिक स्कंध के चारसो चौदह विकल्प

- २५ वर्णादि की अपेक्षा सप्त प्रदेशिक स्कन्ध के चारसौ चौहत्तर विकल्प
- २६ वर्णादि की अपेक्षा अष्ट प्रदेशिक स्कन्ध के पाचसौ चार विकल्प
- २७ वर्णादि की अपेक्षा नव प्रदेशिक स्कन्ध के पाचसौ चौहत्तर विकल्प
- २८ वर्णादि की अपेक्षा दश प्रदेशिक स्कन्ध के पांच सौ सोमर विकल्प
- २९ क मस्यान प्रदेशिक स्कन्ध असस्यान प्रदेशिक स्कन्ध अनठ प्रदेशिक स्कन्ध के सोमर विकल्प
 ख पाच स्पण के एक सौ अठारह विकल्प
 ग छत्र स्पण न तीन सौ चौरासी विकल्प
 घ सात स्पण के पाच सौ बारह विकल्प
 ङ आठ स्पण के एक सहस्र दो सौ द्वादशविकल्प
- ३० ३४ चार प्रकार के परमाणु
 पट्ट अक्षर उद्देशक
- ३५ ४० रत्नप्रभा यावन ईषत्प्रभाभारा के अक्षरासौ से वृष्णीयादिक जीवों की उत्पत्ति और आहार का पौर्वापर्य
- ४१ ४२ रत्नप्रभा यावन ईषत्प्रभाभारा के अक्षरासौ से अक्षरादिक जीवों की उत्पत्ति और आहार का पौर्वापर्य
- ४३ रत्नप्रभा-यावन ईषत्प्रभाभारा के अक्षरासौ से वायुनादिक जीवों की उत्पत्ति और आहार का पौर्वापर्य
 सप्तम अध उद्देशक
- ४४ तीन प्रकार का वध
- ४५ घोषीय ऋतु में तीन प्रकार का वध
- ४६ ज्ञानावरणीय आदि आठ वनों का तीन प्रकार का वध
- ४७ घोषीय ऋतु में तीन प्रकार का वध

- ४८ चौबीस दण्डक में ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों का तीन प्रकार का बंध
- ४९ चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के स्त्रीवेद का बंध
- ५० असुर-यावत्-वैमानिक पर्यन्त तीनों वेदों का तीन प्रकार का बंध
- ५१ क- चौबीस दण्डक में दर्शन और चारित्र्य मोहनीय का तीन प्रकार का बंध
- ख- चौबीस दण्डक में पाँच शरीरों का तीन प्रकार का बंध
- ग- चौबीस दण्डक में चार संज्ञाओं का तीन प्रकार का बंध
- घ- चौबीस दण्डक में छह लेश्याओं का तीन प्रकार का बंध
- ङ- चौबीस दण्डक में तीन दृष्टियों का तीन प्रकार का बंध
- च- चौबीस दण्डक में पाँच ज्ञान, तीन अज्ञान का तीन प्रकार का बंध
- ५२ पाँच ज्ञान और तीन अज्ञान के विषयों का तीन प्रकार का बंध
- अष्टम भूमि उद्देशक
- ५३ पंद्रह कर्मभूमि
- ५४ तीस अकर्मभूमि
- ५५ तीस अकर्मभूमियों में उत्सर्पिणी- अवसर्पिणी का निषेध
- ५६ क- भरत एरवत में उत्सर्पिणी काल का अस्तित्व
- ख- महाविदेह में अवस्थित काल
- ५७ महाविदेह में चार महाव्रत का धर्मोपदेश तीर्थकर
- ५८ जम्बूद्वीप के भरत में इस अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थकर
- ५९ चौबीस तीर्थकरों के अन्तर श्रुत
- ६० जिनांतरो में कालिक श्रुत का विच्छेद और अविच्छेद

- ६१-६४ पूर्वगत ध्रुव की स्थिति
तीर्थ
- ६५ म० महावीर के तीर्थ की स्थिति
- ६६ भावी अन्तिम तीर्थंकर के तीर्थ की स्थिति
- ६७ तीर्थ और तीर्थंकर
प्रवचन
- ६८ प्रवचन और प्रवचनी
धर्म आराधना
- ६९ उग्र आदि कुल के लक्षियों की धर्म आराधना और निर्वाण
- ७० चार प्रकार के देवगोक
नवम चारण उद्देशक
- ७१ दो प्रकार के चारणमुनि
- ७२ विद्या चारण कहने का हेतु
- ७३ विद्या चारण की शीघ्रगति
- ७४ विद्या चारण की तिरस्दी गति
- ७५ क विद्याचरण की उच्चगति
ल गमनागमन के प्रतिक्रमण से आराधना
- ७६ जथा चारण कहने का हेतु
- ७७ जथा चारण की शीघ्र गति
- ७८ जथा चारण की तिरस्दी गति
- ७९ क जथा चारण की उच्च गति
ल गमनागमन के प्रतिक्रमण से आराधना
- ८० सोपक्रम और निरूपक्रम आयु
- ८१ चौबीस दण्डक के जीवों का सोपक्रम और निरूपक्रम आयु
- ८२ चौबीस दण्डक के जीवों का पूर्व अव से आयु का आत्मोपक्रम-
परोपक्रम और निरूपक्रम
- ८३ आत्मोपक्रम और परोपक्रम यानी निरूपक्रम से चौबीस दण्डक

के जीवों का उद्वर्त्तन और च्यवन

८४ चौबीस दण्डक के जीवों की आत्मशक्ति से उत्पत्ति

८५ चौबीस दण्डक के जीवों का आत्मशक्ति से उद्वर्त्तन और च्यवन

८६ चौबीस दण्डक के जीवों की स्व स्व कर्मों से उत्पत्ति

८७ चौबीस दण्डक के जीवों का आत्मप्रयोग से उत्पन्न होना

८८-८९ क- चौबीस दण्डक के जीव संख्यात और असंख्यात

ख- संख्यात होने के हेतु

९० सिद्ध-सिद्ध क्षेत्र में प्रवेश होने की अपेक्षा एक या संख्यात

९१ चौबीस दण्डक में कति संचित आदि की अपेक्षा अल्प-बहुत्व

९२ कति संचित आदि की अपेक्षा सिद्धों की अल्प-बहुत्व

९३-९४ चौबीस दण्डक के जीव और सिद्ध पट्क समर्जितादि

९५-९६ पट्क समर्जित आदि की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों की और सिद्धों की अल्प-बहुत्व

९७-९८ द्वादश समर्जित की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों की और सिद्धों की अल्प-बहुत्व

९९-१०० चौबीस समर्जित की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों की तथा सिद्धों की अल्प-बहुत्व

इक्कीसवाँ शतक

प्रथम वर्ग

प्रथम शाली उद्देशक

१ क- राजगृह, भ० महावीर, भ० गीतम

ख- शाल्यादि वर्ग में उत्पन्न होने वाले जीवों की गति का निर्णय

२ शाल्यादि वर्ग में उत्पन्न होने वाले जीवों का परिमाण

३ शाल्यादि वर्ग के जीवों की अवगाहना

- ४ शास्त्रादि वर्ग के जीवा के वय, उदय, उदीरणा
- ५ शास्त्रादि वर्ग के जीवा की लेश्या
- ६ शास्त्रादि वर्ग के मूल जीव की स्थिति
- ७ शास्त्रादि वर्ग के जीव पृथ्वी काय में उत्पन्न होते रहने का अवधि उत्कृष्ट काल
- ८ प्राणीमात्र का शास्त्रादि वर्ग में उत्पन्न होना

द्वितीय कद उद्देशक

तृतीय स्तब्ध उद्देशक

चतुर्थ स्तब्ध उद्देशक

पञ्चम साल उद्देशक

षष्ठ प्रवाल उद्देशक

सप्तम पत्र उद्देशक

अष्टम पुष्प उद्देशक

नवम फल उद्देशक

दशम बीज उद्देशक

प्राणीमात्र का शास्त्रादि वर्ग के कद स्तब्ध स्तब्ध साधन,
प्रवाल पत्र पुष्प फल बीज बीज कद में उत्पन्न होना

द्वितीय वर्ग

मूल कद आदि द्वादश उद्देशक

प्रथम वर्ग के समान

तृतीय वर्ग

अज्ञाना वर्ग के द्वादश उद्देशक

प्रथम वर्ग के समान

चतुर्थ वर्ग

वरा वर्ग के द्वादश उद्देशक

प्रथम वर्ग के समान

पञ्चम वर्ग

इष्ट वर्ग के द्वादश उद्देशक

प्रथम वर्ग के समान

षष्ठ वर्ग

सद्विष वर्ग के द्वादश उद्देशक

प्रथम वर्ग के समान

सप्तम वर्ग

अमरवर्ग वर्ग के द्वादश उद्देशक

प्रथम वर्ग के समान

अष्टम वर्ग

तुलसी वर्ग के दस उद्देशक

प्रथम वर्ग के समान

बाईसवाँ शतक

प्रथम ताड़ वर्ग

राजगृह

ताड़ वर्ग के दस उद्देशक उन्नीसवें शतक के प्रथम वर्ग के समान

प्रथम पाँच वर्गों में विशेषता

द्वितीय निंब वर्ग

निंब वर्ग के समान दस उद्देशक

ताड़ वर्ग के समान

तृतीय अगस्तिक वर्ग

अगस्तिक वर्ग के दस उद्देशक

प्रथम ताड़ वर्ग के समान

चतुर्थ वेंगन वर्ग

वेंगन वर्ग के दस उद्देशक

प्रथम ताड़ वर्ग के समान

पंचम सिरियक वर्ग

सिरियक वर्ग के दस उद्देशक

प्रथम ताड़ वर्ग के समान

षष्ठ पूष फलिका वर्ग

पूष फलिका वर्ग के दस उद्देशक

तेईसवाँ शतक

प्रथम आलु वर्ग

आलु वर्ग के दस उद्देशक

ताड़ वर्ग के समान

द्वितीय लोही वर्ग

लोही वर्ग के दस उद्देशक

ताड़ वर्ग के समान

तृतीय आय वर्ग

आय वर्ग के दस उद्देशक

ताड़ वर्ग के समान

घनुर्ध पाठा वर्ग

पाग वर्ग के दस उद्देशक

ताड वर्ग के समान

चौदीसवाँ शतक

प्रथम नैरयिक उद्देशक

१ निरयिक और मनुष्यों का नैरयिकों के उपपात

२ पक्षिद्वय निरयिक का नरकों के उपपात

३ ५ तथा अमर्त्यो निरयिक पक्षिद्वयों का नरकों के उपपात

६ ६५ रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले अमर्त्यो निरयिक पक्षिद्वयों के साथ प्र० ७ म ६२ तक विहल्लो का विनय

६६ रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले अमर्त्यो निरयिक पक्षिद्वयों के साथ प्र० ६७ से ८६ तक के विहल्लो का विनय

८७ ११० गती मनुष्या का सात नरकों के उपपात

द्वितीय परिमाण उद्देशक

अमुर कुमार

१ २५ क रामचूड

त अमुर कुमारो म निरयिकों और मनुष्यों का उपपात विस्तृत वचन

तृतीय ति इग्यारहवें पर्यन्त नाम कुमारादि उद्देशक

१ १७ क रामचूड

■ नाम कुमार-वाचन-स्तुति कुमार म निरयिकों और मनुष्यों का उपपात विस्तृत वचन

चारहवाँ पृथ्वीकाय उद्देशक

१ ५६ पृथ्वीकायिको म निरयिक मनुष्या और देवो का उपपात विस्तृत वचन

तेरहवाँ अप्काय उद्देशक

अप्कायिको में पृथ्वीकायिको के समान उपपात

चौदहवाँ तेजकाय उद्देशक

तेजस् कायिकों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात विस्तृत वर्णन

पन्दरहवाँ वायुकाय उद्देशक

वायुकायिकों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात

सोलहवाँ वनस्पतिकाय उद्देशक

वनस्पतिकायिकों में—तिर्यचों, मनुष्यों और देवों का उपपात

सत्तरहवाँ वेइन्द्रिय उद्देशक

वेइन्द्रियों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात

अठारवाँ तेइन्द्रिय उद्देशक

तेइन्द्रियों में वेइन्द्रियों के समान उपपात

उन्नीसवाँ चतुरिन्द्रिय उद्देशक

चतुरिन्द्रियों में तेइन्द्रियों के समान उपपात

बीसवाँ तिर्यच पंचेन्द्रिय उद्देशक

१-५४ तिर्यच पंचेन्द्रियों में नैरयिकों, तिर्यचों, मनुष्यों और देवों का (२४ दण्डकों का) उपपात

इक्कीसवाँ मनुष्य उद्देशक

१-१६ मनुष्यों में नैरयिकों, तिर्यचों, मनुष्यों और देवों का (२४ दण्डकों का) उपपात

बाईसवाँ व्यन्तर उद्देशक

१-५ व्यन्तरों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात

तेईसवाँ ज्योतिष्क उद्देशक

१-१२ ज्योतिष्कों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात

चौबीसवाँ वैमानिक उद्देशक

१३-२६ वैमानिकों में ज्योतिष्कों के समान उपपात

पच्चीसवाँ शतक

प्रथम लेख्या उद्देशक

- १ मोलह प्रकार की लेख्या
- २ चौदह प्रकार के मगारी जीव
- ३ मगारी जीवा क योगी का अरु बहुत्व
- ४ चौबीस दण्डक में एक समय में उत्पन्न हो जीवों के योग का अरु बहुत्व
- ५ पन्द्रह प्रकार क योग
- ६ योगी का अरु बहुत्व

द्वितीय द्रव्य उद्देशक

- १ दो प्रकार क द्रव्य
- २ दो प्रकार के अजीव द्रव्य
- ३ क जीव द्रव्य की सख्या
- ख- जीव द्रव्य के अनंत होने के कारण
- ४ जीव द्वारा अजीव द्रव्यो का परिभोग
- ५ चौबीस दण्डक में अजीव द्रव्यो का परिभोग
- ६ असंख्य प्रदेशात्मक बोलाकाग में अनन्त द्रव्यो की स्थिति
- ७ क एक आकाश प्रदेश में पुद्गलो का व्यापकत्व
- ८ भौतिक शरीर रूप में स्थित अस्थित द्रव्यों का ग्रहण
- ९ द्रव्य क्षेत्र काल और भाव से द्रव्य का ग्रहण
- १० वैश्विक शरीर रूप में स्थित अस्थित द्रव्यों का ग्रहण
- ११ लैजम शरीर रूप में स्थित अस्थित द्रव्यों का ग्रहण
- १२ द्रव्य क्षेत्र काल और भाव से द्रव्यों का ग्रहण
- १३ छ दिशाओ से पुद्गला का ग्रहण
- १४ चौबीस दण्डक में पांच इन्द्रियो के रूप में यथायोग्य द्रव्यों का ग्रहण
- १५ चौबीस दण्डक में द्वासीच्छवास के रूप में द्रव्यों का ग्रहण

तृतीय संस्थान उद्देशक

- १ छ प्रकार के संस्थान
- २-३ परिमण्डल आदि संस्थानों के अनन्त द्रव्य
- ४ संस्थानों का अल्प-बहुत्व
- ५ पांच प्रकार के संस्थान
- ६-७ परिमण्डल-यावत्-आयत संस्थान के अनन्त द्रव्य
- ८-१२ रत्नप्रभा-यावत्—ईषप्राग्भारा में संस्थान के अनन्त द्रव्य
- १३-१४ यव मव्य क्षेत्र परिमण्डल-यावत्—आयत संस्थान के अनन्त द्रव्य
- १५-१७ पांच संस्थानों का परस्पर सम्बन्ध, रत्न-प्रभा-यावत्—ईषत्-प्राग्भारा में एक यवाकृति निष्पादक, संस्थान में अन्य संस्थानों के अनन्त द्रव्य
- १८ दो प्रकार का वृत्त संस्थान
 - क- वृत्त संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेशों में अवगाहन
- १९ त्र्यम्ब संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेश में अवगाहन
- २० चतुरम्ब संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेशों में अवगाहन
- २१ आयत संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने प्रदेशों में अवगाहन
- २२ परिमण्डल संस्थान के कितने प्रदेशों में कितने प्रदेशों का अवगाहन
- २३-२६ परिमण्डल आदि संस्थानों की कृतयुग्म रूपता
- २७-३८ परिमण्डल-यावत्—आयत संस्थानों के प्रदेश—कृतयुग्म प्रदेशावगाह-यावत्—कल्योज रूप हैं
- ३९-४२ आकाश-प्रदेश की अनन्त श्रेणियां
- ४३ अलोकाकाश की श्रेणियां

- ४४ आकाश की ध्वनियों के प्रदेश
- ४५ ४६ अशोकाकाश ध्वनिया की संख्या
- ५० लोकाकाश की ध्वनिया और सादिमार्गवर्तिन आदि ध्वनि
- ५१ अशोकाकाश की ध्वनिया और सादिमार्गवर्तिन आदि ध्वनि
- ५२-५६ कृतयुग्मादि रूप आकाश की ध्वनिया
- ५७ सात प्रकार की ध्वनियाँ
- ५८ पद्मपात्र की गति
- ५९ द्विप्रदेशित स्वयं-यावत्-अनन्त प्रदेशित स्वयं की गति
- ६० चौदीस दण्डक के जीवों की ध्वनी के अनुसार गति
- ६१ नन्कावात-यावत् विमानावात
- ६२ गणिमित्रक
- ६३ आधारागादि ध्वनों की प्रकृति
- ६४ क- पाच गति का अल्प-बहुत्व
- ख आठ गति का अल्प-बहुत्व
- ६५ त्रिद्विध यावत्-अनेत्रिध जीवों का अल्प-बहुत्व
- ६६ जीव और पुद्गलों के सवर्णियों का अल्प-बहुत्व
- ६७ आयु कम के वयस्क और अवयस्क जीवों का अल्प-बहुत्व
- अनुर्य युग्म उद्देशक
- १ चार प्रकार के युग्म
- २ ३ चौदीस दण्डक में कृतयुग्मादि
- ४ ६ प्रकार के द्रव्य
- ५ ७ ६ प्रकार के द्रव्यों का कृतयुग्मादि रूप
- ८ (६ प्रकार के) द्रव्यों के प्रदेशों का कृतयुग्मादि रूप
- ९ ६ प्रकार के द्रव्यों का अल्प-बहुत्व
- १० १२ ६ प्रकार के द्रव्य अवगाह अववगाह
- १३ रत्नप्रभा यावत्—ईषत्प्राग्भारा शुष्वी अवगाह अववगाह
- १४ क जीव द्रव्य से बल्योज रूप हैं

ख- चौबीस दण्डक के जीव और सिद्ध (एक वचन की अपेक्षा)
द्रव्य से कल्योज रूप हैं

१५ जीव (बहुवचन की अपेक्षा) द्रव्य से कल्योज रूप हैं

१६ चौबीस दण्डक के जीव तथा सिद्ध (बहुवचन की अपेक्षा)
द्रव्य से कल्योज रूप हैं

१७ क- जीव के प्रदेश कृतयुग्मरूप हैं

ख- शरीर के प्रदेश कृतयुग्मादि (४) रूप हैं

१८ सिद्ध के प्रदेश कृतयुग्मरूप हैं

१९ जीवों तथा सिद्धों (बहुवचन की अपेक्षा) के प्रदेश कृतयुग्म हैं

२० एक या अनेक जीवों की अपेक्षा आकाश प्रदेश में कृतयुग्मादि

२१ चौबीस दण्डक तथा सिद्ध

२२-२५ एक या अनेक जीवों के स्थितिकाल में कृतयुग्मादि

२६ चौबीस दण्डक तथा सिद्ध

२७-२८ एक या अनेक जीवों के कृष्ण आदि वर्ण-पर्याय कृतयुग्मादि
रूप हैं

पर्याय

२९-३० एक या अनेक जीवों के आभिनिबोधिक आदि ज्ञान के पर्याय

३१-३२ एक या अनेक जीवों के केवलज्ञान के पर्याय

३३ एक या अनेक जीवों के मतिअज्ञान-यावत्-केवलदर्शन के पर्याय

३४ पांच प्रकार के शरीर

३५-३७ क- सकम्प निष्कम्प जीव

ख- सकम्प और निष्कम्प होने का हेतु

ग- देश या सर्व से सकम्प

घ- चौबीस दण्डक के जीव सकम्प निष्कम्प

पुद्गल

३८ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशी स्कंधों का परिणाम

३९ एक आकाश प्रदेश में रहे पुद्गल

- ४० एक समय की स्थिति वाले पुद्गल
- ४१ एक गुण कृष्ण यावत् अनन्त गुण रहा पुद्गल
- ४२ ४६ परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वभाव का अप-बहुव
- ४७ ४८ परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वभाव के प्रदेशों का अल्प बहुव
- ४९ प्रवेशावगात् पुद्गलों का द्वय रूप में अप-बहुव
- ५० प्रदेशावगात् पुद्गलों का प्रत्येक रूप में अल्प बहुव
- ५१ एक समय की स्थितिवाले पुद्गलों का अप-बहुव
- ५२ ५३ गुण वाच्य रस और स्पष्ट विनिष्ट पुद्गलों का अप-बहुव
- ५४ परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वभाव का द्रव्यावरूप में अप-बहुव
- ५५ प्रवेशावगात् पुद्गलों का द्रव्यावरूप में अप-बहुव
- ५६ एक समय की स्थितिवाले पुद्गलों का द्रव्यावरूप में अप-बहुव
- ५७ ५८ वर्णाग्नि विनिष्ट पुद्गलों का द्वयवाच्य और प्रवेशावरूप में अप-बहुव
- ५९ परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वभाव की द्रव्यावरूप में हुतपुष्पाग्नि राशि
- ६० परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वभाव की सामान्य तथा विशेष विषयों में हुतपुष्पाग्नि राशि
- ६१ ७० परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वभाव के प्रदेशों की हुतपुष्पाग्नि राशि
- ७१ ७८ परमाणु यावत् — अनन्त प्रदेशिक स्वभाव का हुतपुष्पाग्नि प्रवेशावरूप
- ७९ ८० परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वभाव की हुतपुष्पाग्नि समय आग्नि की स्थिति
- ८१-८३ परमाणु पुद्गल-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्वभाव के वर्णों का

कृतयुग्म आदि होना

८४ अनर्ध परमाणु पुद्गल

८५-८७ द्विप्रदेशिक स्कंध-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कंध सार्ध-अनर्ध

८८ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कंध सकम्प निष्कम्प

८९ बहुवचन की अपेक्षा-सकम्प निष्कम्प

९०-९३ परमाणु पुद्गलों का सकम्प-निष्कम्प काल

९४-९७ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों के कम्पन का अन्तर

९८-१०० सकम्प-निष्कम्प परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों का अल्प-बहुत्व

१०१-१०४ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों का एक देशीय कम्पन अथवा सर्वदेशीय कम्पन

१०५-११४ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों के एक देशीय या सर्व-देशीय कम्पन का अथवा निष्कम्पन का काल

११५-१२४ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों के एक देशीय सकम्प निष्कम्प का अन्तर

१२५-१२७ एक देशीय या सर्वदेशीय सकम्प निष्कम्प परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों का अल्प-बहुत्व

१२८ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों का द्रव्य, प्रदेश की अपेक्षा अल्प-बहुत्व

१२९-१३२ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय और जीवास्तिकाय के मध्य-प्रदेश

१३५ जीवास्तिकाय के मध्यप्रदेशों की अवगाहना

पंचम पर्यव उद्देशक

१ दो प्रकार के पर्यव

कालद्रव्य

२ एक आवलिका के समय

३ एक श्वासोच्छ्वास के समय

- ४ एक स्तोक यावत् उत्सर्पिणी के समय
 ५ एव पुद्गल परिवर्त के समय
 ६ आवनिभावा के समय
 ७ इवामोच्छवास के समय
 ८ स्तोको के समय
 ९ पुद्गल परिवर्तों के समय
 आवलिका
- १० क एक इवामोच्छवास की आवलिकायें
 ख एक स्तोक-यावन क्षीप प्रहेलिका की आवलिकाय
 ११ क एक पत्थोपम की आवलिकायें
 ख एक सागरोपम यावत् एक उत्सर्पिणी की आवलिकायें
 १२ एक पुद्गल परिवर्त यावत्-सबकाल की आवलिकायें
 १३ अनेक इवामोच्छवास की यावत् अनेक क्षीप प्रहेलिकाओं की
 आवलिकाय
 १४ अनेक पत्थोपमों की यावत् अनेक उत्सर्पिणीयों की आव
 लिकाय
 १५ अनेक पुद्गल परिवर्तों की आवलिकायें
 इवामोच्छवास
 १६ एक स्तोक यावत् एक क्षीप प्रहेलिका के इवामोच्छवास
 पत्थोपम
 १७ क एक सागरोपम के पत्थोपम
 ख एक अवसर्पिणी या उत्सर्पिणी के पत्थोपम
 १८ क एक पुद्गल परिवर्त के पत्थोपम
 ख सब काल के पत्थोपम यावत्-अनेक अवसर्पिणीयों के पत्थोपम
 १९ अनेक सागरोपमों के पत्थोपम
 २० अनेक पुद्गल परिवर्तों के पत्थोपम

सागरोपम

- २१ एक अवसर्पिणी के सागरोपम
उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी
- २२ एक पुद्गल परिवर्त की उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी
- २३ अनेक पुद्गल परिवर्तों की उत्सर्पिणीयाँ और अवसर्पिणीयाँ
पुद्गल परिवर्त
- २४ अतीत अनागत और सर्वकाल के पुद्गल परिवर्त
- २५ अनागत और अतीत का अन्तर
- २६ अतीत और सर्वकाल का अन्तर
- २७ सर्वकाल और भविष्य काल का अन्तर
- २८ दो प्रकार के निगोद
- २९ दो प्रकार के निगोद
- ३० छ प्रकार का नाम (छ प्रकार के भेद)

षष्ठ निर्ग्रन्थ उद्देशक

प्रथम प्रज्ञापन द्वार

- १ क- राजगृह, भ० महावीर और गीतम
ख- पांच प्रकार के निर्ग्रन्थ
- २ पांच प्रकार के पुलाक
- ३ " " "
- ४ दो " "
- ५ पांच प्रकार के प्रतिसेवना कुशील
- ६ " " " कपाय कुशील
- ७ " " " निर्ग्रन्थ
- ८ " " " स्नातक

द्वितीय वेदद्वार

- ६-१८ पांच निर्ग्रन्थ के वेद

- तृतीय राग द्वार
- १६ २१ पाच निग्रयो-मराग वीन राग
चतुर्थ कल्प द्वार
- २२ २६ पच निग्रयो का कल्प
पञ्चम चारित्र्य द्वार
- २७ २६ पच निग्रयो के चारित्र्य
षष्ठ प्रतिभवना द्वार
- ३० ३४ पच निग्रयो मे प्रति सेवक अप्रति सेवक
सप्तम ज्ञान द्वार
- ३५ ३७ पच निग्रयो मे ज्ञान
- ३८ ४१ पच निग्रयो का धृत-अध्वयन
अष्टम तार्क्य द्वार
- ४२ ४४ पच निग्रयो तीर्थ-अतीर्थ
नवम लिङ्ग द्वार
- ४५ पच निग्रयो क लिङ्ग
दशम शरीर द्वार
- ४६ ४८ पच निग्रयो के शरीर
अध्वयन का द्वार
- ४९ ५० पच निग्रयो के क्षेत्र
बारहवां का द्वार
- ५१ ५८ पच निग्रयो क कान्त
अध्वयन गति द्वार
- ५९ ६८ पच निग्रयो की गति
बीर-दश मयम द्वार
- ६९ ७२ पच निग्रयो मे मयम
अध्वयन सनिकथ द्वार
- ७३-७४ पच निग्रयो मे सनिकथ

- ७५-८१ पंच निर्ग्रंथों के चारित्र पर्याय
 ८२ पंच निर्ग्रंथों के चारित्र-पर्यवों का अल्प-बहुत्व
 सोलहवां योग द्वार
 ८३-८४ पंच निर्ग्रंथों के योग
 सतरहवां उपयोग द्वार
 ८५ पांच निर्ग्रंथों में उपयोग
 श्रठारहवां कपाय द्वार
 ८६-८८ पांच निर्ग्रंथों में कपाय
 उन्नीसवां लेख्या द्वार
 ८९-९२ पांच निर्ग्रंथों में लेख्या
 बीसवां परिणाम द्वार
 ९३-१०१ पांच निर्ग्रंथों के परिणाम
 इक्कीसवां बन्ध द्वार
 १०२-१०५ पांच निर्ग्रंथों के कर्म प्रकृतियों का बन्ध
 बाईसवां वेद द्वार
 १०७-१०९ पांच निर्ग्रंथों द्वारा कर्म प्रकृतियों का वेदन
 तेईसवां उदीरणा द्वार
 ११०-११४ पांच निर्ग्रंथों द्वारा कर्म प्रकृतियों की उदीरणा
 चौबीसवां उपसंपद-हानि द्वार
 ११५-१२० पांच निर्ग्रंथों द्वारा निर्ग्रंथ जीवन का स्वीकार और त्याग
 पच्चीसवां संज्ञा द्वार
 १२१-१२२ पांच निर्ग्रंथों में संज्ञा
 छत्र्यासवां आहार द्वार
 १२३-१२४ पांच निर्ग्रंथों में आहार
 सत्ताईसवां भव द्वार
 १२५-१२७ पांच निर्ग्रंथों के भव

अथर्ववेद का अर्थ है

१२८ १२९ पाच निष्ठा का अर्थ है

अथर्ववेद का अर्थ है

१३६ १४१ पाच निष्ठा का अर्थ है

अथर्ववेद का अर्थ है

१४२ १४६ पाच निष्ठा का अर्थ है

अथर्ववेद का अर्थ है

१४७ १५१ पाच निष्ठा का अर्थ है

अथर्ववेद का अर्थ है

१५२ १५६ पाच निष्ठा का अर्थ है

अथर्ववेद का अर्थ है

१५४ पाच निष्ठा का अर्थ है

अथर्ववेद का अर्थ है

१५५ १५९ पाच निष्ठा का अर्थ है

अथर्ववेद का अर्थ है

१५८ १६२ पाच निष्ठा का अर्थ है

अथर्ववेद का अर्थ है

१६३ पाच निष्ठा का अर्थ है

सप्तमः सर्गः अथर्ववेद

१ पाच प्रकार का अर्थ है

२ ११ प्रकार का अर्थ है

३ ११ प्रकार का अर्थ है

४ ११ प्रकार का अर्थ है

५ ११ प्रकार का अर्थ है

६ ११ प्रकार का अर्थ है

७ ११ प्रकार का अर्थ है

अष्टादशमोऽध्यायः द्वार

- १२८ १३५ पाच निघद्या क आकष
 अन्तायस काल द्वार
 १३६ १४१ पाच निघद्या का विनि
 नीमसं अन्तर द्वार
 १४२ १४६ पाच निघद्या का अन्तर द्वार
 इन्दीयस ममुद्धान द्वार
 १४७ १५१ पाच निघद्या म ममुद्धान
 वत्तायसो सत्र द्वार
 १५२ १५३ पाच निघद्या क क्षेत्र
 लीमसो स्थाना द्वार
 १५४ पाच निघद्या की स्थाना
 बीलायसो भाव द्वार
 १५५ १५७ पाच निघद्या का भाव
 विनायसो परिमाण द्वार
 १५८ १६० पाच निघद्या का परिमाण
 अन्तायस अक्षय-वस्तु द्वार
 १६३ पाच निघद्या की अन्त-वस्तु

सप्तमं सयत उद्गाथ

- १ पाच प्रकार क चारित्र
- २ दो प्रकार का सामायिक चारित्र
- ३ १० प्रकार का द्वे प्रस्थापनीय चारित्र
- ४ दो प्रकार का परिणारविगुह्य चारित्र
- ५ दो प्रकार का मूल्य भगवत् चारित्र
- ६ क १० प्रकार का यथास्थान चारित्र
- ७ ४ मायार्थ पात्र चारित्रों का अर्थ

वेद

७ पांच चारित्र्य वालों में वेद
राग

८ पांच चारित्र्यों में-सराग वीतराग
कल्प

९-१४ पांच चारित्र्यों में कल्प
प्रतिसेवना

१५-१६ पांच चारित्र्यवालों में प्रतिसेवना
ज्ञान

१७ पांच चारित्र्यवालों में ज्ञान
श्रुत

१८-२० पांच चारित्र्यवालों का श्रुतज्ञान
तीर्थ

२१ पांच चारित्र्य तीर्थ में या अतीर्थ में
लिंग

२२-२३ शरीर पांच चारित्र्यवालों के लिङ्ग
शरीर

२४ पांच चारित्र्यवालों के शरीर
क्षेत्र

२५ पांच चारित्र्य के क्षेत्र
काल

२६-२७ पांच चारित्र्यों के काल
गति

२८-३० पांच चारित्र्यवालों की गति
स्थिति

३१-३२ पांच चारित्र्यवालों की स्थिति

सयम स्थान

- ३३ ३५ पाच चारित्र के सयम स्थान
- ३६ सयम स्थानो का अल्प बहु व
सन्निकर्ष
- ३७ ४२ पाच चारित्रो के पयव
योग
- ४३ पाच चारित्रो मे योग
अल्प बहुत्व
- ४४ पाच चरित्रा मे पयवो का अल्प बहुत्व
उपयोग
- ४५ पाच चारित्रो मे उपयोग
कथाय
- ४६ ४८ पाच चारित्रो मे कथाय
लेखना
- ४९ पाच चारित्रो मे लेखना
परिणाम
- ५० ५१ पाच चारित्रो मे परिणाम
- ५२ ५४ पाच चारित्रियो के परिणामो की स्थिति
बन्ध
- ५५ ५६ पाच चारित्रवालो के कम प्रकृतियो का बन्ध
वेग्न
- ५७ ५८ पाच चारित्र वालो के कम प्रकृतियो का वेदन
उद्दीरणा
- ५९ ६१ पाच चारित्रवालो के कम प्रकृतियो की उद्दीरणा
उपसम्पद् हानि
- ६२ ६६ पाच चारित्रवालो को किम् किस चारित्र का हानि लाभ

संज्ञा

- ६७ पांच चारित्र्यवालों में संज्ञा
आहारक
- ६८ पांच चारित्र्यवालों में आहारक-अनाहारक
भय
- ६९-७० पांच चारित्र्यवालों के भय
आकर्ष
- ७१-७७ पांच चारित्र्यवालों के आकर्ष (चारित्र्यों की पुनः पुनः प्राप्ति)
स्थिति
- ७८-८२ पांच चारित्र्यों की स्थिति
अन्तर
- ८३-८६ पांच चारित्र्यों के अन्तर
समुद्धान्त
- ८७ पांच चारित्र्यवालों में समुद्धान्त
क्षेत्र
- ८८ पांच चारित्र्यवालों का क्षेत्र
दर्शना
- ८९ पांच चारित्र्यवालों के द्वारा लोक का क्षेत्र स्पर्श
भाव
- ९०-९१ पांच चारित्र्यवालों के भाव
परिमाण
- ९२-९४ पांच चारित्र्यवालों का परिमाण
अल्प-बहुत्व
- ९५ पांच चारित्र्यों की अल्प-बहुत्व
- ९६ माथा
- ९७ दश प्रकार की प्रतिरोधना
- ९८ आलोचना के दश दोष

- १६ आलोचक श्रमण के दश गुण
 १०० आलोचना सुनने वाने के आठ गुण
 १०१ दश प्रकार की समाचारी
 १०२ दश प्रकार के प्रायश्चित्त
 १०३ दश प्रकार का तप
 १०४-१०५ दश प्रकार का ब्राह्मण्य
 १०४-१०५ दश प्रकार का आश्विन-तप

अष्टम ओष उद्देशक

- १ राजगृह भ० महावीर और गौतम
 २ मण्डकानुवृत्ति अभ्यवसायो से नारको की उत्पत्ति
 ३ नारको की विवृह गति
 ४ नारको के पर भव का आयु बधने का कारण
 ५ नारको की गति
 ६ ७ नारको की उत्पत्ति के कारण, दोष दण्डको से उत्पत्ति यावत्-
 उत्पत्ति के कारणों का स्व पर प्रयोग

नवमं भव्य उद्देशक

- १ मण्डकानुवृत्ति अभ्यवसायो से भवसिद्धिक नैरविको की उत्पत्ति-
 तप अष्टम उद्देशक के समान

दशमं अभव्य उद्देशक

- १ मण्डकानुवृत्ति अभ्यवसायो से अभव सिद्धिक नैरविको की
 उत्पत्ति तप अष्टम उद्देशक के समान

इग्यारहवां सम्यग्दृष्टि उद्देशक

- १ मण्डकानुवृत्ति अभ्यवसायो से सम्यग्दृष्टि नैरविको की उत्पत्ति
 तप अष्टम उद्देशक के समान

दारहवां मिथ्यादृष्टि उद्देशक

मण्डूकानुवृत्ति अध्यवसायों से मिथ्यादृष्टि नैरयिकों की उत्पत्ति
शेष अष्टम उद्देशक के समान

छब्बीसवाँ शतक

प्रथम जीव उद्देशक

क- राजगृह. भ० महावीर और गौतम

ख- जीव के पाप कर्मों का बन्ध, चार भांगा

लेश्या वाले जीवों के पापकर्मों का बन्ध, चार भांगा

कृष्णलेश्या-यावत्-शुक्ललेश्यावाले जीवों के पापकर्मों का बन्ध

लेश्या रहित जीवों के पाप कर्मों का बन्ध

कृष्ण पाक्षिक जीवों के पाप कर्मों का बन्ध

शुक्ल पाक्षिक जीवों के पाप कर्मों का बन्ध

तीन दृष्टि वाले जीवों के पाप कर्मों का बन्ध

पाँच ज्ञान एवं तीन अज्ञान वाले जीवों के पाप कर्मों का बन्ध

चार संज्ञा वाले तथा नौ संज्ञावाले जीवों के पापकर्मों का बन्ध

सवेदी और अवेदी जीवों की कर्म बन्ध विचारणा

सकपाय तथा अकपाय जीवों की कर्म बन्ध विचारणा

सयोगी, अयोगी तथा उपयोगी जीवों की कर्म बन्ध विचारणा

चौबीस दण्डक में लेश्या-यावत्-उपयोग विवक्षा से पाप कर्मों
का बन्ध

चौबीस दण्डक में लेश्या-यावत्-उपयोग विवक्षा से आठ कर्मों
का बन्ध

द्वितीय उद्देशक

अनन्तरोपपन्नक चौबीस दण्डक में लेश्या-यावत्-उपयोग विवक्षा
से पापकर्मों का तथा आठ कर्मों का बन्ध

तृतीय उद्देशक

- १ परम्परोपपन्न चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का तथा
आठकर्मों का बंध

चतुर्थ उद्देशक

- १ अनन्तरावगाह चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का तथा
आठकर्मों का बंध

पञ्चम उद्देशक

- १ परम्परावगाह चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का तथा
आठ कर्मों का बंध

षष्ठ उद्देशक

- १ अनन्तरावगाह चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का तथा
आठ कर्मों का बंध

सप्तम उद्देशक

- १ परम्परावगाह चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का बंध
तथा आठ कर्मों का बंध

अष्टम उद्देशक

- १ अनन्तर पर्याप्त चौबीस दण्डक के जीवों में पाप-कर्मों का बंध
तथा आठ कर्मों का बंध

नवम उद्देशक

- १ परम्पर पर्याप्त चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का बंध
तथा आठ कर्मों का बंध

दशम उद्देशक

- १ चौबीस दण्डक के चरम जीवों में पापकर्मों का तथा आठ कर्मों
का बंध

इग्यारहवां उद्देशक

- १ चौबीस दण्डक के अचरम जीवों में पाप कर्मों का बंध तथा
आठ कर्मों का बंध

सत्तावीसवाँ शतक

इग्यारह उद्देशक

जीव का पाप कर्म करना तथा आठ कर्मों का बन्ध करना
छब्बीसवें शतक के इग्यारह उद्देशकों के समान

अठावीसवाँ शतक

इग्यारह उद्देशक

- १ जीव ने किस गति में पापकर्मों का उपार्जन और किस गति में पपाकर्मों का आचरण किया (आठ विकल्प)
 - २ लेश्या-यावत्-उपयोग वाले जीवों द्वारा पापकर्मों का उपार्जन तथा पापकर्मों का आचरण
 - ३ चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा पापकर्मों का उपार्जन, आचरण तथा आठकर्मों का उपार्जन व आचरण
- शेष दश उद्देशक छब्बीसवें शतक के उद्देशकों के समान

उनत्तीसवाँ शतक

इग्यारह उद्देशक

- १ पापकर्मों के वेदन का प्रारम्भ और अन्त (चार विकल्प)
 - २ प्रारम्भ और अन्त कहने का हेतु
 - ३ लेश्या-यावत्-उपयोगवाले जीवों के वेदना का प्रारम्भ और अन्त
 - ४ चौबीस दण्डक के जीवों में वेदना का प्रारम्भ और अन्त
- शेष दश उद्देशक-छब्बीसवें शतक के उद्देशकों के समान

तीसवाँ शतक

इग्यारह उद्देशक

प्रथम उद्देशक

- १ चार प्रकार के समवसरण-मत
- २ समस्त जीव चार समवसरण वाले हैं

- ३ ६ तन्वा-यावत्-उपयोगवाले जीव चार समवमरण वाले हैं
 ७-९ चौथा दण्डक के जीव चार समवमरण वाले हैं
 १० २६ चार समवमरणवाना के आनु का बंध
 ३० ३४ चार समवमरण वाले मध्य या अमध्य
 नेत्र दण्ड उद्देशक प्रथम उद्देशक के समान

इकत्तीसवाँ शतक

प्रथम उद्देशक

- १ क रात्रिभू भ० महावीर और गौतम
 न चार प्रकार के शुद्ध शुभ
 ग शुद्ध शुभ करने का हनु
 २ ६ चौथी दण्डक में चार प्रकार के शुभ जीव का उपपात

द्वितीय उद्देशक

धूमप्रभा- यावत् तमस्तम प्रभा

- १ ५ तरक में चार प्रकार के शुद्ध शुभ कृष्ण लेश्य वाले जीव का उपपात

तृतीय उद्देशक

बालुका प्रभा-यावत्-धूमप्रभा

नरक ॥ चार प्रकार के शुद्ध शुभ लेश्या वाले जीव का उपपात

चतुर्थ उद्देशक

- १ २ रत्नप्रभा-यावत्-यावत् प्रभा में चार प्रकार के शुद्ध शुभ
 रापत्र लेश्यावाले जीवों का उपपात

पंचम उद्देशक

- १ २ चार प्रकार के शुद्ध शुभ भव सिद्धिक जीवों का नैरविको में उपपात

षष्ठ उद्देशक

कृष्णलेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भव सिद्धिक जीवोंका
नैरयिकों में उपपात

सप्तम से अट्ठाईसवें उद्देशक तक

नील लेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भव सिद्धिक जीवोंका
नैरयिकों में उपपात (सप्तम उद्देशक)

- २ कापोत लेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भवसिद्धिक जीवों
का नैरयिकों में उपपात (अष्टम उद्देशक)
- ३ भवसिद्धिक के चार उद्देशक
- ४ सम्यग्दृष्टि के चार उद्देशक
- ५ मिथ्यादृष्टि के चार उद्देशक
- ६ कृष्ण पक्ष के चार उद्देशक
- ७ शुक्ल पक्ष के चार उद्देशक

बत्तीसवाँ शतक

अट्ठाईस उद्देशक .

- १ चार प्रकार के क्षुद्र युग्म नैरयिकों का उद्वर्तन तथा उत्पत्ति
- २ एक समय में नैरयिकों के उद्वर्तनों की संख्या
- ३ मण्डूकप्लुति से उद्वर्तन (इक्कीसवें शतक के समान)
- ४ लेश्या-यावत्-शुक्ल पक्ष के उद्देशक

तेतीसवाँ शतक

चारह एकेन्द्रिय शतक

प्रथम एकेन्द्रिय शतक

प्रथम उद्देशक

- १ पांच प्रकार के एकेन्द्रिय
- २ दो प्रकार के पृथ्वीकाय

- ३ दो प्रकार के सूक्ष्म पृथ्वीकाय
- ४ व दो प्रकार के सान्द्र पृथ्वीकाय
 - स पृथ्वीकाय के समान आकाश यावन-वनस्पतिकाय के क्षेत्र
- ५ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आठ कम प्रकृतियाँ
- ६ पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आठ कम प्रकृतियाँ
- ७ स अपर्याप्त पर्याप्त पृथ्वीकाय यावन वनस्पतिकाय के आठ कम प्रकृतियों का वध
- ८ ११ पृथ्वीकाय यावन-वनस्पतिकाय के कम प्रकृतियों का वध
- १२ १३ पृथ्वीकाय-यावन-वनस्पतिकाय के कम प्रकृतियों का वध द्वितीय उद्भाग
- १४ १५ अनन्तरोपपन्न एकत्रियों के क्षेत्र
- १६ १७ अनन्तरोपपन्न एकत्रियाँ की कम प्रकृतियाँ
- १८ अनन्तरूपपन्न एकत्रियों के कम प्रकृतियों का वधन
- १९ अनन्तरोपपन्न एकत्रियों के कम प्रकृतियों का क्षेत्र तृतीय उद्भाग
- २० परम्परारूपपन्न एकत्रियों के क्षेत्र
- २१ परम्परारूपपन्न एकत्रियों के कम प्रकृतियों का वधन तथा क्षेत्र
- चतुर्थ उद्भाग
- २२ अनन्तरावर्तक पृथ्वीकाय-यावन-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में पंचम उद्भाग
- २३ परम्परारूपक पृथ्वीकाय-यावन वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में षष्ठ उद्भाग
- २४ अनन्तरावर्तक पृथ्वीकाय यावन-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में सप्तम उद्भाग
- २५ परम्परारूपक पृथ्वीकाय-यावन-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में

अष्टम उद्देशक

२६ अनन्तर पर्याप्त पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में
नवम उद्देशक

२७ परम्पर पर्याप्त पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में
दशम उद्देशक

२८ चरम पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में
इग्यारहवां उद्देशक

२९ अचरम पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में
द्वितीय एकेन्द्रिय शतक

१ कृष्ण लेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में इग्यारह उद्देशक—
प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान,
तृतीय एकेन्द्रिय शतक

१ नील लेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक—
प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान
चतुर्थ एकेन्द्रिय शतक

१ कापोत लेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक—
प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान
पंचम एकेन्द्रिय शतक

१ भव सिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में इग्यारह उद्देशक—
प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान
षष्ठ एकेन्द्रिय शतक

१ कृष्ण लेश्यावाले भव सिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में इग्यारह
उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान
सप्तम एकेन्द्रिय शतक

१ नील लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह
उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान

अष्टम ऐश्वर्य्य शतक

- १ वाचात् सेवयावाने भवनिष्ठिक ऐश्वर्य्यो के सम्बन्ध मे
इत्यारह उद्देश्य प्रथम ऐश्वर्य्य शतक के अथवा
नवम ऐश्वर्य्य शतक
- १ भवनिष्ठिक ऐश्वर्य्यो के सम्बन्ध मे नव उद्देश्य
दशम ऐश्वर्य्य शतक
- १ कृष्ण सेवया वागे भवनिष्ठिक ऐश्वर्य्यो के सम्बन्ध मे नव
उद्देश्य
एकादशम ऐश्वर्य्य शतक
- १ नील सेवया वागे भवनिष्ठिक ऐश्वर्य्यो के सम्बन्ध मे नव
उद्देश्य
द्वादशम ऐश्वर्य्य शतक
- १ वाचोत्त सेवया वागे भवनिष्ठिक ऐश्वर्य्यो के सम्बन्ध मे
नव उद्देश्य

चौतीसवाँ शतक

अथान्तर द्वादश शतक

प्रथम ऐश्वर्य्य शतक

प्रथम उद्देश्य

- १ क वाच प्रकार के ऐश्वर्य्य
- ख ऐश्वर्य्यो के चार भेद
- २ भवनिष्ठ मुह्यमृषी काविक ओषो की विग्रह गति
- ३ क एक दो तीन समय की विग्रह गति होने का हेतु
ख- सात प्रकार की योगियाँ
- ४ भवनिष्ठ मुह्यमृषी काविक ओषो काविक मुह्यमृषीकाविक रूप
में विग्रह गति

- ५ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की वादर तेजस्कायिक रूप में विग्रह गति
- ६ पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का उपपात
- ७-८ अपर्याप्त वादर तेजस्कायिक जीवों का उपपात
- ९ पर्याप्त वादर वनस्पतिकायिक जीवों का उपपात
- १० अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का उपपात
- ११-१३ अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय का पूर्वचरमान्त से पश्चिम चरमान्त में उपपात
- १४ क- अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की विग्रह गति
ख- तीन अथवा चार समय की विग्रह गति होने का कारण
- १५-१६ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के विग्रह गति के समय
- १७ अपर्याप्त वादर तेजस्काय की विग्रह गति
- १८ अपर्याप्त वादर तेजस्कायिक जीव पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक रूप में उत्पन्न हो तो विग्रह गति के समय
- १९ अपर्याप्त वादर तेजस्कायिक की विग्रह गति
- २०-२१ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव की उर्द्ध लोक से अधोलोक में विग्रह गति
- २२ क- लोक के पूर्व चरमान्त में पृथ्वीकायिक जीव की विग्रह गति.
ख- विग्रह गति का कारण
- २३-२४ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक का उपपात
- २५-२६ लोक के पूर्व चरमान्त से पश्चिम चरमान्त की विग्रह गति
- २७ वादर एकेन्द्रियों के स्थान
- २८ अपर्याप्त एकेन्द्रियों की कर्म प्रकृतियां
- २९ अपर्याप्त एकेन्द्रियों का कर्म बन्ध
- ३० एकेन्द्रियों के कर्म वेदन
- ३१ एकेन्द्रियों का उपपात
- ३२ एकेन्द्रियों के समुद्घात

- ३३ ऐरेन्द्रियो के वध वध का अन्त बहुत्व
द्वितीय उद्देशक
- १ ५ अनन्तरोषणनक ऐरेन्द्रियो का वधन प्रथम उद्देशक के प्र०
२६ से ३४ तक के समान
तृतीय उद्देशक
- १ ३ परम्परोषणन ऐरेन्द्रियो का वधन
चतुर्थ से एकादश उद्देशक पर्यन्त
- १ अचरम पयन एकन्द्रियों का वधन
द्वितीय एकेन्द्रिय शतक
इग्यारह उद्देशक
- १ ३ कृष्ण लेस्यावाने ऐरेन्द्रिया का वधन
तृतीय एकेन्द्रिय शतक
इग्यारह उद्देशक
- १ नील लेस्यावाने ऐरेन्द्रियो का वधन
चतुर्थ एकेन्द्रिय शतक
इग्यारह उद्देशक
- १ काशोत लेस्यावाने एकन्द्रिया का वधन
पञ्चम एकेन्द्रिय शतक
इग्यारह उद्देशक
- १ भवसिद्धिक ऐरेन्द्रिया का वधन
षष्ठ एकेन्द्रिय शतक
इग्यारह उद्देशक
- १ ५ कृष्ण लेस्यावाने भवसिद्धिक ऐरेन्द्रियो का वधन

इग्यारह उद्देशक

- १ नील लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन
अष्टम एकेन्द्रिय शतक

इग्यारह उद्देशक

- १ कापोत लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन
नवम एकेन्द्रिय शतक

नव उद्देशक

- १ अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन
दशम एकेन्द्रिय शतक

नव उद्देशक

- १ कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन
एकादश एकेन्द्रिय शतक

नव उद्देशक

- १ नीललेश्यावाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन
द्वादशम एकेन्द्रिय शतक

नव उद्देशक

- १ कापोतलेश्यावाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन

पैंतीसवाँ शतक

अवान्तर द्वादश शतक

प्रथम एकेन्द्रिय महायुगम शतक

प्रथम उद्देशक

- १ सोलह प्रकार के महायुगम
२ सोलह कहने का हेतु
३ कृतयुगम कृतयुगम राशिरूप एकेन्द्रियों का उपपात

- ४ एक समय में उपपात
- ५ जीवों की संख्या
- ६ कृतयुग्म कृतयुग्म राशिरूप एकेन्द्रियों के आठ कमों का बन्ध
- ७ कृतयुग्म कृतयुग्म राशिरूप एकेन्द्रियों के आठ कमों का वेदन
- ८ कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों का साक्षा अज्ञाना वेदन
- ९ कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों की शेष्या-यावन्-उपयोग
- १० कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों के शरीर के वर्णादि
- ११ कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों का अनुबन्ध काल
- १२ सर्व जीवों का कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों में उत्पाद
- १३ कृतयुग्म श्योज राशि एकेन्द्रियों का उत्पाद
- १४ उत्पाद संख्या
- १५ कृतयुग्म द्वार पर प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद
- १६ उपपात संख्या
- १७ कृतयुग्म कल्पोज रूप एकेन्द्रियों का उत्पाद
- १८ श्योज कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद
- १९ श्योज श्योज प्रमाण एकेन्द्रियों उत्पाद
- २० कल्पोज कल्पोज प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

द्वितीय उद्देशक

- १ प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का उत्पाद
- २ प्रथम समयोत्पन्ना कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का अनुबन्ध

तृतीय उद्देशक

- १ अग्रथम समयोत्पन्ना कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

चतुर्थ उद्देशक

- १ परम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

पंचम उद्देशक

- १ अचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद
षष्ठ उद्देशक

- १ प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद
सप्तम उद्देशक

- १ प्रथम अप्रथम समय कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद
अष्टम उद्देशक

- १ प्रथम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का
उत्पाद

नवम उद्देशक

- १ प्रथम अचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का
उत्पाद

दशम उद्देशक

- १ चरम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का
उत्पाद

एकादशम उद्देशक

- १ चरम अचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का
उत्पाद

द्वितीय एकेन्द्रिय महायुग्म शतक. इग्यारह उद्देशक

- १ कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का वर्णन

तृतीय एकेन्द्रिय महायुग्म शतक. इग्यारह उद्देशक

- १ नीललेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का वर्णन

चतुर्थ एकेन्द्रिय महायुग्म शतक. इग्यारह उद्देशक

- १ कापीतलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का वर्णन

- पचम एकेन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
 १ भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियो का वणन
 षष्ठ एकेन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
 १ कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियो का वणन
 सप्तम एकेन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
 १ नीललेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियो का वणन
 अष्टम एकेन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
 १ कापोतलेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियो का वणन
 नवम एकेन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
 १ अभवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियो का वणन
 दशम एकेन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
 १ कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियो का वणन
 एकादशम एकेन्द्रिय महायुग्म शतक नव उद्देशक
 १ नीललेश्य अभवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियो का उत्पाद
 द्वादशम एकेन्द्रिय महायुग्म शतक नव उद्देशक
 १ कापोतलेश्य अभव सिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियो का उत्पाद
 छतीसवीं शतक
 अवान्तर द्वादश शतक
 दो सो इकतीस उद्देशक
 प्रथम वेङ्गिन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
 १ कृतयुग्म कृतयुग्म वेङ्गिन्द्रियो का उत्पाद

- २ वेइन्द्रियों का अनुबन्ध
- ३ प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म वेइन्द्रियों का उत्पाद
शेष—एकेन्द्रिय महायुग्म उद्देशकों के समान
- द्वितीय वेइन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
- १ कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म वेइन्द्रियों का वर्णन
- तृतीय वेइन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
- १ नीललेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म वेइन्द्रियों का वर्णन
- चतुर्थ वेइन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
- १ कापोतलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म वेइन्द्रियों का वर्णन
- पंचम वेइन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
- १ भव सिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म वेइन्द्रियों का वर्णन
- षष्ठ वेइन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
- १ कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म वेइन्द्रियों का वर्णन
- सप्तम वेइन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
- १ नीललेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म वेइन्द्रियों का वर्णन
- अष्टम वेइन्द्रिय महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक
- १ कापोतलेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्म कृतयुग्म वेइन्द्रियों का वर्णन
- नवम वेइन्द्रिय महायुग्म शतक नव उद्देशक
- १ अभवसिद्धिक कृतयुग्म २ वेइन्द्रियों का वर्णन
- दशम वेइन्द्रिय महायुग्म शतक नव उद्देशक
- १ कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक कृतयुग्म २ वेइन्द्रियों का वर्णन
- एकादशम वेइन्द्रिय महायुग्म शतक नव उद्देशक
- १ नीललेश्य अभवसिद्धिक कृतयुग्म द्वीन्द्रियों का वर्णन

षष्ठ संज्ञी महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक

१ पद्मलेश्य संज्ञीपंचेन्द्रिय महायुग्मों का उत्पाद

सप्तम संज्ञी महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक

१ शुक्ललेश्य संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुग्मों का उत्पाद

अष्टम संज्ञी महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक

१ भवसिद्धिक कृतयुग्म २ प्रमाण संज्ञीपंचेन्द्रिय महायुग्मों का उत्पाद

नवम संज्ञी महायुग्म शतक

चौदहवें संज्ञी महायुग्म शतक पर्यन्त

प्रत्येक के इग्यारह उद्देशक

१ कृष्णलेश्य-यावत्-शुक्ललेश्य भवसिद्धिक कृतयुग्म २ प्रमाण संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुग्म का उत्पाद

पंद्रहवें संज्ञी महायुग्म शतक से

इक्कीसवें संज्ञी महायुग्म शतक पर्यन्त

प्रत्येक के इग्यारह उद्देशक

१ कृतयुग्म-२ प्रमाण कृष्णलेश्य-यावत्-शुक्ललेश्य अभवसिद्धिक संज्ञी पंचेन्द्रिय का उत्पाद

इगतालीसवाँ शतक. प्रथम उद्देशक

१ क- चार प्रकार का राशियुग्म

ख- चार प्रकार का राशियुग्म कहने का हेतु

२-३ कृतयुग्म राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

४ सान्तर अथवा निरन्तर उपपात

५ कृतयुग्म और व्योज राशि के सम्बन्ध का निषेध

६ कृतयुग्म और द्वापर राशि के सम्बन्ध का निषेध

७ कृतयुग्म और कल्योज राशि के सम्बन्ध का निषेध

८ जीवों के उपपात की पद्धति

द्वादश वेद्विन्द्रिय महायुग्म शतक नव उद्देशक

- १ कापोत तस्य अभवसिद्धिक कृतयुग्म वेद्विन्द्रियो का वणन
सैंतीसवाँ शतक

अवान्तर द्वादश शतक

एक सो चौबीस उद्देशक

- १ कृतयुग्म २ प्रमाण त्रीन्द्रियो के उत्पाद का वणन

अड़तीसवाँ शतक

अवान्तर द्वादश शतक

एक सो चौबीस उद्देशक

- १ कृतयुग्म २ प्रमाण चतुरिन्द्रियो के उत्पाद का वणन

उनचासीसवाँ शतक

अवान्तर द्वादश शतक

एक सो चौबीस उद्देशक

- १ कृतयुग्म २ प्रमाण अक्षणी पंचन्द्रियो के उत्पाद का वणन

चालीसवाँ शतक

अवान्तर इकवीस सत्ती पंचेन्द्रिय महायुग्म शतक

प्रथम सत्ती महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक

- १ कृष्णनेत्र्य सत्ती पंचेन्द्रिय महायुग्म का उत्पाद
तृतीय सत्ती महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक

- १ नीलनेत्र्य सत्ती पंचेन्द्रिय महायुग्मो का उत्पाद
चतुर्थ सत्ती महायुग्म शतक इग्यारह उद्देशक

- १ कापोतनेत्र्य सत्ती पंचेन्द्रिय महायुग्मो का उत्पाद
पंचम सत्ती महायुग्म शतक उद्देशक इग्यारह

- १ तेजसनेत्र्य सत्ती पंचेन्द्रिय महायुग्मो का उत्पाद

तेरहवें से सोलहवें उद्देशक पर्यंत

- १ कापोतलेश्यावाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

सतरहवें से बीसवें उद्देशक पर्यंत

- १ तैजोलेश्यावाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

इक्कीसवें से चौबीसवें उद्देशक पर्यंत

- १ पक्षलेश्यावाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

पच्चीसवें से अट्ठावीसवें उद्देशक पर्यंत

- १ शुक्ललेश्यावाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

उनत्तीसवें से छप्पनवें उद्देशक पर्यंत

- १ चार राशि युग्म प्रमाण भव सिद्धिक, कृष्ण लेश्या-यावत्-शुक्ल लेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

सत्तावन से चौरासीवें उद्देशक पर्यंत

- १ चार राशि युग्म प्रमाण अभवसिद्धिक, कृष्ण लेश्या-यावत्-शुक्ल लेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

पच्यासी से एक सो बारहवें उद्देशक पर्यंत

- १ चार राशि युग्म प्रमाण सम्यग्दृष्टि भवसिद्धिक कृष्ण लेश्या वाले-यावत्-शुक्ल लेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

एक सो तेरहवें से एक सो चालीसवें उद्देशक पर्यंत

- १ चार राशि युग्म प्रमाण मिथ्यादृष्टि भवसिद्धिक कृष्णलेश्या वाले-यावत्-शुक्ललेश्यावाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

-१० उपपात का हेतु आत्मा का असंयम

१ सत्त्वैय आत्म असंयमी

२ १७ सक्रिय आत्म असंयमी

३ २३ क्रिया रहित की सिद्धि

द्वितीय उद्देशक

१ ३ अश्व राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

तृतीय उद्देशक

१ २ द्वार राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

चतुर्थ उद्देशक

१ कर्कश राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

पंचम उद्देशक

१ कृष्णनेश्यावाले कृतगुण प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

षष्ठ उद्देशक

१ कृष्णनेश्यावाले अश्व राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

सप्तम उद्देशक

१ कृष्णनेश्यावाले द्वार राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

अष्टम उद्देशक

१ कृष्णनेश्यावाले कर्कश राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

नवम ॥ बारहवें उद्देशक पर्यंत

१ नीलनेश्यावाले चार राशि गुण प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

षमो तवन्म

धर्मकथानुयोगमय ज्ञाता-धर्मकथाञ्च

श्रुतस्कंध	२
अध्ययन	२६
उद्देशक	१६
पद्य	५ लाघ ७६ हजार
उपलब्ध पाठ	२५०० श्लोक
गद्य सूत्र	१५६
पद्य सूत्र	६२

प्रथम ज्ञान श्रुतस्कंध	द्वितीय धर्म कथा श्रुतस्कंध
अध्ययन १६	वर्ग १०
उद्देशक १६	अध्ययन २०६
गद्य सूत्र १४७	गद्य सूत्र १२
पद्य सूत्र ५६	पद्य सूत्र ६

१ उषित्त-णाए, २ संघाडे, ३ अंटे ४ कुम्मे य ५ सेलगे ।
६ तुंवेय ७ रोहिणी ८ मल्ली, ९ मायंदी १० चंदिमाइ य ॥
११ दावह्वे १२ उदग-णाए, १३ मंडुक्के १४ तेयली वि य ।
१५ नंदीफले १६ अवरकंका, १७ आइन्ने १८ सुसुमाइ य ॥
अवरे य १९ पुंडरीए, णायए एगुणवीसइमे ।

१ एक सो इक्तातीस से एक सो अठसठवें उद्देशक पर्यंत
चार राशि युग्म प्रमाण कृष्ण पक्षी चौबीस दण्डक के बीवा
का उपपान

१ एक सो उनसितार से एक सो न्दियानवें उद्देशक पर्यंत
चार राशि युग्म प्रमाण शुक्ल पक्षी चौबीस दण्डक के बीवों
का उपपान

उपसंहार का गाथा

भगवता सूत्र-उद्देशक त्रिधि

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेति भावेण ।
अमला असकिलिद्धा, तेहुति परित्तससारि ॥
बाल-मरणाणि बहुसो, अकाम-मरणाणि चेव य बहूणि ।
मरिहति ते वराया, जिण-वयणं जे न जाणति ॥



- र धनिक का व्यायाम शांता में व्यायाम करना
 ग स्नानघर में स्नान एवं श्रृंगार
 घ , उपस्थान-शांता में आगमन
 ङ स्वप्न पाठकों को बुलाना स्वप्न फल पूछना
 च दोहड़ महा स्वप्नों के नाम
 छ स्वप्न फल ध्वज स्वप्न पाठकों का सस्वार
 ज धारिणी देवी का गर्भ मुरगा के सिधे प्रयत्न
 १३ धारिणी देवी का दोहड़
 १४ क दोहड़ पूज करने करने का प्रयत्न
 ख अमयकुमार का अष्टम तप
 ग सोलह प्रकार के क्षण्यतम पुद्गल
 १५ अमय कुमार के भिन्न देव का आगमन और दोहड़ पूज करने
 ■ लिये आगवाहन
 १६ अमय कुमार द्वारा देव का विसर्जन
 १७ धारिणी का गर्भ प्रतिपादन
 १८ क मेष कुमार का ज म ज मोक्षक यदि विमोक्षण कर मुक्ति
 दशोत्तम माचका की इच्छित दान जाल कम जागरण
 चंद्र मूष न्शन आदि सस्कार प्रीति भोज नाभकरण
 ख पाक धाय लोत्रे नाना देशों की दमियाँ
 ग मेष कुमार का पाठ पठन बहुसर कलाओं का शिक्षण कला
 चायों का सम्मान
 १९ क मेष कुमार को अठारह देश भाषाओं का ज्ञान गुड कला में
 निपुणता
 ख मेष कुमार के लिए जाठ अठ पुर आसादी का निर्माण
 २० क मेष कुमार का जाठ राज कथाओं के साथ पाणिग्रहण
 ख जाठ हिरण्य कोटी और जाठ सुवर्ण कोटी का दहेज दहेज में
 जाठ दानियाँ

- ग- बाठ राज कन्याओं द्वारा बत्तीस प्रकार के नृत्यों का प्रदर्शन
- २१ भ० महावीर का गुणशील चैत्य में समवसरण, धर्म परिपद में प्रवचन
- २२ क- भ० महावीर के दर्शनार्थ मेघ कुमार का जाना
ख- पाच प्रकार के अभिगम
ग- भ० महावीर की धर्म कथा
- २३ मेघ कुमार को वैराग्य, प्रव्रज्या के लिए माता-पिताओं से आज्ञा प्राप्त करना
- २४ क- मेघ कुमार को माता पिताओं का समझाना
ख- मनुष्य जीवन की नश्वरता
ग- काम भोगों का स्वरूप
घ- निर्ग्रन्थ प्रवचन की महत्ता
ङ- साधु जीवन का वर्णन
च- आहार एषणा की कठिनता
छ- मेघ कुमार का दृढ़ वैराग्य
- २५ क- मेघ कुमार का राज्याभिषेक
ख- रजोहरण, पात्र और काश्यप के लिए तीन लाख सुवर्ण मुद्राएँ देने का आदेश
ग- मेघ कुमार का दीक्षा महोत्सव
- २६ क- मेघ कुमार की प्रव्रज्या
ख- मेघ मुनि को रात्रि में शय्या परीपह
ग- मेघ मुनि का भ० महावीर की वंदना के लिए जाना
- २७ क- भ० महावीर द्वारा मेघ कुमार मुनि के पूर्वभवों का प्रतिपादन
ख- सुमेरुप्रभ हाथी का वर्णन
ग- वैताड्यगिरि की तलहटी का वर्णन
घ- तृपा पीडित सुमेरुप्रभ हाथी की मृत्यु, पुनः हाथी के रूप में जन्म

इ- गङ्गा यात्रा का मण्डन बनाना

ख- सगर की रक्षा करना

■ तीन स्नि पश्चान् मृतु मेघ कुमार के रूप में अम

२८ ५ मेघ मुनि का पुत्र जमो की स्मृति

■ अमल सध की सेवा व निव मेघ मुनि का हृद प्रतिष्ठा

ग- सध मुनि का पुत्र प्रथम्या ग्रहण

घ- दामारट् भगो का आच्यपन विविध प्रकार के तप

ङ- म० महावीर का विहार

२९ मधमुनि की द्वाग्ग अमल प्रतिष्ठा आराधना

३० क- मेघ मुनि की विदुषपिदि पर अग्निम आराधना

३१ क- मेघ मुनि की विजय विमान से उपपत्ति

ख- तेनीस सागर की स्थिति अच्यन महाविन्दु व जम निर्वाण

द्वितीय सघाटक अध्ययन

रत्नत्रय की आराधना के लिए आहार करना

३२ उत्पानिका—रात्रगृह गुणगीन शैत्य जीव उद्यान भवनरूप
मानुषा कण्ड

३३ चन्ना सायवाह भद्रा भार्या

३४ पश्य दास चन्ना सायवाह का स्मृति-व

३५ विजय चीर का कुर जीवन

३६ क- भद्रा की पुत्र प्राप्ति के लिये विमता

ख- भद्रा द्वारा अनेक देव देवियों की पूजा अचना सभ स्थिति

३७ भद्रा के दोहद की पुनि

ग- देवस्नि का जम जमोत्सव

३८ ५ देवस्नि की बीदा के लिए पश्य का से जाना विजय चीर
द्वारा देवस्नि का अपहरण

ख- देवदिन्न के आभूषण ले लेना और मार कर भग्नकूप में डाल देना

३६ देवदिन्न की शोध. बाल हत्यारे विजय चोर को कारागृह का कठोर दण्ड

४० क- कर चोरी के अपराध में धन्ना सार्थ को कारागृह का दण्ड धन्ना सार्थवाह और विजय चोर का एक वेड़ी से बन्धन

ख- धन्ना सार्थवाह के लिए पंथक का भोजन ले जाना

ग- धन्ना सार्थवाह का विजय चोर को भोजन देना

४१ क- विजय चोर को भोजन देने से भद्रा सार्थवाही का रुष्ट होना

ख- धन्ना सार्थवाही की कारागृह से मुक्ति

ग- विजय चोर को भोजन देने का कारण बताने से भद्रा की नाराजगी का मिटना

घ- विजय चोर की मृत्यु. नरक गति

ङ- भ० महावीर द्वारा निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों की शिक्षा

४२ क- धर्मघोष स्थविर का पदार्पण

ख- धन्ना सार्थवाह की प्रव्रज्या

ग- अन्तिम आराधना

घ- सौधर्म कल्प में देव होना. चार पत्य की स्थिति. व्यवन.

ङ- महाविदेह में जन्म और निर्वाण

४३ भ० महावीर द्वारा निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों की शिक्षा

तृतीय अण्ड अध्ययन

शंका न करना

४४ क- उत्थानिका—चंपा नगरी. सुभूमि माग्न उद्यान. मालुका कच्छ मयूरी के दो अंडे. दो सार्थवाह पुत्र

४५ जिनदत्त और सागरदत्त की मैत्री

४६-४७

- ४८ दोनो मित्रो द्वारा मयूरी के दोनो अण्डो को उठाना
 ४९ क मूर्गी के अण्डो के साथ वन मयूरी के अण्डो का पालन
 ख सागरदत्त की अण्डे के सम्बन्ध में शका अण्ड का नष्ट होना
 ५० क- जिनदत्त का अण्डे के सम्बन्ध में सदेह न करना
 ख मयूरपालक द्वारा वृत्त तथा चूत जोड़ा शिरा
 घ- निर्घ्नय निघ्नयियो को भ० महावीर की [सम्पत्ति के प्रथम
 शका अतिथार की निहति के सम्बन्ध में] शिक्षा

चतुर्थ कूर्म अध्ययन

इन्द्रिय जय

- ५१ क उत्थानिका वाराणसी नगरी
 ख मालुका कच्छ में दो शृंगाल
 ग सन्ध्या के समय इह से निकलकर दो कूर्मों का खाद्य पक्षेयणा
 के लिए मालुका कच्छ की ओर जाना
 घ शृंगालो का कूर्मों की घाल में बैठना
 ङ कवन वित्त कूर्म का शृंगाल द्वारा नष्ट होना
 च स्थिरचित्त कूर्म का बचना
 छ निर्घ्नय निघ्नयियो को भ० महावीर की [पाँचो दृष्टियों को
 बस करने के सम्बन्ध में] शिक्षा

पंचम ज्ञात अध्ययन

प्रमाद परिहार

- ५२ क द्वारका नगरी वन में रत्नक पर्वत नदनवन उद्यान वन
 मुरप्रिय यथायतन कृष्ण वागुदेव
 दक्षिणाधराल की राजधानी द्वारिका का वैभव—
 समुद्र विजय प्रमुख दश दशार
 बलदेव ' पाँच महावीर

रुद्रसेन	प्रभुग	सोतह हजार राजा
प्रधुम्न	"	साढ़े तीन कोड़ कुमार
सांव	"	साठ हजार पराक्रमी
वीरसेन	"	इक्कीस हजार घोर
महासेन	"	एकल हजार अन्यान
रामणी	"	बत्तीस हजार रानियाँ
अनङ्ग सेना	"	हजारों गणिकायें
अन्य अनेक	"	सार्धंवाह आदि

५३ क- थावच्चा गायापति. थावच्चापुत्र कुमार का अध्ययन

ग- बत्तीस श्रेष्ठी कन्याओं के साथ थावच्चा पुत्र का पाणिग्रहण

ग- भ० अरिष्ट नेमी का समयसरण, दयाचनुष की जैचार्द्रि, अठारह हजार श्रमण, चालीस हजार श्रमणियाँ

घ- गुणर्मा सभा, कौमुदी भैरी का वादन

५४ क- थावच्चा पुत्र का वैराग्य, दीक्षा महोत्सव के लिए श्रीकृष्ण से थावच्चा भार्या का निवेदन

ग- श्री कृष्ण द्वारा थावच्चा पुत्र के वैराग्य की परीक्षा

ग- थावच्चा पुत्र की प्रव्रज्या

घ- भ० अरिष्टनेमी से आज्ञा प्राप्त करके एकहजार अणगार के साथ थावच्चापुत्र का जनपद में विहार

५५ क- सेलकपुर, सुभूमिभाग उद्यान, सेलक राजा, पद्मावती रानी, युवराज मण्डूककुमार, पंचक प्रभुग पाँच सौ मंत्रोगण

ख- थावच्चा पुत्र अणगार की सेलकपुर में पदार्पण, धर्मकथा, राजा और मंत्रियों का द्वादश व्रत स्वीकार करना

ग- सीगंधिका नगरी वर्णन, नीलाशोक उद्यान

घ- सुदर्शन नगर श्रेष्ठ

ङ- शुक्रदेव, परिय्राजक-वस्ति, चार वेदों के नाम, पण्ठी तंत्र,

सास्य सिद्धान्त पाच धम पाच नियम दम प्रकार का परि
ब्राजक धम

च मुग्गन को शौचमूलक धम का उपपन्न

छ- दो प्रकार का शौच द्रव्य शौच और भाव शौच की व्याख्या
शौचधम से स्वयं की प्राप्ति सुदशन का शौचधम स्वीकार
करना

ज शुक परिव्राजक का जनपद में विहार

झ- श्री धावच्छापुत्र अणगार का आचमन परिषद में सुदशन की
उपस्थिति दो प्रकार का विनयमूल धम अणार धम के बारह
व्रत इग्यारह उपासक प्रतिमाओं का आराधन अणगार धम
में अठारह पाप विरति दम प्रत्याख्यान बारह भिक्षु प्रतिमा
विनयमूल धम से मोक्ष

झ सुदशन द्वारा शौचधम का प्रतिपन्न

ट धावच्छा द्वारा शौचधम का परिहार रत्तरजित वस्त्र का
उत्साहरण

ड मुग्गन की विनयमूलक धम में अट्टा

ड पुन शुक परिव्राजक का सीमाधिका में आना मुग्गन को पुन
शौचमूल धम में प्रतिष्ठापित करने का प्रयत्न करना

ड मुग्गन के साथ शुक परिव्राजक का धावच्छा पुत्र अणगार के
समीप पहुँचना

ण धावच्छापुत्र से शुक के कुछ प्रश्न

त शुक की अहत प्रश्नया चौदह पुत्र का अध्ययन
धावच्छा पुत्र का विहार पुंडरीक पत्र पर अन्तिम आराधना
सिद्धि

५६ क शुक अमण का नेलकपुर के सुभूमि भाग उद्यान में पदापण
शेतक का धम अवन मणूक को राय देकर नेलक राजा
का पथक प्रमुख पाचसो मणियों के भाग प्रव्रजित होगा

- ग- मुक्त श्रमण की पुण्डरीक पर्यंत पर अन्तिम आराधना, निर्वाण
 ५७ धेनक राजर्षि का अश्वरथ होना, चित्तिगा के लिए मेतवपुर
 पहुँचना, ग्दरथ होने पर भी मेतवपुर न छोटना
 ५८ क- धेनक राजर्षि की सेवा में अर्चने पथक मुनि का रहना, अन्य
 श्रमणों का विहार
 ५९ वातुर्मासिक प्रतिश्रमण के दिन धेनक राजर्षि का प्रबुद्ध होना,
 विहार करना
 ६० निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को भ० महावीर द्वारा प्रतिबोध
 ६१ क- धेनक-राजर्षि की पुण्डरीक पर्यंत पर अन्तिम आराधना,
 सिद्ध पद की प्राप्ति
 ग- निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को भ० महावीर की शिक्षा

पष्ठ तुम्बक अध्ययन

जीव का गुह्यत्व लघुत्व

- ६२ क- उन्धानिका—राजगृह, भ० महावीर और इन्द्रभूति
 ग- जीव के गुह्यत्व-लघुत्व का कारण, श्रुतिका लिप्ता तुम्ब का
 उदाहरण

सप्तम रोहिणी अध्ययन

पाँच महाव्रतों की वृद्धि

- ६३ क- राजगृह नगर, मृभूमि भाग उद्यान, धन्ना साथवाह द्वारा पाँच
 शालिकर्णों में चार पुत्रवधुओं की परीक्षा चारों को चार
 प्रकार के कार्य देना
 ग- भ० महावीर का रोहिणी के समान निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को
 पाँच महाव्रतों की वृद्धि का उपदेश

अष्टम मल्ली अध्ययन

१ माथा इत्य निवारण

२ दुर्गंधमय देह

- १४ क उत्पत्तिः—अबुद्धोप, महाविदेह निषय वर्षधर पर्वत, सीतोदा महानदी, सुम्बावह वनस्पतार पवन, लवण समुद्र, सन्नितावनि त्रिजय बीनसोरा राजधानी, इन्द्र कुम्भ उद्यान
- ल बनराजा, धारिणी राणी महाबल राजकुमार, पाँचसौ राज-
क-यात्री से पाणिपतहृष पाँच प्रमाद पाँचसौ हिरण्य कोटी,
पाँचसौ सुवर्ण कोटी का दहेज दहेज से पाँचसौ दासिणी
- म स्वविरों का आगमन चर्म धवन, महाबल को राज्य देकर
बनराजाका प्रव्रजित होना, इन्द्राह अना का अभ्ययन
- प चाद पर्वत पर अनिम आराधना शलेगना शिवाय की प्राप्ति
- इ वसन्तकी की निद का स्वप्न अबुमद्र पुन की प्राप्ति
- ष महाबल के बालमित्र दू राजा
- छ स्वविरा का आगमन, महाबल के साथ छठे राजाभा की
प्रव्रज्या
- ज महाबल और दश मुनियों द्वारा समानता करने का निश्चय
- झ महाबल मुनि का मातापुत्रक तपोइति म स्त्रीनिग नाम कर्म
का बचन महाबल द्वारा शीघ्र करनाय कर्म का उपायन
- ञ शीघ्र करनाय कर्म की उपायना क बीस कारण
- ट महाबल आदि माना मुनियों द्वारा भिक्षु प्रतिमाया की
आराधना
- ॥ लहनिद्र निष्कोटिन और महामिह निष्कोटिन तप की
आराधना
- २ चाद पवन पर महाबल आदि मुनियों की अनिम आराधना
॥ भाग मनमना बीरसी हजार वर्ष का धमन पर्याय,

चोरासी लाख पूर्व का पूर्णायु, सबका जयन्त विमान में देव होना

६५ क- वत्तीस सागर की स्थिति

ख- १. प्रतिबुद्धि	साकेताधिपति
२. चन्द्रच्छाय	अंगदेशाधिपति
३. शंख	काशिराज
४. स्वमी	कुणाल अधिपति
५. अदीन शत्रु	कुरुराज
६. जितशत्रु	पचाल अधिपति

ग- जंबूद्वीप, भरत, मिथिला राजधानी, कुम्भराजा, प्रभावती देवी चौदह महास्वप्न, महावल देव का प्रभावती की कुक्षि में अवतरण, पूर्ण दोहद, उन्नीसवें तीर्थंकर का मल्लीरूप में जन्म

६६ नन्दीश्वर द्वीप में जन्मोत्सव, नाम करण

६७ क- शतायु मल्ली की अवधिज्ञान द्वारा छहों राजाओं की जानकारी
ख- अशोकवाटिका में "मोहनघर" का निर्माण

ग- मोहनघर के मध्यभाग में स्वर्णमय मल्ली प्रतिमा की मल्ली द्वारा स्थापना

६८ क- कोशल जनपद, साकेत नगर, दिव्य नागघर

ख- प्रतिबुद्धि राजा, पद्मावती रानी, नागयज्ञ का आयोजन, श्री दामगंड की रचना

ग- प्रतिबुद्धि राजा की सुबुद्धि अमात्य द्वारा मल्ली विदेह राज-कन्या का परिचय

घ- प्रतिबुद्धि महाराज का दूत प्रेषण, मल्ली विदेह राजकन्या की याचना

ङ- प्रतिबुद्धि का मिथिला गमन

६९. क- अंगदेश-चंपानगरी, चन्द्रच्छाय राजा

इ मल्ती विदेहराजक या का निष्क्रमण सकल्प

७६ क शक्रानन का कपन

ख मल्ती अहत का एक वय पयमन धमण ब्रह्मणा को भोजनमान
और इच्छित दान स्वयंदान

७७ क निष्क्रमण महोत्सव का वषण

ख मल्ती अहत का स्वयमेव पञ्चमुष्टि केश सुवन गङ्गा का केश
ग्रहण

ग मल्ती अहत की दीक्षा निधि मल्ती अहत का पूर्वाह्न में सामा
यिक चारित्र ग्रहण करना

घ मन पयवपान की प्राप्ति

इ छ सो त्रिवर्षी और आठ राजकुमारों का नाथ में दीक्षित होना

च नदीश्वर द्वीप में अष्टाह्निका दीक्षा महोत्सव

छ मल्ती अहत की दीक्षा के दिन ही अष्टराह्न में केवल जात होना

७८ क नदीश्वर द्वीप में अष्टाह्निका केवलमान महोत्सव

ख कुम राजा का धमणोपासक होना मल्ती अहत का चर्मोपदेश
जितशत्रु आदि छ राजाओं का दीक्षित होना० मल्ती अहत-
का विहार

ग मल्ती अहत क गण

गणधर

धमण

धमनिर्वा

धावक

धात्रिकाम

चौद पूव धारी मुनि

अवधिरानी मुनि

केवल जानी

ईन्द्रियलब्धि सम्पन्न अनि

मल्ली अर्हत के मनः पर्यव ज्ञानी
 „ वादलद्वि सम्पन्न मुनि
 „ अनुरत्तरोपपातिक मुनि
 दो प्रकार की अंतकृत् भूमियाँ

घ- मल्ली अर्हत की ऊँचाई

„ का वर्ण
 „ का संस्थान
 „ का सहनन

ङ- मल्ली अर्हत का विहार क्षेत्र

च- सम्मेत शैल शिखर पर भ० मल्ली अर्हत की अन्तिम आराधना

छ- मल्ली अर्हत का गृहवास

„ केवल पर्याय
 „ पूर्णायु
 „ के साथ निर्वाण होने वालों की संख्या

नंदीश्वर द्वीप में अष्टाह्निका निर्वाण महोत्सव

नवम मार्कंदी अध्ययन

७६ क- उत्थानिका, चंपा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, मार्कंदी सार्थवाह, भद्रा

भार्या, सार्थवाह के दो पुत्र, जिन पालित और जिन रक्षित

ख- व्यापारार्थ जिनपालित और जिनरक्षित की बारहवीं बार लवण
 समुद्र यात्रा

ग- यात्रा में विघ्न. पोत भंग

८० क- फलक के सहारे जिन पालित और जिन रक्षित का रत्नद्वीप के
 तट पर पहुँचना

ख- रयणादेवी का दोनों भाईयों को अपने साथ ले जाना और
 अपने प्रासाद में रखना

८१ क- लवण समुद्र की सफाई के लिये लवणाधिप सुस्थित देव का
 रयणादेवी को आदेश देना

त अरहन्त, अमणोरामक की व्यापार के लिए सवण समुद्र की यात्रा

ग- जहाज में अरहन्त की एक देव द्वारा परीक्षा तथा हठ अरहन्त को दो दिव्य कुण्डल युगतों की भेंट

७० क- अरहन्त का मिथिला ममन

ख- महाराजा कुम्भ को बहुमुख्य पदार्थों की तथा दिव्य कुण्डल युगत की भेंट

ग- अरहन्त का अम्मा मप्रयागमन महाराज चन्द्रदास की एक दिव्य कुण्डल की भेंट

घ- मन्त्री विदेहराजकन्या के सम्मुख म अरहन्त का निवेदन

ङ मन्त्री विदेहराजकन्या की याचना के लिये महाराज चन्द्र-
दास का दूत सम्प्रेषण

७१ क कुण्डल जनपद सावधी नगरी रुक्मी राजा चारिणी मुवाहु-
नाम की राज कन्या

ख मुवाहु राज कन्या का धार्मिक स्नान महोत्सव

ग वषधर द्वारा मन्त्री विदेहराज कन्या की महिमा

घ मन्त्री विदेहराजकन्या की याचना के लिये रुक्मी राजा का
मिथिला को दूत भेजना

७२ क काशी जनपद वाराणसी नगरी राज राजा

ख मन्त्री विदेहराजकन्या के दिव्य कुण्डल का सम्बोधन

ग कुण्डल की सभी की टीक करने के लिए महाराजा कुम्भ को
स्वर्णकारी का आदेश

घ कुण्डल की भग्न सवि को ठीक करने में अममन सभी स्वर्णकारी
को निर्वासित करना

ङ निर्वासित स्वर्णकारी का वाराणसी निवास

च मन्त्री विदेहराजकन्या के सम्मुख मे काशी राज की जानकारी

छ मन्त्री विदेहराजकन्या की याचना के लिये काशी राज का

मिथिला को दूत भेजना

७३ क- कुरजनपद, हस्तिनापुर नगर, अदीन शत्रु राजा

ख- मिथिला में महाराजा कुम्भ के मुपुत्र मल्नदिन कुमार द्वारा

चित्र नभा निर्माण करने का आदेश

ग- एक चित्रकार द्वारा मल्ली विदेहराजकन्या के चित्र का निर्माण

घ- मल्नदिन कुमार के आदेश से चित्रकार के अंगुष्ठ का छेदन

तथा दैननिकाये का दण्ड

ट- निर्वाणित चित्रकार का हस्तिनापुर में आगमन

न- निष्कापित चित्रकार का अदीनशत्रु को मल्ली विदेहराजकन्या के चित्रपट का दिखाना

छ- मल्ली विदेहराजकन्या की याचना के लिये अदीनशत्रु का मिथिला को दूत भेजना

७४ क- पांचाल जनपद, कपिलपुर नगर, जितशत्रु राजा, धारिणी राणी

ख- चार बंदों की पारंगता योगा नाम की परिश्राजिका द्वारा

मल्ली विदेहराजकन्या के नग्नुन नौचधर्म का प्रतिपादन

ग- मल्ली विदेहराजकन्या द्वारा-रत्न रजित वस्त्र के उदाहरण से नौचधर्म का परिहार

घ- अपमानित योगा परिश्राजिका का कपिलपुर में आगमन

ट- जितशत्रु राजा को कूपमण्डूक का उदाहरण देकर योगा ने मल्ली विदेहराजकन्या का परिचय दिया

न- मल्ली की याचना के लिये—जितशत्रु ने मिथिला को दूत भेजा

७५ क- प्रतिबुद्धि आदि छहों राजाओं द्वारा मिथिला के चारों ओर घेरा डालना

ख- छहों राजाओं का मोहनघर में प्रवेश. मल्ली कुमारी द्वारा

राजाओं की प्रतिबोध एवं पूर्वजन्म का वृत्तान्त कथन

ग- छहों राजाओं की जातिस्मरण (पूर्व जन्म की स्मृति)

घ- प्रतिविसर्जित छहों राजाओं का स्व स्व स्थान में गमन

इ मन्त्री विदेहराजका का निष्क्रमण स्वरूप

३६ क गकामन का कथन

ख मन्त्री अहृत का एक वर्ष पयन्त श्रमण ब्रह्मणा की भोजनदान
और इच्छित दान स्वयम्भान

३७ क निष्क्रमण महोत्सव का वचन

ख मन्त्री अहृत का स्वयम्भ पञ्चमुष्टि केश सुवन गक का केश
ग्रहण

ग मन्त्री अहृत की दीक्षा निधि मन्त्री अहृत का पूर्वाह्न में सामा
यिक चारित्र्य ग्रहण करना

घ मन पदवचन की प्राप्ति

ङ छ सो मियाँ और आठ राजकुमारों का साथ में दीक्षित होना

च न गीश्वर द्वीप में अष्टाङ्गिका दीक्षा महोत्सव

छ मन्त्री अन्त को दीक्षा के दिन ही अपराह्न में वचन जान होना

३८ क नगीश्वर द्वीप में अष्टाङ्गिका केवलमान महोत्सव

ख कम राजा का श्रमणोपास्य होना मन्त्री अहृत का धर्मोपदेश
शितशत्रु आदि छ राजाओं का दीक्षित होना० मन्त्री अहृत
का दिग्ग

ग मन्त्री अन्त क गण

गणधर

श्रमण

श्रमणियाँ

श्रावक

श्राविकाय

चौदह पूर चारी मुनि

अनभिज्ञानी मुनि

केवल पानी

चत्रियलब्धि सम्पन्न मुनि

मल्ली अर्हत के मनः पर्यव ज्ञानी
 ,, वादलट्ठि सम्पन्न मुनि
 ,, अनुरत्तरोपपातिक मुनि
 दो प्रकार की अंतकृत् भूमियाँ

घ- मल्ली अर्हत की ऊँचाई

,, का वर्ण

,, का संस्थान

,, का संहनन

ङ- मल्ली अर्हत का विहार क्षेत्र

च- सम्मेत शैल शिखर पर भ० मल्ली अर्हत की अन्तिम आराधना

छ- मल्ली अर्हत का गृहवास

,, केवल पर्याय

,, पूर्णायु

,, के साथ निर्वाण होने वालों की संख्या

नंदीश्वर द्वीप में अष्टाह्लिका निर्वाण महोत्सव

नवम मार्कंदी अध्ययन

७६ क- उत्थानिका, चंपा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, मार्कंदी सार्थवाह, भद्रा
 भार्या, सार्थवाह के दो पुत्र, जिन पालित और जिन रक्षित

ख- व्यापारार्थ जिनपालित और जिनरक्षित की बारहवीं बार लवण
 समुद्र यात्रा

ग- यात्रा में विघ्न. पोत भंग

८० क- फलक के सहारे जिन पालित और जिन रक्षित का रत्नद्वीप के
 तट पर पहुँचना

ख- रयणादेवी का दोनों भाईयों को अपने साथ ले जाना और
 अपने प्रासाद में रखना

८१ क- लवण समुद्र की सफाई के लिये लवणाधिप सुस्थित देव का
 रयणादेवी को आदेश देना

- ख- दोनों भाइयों को दक्षिण दिशा के वन खण्ड में जाने का निषेध
 ८२ दोनों भाइयों को पूर्वादि कम में दक्षिण दिशा के वन खण्ड में जाना और शूनारोपिड गुरु से वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त होना
 ८३ क- सेतक यज्ञ की उपासना
 ख घण्टे पर आठवें दोनों भाइयों का चरानगरी के निचे प्रस्थान
 ८४ चन्द्रचित्त जिनरक्षित पर रथभादेवी का अग्नि प्रहार
 ८५ निर्द्वय निर्द्वयों को जिनरक्षित के समान चन्द्रचित्त में होने का भ० महावीर का उपदेश
 ८६ हृदयना जिनपालित का स्वर्गद्वार गमन
 ८७ ग- भ० महावीर का समवसरण जिनपालित का धर्मध्वज करना प्रव्रज्या लेना देवमय महाविदेह से मुक्ति
 ख निर्द्वय निर्द्वयों को जिन पालित के समान चन्द्रचित्त रहने का भ० महावीर का उपदेश । उपसंहार

दशम चन्द्र अध्ययन

आत्मगुणों की वृद्धि

८८ क उत्थानिका—

ख कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष के चन्द्र की हानि वृद्धि के समान श्रीक के निज गुणों की हानि वृद्धि । उपसंहार

एकादशम दावद्रव अध्ययन

जिन भार्य की आराधना विराधना

८९ क उत्थानिका—

ख उपमा दावद्रव दृष्ट उपमेय-आवक धमभादि
 ग उपमा समुद्र का वायु, उपमेय अन्यतिर्थी
 घ उपमा द्वीप का वायु, उपमेय स्वतिर्थी

ड- देश आराधक, देश विराधक

सर्व आराधक, सर्व विराधक । उपसंहार

द्वादशम परिखोदक अध्ययन.

पुद्गल परिणति

६१ क- उत्थानिका, चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी राणी, युवराज जितशत्रु (अदीन शत्रु,) सुबुद्धि अमात्य, अति दुर्गंधित परिखोदक

६२ क- सुबुद्धि अमात्य का परिखोदक को परिष्कृत करवाना तथा राजा को सेवन कराना

ख- पुद्गल परिणति का ज्ञापन

ग- जितशत्रु राजा को प्रतिबोध. व्रतधारणा

घ- स्थविरों का आगमन, जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य की प्रव्रज्या

ड- दोनों का ग्यारह अंग अध्ययन. अनेक वर्षों की श्रमण पर्याय एक मास की संलेखना. दोनों को शिवपद की प्राप्ति

त्रयोदशम द्दुर् अध्ययन

सत्संग के अभाव में आत्मगुणों का अपकर्ष

६३ क- उत्थानिका-राजगृह. गुणशील चैत्य

ख- भ० महावीर का समवसरण-धर्मकथा

ग- द्दुर्देव द्वारा नाट्य प्रदर्शन

घ- भ० गौतम की जिज्ञासा. द्दुर् देव का पूर्वभव

ड- महाराज श्रेणिक, नंद मणिकार का धर्म श्रवण. व्रतधारणा

च- भ० महावीर का विहार

छ- नंद मणिकार को मिथ्यात्व की प्राप्ति

ज- अप्रमभक्त तप में प्यास. व्याकुलता

अ- बंभारगिरि की तलहटी में नदा पुष्करिणी तथा चार वन

१ पश्चिम दिशा के वनक्षण्ड में चित्रसभा का निर्माण

२ दक्षिण दिशा के वनक्षण्ड में भोजनशाला ,

३ पूर्व दिशा के वनक्षण्ड में चिकित्साशाला ..

४ उत्तर दिशा के वनक्षण्ड में अलखार सभा

६४ क- नद मणिहार के तटीर में सोपह रोगों की उत्पत्ति सोपह रोगों के नाश

ख नद की सस्य नदा पुष्करिणी में द्युरूप में जग

ग नद की प्रशसा सुनने पर द्युर को पुनःप की स्मृति यमा रावन तपश्चर्या

६५ क म० महावीर का समवसरण भगवानकी वदना के लिए जाते समय द्युर का अश्व के पैर से घायल होना

ख द्युर की अन्तिम आराधना सोपह वन्य में उपवास चारपथ की स्थिति महाविदेह में जग और निर्वाण

चतुर्दशम तैत्तलीपुत्र अध्ययन

६६ क क्षत्रानिका तैत्तलीपुत्र प्रमदवन, कनकरथ राजा, पद्मावती देवी तैत्तली पुत्र अमात्य कनाद स्वयंवार अश्व भार्या पोट्टिला पुत्री

ख तैत्तली पुत्र का पोट्टिला से विवाह

६७ क कनकरथ राजा का पुत्रा को अगविरस करना

ख तैत्तली पुत्र द्वारा पोट्टिला और पद्मावती की सतनियों में परिवर्तन

६८ तैत्तली पुत्र का पोट्टिला से स्मृ होता पोट्टिला की दातदेने में अभिरुची

६९ मुद्रता भार्या का आयमन शरीकरण के लिए पोट्टिला की पृच्छा मुद्रता का उपदेश पोट्टिला का अमणोपासिका होना

१०० क पोट्टिला की प्रवस्था ग्यारह अंगों का अध्ययन अनेक वर्षों

का ध्रमण-जीवन. एक मास की संलिप्तता. देवनोक में
उपपात

१०१ क- कनकरथ राजा की मृत्यु

ख- कनकध्वज का राज्याभिषेक. तैत्तली पुत्र के सन्मान की वृद्धि

१०२ क- पोट्टिनदेव का तैत्तलीपुत्र को प्रतिबोध देना

ख- कनकध्वज राजा का तैत्तली पुत्र में विमुक्त होना

ग- तैत्तलीपुत्र के गृह में तैत्तली का अनादर

घ- विष, अग्नि, फांसी, पानी, अग्नि से आत्महत्या के लिये तैत्तली
पुत्र के प्रयत्न

ङ- प्रव्रज्या के लिये पोट्टिल देव की प्रेरणा

१०३ क- तैत्तली पुत्र को जातिस्मरण

ख- पूर्वभय का वर्णन, जम्बूद्वीप, महाविदेह, पुष्पावती विजय,
पुष्करिकणी राजधानी, महापद्म राजा, स्वविरों के पास
प्रव्रज्या, चौदह पूर्व का घान, अन्तिम आराधना, महाशुक्रकल्प
में उत्पन्न. च्यवन. तैत्तलीपुत्र रूप में उत्पन्न

ग- तैत्तली पुत्र की प्रव्रज्या. चौदह पूर्व का ज्ञान. केवल ज्ञान

१०४ क- केवलज्ञान का महोत्सव

ख- तैत्तलीपुत्र मुनि की वंदना के लिए कनक ध्वज राजा का
जाना, धर्म श्रवण करना. व्रत धारणा

ग- तैत्तली का केवल ज्ञान सम्पन्न जीवन. सिद्धपद

पंचदशम नंदीफल अध्ययन

अज्ञात फल के खाने का निषेध

१०५ क- उत्थानिका-चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, घन्ता
सार्यवाह

ख- अहिच्छत्रा नगरी. कनक केतु राजा

ग- घन्ता सार्यवाह का व्यापार के लिये अहिच्छत्रा जाने का संकल्प

- घ अहिन्द्रा के मार्ग में नदीपत्र खाने बात माधिया को मृत्यु
न खाने जाना का बचाव
- ङ निग्रय निग्रयिया को अ० महावीर की गिता
- च अहिन्द्रा के महाराज कनक केतु को बहुभूषण पशुओं की भेंट
कर से मुक्ति
- छ चपानगरी से घना सायबाह का आगमन
- ज स्वविरा का आगमन घना का घमघमन उपरि धुन को गृह
भार सौना प्रवृत्ता गारह अवा का अध्वन अनेक वर्षों
का धमन धोवन एक मास की मनेवना दबनोक में उपवास,
ध्वन, महाविदेह म अम और निवास । उपमहार

षोडशम अपरकका अध्ययन

फलेच्छा का निषेध

- १०६ क उत्पानिका चपानगरी मुभूमिमाग उद्यान
ख तीन शास्त्र और उनकी तीन भाषाएँ
ग नागधी ने निकत अनातु का गोक बनाया परीक्षा के
परवान एकांत म रख दिया
- घ मधुर अनातु का घोर धाक बनाया
- १०७ क घमघम स्वविर का आगमन
ख घमघम अगवार का भिक्षाघ घमन
ग नागधी का कटुक अनातु व्यञ्जन देना
घ अनातु व्यञ्जन आचार्य को दियाया व्यञ्जन परीक्षा खान
का निषेध
- ङ अनातु व्यञ्जन खाने के लिए घम रवि का समान भूमि म
जाना
- च कीर्त्या को हिमा देव कर अनातु व्यञ्जन स्वयं खा लना
घमरवी की मृत्यु

छ- धर्मरुची की शोध

झ- धर्मरुची का सर्वार्थ सिद्ध में उपपात, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

१०८ नागश्री की निन्दा. गृह से निष्कासन. सोलह रोगों की उत्पत्ति. मृत्यु. नरक गति. भव भ्रमण

१०९ चंपा नगरी. मागरदत्त सार्धयाह. भद्राभार्या. नागश्री की आत्मा का मुकुमालिका के रूप में जन्म

११० क- चंपा नगरी. जिनदत्त सार्धयाह. सागर पुत्र

ख- सागर पुत्र का मुकुमालिका से विवाह

१११ मुकुमालिका के अनिष्ट स्पर्श से सागर का स्वगृह गमन

११२ क- भिंगारी की मुकुमालिका सौंपदेना

ख- अनिष्ट स्पर्श से भिंगारी का पलायन

११३ क- मुकुमालिका की दान में अभिरुचि

ख- गोपालिका आर्या का आगमन. मुकुमालिका का धर्म श्रवण प्रयज्या. अध्ययन. ग्राम के बाहर आतापना लेना

ग- गोपालिका आर्या की आताप लेने के लिए निषेधाज्ञा—
मुकुमालिका का न मानना

११४ क- चम्पा नगरी में ललिता गोष्ठी, देवदत्ता गणिका के साथ गोष्ठी पुरुषों की भोग लीला, मुकुमालिका आर्या का निदान करना

११५ क- मुकुमालिका का शरीर-वकुषा होना

ख- उपाश्रय से निष्कासन. पादर्ववति उपाश्रय में निवास

ग- अनेक वर्षों का श्रामण्य पर्याय. पन्द्रह दिन की संलेखना. अकृत्य स्थान की आलोचना न करना

घ- मृत्यु. ईशान कल्प में देवगणिका होना. नव पत्य की स्थिति द्रौपदी कथा

११६ जम्बूद्वीप भरत. पांचाल जनपद. कंपिलपुर. द्रुपद राजा. चुलनी

रानी युवराज पुत्रदम्नकुमार सुसुमानिका श्रीअम्मा का डींग
क कन म अम स्वयंवर रचना
प्रमुन पुम्मा का निमग्गन

- ११० प्रथम दून का इरावति भवना
द्वितीय दून का हस्तिनापुर भवना
तृतीय दून को चम्पानगरी भवना
चतुर्थ दून हस्तिनपति नगरी भवना
पञ्चम दून हस्तिनगरी नगर भवना
षष्ठ दून मन्मथ नगरी भवना
सप्तम दून राजपूत नगर भवना
अष्टम दून बौद्धिक नगर भवना
नवम दून विराट नगर भवना
दशम दून गेय नगरा म

- ११८ क गंगा महानगा क लघीय स्वयंवर मण्डप की रचना
ख स्वयंवर मण्डप म गभी राजाभा का आगमन

- ११९ द्वीपों का स्वयंवर मण्डप म प्रका

- १२० बाब बाण्डवा का वरम आठ हिरण्य बाणि आनि नया आनि
दानियों दहक म भिन्नता

- १२१ क पाइ राजा बाब बाण्डव और द्वीपों आनि का हस्तिनापुर
आना

ख कामदेव द्वारा नारद का सम्मान क विमर्शन

- १२२ क बन्धुन नाग का हस्तिनापुर आगमन बाण्डुराजा आनि के
द्वारा नारद जी का आन्तर सम्मान

ख द्वीपों द्वारा नारद का अनान्द

- १२३ क नाग का द्वीपों से बन्ता लेने का स्वल्प

ख मानकीसण्ड द्वीप समरकका राजधानी पञ्चनाम राजा साग
सौ रानियों का अन्त पुर युवराज गुनाम

- ग- नारद का पद्मनाभ के अतःपुर में प्रवेश
 घ- अपने अन्तःपुर के सम्बन्ध में पद्मनाभ की जिज्ञासा
 छ- नारद ने पद्मनाभ की कृपमण्डूक की उपमा दी
 च- द्रौपदी के रूप की महिमा. मित्रदेव द्वारा मुक्त गुधिष्ठिर के समीप ने द्रौपदी का साहरण
 छ- राजकन्याओं के साथ द्रौपदी की तप-आराधना
 १२४ क- जागृत गुधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी की घोष
 ए- द्रौपदी की घोष के लिये कुंती की श्री कृष्ण से प्रार्थना
 ग- श्री कृष्ण का आदवाहन
 घ- कच्छुत्स नारद का आगमन
 श्री कृष्ण को द्रौपदी का पता देना
 छ- पाण्डवों को समैन्य पूर्व वैतानी समुद्रतट आने का आदेश
 च- श्री कृष्ण का समैन्य पूर्व वैतानी पहुँचना
 छ- श्री कृष्ण का अष्टमभवत तप. मुस्थित देव का आगमन
 ज- श्री कृष्ण और पाण्डवों के रथों का अमरकंका पहुँचना
 छ- पद्मनाभ की सूचना देने के लिये शङ्ख दूत का भेजना
 झ- पद्मनाभ के साथ पाण्डवों का युद्ध
 ट- श्री कृष्ण का शंखनाद, धनुषटंकार. पद्मनाभ का आत्म समर्पण
 ठ- पाण्डवों और द्रौपदी को साथ लेकर श्रीकृष्ण का भारत की ओर प्रयाण
 १२५ क- घातकीश्वण्ट द्वीप का पूर्वार्ध. भरत क्षेत्र. चंपानगरी. पूर्ण भद्र चैत्य
 ख- कपिल वामुदेव
 ग- भ० मुनिसुव्रत का समवसरण. धर्म श्रवण करते समय शंख-नाद श्रवण से कपिल वामुदेव के मन में उत्पन्न जिज्ञासा का-भ० मुनिसुव्रत द्वारा समाधान
 घ- एक क्षेत्र में एक साथ दो अरिहंत, चक्रवर्ती, बलदेव और

वामुदेव के होने का निषेध तथा मिलने का निषेध

इ- श्री कृष्ण और कपिन वामुदेव का पाचत्रय दशनाद से मिलन

च- कपिन वामुदेव द्वारा पचनाम का देश निष्पासन और पचनाम के पुत्र का राज्याभिषेक

१२६ क- पाण्डवा का नौका द्वारा गया नदी उत्तीर्ण होना जब परीक्षा के विरे श्री कृष्ण हेतु नौका न ल जाना

ख- कृष्ण श्री कृष्ण द्वारा पाण्डवों के रथों का क्षुण्ण कर देना देश निकाला देना और रथमदन कोन की स्थापना करना

ग- श्री कृष्ण का मर्मन्य द्वारिका पहुँचना

१२७ क- पाण्डवों का हस्तिनापुर में आगमन अमरकका की विजय पाण्डु राजा से यात्रा के क्षान्त का निवेदन

ख- पाण्डुराजा और कुन्तीदेवी का द्वारिका आगमन

ग- श्री कृष्ण का पाण्डु-मथुरा बसाने का आदेश

घ- दक्षिण समुद्र तट पर पाण्डु मथुरा बसाना और उसमें निवास करना

१२८ क- द्रौपदी के आत्मज्ञ पण्डुमेन का जन्म

ख- अध्ययन विवाह मृकशत्रु पद

ग- स्वविरा का आगमन पाण्डवा का समक्षस्थ प्रव्रज्या लेने का सङ्कल्प

घ- पाण्डुमेन का राज्याभिषेक

इ- पाण्डवों की प्रव्रज्या चौदह पुत्रों का अध्ययन तपश्चर्या

१२९ द्रौपदी की सुत्रता आर्या के ममाप प्रव्रज्या म्मरह अगो का अध्ययन तपाराधना

१३० क- स्वविरा का पाण्डु मथुरा के सह्यासवन से विहार

ख- भ० नेमनाथ इस समय सौराष्ट्र में है यह सवाद पाण्डव मुनिया को प्राप्त हुआ

ग- भ० नेमनाथ की चंदना हेतु जाने के लिए स्वयिरीं से आशा प्राप्त करके विहार करना

घ- पाण्डव मुनिषों का हस्तिनापुर नगर के सहस्राग्रवन में पहुँचना

ङ- पाण्डव मुनिषों को भ० अरिष्ट नेमनाथ के (मैलमिसर पर) निर्वाण होने के समानार मिलना

च- पाण्डव मुनिषों की शत्रुञ्जय पर्वत पर अंतिम आराधना दो मास की मंत्रितना, सिद्धपद की प्राप्ति

१३१ क- द्रौपदी आर्या की अन्तिम आराधना, ब्रह्मलोक कल्प में द्रुपद देव होना, दस सागर की स्थिति, ज्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

सप्तदशम अर्ध अध्ययन

१३२ क- उत्थानिका, हस्तिशीर्ष नगर, कनककेतु राजा

ख- सांयात्रिक (नीका) व्यापारियों की लवणसमुद्र यात्रा

ग- अकालबाधु—निर्गमिक का दिग्भूत होना

घ- इन्द्रादि की पूजा करना, दिशाघोष होने पर कालिक द्वीप पहुँचना

ङ- कालिक द्वीप में हिरण्य स्वर्ण आदि की गान तथा अश्वरत्न देखना

च- हिरण्य स्वर्ण आदि बहुमूल्य पदार्थ जहाजों में भरकर हस्ति-शीर्ष नगर पहुँचना

छ- कनककेतु महाराजा को बहुमूल्य पदार्थों की भेंट

१३३ क- कालिक द्वीप के अश्वरत्नों के सम्बन्ध में महाराजा से निवेदन

ख- राजपुरुषों के साथ जाकर अश्वरत्न लाने का राजा का आदेश

ग- शब्द गन्ध रस एवं स्पर्शजन्य आसक्ति की अभिवृद्धि करने वाले पदार्थ जहाज में भर कर सांयात्रिक व्यापारियों का कालिक-

द्वीप पहुँचना

घ उत्कृष्ट धन्य गंध रस रस्य के पुंगवों से अश्व को आधीन करना

ङ निग्रय निग्रयियों को मगवान महावीर की निज्ञा

१३४ क अश्वरत्न लेकर हस्तिग्रीव नगर पहुँचना

ख अश्वगिणियों से अश्वों की निज्ञा लिखाना

ग निग्रय निग्रयियों को म० महावीर की निज्ञा

१३५ इ इन्द्रियोनुप और इन्द्रियविजयी के मुनावगुण । उपसंहार

अष्टादशम सुसुमा अध्ययन

१३६ क उपायिका राजगृह बना सायबाह भद्रा भार्या सायबाह

धन्ना-के पाच पुत्र और एक पुत्री सुसुमा दास पुत्र चिलात

ख चोरी की आत्म के कारण चिलात का घर से निकालना

१३७ ग मिहुगुफ नाम की चोर पत्नी पाच सौ चोरी का अधिपति
विजय चोर

ख चिलात विजय का प्रियशिष्य बना विजय स उसने अनेक चोर
बिछाए सीन्धी और विजय की मृदु के परवाना उसका उत्तरा
धिकारी बना

१३८ सावित्रा सहित चिनात ने धना सायबाह के घर चोरी की
और सुसुमा का अपहरण किया

१३९ क ग्राम रक्षक को साथ लेकर धना सायबाह और उसके पाच
पुत्र ने चिलात का पीछा किया

ख चिनात सुसुमा का मस्तक काट कर ले भागा

ग मूत्रा प्यासा चिलात अन्वी में भर गया

घ निग्रय निग्रयियों को म० महावीर की निज्ञा

ङ सुधा पिपासा स पीडित धन्ना सायबाह और उसके पुत्रों ने
बहूत सुसुमा के बसेवर को पकड़ कर लाया

च धन्ना और उसके पाचों पुत्रों का राजगृह में आगमन

१४० क- भ० महावीर का समवसरण, घन्ना सार्थवाह का धर्मश्रवण, प्रव्रज्या ग्रहण, इग्यारह अंगों का अध्ययन, एक मास की संलेखना, सौधर्म देवलोक में देव होना, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

ख- निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को भ० महावीर की धर्मशिक्षा । उपसंहार

एकोनविंशतितम पुण्डरीक अध्ययन

१४१ क- उत्थानिका-जम्बूद्वीप. पूर्व विदेह. पुष्कलावती विजय. पुण्डरिकिणी राजधानी. नलिनी वन उद्यान. महापद्म राजा. पद्मावती रानी. पुण्डरीक और कुण्डरीक दो राजकुमार

ख- पुण्डरीक युवराज

ग- स्थविरों का आगमन. धर्मश्रवण. पुण्डरीक को राज्यपद. कुण्डरीक को युवराजपद. महापद्म की प्रव्रज्या. चौदहपूर्व का अध्ययन-यावत्-सिद्धपद

१४२ स्थविरों का आगमन. धर्मश्रवण. पुण्डरीक का श्रमणोपासक बनना. कुण्डरीक की प्रव्रज्या. स्थविरों का विहार

१४३ क- पित्तदाह से पीड़ित कुण्डरीक मुनि का स्वास्थ्य लाभ के लिए पुण्डरीकणी में आगमन. चिकित्सा. स्वास्थ्य लाभ. मनोज्ञ पदार्थों में आसक्ति.

ख- पुण्डरीक का समझाना

ग- कुण्डरीक का राज्याभिषेक

१४४ पुण्डरीक की प्रव्रज्या. चारयाम धर्म के आराधना की प्रतिज्ञा पुण्डरिकिणी से विहार. स्थविरों से मिलन

१४५ क- पुण्डरीक को पित्तज्वर. मृत्यु. सप्तम नरक में उत्पत्ति. उत्कृष्ट स्थिति

ख- निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को भ० महावीर की शिक्षा

१४६ क- पुण्डरीक की पुनः चातुर्याम धर्म आराधना करने की प्रतिज्ञा

ख पुण्डरीक को पितृ-धर, सफल अन्तिम आराधना, मृत्यु स्वायं
सिद्ध म उपपात, व्यवन, महाविदेह मे जन्म और निर्वाण
निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को भ० महावीर की शिखा

१४७ उपसंहार । प्रथम धृतस्कन्ध का उपसंहार

द्वितीय धर्मकथा धृतस्कन्ध

३४८ क धृतस्कन्ध उत्थानिका दम वनों के नाम

प्रथम चमरेन्द्र अग्रमहिषी वग

प्रथम काली अध्ययन

ख उत्थानिका

ग राजपूत गुणशील चैत्य धेनिक राजा वेलणा रानी

घ भ० महावीर का समयसरण प्रवचन

ङ- चमर अग्र महिषी काली देवी का आगमन वदन, धृत्य दशन
गमन

च कालीदेवी की क्रुद्धि के सम्बन्ध मे भ० गौतम की जिज्ञाता

छ भ० महावीर द्वारा समाधान कूटागार गाला का दृष्टान्त पूर्व-
भव का वचन

ज अश्वीप भरत आमनरणा नगरी अब ज्ञान वन चैत्य धित
शत्रु राजा

झ काल मायापति कालधीमार्ग स्थला काली पुत्री

ञ भ० पारवनाथ का समयसरण (भ० पारवनाथ की ऊँचारी,
धमन सम्पत्ति धमनी सम्पदा)

ट काली का आगमन धमधमन पुष्पवृत्ता आर्षा के समीप प्रव्रज्या
दशन द्वापारह अंगों का अध्ययन उपसंहार की आराधना

ठ काली आर्षा का पुन पुन अवापन प्रशान्तन

ड पुष्पवृत्ता आर्षा की आज्ञा का उत्तरधन धिन उपाश्रय म निवास

ढ पट्ट स्नि की मरमना अनाचार का प्रायश्चित्त दिये बिना
देह त्याग

ण- चमरचंदा राजधानी के कालावंतसक भवन में उपपात, ढाई पल्य की स्थिति. ज्यवन. महाविदेह से शिवपद की प्राप्ति ।
उपसंहार

द्वितीय राजी अध्ययन

१४६ क- उत्थानिका

- न- राजगृह. गुणशील चैत्य. भ० महावीर का समवसरण प्रवचन
ग- चमर अग्रमहिषी राजी देवी का आगमन, वंदन, नृत्य दर्शन
गमन
घ- भ० गीतम द्वारा पूर्वभव पृच्छा. आनलकणा नगरी. अंबाला
वन चैत्य. जितशत्रु राजा
ङ- राजी गाथापति. राजश्री भार्या. राजी पुत्री
च- भ० पादवंताय का समवसरण. राजी की प्रयज्या-यावत्-शिव-
पद की प्राप्ति । उपसंहार

तृतीय रजनी अध्ययन

छ- उत्थानिका. शेष पूर्व अध्ययन के समान

चतुर्थ विद्युत अध्ययन

ज- उत्थानिका—शेष पूर्व अध्ययन के समान

पंचम मेघा अध्ययन

झ- उत्थानिका—शेष पूर्व अध्ययन के समान । उपसंहार

द्वितीय बलेन्द्र अग्रमहिषी वर्ग

१५० क- उत्थानिका

प्रथम शंभा अध्ययन

ख- उत्थानिका—राजगृह गुणशील चैत्य भ० महावीर का समव-
सरण प्रवचन बलेन्द्र अग्रमहिषी शंभादेवी का वंदन नृत्य दर्शन
गमन

ग म० गौतम द्वारा वृषभ वृष्टा भावम्भी नगर कोष्टक चंय
 त्रिगुण रात्रा र्मा पुत्री ११ वृषवृ
 द्वितीय निगुभा अध्ययन तृतीय रभा अध्ययन
 चतुर्थ निदभा अध्ययन पचम मदना अध्ययन

॥ उगमहार ॥

तृतीय घटनादि अग्रमहिषी वर्ग

१५१ व उगमहार

प्रथम दूता अध्ययन

म उगमहार—गणेश गुणान चंय म० महावीर का समय
 मण्ड प्रवचन परण अग्रमहिषा द्वाग्नी का आगमन द्वा
 द्वा प्रान नमन

ग वृषभ—वारोम्भी नगरी काम महावन परण दूत गायत्री
 द्वितीय भाषा दूता पुत्रा म० शम्भुनाथ का समदमण-वादन
 गिर व की प्राप्ति । उगमहार

द्वितीय कमा अध्ययन तृतीय सैनरा अध्ययन

चतुर्थ सोदामनी अध्ययन पचम इन्द्रा अध्ययन

षष्ठ घना अध्ययन

वृषदेव अग्रमहिषीयो व ६ अध्ययन-वाक्य घोष अग्रमहिषीयो
 व ६ अध्ययन । सबयोग शोषन अध्ययन

चतुर्थ भूतानदादि अग्रमहिषी वर्ग

१५२ व उगमहार—

प्रथम दूता अध्ययन

म उगमहार गणेश, गुणान चंय म० महावीर का समय

सरण, प्रवचन, भूतानंद अग्रमहिषी, रुचादेवी का आगमन,
वंदन, नृत्य दर्शन । पूर्व भव

ग- चंपा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, रुचक गाथापति, रुचक श्री भार्या,
रुचा पुत्री भ० पादर्वनाथ का समवसरण—यावत्—शिवपद
की प्राप्ति

उपसंहार

द्वितीय सुरुचा अध्ययन तृतीय रुचांता अध्ययन

चतुर्थ रुचकावती अध्ययन पंचम रुचकांता अध्ययन

अग्रमहिषियों के ६ अध्ययन—यावत्—महाघोष की अग्रमहि-
षियों के ६ अध्ययन

पंचम पिशाचादि अग्रमहिषी वर्ग

१५३ क- उत्पानिका

प्रथम कमला अध्ययन

ख- उत्पानिका, राजगृह, भ० महावीर का समवसरण पिशाचेन्द्र
की अग्र महीषी कमलादेवी का आगमन, वंदन, नृत्यदर्शन,
पूर्वभव

ग- नागपुर, सहस्रान्नवन, कमल गाथापति, कमलश्री भार्या, कमला
पुत्री, भ० पादर्वनाथ का समवसरण—यावत्—शिव पद की प्राप्ति

द्वितीय कमल प्रभा अध्ययन तृतीय उत्पला अध्ययन

चतुर्थ सुदर्शना " पंचम रूपवती "

षष्ठ बहुरूपा " सप्तम सुरूपा "

अष्टम सुभगा " नवम पूर्णा "

दशम बहुपुत्रिका " एकादशम उत्तामा "

द्वादशम भार्या " त्रयोदशम पद्मा "

चतुर्दशम वसुमती " पंच दशम कनका "

पौडना वनकप्रभा	अध्ययन	सप्तदशम वत्तसा	अध्ययन
अष्टादशम वेतुमती	=	एकोनदशम वखसेना	„
विंशतिम रतिप्रिया	„	एक विंशतितम रोहिणी	„
द्वाविंशतितम नमिता	„	त्रयोविंशतितम ह्री	„
चतुर्विंशतितम पुष्पवती	,	पञ्चविंशतितम भुजगा	„
षड्विंशतितम भुजगवती	,	सप्तविंशतितम महाकच्छा	„
अष्टविंशतितम अपराजित	,	एकोनविंशतम सुषोषा	„
त्रिंशतम विमला	„	एकत्रिंशतम सुस्वरा	„
द्वात्रिंशतम सरस्वती	„		

षष्ठ महाकालेन्द्रादि अग्रमहिषी वर्ग

१५४ पञ्चम वर के समान ३२ अध्ययन । पूरभव—सावेत नगर,
उत्तर कुह उद्यान

सप्तम सूर्य अग्रमहिषी वर्ग

१५५ क उत्पानिका

प्रथम सूरप्रभा	अध्ययन	द्वितीय आतपा	अध्ययन
तृतीय अचिमाती	„	चतुर्थ प्रभकरा	„

पूरभव—अरवपुरी नगरी

अष्टम चन्द्र अग्रमहिषी वर्ग

१५६ उत्पानिका

प्रथम चन्द्रप्रभा	अध्ययन	द्वितीय ज्योत्स्नाभा	„
तृतीय अचिमाती	„	चतुर्थ प्रभकरा	„

पूरभव—मधुरानगरी मनीवनमक उद्यान

नवम शक्र अग्रमहिषी वर्ग

१५७ क उत्पानिका

प्रथम पद्मा अध्ययन द्वितीय शिवा अध्ययन
तृतीय सती अध्ययन चतुर्थ शंख अध्ययन
पंचम रोहिणी ॥ षष्ठ नवमिका ॥
सप्तम अचला ॥ अष्टम अक्षरा ॥

गुरुंभय

प्रथम द्वितीय की श्रावस्ति नगरी

तृतीय चतुर्थ का हरिनापुर

पंचम षष्ठ का कपिलपुर

सप्तम अष्टम का सावेत नगर

दशम ईशानेन्द्र अग्रमहिषी वर्ग

१५८ क- उद्वानिका

प्रथम कृष्णा अध्ययन द्वितीय कृष्णराजी अध्ययन

तृतीय रामा ॥ चतुर्थ रामरक्षिता ॥

पंचम वसु ॥ षष्ठ वसुगुप्ता ॥

सप्तम वसुमित्रा ॥ अष्टम वसुन्धरा ॥

ग- गुरुंभय

ग- प्रथम-द्वितीय की वाराणसी नगरी

तृतीय-चतुर्थ की राजगृह नगरी

पंचम-षष्ठ की श्रावस्ति नगरी

सप्तम अष्टम की कौशाम्बी नगरी

१५९

उपसंहार

+++++

जहा आसाविणि नाव जाइ अधो दुरुहिया ।
इच्छई पारमागतु, अतरा य विसीयइ ॥
एव तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।
सोय कसिणमावन्ना, आगतारो महड्ढय ॥
इम च घम्ममायाय, कासवेण पवेइय ।
तरे सोय महाघोर, अत्तत्ताए परिव्वए ॥

सुवहस्य अ० ९ प० ११

+++++

पमो वदित्तम

धर्मकथानुयोग प्रधान उपासकदशांग

श्रुतसंक्षेप	१
साधन	१०
उद्देशक	१०
पद	११ साध १२ हजार
उपलब्ध पाठ	२१२ श्लोक परिमाण
नव मूत्र	२३२
पञ्च मूत्र	×

क्रमनाम	प्रयोगोपासक	भाषा	गोपना	पत्र	उपपन्न	विमान
१ साहित्यप्रधान	प्राप्त	विमानना	२३३	१२	श्री १	धर्म
२ साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	१२	श्री १	धर्म
३ साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	२४	॥	धर्म
४ साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	१२	॥	धर्म
५ साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	१२	॥	धर्म
६ साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	१२	॥	धर्म
७ साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	१२	॥	धर्म
८ साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	१२	॥	धर्म
९ साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	१२	॥	धर्म
१० साहित्यप्रधान	प्राप्त	भद्रा	६ मत्र	१२	॥	धर्म

श्रमणीपासक पचाचार अतिचार तालिका

शानाचार क अतिचार	गुणनाचार क १३ अतिचार
स १० म ८ अतिचार	८ दानाचारा का अनाचरण
विस्तार से १४ अतिचार	९ दण्डानिचारा का आचरण
चारित्र्याचार के १२२ अतिचार	तपाचार क १० अतिचार
१० हास्य वचनानिचार	११ माह्य और अम्बुस्नर तपा का अनाचरण
१५ कर्मान्त	१२ ममेचना के अतिचार
३२ सामायिक के दोष	२१ कायो मय के दोष
१८ पीपय के दोष	३२ अम्बुना के दोष

चार्याचार के छान अतिचार

मन वचन काया से सगुन होते हुए
ज्ञान दान चारित्र्य
और तपाचार का आचरण न करना

उपासक द्वारा और आसक्त-भूत से उपरु का अतिचारा का वर्णन है ।

उपासकदशांग विषय-सूची

प्रथम आनन्द अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- १ उत्थानिका-चम्पानगरी, पूर्णभद्र चैत्य
- २ क- आर्यसुधर्मा और जम्बू
ख- दश अव्ययनों के नाम
- ३ वाणिज्यग्राम, दूतिपलाश चैत्य, आनन्द गाथापति
- ४ क- आनन्द की सम्पत्ति के तीन विभाग
ख- चार व्रज
- ५ आनन्द का समाजिक जीवन
- ६ आनन्द की पत्ति शिवानन्दा
- ७ कोत्लाक सन्निवेश
- ८ आनन्द के स्वजन
- ९ क- भ० महावीर का समव्रशरण
ख- राजा कौणिक (जितशत्रु) का धर्मश्रवणार्थं गमन
- १० भगवत् धर्मश्रवणार्थं आनन्द का जाना
- ११ भ० महावीर की धर्मकथा
- १२ आनन्द की व्रत ग्रहण करने की अभिलाषा
- १३ प्रथम अणुव्रत
- १४ द्वितीय अणुव्रत
- १५ तृतीय अणुव्रत
- १६ चतुर्थ अणुव्रत
- १७ पंचम अणुव्रत
- १८ चतुष्पद परिमाण

- १९ क्षेत्रवास्तु परिमाण
- २० शकट परिमाण
- २१ वाहन परिमाण
- २२ क सप्तम उपभोग परिमाण दत्त
स- उपवस्त्र (अंगोछा) परिमाण
- २३ दन्तधावन के लिए दातुन का परिमाण
- २४ फलो का परिमाण
- २५ अम्यग (तैल आदि का मर्दन) परिमाण
- २६ उदटन का परिमाण
- २७ स्नान (माजन) का परिमाण
- २८ वस्त्र परिमाण
- २९ विलेपन परिमाण
- ३० पुष्प परिमाण
- ३१ आभरण परिमाण
- ३२ धूप परिमाण
- ३३ भोजन परिमाण
- ३४ भण्ड्य परिमाण
- ३५ भोदन परिमाण
- ३६ सूप परिमाण
- ३७ घृत परिमाण
- ३८ शाक परिमाण
- ३९ मधुर पदार्थ परिमाण
- ४० व्यञ्जन (जेमन) परिमाण
- ४१ पानी परिमाण
- ४२ मुनवान परिमाण
- ४३ अनपदष्ट विगमन वन
- ४४ अम्यवस्त्र के पाँच अनिचार

- ४५ प्रथम अणुव्रत के पांच अतिचार
 ४६ द्वितीय अणुव्रत के पांच अतिचार
 ४७ तृतीय अणुव्रत के पांच अतिचार
 ४८ चतुर्थ अणुव्रत के पांच अतिचार
 ४९ पंचम अणुव्रत के पांच अतिचार
 ५० षष्ठ दिग्व्रत के पांच अतिचार
 ५१ क- सप्तम उपभोग-परिभोग व्रत के पांच अतिचार
 ख- पन्द्रह कर्मादान
 ५२ अष्टम अनर्थदण्ड व्रत के पांच अतिचार
 ५३ नवम सामायिक व्रत के पांच अतिचार
 ५४ दशम देशावकासिक व्रत के पांच अतिचार
 ५५ एकादशम पोषध व्रत के पांच अतिचार
 ५६ द्वादशम यथासंविभाग व्रत के पांच अतिचार
 ५७ संलेखना के पांच अतिचार
 ५८ क- आनन्द द्वारा द्वादश विध श्रावक धर्म की स्वीकृति
 ख- सम्यक्त्व ग्रहण
 ग- सम्यक्त्वी के ६ आगार
 घ- आनन्द का स्वगृह गमन
 ङ- स्वभार्या शिवानन्दा को द्वादशविध गृहस्थधर्म स्वीकार का
 के लिये प्रेरणा
 ५९ भ० महावीर के दर्शनार्थ शिवानन्दा का जाना
 ६० भ० महावीर की धर्मकथा
 ६१ शिवानन्द का व्रत ग्रहण करना
 ६२ क- आनन्द के सम्बन्ध में गौतम स्वामी की जिज्ञासा और-
 भ० महावीर द्वारा समाधान
 ख- आनन्द का सौधर्मकल्प के अरुणभ विमान में उत्पन्न होग
 घ- वहाँ आनन्द की चार पत्न्य की स्थिति होगी

- ६३ म० महावीर का विहार
 ६४ ज्ञान द का ज्ञानानन्द एव गृहस्थ की आराधना
 ६५ क गृहस्थधर्म आराधना के चौदह वर्ष
 ख पदरहव वर्ष में ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंप कर कोल्हाक सन्निवश में ज्ञातकुल की पीपपशाला में निवृत्तिमय जीवन बिताने का संकल्प करना
 ६६ ६७ ज्येष्ठपुत्र द्वारा ज्ञानन्द के आदेश की स्वीकृति
 ६८ ज्ञानन्द का कोल्हाक सन्निवश की पीपपशाला में जाकर आराधना करना
 ६९ ७० ज्ञानन्द का पश्चिमा आराधन
 ७१ ७२ ज्ञानन्द की संलेखना
 ७३ ज्ञानन्द को अवविज्ञान अवविज्ञान की सीमा
 ७४ गणमान महावीर का पुनरागमन
 ७५ गौतमस्वामी का सन्निवश परिषद
 ७६ ७७ गौतमस्वामी का भिक्षाव्रत आना
 ७८ ८० गणधर गौतम का आनन्द के समीप पहुँचना
 ८१ ज्ञानन्द ने अपने अवविज्ञान की सूचना गौतम स्वामी को दी
 ८२ ८३ गौतम का संदेह
 ८४ ८६ क ज्ञानन्द के अवविज्ञान के सम्बन्ध में म० महावीर द्वारा गौतम के संदेह का समाधान
 ख ज्ञानन्द से समाधि याचना के लिए गौतम को म० महावीर का आदेश
 ८७ क ज्ञानन्द का बीस वर्ष का धर्मोपासक जीवन
 ल इमारत उपासक प्रतिमा की आराधना
 ग ज्ञान ॥ की अन्तिम आराधना एक मांस की संलेखना
 घ सौधम कल्प के अरण्य विमान में ज्ञानन्द का उत्पन्न होना
 ८८ क ज्ञानन्द की आत्मा के सम्बन्ध में गौतम स्वामी की शिक्षा

ख- महावीर द्वारा समाधान—आनन्द की आत्मा का देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

द्वितीय कामदेव अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- ८६ उत्थानिका
- ९० क- चम्पा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितगन्धु राजा
ख- कामदेव गायपाति और भद्राभार्या
ग- कामदेव की सम्पत्ति के तीन विभाग, ६ व्रज
घ- भ० महावीर का समवसरण, आनन्द के समान कामदेव का व्रत ग्रहण
ङ- ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का भार सौंप कर कामदेव का घर्म आराधन
- ९१ मिथ्यादृष्टि देव का उपसर्ग
- ९२-९३ क- देवता द्वारा पिशाचरूप की सृष्टि, पिशाचरूप के प्रत्येक अङ्ग का वर्णन.
ख- पिशाचरूपदेव द्वारा कामदेव की प्रथम बार परीक्षा
- ९४ कामदेव की दृढता
- ९५ पिशाचरूप देव द्वारा कामदेव की दूसरी बार परीक्षा
- ९६-९७ कामदेव की दृढता
- ९८ देव द्वारा हस्तिरूप की सृष्टि, हस्तिरूप का वर्णन, हस्ति रूप देव द्वारा तिसरी बार कामदेव की परीक्षा
- ९९-१०१ कामदेव की दृढता
- १०२-१०७ क- देव द्वारा सर्प-रूप की सृष्टि, सर्परूप का वर्णन.
ख- सर्परूप देव द्वारा कामदेव की चौथी बार परीक्षा
- १०८ कामदेव की दृढता से प्रसन्न देव का स्वरूप दर्शन
- १०९ देव द्वारा कामदेव की प्रशंसा और क्षमा प्रार्थना

- ११० कामदेव द्वारा निरुपसन्न प्रतिमा की पूर्ति
 १११ भ० महावीर व समवसरण
 ११२ कामदेव का दाननाथ जाना
 ११३ ११४ भ० महावीर द्वारा समकथा कामदेव की प्रशंसा निग्रह
 निग्रहिया को उपमन के समय कामदेव के समान दृढ़ रहने
 के लिए प्रेरणा
 ११६ भ० महावीर से कामदेव के कुछ (अज्ञात) प्रश्न
 ११७ भ० महावीर का विहार
 ११८ कामदेव द्वारा श्वारह उपसन्न प्रतिमाओं की आराधना
 ११९ कामदेव का बीस वर्ष का क्षमशोरामक जीवन एक माम
 की संलेखना अरुणाक्ष विमान में उपपाद भार पशुपतम
 की स्थिति
 १२० १२१ क कामदेव के सम्बन्ध में गौतम स्वामी विज्ञप्ति
 ल भ० महावीर का समाधान

तृतीय चुलिनी पिता अध्ययन

प्रथम उद्भाग

- १२२ उद्भागिका—वाराणसी नगरी कोष्ठक चैत्य जिनसन्तु
 राजा
 १२३ क चुलिनी पिता श्यामा भार्या सम्पत्ति के तीन विभाग
 आठ वंश
 ल भ० महावीर की समवसरण द्वादश वत्स ग्रहण कुटुम्ब से
 म विगति आराधना
 १२४ देव का उपमन चुलिनी पिता की दृढ़ता ज्येष्ठपुत्र को
 मारने की धमकी
 १२८ १३० ज्येष्ठपुत्र के वन का दृश्य चुलिनी पिता की दृढ़ता
 १३१ १३४ देव द्वारा माता के प्राणहरण की धमकी से चुलिनी

पिता का विचलित होना

१३५-१४४

माता द्वारा चुलिनी पिता को आश्वासन

१४५

चुलिनी पिता द्वारा प्रायश्चित्त ग्रहण

१४६

चुलिनी पिता द्वारा उपासक प्रतिमाओं की आराधना

१४५

चुलिनी पिता की अन्तिम आराधना. एक मास की संलेखना. अरुणप्रभ विमान में देव होना. चार पल्य की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

चतुर्थ सुरादेव अध्ययन

प्रथम उद्देशक

१४८

क- उत्थानिका—वाराणसी नगरी, कोष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा

ख- सुरादेव गाथापति. सम्पति के तीन भाग, छ व्रज, धन्ना भार्या

ग- भ० महावीर का समवसरण. द्वादश व्रत ग्रहण. कुटुम्ब से निवृत्ति धर्माराधन

१४९

देव द्वारा सुरादेव की परीक्षा. तीनों पुत्रों के वध का दृश्य. सुरादेव की दृढता

१५०-१५३

देव द्वारा सोलह रोग उत्पन्न करने को धमकी से सुरादेव का विचलित होना

१५३

धन्ना भार्या द्वारा सुरादेव को सान्त्वना

१५४

सुरादेव का प्रायश्चित्त. परिवार से निवृत्ति, प्रतिमाओं की आराधना. संलेखना. अरुणकान्त विमान में देव होना. चार पल्य की स्थिति. च्यवन. महाविदेह में जन्म और निर्वाण

पंचम चुल्लरातक अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- १५५ क- उत्थानिका—मानमिका नगरी मसुवन उद्यान त्रिठ
मनु राजा
- ख- चुल्लरातक गाथापति सम्पति के तीन विभाग ॥ खज
बहुना भार्या
- ग- भ० महावीर का समनमरण अनग्रहण
- १५६-१५७ देव द्वारा चुल्लरातक की परीक्षा ज्येष्ठ पुत्र के वध का
द्वय चुल्लरातक की दृष्टा
- १५८-१६० समस्त सम्पति को बाहर फेंक देने की धमकी से चुल्ल-
रातक का विचलित होना
- १६१ भार्या द्वारा मानवना, प्रायश्चित्त, परिवार से वृषवरव
उपासक प्रतिमाओं की अराधना
- १६२ मसेलना अरुणदेष्ठ विमान से उत्पन्न होना चार पक्ष
की स्थिति अपने महाविदेह से जम्भ धीर निर्वाण

षष्ठ कुण्डकोलिक अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- १६३ क- उत्थानिका—काम्पिल्यपुर नगर सह्यासवन उद्यान
त्रिनमनु राजा
- ख- कुण्डकोलिक गाथापति पूषा भार्या सम्पति के तीन
विभाग ॥ खज
- ग- भ० महावीर का समनमरण अनग्रहण
- १६४ अशोक वाटिका में धर्मराचना
- १६५ देव द्वारा कुण्डकोलिक की परीक्षा योशाभव के नियति-

- १६६-१८६ वाद की प्रशंसा. भ० महावीर के पुरुषार्थवाद की अवज्ञा
कुण्डकोलिक द्वारा नियतिवाद का परिहार. पुरुषार्थ का
प्रतिपादन
- १७० परास्त देव का गमन
- १७१-१७२ भ० महावीर का समवसरण. कुण्डकोलिक का धर्मश्रवण
- १७३-१७४ भ० महावीर द्वारा निर्ग्रन्थियों के सामने कुण्डकोलिक की
प्रशंसा
- १७५ कुण्डकोलिक का स्वस्थान गमन. भगवान महावीर का
विहार
- १७६ चौदह वर्ष का कुण्डकोलिक का श्रमणोपासक जीवन.
पंद्रहवें वर्ष में पारिवारिक मोह का त्याग. उपासक प्रति-
माओं की आराधना. संलेखना. अरुणव्यज विमान में देव.
चार पत्थ की स्थिति. ज्यवन. महाविदेह में जन्म. निर्वाण.

सप्तम सद्दाल पुत्र अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- १७७ उत्थानिका—पोलासपुर नगर. महामाघवन. जितमश्रु
राजा.
- १७८ आजीविकोपासक सद्दालपुत्र कुम्भकार.
- १७९ सम्पत्ति के तीन विभाग. एक व्रज.
- १८० अग्नि भार्या
- १८१ मिट्टी के वर्तनों की ५०० टुकानें
- १८२ सद्दालपुत्र द्वारा अशोक बाटिका में आजीविक धर्म की
आराधना
- १८३-१८४ महामाहण की पर्युपासना के लिये एक देव की ओर से
सद्दालपुत्र की प्रेरणा

- १८५ १८६ महापुत्र का मा मा गोपालक का माने का सरला पैदा हुआ किन्तु दूसरे दिन अ० महावीर पवार धर्म बचा
- १८७ अ० महावीर की बदना के निवे महापुत्र का अगनी अगाध बाटिका म ममन
- १८८ महापुत्र की समकथा गुनाना
- १८९ १९० अ० महावीर द्वारा महापुत्र की पूर्वदिन क देवागमन का कृतान्ति गुनाना
- १९१ अ० महावीर म कुम्भकारावण में कुछ दिन के निवे रहने की महापुत्र की विनयी
- १९२ १९३ क प्रपण उदाहरण से समवात महावीर द्वारा निवनिवाद का लच्छन
- १९ महापुत्र का बाव
- १९८-२०७ महापुत्र और अग्निविषा भार्या द्वारा द्वारा वन रहन
- २०८ अ० महावीर का महापुत्रक से विहार
- २०९ २१४ महापुत्र की पुन आशीर्विकीर्णामन बनाने के निवे गोपालक का प्रयत्न
- मोगानक क प्रति महापुत्र का मरम्यवहार
- २१५ २१७ क अ० महावीर म विवाद करने के निवे महापुत्र की माता नक को प्रणय
- अ० महावीर के सामर्थ्य और अपने अगाधमय का गोपा नक दाग मोदाहरण प्रणिपान्न
- २१८ मागानिक का ममन
- २१९ क महापुत्र का चौन्हु वष का अमचोपामक जीवन म प र्हने वष मे परिवार से विरक्ति
- २२० महापुत्र की एक देवदारा परीक्षा
- २२१ २२२ मज पुत्रो के वष का दृश्य महापुत्र की दृष्टा

२२३-२२६ क- अग्निमित्रा के वध की धमकी से सद्दालपुत्र का विचलित होना

ख- अग्निमित्रा द्वारा सद्दालपुत्र को सान्त्वना

ग- सद्दालपुत्र की परिवार से विरक्ति. उपासक प्रतिमाओं की आराधना, संलेखना, अरुणभूत विमान में देव. चार पत्न्य की स्थिति. ज्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

अष्टम महाशतक अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- २२७ उत्थानिका—राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा
- २२८ महाशतक गाथापति, सम्पत्तिके तीन विभाग, आठ व्रज
- २२९ महाशतक के रेवती प्रमुख तेरह भार्यायें
- २३० क- आठ कोटी सुवर्णमुद्रा रेवती को पितृकुल से प्राप्त धन और आठ व्रज
- ख- शेष वारह भार्याओं में से प्रत्येक के पास पितृकुल से प्राप्त एक एक कोटी सुवर्ण मुद्रा और एक एक व्रज
- २३१-२३३ भ० महावीर का समवसरण, महाशतक का व्रत ग्रहण करना
- २३४-२३५ रेवती द्वारा छ सपत्नियों की शस्त्रप्रयोग और छ सपत्नियों की विषप्रयोग से हत्या
- २३६ रेवती की मद्य मांस आहार में आसक्ति
- २३७ राजगृह में अमारि [हिंसा निषेध] का डिण्डिम नाद
- २३८-२४० रेवती का पीहर से गायों के बछड़े मंगवाना तथा उनका मांस पकाकर खाना
- २४१ महाशतक का चौदह वर्ष का श्रमणोपासक जीवन, ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपना, पोषकशाला में धर्म आराधना

२४२-२४५ वायुकी रेवनी का महापतक के प्रति कुम्भिन व्यवहार
महापतक की दशा

२४६-२४८ क- उत्पादक प्रतिमात्रा की आगचना

ख महापतक की अर्धधि ज्ञान, मलमला

२४९ २५१ क मरमग्न रेवनी का पुन महापतक के मधीन पीपचछाना
पहुँचना तथा धर्म आगचना से वाया पहुँचना

ग कुछ महापतक से कहा—रेवनी । तरी अममरीग मे
क्या होगी तथा नू प्रथम नरक से आवेगी

२५२ भयभीत रेवनी का प्रत्यायमन

२५३ रेवनी का नरक ममन

२५४ म० महावीर का समयकरण

२५५ २६० म० महावीर ने महापतक क दिव्य गोलम के माथ लदेरा
मेरा कि रेवनी की कह गये अग्रिय सत्य का प्रायश्चित्त
करो

२६१ महापतक का प्रायश्चित्त करना

२६२ गोलम स्वामी का म० महावीर के मधीन पहुँचना

२६३ म० महावीर का विहार

२६४ क महापतक का तीस वर्ष का धमनोपासक जीवन

ख महापतक का अरुणावनसक विमान म देव होना, चार
पन्थ की स्थिति महाविदेह से जन्म और निर्वाण

नवम नदिनी पिता अध्ययन

एक उद्देशक

२६५ क उत्पानिवा—आवली नगरी कोष्ठक चैत्य, बितसनु राया
ख नदिनीपिता गृहस्थ, सम्पत्ति के तीन विभाग, चार व्रज
अश्विनी भार्या

२६६ २६७ क म० महावीर का समवमरण

रा- नंदिनीपिता का व्रतग्रहण

ग- भ० महावीर का विहार

२६८ क- पद्मरहवें वर्ष में ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपना

त- उपासक प्रतिमाओं की आराधना

ग- बीस वर्ष का श्रमणोपासक जीवन

घ- अरुणगव विमान में उपपात, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

दशम सालिही पिता अध्ययन

एक उद्देशक

२६९ क- उत्पानिका-श्रावस्तीनगरी, कोष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा
ख- सालिही पिता गृहस्थ, सम्पत्ति के तीन विभाग, चार
व्रज, फाल्गुनी भार्या

२७० क- भ० महावीर का समवसरण
ख- सालिही पिता का द्वादश व्रत ग्रहण करना
ग- पद्मरहवें वर्ष में ज्येष्ठपुत्र को गृहभार सौंपना
घ- उपासक प्रतिमाओं की आराधना, संलेखना
ङ- अरुणकील विमान में देव होना, चार पत्य की स्थिति,
च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

२७१ क- दसों श्रावकों को पद्मरहवें वर्ष में विशिष्ट धर्म आरा-
धना का संकल्प

ख- दसों श्रावकों का बीस वर्ष का श्रमणोपासक जीवन
उपसंहार

२७२

२७३

क- एक ध्रुतस्कंध, दस अध्ययन, दस दिन में पठन

ख- दो दिन में इस अंग का पूर्ण स्वाध्याय

अन्तकृद्दशाह्न में वर्णित तप

मुक्तावली-तप

१ से १५ तक तपश्चर्या मध्य म एक-एक उपवास

एक उपवास १६ की तपश्चर्या, एक उपवास

१५ से एक तक तपश्चर्या

प्रत्येक के मध्य म एक एक उपवास

एक परिणामी ११ मास १५ दिन

तपश्चर्या के ६ मास १६ दिन । पारणा के ५६ दिन

चार परिणामी ३ वष १० मास

तपश्चर्या के ३ मास २ मास ४ दिन । पारणा के २३६ दिन

रत्नावली-तप

१ २ ३ उपवास ८ वेल १ से १६ तपश्चर्या ३४ वेल

८ वेल १ से १६ तपश्चर्या उपवास ३ २ १ ।

एक परिणामी ४७२ दिन । तपश्चर्या ३८४ दिन, पारणा ८८ दिन

चार परिणामी ५ वष दो मास २८ दिन

तपश्चर्या ४ मास ३ मास ६ दिन पारणा ३५२ दिन

कनकावली-तप

१ २ ३ उपवास ८ वेल १ से १६ तक तपश्चर्या

प्रत्येक के मध्य म एक-एक उपवास

३४ वेल १६ न एक एक तपश्चर्या

प्रत्येक के मध्य म एक एक उपवास

८ वेल ३ २ १ उपवास

एक परिणामी ७ वष १ मास ६२ दिन

तपश्चर्या ७ वष २ मास १४ दिन पारणा के ८८ दिन

चार परिणामी ५ वष ६ मास २६ दिन, पारणा के ३५२ दिन

धर्मकथानुयोगमय अन्तकृद्दशाक्ष

धुतार कैंड	१
धर्म	८
अभ्ययन	१०
पठ	२३ ताग २८ हजार
उपनिषद् मूल पाठ	१०० अक्षुद्रप् ग्लोक प्रमाण
नव मूल	६१
गाना	११

सप्त सप्तनिदा-तप

प्रथम सप्ताह में एक-एक दात-यावत्-सप्तम सप्ताह में सात-सात दिन । तपश्चर्या के दिन ४६, दात मंत्रा १८६

अष्ट अष्टमिका-तप

प्रथम अष्टाह में एक-एक दात-यावत्-अष्टम अष्टाह में ८-८ दात तपश्चर्या के ६४ दिन, दात मंत्रा २८८.

नवम-नवमिका-तप

प्रथम नवाह में एक-एक दात आहार-यावत्-नवम नवाह में नौ-नौ दात आहार

तपश्चर्या के ८१ दिन, दात मंत्रा ४०५

दशम-दशमिका-तप

प्रथम दशाह में एक एक दात आहार-यावत्-दशम दशाह में दस-दस दात आहार, तपश्चर्या १०० दिन, दात मंत्रा ५५०

सधुसिह निष्क्रीडित-तप

एक से ६ तक तपश्चर्या मध्य म ८, ९ से एक तक तपश्चर्या एक परिपाटी—६ मास ७ दिन, तपश्चर्या ५ मास ४ दिन पारण ३३ दिन चार परिपाटी दो वर्ष २८ दिन तपश्चर्या १ मास ८ मास १६ दिन पारण के १३० दिन

महर्षिसिह निष्क्रीडित-तप

एक से १६ तक तपश्चर्या प्रत्येक व मध्य म पूर्व तप की पुनरावृत्ति । १६ म एक तक तपश्चर्या, प्रत्येक व मध्य म पूर्व तप की पुनरावृत्ति ।

एक परिपाटी १ वर्ष ६ मास १७ दिन

तपश्चर्या १ वर्ष ४ मास १७ दिन पारण के ६१ दिन

चार परिपाटी ६ वर्ष २ मास १२ दिन

तपश्चर्या ४ वर्ष, ६ मास ८ दिन पारण के २४४ दिन

सधु सवतोभद्र तप

एक परिपाटी १०० दिन । तपश्चर्या के ७५ दिन, पारण के २५ दिन चान्पाटी ८०० दिन । तपश्चर्या के ३०० दिन पारण के १०० दिन

महा सवतोभद्र तप

एक परिपाटी २४५ दिन । तपश्चर्या १६६ दिन पारण के ४६ दिन चार परिपाटी २ वर्ष ८ मास २० दिन । तपश्चर्या २ साल ४ दिन पारण के १६६ दिन

भद्रोत्तर तप

एक परिपाटी २०० दिन । तपश्चर्या १७५ दिन पारण के २५ दिन चार परिपाटी २ वर्ष २ मास २० दिन । तपश्चर्या १ साल २१ मास १० दिन पारण के १०० दिन

आयम्बिस्र वर्षमान तप

१ से १०० तक आयम्बिस्र, मध्य म एक एक उपवास तपश्चर्या तीन १४ वर्ष, ३ मास, २० दिन

अन्तकृद्दशाङ्ग विषय-सूची

एक श्रुतस्कंध

१ क- उत्थानिका

प्रथम वर्ग

ग- दस अध्ययनों के नाम

प्रथम गौतम अध्ययन

ग- उत्थानिका—द्वारिका वर्णन. रैचतक पर्वत. नन्दनवन उद्यान.

सुरप्रिय यथायतन. अशोक वृक्ष

घ- कृष्ण वामुदेव वर्णन. द्वारिका वैभव

च- अंधकवृष्णी राजा. धारिणी रानी. गौतमकुमार का आठ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण. दहेज.

च- भ० अरिष्टनेमी का समवसरण. प्रवचन. गौतमकुमार को वैराग्य. दीक्षा. इग्यारह अंगों का अध्ययन. तपाराधन.

भ० अरिष्टनेमी का विहार

गौतमकुमार का पड़िमा आराधन

गुणरत्न तप का आराधन. अन्तिम साधना

शत्रुञ्जय पर्वत पर एक महिने की संतैलना

चारह वर्ष का श्रमण जीवन. निर्वर्ण.

२ क- वृष्णी पिता. धारिणी माता.

द्वितीय	समुद्र	अध्ययन
तृतीय	सागर	"
चतुर्थ	गंभीर	"
पंचम	स्तिमित	"

वर्ग	अक्षर	अध्ययन
सप्तम	कपिल	"
अष्टम	अक्षर	"
नवम	प्रसेनजित्	"
दशम	विष्णु	"

द्वितीय वर्ग

१ क- उत्पानिका वृष्णी निवा पारिषो माता

प्रथम	अक्षर	अध्ययन
द्वितीय	सगर	"
तृतीय	समुद्र	"
चतुर्थ	हिमवत	"
पंचम	अक्षर	"
षष्ठ	घरण	"
सप्तम	सूर्य	"
अष्टम	अभिचन्द्र	"

ए गुणरत्न नव सोलह वर्ष का श्रमण जीवन अंतिम आराधना
शत्रुञ्जय पर्वत पर एक मास की सनेलता निश्चय की प्राप्ति

तृतीय वर्ग

४ क उत्पानिका तेरह अध्ययन के नाम

प्रथम अनोपश अध्ययन

ख उत्पानिका महिलापुर नगर जीवन उद्यान नाम मायापति
मुनमा भार्या अनियश कुमार अध्ययन वृत्ति कथाओं से
पानिग्रहण देह

- इ देवकी महारानी का आनन्दमान श्रीकृष्ण का आनन्दमान
- च श्री कृष्ण का अष्टममन्त्र तब हरिणमयी देव का आराधन
- ए हरिणमयेवी का आनन्दमान
- ज गजमुकुमार का जन्म नामकरण
- झ चार वेग पर पारवत सोमिल बाह्यन सोमश्री बाह्यनी गोमा पुत्री
- ञ सोमा की वन्दु क्रीडा
- ट भ० अरिष्टनेमी का समवसरण प्रवचन
- ठ श्रीकृष्ण के साथ गजमुकुमार का गमन
- ण गजमुकुमार का वरगम्य श्रीकृष्ण द्वारा गजमुकुमार का राया मिश्रक
- त गज मुकुमार की प्रकृषा एक रात्रि की महापत्निमा का आराधन सोमिलद्वारा अंगसग निर्वाण देवतामा द्वारा देहसंस्कार केवलमान तथा निर्वाण का महोत्सव
- थ भगवत्पदना के लिये श्रीकृष्ण का निषमन माय में एक रुद्ध पुरुष पर अनुकम्पा करना एवं सहयोग देना
- द गजमुकुमार के लिए भगवान में प्रान्त भगवान का वधापन वधन मातृधानक की जिनासा भगवान द्वारा सकेत
- ध वियोग व्यथित श्री कृष्ण का रम्भाप्रो में होकर स्वस्थान गमन करते हुए सोमिल की देवता सोमिल की प्रभु भूमि का परिमाजन

नवम सुमुख अध्ययन

- ७ क उधानिका द्वारिका नगरी क्षतदेवराजा धारिणी रानी सुमुख कुमार पचास वषाओं के साथ पाणिग्रहण रहेन
- ख भ० अरिष्टनेमी का समवसरण प्रवचन सुमुख कुमार को वरगम्य प्रकृषा बीस वर्ष का मातृजीवन शत्रुञ्जय पर्वत पर अन्तिम साधना सिद्धपद की प्राप्ति

दशम दुमुल अध्ययन

ग- एकादशम कूपदारक अध्ययन

द्वादशम दारुक अध्ययन

घ- वानुदेव राजा. धारिणी रानी

त्रयोदशम अनाघृष्टी अध्ययन

ङ- वानुदेव राजा. धारिणी रानी.

च- उपसंहार

चतुर्थ वर्ग

८ क- उत्थानिका-दस अध्ययनों के नाम

प्रथम जालि अध्ययन

ख- उत्थानिका-द्वारिका नगरी. वानुदेव राजा. धारणी रानी. जाली कुमार. पचास कन्याओं के साथ विवाह. दहेज

ग- भगवान् अरिष्टनेमी का समवसरण. प्रवचन. जाली कुमार को वैराग्य. प्रव्रज्या. द्वादशाङ्गों का अध्ययन. सोलह वर्ष का साधु जीवन. शत्रुञ्जय पर्वत पर समाधिभरण. निर्वाण की प्राप्ति.

घ- द्वितीय मयाली अध्ययन

तृतीय उपयाली ”

चतुर्थ पुरितसेन ”

पंचम वारिसेन ”

षष्ठ प्रद्युम्न ”

ङ- श्री कृष्ण पिता. रुक्मिणी माता.

सप्तम शाम्ब अध्ययन

च- श्रीकृष्ण पिता. जांबवती माता

- ॐ देवकी महाराजी का आनन्दान श्रीकृष्ण का आभामन
- व श्री कृष्ण का अष्टमभक्त तप हरिणगवेपी देव का आराधन
- ६ हरिणगवेपी का अभिमान
- ज गजमुकुमार का जय नामकरण
- भ चार वेदा का धारण सम्मिल ब्राह्मण मोक्षपी ब्राह्मणी मोमा पुत्री
- ज मोमा की कनक जीटा
- ६ भ० अरिष्टनेमी का समवमरण प्रवचन
- ६ श्रीकृष्ण के साथ गजमुकुमार का गमन
- व गजमुकुमार का वैराग्य श्रीकृष्ण द्वारा गजमुकुमार का राधा भिषेक
- ६ गज मुकुमार की प्रवृत्त्या एक रात्रि की महाप्रशिक्षा का आरा धन मोमिलद्वारा उपमग निर्वाण देवताओं द्वारा देहमस्कार कवलज्ञान तथा निर्वाण का महास्मय
- भ भगवत्पदना के निम्ने श्रीकृष्ण का निषेधन माग से एक रुद्र पुरय पर अनुकम्पा करना एवं महायोग देना
- ६ गजमुकुमार के लिए भगवान भ प्रभ भगवान का यथाय कथन मानुषात्मक की विज्ञाता भगवान द्वारा सकेन
- व नियोग ध्ययित श्री कृष्ण का रज्यात्री म होकर स्नस्थान गमन करते हुए मोमिल को देखना मोमिल की पुत्र भूमि का परि काशन

नवम सुमुख अध्ययन

- ७ क उपायिका द्वारिका नगरी बलदेवराजा धारिणी रानी सुमुख कुमार पञ्चास कथात्री के नाथ शशिब्रह्म रद्देज
- ६ भ० अरिष्टनेमी का समवमरण प्रवचन सुमुख कुमार को वैराग्य प्रवृत्त्या बीस वर्ष का साधुजीवन अनुकम्प पदा पर अनिम साधना सिद्धपद की प्राप्ति

दशम दुमुख अध्ययन

ग- एकादशम कूपदारक अध्ययन

द्वादशम दारुक अध्ययन

घ- वासुदेव राजा. धारिणी रानी

त्रयोदशम अनाघृष्टी अध्ययन

ङ- वसुदेव राजा. धारिणी रानी.

च- उपसंहार

चतुर्थ वर्ग

८ क- उत्थानिका-दस अध्ययनों के नाम

प्रथम जालि अध्ययन

ख- उत्थानिका-द्वारिका नगरी. वसुदेव राजा. धारणी रानी. जाली कुमार. पचास कन्याओं के साथ विवाह. दहेज

ग- भगवान् अरिष्टनेमी का समवसरण. प्रवचन. जाली कुमार को वैराग्य. प्रव्रज्या. द्वादशाङ्गों का अध्ययन. सोलह वर्ष का साधु जीवन. शत्रुञ्जय पर्वत पर समाधिमरण. निर्वाण की प्राप्ति.

घ- द्वितीय मयाली अध्ययन

तृतीय उपयाली ”

चतुर्थ पुरिससेन ”

पंचम वारिसेन ”

षष्ठ प्रद्युम्न ”

ङ- श्री कृष्ण पिता. रुक्मिणी माता.

सप्तम शाम्ब अध्ययन

च- श्रीकृष्ण पिता. जांबवती माता

अष्टम अधिबृहद् अध्ययन

छ प्रभुपति पिता वंदनी माता

नवम सत्यनेमी अध्ययन

दशम दृढनेमी ,

अ समुद्र विजय पिता सिवा माना

अ- उपसहार

पंचम वर्ग

६ क उत्पानिका-हारिका नगरी

प्रथम अध्यायती अध्ययन

ख उत्पानिका-हारिका नगरी श्री कृष्ण वामुदेव अध्यायती रानी

ग भ० अरिष्टनेमी का समवसरण श्री कृष्ण का सपरिकर दशनाथ
गमन प्रवचन

घ भ० अरिष्टनेमी से हारिका के विनाश के सम्बन्ध में श्री कृष्ण
का प्रश्न

ङ- भगवान का उत्तर

च श्रीकृष्ण की बिना प्रवृत्त्याभिलाषा

छ भ० अरिष्टनेमी द्वारा प्रवृत्त्या निवृत्ति का कारण बचन

ज भ० अरिष्टनेमी से श्रीकृष्ण का स्वयं के सम्बन्ध में प्रश्न

झ भ० अरिष्टनेमी का उत्तर श्रीकृष्ण की बिना

ञ भ० अरिष्टनेमी की भविष्यवाणी से श्री कृष्ण की प्रयत्नता

(जम्बुद्वीप भरत आगामी उन्मत्तिणी पुण्ड्र अन्तर्दृष्टि नगरी अमम अग्निहन्)

ट श्रीकृष्ण का हारिका के विनाश के सम्बन्ध में तथा प्रजापति को
प्रवृत्ति होने का निवेदन देना प्रवृत्ति होने वाला के परि
वारों को सुरक्षा देने और दीनाभिलाषा का दीना महो
त्सव करने के सम्बन्ध में घोषणा करने का आदेश

ठ- पद्मावती देवी की यक्षिणी आर्या के समीप प्रव्रज्या. इग्यारह अंगों का अध्ययन. तपश्चर्या का आराधन. बीस वर्ष का श्रमणी जीवन-एक महिने की सलेखना. शिवपद की प्राप्ति

द्वितीय गोरी अध्ययन

तृतीय गंधारी "

चतुर्थ लक्षणा "

पंचम सुसोमा "

षष्ठ जांबवती "

सप्तम सत्यभामा "

अष्टम रुक्मिणी "

नवम मूलश्री अध्ययन

११ क- उत्थानिका, द्वारिका नगरी, रैवतक पर्वत, नन्दनवन, कृष्ण वासुदेव, जांबवती देवी, शम्भु कुमार, मूलश्री भार्या, भ० अरिष्ट नेमी का समवसरण-यावत्-सिद्धगति

ख- दशम मूलदत्ता अध्ययन

१२ षष्ठ वर्ग

क- उत्थानिका, मोतह अध्ययनो के नाम

ख- प्रथम मकाई अध्ययन

उत्थानिका, राजगृह, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, मकाई गाथापति

ग- भ० महावीर का समवसरण. प्रवचन. मकाई गाथापति को वैराग्य. ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंप कर दीक्षित होना, इग्यारह अंगों का अध्ययन. गुणरत्न तप की आराधना. सोलह वर्ष का साधु जीवन, विपुल गिरिपर समाधि मरण, शिवपद

द्वितीय किकिम अध्ययन

तृतीय मोगर पाणी अध्ययन

- १३ क उद्यानिका राजगृह गुणगीन चेत्य श्वनिक राजा चेतना देवी
- ख अजु न मानी वधुमती भार्या पुष्पायम मोगरपाणि यक्ष का
- ग सनिना गोष्ठी
- घ अजु न का वधुमती के साथ पुष्पचयन क लिये जाना
- ङ ननिना गोष्ठी का अजुम सकल्प
- च वधुमति भार्या सहित अजु नमानी द्वारा यक्ष पूजा
- छ मलिता गोष्ठी का अजु न और वधुमती के साथ दुग्धद्वार
- ज यक्ष से अजु न की प्रायना व धन मे मुक्ति
- झ यक्षादिष्ट अजु न द्वारा सनिना गोष्ठी और वधुमती के प्राणा का सार
- ञ अजु न के उपसग से बचने के लिये राजगृह की सुरक्षा व्यवस्था
- ट अजु न द्वारा ६ मास पयत ६ पुष्पो और एक स्त्री का प्रति स्नि महार
- ठ भ० महावीर का समवसरण
- ड भगवान की वदना के लिये श्रमणोपासक सुदशन के आने का इष्ट सकल्प
- ढ म ग मे अजु न का उपसग उपसग निवृत्ति पयन्त सुदशन का कायोत्सग उपसग निवृत्ति
- ण सुदशन और अजु न का स य साथ भगवद वदना क लिये जाना धम द्रवण
- त अजु न का वराम्य प्रत्रयाग्रहण यावज्जीवन छद्म छद्म करने का अभिग्रह
- थ अजु न मुनि की विनाचर्या आश्लेष परीपह राजगृह मे भ० महावीर का विहार

३- अर्जुन मुनि की ६ मास की श्रमण पर्याय, पन्द्रह दिन की संले-
खना, सिद्धपद की प्राप्ति

चतुर्थ काश्यप अध्ययन

१४ क- सोलह वर्ष की श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधिमरण

पंचम क्षेमक अध्ययन

रा- काकंदो नगरी, विपुलगिरि पर समाधिमरण

ग- षष्ठ धृतिधर अध्ययन

सप्तम कैलाश अध्ययन

घ- साकेत नगर, बारह वर्ष का श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधि-
मरण, शिव पद

ङ- अष्टम हरिचंदन अध्ययन

च- नवम वारत्तक अध्ययन

राजगृह, बारह वर्ष का श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधि-
मरण, सिद्धपद

दशम सुदर्शन अध्ययन

छ- वाणिज्य ग्राम, द्वादश वर्ष का निर्ग्रन्थ जीवन
विपुलगिरि पर समाधिमरण

ज- एकादशम पूर्णभद्र अध्ययन

झ- द्वादशम सुमनभद्र अध्ययन

ञ- त्रयोदशम सुप्रतिष्ठ अध्ययन

थावस्ति नगरी, सत्तावीस वर्ष का श्रमण-जीवन, विपुलगिरि
पर निर्वाण

ट- चतुर्दशम मेघ अध्ययन

राजगृह-यावत्-विपुलगिरि पर निर्वाण

८

पञ्चदशम अतिमुक्त अध्ययन

पानागपुरनगर धीवन उद्यान विजय राजा श्रीन्दी अनिमक्त
कुमार भ० मद्रासीर का समवसरण भाग्य गणधर का भिगा
क निण जाना इन् स्थान मे अनिमक्त कुमार का वस्त्रा के
साथ स्नेहना गौरव गणधर का देखना भिगा के निय अन
गुन म रवाना श्रीन्दी का भिगा न्ना सौजस्य गणधर के साथ
अनिमुक्त का भ० मद्रासीर व समीप जाना वस अवग करता
प्रहजिन हान व निय आभा गज करना वराम्य की परीक्षा
अनिमुक्त का गन्नाभिषेक अनिमक्तता दीना मनोरम
इन्धारह अगो का अध्ययन गुणनन सन की आराधना विपुन
गिरि व निधान

९

षोडश अलक्ष अध्ययन

वाराणसी नगरी काम मन्वन च प अलक्ष राजा
भ० मद्रासीर का समवसरण प्रवचन अनन राजा को वराम्य
नेष्टवृत्त व गन्ना दन दीभा लना इन्धारह अगो का
अध्ययन यावन विपुनगिरि पर निधान

सप्तम वर्ग

प्रथम न १ अध्ययन

१०

क उन्ध निजा र अगु गुणनीन व व अनिक राजा मन्तरानी
भ० मद्रासीर का समवसरण प्रवचन नन्दादेवी को वराम्य
प्रवचन इन्धारह अगो का अध्ययन बीस वष का समीप
जीवन सिद्ध गति

११

द्वितीय

नन्मतो अध्ययन

तृतीय

नदीतरा

चतुर्थ

नन्दधनिका

पंचम	महका	अध्ययन
षष्ठ	सुमरुता	"
सप्तम	महामरुता	"
अष्टम	मरुदेवा	"
नवम	भद्रा	"
दशम	शुभद्रा	"
एकादशम	सुजाता	"
द्वादशम	सुमना	"
त्रयोदशम	भूतदिन्ना	"

अष्टम वर्ग

१६ क- उत्थानिका—दश अध्ययनों के नाम

प्रथम काली अध्ययन

ख- उत्थानिका, चंपा नगरी पूर्णभद्र चैत्य, कोणिक राजा, काली देवी माता. भ० महावीर का समवसरण. प्रवचन. काली देवी को वैराग्य. प्रव्रज्या. इत्यागह अंगों का अध्ययन, आर्या चन्दन वाला से आज्ञा प्राप्त करके रत्नावली तप की आराधना करना. आठ वर्ष का श्रमणी जीवन. एक महिने की सलेखना, सिद्ध पद की प्राप्ति

द्वितीय सुकाली अध्ययन

१७ कनकावली तप की आराधना

तृतीय महाकाली अध्ययन

१८ क्षुद्रसिंह निष्क्रीडित तप की आराधना

चतुर्थ कृष्णा अध्ययन

१९ महासिंह निष्क्रीडित तप की आराधना

पञ्चम सुहृत्पा अर्पयन्

- २० गङ्गा गङ्गादिना भिन्नु प्रतिमा की आराधना
अष्ट अष्टमिका भिन्नु प्रतिमा की आराधना
नव नवमिका भिन्नु प्रतिमा की आराधना
दश दशमिका भिन्नु प्रतिमा की आराधना

षष्ठ मङ्गाहृत्पा अर्पयन्

- २१ शुद्ध मङ्गाहृत्पा प्रतिमा की आराधना

सप्तम धोरहृत्पा अर्पयन्

- २२ सप्त मङ्गाहृत्पा प्रतिमा की आराधना

अष्टम रामहृत्पा अर्पयन्

- २३ अष्टम रामहृत्पा प्रतिमा की आराधना

नवम पितृमेनहृत्पा अर्पयन्

- २४ नवम पितृमेनहृत्पा प्रतिमा की आराधना

दशम महामेनहृत्पा अर्पयन्

- २५ आचरित वधमान नव की आराधना गङ्गा वर्ष का अर्पण
और नव मास की मन्त्रणा भिन्नपद
२६ उग्रमन्त्र एक भूत एकप आठ वर्ष आठ दिनों में पठन
आठ वर्षों के उद्देश्य

णमो तित्थयराणं

धर्मकथानुयोगमय अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग

श्रुतस्कन्ध	१
वर्ग	३
अध्ययन	३३
उद्देशक	१०
पद	४६ लाख ८ हजार
उपलब्ध पाठ	१६२अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	६
पद्य	२

किं सक्का काउं जे, जं णेच्छह ओसहं मुहा पाउं ।
जिणवयणं गुणमहुरं, विरेयणं सव्वदुक्खाणं ॥
पंचेव य उज्झिऊणं, पंचेव य रक्खिऊण भावेण ।
कम्मरयविप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तरं जंति ॥

तएण से सेणिय राया समणस्स भगवो महावीरस्स भतिए
धम्म सोच्चा नितम्म समण भगव महावीर वदइ नमसइ
वदित्ता नमस्सित्ता एव वयासी—

प्रश्न-इमासि ण भने । इदभूइ वामोक्खाण चोदसण्ह समण
साहस्सीण कयरे अणगारे महादुक्करकारए खेव ?

उत्तर-एव सनु सणिया । इमासि इदभूइ-वामोक्खाण चोदसण्ह
समणसाहस्सीण धम्मो अणगारे महादुक्करकारए खेव
महा निज्जरयराए खेव ।

अनुत्तरोपपातिक दशाङ्ग विषय-सूची

एक श्रुतस्कंध प्रथम वर्ग

२ क- उत्थानिका-दश अध्ययनों के नाम

प्रथम जालि अध्ययन

- क- उत्थानिका-राजगृह, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, धारिणी रानी, जाली कुमार, आठ कन्याओं के साथ पाणी ग्रहण, दहेज.
ग- भ० महावीर का समवसरण, प्रवचन, जानिकुमार को वैराग्य, प्रव्रज्या- इग्यारह अंगों का अध्ययन, गुणरत्न तप की आराधना, सोलह वर्ष का श्रमण जीवन, विपुल गिरि पर समाधि-मरण, विजय विमान में उत्पत्ति, निर्वाण कायोत्सर्ग, आचार भांडों का लाना.
घ- जालि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भ० गौतम की जिज्ञासा
ङ- भ० महावीर का उत्तर, वत्तीस सागर की स्थिति, व्यवन, महा-विदेह में जन्म और सिद्धपद की प्राप्ति.

द्वितीय मयालि अध्ययन

च- १६ वर्ष का श्रमण जीवन, वैजयन्त विमान में उत्पत्ति

तृतीय उवयालि अध्ययन

१६ वर्ष का श्रमण जीवन, जयन्त विमान में उत्पत्ति

चतुर्थ पुरिससेण अध्ययन

१६ वर्ष का श्रमण जीवन, अपराजित विमान में उत्पत्ति

पञ्चम वारिसेण अध्ययन

१६ वर्ष का श्रमण जीवन स्वार्थमिद्ध विमान में उत्पत्ति

षष्ठ दीर्घदत्त अध्ययन

छ- बारह वर्ष का श्रमण पर्याय स्वार्थमिद्ध विमान में उत्पत्ति

सप्तम सप्तदत्त अध्ययन

बारह वर्ष का श्रमण पर्याय अपराजित विमान में उत्पत्ति

अष्टम वेहेल्ल अध्ययन

बेलना माता बारह वर्ष का श्रमण पर्याय अश्व विमान में उत्पत्ति

नवम वेहास अध्ययन

बेलना माता, पाच वर्ष का श्रमण पर्याय वैजय विमान में उत्पत्ति

दशम अभय अध्ययन

मदा माता पाच वर्ष का श्रमण जीवन विजय विमान में उत्पत्ति

द्वितीय वर्ग

२ क उत्थानिका-तेरह अध्ययन के नाम

प्रथम दीर्घसेन अध्ययन

द्वितीय महासेन अध्ययन

उत्थानिका गजशृङ्ग गुणधीनचरस्थ श्रेष्ठिक राजा धारिणी देवी दीर्घसेन कुमार भ० महावीर का समयसरण प्रवचन दीर्घसेन कुमार की वैराग्य प्रवृत्त्या मोलह वर्ष की श्रमण पर्याय एक मास की सत्तेचना दाचन् विजय विमान में उत्पत्ति

तृतीय सप्तदत्त अध्ययन

चतुर्थ गूढदत्त

विजय विमान में उत्पत्ति

पंचम शृद्धदंत अध्ययन

षष्ठ हल्ल अध्ययन

जयंत विमान में उत्पत्ति

सप्तम द्रुम अध्ययन

अष्टम द्रुमसेन अध्ययन

अपराजित विमान में उत्पत्ति

नवम महाद्रुमसेन अध्ययन

दशम सिंह अध्ययन

एकादशम सिंहसेन अध्ययन

द्वादशम महासिद्धसेन अध्ययन

त्रयोदशम पुण्यसेन अध्ययन

सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पत्ति

तृतीय वर्ग

३ क- दस अध्ययनों के नाम

प्रथम धन्य अध्ययन

ख- उत्थानिका. काकंदी नगरी. सहस्राश्रवण उद्यान. जितशत्रु राजा. भद्रा सार्थवाही. धन्यपुत्र. वतीस कन्याओं से पाणिग्रहण. दहेज.

ग- भगवान् महावीर का समवसरण. धन्य कुमार को वैराग्य-दीक्षा महोत्सव, यावज्जीवन छद्म तप. पारणे में सर्वथा नीरस अन्न लेने की प्रतिज्ञा

घ- काकंदी से विहार. ग्यारह अंगों का अध्ययन

ङ- धन्य अणगार के तपोमय देह का (पैर से लेकर मस्तक तक) वर्णन.

क- राजगृह. गुणशील चैत्य. भगवान् महावीर का समवसरण. श्रेणिक राजा का आगमन. प्रवचन.

- स श्रेणिक की चौदह हजार श्रमण भेद्यति उत्कृष्ट तपस्वर्ग करने वाले श्रमण के जानने की विज्ञाना भा० महावीर द्वारा धन्य अणगार का नाम निर्देश धन्य अणगार को श्रेणिक का वदन
- ग धनिक का स्वस्थान गमन
- ५ क स्वधियो व साथ धन्य अणगार की विपुल गिरि पर अन्तिम आराधना एक भाम की मनेमना समाधिमरण नव नाम का श्रमण जीवन सर्वाभिष्ट विमान में उत्पत्ति
- ख- स्वधिरा द्वारा धन्य अणगार के आचार भाउ का लाना
- ग ध्यवन महा विदेह व नाम मिष्ट पर की प्राप्ति उपमहार
- द्वितीय सुनभत्र अध्ययन
- ६ क कावरी श्रमण पर्याय बहुत वर्षों का
- ख- तृतीय ऋषिदास अध्ययन
- चतुर्थ वेस्तक अध्ययन
- राजगृह बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय
- ग पचम रामपुत्र अध्ययन
- षष्ठ चन्द्र अध्ययन
- साकेल बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय
- ख- सप्तम पृष्ठिम अध्ययन
- अष्टम पैटालपुत्र अध्ययन
- धर्णिज्य नाम श्रमण पर्याय बहुत वर्षों का
- ड नवम पोद्विल अध्ययन
- हस्तिनापुर श्रमण पर्याय बहुत वर्षों का
- च- दशम वेहस्त अध्ययन
- राजगृह पिना द्वारा दीना महोत्सव ६ मास की श्रमण पर्याय
- छ उपमहार

पमो जिणाणं

चरणानुयोगमय प्रश्नव्याकरणांग

श्रुतम्कंघ	२
अध्ययन	१०
उद्देशक	१०
पद	६२ ताम्र १६ हजार
उपलब्ध पाठ	२३०० लोक परिमाण
गद्य सूत्र	३०
पद्य सूत्र	६

आधय श्रुतम्कंघ	संवर श्रुतम्कंघ
अध्ययन ५	अध्ययन ५
उद्देशक ५	अध्ययन ५
सूत्र २०	सूत्र १०
गाथा ३	गाथा ६

=====

एसा मगवती अहिंसा
जा सा मीयाण विव सरण
पक्खीण पिव गमण
तिसियाण पिव सलिलं
खुहियाण पिव असण
समुद्धमज्झे व पोतवहण
चउप्पयाण व आसमपय
दुहटिठ्याण च ओसहिबल
अठवीमज्झे विसट्ठणमण
एत्तो विसिट्ठतरिका
अहिंसा सब्बभूयस्सेमकरी—

=====

प्रश्नव्याकरणांग विषय-सूची

प्रथम आश्रव श्रुतस्कंध

प्रथम प्राणातिपात अध्ययन एक उद्देशक

- १ क- उत्पत्तिकाल
- ख- नमस्कार मन्त्र
- ग- आश्रव और मवर का वर्णन करने की प्रतिज्ञा
- घ- पाच प्रकार का आश्रव
- ङ- प्राणातिपात के पाच विभाग
- च- प्राणातिपात के स्वरूप पञ्चायक द्वाविंश पर्यायवाची
- २ प्राणातिपात के तीस नाम
- ३ क- जिन जीवों की हिंसा की जाति है
- ख- जलचर जीव
- ग- स्थलचर जीव
- घ- उरपुर जीव
- ङ- भुजपुर जीव
- च- वेचर जीव
- छ- द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय
- ज- हिंसा के प्रयोजन
- झ- स्थावर जीवों की हिंसा
- ञ- पृथ्वीकाय की हिंसा के प्रयोजन
- ट- अपकायकी हिंसा के प्रयोजन
- ठ- तेजस्काय की " " "
- ड- वायुकाय की " " "

- ६ वनस्पतिकार्य की हिंसा के प्रयोजन
- ७ हिंसक की मानसिक स्थिति
- ८ हिंसा के कुछ और प्रयोजन
- ५ क हिंसक बच आनिया
- ख म्लच्छ जातियाँ
- ग हिंसा का फल
- घ हिंसकों की नरक गति
- ङ नरक का वर्णन
- च विविध प्रकार की नरक वेदना
- छ नरक के पश्चात् हिंसकों की त्रियच गति
- ज निर्द्वेष गति में विविध प्रकार की वेदना
- झ नरक में निकलने के पश्चात् हिंसकों की मनुष्य गति
- ञ मनुष्य गति में विविध प्रकार की वेदना
- ट प्रथम अध्याय द्वार का उपसंहार

द्वितीय अध्याय अथवा एक उद्देशक

- ५ स्वाभाव का स्वरूप
- ६ स्वाभाव व तीन नाम
- ७ क विविध प्रकार के व्यापारों के लिए स्वाभाव
- ख कुदशनों की मिट्टी के लिये स्वाभाव
- ग दुर्गचारों के मेहनत के लिये
- घ चार प्रकार के प्रमुख स्वाभाव
- ङ प्रत्यक्ष के लिए स्वाभाव
- च गहन विषय के लिये स्वाभाव
- छ हिंसा के लिये स्वाभाव
- ज विविध शारीरिक संस्कारों के लिये स्वाभाव
- झ मावस भाषा का प्रयोग ही स्वाभाव है

- ख- स्वार्थसिद्धि के लिये मृपावाद
- ८ क- मृपावाद का इह लौकिक फल
- ख- मृपावादो की दुर्गतियां
- ग- मृपावाद का परिचय
- घ- द्वितीय अयमंदार का उपसंहार

तृतीय अदत्तादान अध्ययन एक उद्देशक

- ९ अदत्तादान का परिचय
- १० अदत्तादान के तीस नाम
- ११ क- चोरी करने वाले राजा आदि
- ख- संसार समुद्र का रूपक
- १२ क- चोरी का फल, विविध प्रकार के इह लौकिक दण्ड
- ख- नरक तिर्यच और मनुष्य भव में अनेक भयंकर वेदनायें
- ग- तृतीय अयमं द्वार का उपसंहार

चतुर्थ अन्नह्यचर्य अध्ययन एक उद्देशक

- १३ अन्नह्यचर्य का स्वरूप
- १४ अन्नह्यचर्य के तीन नाम
- १५ क- अत्यधिक मैथुनसेवियों का वर्णन
- ख- देवताओं का वर्णन
- ग- चन्द्रवर्ती का वर्णन—उत्तम पुरुषों के लक्षण
- घ- वनदेव वामुदेव का वर्णन
- ङ- माण्डनिक राजाओं का वर्णन
- च- देवकुरु-उत्तरकुरु के मनुष्यों का वर्णन
- १६ क- मैथुन का फल
- ख- चतुर्थ अयमं द्वार का उपसंहार

पंचम परिग्रह अध्ययन एक उद्देशक

- १७ परिग्रह का स्वरूप
- १८ परिग्रह के तीस नाम
- १९ परिग्रह सप्त ढ सृष्टिवाचे
- २० क परिग्रह का फल
- ख पंचम अणम द्वार का उपसहार

द्वितीय सवर श्रुतस्कंध

प्रथम अहिंसा अध्ययन एक उद्देशक

- २१ क पाच सवर कथन प्रतिज्ञा
- ख पाच सवर के नाम
- ग सव प्रथम अहिंसा के सम्बन्ध म कथन
- घ पाच सवरो का सन्निपत्त परिचय
- ङ अहिंसा के ६० नाम
- २२ क अहिंसा की कुछ उपमाय
- ख अहिंसा के आराधक
- ग अहिंसा के उपासको के कुछ कृतम्भ
- घ अहिंसा का स्वरूप
- २३ क अहिंसा मताग्रन की पाच भावनाय
- ख अहिंसा के साधक का अग्रमत्त जीवन
- ग प्रथम मगर द्वार की उपसहार

द्वितीय सत्य अध्ययन एक उद्देशक

- २४ क सत्य का स्वरूप
- ख सत्य का प्रभाव
- ग दस प्रकार का सत्य
- घ सत्य की कुछ उपमार्ये

छ- वषणनव्य गत्य

च- प्रशस्त गत्य

वारह प्रकार की भाषा, मोलह प्रसार के वचन,

२५ क- गत्य महाव्रत की पांच भावना

अगत्य बोलने के पान कारण

ए- द्वितीय संवर का उपसंहार

तृतीय अस्त्य अध्ययन एक उद्देशक

२६ क- दत्त अनुज्ञात का स्वरूप

ख- दत्त अनुज्ञात व्रत का विरोधक

ग- दत्त अनुज्ञात व्रत के आरोधक

घ- इस महाव्रत की पांच भावना

छ- तृतीय संवर का उपसंहार

चतुर्थ ब्रह्मचर्य अध्ययन एक उद्देशक

२७ क- ब्रह्मचर्य का स्वरूप

ख- ब्रह्मचर्य की कुछ उपमायें

ग- ब्रह्मचर्य का प्रभाव

घ- ब्रह्मचारी के अकर्तव्य, अकृत्य

छ- ब्रह्मचारी के कर्तव्य, कृत्य

च- ब्रह्मचारी महाव्रत की पांच भावना

छ- चतुर्थ संवर द्वार का उपसंहार

पंचम अपरिग्रह अध्ययन एक उद्देशक

२८ क- परिग्रह का स्वरूप

ख- एक से लेकर तेतीस वोल का संकलन

२९ क- संवरवृक्ष का रूपक

ख- परिग्रह विरत के अकल्प्य कार्य

- ग- परिग्रह विरत के कल्प्य कार्य
- घ- शुद्ध निर्दोष भिक्षा लेने का विधान
- ङ- औषधादि के संग्रह का तथा समीप में रखने का निदेश
- च- धर्म साधना में उपयोगी उपकरण रखने का विधान
- छ- पाँच समिति तीन गुप्ति के नाम
- ज- अपरिग्रह की कुछ उपमाय
- झ- अपरिग्रही के जीवन की महिमा
- ञ- अपरिग्रह महाव्रत की ५ भावना
- ट- पञ्चम स्वर द्वार का उपसंहार
- ठ- पाँच स्वरों की प्रसरित

- २० क- प्रश्नव्याकरण अथ का समिप्य परिचय
- ख- प्रश्नव्याकरण अथ की पठनविधि

सच्च लोगम्मि सारभूय

णमो वायणारिगणं

धर्मकथानुयोगमय विपाकश्रुताङ्ग

श्रुतस्कंध	२
अध्ययन	२०
उद्देशक	२०
पद	१ करोड़ ८४ लाख ३२ हजार
उपलब्ध पाठ	१२१६ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	३४
पद्य	+

दुग्ध विपाक श्रुतस्कंध	सुग्ध विपाक श्रुतस्कंध
अध्ययन १०	अध्ययन १०
उद्देशक १०	उद्देशक १०
गद्य ३२	गद्य २
पद्य —	पद्य —

से वेमि

जे य अतीना जे य पडुपन्ना, जे य आगमिस्मा
भगवता त मध्ये वि वि एवमाइक्खति, एव भासति, एव
पणवनि एव पस्वेति

सध्ये पाणा, मध्ये भूया, मध्ये जीवा, सध्ये मत्ता
न हुनच्चा, न अज्जावेयस्वा, न परिणग्घ्वा, न परता-
वेयस्वा, न उद्देयस्वा एम धम्मे सुद्धे णितिए मामए
समेच्च लाय सेयन्नेहि पवेइए ।

चिट्ठ कुरेहि कम्मेहि चिट्ठ परिविचिट्ठइ ।

अचिट्ठ कुरेहि कम्मेहि णो चिट्ठ परिविचिट्ठइ ।

दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णा फला भवति ।

सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णा फला भवति ।

अप्पा कत्ता विक्ता य दुहाण य सुहाण य ।

अप्पा मित्तममित्त च, दुण्णट्ठि य सुण्णट्ठि य ॥

आरभज दुक्खमिणति णच्चा माइ पमाई पुणरेइ गम्भ ।

उवेहमाण सह रुवेमु अज्जू माराभिसकी मरणा पमुच्चइ ॥

वाने पुण णिहे कामममणुन्न असमिनदुक्खे दुक्खी दुक्खा-
णमव अणुपगियट्ठ ति तिवमि ।

विपाकश्रुतांग विषय-सूची

१ जंबूस्वामी का प्रश्न

प्रथम दुख-विपाक श्रुतस्कंध

२ क- उत्थानिका. श्रुतस्कंधों के नाम. दस अध्ययनों के नाम

प्रथम मृगापुत्र अध्ययन

[क्रूर शासन का फल]

ख- उत्थानिका. मृगग्राम नगर. चन्दन पादप उद्यान. सुधर्मयक्ष का यक्षायतन. विजय राजा. मृगादेवी. मृगापुत्र

ग- सर्वाङ्गोपाङ्ग विकल मृगापुत्र को तलघर में रखना

३ क- एक जन्मान्ध भिखारी और उसका सचमुच-साथी

ख- भ० महावीर का समवसरण. प्रवचन. विजय राजा का दर्शनार्थ जाना

ग- अपने साथी सहित जन्मान्ध भिक्षुक का धर्म परिपद में जाना

४ क- जन्मान्ध के सम्बन्ध में भ० गौतम की जिज्ञासा

ख- भ० महावीर ने सर्वाङ्गोपाङ्गविकल मृगापुत्र का परिचय दिया

ग- मृगापुत्र को देखने के लिये भ० गौतम गणघर का जाना

घ- मृगापुत्र को तथा उसके आहार परिणमन को देखना

ङ- कर्मफल का चिन्तन. भ० महावीर के समक्ष मृगापुत्र का वर्णन

५ क- मृगापुत्र के पूर्वभव का वर्णन, जंबूद्वीप, भरत, शतद्वार नगर घनपती राजा

ख- विजय वर्द्धमान खेड़ [एक धूलकोट-जागीरदार का राज्य]

ग- इकाई राष्ट्रकूट [एक जागीरदार] का क्रूर शासन

- घ इकाई के गरीर में सोनहू गेयों की उत्पत्ति चिकित्सा के
 निचे किये गये प्रयत्नों की असफलता सृष्टि नरक में उत्पत्ति
 ङ- पेरदायु लोग के बदचाल सृष्टि देवी की कुम्भी में उत्पन्न होना
 च सृष्टि देवी का अपमानित होना और राम गिराने का प्रयत्न
 करना
- ६ क राम में अस्मक रोग का होना
- ख राम के पञ्चात गिनु को ठहराई पर आने के लिए दासी
 को कहना
- ग दासी का सृष्टिदेवी के आदेश के सम्बन्ध में विजय राजा से
 मिलना
- घ सृष्टिदेवी को भूमिपर में रहने की व्यवस्था
- ७ क सृष्टिदेवी का पुत्रायु मांग के पञ्चात सिंह होना
- ख सृष्टिदेवी का भवभ्रमण
- ग मुद्राष्टि नगर में एक मजदूर के घर जन्म लेना तथा गया
 ल की मिट्टी के नीचे दब कर मरना
- घ पुनः मुद्राष्टि नगर में एक सेठ के घर जन्म लेना
- ङ मुद्राष्टि में स्वामी ने बसवन्त पराजय प्राप्त था भयम
 पर्याप्त समाधि-मरण सीधम कल्प में उत्पत्ति
- च बचन महाविष्णु से प्रप्ति

द्वितीय उन्मिश्रक अध्ययन

[गोमाय भरण मद्रास और बरगामन का रूप]

- ८ क उत्पत्ति का माणिक्य धाम दुर्गिरास उद्यान मुषम पक्ष का
 पञ्चायन विजय विजय राजा सीधे
- ग बामभयन गणिता [७२ कला ६४ गणिता कला २६ विद्येयता
 २१ रजिफता ३२ बनीकरन ६४ १५६०० भाषा विज्ञान]
- ९ क विजयविजय सीधसाह मुषम भाषा उन्मिश्रक वच

- ख- भ० महावीर का समवसरण. प्रवचन
 ग- गौतम गणधर का भिक्षाचर्या के लिये जाना, राजमार्ग में उज्जिमतक के वध का दृश्य देखना
- १० क- भ० महावीर से उज्जिमतक के वध का वृत्तान्त कहना
 ख- पूर्वभव जिज्ञासा. जंबूद्वीप. भरत. हस्तिनापुर. मुनंद राजा. नगर में एक गोशाला
 ग- भीम कूटग्राह-गुप्तचर. उत्पला भार्या का गोमांस भक्षण का दोहद. भीम द्वारा दोहद की पूर्ति
- ११ क- पुत्र जन्म. शिशु रोदन से गोवर्ग का प्रसिद्ध होना. गोत्रास नाम देना
 ख- भीम की मृत्यु. मुनंद राजा द्वारा भीम के स्थान पर गोत्रास की नियुक्ति
 ग- गोत्रास का जीवन पर्यन्त गोमांस भक्षण. मृत्यु. नरक गमन
- १२ क- मृतवत्सा सुभद्रा के कुक्षि में गोत्रास की उत्पत्ति. जन्म. उकरड़ी पर ढालना. पुनः ग्रहण करना. उज्जिमतक नाम देना. कतिपय संस्कारों के नाम, पांच धार्यों से पालन
 ख- विजय मित्र सायंवाह की व्यापार के निमित्त लवण समुद्र की यात्रा [चार प्रकाश के विक्रय योग्य पदार्थ] पीत भंग. विजय मित्र सायंवाह की मृत्यु. सुभद्रा सायंवाही का विलाप. सुभद्रा की मृत्यु
- १३ क- उज्जिमतक का सर्वस्वहरण. गृह से निष्कासन
 ख- सप्त व्यसन सेवन, कामध्वजा से काम क्रीड़ा
 ग- श्रीदेवी के योनिमूल की वेदना. राजा द्वारा काम ध्वजा की उपपत्ति के रूप में नियुक्ति
 घ- कामध्वजा के घर में उज्जिमतक का गुप्तरूप से प्रवेश
 ङ- उज्जिमतक को कामध्वजा के साथ देखकर राजा द्वारा मृत्यु

१४ क उज्ज्वलक की पुर्वांगु मृग्यु के परचात भवभ्रमण गणिका
कुन म उत्पत्ति नरसक बनाना, पुर्वांगु भोग के पहचान
नरक गति अनक भव

ख चपा मे मोठ क धर जम सुवावय मे स्वविरो से धमधवण
ईराव्य दोषा धमण-जीवन सयाधिमरण मोदम कल्प म
उत्पत्ति ध्यदन महाविष्णु म मुक्ति

तृतीय अभिन अध्येयन

[अरुण क व्यापार का तथा मद्यपान वम]

१५ क उपायिका पुरिमनान नगर अमोज दशन उद्यात अमाय
इगनयस का ध्यायन महावल राजा

ख साला अन्वी पाच सो चोर का अधिपति विजय' रक्त
की भाषा

१६ क विजय चोर क अहंय

ख भ० महावीर का समवमरण गौतम गणधर का भिन्ना धर्मा
के लिये जाना राजमान अठारह चौराहा पर अभ्यन्मन का
वय दमना

१७ क अभ्यन्मेन वृकमव की जिनासा अबूझीप भरत पुरिमनान
नगर उन्निोदिन राजा अरुण का ध्याशरी निन्नक

ख अनेक प्रकार के अण्डा का व्यापार

ग अण्डे और वय का उपभोक्ता निन्नक की मृग्यु नरक मे
उत्पत्ति

१८ क निन्नक की आरमा का रक्त श्री की नुभि मे आनमन

ख रक्तश्री का मोहद पुत्र जम अभ्यन्मन नाथ रमना
वालयकाय

१९ क बाठ वयाजा से पाणि बहल भोगमय जीवन

ख विजय की मृग्यु अभ्यन्मेन का अधिपक

ग अभ्यन्मेन के उपद्रवों से शन्त बनना की महुवरराजा से पुरार

घ- अभग्नसेन को वन्दि बनाने का आदेश

ङ- अभग्नसेन के अपने गुप्तचरों से राजाज्ञा की जानकारी

च- अटवी की सीमा पर अभग्नसेन की राजपुरुषों से मुठभेड़

छ- परास्त राजपुरुषों द्वारा राजा के सामने अभग्नसेन की अजेयता का वर्णन

२० क- महबल राजा द्वारा कूटागारशाला का निर्माण

ख- अभग्नसेन को छल से वन्दि बनाना. तथा सूली का आदेश देना. अभग्नसेन की पुर्णायु. मृत्यु. नरकगति

ग- अभग्नसेन का भवभ्रमण

घ- वाराणसी में सेठ के घर जन्म. स्थविरो से धर्मश्रवण. वैराग्य. दीक्षा. संयमाराधन. समधिमरण. महाविदेह से मुक्ति

चतुर्थ शकट अध्यायन

[मांसविक्रय और व्यभिचार का फल]

२१ क- उत्थानिका. साहजनी नगरी. देवरमण उद्यान. अमोघयक्ष का यक्षायतन. महचंद्र राजा. सुसेण अमात्य. सुदर्शणा गणिका. सुभद्र सार्थवाह. भद्रा भार्या. शंकर पुत्र

ख- भ० महावीर का समवसरण. धर्म कथा

ग- गौतम गणधर का गौचरी जाना. राजमार्ग के मध्य में नरवध का दृश्य देखना

घ- भ० महावीर से वध्यपुरुष का पूर्वभव पूछना

ङ- पूर्वभव. जंबूद्वीप. भरत. छगलपुर. सीहगिरि राजा. छणिक नाम का छागलिक कसाई. [बहुत बड़ा मांस विक्रेता]

च- मद्य मांस के आहारी क्षणिक की पूर्णायु. मृत्यु. नरक गति

छ- क्षणिक की आत्मा का भवभ्रमण

२२ क- छणिक की आत्मा का मृतवत्सा भद्रा की कुक्षि से जन्म, शिशु को शकट के नीचे रखना और शकट नाम रखना

ख- सुभद्रसार्थवाह की लवणसमुद्र यात्रा, जहाज का टूटना, सुभद्र का मरना, भद्रा का भी मरना

- ग गङ्ग का भवस्व छीन लेना और घर से निजात देना
 घ गङ्ग का मुग्धना से स्नेह
 ङ मुग्ध का मुग्धना के साथ गङ्ग की देखना
 च मन्त्र राजा की सम्पत्ति में गङ्ग का प्राप्त स्थापति क साथ
 आरिन्दन का दण्ड देना पूर्णानु शत्रु नरक गति
 ३ क गङ्ग की आत्मा का भव भ्रमण
 छ गङ्ग और मुग्धना की आत्मा का राजपुत्र के मातृग पुत्र में
 बहान भाई हाना दोना का पति-पत्नी के रूप में जीवन बिगाना
 ग गङ्ग का गुणधर बनना शत्रु के पञ्चान भव भ्रमण
 घ वाराणसी में सेठ के घर जन्म-यावन्-महाविष्णु से मोन प्राप्त
 करना उपमहार

पञ्चम वेदपति अध्ययन

[यज्ञ हिन्दा तथा परश्वी गमन का कला]

- ४ क उष्मानिका कोणाम्बी नगरी चणोत्तरण उद्यान ह्येन भू गण
 गनानीक राजा सुभावनी देवी उद्यान कुमारवद्यावती देवी
 [उद्यान की पत्नी] चार वेद में प्रवीण सोमन्त पुरोहित
 वसुन्ता भार्या हृन्मन्त्रित पुत्र
 छ भगवान मन्वीर का समयसरण मोनम गणधर का भिषाचरी
 के लिये जाना राजमान में प्राण दण्ड का दण्ड देसना
 ग पुत्रभव पुच्छा जम्बूनीप भरत सयतोमन् नगर जिनगु राजा
 महेश्वर दत्त पुरोहित [चार वेद का ज्ञाता]
 घ जिनगु राजा की सृष्टि के लिये गान्ति होय करवा
 क महेश्वर दत्त की पूर्णानु शत्रु नरक गति
 छ महेश्वर दत्त की आत्मा का हृन्मन्त्रित दत्त के रूप में जन्म
 ग उद्यान राजकुमार के साथ वृद्धमन्त्रित की मन्त्री
 घ गनानीक की शत्रु उद्यान का राज्याधिकार

ङ- वृहस्पतिदत्त का पद्यावती के साथ अनुचित सम्बन्ध. प्राणदण्ड

च- वृहस्पतिदत्त की आत्मा का भवभ्रमण

छ- हस्तिनापुर में सेठ के घर जन्म-यावत्-महाविदेह से निर्वाण

पण्ड नन्दिवर्धन अध्ययन

[कठोर दण्ड और पितृवध संकल्प का फल]

२६ क- उत्पानिका. मयुरानगरी. भण्डौर उद्यान. मुदर्शन यज्ञ. श्री दाम

राजा. वन्धु श्री भार्या. नन्दीवर्धन कुमार. मुवन्धु अमात्य.

वह्निमित्र पुत्र. चित्र अलंकारिक [नापित]

ख- भ० महावीर का समयसरण. धर्म प्रवचन. गीतम गणधर की

भिक्षाचर्या. राजमार्ग में देह दाह दण्ड का दृश्य

ग- पूर्वभव पृच्छा. जम्बूद्वीप. भरत. सीहपुर. सीहरथ राजा. दुर्योधन

प्रमुख कारागृहाधीक्षक

घ- वन्दियों को दिये जाने वाले विविध प्रकार के कठोर दण्ड

ङ- पुर्णायु. मृत्यु नरक गमन

२७ क- दुर्योधन की आत्मा का नन्दिसेन के रूप में जन्म

ख- युवा नन्दिसेन की राज्यलिप्ता

ग- चित्र अलंकारिक ने राजा को नन्दिसेन के पङ्क्यत्र की जानकारी दी

ङ- नन्दिसेन वध की राजाज्ञा. पूर्णायु. मृत्यु. पश्चात् नरक गमन

च- नन्दिसेन की आत्मा का भवभ्रमण

छ- हस्तिनापुर में सेठ के घर जन्म. बोधि की प्राप्ति. आगार धर्म की आराधना. समाधि मरण. तीर्थमं कल्प में उत्पत्ति. महा विदेह से निर्वाण पद की प्राप्ति

सप्तम उम्बरदत्त अध्ययन

[ग्राम चित्रिका का फल]

- विद्वान् राजा माधरदत्ता मार्धवाह् मयदत्ता भार्या उबरदत्ता
 म पुत्र म० महावीर का मयवमरण, गौतम गणधर का मिश्राचार्या
 के निधे नगर के पूरु डार स प्रवेश
 न एक कोठी पुरुष को देखना
 य परिचय दक्षिण और उत्तर डार से जयसा प्रवेश करने पर उसी
 कोठी पुरुष को देखना
 ङ पूषमव वृष्ट्या अम्बुजीय, मरुत, विजयपुर नगर बनकरण
 राजा घनवन्तरी रैद्य
 च अष्टम आर्षर्षेय के नाम
 छ विद्विषा के निधे अनेक प्रकार के मयार का प्रयोग
 ज स्वयं घनवन्तरी द्वारा मय मास आहार का आमन्त्रि पूर्वक
 प्रयोग पूर्णाम् सन्धु नरक गमन
 झ- सदान प्राप्ति के निधे सनवत्सा मयदत्ता मार्धवाहिनी द्वारा
 यण पूजा तथा चडावा करने का सकल
 ञ माधवाह की आज्ञा म विधिवन यण पूजा करना
 ट घनवन्तरी की आत्मा का मार्धवाही की कुनि में आधमन
 ट- माधवाही का दोहद और उसकी पुनि
 ड पुत्र जन्म यण के चडावा यण हुना से प्राप्ति पुत्र का यण के
 अनुसार नाम
 ढ माधरदत्ता और मयदत्ता की सन्धु उम्बरदत्ता की घर में निवास
 देना उम्बरदत्ता के शरीर में सोनहू रोषों की उत्पत्ति सोनहू
 रोगा के नाम
 न उम्बरदत्ता की पुत्रायु सत्यु अवप्रयण
 त हस्तिनापुर में मट के घर जय मयवत्स की प्राप्ति माधक
 धम की अराधना मोधर्म में उत्पत्ति, प्यरन महाविदेह से
 रुक्ति उपपहार ।

अष्टम नन्दिचर्धन अध्ययन

[मच्छीमार के व्यवसाय का फल]

- २६ क- उत्थानिका, मूर्धपुर, सूर्यावंतमक उद्यान. सूर्यदत्त राजा न-मच्छीमारो का मोहल्ला, समुद्रदत्त मच्छीमार, समुद्रदत्त भार्या सूर्यदत्त पुत्र
- ग- भ० महावीर का समवसरण. गौतम गणधर का भिक्षाचर्या से लौटते समय मच्छीमारों के मोहल्ले के समीप एक रुग्ण मच्छीमार को रक्त वमन करते हुए देखना
- घ- पूर्वभव पृच्छा. जम्बूद्वीप. भरत. नन्दिपुर मित्रराजा. महाराजा का सिरिया रसोईया
- ङ- राजा व राजपरिवार के लिये विविध प्रकार के मांस पकाना स्वयं सिरिया रसोईये की मांसाहार में आसक्ति
- च- पूर्णायु, मृत्यु, नरक गमन
- छ- मृतवत्स समुद्रदत्त का संतान प्राप्ति के लिये यक्ष पूजा का संकल्प-यावत्-सूर्यदत्त नाम रखना
- ज- समुद्रदत्त की मृत्यु. सूर्यदत्त का मच्छीमारों का प्रभुत्व बनना यमुना नदी आदि में मच्छीयाँ पकड़ना
- झ- मच्छीयाँ पकड़ने के अनेक साधनों का उत्प्रेष
- ञ- मच्छीयाँ मुझाना, मच्छीयों के बने हुए विविध भोज्य पदार्थ
- ट- सूर्यदत्त के गले में मत्स्य कंटक लगना. चिकित्सा के लिये अनेक प्रयत्न
- ठ- वेदना व्यथित सूर्यदत्त की पूर्णायु, मृत्यु, नरक गति. भवभ्रमण
- ड- हस्तिनापुर में सेठ के घर में जन्म. बोधि की प्राप्ति. देश विरती की आराधना. सौधर्म कल्प में उत्पत्ति. च्यवन. महाविदेह से मोक्ष. उपसंहार

नवम बृहस्पतिदत्त अध्ययन

[ईर्ष्या द्वेष का फल]

- ३० क उत्पानिका रोहोडक नगर पृथ्वी अवनसक्त उत्पान. घरण यज्ञ वैश्वमण दत्त राजा श्रीदेवी पुष्पनदी कुमार दत्त गायपाति कृष्ण श्री भार्या देवदत्ता पुत्री
- ख म० महावीर का समचरण गौतम यज्ञघर की भिन्ना चर्या राजमान से एक स्त्री के मूर्तों दण्ड का हरण देखना
- ग पूर्व भव पृच्छा जम्बूद्वीप भरत मुप्रतिष्ठ नगर महसेन राजा जल पुर में भारिणी आदि एक हजार रानियों सीहसेन राज कुमार पाँच सौ राज्य कथाओं से पाणिग्रहण रहेन
- घ महमन राजा की मृत्यु
- ङ सिहसेन की एक दयामा रानि से अत्यामक्ति अन्ध से विरक्ति
- च दयामादेवी के प्रति अन्ध रानियों का दुर्भाव
- छ प्राणरक्षा के लिये दयामा का सिहसेन से निबदन सिहसेन का आश्वासन
- ज कूटागार दाम्ना का निर्माण ४६६ रानियों की कूटागार गाला में बन्द करके जला देना
- झ सिहसेन की पूर्णायु मृत्यु नरक गति
- ञ कृष्ण श्री की कुलि से सिहसेन की आत्मा का आनमन पुत्रि रूप में जन्म देवदत्ता नाम रचना
- ट पुष्पनदी राजकुमार के लिये वैश्वमणदत्त राजा द्वारा देवदत्ता की मानना देवदत्ता से पुष्पनदी का विवाह
- ठ वैश्वमण राजा की मृत्यु पुष्पनदी की मातृमर्ति
- ड देवदत्ता द्वारा श्री देवी के प्राणों का सहार पुष्पनदी का देव दत्ता के लिये मूर्ती स्तेदन का अर्थ पूर्णायु मरण भव भ्रमण
- ढ गगनपुर में देवदत्ता की आत्मा का खण्डी के शूद्र से ज म श्वमणों

पासक धर्म की आराधना, समाधिमरण, मोघर्म कल्प में उत्पत्ति महाविदेह से मुक्ति । उपसंहार

दशम उम्बरदत्त अध्ययन

[वैश्या वृत्ति का फल]

- ३२ क- उत्थानिका—वर्द्धमानपुर, विजय वर्धमान उद्यान, माणिभद्र यक्ष विजयमित्र राजा
- ग- धनदेव सार्धवाह, प्रियंगु भार्या, अंजूपुत्री
- ग- भ० महावीर का समोसरण. भ० गौतम की भिक्षाचर्या, अशोक वाटिका में एक अतिरुग्ण स्त्री का कर्ण श्रंदन करते हुए देखना
- घ- पूर्वभव की जिज्ञासा. जम्बूद्वीप. भरत. इन्द्रपुर. इन्द्रदत्त राजा पृथ्वी श्री गणिका
- ङ- पृथ्वी श्री गणिका की पूर्णायु. गृत्यु. भवभ्रमण
- च- पृथ्वी श्री की आत्मा का अंजूश्री के रूप में जन्म
- छ- वैश्रमण राजा का अंजूश्री से विवाह. अंजूश्री के योनीसूत के वेदना. चिकित्सा की असफलता. अशोक वाटिका में अंजूश्री का रोदन
- ज- अंजूश्री का भवभ्रमण. सर्वतोभद्र नगर में सेठ के घर जन्म सम्यक्त्व की प्राप्ति. प्रव्रज्या. सीघर्म में उत्पत्ति. च्यवन. महा-विदेह से मुक्ति । प्रथम दुःख विपाक श्रुत स्कंध का उपसंहार

द्वितीय सुखविपाक श्रुतस्कंध

३३ क- उत्थानिका. दस अध्ययनों के नाम

प्रथम सुबाहु अध्ययन

- ख- उत्थानिका. हस्तिशीर्ष नगर, पुष्प करण्ड उद्यान. कृतवन माल प्रिय यक्ष का यक्षायतन. अदीन क्षत्रुराजा. अन्तःपुर में धारिणी देवी आदि एक हजार रानियां
- ग- धारिणी का सिंह स्वप्न. सुबाहु कुमार का जन्म. संबर्धन. अध्ययन

- घ पांच सौ बन्धुओं से पाणिग्रहण
 छ भ० महावीर का समवसरण सुबाहु कुमार का वधस्या ध्वज
 गृहस्थधर्म आराधन की प्रतिमा
 च सुबाहु के पूर्वभव की विज्ञप्ति अम्बुद्वीप भरन हस्तिनापुर
 मुमुक्षु सायापनी सहस्राश्वन पाचसौ मुनियों के साथ
 स्थविरो का आगमन
 छ महा तपस्वी मुत्त अणभार को शुद्ध आहार दान पाच निशा
 की वर्षा
 ज भ० महावीर का समवसरण
 झ सुबाहु कुमार का अष्टमनप पीपल प्रदत्ता लेने का संकल्प
 झ भ० महावीर के समीप प्रदत्ता ग्रहण भ० महावीर का विहार
 न दोरह अंगों का अभ्यसन तपश्चर्या धर्मच जीवन एक मान
 की मनेषना सौम्य से उत्पत्ति
 ट प्रत्येक दश भक्त क वचनान् प्रत्येक मनुष्य भव से प्रदत्ता ग्रहण
 करना
 ठ जमान मर्दान्यनिष्ठ म उत्पत्ति ध्वज महाविदेह से निज
 सायना उपमहार ।

द्वितीय भद्रनदि अध्ययन

- १४ क उत्पत्ति निज अन्तर्मुख स्तूपकरण उद्यान पांच दश धनार्थ
 राजा मन्त्रयता श्री भद्रनदी कुमार सेन सुबाहु क समान
 उपमहार विनाय पूर्वभव महाविह पुरुषरिक्ता नीगरी
 मुगवान् नायक का दान देना

तृतीय मुज्जात अध्ययन

- १५ क उत्पत्ति निज वीरपुर मनोरम उद्यान वीर कृष्ण निज राजा श्री
 देवी मुज्जात कुमार सेन श्री प्रमुख पांच सौ बन्धुओं से पाणि
 ग्रहण

ख- पूर्वभव—इपुकार नगर, ऋषभदत्त गाथापति, पुष्पदत्त अणगार
को दान शेष सुबाहु के समान

चतुर्थ सुवासव अध्ययन

३६ क- उत्थानिका, विजयपुर, नन्दन वन, अशोक यक्ष, वासव दत्त राजा
कृष्णा देवी, सुवासव कुमार, भद्रा प्रमुख पाँच सौ कन्याओं से
पाणि ग्रहण

ख- पूर्व भव-कौशाम्बी नगरी, धनपाल राजा, वैश्रमण भद्र अणगार
को दान, शेष सुबाहु के समान

पचम जिनदास अध्ययन

३७ क- उत्थानिका, सौगधिका नगरी, नीलाशोक उद्यान, सुकाल यक्ष
अप्रतिहत राजा, सुकन्या देवी, महचन्द्र कुमार, अरहदत्ता भार्या
जिनदाम पुत्र

ख- पूर्वभव, मध्यमिका नगरी, मेघरथ राजा, सुधर्म अणगार को
दान, शेष सुबाहु के समान

षष्ठ वैश्रमण अध्ययन.

३८ क- उत्थानिका, कनकपुर, श्वेताशोक उद्यान, वीर भद्र यक्ष, प्रिय
चन्द्र राजा, सुभद्रादेवी, वैश्रमण कुमार, श्रीदेवी प्रमुख पाँचसौ
कन्याओं के साथ पाणि ग्रहण, धनपति पुत्र

ख- पूर्वभव—मणिवत्ता नगरी, मित्र राजा, संभूतविजय अणगार
को दान, शेष-सुबाहु के समान

सप्तम महावल अध्ययन

३९ क- उत्थानिका, महापुर, रक्ताशोक उद्यान, रक्तपात यक्ष, वल
राजा, सुभद्रा देवी, महावल कुमार, रक्तवती प्रमुख ५००

- ख पूवभव— मणिपुर नागदत्त गाथापति इन्द्रपुर अजगार का दान
नेप मुवाहु के समान

अष्टम भद्रनदी अध्ययन

- ४० क उत्पानिका सुषोष नगर देवरमण अजान धीरसेन दक्ष अजुन
राजा तपावती देवी भद्रनदी कुमार श्रीदेवी प्रमुख पाँच सौ
कन्याओं से विवाह
- ख पूवभव महाषोष नगर धमषोष गाथापती धमसिंह अजगार
को दान नेप मुवाहु के समान

नवम महचद अध्ययन

- ४१ क उत्पानिका चपानगरी पूषभद्र अजान पूषभद्र दक्ष दत्तराजा
रक्तवती देवी महचद कुमार श्रीकाता प्रमुख पाँचसौ कन्याओं
से साथ पाँची पहल
- ख पूवभव—तिमिन्ही नगरी जितसत्रु राजा धमवीर अजगार
का दान नेप-मुवाहु के समान

दशम वरदत्त अध्ययन

- ४२ क उत्पानिका सावेन नगर उत्तरकुरु अजान वामनिक दक्ष
मित्रनदी राजा श्रीकाता देवी वरदत्त कुमार वरसेना प्रमुख
पाँच सौ कन्याओं से विवाह
- ख पूवभव गतहार नगर विमलवाहन राजा धमरुचि अजगार
को दान नेप मुवाहु के समान । उपसहार

कथानुयोग प्रधान औपपातिक उपास

सपदमन	१
दहं नव	१
दपदमन पाठ	११६१ श्रमोक्त प्रमाण
गद्य मृद	४३
पद्य मृद	१२

मोहविजय पंचक

जहा मपप मृदप, दताप, दम्पद, पति ।
एव कम्माणि दम्पति, मोहविजये नयं मप ॥
मेणावतिमि निहने, जहा मेणा पणम्मति ।
एवं कम्माणि नम्पति, मोहविजये नयं मप ॥
भूमहीणी जहायणी, गीयति मे निरिधने ।
एवं कम्माणि गीयति, मोहविजये नयं मप ॥
मुक्क-भूले जहा रुयणे, विपमाने न रोहति ।
एवं कम्मा न रोहति, मोहविजये नयं मप ॥
जहा दद्वानं धीजार्ण, न जायति पुणंकुरा ।
कम्मधीणसु दद्वेसु, न जायति नपंकुरा ॥

उपपात-सूची

- १ हिमक का उपपात-नरक मे ।
- २ असयत का उपपात-व्यतर देवो मे ।
- ३ मुक्ति की कामना से आत्मघात करनेवालो का उपपात-
व्यतर देवो मे ।
- ४ भद्र प्रकृतिवाले मनुष्यो का उपपात-व्यतर देवो मे ।
- ५ विधवा या विरहिणी स्त्रियो का उपपात-भ्यनर देवो मे ।
- ६ मिताहार करने वालो का उपपात-व्यतर देवो मे ।
- ७ धानप्रभ्य तापसो का उपपात-उत्कृष्ट ज्योतिषो देवो मे ।
- ८ कादपिक श्रमणो का उपपात-उत्कृष्ट सौधमंरत्न मे ।
- ९ परिव्राजको का उपपात-उत्कृष्ट ब्रह्मरत्न मे ।
- १० प्रयतीना (अविनयी अनो) का उपपात-वित्त्विक
देवो मे ।
- ११ देशविरत सजी पचेन्द्रिय तिर्यचो का उपपात-उत्कृष्ट
स्वहृन्नास्वल्प मे ।
- १२ भाजीविक मनानुयायियो का उपपात-उत्कृष्ट अच्युत-
वल्प मे ।
- १३ अभिमानी (आत्मोत्कर्षक) श्रमणो का उपपात-उत्कृष्ट
अच्युतवल्प मे ।
- १४ निह्वो का उपपात-उत्कृष्ट शैवेयक देवो मे ।
- १५ अन्वारभी गृहस्था का उपपात-उत्कृष्ट अच्युत वल्प मे ।
- १६ अन्वारभी श्रमण का उपपात-नवार्थविद्धविमान या सिद्ध
गति ।
- १७ सर्वकाम विरत श्रमण का उपपात-सिद्ध गति ।

औपपातिक उपांग विषय सूची

चम्पा नगरी वर्णन

- १ क- कृषि भूमि
- ग- मुर्गे और गांठ
- ग- टैग. जी. चायन
- घ- गायें. भैने. भैटें
- ङ- गुन्दर चैत्य, वैश्यालय.
- च- उत्तरीचिक (रिद्वत नेने वावे)
- छ- नट आदि १३ फराजीचि
- ज- आगम उद्यान
- झ- अगड़ आदि ४
- झ- परिग्या. चक्रआदि से द्वादशीन पर्यन्त
- ट- विपणि आदि
- ठ- शृगाटक आदि
- ड- तुरग आदि

पूर्णभद्र चैत्य वर्णन

- २ क- काला गुरु आदि
- ग- नट आदि

वनखण्ड वर्णन

- ३ क- मूल, कंद आदि
- ग- नित्य कुमुमिका आदि
- ग- शुक. वहि आदि
- घ- गुच्छ आदि
- ङ- वापी आदि
- च- रथ आदि

नागरिक पशु-पक्षी
गाय पदार्थ

पालतू पशु
सार्वजनिक स्थान
अपराधी वृत्तिवाले

सार्वजनिक मरगाह
सार्वजनिक जलाशय
नागरिक सुरक्षा के साधन
प्रत्येक विक्रय के स्थान
राजमार्ग में विशेष स्थान
यातायात के साधन

मुगन्धित धूप
कला जीवि

वृक्ष के अंगोपांग
वारहमासी वनस्पतिया.
वन्य पक्षी
विविध वनस्पतियां
सार्वजनिक जलाशय
यातायात के साधन

अन्योक्त वक्ष्य वचन

४ क	निग आदि	विनिर्घोषनस्मृतिषा
ख	लोच आदि	मुष्मिषन रुध
ग	कनम दाहम आदि	कम्बाले हृष
घ	शिक्षा	यान
ङ	पद्मलता आदि	विनिर्घ सता वय

गिलापट्ट वचन

- | | | |
|-----|-------------|--------------------|
| ५ क | अजन आदि | विनिर्घ रग |
| ख | मरुत आदि | कम मे भगदे जानेदान |
| ग | ईहा वृष आदि | भित्तिविष |
- ६ कौणिक राजा का वचन
- ७ भभदार पुत्र कायिक की लानी चारिणी का वचन एक सवान दाता का वचन
- ८ भ० महावीर क वायकमो की भूचना देनेवाले का वचन
- ९ कौणिक का उपस्थानगाना मे आगमन वचनयक दण्डनायक आदि राज्य का अधिकारी वय
- १० क भ० महावीर का चम्पानगरी की ओर विचार
- ख भ० महावीर की ऊचाई
- ग अगवान ने प्रत्येक अवोपान का वचन
- घ चीनीस बट्ट वचनानिगम
- ङ पनीम सन्ध वचनानिशय
- च चक आदि प्र नि १२
- छ अमत्र-अमणी परिवार की मस्था
- ज भ० महावीर का चम्पानगरी क बाहर पूषमन चय के समीप आगमन प्रवृत्तिवाटुक द्वारा कौणिक को चम्पानगरी क उप नगर में भ० महावीर क पञ्चाश की भूचना देना

१२ क- भ० महावीर को स्व-स्थान से वंदना करने का कोणिक का उपक्रम

ख- पाच राज्यचिह्नों के नाम

ग- भगवान की स्तुति

घ- प्रवृत्तिवादक का सत्कार

ङ- पूर्णभद्र चैत्य में भगवान के पधारने पर सूचना देने का आदेश

१३ भगवान महावीर का पूर्णभद्र चैत्य में पदार्पण

भ० महावीर के अन्तेवासी

१४ क- अन्तेवासियों का पूर्व-परिचय

ख- अन्तेवासियों का दीक्षा काल

१५ क- अन्तेवासियों की ज्ञान-संपदा

ख- " " इच्छा शक्ति

ग- " " विशिष्ट तत्त्वज्ञान

घ- " " विविध तपश्चर्या

विशिष्ट तपों के नाम, पट्टिसाधनों के नाम

अन्तेवासी स्थविरों का वर्णन

१६ क- स्थविरों का पूर्व-परिचय

ख- " की शरीर सम्पदा. व्यक्तित्व

ग- " का समयी जीवन

घ- " का बौद्धिक परिचय

ङ- " की आनुगायिता

च- " का बहुश्रुत ज्ञान

छ- " का वाद सामर्थ्य

ज- " का स्व सिद्धान्त ज्ञान

झ- " की स्मरण शक्ति का परिचय

भगवान महावीर के अत्तेवासी

१७ क अत्तेवासियों की सवम आराधना

ख ना विरक्त जीवन

ग के जीवन की २१ उपमाएँ

घ का निवृत्तिमय जीवन

ङ चार प्रकार के प्रतिपद्य

च अत्तेवासियों की आध्यात्मिक स्थिति

अत्तेवासियों की सपदस्यर्षा

१८ क आग्नेयतरंग छ प्रकार का

ख वायुतरंग छ प्रकार का

साहस्यप के भव

१९ क अतगत के भव

ख दृक्चरित्र अतगत के भव

ग वायव्यचरित्र अतगत के भव

घ वायव्यचरित्र के भव

ङ भवन अतगत के भव

च अतगतचरित्र के भव

छ दृक्चरित्र अतगत के भव

ज वायव्यचरित्र अतगत के भव

झ भवन अतगत अतगतचरित्र के भव

ञ अतगतचरित्र के भव

ट भि अतगत के भव

ड भव अतगत के भव

ड वायव्यचरित्र के भव

ड अतगतचरित्र के चार भेद

न दृक्चरित्र अतगतचरित्र के चार भेद

- त- कषाय प्रतिसंलीनता के चार भेद
- थ- योग प्रतिसंलीनता के तीन भेद
- द- मनोयोग प्रतिसंलीनता के दो भेद
- घ- वचनयोग „ „ „
- न- काययोग „ „ „
- प- विविधत शय्या-आसन-सेवन की व्याख्या

आभ्यन्तरतप के छ भेद

- २० क- प्रायश्चित्त के दस भेद
- ख- विनय के नात भेद
- ग- ज्ञानविनय के पांच भेद
- घ- दर्शनविनय के दो भेद
- ङ- श्रुश्रुपाविनय के भेद
- च- अनत्यागातना विनय के पैंतालीस भे
- छ- चारित्र्यविनय के पांच भेद
- ज- मनविनय के ढो भेद
- झ- वचन विनय के दो भेद
- ञ- कायविनय के दो भेद
- ट- अप्रशस्त कायविनय के सान भेद
- ठ- प्रशस्त कायविनय के सात भेद
- ड- लोकोपचार विनय के सात भेद
- ढ- वैयावृत्य के दस भेद
- ण- स्वाध्याय के पांच भेद
- त- ध्यान के चार भेद
- थ- आर्तध्यान के चार भेद
- द- „ „ „ लक्षण
- ध- रौद्रध्यान के चार भेद

१. ...
२. ...
३. ...
४. ...
५. ...
६. ...
७. ...
८. ...
९. ...
१०. ...
११. ...
१२. ...
१३. ...
१४. ...
१५. ...

भ० महावीर के अन्तेजामी

११. ...
१२. ...
१३. ...
१४. ...
१५. ...
१६. ...
१७. ...
१८. ...
१९. ...
२०. ...
२१. ...
२२. ...
२३. ...
२४. ...
२५. ...
२६. ...
२७. ...
२८. ...
२९. ...
३०. ...
३१. ...
३२. ...
३३. ...
३४. ...
३५. ...
३६. ...
३७. ...
३८. ...
३९. ...
४०. ...
४१. ...
४२. ...
४३. ...
४४. ...
४५. ...
४६. ...
४७. ...
४८. ...
४९. ...
५०. ...
५१. ...
५२. ...
५३. ...
५४. ...
५५. ...
५६. ...
५७. ...
५८. ...
५९. ...
६०. ...
६१. ...
६२. ...
६३. ...
६४. ...
६५. ...
६६. ...
६७. ...
६८. ...
६९. ...
७०. ...
७१. ...
७२. ...
७३. ...
७४. ...
७५. ...
७६. ...
७७. ...
७८. ...
७९. ...
८०. ...
८१. ...
८२. ...
८३. ...
८४. ...
८५. ...
८६. ...
८७. ...
८८. ...
८९. ...
९०. ...
९१. ...
९२. ...
९३. ...
९४. ...
९५. ...
९६. ...
९७. ...
९८. ...
९९. ...
१००. ...

- ग- असुरकुमारों के चिन्ह
 घ- " के वस्त्राभूषण
 ङ- " के विलेपन
 च- " की दिव्य उपलब्धियाँ

छ- भगवान की वन्दना

२३ क- भ० महावीर की प्रवचन परिपद् में नाग आदि नव प्रकार के भवनवासी देवों का आगमन

ख- भवनवासी देवों के क्रमशः मुकुट चिन्ह

२४ क- भ० महावीर की प्रवचन परिपद् में व्यन्तर देवों का आगमन

ख- सोलह व्यन्तर देवों के नाम

ग- व्यन्तर देवों का विनोदी जीवन

घ- " के वस्त्राभूषण

ङ- " के मुकुट चिन्ह

भ० महावीर की धर्मकथा में ज्योतिषी देवों का आगमन

२५ क- नव ग्रहों के नाम

ख- अष्टावीस नक्षत्र

ग- ज्योतिषी देवों के मुकुट चिन्ह

भ० महावीर की धर्मकथा में वैमानिक देवों का आगमन

२६ क- वारह देव लोकों के नाम

ख- वैमानिक देवों के विमानों के नाम

ग- वैमानिक देवों के मुकुट चिन्ह

घ- " के शरीर का वर्ण

ङ- " के वस्त्राभूषण

भगवान की वन्दना

२७ क- भ० महावीर के पधारने की नगरी में चर्चा

ख- धर्म परिपद् होना

- २८ क प्रवृत्तिवादक ने भगवान के पूर्वभद्र चैत्य से पधारने की सूचना कोणिक को दी
- ख कोणिक ने साढ़े बारह लाख स्वर्ण मुद्रा का प्रोतिदान प्रवृत्तिवादक को दिया
- २९ कोणिक का सेनापनी को पट्टहस्ती साने वा, सेना सुसज्जित करने का सुमद्रा देवी प्रमुख को तैयार होकर आने का और नगर को सजाने का आदेश देना
- ३० आदेशानुसार कार्य होने पर कोणिक को सेनापनी का निवेदन
- ३१ क- कोणिक का सुसज्जित होना
[व्यायाम, तैलमर्दन, स्नान, वस्त्र और आभूषणों का वर्णन]
- ख पट्टहस्ति पर बैठना
- ग अष्ट भागलिक के नाम
- घ राज्य चिन्हों के नाम
- ङ- सब के सपाक्रम से व्यवस्थित हाकर बनने का वणन
- च- अरथ सेना, मज सेना रथ सेना और पैदल सेना का वणन
- छ- विविध वाद्यों का वणन
- ज- चम्पा नगरी के राजमार्ग ने सपरिकर कोणिक का जाना
- ३२ क- स्तुतिपाठकों का वर्णन
- ख समयहरण के समीप आने पर पांच राज्य बिहू छोड़ना
- ग पांच अभिगम विधि के पश्चात् भगवान को बदना करना
- ३३ क सुमद्रा देवी आदि रानियों के सुसज्जित होने का वणन
- ख अनेक देशों की दासियों के साथ पूजमद्रचैत्य से पहुँचना
- ग पांच अभिगम विधि के पश्चात् भगवान की बदना करना
- ३४ क भ० महावीर का धम्मपरिषद् में मोक्षन पर्यन्त गुनाई देने वाले स्वर से अवमाशयी भाषा में चर्मापदेश
- ख धम्मपरिषद् में आयों और अनायों की उपस्थिति

ग- अर्धमागभी माया का नभी आर्य अनायं भाषाओं में अनुवादित होकर मुनार्द्र देना

घ- धर्मोपदेश के प्रमुख विषय

लोहलोह, जीवादि जगत्स्य, उत्तम पुरुष, चार गति, माना, पिता य मुग्धजनों की भक्ति, निर्वाण माधना, जगत् की बढारह पाप प्रवृत्तियों का परिचय, गमन्य पापमय प्रवृत्तियों में निवृत्ति बन्धि नास्तिवाद, शुभाशुभ कर्मफल

निर्ग्रन्थ-प्रवचन की महिमा

मर्त्यधा कर्मक्षय में मुक्ति, शुभकर्म अगम्य रहनेपर स्वर्ग नरकगति के चार कारण

निर्ग्रन्थगति के चार कारण

मनुष्यगति के चार कारण

देवगति के चार कारण

कर्मवन्ध का कारण राग

दो प्रकार का धर्म

पंच महाव्रत और रात्रि भोजन विरति रूप-अणगार धर्म, अणगार धर्म के आराधक

चारह प्रकार का आगार धर्म

[पांच अणव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत, संनेखना]

आगार धर्म के आराधक

३५ क- धर्म कथा की समाप्ति. कई व्यक्तियों द्वारा आगार धर्म की प्रतिज्ञा करना

ख- निर्ग्रन्थ प्रवचन की महिमा करना

ग- धर्म, उपशम, विवेक और विरति का क्रम

३६ कोणिक का स्वस्थान गमन

३७ शुभदा प्रमुख रानियों का स्वस्थान गमन

समवसरण वर्णन समाप्त

३८ क गौतम गणपति का बाह्य व आध्यात्मिक परिचय

■ गौतम गणपति की विद्याया विनय भक्तिपुत्रक प्रदत्त
य प्रदत्त

(१) असमय-वाचन एवम् गुण के पात्र कर्मों का
वागमन [आध्यात्म] का

(२) असमय-वाचन एवम् गुण के मोहकर्म का

(३) मोहकर्म के साथ वेदना वचन का

(४) असमय-वाचन प्राणघाती की नरक गति का

(५) असमय की देवकी का

असमय व व्यन्तर देव होने के कारण

(६) व्यन्तर देवों की स्थिति

(७) व्यन्तर देवों की शक्ति आदि

(८) व्यन्तर देवों का अनाराधक न होना

(९) ब्रह्मरूप सहने वाले अनाराधितों तथा आत्मघातकों
की व्यन्तर देवों में उत्पत्ति

(१०) व्यन्तर देवों की स्थिति

(११) व्यन्तर देवों की शक्ति आदि

(१२) व्यन्तर देवों का अनाराधक होना

(१३) प्रकृति भद्र वाचन भव आरम्भ आरम्भ जीवि मनुष्यों
की व्यन्तर देवों में उत्पत्ति

(१४) व्यन्तर देवों की स्थिति [अनाराधक]

(१५) गणपति-वाचन अविच्छेद से ब्रह्मचर्य पालन करने
वाली स्त्रियों की व्यन्तर देवों में उत्पत्ति

(१६) व्यन्तर देवों की स्थिति [अनाराधक]

(१७) शिष्य-वाचन केवल सपत्नी-मोक्ष मनुष्यों की
व्यन्तर देवों में उत्पत्ति

- (१८) व्यन्तर देवों की स्थिति [अनाराधक]
 (१९) अग्निहोत्री-यावत्-कण्डू-त्यागियों की ज्योतिषी देवों में
 उत्पत्ति [विविध तापस सम्प्रदायों के नाम]
 (२०) ज्योतिषी देवों की स्थिति
 (२१) ज्योतिषी देवों का अनाराधक होना
 (२२) कान्दिपिक-यावत्-नृत्यरुचि श्रमणों की वैमानिकों में
 उत्पत्ति
 (२३) वैमानिक देवों की स्थिति (अनाराधक)
 परिव्राजकों की ब्रह्मलोक में उत्पत्ति
 (२४) क- आठ ब्राह्मण परिव्राजकों के नाम
 ख- आठ परिव्राजकों के नाम
 ग- पट् शास्त्रों के नाम
 घ- सांख्य शास्त्र तथा अन्य ग्रन्थ
 ङ- परिव्राजकों की संक्षिप्त आचार मंहिता
 (२५) परिव्राजकों की स्थिति [अनाराधक]

अंबड परिव्राजक की चर्या

- ३६ क- अंबड के सात सो गिप्य
 ख- कपिलपुर से पुरिमताल नगर जाना
 ग- अटवी में भटक जाना
 घ- सभी परिव्राजकों की पिपासा—पानी पाने की इच्छा—
 पानीदाता की शोध
 ङ- अदत्तादान की प्रतिज्ञा
 च- गंगा नदी की संतप्त बालुरेत पर सलेखना, पादपोगमन,
 समाधिमरण
 छ- सभी परिव्राजकों की ब्रह्मलोक में उत्पत्ति, स्थिति, परलोक

४० क अम्बड परिव्राजक की साधना

त अम्बड द्वारा नवितपुर म वैश्व सन्धि का प्रमाण

ग अम्बड परिव्राजक का अवधिमान

घ अम्बड की आचार घम आराधना

ङ अम्बड की दंड सम्पत्ति

च अम्बड का समाधिस्थान महाभोक म उत्पत्ति भव्यन

छ महाविष्णु म मयुडकुप म ज म सौक्तिक महार हृद प्रणिप
नामकरण कलाचाय क समीप अध्ययन अहतर कलाओं के
नाम अठारह देवी भाषाभा का ज्ञान कलाचाय को प्रीति
दान काम भोगा म विरक्ति विरक्ति क विदे कमल की
उपमा

स्वधियो से सम्पन्न की प्राप्ति अन्तार घम की दीक्षा दान
घम की आराधना केवल ज्ञान

[श्रमण साधना का स्तुति भव्यन]

अम्बड की आत्मा की निर्वाण पद की प्राप्ति

४१ क आचार्य प्रत्यनीक भाषि भव्यो किलिषी देवी से उत्पत्ति

ख किलिषी देवी की स्थिति

ग परलोक मे अनाराधक होना

घ ज्ञानिस्मरण मे देवविश्व मन्त्री पञ्चद्वय विमला की सत्कार
कल्प पय त उत्पत्ति

ङ स्थिति परलोक मे आराधक होना

च आजीविक धमणा की अच्युत कल्प पय त उत्पत्ति

छ अच्युत कल्प मे देवा की स्थिति परलोक मे आराधक न होना

ज आ मोक्षक—अपनी बढाई करने वाले यावत् कोतुक करने
वाले धमणो की अच्युतकल्प पय त उत्पत्ति

झ अच्युत कल्प मे इन देवा की स्थिति परलोक मे अनाराधक

अ- प्रवचन निगूहों की ग्रंथेयक देव पर्यन्त उत्पत्ति.

ट- इन ग्रंथेयक देवों की स्थिति. परलोक में अनाराधक

ठ- अन्तारम्भी-यावत्-देशविरत श्रमणोपासकों की अच्युत कल्प पर्यन्त उत्पत्ति

ड- इन देवों की स्थिति. परलोक में आराधक

ढ- अनारम्भी-यावत्-नग्नभाव वाले निर्ग्रन्थों की मुक्ति

ण- अवशेष शुभकर्मा निर्ग्रन्थों की मर्यादं मिद्ध में उत्पत्ति.

त- इनकी स्थिति. परलोक में आराधक

थ- सर्व कामविरत-यावत्-क्षीण लोभ निर्ग्रन्थों की मुक्ति

४२ क- केवल समुद्धात के समय आत्मा का पूर्णलोक से स्पर्श.

ग- " " " " निर्जरा पुद्गलों का पूर्णलोक से स्पर्श

ग- छद्मस्थ के अदृष्ट निर्जरा पुद्गल.

घ- निर्जरा पुद्गलों को अतिमूढम सिद्ध करने के लिये गन्ध पुद्गलों का उदाहरण

[जम्बूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ. परिधि. देयताको दिव्य गति. गन्ध पुद्गलों का पूर्णलोक से स्पर्श. छद्मस्थ के अदृष्ट गन्ध पुद्गल]

ङ- केवली समुद्धात करने का कारण.

च- सभी केवलियों का केवली समुद्धात न करना

छ- केवली समुद्धात के आठ समय

ज- केवली समुद्धात के समय. मन, वचनयोग के प्रयोग का निषेध

झ- काययोग के प्रयोग का निश्चित क्रम

ञ- केवली समुद्धात के आठ समयों में मुक्त होने का निषेध

ट- केवली समुद्धात के पश्चात् मन, वचन, काय का प्रयोग

४३ क- सयोगी की मुक्ति का निषेध

- म योग निरोध का ज्ञान और क्रम
 न मुक्त आत्मा की अविषद गति
 य मुक्त होने समय एक साधारणयोग
 ड मित्रा की सारी अवयवगति स्थिति का चोकर दण्ड बीज का
 उन्नाहरण
 ष सिद्ध होने वाले जीव का संस्थान
 ष के संस्थान
 ज की अवयव उद्भूत अवगाहना^१
 झ की अवयव उद्भूत भाव
 ञ सिद्धा का निवास स्थान
 ट सर्वाधि मित्र विमान के ऊपरी भाग से ईषन प्राग्भारा दृष्टी
 तन अन्तर
 ड ईषन प्राग्भारा दृष्टी का भावार्थ विष्कम्भ
 की परिधि
 क मण्ड भाग की माटाई
 के बारह नाम
 का वज्र
 का संस्थान
 की औपपातिक रचना
 का स्थान
 की अनुपम सुन्दरता
 ण ईषन प्राग्भारा के ऊपरीतन ने साकान का अन्तर
 स गात्र कोण क छठे भाग में मित्रा की अवस्थिति
 बावीस मायाआ के विषय
 १२ मित्र अवाक के नीचे और ओक ८ ऊपर शरीर स्थान तिरदा
 ओक में और मित्र मित्रोक्त में

१ यह कथन निश्चयों का अर्थ है — दाका

- ३ सिद्धात्माओं का संस्थान
 ४-८ सिद्धों की जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट अवगाहनी
 ९-१० एक में अनेक सिद्धात्मा. सिद्धात्माओं का लोकान्त से स्पर्श.
 सिद्ध-आत्माओं का परस्पर स्पर्श.
 ११ सिद्धों का लक्षण
 १२ सिद्धों का ज्ञान. सिद्धों की दृष्टि
 १३-२२ सिद्धों का सोदाहरण मुख स्वरूप

कंदप्पमाभिओगं च, कित्विसियं मोहमासुरत्तं च
 एयाओ दुग्गईओ, मरणंमि विराहिया होंति ॥
 कंदप्प-कुक्कुयाइं, तह सील-सहाव-हास-विगहाइं ।
 विम्हावेंतो य परं, कंदप्पं भावणं कुणई ॥
 मंता जोगं काउँ, भूईकम्मं च जे पउंजंति ।
 साय-रस-इट्ठिहेउं, अभियोगं भावणं कुणई ॥
 नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघ-साहूणं ।
 माई अवण्णवाई, कित्विसियं भावणं कुणई ॥
 अणुबद्ध रोस-पसरो, तह य निमित्तम्मिहोइ पड़िसेवी ।
 एएहिं कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणई ॥
 सत्थगहणं विसमक्खणं, जलणं जलपवेसो य ।
 अणायार-भंडसेवी, जम्म-मरणाणि बंधंति ॥

सुहसायगस्स समणस्स, सायाञ्जलगस्स विगामसाइस्स ।
 उच्छ्रोवणा पहायस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ॥
 तवो गुण पहाणम्स, उज्जुमइ खति सज्जम रयस्स ।
 परीसह जिणतस्स, सुलहा सुगइ तारिसगस्स ॥

णमो णिग्गंथाणं

द्रव्यानुयोग-प्रधान राजप्रश्नीय-उपांग

अध्ययन	१
उद्देशक	१
उपलब्ध मूल पाठ	२१००२लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	६५
पद्य-गाथा	×

वणे मूढे जहा जंतु, मूढे जेयाणुगामिए ।
दो वि एक अकोविया, तिब्बं सोयं नियच्छइ ॥
अंधो अंधं पहं नेतो, दूरमद्धाणुगच्छइ ।
आवज्जे उप्पहं जंतू, अदुवा पंथाणुगामिए ॥
एवमेगे णियायट्ठी, घम्ममाराहगा वयं ।
अदुवा अहम्ममावज्जे, न ते सव्वजुयं वए ॥

देहात्मवाद के तर्क

से जहानामए-केइ पुरिसे कोमीओ अगि अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! असी अय कोमी, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो अयमाउसो । आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे मु जाओ इसिय अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! मु जे इय इसिय एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो । आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे ममाओ अट्ठि अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! करयसे अय आमलए, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो । आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे दहीओ नवणीय अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! नवणीय अय तु दही, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो । आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे तिलेहितो तेल्ल अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! तेल्ल अय पिण्णाए नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो । आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे दक्खूओ खोयरस अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो खोयरसे अय छोण एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो । आया इय सरीर ।

से जहानामए-केइ पुरिसे अरणीओ अग्गि अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! अग्गी अय अग्गी एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो । आया इय सरीर ।

एव अमते असविज्जमाणं तं सुयकलाय भवइ, तज्जहा

अन्नो जीवो अन्नं सरीरं तम्हा तं मिच्छा ८

राजप्रश्नीय-उपांग विषय-सूची

- १ आमलकल्पा नगरी वर्णन
- २ क- आम्रशाल वन वर्णन
ख- आम्रशाल वन चैत्य वर्णन
- ३ क- अशोक वृक्ष वर्णन
ख- शिलापट्ट वर्णन (ओष्पातिक के समान)
- ४ क- श्वेत राजा. धारिणी देवी
ख- भ० महावीर का समवमरण. धर्म परिपद्. धर्मकथा. राजा की पर्युपासना
- ५ क- सूर्याभ देव. सौधर्म कल्प. सूर्याभ विमान. सुधर्मा सभा.
ख- चार हजार सामानिक देव. चार अग्रमहीपियाँ. तीन परिपद सात सेना. सात सेनापती. सोलह हजार आत्मरक्षक देव.
ग- सूर्याभ का अवधिज्ञान से सम्पूर्ण जम्बूद्वीप को देखना.
घ- भ० महावीर को आमलकल्पा के आम्रशाल वन चैत्य में देखना.
ङ- सूर्याभदेव का स्वस्थान से भगवद् वंदन
- ६ भगवद् दर्शन के लिये आने का संकल्प.
- ७ भगवान् के आसपास का एक योजन प्रदेश साफ करके पुनः मूर्चित करने का आभियोगिक देव को आदेश.
- ८ क- आभयोगिक देव का (वैक्रीय समुद्रघात. सोलह प्रकार के रत्नों के नाम) सुमज्जित होकर आम्रकल्पा आना
ख- आम्रशाल वन चैत्य में विराजमान भगवान् को वंदना करना
९ अभियोगिक देव को देवताओं के कर्तव्य का निर्देश

- १० आभियोगिक देव का वैज्य समुन्धात करना सफाई करने के लिये तैयार होना
- ११ क सबलक वायु की विक्रमणा रचना एक तुरण कुशन ध्यक्ति क समान सबलक वायु द्वारा कचरे की सफाई होना
ख अश्व रेष की रचना एक योजन प्रेण क सिचन
ग पुन्य वाहन की रचना एक योजन म पुन्यवर्षा
घ एक योजन क क्षत्र की विविध प्रकार के धूपों से सुशोभित करना
ङ भगवान् को व न्ना करके आभियोगिक देव का स्वस्थान जाना और सूर्याभ देव को सविनय सफाईवाय से अवगत करना
- १२ क सूर्याभ देव का वैज्य सनाम्यक्ष को तुलना
ख आमलकल्पना धमने के लिये सभी देवों को खीघ्र उपस्थित होने की सुषोषा घटा द्वारा सूचना दिववाना
- १३ क वैदिक सेनाध्यक्ष का सुषोषा घटा वादन
ख सभी देव देवियों को भगवद् व दना के लिये आह्वान
- १४ सुसज्जित देव देवियों का सूर्याभ के सामने उपस्थित होना
- १५ आभियोगिक देव को निम्न मानोवधान की रचना का आदेश
- १६ क दिव्य मानविमान की रचना का विस्तृत बखान (नित्य वधान)
ख आठ महलों के नाम
ग विविध धर्मों के स्वयं से विमान के स्वयं की तुलना
घ भित्तिचित्रों का परिचय
ङ वृण वण के विविध पत्थरों से कृष्य मणियों की तुलना
च नील वण के अनेक पत्थरों से नील मणियों की तुलना
छ स्वतलण के नानाविध द्रव्यों से मोहित मणियों की तुलना
ज पीत वण के प्रशस्त पदार्थों से हारित मणियों की तुलना
झ सुवर्ण वण के स्वच्छ द्रव्यों से ध्वज मणियों की तुलना
ञ सुमधिन द्रव्यों से मणियों के वध की तुलना

- ६- अति शृङ्खलान्वित पदानों में मणियों के स्पर्श की समानता.
- ७- विमान के मध्य में प्रेक्षापर मण्डप की रचना
[विमान चाम्नु मिल्प का अवन]
- ८- प्रेक्षापर मण्डप के मध्य में अवाटे का निर्माण
- ९- चार गोजन की मणिपौष्टिका का निर्माण
- १०- मिहामन की रचना [मिल्प पना]
- ११- विजय ध्वज का विन्यास
- १२- वज्रमय अकण और मुक्तामाला की रचना
- १३- उत्तर-पूर्व में [ईशान कोण] में मानानिक देवों के मिहामन
पूर्व में अथमहीपियों के भद्रामन
दक्षिण-पूर्व में आन्मन्तर परिपद के आठ हजार भद्रामन.
दक्षिण में मध्यम परिपद के दस हजार भद्रामन
दक्षिण-पश्चिम में बाह्य परिपद के बारह हजार भद्रामन
पश्चिम में सात सेनापतियों के सात भद्रामन
चारों दिशाओं में आत्मन्क्षर देवों के सोतह हजार भद्रामन
[प्रत्येक दिशा में चार-चार हजार भद्रामन]
- १४- विमान के वर्ण गन्ध की उपमा.
- १५- आभियोगिक देव द्वारा विमान की तैयारी की सूर्याभिदेव को
सूचना
- १६ क- गंधर्व और नर्तकों के साथ सूर्याभि का विमान में प्रवेश.
ख- देव परिवार का यथास्थान बैठना
ग- विमान के आगे अष्ट मंगल, दण्ड, महेन्द्र, ध्वज, पांच सेनापतियों
के विमानों और आभियोगिक देवियों के विमान का चलना
- १७ क- सौधर्मकल्प के उत्तर के निर्याण मार्ग से सूर्याभि का प्रस्थान
ख- विमान की उत्कृष्ट गति
ग- नंदीश्वर द्वीप के रतिकर पर्वत पर दिव्य ऋद्धि को संक्षिप्त
करना

घ आमनरत्ना के आभरण धारण करने तथा सूर्याभ का पहुँचना

ङ यान विमान में सूर्याभ का सपरिवार बाहर आना

च भ० महावीर की सविधि वन्दना करना

छ भ० महावीर की अपना परिचय देना

१६ भ० महावीर का सूर्याभ की देव दूतों का निम्न

२० सूर्याभ का सविनय भगवान् के सम्मुख उपस्थित करना

२१ भ० महावीर का सूर्याभ परिष्कृत म धर्म प्रदर्शन

२२ भ० महावीर का सूर्याभ देखने आने सम्बन्ध में कनिष्ठ प्रश्न
क मैं भवमिदिक सम्बन्धदृष्टि परित्यक्तमारी मुनभवादि द्वारा
धक धीरे चरित हूँ या इसमें विचरित?

ख भ० महावीर द्वारा स्पष्टीकरण

२३ क भगवान् का ज्ञान की महिमा करना

ग लोगमात्र धर्मज्ञ निश्चयों को ब्रह्म प्रहार का नियम शून्य
दिष्टाने के लिये भ० महावीर से आज्ञा प्राप्त करने का प्रयत्न
करना

२४ क महावीर का ही नाम करना मौन रहना

ख शून्य निश्चयों के निम्ने आना प्राप्ति का पुनः प्रयत्न भ० महावीर
का पुनर्वक्त मौन रहना

ग सूर्याभ का सविधि वन्दना

घ सूर्याभ का वक्रव मसुन्धात

ङ शून्य के लिये भूभाग का समीकरण

च नाट्यशाला प्रकाशक सम्पत्ती की रचना

छ भ० के सम्मुख अपने सिंहासन पर बैठने की भगवान् से आज्ञा
प्राप्त करना

ज सूर्याभ का दक्षिण भूभाग प्रसारण शून्य के लिये समन्वित १०८
देव कुमारों का प्रकट होना

- ग- सूर्याभि का वाम भूजा प्रसारण. नृत्य के लिये सशृंगार. १०८
देव कन्याओं का प्रकट होना.
- घ- देव कुमार और देव कुमारियों को भगवद् चन्दना. गीतमादि
के सम्पुर्ण नृत्य प्रदर्श के लिये उपस्थित होना
- ङ- सत्तावन प्रकार के वाद्य और उनके वादकों का एक सौ आठ
आठ की संख्या में उपस्थित होना.
- च- अष्ट मांगलिक नृत्य
- छ- भित्तिचित्र नृत्य
- ज- नगबाल नृत्य
- झ- चन्द्रावली-यावत्-रत्नादली नृत्य
- ट- सूर्योदय नृत्य
- ड- चन्द्रसूर्यागमन नृत्य
- ण- चन्द्रसूर्यावरण नृत्य
- त- चन्द्रसूर्यास्त नृत्य
- थ- चन्द्रसूर्य मण्डलादि नृत्य
- द- श्रृंगार ललित-यावत्- द्रुत विनम्वित नृत्य
- ध- नागर विभक्ति-यावत्-नन्दा नम्पा विभक्ति नृत्य
- न- मत्तयण्डादि नृत्य
- प- पञ्चाक्षर वर्ग नृत्य
- फ- अशोक पल्लवादि नृत्य
- ब- पद्मलतादि नृत्य
- भ- द्रुतादि गति नृत्य
- ल- अंगचिष्टा नृत्य.
- व- भ० महावीर के पूर्वभर्त्ता का नृत्य द्वारा प्रदर्शन
- श- भ० महावीर के कल्याणकों का नृत्य.
- स- चार प्रकार के वाद्यों का वादन

- प चार प्रकार के गवैया का गायन
 ग नृत्या का प्रदर्शन
 न अभिनयों का प्रदर्शन
 ज देवकुमार और कुमारियों का भगवान को वदना करके सूर्याभ के समीप पहुँचना
- २५ क सूर्याभ द्वारा दिव्य ऋद्धि का सहार
 ल भगवद् वदना सौम्य कल्प यमन
- २६ क सूर्याभ प्रदर्शित दिव्य ऋद्धि विषय हेतु विज्ञाता
 ल कूड़ापार यानों के हेतु से समाधान
- २७ क सूर्याभ विमान का स्थान
 ल सूर्याभ विमान विस्तार निश्चये
 ग का मस्थान
 घ सौम्य कल्प क ३२ साक्ष विमान
 ङ पात्र भवत्सक विमानों के नाम
 च सौम्यवत्सक विमान से पूव मे सूर्याभ विमान
 छ सूर्याभ विमान का आयास विष्कम्भ
 ज सूर्याभ विमान की परिधि
- २८ क सूर्याभ विमान के प्राकार की ऊँचाई
 प्राकार के मूल का विष्कम्भ
 प्राकार के मध्य का विष्कम्भ
- ख स्वयमय प्राकार पथ वण मणिमय कवि शीपक कागुरे
 कविशीपको का आयास विष्कम्भ कविशीपको की ऊँचाई
- ग सूर्याभ विमान के एक पादव के द्वार द्वारों की ऊँचाई
 द्वारों का विष्कम्भ द्वारों के शिखर, द्वारों के भित्तिचित्र
- घ द्वार कपाट वणन
 ङ द्वारों के दोनों ओर चन्दन कृतशा की पक्षितों
 नाम दत्तो (सूटियाँ) की पक्षियाँ

- च- नागदंतों के उपर नागदंतों की पणितया
 छ- नागदंतों पर नटकने वाले मुगन्धित धूप के श्रौंके
 ज- द्वारों के दोनों ओर सोलह २ सालभंजिकाएं
 झ- द्वारों के दोनों ओर सोलह २ जालियां

“ पटियां

पटियों का मधुर स्वर

- ज- द्वारों के दोनों ओर सोलह २ वनमानाएं
 ट- द्वारों के दोनों ओर दो, दो पगंठक—चबूतरे
 पगंठकों का आचाम-विष्कम्भ और बाह्य
 प्रत्येक पगंठक पर एक एक प्रामाद
 प्रामादों की ऊंचाई, विष्कम्भ
 ठ- द्वारों के दोनों ओर सोलह २ तोरण
 प्रत्येक तोरण पर दो दो सालभंजिकाएं
 प्रत्येक तोरण के आगे हय-यावत्-वृषभ के समुदाय
 प्रत्येक तोरण के आगे पद्मलता-यावत्-श्यामलताएं
 प्रत्येक तोरण के आगे दो प्रशस्त रचस्तिक

“

नन्दन कलश

“

भृंगार

“

आदर्श कौच

“

थाल

“

पानी पात्र

“

पीठिकाएं

“

रत्नकरण्डक

“

हय-यावत्-वृषभरत्न

“

पुष्प चंगेरियां

“

सिंहासन

“

छत्र

प्रत्येक तारण के आगे दो प्रणत चमर

तेन पात्र

४ सूर्याभ विमान के प्रत्येक द्वार पर विविध प्रकार की १०८
१०८ ध्वजाएँ

५ सूर्याभ विमान में ६५ ६५ तलधर
तलधरों के द्वारों पर सोनह मोनह रत्न

अष्ट अष्ट मगर

६ सूर्याभ विमान में चार गिनाजा में चार हजार द्वार

७ सूर्याभ विमान के चार गिनाजा में चार वनसण्ड

प्रत्येक वनसण्ड का आयाम—विष्कम्भ

२६ वनसण्ड की मृगमणियों के स्वर का वर्णन

३० ५ वनसण्ड की वायिया का वर्णन

६ वनसण्ड के उत्थान पतना का वर्णन

७ वनसण्डवर्मा मण्डपा का वर्णन

८ मूला का वर्णन

९ गिलापट्टा का वर्णन

१० वनसण्ड के प्रमाणों की ऊँचाई आयाम विष्कम्भ

११ प्रत्येक प्रासाद में एक एक देवता उन देवताओं की स्थिति

१२ प्रत्येक वनसण्डवर्मा उपकारिकान्वयन का आयाम विष्कम्भ
परिधि बाह्य य मोटाई

३२ ५ पद्मरवेन्दिका की ऊँचाई विष्कम्भ परिधि

६ पद्मरवेन्दिका का वर्णन

७ पद्मरवेन्दिका कश्चित् नित्य और कश्चित् अनित्य—अर्थात्
—गाम्बन

८ वनसण्ड का चक्रवाल विष्कम्भ

९ उपकारिकान्वयन का वर्णन

३३ क- उपकारिकालयने मध्यवर्ती मुख्य प्रासाद की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि

ख- मुख्य प्रासाद के पार्श्ववर्ती प्रासादों की ऊँचाई-विष्कम्भ आदि

३४ क- मुख्य प्रासाद के उत्तर-पूर्व में सुधर्मा मभा

ख- सुधर्मा मभा का आयाम-विष्कम्भ ऊँचाई, आदि

ग- सुधर्मा मभा के तीन दिशाओं में तीन द्वार

प्रत्येक द्वार की ऊँचाई और विष्कम्भ

प्रत्येक द्वार के अग्रभाग में एक-एक मुख्यमण्डप

मुख-मण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

मुख-मण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

मुख-मण्डपों के तीन तिन दिशाओं में तीन द्वार,

द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ

प्रत्येक द्वार के अग्रभाग में एक-एक प्रेक्षाघर मंडप

प्रत्येक प्रेक्षाघर मण्डप के मध्य भाग में एक-एक अखाड़ा

प्रत्येक अखाड़े के मध्य भाग में एक-एक मणिपीठिका

मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

प्रत्येक मणिपीठिका पर एक-एक सिंहासन

प्रत्येक प्रेक्षाघर मण्डप के अग्रभाग में एक-एक मणिपीठिका

प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य

प्रत्येक मणिपीठिका पर एक स्तूप

प्रत्येक स्तूप का आयाम—विष्कम्भ और ऊँचाई

प्रत्येक स्तूप के चारों दिशाओं में एक-एक मणिपीठिका

प्रत्येक मणिपीठिका पर चारों दिशाओं में स्तूपाभिमुख चार

चार जिन प्रतिमाएँ

प्रत्येक स्तूप के सामने एक-एक मणिपीठिका

प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य

प्रत्येक मणिपीठिका पर एक एक चैत्य वृक्ष

प्रत्येक चैत्य स्तम्भ की ऊँचाई और उद्भूत
 स्वयं गोनाई आदि का परिमाण
 प्रत्येक चैत्य स्तम्भ के सामने एक मणिपीठिका
 प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम—विष्णुम्भ और बाहुल्य
 प्रत्येक महेन्द्र ध्वज की ऊँचाई उद्भूत और विष्णुम्भ
 प्रत्येक महेन्द्र ध्वज के सामने एक एक पुष्करिणी
 प्रत्येक पुष्करिणी का आयाम विष्णुम्भ और उद्भूत
 पद्मवर दक्षिण वनवण्ड आदि का वनन
 मुषर्मा ममा म मनोगुनिजाए नागदण छोके आदि
 मुषर्मा ममा म एक महामणिपीठिका
 मणिपीठिका पर एक मानवक चैत्य स्तम्भ
 चैत्य स्तम्भ की ऊँचाई उद्भूत विष्णुम्भ आदि
 चैत्य स्तम्भ के मध्य भाग में नागदण नागदणों के छोके पर
 द्विजे द्विजों में त्रिन अस्थियाँ
 अस्थियाँ की अर्वा चैत्यस्तम्भपर अष्ट २ मयल

- ३१ क मानवक स्तम्भ के पूर्व में एक महापीठिका
 महापीठिका का आयाम विष्णुम्भ और बाहुल्य
 ल पश्चिम में महा मणिपीठिका उसका आयाम विष्णुम्भ और
 बाहु व
 ग मणिपीठिकापर एक देव गवनीय और उमडा वनन
 ३२ क देवगवनीय के उत्तर-पूर्व में एक महामणिपीठिका उसका
 विष्णुम्भ और बाहुल्य
 ग महामणिपीठिका पर एक महेन्द्र ध्वज उसकी ऊँचाई और
 विष्णुम्भ महेन्द्र ध्वज के पश्चिम में सूर्यास्त देव का एक पश्चात्तर
 मुषर्मा ममा आदि
 ३३ क मुषर्मा ममा के उत्तर पूर्व में एक महाविष्टापनन

- त- सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई
- ग- सिद्धायतन के मध्य भाग में एक मणिपीठिका, उसका आयाम-विष्कम्भ और बाह्यस्य
- घ- मणिपीठिकापर एक देवछंद्रक, उसका आयाम-विष्कम्भ और उसकी ऊँचाई
- ङ- देवछंद्रकपर १०८ जिनप्रतिमाएँ, जिनप्रतिमाओं का वर्णन
जिन प्रतिमाओं के पृष्ठभाग में छत्रधारी प्रतिमाएँ
दोनों पार्श्व में चमरधारी प्रतिमाएँ
अग्रभाग में दो-दो नाग भूत यक्ष आदि की प्रतिमाएँ
जिन प्रतिमाओं के सामने १०८ घंट, कलश-यावत्-धूपकट्यूबें
- च- सिद्धायतन के ऊपर अष्ट मंगल आदि
- ३८ क- सिद्धायतन के उत्तर-पूर्व में एक उपपात सभा [मुधर्मा सभा के समान वर्णन]
- ख- उपपात सभा के उत्तर-पूर्व में एक महाह्रद
महाह्रद का आयाम-विष्कम्भ और उद्ग्रेध
- ग- ह्रद के उत्तर-पूर्व में एक अभिषेक सभा [मुधर्मा सभा के समान वर्णन]
- घ- अभिषेक सभा के उत्तर-पूर्व में एक अलंकारिक सभा [मुधर्मा के समान वर्णन]
- ङ- अलंकार सभा के उत्तर-पूर्व में एक व्यवसाय सभा [उपपात सभा के समान वर्णन]
- च- व्यवसाय सभा में एक धर्मशास्त्रों का महापुस्तक रत्न.
पुस्तक रत्न का वर्णन.
व्यवसाय सभा पर अष्ट मंगल
- छ- व्यवसाय सभा के उत्तर-पूर्व में एक नन्दा पुष्करिणी,
- ज- नन्दा पुष्करिणी से उत्तर-पूर्व में एक पाद पीठ सिंहासन

- ३६ क सूर्याभि का वक्तव्य
 ख सामानिक देवा द्वारा सूर्याभि के वक्तव्य का निर्देश
- ४० क सूर्याभि का स्नान और अभिषेक का विस्तृत वर्णन
 ख- सूर्याभि विमान की सजावट
 ग देवताओं का [चार प्रकार का] वाद्य वादन गायन नृत्य अभि
 नय आदि
 घ सामानिक देवों द्वारा सूर्याभि देव की शुभ कामना
 ङ अन्नकार सभा में सूर्याभि का शृंगार करना
- ४१ व्यवसाय मन्त्रा में सूर्याभि का पुस्तक वाचन
- ४२ क सिद्धात्मक में जिन प्रतिमात्रा की अचना स्तुति पाठ बंदना
 ख मिहामन अर्थात् आदि का प्रमाणन
 ग वैश्यपुत्र की अचना
 घ जिन प्रतिमात्रा की चैत्य कृपा की और गृहेन्द्र स्वयं की अचना
 ङ वैश्य स्तम्भ का प्रमाणन जिन अस्थिया की अचना
 च बनी विमर्जन
 छ सामानिक देवा का विमान के अन्तर्गत अचनीय स्थानों की
 अचना का आंग
- ४३ क सूर्याभि का सुधर्मा मन्त्रा में मिहामनामीन होना
- ४४ क सूर्याभि के परिवार का यथा स्थान उपवसन
 ख आत्मरक्षण का वक्तव्य पावन
- ४५ क सूर्याभि की स्थिति
 ख सामानिक देवा की स्थिति
- ४६ क सूर्याभि के सम्बन्ध में गौतम की शिक्षा, दिग्ग श्रद्धि की
 प्राप्ति का कारण ?
 ख पुत्रमय व नाम गोत्र व स्थान
 ग पुत्रमय व वृत्त्य ?

४६ क- भ० मन्त्रीर द्वारा मूर्ध्नि के पूर्वभ्रम का वर्णन
सूत्रानुवृत्तान्, प्रदेशी राजा

[गता का अन्त-परिचय]

४७ सुमन्त्रान्ना देवी

४८ सुमन्त्र मूर्ध्नि कृमात्

४९ प्रदेशी राजा के बड़े भाई निज मन्त्री का राजनीतिक जीवन

५० क- सुमन्त्र मन्त्राद, श्रावस्ती नगरी, चौष्टक वंश, जिनमन्त्र राजा,

ग- प्रदेशी राजा का निज मन्त्री के साथ जिन मन्त्र राजा को
महर्षि उपहार भेजना.

ग- महर्षि उपहार लेकर श्वेताम्बिका पहुँचना और जिनमन्त्र राजा
को भेंट करना.

५१ क- चौष्टक वंश में पाश्चात्य केनी कुमारभ्रमण का पधारना.

ग- भ्रमपरिपद् में निज का जाना और चानुर्धर्म भ्रम एवं द्वायन-
विष मुहीधर्म का श्रवण करना.

ग- पन्नामृगन, मन्त्र निष्कारत एवं द्वायनविष मुहीधर्म पारण
करना.

५२ निजमन्त्री का भ्रमणोपासक बनना

५३ क- जिनमन्त्र राजा का निज के साथ प्रदेशी राजा को भेंट देने के
लिए बहुमूल्य उपहार भेजना.

ग- केनीकुमार भ्रमण को श्रावस्ती पधारने का आग्रह करना.

ग- श्वेताम्बिका को मोपमर्ग वनगण्ट को उपमा देकर अनिच्छा
प्रगट करना.

घ- श्वेताम्बिका में अनेक भ्रमणोपासकों के होने में किसी प्रकार
का कष्ट न होने का आश्वासन दिलाना.

ङ- निज की विनती स्वीकार करना

५४ निज का मृगवन के उद्यानपालक को केनी कुमार भ्रमण की
भक्ति करने का तथा घाने पर मृचना देने का कहना.

- १५ विनायक का सेवा हुआ उद्धार प्रेमी राजा को भ्रम करना
- १६ क केही कुमार धर्म का शृंगार उद्यान में पधारना
ख उद्यान पानक का चित्त को मूढना देना
ग चित्त का धमकवा श्रवण करना
- १७ क राजा प्रेमी को चर्चोत्प्रेत देने के लिए चित्त की प्रायना
- १८ क केही कुमार धर्म द्वारा केवली प्रणय धम श्रवण में कर सकने
क चार कारण तथा केवली प्रणय धम श्रवण कर सकने के
चार कारणों का कथन
ख चित्त की भार से प्रेमी राजा को साने का आश्वासन
- १९ क राजा प्रेमी को कम्बोज दण्ड के अरवों की पट्टि निशाने में
बहाने वन में न जाना
ख विश्व त्रि के लिये शृंगार उद्यान में से जाना
ग केही कुमार धर्म के सम्बन्ध में प्रेमी की शिक्षा
- २० क चित्त की साथ लहर प्रेमी का केही कुमार धर्म के समीप
पहुँचना और प्रणय करना
ख कर डी ली लहरने वान वनिक के समान श्रवण में प्रणय
न प्रणय के लिए केही कुमार धर्म का कथन तथा राजा के
मनोगत धर्म का कथन
- २१ क मनोगत में का को जानने वान ज्ञान के सम्बन्ध में राजा प्रेमी
की शिक्षा
ख केही कुमार धर्म द्वारा पाँच ज्ञानों का सनिष्ठ परिचय और
स्वयं के चार ज्ञान होने का कथन
- २२ क देह और आत्मा के भिन्न होने का हेतु जानने के लिये प्रेमी
का प्रणय
ख अर्धर्षी विनायक का मरकट से और अर्धर्षी विनायक का स्वयं

से आकर पाप-पुण्य का फल कथन. देह और आत्मा की भिन्नता का हेतु स्वीकार करना

भ- केजी कुमार श्रमण द्वारा नरक में आने में बाधक चार कारणों का सहेतुक कथन

६३ स्वर्ग से आने में बाधक चार कारणों का सहेतुक कथन

६४ क- देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी द्वारा दिया गया लोह कुंभी में वन्द चोर की मृत्यु का उदाहरण

ग- देह और आत्मा की भिन्नता सिद्ध करने के लिये केजी कुमार श्रमण द्वारा दिया गया-कूटागार शाला से आने वाली बाधध्वनि का उदाहरण.

ग- देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी द्वारा दिया गया लोह कुंभी में वन्द चोर के मृत शरीर में कृमियों की उत्पत्ति का उदाहरण

घ- देह और आत्मा की भिन्न सिद्ध करने के लिये केजी कुमार श्रमण द्वारा दिया गया संतप्त लोह गोलक में अग्नि प्रवेश का उदाहरण.

६५ क- देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी का दिया हुआ तरुण और बालक द्वारा लक्ष्यवेधन की असमानता का उदाहरण

ख- देहात्मा की भिन्नता के सम्बन्ध में केजी कुमार श्रमण का दिया हुआ-नवीन और प्राचीन धनुष का उदाहरण.

६६ क- राजा प्रदेशी की ओर से दिया गया वृद्ध और युवा के असमान लोह भारवहन का उदाहरण.

ख- केजी कुमार श्रमण की ओर से दिया गया नवीन और प्राचीन कावड़ से भार वहन का उदाहरण

६७ क- राजा प्रदेशी की ओर से जीवित और मृत चोर को तोलने का उदाहरण

ख- केशी कुमार अमण की ओर से स्वामी और हवा से भरी हुई मशक के तोलने का उदाहरण

६८ क- राजा प्रदेशी की ओर से चोर के छोटे-छोटे टुकड़े करके जीव को देखने के लिये किए गये प्रयत्न का उदाहरण

ख- केशी कुमार अमण की ओर से अरणी काष्ठ को लण्ड-लण्ड करके अग्नि देखने के लिये प्रयत्न करने वाले कठियाने का उदाहरण

६९ क- केशी कुमार अमण द्वारा कहे गये कठोर वचनों की मुक्तता के सम्बन्ध में प्रदेशी का प्रश्न

ख- केशी कुमार अमण द्वारा चार परिपशवा और उनके अपराधियों के दण्ड विधान का ज्ञापन

ग- चार प्रकार के व्यवहारियों का प्रक्षेप राजा प्रदेशी की व्यवहारिकता

७० क- जीव को कर ककणवत् प्रत्यक्ष दिखाने के लिये प्रदेशी की केशी कुमार अमण से प्रार्थना

ख- राजा प्रदेशी ने वायु की हस्तामलकवत् दिखाने के लिये केशी कुमार अमण का कथन

ग- सबद्ध के लिये दस स्थानों की पूर्ण जानकारी की सपना और असर्वज्ञ के लिये अशक्यता का कथन

७१ क- हाथी और कू बुवे का जीव समान होने के सबध में प्रदेशी का प्रश्न

ख- आवरणानुसार दीपक के प्रकाश का सकोच विकाश होने के समान हाथी और कू बुवे के जीव की समानता का केशी अमण द्वारा प्रतिपादन

७२ क- प्रदेशी का परम्परागत मायता में मोह

ख- केशी कुमार अमण द्वारा प्रतिपादित लोह वाचिये के रूप में मोह का निवारण

- ७३ केशी कुमारश्रमण से धर्म श्रवण, व्रत धारणा, स्व स्थान गमन के लिए उद्यत होना.
- ७४ क- केशी कुमारश्रमण द्वारा तीन प्रकार के आचार्यों का तथा उनके साथ किये जाने वाले विनयों का प्रतिपादन
 स- अविनय के लिये क्षमायाचना तथा प्रदेशी का स्वस्थान गमन
- ७५ क- अंतःपुर व परिवार के साथ राजा प्रदेशी का आना
 ख- केशी कुमारश्रमण द्वारा वन खण्ड, नृत्य शाला, इक्षुवाड़ा और खलिहान के रूपक से सदा रमणीय रहने का उपदेश देना
- ७६ सात हजार ग्रामों से प्राप्त होने वाले राज्यधन के चार विभाग करना.
- ७७ क- प्रदेशी को मारने के लिये सूर्यकान्ता का सूर्यकान्त कुमार से आग्रह
 ख- सूर्यकान्त कुमार का मौन विरोध
 ग- सूर्यकान्ता द्वारा विष प्रयोग, प्रदेशी राजा के शरीर में उपवेदना
- ७८ क- पौषध शाला में राजा प्रदेशी का समाधि मरण
 ख- सौधर्म कल्प के सूर्याभ विमान में उत्पत्ति
- ७९ सूर्याभ देव की स्थिति, च्यवन के पश्चात् महाविदेह में उत्पत्ति होगी.
- ८० पाच धार्यों से पालन, नाना देशों की दासियों से संवर्धन शुभ मुहूर्त में कलाचार्य के समीप गमन. वहत्तर कलाओं का अध्ययन करेगा.
- ८१ माता पिता की ओर से विवाह की तैयारियां होगी, दृढ प्रतिज्ञा का अलिप्त जीवन, स्थविरो के समीप प्रव्रज्या ग्रहण करके द्वादशांग का अध्ययन करेगा. अनुत्तर धर्म आराधना से अनुत्तर केवल ज्ञान दर्शन की प्राप्ति करके सिद्धपद की प्राप्ति करेगा.
- ८२ उपसंहार—जिन भगवान् को, श्रुत देवता को, प्रजप्ति भगवति को और भ० पादवेनाथ को नमस्कार

તે નાવિ સધિ જન્ના ન, ન તે ધમ્મવિઓ જના ।
 જે તે હ વાહનો એવ, ન તે ઝોહતરા દિયા ॥
 તે નાવિ મધિ જન્ના ન, ન તે ધમ્મવિઓ જના ।
 જે તે હ વાહનો એવ, ન તે સસારપારગા ॥
 તે નાવિ સધિ જન્ના ન, ન તે ધમ્મવિઓ જના ।
 જે તે હ વાહનો એવ, ન તે ગચ્છમ્મ પારગા ॥
 તે નાવિ સધિ જન્ના ન, ન તે ધમ્મવિઓ જના ।
 જે તે હ વાહનો એવ, ન તે જમ્મસ્સ પારગા ॥
 તે નાવિ સધિ જન્ના ન, ન તે ધમ્મવિઓ જના ।
 જે તે હ વાહનો એવ, ન તે દુક્ખસ્સ પારગા ॥
 તે નાવિ સધિ જન્ના ન ન તે ધમ્મવિઓ જના ।
 જે તે હ વાહનો એવ, ન તે મારસ્મ પારગા ॥

नमो माह्वणं
द्रव्यानुयोगमय जीवाभिगम उपाङ्ग

प्रतिगति	६
अध्ययन	१
उद्देशक	१८
उपजन्ध पाठ	४७५० श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	२७२
पद्य गाथा	८१

जीवाभिगम की उपादेयता

तुमंसि नाम तं चेव, जं हंतत्वं ति मन्नसि ।
तुमंसि नाम तं चेव, जं अज्जावेयत्वं ति मन्नसि ।
तुमंसि नाम तं चेव, जं परितावेयत्वं ति मन्नसि ।
तुमंसि नाम तं चेव, जं परिचेतत्वं ति मन्नसि ।
तुमंसि नाम तं चेव, जं उद्देयत्वं ति मन्नसि ।
अंजू! चे य पडिबुद्धजी वि ! तम्हा न हंता, न विघायए ।
अणुसंवेयणमप्पाणेणं, जं हंतत्वं नाभिपत्त्यए ।

જો જીવે વિ ન યાપેદ, અજીવે વિ ન માપદ ।
 જીવાજીવે અરાણનો, જા મો નાહિદ મગમ ॥
 જો જીવે વિ વિપાપેદ, અજીવે વિ વિપાપેદ ।
 જીવાજીવે વિપાણનો, મો દુ નાહિદ મગમ ॥
 જવાજીવમજીવે ય, દો વિ જા વિપાણદ ।
 તયા મદ મહુરિદ, મમ્મ જીવાણ જાણદ ॥
 જયા મદ મહુરિદ, મમ્મ જીવાણ જાણદ ।
 તયા પુન વ પાવ વ, વય મુગ્ગ વ જાણદ ॥
 જયા પુન વ પાવ વ, વય મુગ્ગ વ જાણદ ॥
 તયા નિશ્ચિદિદ મોળ, જે દિયે જે ય માણુમે ।
 જયા નિશ્ચિદિદ મોળ, જે દિયે જે ય માણુમે ॥
 તયા જવદ મગ્ગ, મસ્મિતર-વાહિર ।
 જયા જવદ મગ્ગ, મસ્મિતર-વાહિર ॥
 તયા મુંદે મવિત્તાણ, પચ્ચદ અણગાનિય ।
 જયા મુંદે મવિત્તાણ, પચ્ચદ અણગાનિય ॥
 તયા સવરમુક્કિદ, ધમ્મ પામે અણુતર ।
 જયા સવરમુક્કિદ, ધમ્મ પામે અણુતર ॥
 તયા ધુણદ મમ્મરય, અબોહિ વતુમ વદ ।
 જયા ધુણદ મમ્મરય, અબોહિ વતુમ વદ ॥
 તયા સદ્ધનગ નાણ, દમણ વાભિગચ્છદ ।
 જયા સદ્ધતગ નાણ, દમણ વાભિગચ્છદ ॥
 તયા સોમમલોગ વ, ઝિણો જાણદ કેવલી ।
 જયા સોમમલોગ વ, ઝિણો જાણદ કેવલી ॥
 તયા જોમે નિરુમિત્તા, સેતેસિ પડવગ્ગદ ।
 જયા જોમે નિરુમિત્તા, સેતેસિ પડવગ્ગદ ॥
 તયા મમ્મ સવિત્તાણ, સિદ્ધિ મચ્છદ નીરઓ ।
 જયા મમ્મ સવિત્તાણ, સિદ્ધિ મચ્છદ નીરઓ ॥
 તયા સોમમત્થયત્થો, સિદ્ધો હવદ સામ્મઓ ।

जीवाभिगम उपांग विषय-सूची

प्रथम द्विविध जीव प्रतिपत्ति

- १ जीवाभिगम कथन प्रतिज्ञा सूत्र
- २ जीवाभिगम दो प्रकार का
- ३ अजीवाभिगम दो प्रकार का
- ४ अरूपी अजीवाभिगम दस प्रकार का
- ५ क- रूपी अजीवाभिगम चार प्रकार का
ख- " " पाँच प्रकार का
- ६ जीवाभिगम दो प्रकार का
- ७ क- मोक्ष प्राप्त जीव दो प्रकार के
ख- अनन्तर मोक्षप्राप्त जीव पन्द्रह प्रकार के
ग- परस्पर मोक्षप्राप्त जीव अनेक प्रकार के
- ८ क- संसार स्थित जीवों की नौ प्रतिपत्तियाँ
ख- संसार स्थित जीव दो प्रकार के-यावत्-दस प्रकार के
- ९ संसार स्थित जीव दो प्रकार के
- १० स्थावर जीव तीन प्रकार के
- ११ पृथ्वी कायिक जीव दो प्रकार के

पृथ्वीकायिक जीव

- १२ सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के
सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के तेजीय द्वारा
- १३ १- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के शरीर
२- " " की अवगाहना
३- " " के संहनन

- ४- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के संस्थान
- ५- " " के वषाव
- ६- " " के सस्य
- ७- " " के लेखा
- ८- " " की इन्द्रिया
- ९- " " के समुद्रपात
- १०- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव अमली
- ११- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के वेद
- १२- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की पर्याप्तिया
- १३- " " दृष्टि
- १४- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक के दर्शन
- १५- " के अज्ञान
- १६- " का योग
- १७- " उपयोग
- १८- " आहार
- क सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का द्रव्य से आहार
- ख- " " क्षेत्र से आहार
- ग- " " काल से आहार
- घ- " " भाव से आहार
- ङ सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की ओर से वर्णवाने पुद्गला का आहार
- च " विमान की ओर से वर्णवाने " "
- छ- " " मय रस और स्पर्श की दो विवक्षा
- ज सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा सृष्ट पुद्गला का आहार
- झ- " " अवगाह पुद्गला का आहार
- झ- " " अणु और सूक्ष्म पुद्गला का आहार

ट-सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा ऊँचे-नीचे, तिरछे स्थित पुद्गलोंका आहार

ठ- " " आदि मध्य अन्त में स्थित पुद्गलोंका आहार

ड- " " स्व विषय स्थित पुद्गलों का आहार

ढ- " " क्रम से स्थित " "

ण- " " व्याघात न होने पर ६ दिशाओं से आहार

" " व्याघात होने पर ३, ४, ५ दिशाओं में आहार

त- " " कारण से "

थ- " " विपरिणमन-परिवर्तन करके पुन आहार

१६- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पत्ति

२०- " " जीवों की स्थिति

२१- " " जीवों का मरण

२२- " " जीवों का उद्वर्तन

२३- " " जीवों की गति आगति

२४- " " जीव प्रत्येक शरीरी

२५- " " जीव असंख्याता

१४ वादर पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के

१५ क- २ श्लक्ष्ण-पृथ्वीकायिक जीव सात प्रकार के

ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के

२ श्लक्ष्ण पृथ्वीकायिक जीवों के त्रेवीस द्वार

अपकायिक जीव

१६ क- अपकायिक जीव दो प्रकार के

ख- सूक्ष्म अपकायिक जीव दो प्रकार के

ग- सूक्ष्म अपकायिक जीव संक्षेप में दो प्रकार के

सूक्ष्म अपकायिक जीवों के त्रेवीस द्वार

१७ क- वादर अपकायिक जीव अनेक प्रकार के

ख- वादर अपकायिक जीव अनेक प्रकार के

बादर क्षत्कायिक जीवों के तरीम द्वार वनस्पतिकायिक जीव

- १८ क वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के
ख सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के
सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवों के तरीम द्वार
- १९ बादर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के
- २० क प्रत्येक बादर वनस्पतिकायिक जीव बारह प्रकार के
ख दृग दो प्रकार के
ग एकात्मिक दृग अनेक प्रकार के
घ बहुबीज दृग
- २१ क साधारण दरीर बादर वनस्पतिकायिक जीव अनेक प्रकार के
ख जीव समेप में दो प्रकार के
साधारण दरीर वनस्पति कायिक जीवों के तरीम द्वार
- २२ कम जीव तीन प्रकार के

तेजस्कायिक जीव

- २३ तेजस्कायिक जीव दो प्रकार के
- २४ सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवों के तरीम द्वार
- २५ क बादर तेजस्कायिक जीव अनेक प्रकार के
समेप में दो प्रकार के
बादर तेजस्कायिक जीवों के तरीम द्वार

वायुकायिक जीव

- २६ क वायुकायिक जीव दो प्रकार के
ख सूक्ष्म वायुकायिक जीवों के तरीम द्वार
ग बादर वायु कायिक जीव अनेक प्रकार के
घ समेप में दो प्रकार के
ह बादर वायुकायिक जीवों के तरीम द्वार

२७ ओदारिक वनजीव चार प्रकार के हैं

द्वीन्द्रिय जीव

२८ क- द्वीन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के

ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के

ग- द्वीन्द्रिय जीवों के तेशीस द्वार हैं

त्रोन्द्रिय जीव

२९ क- त्रोन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के हैं

ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं

ग- त्रोन्द्रिय जीवों के तेशीस द्वार

चतुरिन्द्रिय जीव

३० क- चतुरिन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के हैं

ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं

ग- चतुरिन्द्रिय जीवों के तेशीस द्वार

पंचेन्द्रिय जीव

३१ क- पंचेन्द्रिय जीव चार प्रकार के हैं

ख- नैरयिक जीव सात प्रकार के हैं

ग- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं

घ- नैरयिक जीवों के तेशीस द्वार

३२ क- पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के हैं

ख- समूद्धिम पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव तीन प्रकार के हैं

३३ क- समूद्धिम जलचर पांच प्रकार के हैं

ख- समूद्धिम मच्छ अनेक प्रकार के हैं

ग- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं

घ- समूद्धिम जलचर मच्छों के तेशीस द्वार

३४ क- समूद्धिम स्थलचर दो प्रकार के हैं

- ए सम्पूर्णम चतुष्पद स्थलचर दो प्रकार के हैं
 ग सम्पूर्णम चतुष्पद स्थलचर के त्रयाम द्वार
 घ सम्पूर्णम स्थलचर परिसर दो प्रकार के है
 ङ सम्पूर्णम उरग स्थलचर परिसर चार प्रकार के हैं
 च सप्त अनेक प्रकार के हैं
 छ दर्वी (पक्ष) कर सप्त अनेक प्रकार के हैं
 ज मकुलीकर सप्त अनेक प्रकार के है
 झ सम्पूर्णम अजगर अनेक प्रकार के हैं
 झ आसालिक
 ट महोरग अनेक प्रकार के हैं
 सक्षेप मे दो प्रकार के हैं
 ठ भुजग परिसर अनेक प्रकार के हैं
 सक्षेप मे दो प्रकार के
 ण भंवर चार प्रकार के हैं
 चमपक्षी अनेक प्रकार के है
 रोमपक्षी
 ममुदमपक्षी
 विस्तृतपक्षी
 सक्षेप मे दो प्रकार के हैं

- त सम्पूर्णम स्थलचर परिसर के त्रयीस द्वार
 ३७ गभज विग्रह पक्षी द्वय तीन प्रकार के हैं
 ३८ क गभज जलचर पाच प्रकार के हैं
 ख सक्षेप मे दो प्रकार के हैं
 ग गभज जलचर के त्रयीस द्वार
 ३९ क गभज स्थलचर दो प्रकार के हैं
 त चतुष्पद चार प्रकार के हैं

ग- गर्भज चतुष्पद संक्षेप में दो प्रकार के हैं

घ- गर्भज चतुष्पदों के तेवीस द्वार हैं

ङ- गर्भज परिसर्प दो प्रकार के हैं

” तरपरिसर्प दो प्रकार के हैं

च- गर्भज उरपरिसर्पो के तेवीस द्वार

छ- गर्भज भुजपरिसर्प दो प्रकार के हैं

ज- ” भुजपरिसर्पो के तेवीस द्वार

४० क- गर्भज खेचर चार प्रकार के हैं

ख- गर्भज खेचरों के तेवीस द्वार

४१ क- मनुष्य दो प्रकार के हैं

ख- समूर्द्धिम मनुष्यों की मनुष्यक्षेत्र में उत्पत्ति

ग- समूर्द्धिम मनुष्यों के तेवीस द्वार

घ- गर्भज मनुष्य तीन प्रकार के हैं

ङ- गर्भज मनुष्य संक्षेप में दो प्रकार के हैं

च- गर्भज मनुष्यों के तेवीस द्वार

४२ क- देवता चार प्रकार के हैं

ख- भवनवासी देव दस प्रकार के हैं

ग- वाणव्यन्तर देव सोलह प्रकार के हैं

घ- ” ” संक्षेप में दो प्रकार के हैं

४३ क- स्थावर जीवों की स्थिति

ख- अस जीवों की स्थिति

ग- स्थावर सस्थिति का जघन्य उत्कृष्ट काल

घ- अस सस्थिति का जघन्य उत्कृष्ट काल

ङ- स्थावर पर्याय से पुनः स्थावर पर्याय प्राप्त होने का अन्तर काल

च- अस पर्याय से पुनः अस पर्याय प्राप्त होने का अन्तर काल

द्वितीया त्रिविध जीव प्रतिपत्ति

- ४४ समार स्थित जीव तीन प्रकार के हैं
स्त्रियाँ
- ४५ क स्त्रिया तीन प्रकार की
ख निर्वच स्त्रिया
ग जलचर स्त्रिया पांच प्रकार की
घ स्थलचर स्त्रिया दो प्रकार की
ङ चतुष्पद स्त्रिया चार प्रकार की
च परिसप स्त्रिया चार प्रकार की
छ उरग परिसप स्त्रिया तीन प्रकार की
ज भुज परिसप स्त्रिया अनेक प्रकार की
झ खचर स्त्रिया चार प्रकार की
झ मानव स्त्रिया तीन प्रकार की
ट अतर्दीपवासिनी स्त्रिया अक्षुणीय प्रकार की
ठ अकम्भूमिवासिनी स्त्रिया तीस प्रकार की
ड कमभूमिवासिनी स्त्रिया पन्द्रह प्रकार की
ढ देविया चार प्रकार की
ण भवनवासिनी देविया दस प्रकार की
त व्यंहर देविया आठ प्रकार की
थ ज्योतिष्क देविया पांच प्रकार की
द विमानवासिनी देविया दो प्रकार की
- ४६ क त्रिविध जाति स्त्री पर्याय की सत्स्थिति का ज्ञान उत्पन्न काल
ख मानव जाति स्त्री पर्याय की सत्स्थिति का
ग देव जाति स्त्री पर्याय की सत्स्थिति का

- ४७ क- तिर्येन योनिक स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
 ग- जन्मचर तिर्येन योनिक स्त्रियों की " "
 ग- चतुष्पद स्थानचर तिर्येन योनिक स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
 घ- उरग परिगम स्थानचर " "
 छ- भुजपरिगम " "
 च- निचर तिर्येन योनिक स्त्रियों की " "
 छ- मानव स्त्रियों की " "
 ज- धर्मानरण करनेवाली (मानव) स्त्रियों की " "
 झ- कर्मभूमिवासिनी (मानव) " " "
 धर्मचरण की अपेक्षा कर्मभूमिवासिनी स्त्रियों की "
 ज- भरत-पेरवत वासिनी (मानव) स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
 धर्मानरण की अपेक्षा भरत पेरवत वासिनी
 स्त्रियों की " "
 ट- पूर्वविदेह-अपरविदेह कर्मभूमिवासिनी स्त्रियों की उत्कृष्ट
 स्थिति
 धर्मानरण की अपेक्षा " "
 ट- अकर्मभूमिवासिनी (मानव) स्त्रियों की " "
 मंहरण की अपेक्षा " "
 ड- ह्रीमयत-ह्रीरण्यवत क्षेत्र वासिनी (मानव) स्त्रियों की " "
 संहरण की अपेक्षा " " "
 ढ- हरिवर्ष-रम्यवर्ष क्षेत्र वासिनी मानव स्त्रियों की " "
 संहरण की अपेक्षा " " "
 ण- देवकुरु-उत्तरकुरुवासिनी स्त्रियों की " "
 मंहरण की अपेक्षा " "
 त- अंतर्द्वीपवासिनी स्त्रियों की " "
 देवियों की " "

य-	भवनवासिनी देवियों की	जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
द	व्यन्तर देवियों की	" "
म-	ज्योतिष्क देवियों की	" "
न-	च द विमानवासिनी देवियों की	" "
	सूर्य विमानवासिनी देवियों की	" "
	ग्रह " "	" "
	नक्षत्र " "	" "
	नारा " "	" "
प	विमानवासिनी देवियों की	" "
	सौधर्म " "	" "
	ईशान " "	" "

- ४८ क स्त्री सन्धिनि कान की पाच विवशा
 ख तिर्यच्योनिक स्त्रिया का सन्धिनि काल
 ग मनुष्योनिक स्त्रिया का सन्धिनि काल
 घ देविया का सन्धिनि काल
- ४९ क स्त्री पर्याय से पुन स्त्री पर्याय के प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट
 अतर काल
 ख तिर्यच स्त्री से पुन तिर्यच स्त्री होने का जघन्योत्कृष्ट अतर काल
 ग मनुष्य स्त्री से पुन मनुष्य स्त्री होने का " "
 घ- देव स्त्री से पुन देव स्त्री होने का " "
- ५० तिर्यच मनुष्य और देव स्त्रिया का अल्प बहुत्व
- ५१ क स्त्री वेदनीय कर्म की जघन्योत्कृष्ट व-व स्थिति
 ख स्त्री वेदनीय कर्म का अवाधा काल
 ग स्त्री वेदनीय कर्म का

पुरुष

५२ क- पुरुष तीन प्रकार के

ख तिर्यच योनिक पुरुष "

ग- मनुष्य योनिक पुरुष "

घ- देव पुरुष चार प्रकार के

५३ क- पुरुष की जघन्योत्कृष्ट स्थिति

ख- तिर्यचयोनिक पुरुष की जघन्योत्कृष्ट स्थिति

ग- मनुष्य " " "

घ- देव " " "

५४ क- पुरुष का जघन्योत्कृष्ट स्थितिकाल

ख- तिर्यच योनिक पुरुषों का " "

ग- मनुष्य " " "

घ- देव " " "

५५ क- पुरुष पर्याय से पुनः पुरुष पर्याय के प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अन्तर काल

ख- तिर्यच योनिक पुरुष पर्याय से पुनः मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट काल

ग- मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय से पुनः मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अन्तरकाल

घ- देव योनिक पुरुष पर्याय से पुनः देव योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अन्तरकाल

५६ क- देव पुरुषों का अल्प-बहुत्व

ख- तिर्यच योनिक मनुष्य योनिक और देव योनिक पुरुषों का परस्पर अल्प-बहुत्व

५७ क- पुरुष वेदनीय कर्म की जघन्योत्कृष्ट बंध स्थिति

ख- " " का अबाधा काल

ग- " " का स्वभाव

नपुंसक

५८ क- नपुंसक तीन प्रकार के

ख- नैरयिक नपुंसक सात प्रकार के

ग त्रिपक्ष योनिक नपुंसक पांच प्रकार के

घ मनुष्य योनिक नपुंसक तीन प्रकार ॥

५६ क नपुंसका की जघन्योत्कृष्ट स्थिति

ख नैरयिक नपुंसकों की

ग त्रिपक्ष योनिक नपुंसका की

घ मनुष्य योनिक नपुंसकों की

नपुंसकों का सस्थिति काव

ङ नैरयिक नपुंसकों का सस्थिति काव

च त्रिपक्ष योनिक नपुंसकों का

छ मनुष्य योनिक

नपुंसकों का जघन्योत्कृष्ट अंतर काव

ज नपुंसक से पुन नपुंसक होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काव

झ नैरयिक नपुंसक से पुन नैरयिक नपुंसक होने का जघन्योत्कृष्ट

अंतर काव

ञ त्रिपक्ष योनिक नपुंसक से पुन त्रिपक्ष योनिक नपुंसक होने का

जघन्योत्कृष्ट अंतर काव

ट मनुष्य योनिक नपुंसक से पुन मनुष्य योनिक नपुंसक होने का

जघन्योत्कृष्ट अंतर काव

५७ नैरयिक त्रिपक्ष और मनुष्य योनिक नपुंसका का अंग बहुत

५८ क नपुंसक धर्मोपपत्ति की वक्ष स्थिति

ख का अवस्था काव

ग का स्वभाव

५९ स्त्री पुंस्य और नपुंसका का अंग बहुत व दो मुख

६० क स्त्रीत्व पुंस्यत्व और नपुंसकत्व पर्याय का जघन्योत्कृष्ट सम्पत्ति काव

ख स्त्री पुंस्य और नपुंसकत्व पर्याय का जघन्योत्कृष्ट अंतर काव

६४ क त्रियं च योनिक स्त्री, पुरुषों का अल्प-बहुत्व

ख मनुष्य योनिक " "

ग देव योनिक " "

तृतीया चतुर्विध जीव प्रतिपत्ति

६५ संसार स्थित जीव चार प्रकार के

नैरयिक जीव

प्रथम उद्देशक

६६ नैरयिक सात प्रकार के

६७ सात नैरयिकों के नाम गोत्र

नरक वर्णन

६८ सात नरकों का बाह्यत्व

६९ क रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन काण्ड

ख खर काण्ड सोनह प्रकार के

ग शर्कराप्रभा-यावत्-तमस्तमा एक एक प्रकार का

७० सात नरकों के नरकावाम

७१ सात नरकों के नीचे घनोदधि, घनवात, तनवात और अवका-
मान्तर

७२ क रत्नप्रभा के नरकाण्ड का बाह्यत्व

ख , रत्नकाण्ड का-यावत्-रिष्टकाण्ड का बाह्यत्व

ग , पक्कदहलकाण्ड का " "

घ , अपक्वदहलकाण्ड का " "

ङ , घनोदधि का " "

च , घनवात का

छ , तनवात का " "

ज शर्कराप्रभा-यावत्-तमस्तमा के घनोदधि का बाह्यत्व

झ , घनवात का " "

■ , तनुवान का ,

ट , अवकाशान्तर का ,

७३ क सात नरकों और उनके अवकाशान्तरों में पुद्गल द्रव्यों की व्यापक स्थिति

७४ क सात नरकों से चारों दिशाओं में लोकात् का अन्तर

७५ क सात नरकों का संस्थान

ल सात नरकों के चारों दिशाओं में चरमान तीन तीन प्रकार के

७६ क सात नरकों के घनोदधिकनय का बाह्य

ल , घनवानवय का ,

ग , तनुवानवय का ,

घ सात नरकों के घनोदधिकनयो पुद्गल द्रव्यों की व्यापक स्थिति

ङ सात नरकों के घनवानवयों में पुद्गल द्रव्यों की व्यापकता

च , तनुवान वयों में " "

छ , घनोदधि वयों का संस्थान

ज घनवात वयों का

झ , तनुवान वयों का

ञ , का आधान विपरिध

ट , का सबल समान बाह्य

७७ क सात नरकों में सब जीवों के उत्पन्न होने का प्रत्योत्तर

ल से निकलने का

ग में सब पुद्गलों के प्रविष्ट होने का

घ से निकलने का

७८ क सात नरकों की सम्बन्ध यशाम्बन सिद्धि का हेतु

ख सात नरकों की निवृत्ति

७९ क प्रत्येक नरक के ऊपर के चरमात् से नीचे के चरमान्त का अन्तर

ख- प्रत्येक नरक काण्ड के चरमन्ताओं का अन्तर

ग- प्रत्येक नरक के घनोदधि के " "

घ- " घनवात के " "

ङ- " तनवात के " "

च- " अवकाशान्तर का अन्तर "

छ- प्रत्येक नरक के ऊपर के चरमान्त से अवकाशान्तर के नीचे के चरमान्त का अन्तर

८० सात नरकों के अपेक्षाकृत बाह्य की अल्प-बहुत्व
द्वितीय नैरयिक उद्देशक

८१ क- सात पृथ्वीयों (नरकों) के नाम

ख- सात पृथ्वीयों के नरकावासों के विभाग की सीमा

ग- सात नरकों के अन्दर बाह्य का आकार

घ- सात नरकों में वेदना-यावत्-तमप्रभा

८२ क- रत्नप्रभा के नरकावासों का संस्थान दो प्रकार का

ख- आवलिका प्रविष्ट नरकावासों का संस्थान तीन प्रकार का

ग- आवलिका बाह्य नरकावासों के संस्थान अनेक प्रकार के

घ- तमस्तमाप्रभा के नरकावासों का संस्थान दो प्रकार का

ङ- सात नरकों के नरकावासों का बाह्यत्व

च- सात नरकों के नरकावासों का आधाम-विष्कम्भ और परिधि दो प्रकार की

८३ क- सात नरकों का वर्ण

ख- " " गंध

ग- " " स्पर्श

८४ क- सात नरकों की महानता

ख- देवता की दिव्यगति से नरकों की महानता का माप

८५ क- सात नरकों की पौद्गलिक रचना

ख- सात नरक शास्वत-अशास्वत ?

- ८६ क सात नरको मे चार गति की अपेक्षा से बनि आगति
 ख- सात नरको मे एक समय मे जीवो की उत्पत्ति
 ग सात नरको का जीवो मे सर्वथा रिक्त न होना
 घ सात नरको मे नैरयिको की अवसाहना दो प्रकार की
 ८७ क- सात नरको के नैरयिको मे सहननों का अभाव पुद्गलो की
 अशुभ परिणति
 ख सात नरको के नैरयिको का सस्थान दो प्रकार का
 ग सात नरको मे नैरयिको के सरीरो का वर्ण
 घ- , , , की गंध
 , , , का स्पर्श
 ८८ क सात नरको मे नैरयिको के स्वासोच्छ्वास के पुद्गल
 ख , , के आहार के पुद्गल
 ग , , की लेखाण
 घ , , के ज्ञान
 इ- , , के अज्ञान
 ८९ सात नरको मे नैरयिको के योग
 ख = , उपायोग
 ९०- , अवधिज्ञान का प्रमाण
 अ , समुद्घात
 ९१ क सात नरका मे क्षुधा विपासा की वेदना
 ख- , नैरयिको की विकृर्तणः
 ग तीतोष्ण वेदना
 घ तारकीय जीवन का वर्णन
 इ तमस्तमा के पांच नरकावासो के नाम
 च तमस्तमा मे पांच महापुरुषों की उत्पत्ति
 छ नैरयिको का वर्ण
 ज नैरयिको की वेदना

झ- नारकीय उष्ण वेदना का वर्णन

ञ- ,, तृपा वेदना का वर्णन

ट- मानवलोक की उष्णता से नारकीय उष्णता की तुलना

ठ- नारकीय शीतवेदना का वर्णन

ण- मानवलोक की शीत से नारकीय शीत की तुलना

६० सात नरकों में नैरयिकों की स्थिति

६१ सातों नरकों से नैरयिकों का उद्भवतः न अन्यत्र उत्पत्ति

६२ क- सात नरकों में पृथ्वी का स्पर्श

ख- ,, पानी ,,

ग- सात नरक एक दूसरे से महान्

६३ सात नरकों के पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकायों में सर्व जीवों की उत्पत्ति

६४ पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय में उत्पन्न जीवों की वेदना

तृतीय नैरयिक उद्देशक

६५ क- नैरयिकों का अनिष्ट पुद्गल परिणमन

ख- ग्यारह गाथाओं में नैरयिकों का संक्षिप्त वर्णन

प्रथम तिर्यंच योनिक जीव उद्देशक

६६ क- तिर्यंच योनिक जीव पांच प्रकार के

ख- एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव पांच प्रकार के

ग- पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के

घ- सूक्ष्म पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के

ङ- वादर पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव-यावत्-चतुर-न्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के

च- पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव तीन प्रकार के

छ- जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के

ज- समूर्द्धिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के

- अ- गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय योनिक जीव दो प्रकार के
 ब- स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के
 ट- चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के
 ठ- परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के
 ड- उरग परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के
 ढ- भुजग परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के
 ण- क्षेत्र पंचेन्द्रिय त्रिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के
 त- समूर्द्धिम क्षेत्र पंचेन्द्रिय त्रिर्यंच योनिक जीव दो प्रकार के
 य- गर्भज क्षेत्र " " "
 द- क्षेत्र पंचेन्द्रिय त्रिर्यंचों की तीन प्रकार की योनियां
 च- अण्डज तीन प्रकार के
 न- पोतज " "
 प- समूर्द्धिम एक प्रकार का

- ६७ क- क्षेत्र पंचेन्द्रिय त्रिर्यंचों के इग्यारह द्वार—लेश्या १, दृष्टि २, श्रोणी-अज्ञानी ३, योग ४, उपयोग ५, उत्पत्ति ६, स्थिति ७, समुद्घात ८, मरण ९, उद्घातन १०, कुल कोटी ११
 ख- भुजग परिसर्प की तीन योनियां लेश्या आदि इग्यारह द्वार
 ग- उरग परिसर्प की तीन योनियां, लेश्या आदि इग्यारह द्वार
 घ- चतुष्पद स्थल चर तीन प्रकार के
 ङ- उरगुन स्थलचर तीन प्रकार के इनके लेश्या आदि इग्यारह द्वार
 च- जलचरों के भेद और लेश्या आदि इग्यारह द्वार
 ■ चतुरिन्द्रियो की कुल कोटी
 त्रिन्द्रियो की " "
 द्विन्द्रियो की " "
 ६८ क- गणज्ञ सात प्रकार का
 ■ धृष्यो की कुल कोटी

- ग- वल्लरियां चार प्रकार की
- घ- लतायें आठ प्रकार की
- ङ- हरितकाय तीन प्रकार की
- च- त्रस-स्थावर जीवों की कुल कोटियां
- ६६ क- स्वस्तिकादि विमानों की महानता
- ख- अर्चों आदि विमानों की "
- ग- विजयादि विमानों की "

द्वितीय तिर्यंच योनिक जीव उद्देशक

- १०० क- संसार स्थित जीव ६ प्रकार के
- ख- पृथ्वीकायिक-यावत्-वनस्पतिकायिक जीव दो दो प्रकार के
- ग- त्रसकायिक जीव चार प्रकार के
- १०१ क- पृथ्वीयां ६ प्रकार की
- ख- श्लक्ष्ण पृथ्वीयों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
- ग- शुद्ध " "
- घ- बालुका " "
- ङ- मनः शिला " "
- छ- शर्करा " "
- च- खर " "
- ज- नैरयिक-यावत्-सर्वार्थसिद्ध देवों की स्थिति
- झ- जीव का संस्थितिकाल
- ञ- पृथ्वीकाय-यावत्-त्रसकाय का संस्थिति काल
- १०२ क- प्रत्युत्पन्न पृथ्वीकायिक-यावत्-प्रत्युत्पन्न त्रसकायिक जीवों की जघन्योत्कृष्ट निर्लेप काल
- ख- जघन्य उत्कृष्ट निर्लेप का अन्तर
- १०३ क- कृष्णलेश्या आदि तीन लेश्यावाले अनगार का देव-देवियों को देख सकना (छ विकल्प)

स तेजो लेश्या आदि तीन लेश्यायामै खनगार का देव देवियो को
देख सनना (छ विचन्य)

अन्यतीर्थिक विषय एक समय में एक क्रिया

१०४ क स्वनिद्रान प्रतिपादन एक समय में एक क्रिया

प्रथम मनुष्य योनिक जीव उद्देशक

१०५ मनुष्य दो प्रकार के

१०६ समूहिय मनुष्य का उत्पत्ति स्थान

१०७ गभज मनुष्य तीन प्रकार के

१०८ अमूर्तियों के मनुष्य अठावीस प्रकार के

प्रथम एकोरकद्वीप वर्णन उद्देशक

१०९ क एकोरक द्वीप का स्थान

ख एकोरक द्वीप का आयाप विष्कम्भ और परिधि

ग पक्षर वेदिका वनस्पति

घ पक्षर वेदिका की ऊँचाई और विष्कम्भ

च पक्षर वेदिका वर्णन

११० क वनस्पति का वर्णन विष्कम्भ

ख वनस्पति वर्णन

१११ क एकोरक द्वीप के भूमितल का वर्णन

ख-ग म अनेक प्रकार के द्वीप

घ म अनेक प्रकार की खनारें

ङ मे अनेक प्रकार के गुम्फ

च म रक्ष समूह

छ (१) एकोरक द्वीप में मत्तग द्वीप

(२) म भिन्नाग द्वीप

(३) म त्रुत्तिग द्वीप

(४) मे दीप विष्का द्वीप

- (५) एकोरक द्वीप में ज्योतिषिणा द्रुम
 (६) " में मित्रांग द्रुम
 (७) " में निवर्त्तन द्रुम
 (८) " में मणिकांग द्रुम
 (९) " में गृहाकार द्रुम
 (१०) " में दलगत द्रुम

एकोरक द्वीप के मनुष्यों का सर्वांगीन वर्णन

- " " की ऊँचाई
 " " की परलियाँ
 " " की आहाररेच्छा का काल

एकोरक द्वीप की स्त्रियों का सर्वांगीन वर्णन

- " " की ऊँचाई
 " " की आहाररेच्छा का काल

अ- एकोरक द्वीपवासी मनुष्यों के भोज्य पदार्थ

ट- एकोरक द्वीप की पृथ्वी का आस्वाद

ठ- " के फलों का "

ड- " के मनुष्यों का निवास स्थान

ढ- " के वृक्षों का संरधान

ण- " में गृह ग्राम, नगर आदि का अभाव

" में असि आदि कर्मों का अभाव

" में हिरण्य मुखर्ष आदि धातुओं का अभाव

" के मनुष्यों में अल्प ममत्व

" में राजा आदि-सामाजिक व्यवस्था का अभाव

" में दास्यकर्मों का अभाव

" में स्वजनों से अल्पप्रेम

" में वैरभाव का अभाव

" में मित्रादिका अभाव

एकदशहरी	मे नगर्णि व नृप्यो का अभाव
	म मान साधना का अभाव
	मे अर्वाणि का सम्भाव
	म मिहर्णि का सम्भाव
	म पाया का अभाव
	मे गन आर्णि का अभाव
	म स्वागु आर्णि का अभाव
	म डीन मन्दुर आर्णि का अभाव
	म नर्वाणि का सम्भाव
	म मुहर्णि आर्णि का अभाव
	मे मुद का अभाव
	मे रोगा का सम्भाव
	म मे अनिष्टि आर्णि का अभाव
	म लोहे आर्णि की सानो का अभाव
	मे अर्वाध्य महाध्य का अभाव
	मे पय विनय का अभाव
क	के मनुष्यो की स्थिति
ख	के मनुष्यो की गति
द	दक्षिण के आभासिक द्वीप का स्थान आदि
ध	दक्षिण के मगोसिक द्वीप का स्थान आदि
न	दक्षिण के नगालिक द्वीप का स्थान आर्णि
११२ क	दक्षिण के हयवण द्वीप का स्थान आर्णि
ख	दक्षिण के गरवण द्वीप का स्थान आर्णि
ग	गोकुण द्वीप का स्थान आदि
घ	वाष्कुनीकण द्वीप का स्थान आर्णि
ङ	अ दामुख द्वीप का स्थान आदि
च	अरवमुख द्वीप का स्थान आर्णि

छ- " अश्वकर्ण द्वीप का स्थान आदि

ज- " उल्कामुख "

झ- " घनदंत "

ञ- आदर्श मुख आदि द्वीपों का अवग्रह, विष्कम्भ, परिधि आदि

ट- उत्तर के एकोरक द्वीप आदि द्वीपों का वर्णन

११३ क- अकर्मभूमि मनुष्य तीस प्रकार के हैं

ख- कर्मभूमि मनुष्य पन्द्रह प्रकार के हैं

देवयोनिक जीव

११४ चार प्रकार के देव

११५ भवनवासी-यावत्-अनुत्तरविमानवासी देवों के भेद

११६ भवनवासी देवों के भवनों का स्थान

११७ दक्षिण के असुरकुमारों के भवनों का वर्णन

११८ क- असुरेन्द्र की तीन परिपद

ख-घ- तीन परिपदों के देवों की संख्या

ङ-च- तीन परिपदों की देवियों की संख्या

ज-झ- तीन परिपद के देव-देवियों की स्थिति

ढ-ण- तीन परिपद की भिन्नता का हेतु

११९ क- उत्तर के असुरकुमारों का वर्णन

ख- वैरोचनेन्द्र की तीन परिपद

ग- तीन परिपद के देव-देवियों की संख्या

घ- वैरोचनेन्द्र की और तीन परिपद के देव-देवियों की स्थिति

१२० क- दक्षिण उत्तर के नाग कुमारेन्द्र व उनकी तीन परिपद के देव-देवियों का वर्णन

ख- शेष दक्षिण-उत्तर के भवनेन्द्रों व उनकी तीन परिपद के देव-देवियों का वर्णन

१२१ व्यन्तर देवों के भवन, इन्द्र और परिपदों का वर्णन

१२२ क ज्योतिष्क देवों के विमानों का स्थान

ख

संस्थान

ग मूल चन्द्र-ज्योतिषी देवों के इन्द्रों की तीन-तीन वस्त्रधारों का वणन

१२३ क द्वीप-समुद्रों का स्थान

ख द्वीप-समुद्रों की संस्था

ग का संस्थान

घ का वणन

जम्बूद्वीप वणन

१२४ क जम्बूद्वीप के उत्तर-पूर की उपधाएँ

ख के संस्थान की

ग का आशय विष्कम्भ

घ की परिधि

ङ की जगति की ऊँचाई

च की जगति के मूल मध्य और ऊपर का विष्कम्भ

छ का संस्थान

ज जगति की जाती की ऊँचाई विष्कम्भ

१२५ क पञ्चवर वेदि की ऊँचाई विष्कम्भ

ख पञ्चवर वेदि का वणन

ग की जातिनाम

घ के मध्य आदि के भित्तिविध

ङ पञ्चवता आदि लताएँ

च मध्य मन्त्रिक

छ भे विविध प्रकार के कमल

ज का गान्धर्व या भगवत्त होता

झ की नियता

१२६ क- वनखण्ड का चक्रवाल विष्कम्भ

ख- वनखण्ड का विस्तृत वर्णन

[शब्दोपमा वर्णन-अष्टरस, पट्दोष, एकादस अलंकार,
अष्टगुण]

१२७ क- वनखण्ड में विविध वापिकायें

ख- वापिकाओं के सोपान, तोरण

ग- वापिकाओं के समीप पर्वत

घ- पर्वतों पर विविध आसन शिलापट

ङ- वनखण्ड में अनेक प्रकार के लतागृह

च- लतागृहों में आसन, शिलापट

छ- वनखण्ड में विविध प्रकार के मण्डप

ज- वनखण्ड में विविध प्रकार के शिलापट

झ- शिलापटों पर देव-देवियों की क्रीड़ा

ञ- पद्मवर वेदिका पर बने वनखण्ड का विष्कम्भ

ट- वनखण्ड में देव-देवियों की क्रीड़ा

१२८ जंबूद्वीप के चार द्वार

१२९ क- जम्बूद्वीप के विजयद्वार का स्थान

ख- " " की ऊँचाई

ग- " " का विष्कम्भ

घ- " " के कपाट रचना

१३०-१३१ " " का विस्तृत वर्णन

१३२ विजय देव के सामानिक देवों के भद्रासन

" की अग्रमहोपियों के भद्रासन

" की तीन परिपदों के "

" की सात सेनापतियों के "

" की आत्मरक्षक देवों के "

१२२ क ज्योतिष्क देवा के विमानों का स्थान

ख

संस्थान

ग मूल चन्द्र ज्योतिषी देवों के दृष्टों की तीन-तीन परिपन्था
का बर्णन

१२३ क द्वीप-समुद्र का स्थान

ख द्वीप-समुद्र की संस्था

ग का संस्थान

घ का बर्णन

अनुद्वीप घणन

१२४ क अनुद्वीप के हस्ताकार की उपमाएँ

ख के संस्थान की

ग का भाषा-विषय

घ की परिधि

ङ की जगति की ऊँचाई

च की जगति के मूल मध्य और ऊपर का विषय

छ का संस्थान

ज जगति की आत्मा का ऊँचाई विषय

१२५ क पक्षर वेत्ति का ऊँचाई विषय

ख पक्षर वेत्ति का बर्णन

ग की जाति-वर्ण

घ के रूप आदि के भित्ति-विषय

ङ में पक्षर-जाति आदि-वर्ण

च में अणव-स्वस्तिक

छ में विविध प्रकार के बर्णन

ज का नास्त्वन या अनास्त्वन होना

झ- का नियता

१२६ ग- वनगण्ड का पञ्चमान विष्कम्भ

ग- वनगण्ड का विम्बुन वर्णन

[मध्योत्तमा वर्णन-लघुटरण, लघुदोष, एकादश अन्वकार,
वष्टुगुण]

१२७ क- वनगण्ड में विविध यात्रिकार्ये

ग- यात्रिकाओं के गोपान, तोरण

ग- यात्रिकाओं के ममीय मयंत

घ- पर्यंतों पर विविध आगन शिलापट

ङ- वनगण्ड में अनेक प्रकार के ततागृह

च- ततागृहों में आगन, शिलापट

छ- वनगण्ड में विविध प्रकार के मण्डप

ज- वनगण्ड में विविध प्रकार के शिलापट

झ- शिलापटों पर देव-देवियों की श्रीं

ञ- पद्मवर वेदिका पर बने वनगण्ड का विष्कम्भ

ट- वनगण्ड में देव-देवियों की श्रीं

१२८ जंबूद्वीप के चार द्वार

१२९ क- जम्बूद्वीप के विजयद्वार का स्थान

ग- " " की लंबाई

ग- " " का विष्कम्भ

घ- " " के कपाट रचना

१३०-१३१ " " का विस्तृत वर्णन

१३२ विजय देव के सामानिक देवों के भद्रासन

" की अग्रमहीपियों के भद्रासन

" की तीन परिपदों के "

" की सात सेनापतियों के "

" की आत्मरक्षक देवों के "

१३३ विजयद्वार के उपरिभाग का वर्णन

११४ ब- विजयद्वार नाम का देव

ग विजय देव का परिवार

ग विजय द्वार का सामान्य नाम

द्वितीय मनुष्यधोनिह उद्देश्य

११५ ब विजया राजधानी का स्थान

का आवास विष्णु

का परिवार

ग के प्रकार की ऊँचाई

विजय राजधानी के प्रकार का सामान

विजया राजधानी के प्रकार का सामान

ग विजया राजधानी का प्रकार का सामान विष्णु और ऊँचाई

घ विजया राजधानी के प्रकार की ऊँचाई और विष्णु

ङ- विजया राजधानी के प्रकार का सामान

११६ ब विजया राजधानी के प्रकार का सामान विष्णु में चार वनस्पति

ग वनस्पति का आवास विष्णु

घ वनस्पति में विष्णु प्रमाद

च प्रमाद में चार महिष देव

ज विजया राजधानी के प्रकार का सामान विष्णु में चार वनस्पति

घ वनस्पति का आवास विष्णु

ङ की परिधि

ज वनस्पति के प्रकार का सामान विष्णु में चार वनस्पति

भ वनस्पति के प्रकार का सामान विष्णु में चार वनस्पति

ज वनस्पति के प्रकार का सामान विष्णु में चार वनस्पति

ट वनस्पति के प्रकार का सामान विष्णु में चार वनस्पति

११७ ब विजय देव की सुधर्मा समा

घ सुधर्मा समा की ऊँचाई आवास विष्णु

- ग- सुधर्मा सभा के तीन द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ
 घ- मुसमण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई
 ङ- प्रेक्षाघर मण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई
 च- मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य
 छ- चैत्य स्तूपों का आयाम-विष्कम्भ बाह्य
 ज- मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य
 झ- चार जिन प्रतिमाओं की ऊँचाई
 ञ- चैत्य दृश्यों की ऊँचाई, उद्वेध, स्कंधों का विष्कम्भ, मध्य
 भाग, आयाम-विष्कम्भ, उपरिभाग का परिमाण, चैत्यदृश्यों
 का वर्णन
 ट- मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य
 ठ- महेन्द्र ध्वजाओं की ऊँचाई, उद्वेध और विष्कम्भ
 ड- नन्दा पुष्करणियों का आयाम-विष्कम्भ और उद्वेध
 ढ- मनोगुलिकाओं की संख्या
 ण- गोमानसिकाओं की संख्या
 त- मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य
 थ- माणवक चैत्य स्तम्भों की ऊँचाई उद्वेध और विष्कम्भ
 द- जिन शक्तियों का स्थान
 ध- महा मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य
 न- सिंहासन वर्णन
 प- देवशयनीय वर्णन
 फ- मणिपीठिकाओं का आयाम विष्कम्भ और बाह्य
 ब- महेन्द्रध्वज की ऊँचाई, उद्वेध, विष्कम्भ
 भ- विजय देव का शस्त्रागार
 म- शस्त्रों का वर्णन
 य- सुधर्मा सभा, अष्ट मंगल
 १३८ क- सिद्धायतन का आयाम, विष्कम्भ और ऊँचाई

स मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य
 ग देवटंक का आयाम विष्कम्भ और उमकी ऊचाई
 घ त्रिन प्रतिमात्रा की मर्यादा और ऊचाई
 ङ त्रिन प्रतिमात्रा का वणन
 च मान मल भूत आदि की प्रतिमात्राओं की मर्यादा
 छ घटा चदनकनन मृद्गारक आदि की मर्यादा
 ज अष्टमङ्गल सोमह रत्नमय

१३६ क उपपान मन्त्रा का वणन
 ख मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य
 ग देवगवनीय का वणन
 घ हस्त का आयाम विष्कम्भ और उन्मेष
 ङ अभिषेक मन्त्रा का वणन
 च मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य
 छ मिहामन वणन
 ज अष्टकारिक मन्त्रा वणन
 झ अष्टसामि मन्त्रा वणन
 झ पुस्तक रत्न वणन
 ट मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य

१४० क विजयदेव की उत्पत्ति व पर्याप्ति
 ख विजयदेव का मानमिक मर्यादा
 ग मानमिक देवा का आयामन
 घ त्रिन प्रतिमात्राओं और मन्त्रिका की अर्चा क वस्तुध का निर्देश
 ङ विजयदेव ने अभिषेक का विस्तृत वणन

१४१ क विजयदेव का मृद्गारक वणन
 ख विजय देव का पुस्तक-स्वाध्याय
 ग विजय देव का सिद्धायतन में आगमन त्रिन प्रतिमात्रा की
 अर्चा का वणन

घ- चैत्य स्तूप का प्रमार्जन

ङ- जिनप्रतिमा व जिन सक्थियों की अर्चापूजा

च- विजयदेव का मुधर्मा सभा में आगमन, सिंहासन पर पूर्वा-
भिमुख आसीन होना,

१४२ क- विजयदेव के समस्त परिवार का यथाक्रम से बैठना

ख- विजयदेव की स्थिति

ग- विजय देव के सामानिक देवों की स्थिति.

१४३ क- जंबूद्वीप के विजयंत द्वार का वर्णन

ख- " जयंत द्वार का वर्णन

ग- " अपराजित द्वार का वर्णन

१४४ जंबूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर

१४५ क- जंबूद्वीप से लवण समुद्र का और लवण समुद्र से जंबूद्वीप का
स्पर्श

ख- जंबूद्वीप के जीवों की लवण समुद्र में और लवण समुद्र के
जीवों की जंबूद्वीप में उत्पत्ति.

उत्तरकुरुक्षेत्र वर्णन

१४६ क- जंबूद्वीप में उत्तर कुरुक्षेत्र का स्थान

ख- उत्तर कुरुक्षेत्र का संस्थान और विष्कम्भ

ग- जीवा और वक्षस्कार पर्वत का स्पर्श

घ- वनस्पृष्ठ की परिधि

ङ- उत्तरकुरुक्षेत्र के मनुष्यों की ऊँचाई, पसलियाँ, आहारेच्छा
काल, स्थिति और शिशुपालन काल.

च- उत्तरकुरुक्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य

१४७ उत्तरकुरु में दो यमक पर्वत

१४८ क- यमक पर्वतों का स्थान, ऊँचाई, उद्वेग, मूल, मध्य और
उपरिभाग का आयाम, विष्कम्भ, परिधि.

ल यमक पर्वता पर प्रासाद और प्रासादों की ऊँचाई
 ग यमक नाम होने का हेतु दा यमक देव, उनकी स्थिति, उनका
 देव परिवार

घ- यमक पर्वतों की नित्यता सिद्धि

ङ- यमका राजधानियों का स्थान

१४६ क उत्तरकुण्ड में नीलवत्सङ्ग का स्थान, आयाम विष्कम्भ और
 उद्देश

ख- पद्म का आयाम, विष्कम्भ, परिधि, बाहुल्य, ऊँचाई और
 सर्वोपरिभाग

ग पद्मकणिका का आयाम विष्कम्भ परिधि और बाहुल्य

घ भवन का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई

ङ भवन के द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ

च मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाहुल्य

छ देवशयनीय वसन

ज एक सौ आठ कमलों की ऊँचाई आदि

झ वणिजाओं का आयाम विष्कम्भ

झ पद्म का परिवार सर्व पदुमों की मस्या

ट नीलवत्सङ्ग नाम होने का हेतु

१५० ड कचनग पर्वतों का स्थान

ण की ऊँचाई, उद्देश, मूल, मध्य और सर्वोपरि
 भाग का विष्कम्भ

ग प्रासादों की ऊँचाई विष्कम्भ

ल कचनग पर्वत नाम होने का हेतु

ट- कचनग देव कचनगा राजधानी

थ उत्तरकुण्ड का स्थान आदि

ड चन्द्र इह, एरावत्त इह, मान्यव न इह

१५१ क- जम्बूगोठ का स्थान

ख- जम्बूपोठ का आयाम, विष्कम्भ, परिधि, मध्यभाग का और अन्तिम भाग का वाहल्य

ग- मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और वाहल्य

घ- जंबू-सुदर्शन वृक्ष की ऊँचाई उद्बेध, स्कंध का विष्कम्भ. मध्यभाग का और सर्वोपरि भाग का विष्कम्भ. जंबू-दर्शन वृक्ष का वर्णन

१५२ क- जम्बू-सुदर्शन की चार शाखायें

ख- शाखाओं पर भवन, उनका आयाम, विष्कम्भ और ऊँचाई आदि

ग- भवन द्वारों की ऊँचाई विष्कम्भ आदि

घ- जम्बू-सुदर्शन के उपरिभाग में सिद्धायतन. सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ, ऊँचाई, सिद्धायतन के द्वारों की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि देव छदक, जिनप्रतिमा आदि.

ङ- पार्श्ववर्ती अन्य जम्बू-सुदर्शनों की ऊँचाई आदि

च- अनाधृत देव और उसका परिवार

छ- जम्बू-सुदर्शन वृक्ष के चारों ओर तीन वनखण्ड

ज- प्रत्येक वनखण्ड में भवन

झ- चार नन्दा पुष्करिणियाँ, उनका आयाम-विष्कम्भ आदि

ञ- नन्दा पुष्करिणी के मध्य प्रासाद की ऊँचाई आदि.

ट- सर्व पुष्करिणियों के नाम

ठ- एक महान कूट

कूटों की ऊँचाई विष्कम्भ आदि

कूटों पर सिद्धायतन का वर्णन

ड- जम्बू-सुदर्शन वृक्ष पर अष्टमंगल

ढ- जम्बू-सुदर्शन वृक्ष के द्वारह नाम

ण- जम्बू-सुदर्शन नाम का हेतु

त- अनाधृत देव की स्थिति

घ अनापूर्णा राजधानी का स्थान आदि

द जम्बूद्वीप नाम की नित्यता

१५३ क जम्बूद्वीप में चार सख्या

स " मूय "

ग " नक्षत्र "

क " महापट्ट "

ङ " माराण्य "

सवणसमुद्र वर्णन

१५४ क सवण समुद्र का संस्थान

स " का अत्रधान्य विस्फम्भ

ग " की परिधि

घ " की तद्भवत वेदिता की ऊँचाई और बनवन्त

ङ " के द्वार द्वारा का उत्तर

च सवण समुद्र और धानकीक्षेत्र का परस्पर कर्ष

छ सवण समुद्र के जीवा की धानकीक्षेत्र में और धानकीक्षेत्र के जीवा की सवण समुद्र में उत्पत्ति

ज सवण समुद्र नाम होने का हेतु

झ सवणाविवर्ति भुक्तिव्य देव की स्थिति

ञ सवण समुद्र की नित्यता

१५५ क सवण समुद्र में चार सख्या

स " मूय "

ग " नक्षत्र "

घ " महापट्ट "

ङ " तारा "

१५६ क अष्टमी आदि निधिया में सवण समुद्र की चैता शक्ति

स सवण समुद्र में चार पाताल कलन पाताल कलशों के मूल, मध्य और उपरिभाग का विस्फम्भ

ग- पातालकलशों में जीवों और पुद्गलों का चयापचय.

घ- पातालकलशों के तीन भाग

ङ- प्रत्येक भाग में वायु और पानी

च- अनेक क्षुद्र पातालकलशों के मूल, मध्य और उपरिभाग का परिमाण

छ- क्षुद्र पातालकलशों में जीवों और पुद्गलों का चयापचय

ज- प्रत्येक पातालकलश में एक देव, देव की स्थिति

झ- प्रत्येक पातालकलश के तीनों भाग में वायु, पानी का अस्तित्व

ञ- सर्व पातालकलशों की संख्या

ट- पातालकलशों में वायु-पानी का घटन, स्पंदन, वेलावृद्धि का कारण

१५७ तीसमुहूर्त में लवण समुद्र की वेला-वृद्धि व वेला-हानि

१५८ क- लवण शिखा की वृद्धि-हानि का परिमाण

ख- लवणसमुद्र की बाह्याभ्यन्तर वेला वृद्धि को रोकने वाले नागदेवों की संख्या

१५९ क- चार वेलंघर नागराज

ख- नागराजों के आवास पर्वत

ग- गोस्तूभ वेलंघर नागराज का गोस्तूभ आवास का पर्वत का स्थान, मूल, मध्य और उपरिभाग का परिमाण, पद्मवर वेदिका, वनखण्ड

घ- प्रासादावतंसक का परिमाण

ङ- गोस्तूभ नाम का हेतु, गोस्तूभ देव, स्थिति, देवपरिवार, गोस्तूभा राजधानी का परिमाण

च- शिवक वेलंघर नागराज के दक्षभास आवास पर्वत की ऊँचाई आदि

झ- शंखदेव, शंखा राजधानी

ज एतन्मन्त्रधर नागराज वा दशमीय आश्रम पवत वा स्थान ऊर्चाई आनि

झ गच्छन्तेव गच्छा राजधानी

ञ मनोमील वनधर नागराज का ३ दशमीय आश्रम पवत वा ऊर्चाई आनि

ट मनोमील देव मनोमीला राजधानी

१६० क चार अनुवेसधर नागराज

ख इनके चार आश्रम पवत

ग कर्कोटक अनवेसधर नागराज वा कर्कोटक आश्रम पवत वा स्थान परिमाण कर्कोटक नाम का हूत कर्कोटक देव कर्कोटका राजधानी

घ कदम अनवेसधर नागराज वा कदम आश्रम पवत वा स्थान परिमाण आनि कदम देव कदमा राजधानी

ङ वेलांग पवन मोस्तूम के समान

च अरुणग्रन्थ

सवणाधिप सुस्थित देव के गौतमद्वीप का वणन

१६१ क गौतम द्वीप का स्थान आयाम विष्कम्भ परिधि पञ्चवर देविका वनसम्भ

ख कीर्णवास की ऊर्चाई विष्कम्भ

ग मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य देवगमनीय का वणन

घ गौतम द्वीप नाम का हेतु

ङ मुनिपत्र देव मुत्तिका राजधानी

जम्बूद्वीप के चन्द्रद्वीपों का वणन

१६२ क चन्द्रद्वीप का स्थान

ख की ऊर्चाई

- ग- चन्द्रद्वीप का आयाम-विष्णुम्भ
- घ- ज्योतिषी देवों का प्रीड़ा म्यन
- ङ- प्रागादायतंगक का आयाम-विष्णुम्भ
- च- मणिपीठिका का परिमाण
- छ- चन्द्रद्वीप नाम का हेतु, चन्द्रदेव, चन्द्रा राजधानी

जम्बूद्वीप के सूर्य और उनके सूर्यद्वीपों का वर्णन

- क- सूर्य द्वीप का स्थान
- ख- " का आयाम-विष्णुम्भ, और परिधि
- ग- पद्मवर वैदिका, धनमण्ड, प्रागादायतंगक, मणिपीठिका
- घ- सूर्यद्वीप नाम का हेतु, सूर्य उत्पन्न, सूर्यदेव, सूर्या राजधानी
- लवण समुद्र के आश्रयन्तः चन्द्र, सूर्य और उनके चन्द्रसूर्य द्वीपों का वर्णन

- १६३ क- चन्द्र द्वीपों के स्थान आदि [जम्बू के चन्द्रद्वीप के गमानवर्णन]
- ख- सूर्य द्वीपों के स्थान आदि [जम्बू के सूर्यद्वीप के गमानवर्णन]
- ग- लवण समुद्र के बाह्य चन्द्र, सूर्य और उनके चन्द्र सूर्य द्वीप

धातकीखण्ड के चन्द्र सूर्य और उनके चन्द्र सूर्य द्वीप

- १६४ क- चन्द्रद्वीपों के स्थान आदि
- ख- सूर्य द्वीपों के स्थान आदि
- ग- चन्द्रद्वीपों के स्थान आदि
- घ- सूर्यद्वीपों के स्थान आदि

१६५ कालोद समुद्र के चन्द्रसूर्य और उनके चन्द्रसूर्य द्वीप

- क- चन्द्र द्वीपों के स्थान आदि
- ख- सूर्य द्वीप स्थान आदि

पुष्कर वर द्वीप के चन्द्र सूर्य और उनके चन्द्रसूर्यद्वीप

- ग- चन्द्रद्वीपों के स्थान आदि
- घ- सूर्य द्वीपों के स्थान आदि

- १६६ द्वीप समुद्रों के नाम
- १६७ क देव द्वीप के चन्द्र मूय और उनके चन्द्रमूय द्वीप चन्द्रमूय द्वीप के स्थान आदि
 ख मूयद्वीप के स्थान आदि देव समुद्र के चन्द्र मूय और उनके चन्द्र मूय द्वीप
 ग चन्द्र द्वीप के स्थान आदि
 घ मूय द्वीप के स्थान आदि
 ङ नाम यक्ष भूत द्वीप और समुद्र चन्द्र मूय द्वीप
 च स्वयम्भूरमण द्वीप में चन्द्र मूय द्वीप
 छ स्वयम्भूरमण समुद्र में चन्द्र मूय द्वीप
- १६८ क लवणसमुद्र के वेलधर मन्त्र वन्द्य
 ख बाह्य समुद्रों में वेलधरों का अभाव
- १६९ क लवणसमुद्र में विलिखित है
 ख बाह्य समुद्रों में प्रस्तोत है ।
 ग लवण समुद्र में मेष आदि का सम्भाव
 घ बाह्य समुद्रों में मेष आदि का अभाव
 ङ मेष आदि का अभाव का हेतु
- १७० क लवण समुद्र का उद्वेग का परिमाण
 ख उद्वेग का परिमाण
- १७१ क लवण समुद्र का गीतीय का परिमाण
 ख गीतीय विरहित क्षेत्र का परिमाण
 ग लवण समुद्र का उन्मथन का परिमाण
- १७२ क लवण समुद्र का संस्थान
 ख चक्रान विष्णु
 ग की परिधि
 घ का उन्मथ
 ङ का उन्मथ
 च का सर्वोच्च भाग

१७३ लवण समुद्र के पानी को जम्बूद्वीप में फैलने से रोकने वाले
निमित्त कारण-हेतु

धातकीखण्ड का वर्णन

१७४ क- धातकीखण्ड का संस्थान

ख- " का चक्रवाल-विष्कम्भ

ग- " का चक्रवाल-परिधि

घ- " की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड

ङ- धातकीखण्ड के चार द्वार

च- प्रत्येक द्वार का अन्तर

छ- धातकीखण्ड और कालोद समुद्र का परस्पर स्पर्श

ज- धातकीखण्ड और कालोद समुद्र के जीवों की धातकीखण्ड
और कालोद समुद्र में उत्पत्ति,

झ- धातकीखण्ड नाम होने का हेतु

ञ- धातकी महाधात की वृद्धि. इन पर रहने वाले देव. देवों की
स्थिति

ट- धातकीखण्ड की नित्यता

ठ- धातकीखण्ड के चन्द्र

" सूर्य

" महाग्रह

" नक्षत्र

" तारा

कालोद समुद्र का वर्णन

१७५ क- कालोद समुद्र का संस्थान

ख- " का चक्रवाल-विष्कम्भ

ग- " का चक्रवाल-परिधि

घ- " की पद्मवर वेदिका, वन खण्ड.

ङ- " के चार द्वार

च- " के प्रत्येक द्वार का अन्तर

मनुष्यनोक मे प्रत्येक निटक मे ग्रह
 " मे चन्द्र सूर्य की पत्नियाँ
 " मे प्रत्येक पत्ति मे चन्द्र सूर्य
 " मे नक्षत्रों की पत्नियाँ
 " मे प्रत्येक पत्ति मे नक्षत्र
 " मे ग्रहों की पत्नियाँ
 " मे प्रत्येक पत्ति मे ग्रह
 " मे चन्द्र सूर्य ग्रह के चरमण्डल
 " मे मन्त्र और तारा के अवस्थित मण्डल
 ' मे चन्द्र सूर्य का मण्डल सकल
 " मे मनुष्यों के सुख का निमित्त चन्द्र सूर्य

नक्षत्र और ग्रहों की गति

तान क्षेत्र की हानि वृद्धि

" का संस्वान

चन्द्र की हानि वृद्धि का कारण

मनुष्य क्षेत्र मे चर चन्द्रादि

से बाहर स्थिर चन्द्रादि

अर्थाई क्षेत्र मे चन्द्र सूर्य

मनुष्य क्षेत्र मे चन्द्र सूर्य का अन्तर

सूर्य से सूर्य का अन्तर

के बाहर चन्द्र सूर्य

एक चन्द्र का परिवार

मनुष्य क्षेत्र के बाहर स्थिर चन्द्र सूर्य

" चन्द्र के साथी ग्रह

सूर्य के साथी ग्रह



१७८ क- मानुषोत्तर पर्वत की ऊंचाई

- स- " की उद्वेध
ग- " के मूल का विष्कम्भ
घ- " के मध्य का "
ङ- " के उपर का "
च- " के अन्दर की परिधि
छ- " के बाहर की परिधि
ज- " के मध्य की "
झ- " के उपर की "

ञ- " की पञ्चवर वेदिका, वन सण्ड

ट- मानुषोत्तर पर्वत नान होने का हेतु,

लोक सीमा का श्रृंखल

ठ- लोक सीमा के अनेक विकल्प

१७९ क- मनुष्य क्षेत्र में चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की मण्डलाकार गति

ग- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन

ग- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल

घ- मनुष्य क्षेत्र बाहर के चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की एक स्थान स्थिति

ङ- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन

च- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल

१८० क- पुष्करोद समुद्र का संस्थान

ख- " का चक्रवाल विष्कम्भ

ग- " की चक्रवाल परिधि

घ- " के चार द्वार

ङ- प्रत्येक द्वार का अन्तर

च- पुष्कर वर द्वीप ओर पुष्करवर समुद्र का परस्पर स्पर्श

छ- दोनों के जीवों की एक-दूसरे में उत्पत्ति

मनुष्यलोक म प्रत्येक पिटक म ग्रह
 म चन्द्र सूर्य की पत्नियाँ
 मैं प्रत्येक पत्ति मे चन्द्र सूर्य
 म नक्षत्रों की पत्नियाँ
 म प्रत्येक पत्ति मे नक्षत्र
 म ग्रहों की पत्नियाँ
 मे प्रत्येक पत्ति मे ग्रह
 मैं चन्द्र सूर्य ग्रह के चरमस्थान
 मे नक्षत्र और तारों के अवस्थित मण्डल
 मे चन्द्र सूर्य का मण्डल सन्मरण
 मे मनुष्यों के सुख का निमित्त चन्द्र सूर्य

नक्षत्र और ग्रहों की गति
 ताप क्षेत्र की हानि रुद्धि
 का मर्यादा

चन्द्र की हानि रुद्धि का कारण
 मनुष्य क्षेत्र मे चर चन्द्रादि
 से बाहर स्थित चन्द्रादि
 अग्राई द्वीप मे चन्द्र सूर्य
 मनुष्य क्षेत्र म चन्द्र सूर्य का अन्तर
 सूर्य से सूर्य का अन्तर
 क बाहर चन्द्र सूर्य

एक चन्द्र का परिवार

मनुष्य क्षेत्र क बाहर स्थित चन्द्र सूर्य
 चन्द्र के साथी ग्रह
 मण्डल के साथी मण्डल

१७८ क- मानुषोत्तर पर्वत की ऊंचाई

- ख- " की उन्वेध
 ग- " के मूल का विष्कम्भ
 घ- " के मध्य का "
 ङ- " के उपर का "
 च- " के अन्दर की परिधि
 छ- " के बाहर की परिधि
 ज- " के मध्य की "
 झ- " के उपर की "

ब- की पञ्चवर वेदिका, वन सण्ड

ट- मानुषोत्तर पर्वत नाम होने का हेतु,

लोक सीमा का श्रृंखल

ठ- लोक सीमा के अनेक विकल्प

१७९ क- मनुष्य क्षेत्र में चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की मण्डलाकार गति

ख- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन

ग- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल

घ- मनुष्य क्षेत्र बाहर के चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की एक स्थान स्थिति

ङ- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन

च- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल

१८० क- पुष्करोद समुद्र का सस्थान

ख- " का चक्रवाल विष्कम्भ

ग- " की चक्रवाल परिधि

घ- , के चार द्वार

ङ- प्रत्येक द्वार का अन्तर

च- पुष्कर वर द्वीप ओर पुष्करवर समुद्र का परस्पर स्पर्श

छ- दोनों के जीवों की एक-दूसरे में उत्पत्ति

- छ कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप का परस्पर स्पर्श
 ज कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के जीवों की एक दूमरे से उत्पत्ति
 झ कालोद समुद्र नाम होने का हेतु
 ञ काय महाकाय देव स्थिति
 ट कालोद समुद्र की नित्यता
 ठ कालोद समुद्र में चन्द्र
 सूय
 महाग्रह
 मलय
 तारा

पुष्करवर द्वीप का वर्णन

- १७६ क पुष्करवर द्वीप का संस्थान
 ज का चतुर्दल विष्कम्भ
 ग की परिधि
 घ की पद्म वैदिका वनस्पति
 ङ के चार द्वार
 च के प्रत्येक द्वार का अंतर
 छ कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के प्रदेशों का परस्पर स्पर्श
 ज कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के जीवों की एक दूमरे से उत्पत्ति
 झ पुष्करवर द्वीप नाम होने का हेतु
 ञ पद्म और महापद्म लक्ष पद्म और पुष्करवर द्वीपों की स्थिति
 पुष्करवर द्वीप की नित्यता

ट- पुष्करवर द्वीप में चन्द्र

” सूर्य

” महाग्रह

” नक्षत्र

” तारा

ठ- मानुषोत्तर पर्वत से पुष्करवर द्वीप के दो विभाग

ड- अन्यन्तर पुष्करार्ध की चक्रवाल परिधि

ढ- अन्यन्तर पुष्करार्ध नाम होने का हेतु

ण- अन्यन्तर पुष्करार्ध में चन्द्र

” सूर्य

” महाग्रह

” नक्षत्र

” तारा

१७७ क- समय क्षेत्र का आयाम-दिक्मन्

ख- ” की परिधि

ग- मनुष्य क्षेत्र नाम होने का हेतु

घ- मनुष्य क्षेत्र में चन्द्र

” सूर्य

” महाग्रह

” नक्षत्र

” तारा

च- मनुष्यलोक के अन्दर और बाहर के तारा. ताराओं की गति.

ज- मनुष्य लोक में चन्द्र सूर्य के पिटक

” में प्रत्येक पिटक में चन्द्र सूर्य

” में नक्षत्रों के पिटक

” में प्रत्येक पिटक में नक्षत्र

” में महाग्रहों के पिटक

मनुष्यचोक म प्रयेक पितृक म ग्रह
 म चन्द्र सूर्य की पत्तिर्षा
 में प्रत्येक पत्ति मे चन्द्र सूर्य
 म नक्षत्रों की पत्तिर्षा
 म प्रत्येक पत्ति म नक्षत्र
 मे ग्रहों की पत्तिर्षा
 म प्रयेक पत्ति मे ग्रह
 मे चन्द्र सूर्य ग्रह के चरमण्डल
 मे नक्षत्र और तारों के अवस्थित मण्डल
 मे चन्द्र सूर्य का मण्डल सत्रमण
 मे मनुष्यों क मुख का निमित्त चन्द्र सूर्य

नक्षत्र और ग्रहों की रति
 ताप क्षेत्र की हानि वृद्धि
 का सुस्थान

चन्द्र की हानि वृद्धि का कारण
 मनुष्य क्षेत्र म धर व हानि
 मे बाहर भ्रमर चन्द्रादि
 अगई द्वीप मे चन्द्र सूर्य
 मनुष्य क्षेत्र म चन्द्र सूर्य का अन्तर
 सूर्य मे सूर्य का अन्तर
 के बाहर चन्द्र सूर्य

एक चन्द्र का परिवार

मनुष्य क्षेत्र के बाहर स्थिर चन्द्र सूर्य
 चन्द्र के साथी ग्रह
 सूर्य के साथी ग्रह

१७८ क- मानुषोत्तर पर्वत की ऊंचाई

ख- " की उद्वेघ

ग- " के मूल का विष्कम्भ

घ- " के मध्य का "

ङ- " के उपर का "

च- " के अन्दर की परिधि

छ- " के बाहर की परिधि

ज- " के मध्य की "

झ- " के उपर की "

ञ- " की पञ्चवर वेदिका, वन खण्ड

ट- मानुषोत्तर पर्वत नाम होने का हेतु,

लोक सीमा का अर्थकन

ठ- लोक सीमा के अनेक विकल्प

१७९ क- मनुष्य क्षेत्र में चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की मण्डलाकार गति

ख- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन

ग- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल

घ- मनुष्य क्षेत्र बाहर के चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की एक स्थान स्थिति

ङ- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन

च- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल

१८० क- पुष्करोद समुद्र का संस्थान

ख- " का चक्रवाल विष्कम्भ

ग- " की चक्रवाल परिधि

घ- " के चार द्वार

ङ- प्रत्येक द्वार का अन्तर

च- पुष्कर वर द्वीप और पुष्करवर समुद्र का परस्पर स्पर्श

र- मूरधरावमान द्वीप का "

स- " समुद्र का "

व- देवद्वीप का "

श- देशोद समुद्र का "

स- स्वयम्भूरमण द्वीप का "

ह- " समुद्र का "

१२६ एक नाम के द्वीप समुद्रों का संख्या परिषाण

१२७ क- लवण समुद्र के पानी का आस्वाद

ख- कालोद " "

ग- पुष्करोद " "

घ- बहलोद " "

ङ- क्षीरोद " "

च- घृतोद " "

छ- क्षोणोद " "

ज- वाय समुद्र के "

झ- प्रत्येक रसवाले^१ चार समुद्र

ञ- उदक रसवाले तीन समुद्र

१२८ क- बहुत मत्स्य कच्छ वाले तीन समुद्र

ख- मत्स्य मत्स्य कच्छ वाले दोप समुद्र

ग- लवण समुद्र में मत्स्यो की कुलकोटी

घ- कालोद " "

ङ- स्वयम्भूरमण " "

च- लवण समुद्र में मत्स्यो की जघन्य उत्कृष्ट अन्नवाहना

छ- कालोद " "

ज- स्वयम्भूरमण समुद्र में

१८६ क- द्वीप-समुद्रों के उद्धार समय

ख- द्वीप-समुद्रों के उद्धार समय

१८७ क- द्वीप-समुद्रों का पृथ्वी परिणमन-यावत्-पुद्गल परिणमन

ख- सर्वद्वीप समुद्रों में सर्वजीवों की उत्पत्ति

इन्द्रियों के विषय

१८८ क- पाँच इन्द्रियों के विषय

ख- श्रोत्रेन्द्रिय के दो विषय-यावत् स्पर्शान्द्रिय के दो विषय

ग- सुशब्द का दुःशब्द रूप में परिणमन-यावत्-सुस्पर्श का दुःस्पर्श रूप में परिणमन

ज्योतिष्क उद्देशक

देवता की गति

१८९ क- देवता की दिव्य गति

देवता की वैक्रेय शक्ति

ख- बाह्य पुद्गलों के ग्रहण से ही विकुर्वणा का कर सकना

ग- भूक्ष्म देव वैक्रेय को छद्मस्थ द्वारा न देख सकना

घ- बालक का छेदन-भेदन किये बिना बालक का ह्रस्व-दीर्घकरण का सामर्थ्य

१९० क- चन्द्रसूर्यों के नीचे समान और ऊपर छोटे बड़े ताराओं का अस्तित्व

ख- ऐसा होने का कारण

१९१ एक एक चन्द्र-सूर्य का परिवार परिमाण

१९२ क- जम्बूद्वीप के मेरु में ज्योतिषी देवों के गतिक्षेत्र का अन्तर

ख- लोकान्त में ज्योतिषी देवों के गतिक्षेत्र का अन्तर

ग- रत्नप्रभा के उपरिभाग में ताराओं का अन्तर

घ- रत्नप्रभा के उपरिभाग से सूर्य विमान का अन्तर

- २११ सौधम यावत् अनुत्तर विमानो की भिन्न भिन्न सत्थान
- २१२ सौधम यावत् अनुत्तर विमानो के भिन्न भिन्न ऊँचाई
- २१३ क सौधम यावत् अनुत्तर विमानोवाभिन्नभिन्न आपात विकम्प
 और परिधि
 ख सौधम-यावत् अनुत्तर विमानो के भिन्न भिन्न वण प्रमा,
 गच्छ और स्पश
 ग सब विमानो की पीद्वमिज रचना
 घ सब विमानो में जीवों और पुण्यसो का चषोपचय
 ङ सब विमानो की निरपता
 च सब विमानो में जीवों की उत्पत्ति का भिन्न भिन्न कम
 छ सब विमानो का जीवों में सवया स्थित न होना
 ज सौधम यावत् अनुत्तर देवो की भिन्न २ अवगाहना शरीरमान
 झ पदेयक और अनुत्तर देवो का वैक्य न करना
- २१४ क सौधम-यावत्-अनुत्तर देवो के सधयण का अभाव पुदयसो का
 शुभ परिणमन
 ख सौधम यावत् अनुत्तर देवों का सत्थान^१
- २१५ क सौधम यावत् अनुत्तर देवो के शरीररों का भिन्न २ वण,
 गच्छ स्पश
 ख वैमानिक देवो के स्वासो-उवास के पुण्यन
 ग वाह्यार के पुदयन
 घ वैमानिक देवो के लेखा यावत् उपयोग द्वार
- २१६ वैमानिक देवों के अवविज्ञान की भिन्न भिन्न अवधि
- २१७ क वैमानिक देवो के भिन्न २ समुदघात
 ख वैमानिक देवो में सुधा पिपासा की वेत्न का अभाव
 ग वैमानिक-देवो की भिन्न २ प्रकार की वैक्य शक्ति
 घ वैमानिक देवो का सप्ता वेदन
 ङ वैमानिक देवो की छत्तरीतर भर्हर्षी

२१८ वैमानिक देवों की वेपभूषा

२१९ वैमानिक देवों के काम भोग

२२० क- वैमानिक देवों की भिन्न २ स्थिति

ख- " " गति

२२१ सर्व विमानों में पटकाय रूप में सर्वजीवों की उत्पत्ति

२२२ क- सर्व नैरयिकों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

ख- सर्व तिर्यचों की "

ग- सर्व मनुष्यों की "

घ- सर्व देवों की "

ङ- नैरयिकों का जघन्य उत्कृष्ट संस्थिति काल

च- तिर्यचों का " "

छ- मनुष्यों का " "

ज- देवों का " "

झ- नैरयिक, मनुष्य और देवों का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर काल

ञ- तिर्यचों का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर काल

२२३ नैरयिक, तिर्यच, मनुष्य और देवों का अल्प-बहुत्व

चतुर्थ पंचविध जीव प्रतिपत्ति

२२४ क- संसार स्थित जीव पाँच प्रकार के

ख- एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रिय दो-दो प्रकार के

ग- एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति -

घ- एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का भिन्न २ जघन्य उत्कृष्ट-संस्थिति काल

ङ- एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का भिन्न २ जघन्य उत्कृष्ट अन्तर काल

२२५ एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का अल्प-बहुत्व

२२६ क- संसार स्थित जीव ६ प्रकार के

- २११ सौधम-यावत-अनुत्तर विमानों की भिन्न भिन्न संस्थान
- २१२ सौधम-यावत अनुत्तर विमानों के भिन्न भिन्न ऊँचाई
- २१३ क सौधम यावत-अनुत्तर विमानों का भिन्न भिन्न आवास विषम और परिवर्ति
- ख सौधम-यावत अनुत्तर विमानों के भिन्न भिन्न वन प्रभा
- ग गंध और स्पृश
- घ सव विमानों की पौन्यस्तिक रचना
- च सव विमानों में जीवों और पुन्यस्तों का समोपवय
- ङ सव विमानों की नियता
- च सव विमानों में जीवों की उत्पत्ति का भिन्न भिन्न क्रम
- छ सव विमानों में जीवों से सबका रिक्त न होना
- ज सौधम यावत-अनुत्तर देवा की भिन्न २ अवगाहना गरीरान्न
- झ प्रवेयक और अनुत्तर देवों का वक्रय न करना
- २१४ क सौधम यावत अनुत्तर देवों के सवयन का अभाव-पुन्यस्तों का गुह्य परिचयन
- ख सौधम-यावत अनुत्तर देवों का संस्थान^१
- २१५ क सौधम यावत अनुत्तर देवा के गरीरान्न का भिन्न २ वन गंध स्पृश
- ख वमानिक देवों के द्वासीभ्यवाय के पुद्गल
- ग बाह्यार के पुद्गल
- घ वैमानिक देवों के सैव्या यावत उपयोग द्वार
- २१६ वमानिक देवों के सवभिज्ञान की भिन्न भिन्न अवधि
- २१७ क वमानिक देवा के भिन्न २ समुद्रपात
- ख वमानिक देवों में सुधा पितास की वेन्न का अभाव
- ग वमानिक-देवों की भिन्न २ प्रकार की वक्रिय कर्मि
- घ वमानिक देवों का साया वेन्न
- ङ वमानिक देवों की अन्तरीतर मर्ह्यी

- छ- निगोद जीव क-से-च तक के समान
 ज- द्रव्य की अपेक्षा से निगोद-क-से-च तक के समान
 झ- द्रव्य की अपेक्षा से निगोद जीव क-से-च तक के समान
 ञ- प्रदेशों की अपेक्षा से निगोद क-से-च तक के समान
 ट- प्रदेशों की अपेक्षा से निगोद जीव क-से-च तक के समान
 ठ- निगोद की अल्प-बहुत्व
 ड- निगोद जीवों की अल्प-बहुत्व

षष्ठा सप्तविध जीव-प्रतिपत्ति

- २४० क- संसार स्थित जीव सात प्रकार के
 ख- सात प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति
 ग- सात प्रकार के संसारी जीवों का संस्थिति काल
 घ- " " " अन्तर काल
 ङ- " " " अल्प-बहुत्व

सप्तमा अष्टविध जीव-प्रतिपत्ति

- २४१ क- संसार स्थित जीव आठ प्रकार के
 ख- आठ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति
 ग- " " " का संस्थिति काल
 घ- " " " का अन्तर काल
 ङ- " " " का अल्प-बहुत्व

अष्टमा नवविध जीव-प्रतिपत्ति

- २४२ क- संसार स्थित जीव नौ प्रकार के
 ख- नौ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति
 ग- " " " का संस्थिति
 घ- " " " का अन्तर काल
 ङ- " " " का अल्प बहुत्व

स पृथ्वीकाय-यावत् त्रसकाय के प्रत्येक के दो दो भेद

२२७ पृथ्वीकायिक-यावत् त्रसकायिक जीवों की भिन्न २ स्थिति

२२८ क पटकायिक जीवों का भिन्न २ संस्थिति काल

ख पटकायिक जीवों का भिन्न २ अन्तर काल

२२९ पटकायिक जीवों का अल्प बहुत्व

२३० सूक्ष्म पटकायिक जीवों की स्थिति

२३१ सूक्ष्म पटकायिक जीवों का संस्थिति काल

२३२ अन्तर काल

२३३ अल्प-बहुत्व

२३४ बाह्य पटकायिक जीवों की स्थिति

१३५ का संस्थिति काल

२६६ का अन्तर काल

२३७ का अल्प-बहुत्व

निगोत्र वर्णन

२३८ क निगोत्र दो प्रकार के

ख निगोदाश्रय

ग सूक्ष्म निगोत्राश्रय

घ बाह्य निगोत्राश्रय

ङ निगोत्र जीव

च सूक्ष्म निगोत्र जीव

छ बाह्य निगोत्र जीव

२३९ क अनन्त निगोत्र

ख पर्याप्त अपर्याप्त निगोत्र

ग अनन्त सूक्ष्म निगोत्र

घ पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म निगोत्र

ङ अनन्त बाह्य निगोत्र

च पर्याप्त अपर्याप्त बाह्य निगोत्र

छ- निगोद जीव क-से-च तक के समान

ज- द्रव्य की अपेक्षा से निगोद-क-से-च तक के समान

झ- द्रव्य की अपेक्षा से निगोद जीव क-से-च तक के समान

ञ- प्रदेशों की अपेक्षा से निगोद क-से-च तक के समान

ट- प्रदेशों का अपेक्षा से निगोद जीव क-से-च तक के समान

ठ- निगोद की अल्प-बहुत्व

ड- निगोद जीवों की अल्प-बहुत्व

षष्ठा सप्तविध जीव-प्रतिपत्ति

४० क- संसार स्थित जीव सात प्रकार के

ख- सात प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति

ग- सात प्रकार के संसारी जीवों का संस्थिति काल

घ- " " अन्तर काल

ङ- " " अल्प-बहुत्व

सप्तमा अष्टविध जीव-प्रतिपत्ति

४१ क- संसार स्थित जीव आठ प्रकार के

ख- आठ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति

ग- " " का संस्थिति काल

घ- " " का अन्तर काल

ङ- " " का अल्प-बहुत्व

अष्टमा नवविध जीव-प्रतिपत्ति

४२ क- संसार स्थित जीव नौ प्रकार के

ख- नौ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति

ग- " " का संस्थिति

घ- " " का अन्तर काल

ङ- " " का अल्प बहुत्व

नवमा दसविध जीव-प्रतिपत्ति

- २४३ क- गतार स्थित जीव दसप्रकार के
 ख- दस प्रकार के गतारी जीवा की स्थिति
 ग " " का सन्निवृत्ति काल
 घ- " " का अन्तर काल
 ङ- " " का अल्प बहुत्व

द्विविध सर्वजीव

- २४४ क द्विविध सर्व जीवों का सन्निवृत्ति काल
 ख- असिद्ध जीव दो प्रकार के
 ग द्विविध सर्व जीवा का अन्तर काल
 घ- " " का अल्प बहुत्व
- २४५ क- द्विविध सर्वजीव
 ख- " सर्वजीवों का सन्निवृत्ति काल
 ग- " " का अन्तर काल
 घ- " " का अल्प बहुत्व
 ङ- द्विविध सर्वजीव अ से घ तक के समान
 ज- द्विविध सर्वजीव
 झ- सवेदक तीन प्रकार के
 ट- सवेदक का सन्निवृत्ति काल
 ठ- अवेदक दो प्रकार के
 ड- सवेदकों का अन्तर काल
 ङ- अवेदकों का " "
 च- सवेदक अवेदकों की अल्प-बहुत्व
 त- द्विविध सर्वजीव अ से च तक के समान
 थ- " " "
- २४६ क द्विविध सर्वजीव

ख- ज्ञानी दो प्रकार के

ग- दो प्रकारके ज्ञानियों का संस्थिति काल

घ- अज्ञानियों का "

ङ- ज्ञानियों का अन्तर काल

च- अज्ञानियों का "

छ- दोनों का अल्प-बहुत्व

ज- द्विविध सर्व जीव

झ- " सर्वजीवों का संस्थिति काल

ञ- " का अन्तर काल

ट- " का अल्प-बहुत्व

२४७ क- द्विविध सर्वजीव

ख- " सर्वजीवों का संस्थिति काल

ग- " का अन्तर काल

घ- " का अल्प-बहुत्व

२४८ द्विविध सर्वजीव सूत्र २४७ के समान

२४९ "

त्रिविध सर्वजीव

२५० त्रिविध सर्व जीव सूत्र २४७ के समान

२५१

द्रव्यानुयोगमय प्रज्ञापना उपाङ्ग

अध्ययन	१
पद	३६
उद्देशक	४४
उपलब्ध मूल पाठ	७७८७ अनुष्टुप् २लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	६१४
पद्य सूत्र	१६५

धनुर्विद्य सर्वजीव

२१७ धनुर्विद्य सर्वजीव गुण २४७ के समान

२१८

२१९

२२०

पञ्चविद्य सर्वजीव

२२१ पञ्चविद्य सर्वजीव गुण २४७ के समान

२२२

षड्विद्य सर्वजीव

२२३ षड्विद्य सर्वजीव गुण २४७ के समान
ल

२२४

सप्तविद्य सर्वजीव

२२५ सप्तविद्य सर्वजीव गुण २४७ के समान

२२६

अष्टविद्य सर्वजीव

२२७ अष्टविद्य सर्वजीव गुण २४७ के समान

२२८

नवविद्य सर्वजीव

२२९ नवविद्य सर्वजीव गुण २४७ के समान

२३०

दशविद्य सर्वजीव

२३१ दशविद्य सर्वजीव गुण २४७ के समान

२३२

जीवामिगम उपाङ्ग सूत्र संख्या विवरण

योग	प्रथमा द्विविध जीव	प्रतिपत्ति	सूत्र	१- ४३
२१	द्वितीया त्रिविध जीव	"	सूत्र	४४- ६४
४६	तृतीया चतुर्विध जीव	"	सूत्र	६५-११३
२	चतुर्था पञ्चविध जीव	"	सूत्र	११४-११५
२४	पञ्चमा षड्विध जीव	"	सूत्र	११६-१३६
	षष्ठा सप्तविध जीव	"	सूत्र	१४०- १
	सप्तमा अष्टविध जीव	"	सूत्र	१४१- १
	अष्टमा नवविध जीव	"	सूत्र	११२- १
	नवमा दशविध जीव	"	सूत्र	१४३- १

योग			
६	द्विविध सर्वजीव	सूत्र	१४४-१४६
७	त्रिविध "	सूत्र	१५०-१५६
४	चतुर्विध "	सूत्र	१५७-१६०
१	पञ्चविध "	सूत्र	१६१-१६२
१	षड्विध "	सूत्र	१६३-१६४
१	सप्तविध "	सूत्र	१६५-१६६
१	अष्टविध "	सूत्र	१६७-१६८
१	नवविध "	सूत्र	१६९-१७०
१	दशविध "	सूत्र	१७१-१७२

द्रव्यानुयोगमय प्रज्ञापना उपाङ्ग

अध्ययन	१
पद	३६
उद्देशक	४४
उपलब्ध मूल पाठ	७७८७ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	६१४
पद्य सूत्र	१६५

प्रज्ञापना पद सूच सख्या विवरण

	पञ्नाम	सूच	पञ्नाम	सूच
१	प्रज्ञापना	७८	१६ सम्पन्न	१
२	स्थान	२८	१७ अन्तर्निधा	१३
३	बहुवचनस्य	८१	१८ अवगाहना सस्थान	१३
४	स्थिति	१८	१९ निधा	१६
५	विशेष	३५	२० वम	३६
६	भुक्तान्ति	४६	२४ कमवचक	१
७	उभयवास्त	८	२५ कमवचक	१
८	सजा	९	२६ वेवचक	१
९	यानि	१०	२७ वेवचक	१
१०	चरम	१६	२८ बाह्यार	१८
११	भाषा	२४	२९ उपयोग	१
१२	गती	८	३० व यना	३
१३	परिणाम	५	३१ सजा	१
१४	रुपाय	९	३३ क्षयम	१
१५	इति	५७	३३ अवधि	८
१६	प्रयाग	१४	३४ प्रविचारणा	८
१७	लक्ष्य	५७	३५ वे ना	४
१८	काश्चयस्थिति	२	३६ मगुद्धात	१६

प्रज्ञापना उपाङ्ग विषय-सूची

१	वीर वन्दना	२	जिन प्रज्ञप्त प्रज्ञापना
३	प्रज्ञापना कथन प्रतिज्ञा	४-७	पदों के नाम

प्रथम प्रज्ञापना पद

१	प्रज्ञापना के	दो भेद
२	अजीव प्रज्ञापना के	दो भेद
३	अरूपी अजीव प्रज्ञापना के	दस भेद
४	क- रूपी	चार भेद
	ख- " "	संक्षेप में पाँच भेद
५	क- वर्ण परिणत पुद्गलों के	पाँच भेद
	ख- गद्य परिणत	दो भेद
	ग- रस परिणत	पाँच भेद
	घ- स्पर्श परिणत	आठ भेद
	ङ- संस्थान परिणत	पाँच भेद
६	क- वर्ण परिणत पुद्गलों का परस्पर सम्बन्ध	
	ख- गद्य परिणत	" "
	ग- रस परिणत	" "
	घ- स्पर्श परिणत	" "
	ङ- संस्थान परिणत	" "
७	जीव प्रज्ञापना के	दो भेद
८	मोक्षप्राप्त जीवों के	"
९	वर्तमान समय में मोक्ष प्राप्त जीवों के	पन्द्रह भेद
१०	द्वितीयादि समय में	" अनेक भेद

- ११ मसार स्थित जीवो के पाँच भेद
 १२ एनेन्द्रिय " ,
 १३ पृथ्वाकायिक जीवो के " दो भेद
 १४ सूक्ष्म पृथ्वीकायिक ,
 १५ बादर " " "
 १६ क्षमरग पृथ्वीकायिक जीवो के सात भेद
 १७ क क्षर " , अनेक भेद १
 ल " , " सक्षेप से दो भेद
 ग वष षावत स्पश प्राप्त पृथ्वीकायिक जीवो के हजारों भेद
 घ इन जीवो की योनियाँ, इन जीवो क आश्रित अनेक जीवो की उत्पत्ति
 ङ एक जीव के साथ अनेक जीवों का अस्तित्व
 १८ अपकायिक जीवो क दो दो भेद
 १९ सूक्ष्म अपकायिक जीवो के दो भेद
 २० क बादर अनेक भेद
 ल , सक्षेप से दो भेद
 ग वष षावत स्पश प्राप्त अपकायिक जीवों क हजारों भेद
 घ इन जीवो की योनियाँ
 ङ इन जीवो के आश्रित अनेक जीवों की उत्पत्ति
 च एक जीव के साथ अनेक जीवो का अस्तित्व
 २१ तत्रय कायिक जीवो क दो भेद
 २२ क सूक्ष्म तत्रय कायिक जीवो के दो भेद
 ल बादर अनेक भेद
 घ सक्षेप से दो भेद
 ग वष षावत स्पश प्राप्त तत्रय कायिक जीवों के हजारों भेद
 घ इन जीवो की योनियाँ, इन जीवो के आश्रित अनेक जीवों की उत्पत्ति
 ङ एक जीव के साथ अनेक जीवों का अस्तित्व

यह सूत्र २० के ग से च तक के समान

- २४ वायुकायिक जीवों के दो भेद
 २५ सूक्ष्म वायुकायिक जीवों के दो भेद
 २६ वादर " अनेक भेद
 शेष सूत्र २० के ग-से-च तक के समान
 २७ वनस्पति कायिक जीवों के दो भेद
 २८ सूक्ष्म वनस्पति कायिक जीवों के दो भेद
 २९ वादर " "
 ३० प्रत्येक वादर वनस्पति कायिक जीवों के बारह भेद
 ३१ वृक्ष के दो भेद
 ३२ एकास्थि वृक्ष के अनेक भेद
 ३३ बहु बीजवाले वृक्ष के अनेक भेद
 ३४ गुच्छ के "
 ३५ गुल्म के "
 ३६ लता के "
 ३७ वल्लियों के "
 ३८ पर्ववाली वनस्पतियों के "
 ३९ तृण " "
 ४० चलय वनस्पति के "
 ४१ हरित " "
 ४२ औपधिओं के अनेक भेद
 ४३ जलरू के "
 ४४ कृहण के "
 ४५ साधारण वादर वनस्पतिकायिक जीवों के अनेक भेद
 शेष सूत्र २० ग-से-च तक के समान
 ४६ क- द्दीन्द्रिय जीवों के अनेक भेद
 ख- " संक्षेप में दो भेद
 शेष सूत्र २० के ग-से-च तक के समान

च-	स्वापदों के	"
	इनके सक्षेप में	दो भेद
छ-	गर्भजों के	तीन भेद
ज-	स्थलचरों की कुलकोटी	
५४ क-	परिसर्पों के	दो भेद
ख-	उरगों के	चार भेद
ग-	बही के	दो भेद
घ-	दर्वीकरों के	अनेक भेद
ट-	मुकलियों के	"
च-	अजगरो का	एक भेद
छ-	आसालिक का	उत्पत्ति स्थान ^१
	"	के शरीर का जघन्य उत्कृष्ट प्रमाण
	"	का वायु
	"	में दृष्टि
	"	में अज्ञान
		असंज्ञी
५५ क-	महोरगों के	अनेक भेद
ख-	"	शरीर का प्रमाण
ग-	"	सक्षेप में दो भेद
घ-	"	गर्भजों के तीन भेद
ङ-	उरपरिसर्पों की कुलकोटी	
५६ क-	भुजपरिसर्पों के	अनेक भेद
ख-	"	सक्षेप में दो भेद
ग-	गर्भजों के तीन भेद	
घ-	भुजपरिसर्पों की कुलकोटी	
५७ क-	मेचरों के	चार भेद
ख-	चर्म पक्षियों के	अनेक भेद

१. यह आसालिक असंज्ञीतिर्यच पंचेन्द्रिय है ।

ग साम गीयो व
 घ ममुत्ता गीयो का लव भ
 ङ दिनन गीया का लव भे
 च इनक सगेप मे ॥ भ
 छ मभशा के तीन भे
 ज निचरा की कुलरो
 झ कुलकोटी तइह माया

५८ मनुष्यों के दो भेद

५९ व समूच्छिम मनुष्यों के उत्पत्ति स्थान

ख समूच्छिम मनुष्य दसजो

ग मिथ्या दृष्टि

घ भ्रमानी

ङ सर्वाप्त

च समूच्छिम मनुष्यों का आयु

६० गमज मनुष्यों के तीन भेद

६१ अ तर द्वीप निवासी मनुष्य के अट्ठावीस भेद

६२ अकमभूमि निवासी मनुष्यों के तीन भेद

इनके सगेप मे दो भेद

६४ म्लेच्छों के अनेक भेद

६५ व आयों के दो भेद

ख ऋद्धि प्राप्त आयों के ६ भेद

ग अर्द्धि प्राप्त आयों के नौ भेद

घ सेवायों के सगेप मे पञ्चीस भेद

६६ जा दायों के ६ भेद

६७ कुरायों के

६८	कर्मियों के	अनेक भेद
६९	सिल्पार्यों के	"
७०	क- भाषा आर्यों का	एक भेद
	ख- ब्राह्मी लिपि के	अठारह भेद
७१	ज्ञानार्यों के	पांच भेद
७२	दर्शनार्यों के	दो भेद
७३	सराग दर्शनार्यों के	दस भेद ^१
७४	क- वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ख- उपशान्त कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ग-	" " "
	घ- क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ङ- क्षयस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	च- स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	छ- प्रथम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ज-	" " "
	झ- बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ञ-	" " "
	ट- केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ठ- सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ड-	" " "
	ढ- अजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ण-	" " "
७५	क- चारित्र्यार्यों के	दो भेद
	ख- सराग चारित्र्यार्यों के	"
	ग- सूक्ष्म संपराय सराग चारित्र्यार्यों के	"
	घ-	" " "

इ	सूय सयराय सराग चारिवायों के	दो भे
च	वांदर सयराय सराग चारिवायों के	
छ		
ज		

७१	क	बीतराय चारिवायों के	
	ख	उपगाल कपाय बीतराय चारिवायों के	
	ग		
	घ	लीन कपाय बीतराय चारिवायों के	
	ङ	छपस्थ लीन कपाय बीतराय चारिवायों के	
	च	स्वय बुद्ध छपस्थ लीन कपाय बीतराय चारिवायों के दो भे	
	छ		
	ज	बुद्ध जोमिन छपस्थ लीन क बी चारिवायों के	
	झ		
	झ	केवली लीन कपाय बीतराय चारिवायों के	
	ट	मज्जी केवली लीन कपाय बीतराय चारिवायों के दो भे	
	ठ		
	ड	मज्जी केवली लीन कपाय चारिवायों के	
	ड		
	ण	चारिवायों के	पाँच भे
	त	सामयिक चारिवायों के	दो भे
	थ	ऐनोदम्भापनीय चारिवायों के	
	द	परिहारविभुद्धि चारिवायों के	
	घ	गूढमक्षराय चारिवायों के	
	न	यथास्थान चारिवायों के	

देव

क- देवताओं के	चार भेद
ख- भवनवानी देवों के	दस भेद
इनके संक्षेप में	दो भेद
ग- व्यन्तर देवों के	आठ भेद
इनके संक्षेप में	दो भेद
घ- ज्योतिषिक देवों के	पाँच भेद
इनके संक्षेप में	दो भेद
ङ- वैमानिक देवों के	दो भेद
च- कल्पोपन्न वैमानिक देवों के	चारह भेद
इनके संक्षेप में	दो भेद
छ- कल्पातीत वैमानिक भेद	दो भेद
ज- ग्रैवेयक देवों के	नौ भेद
इनके संक्षेप में	दो भेद
झ- अनुत्तरोपपातिक देवों के	पाँच भेद
इनके संक्षेप में	दो भेद

द्वितीय स्थानपद

तिर्यचों के स्थान

१ क- पर्याप्त पृथ्वी कायकों के स्थान आठ पृथ्वीयों में	
ख- अथोलोक में—पर्याप्त वादर पृथ्वी कायिकों के स्थान	
ग- उर्ध्वलोक में—पर्याप्त वादर पृथ्वीकायिकों के स्थान	
घ- तिर्यगलोक में—	”
ङ- उत्पत्ति की अपेक्षा	”
च- समुद्घात की अपेक्षा	”
छ- स्वस्थान की अपेक्षा	”

- २ क- अर्थात्त बादर तृतीय वायव्य के स्थान
 - ल उत्पत्ति की अवस्था—अर्थात्त बादर वायव्य के स्थान
 - म समुद्रस्थ की अवस्था
 - न स्वस्थान की अवस्था
- ३ क- वर्षात्त अर्थात्त सूक्ष्म तृतीय वायव्य के स्थान
 - ल उत्पत्ति की अवस्था
- ४ क- वर्षात्त बादर अर्थात्त वायव्य के स्थान
 - ल अर्धोत्पत्ति म बादर अर्थात्त वायव्य के स्थान
 - म उत्पत्ति म
 - न निष्पत्ति म
 - ह उत्पत्ति की अवस्था
 - च समुद्रस्थान की अवस्था
 - छ स्वस्थान की अवस्था
 - ज अर्थात्त बादर अर्थात्त वायव्य के स्थान
 - झ उत्पत्ति की अवस्था अर्थात्त बादर अर्थात्त वायव्य के स्थान
 - ञ समुद्रस्थान की अवस्था
 - ट स्वस्थान की अवस्था
 - ठ वर्षात्त अर्थात्त सूक्ष्म अर्थात्त वायव्य के स्थान
- ५ क- वर्षात्त बादर तेजस्वायिक के स्थान
 - ल निष्पत्ति की अवस्था वर्षात्त बादर तेजस्वायिक के स्थान
 - म व्याघात की अवस्था
 - न उत्पत्ति की अवस्था
 - ह समुद्रस्थान की अवस्था
 - च स्वस्थान की अवस्था
- ६ क- अर्थात्त बादर तेजस्वायिक के स्थान
 - ल उत्पत्ति की अवस्था अर्थात्त बादर तेजस्वायिक के स्थान
 - म समुद्रस्थान की अवस्था

घ- स्वस्थान की अपेक्षा

पर्याप्ति-अपर्याप्ति सूक्ष्म तेजस्कायिकों के स्थान

८ क- पर्याप्त वादर वायूकायिकों के स्थान

ख- अधोलोक में पर्याप्त वादर वायुकायिकों के स्थान

ग- ऊर्ध्वलोक में

घ- तिर्यङ्लोक में

ड- उत्पत्ति की अपेक्षा

च- समुदघात की अपेक्षा

छ- स्वस्थान की अपेक्षा ,,

६ क- अपर्याप्त वादर वायुक्राविकों के स्थान

ख- उत्पत्ति की अपेक्षा अपर्याप्त वादर वायुकायिकों के स्थान

ग- समुदघात की अपेक्षा

घ- स्वस्थान की अपेक्षा

१० पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिकों के स्थान

११ क- पर्याप्त वादर वनस्पति कायिकों के स्थान

ख- अधोलोक में पर्याप्त वादर वनस्पतिकायिकों के स्थान

ग. उर्ध्वलोक में

घ- तिर्यग्लोक में

ड- उत्पत्ति की अपेक्षा

च- समुद्घात की अपेक्षा ..

छ- स्वस्थान की अपेक्षा

१२ क- अपर्याप्त वादर वनस्पति कायिकों के स्थान

स- उत्पत्ति की अपेक्षा अभ्याप्त बाढ़र वनस्पतिकायिकों के स्थान

ग- समुद्घात की अपेक्षा

घ- स्वस्थान की अपेक्षा

१३ पर्याप्ति-अपर्याप्ति सूक्ष्म वनस्पतिक्रायिकों के स्थान

१४ क- पर्याप्त-अपर्याप्त द्वीन्द्रियों के स्थान तीनलोक

न उन्मत्ति की स्त्री ॥ पर्वणि अथवापि ह्रीं न्या के स्थान
 य ममुन्मत्त न की अपेक्षा
 य स्वस्थान की अपेक्षा

१३ नील मोह मे पर्वणि अथवापि नीलि न्या के स्थान
 गेय सूत्र १४ के समान

१६ नील मोह मे पर्वणि अथवापि चतुरि न्या के स्थान
 गेय सूत्र १४ के समान

१७ नील मोह मे पर्वणि अथवापि पञ्चे न्या के स्थान
 गेय सूत्र १४ के समान

नरधिको के स्थान

१८ क म न दृष्टिमा मे पय न अथवापि नरधिको के स्थान
 ख नरधिको के नरकावास
 ग नरकावास की रचना
 घ उन्मत्ति की अपेक्षा पर्वणि अथवापि नरधिको के स्थान
 ङ ममुन्मत्त की अपेक्षा अथवापि नरदिका के स्थान
 च स्वस्थान की अपेक्षा
 छ नरदिका का वचन

१९ क रत्नप्रभा मे पर्वणि अथवापि नरदिका के स्थान
 ख म नरकावास । गेय सूत्र १८ के समान

२० क गङ्गाप्रभा मे पर्वणि अथवापि नरदिका के स्थान
 ख म नरकावास । गेय सूत्र १८ के समान

२१ क व लूका प्रभा वा प्रभा मे पर्वणि अथवापि नरदिको के स्थान
 ख म नरकावास । गेय सूत्र १८ के समान

२२ क पद्मप्रभा मे पर्वणि अथवापि नरदिको के स्थान
 ख म नरकावास । गेय सूत्र १८ के समान

२३ चन्द्रप्रभा मे पर्वणि नरदिका के स्थान

- ख- धूमप्रभा में नरकावास । शेष सूत्र १८ के समान
 २४ क- तमःप्रभा में पर्याप्त-अपर्याप्त नैरयिकों के समान
 ख- " में नरकावास । शेष सूत्र १८ के समान
 २५ क- तमस्तमः प्रभा में पर्याप्त-अपर्याप्त नैरयिकों के स्थान
 ख- " में नरकावास । शेष सूत्र १८ के समान
 ग- नरकावासी की सूचक चार गाथा
 २३ क- पर्याप्त-अपर्याप्त निर्यच्च पंचेन्द्रियो के स्थान
 शेष सूत्र १४ के समान^१

मनुष्यों के स्थान

- २७ क- पर्याप्त-अपर्याप्त मनुष्यों के स्थान
 ख- उत्पत्ति की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त मनुष्यों के स्थान
 ग- समुद्घात की अपेक्षा "
 घ- स्वस्थान की अपेक्षा "

देवों के स्थान आदि का वर्णन

भवनवासी देवों का वर्णन

- २८ क- पर्याप्त-अपर्याप्त भवनवासी देवों के स्थान
 ख- भवनवासी देवों के सर्वभवन
 ग- भवनो की रचना एवं महिमा
 घ- दस भवनपतियों के नाम
 ङ- " के परिचय चिन्ह
 च- " का वैभव
 २९ क- पर्याप्त-अपर्याप्त अमुरकुमारों के स्थान

१. यह सूत्र रचनाक्रम के अनुसार सत्रहवें सूत्र के स्थान में होता तो अधिक संगत होता किन्तु सत्रहवें सूत्र की रचना का क्या हेतु है यह विचारणीय है ।

- ११ अगुस्तुमारों के भवन
- १२ भवनों की रचना एवं संहिता
- १३ अगुस्तुमारों का वर्णन
- १४ का वर्णन एवं परिचय

१५ अगुस्तुमारों का वर्णन

१६ १७ ईसा के पहले अगुस्तुमारों के भवन

- १८ ईसा के अगुस्तुमारों के भवन
- १९ भवनों की रचना और संहिता
- २० अगुस्तुमारों का वर्णन
- २१ भवनों की रचना
- २२ नाम दिए देवों की रचना
- २३ आचार्य देवों की

२४ २५ ईसा के पहले अगुस्तुमारों का वर्णन

- २६ ईसा के अगुस्तुमारों के भवन
- २७ भवनों की रचना और संहिता
- २८ अगुस्तुमारों का वर्णन
- २९ भवनों की रचना
- ३० नाम दिए देवों की
- ३१ अगुस्तुमारों की
- ३२ आचार्य देवों की रचना

३३ ३४ ईसा के पहले अगुस्तुमारों का वर्णन अगुस्तुमारों के भवन और संहिता

३५ नाम दिए अगुस्तुमार, अगुस्तुमार अगुस्तुमार और अगुस्तुमारों के भवनों की रचना

१ आचार्य देवों की रचना और संहिता देवों की रचना समस्त अगुस्तुमारों की समान है ।

ग- गाथा २,३-४ में द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार
स्तनितकुमार और अग्निकुमारों के भवनों की संख्या

घ- गाथा ५ में सामानिक देवों और आत्मरक्षक देवों की संख्या

ङ- गाथा ६ में दक्षिण के दस इन्द्रों के नाम

च- गाथा ७ में उत्तर के ”

छ- गाथा ८,९,१०,११ में भवनवासियों और उनके वस्त्रों के वर्ण
व्यन्तरदेवों का वर्णन

३६-४१क- पर्याप्त-अपर्याप्त व्यन्तरदेवों के नगरों का वर्णन

ख- सोलह व्यन्तरदेवों के नाम और उनके वैभव का वर्णन

ग- व्यन्तरदेवों के दक्षिण-उत्तर के बत्तीस इन्द्रों के नाम

ज्योतिष्मि देवों का वर्णन

४२ क- पर्याप्त-अपर्याप्त ज्योतिष्क देवों के स्थान

ख- इनके विमानों का वर्णन

ग- नवग्रहों के नाम

घ- अट्ठावीस नक्षत्र

ङ- चन्द्र-सूर्य इन्द्र, और इनका वैभव

वैमानिक देवों का वर्णन

४३ क- पर्याप्त-अपर्याप्त देवों का वर्णन

ख- चारह देवलोकों के नाम

ग- इनके सर्वविमानों की संख्या

घ- इनके मुकुट चिन्हों के नाम

४४-५३ क- सौधर्म-यावत्-अच्युतकल्प के विमानों का वर्णन

ख- प्रत्येक कल्पों में पाँच प्रमुख विमान

ग- सौधर्मन्द्र के कुछ नाम

घ- सौधर्मन्द्र दक्षिणार्धलोक का अधिपति

ङ- सौधर्मन्द्र का वाहन

च- सौधर्मन्द्र के अधिपति नाम

४	चार दिशाओं में नैरयिकों का	अल्प-बहुत्व
५	" पंचेन्द्रिय-तिर्यचों का	"
६	" मनुष्यों का	"
७	" चार प्रकार के देवों का	"
८	" सिद्धों का	"

२ गति द्वारा

९	नरक-यावत्-सिद्ध इन पांच गतियों की	अल्प-बहुत्व
१०	नैरयिक-यावत्-सिद्ध इन आठ गतियों का	अल्प-बहुत्व

३ इन्द्रिय द्वारा

११	सहन्द्रिय-यावत्-अनिन्द्रियों का	अल्प-बहुत्व
१२	" " के अपर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
१३	" " के पर्याप्तों का	"
१४	" " के प्रत्येक के पर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
१५	" " के पर्याप्तों का संयुक्त	अल्प-बहुत्व

४ काय-द्वारा

१६	सकाय-यावत्-अकाय जीवों का	अल्प-बहुत्व
१७	" " के पर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
१८	" " के अपर्याप्तों का	"
१९	" " के प्रत्येक के पर्याप्तों अपर्याप्तों का	"
२०	" " के पर्याप्तों अपर्याप्तों का संयुक्त	"
२१	सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों-यावत्-सूक्ष्म निगोदों का	अल्प-बहुत्व
२२	इनके अपर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
२३	इनके पर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
२४	इनके प्रत्येक के पर्याप्तों-अपर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
२५	इनके पर्याप्तों का संयुक्त-अल्प-बहुत्व	
२६	वादर पृथ्वीकायिकों-यावत्-वादर असकायिकों का	अल्प-बहुत्व

- २७ इनके अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
- २८ इनके पर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
- २९ [इन प्रत्येक के पर्याप्तों-अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
- ३० इनके पर्याप्तों अपर्याप्तों का समुक्त अल्प-बहुत्व
- ३१ सूक्ष्म पृथ्वीकादिक यावत्-सूक्ष्म निगोखों तथा बादर पृथ्वी कादिकों यावत् बादर वनकादिकों का अल्प बहुत्व
- ३२ इनके अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
- ३३ इनके पर्याप्तों का ..
- ३४ इन प्रत्येक के पर्याप्तों-अपर्याप्तों का समुक्त अल्प-बहुत्व
- ३५ इनके पर्याप्तों-अपर्याप्तों का समुक्त अल्प-बहुत्व
८ योग द्वार
- ३६ समोगी यावत्-अयोगी जीवों का अल्प बहुत्व
६ वेद द्वार
- ३७ सत्त्वो-यावत् अशुद्धियां का अल्प-बहुत्व
७ कथाय द्वार
- ३८ सकषायी यावत् अकषायी जीवों का अल्प बहुत्व
८ क्षेपण द्वार
- ३९ सत्त्वो-यावत्-अशुद्धि जीवों का अल्प बहुत्व
९ दृष्टि द्वार
- ४० सम्प्रदृष्टि यावत्-विशदृष्टि जीवों का अल्प बहुत्व
१० ज्ञान द्वार
- ४१ आभिनवोचिक ज्ञानि यावत् केवल ज्ञानियों का अल्प बहुत्व
११ अज्ञान द्वार
- ४२ मति अज्ञानी-यावत् विभक्त ज्ञानी जीवों का अल्प-बहुत्व
- ४३ ज्ञानियों अज्ञानियों का समुक्त अल्प-बहुत्व
१२ दर्शन द्वार
- ४४ चक्षुश्चक्षुणी यावत् केवल दर्शनी जीवों का अल्प बहुत्व

- १३ संयत द्वार
- ४५ संयत-यावत्-नो संयतासंयत जीवों का अल्प-बहुत्व
१४ उपयोग द्वार
- ४६ साकारोपयोगी और अनोपयोगी जीवों का अल्प-बहुत्व
१५ आहारक द्वार
- ४७ आहारक और अनाहारक जीवों का अल्प-बहुत्व
१६ भापक द्वार
- ४८ भापक और अभापक जीवों का अल्प-बहुत्व
१७ परित्त द्वार
- ४९ परीत्त-यावत्-नो परीत्तापरीत्त जीवों का अल्प-बहुत्व
१८ पर्याप्त द्वार
- ५० पर्याप्त-यावत्-नो पर्याप्त-नो अपर्याप्त जीवों का अल्प-बहुत्व
१९ सूक्ष्म द्वार
- ५१ सूक्ष्म-यावत्-नो सूक्ष्म-नो वादर जीवों का अल्प-बहुत्व
२० संज्ञी द्वार
- ५२ संज्ञी-यावत्-नो संज्ञी-नो असंज्ञी जीवों का अल्प-बहुत्व
२१ भव सिद्धिक द्वार
- ५३ भवसिद्धिक-यावत्-नो भवसिद्धिक-नो अभावसिद्धिक जीवों
का अल्प-बहुत्व
२२ अस्तिकाय द्वार
- ५४ द्रव्य अपेक्षा से घर्मास्तिकाय-यावत्-अद्धा समय का अल्प-बहुत्व
- ५५ प्रदेशों की अपेक्षा से इनका अल्प-बहुत्व
- ५६ द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा से इन प्रत्येक का अल्प-बहुत्व
- ५७ द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा से इनका संयुक्त अल्प-बहुत्व
२३ चरम द्वार
- ५८ चरम और अचरम जीवों का अल्प-बहुत्व

२४ जान द्वार

५६ जीव यावत् पर्यायो का अल्प बहुत्व

२२ क्षेत्र द्वार

६० अधोन्मोक यावत् वसोन्मोक से जीवा का अल्प बहुत्व

६१ ७४ अधोन्मोक यावत् वसोन्मोक से गति, इन्द्रिय और काम द्वार का कथन

२६ वस्त्र द्वार

७५ आयु क्रम के अनुसार यावत् अनाहारोपशोषयुक्त जीवा का अल्प बहुत्व

२७ पुद्गल द्वार

७६ क क्षेत्र की अपेक्षा से अधोन्मोक व-यावत् वसोन्मोक से पुद्गला का अल्प-बहुत्व

ख मित्राजो की अपेक्षा से पुद्गल द्रव्यों का अल्प बहुत्व

७७ सकृदात् असकृदात् और अनन्त प्रदेशी पुद्गल सकृदा का द्रव्य प्रदेश और द्रव्य प्रदेशों की अपेक्षा से समुक्त अल्प बहुत्व

७८ सकृदात् प्रदेशावगाढ यावत् असकृदात् प्रदेशावगाढ पुद्गलों का द्रव्य प्रदेशों की अपेक्षा से समुक्त अल्प बहुत्व

७९ एक समय यावत् असकृदात् समय की स्थितिवाले पुद्गल का द्रव्य प्रज्ञा और द्रव्य प्रदेश की समुक्त अपेक्षा से अल्प बहुत्व

२८ महाद्वन्द्व द्वार

८१ शीवीन दण्डको का अल्प बहुत्व

चतुर्थ स्थितिपद

१ क नैरयिको की स्थिति

ख अपर्याप्त नैरयिको की

ग पर्याप्त नैरयिको की

२ क सात नरक के अपर्याप्त पर्याप्त नैरयिको की स्थिति

३	अपर्याप्त-पर्याप्त देव-देवियों की स्थिति
४-७	" भवनवासी देव देवियों की स्थिति
८-१६	" पृथ्वीकाय-यावत्-तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियों की स्थिति
२०	" मनुष्यों की स्थिति
२१	" व्यन्तर देवों की स्थिति
२२	" ज्योतिर्ण देवों की स्थिति
२३-२८	" वैमानिक देवों की स्थिति

पंचम विशेष पद

- १ पर्याय के दो भेद
- २ जीव पर्यायों के अनन्त होने का हेतु
- ३-११ चौबीस दण्डकों में अनन्त पर्याय होने का कारण
- १२-२० क- जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना वाले चौबीस दण्डकों में अनन्त पर्याय होने का कारण
- ख- जघन्य उत्कृष्ट स्थिति वाले चौबीस दण्डकों में अनन्त पर्याय होने का कारण
- ग- जघन्य उत्कृष्ट वर्ण गन्ध रस स्पर्श परिणत चौबीस दण्डक के जीवों के अनन्त पर्याय होने का कारण
- घ- ज्ञान, अज्ञान और दर्शन सम्पन्न चौबीस दण्डक के जीवों के अनन्त पर्याय होने का कारण
- २१ अजीव पर्यायों के दो भेद
- २२ अरूपी अजीव पर्यायों के दस भेद
- २३ क- रूपी अजीव पर्यायों के चार भेद
- ख- " के अनन्त होने का कारण
- २४ जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना, स्थिति और वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श परिणत पुद्गल-पर्यायों के अनन्त होने का हेतु

- २५ एक प्रदेशावगाह यावत्-अमन्य प्रदेशावगाह पुद्गल-पर्यायो
क अनन्त होने का हेतु
- २६ एक समय की स्थिति बाने यावत् अस्तस्य समय की स्थिति
बाल पुद्गल पर्यायो के अनन्त होने का हेतु
- २७ एक गुण-वाक्य-अनन्तगुण वर्ण भक्ष रस स्पर्श परिणत पुद्गल
पर्यायो क अनन्त होने का हेतु
- २८ १० द्विप्रदेशिक-यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वर्णो की अनन्त पर्याय
हानि का हेतु
- ३१ अमन्य उत्कृष्ट प्रदेशी स्वर्णों की अनन्त पर्याय होने का हेतु
- ३२ अमन्य उत्कृष्ट अवगाहना वाने पुद्गलों स्वर्णो की अनन्त
पर्याय होने का हेतु
- ३३ अमन्य, उत्कृष्ट स्थिति वाने पुद्गलों स्वर्णो की अनन्त पर्याय
हानि का हेतु
- ३४ अमन्य, उत्कृष्ट वर्ण भक्ष रस-स्पर्श परिणत पुद्गल स्वर्ण की
अनन्त पर्याय होने का हेतु

षष्ठ व्युत्क्रान्ति पद

आठ द्वारों के नाम

प्रथम गति अथवा उपगत उद्घर्मेन विरहकाल द्वार

१ क बार गति का उद्घर्मेन^१ विरहकाल

ल निद्र गति का " "

२ बार गति का उद्घर्मेन^२ विरहकाल

द्वितीय दृष्टकालेण उपगत उद्घर्मेन विरहकाल द्वार

३-१० क चौथी दृष्टकालेण उपगत विरहकाल

ल निद्रा का

" "

ए बार सजाओ बाबू चौबीस हज़ार के बीबी का ज़ख्म बहुत

की यात्रियों का अल्प-वृद्धि

ख तीन प्रकार की योनियों में उत्पन्न होने वाले पुरुष

२ रत्नप्रभादि सान गृध्विर्वा सोषर्म-यावत् समुत्तर विमान,
इषःप्राप्ताया, लोक और अजोक के (अजक के अजकदि ८

विकल्प

- ३ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से रत्नप्रभादि सात पृथ्वियाँ सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमान, ईपत्प्राग्भरा और लोक के चरमादि ६ विकल्पों का अल्प-बहुत्व
- ४ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से अलोक के चरमादि ६ विकल्पों का अल्प-बहुत्व
- ५ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से लोकालोक के चरमादि ६ विकल्पों का अल्पबहुत्व
- ६ परमाणु पुद्गल के चरमादि तीन विकल्पों के छद्बीस भागे
- ७-१३ क- द्विप्रदेशिक स्कन्धों-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों के चरमादि तीन विकल्पों के भागे
- ख- भंग संख्या मूचक ६ गथा
- १४ पाँच संस्थानों के नाम
- १५ क- परिमण्डलादि पाँच संस्थान अनन्त
- ख- परिमण्डलादि पाँच संस्थानों के सत्यात प्रदेश-यावत्-अनन्त प्रदेश
- ग- " पाँच संस्थान सत्यात प्रदेशावगाढ-यावत्-अनन्त प्रदेशावगाढ
- १६-१८ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा संख्यात प्रदेशावगाढ-यावत्-अनन्त प्रदेशावगाढ पाँच संस्थानों के चरमाचरम का अल्प-बहुत्व जीव चरमाचरम^१
- १९ क- चौबीस दण्डक के जीव^२ या जीवों^३ का गति की अपेक्षा चरमाचरम
- ख- " " का स्थिति की अपेक्षा चरमाचरम

१. चरम—जिसका अन्त है । अचरम—जिसका अन्त नहीं है

२. एक वचन ३. बहुवचन

ग	चौबीस दण्डक के जीव या जीवों का भव की अपेक्षा चरमा	चरम
घ	का भाषा की अपेक्षा चरमा	चरम
ङ	का इवासो-द्विषास की अपेक्षा	चरमा चरम
च	का आहार की अपेक्षा चरमा	चरम
छ	का भाव की अपेक्षा चरमा	चरम
ज	का दध गव रस रस की	अपेक्षा चरमा चरम
झ	गति आदि इषारह द्वारों की सुषक्त गाथा	

एकादशम भाषा पद

१	अवधारिणी भाषा का स्वरूप	
२	क	के चार भेद
	ख	के चार भेद होने का हेतु
		मध्य भाषा
३	क	प्रजापती भाषा
	ख	पशु पक्षी वाचक प्रजापती भाषा
४		स्त्री आदि लिङ्गवाचक प्रजापती भाषा
५		स्त्री आज्ञापनी आदि
६		स्त्री प्रजापती आदि
७		स्त्री गति आदि
८		स्त्री गति आदि आज्ञापनी
९		स्त्री अ ति आदि प्रजापती

- १०-११ संज्ञी जीवों की भाषा
- १२ एक वचन, बहु वचन
- १३ स्त्री, पुरुष और नपुंसक वाची
- १४ लिङ्गवाची भाषा बोलने वाला धमण
- १५ क- भाषा का मूल कारण, भाषा का उत्पत्ति स्थान
भाषा का संस्थान, भाषा का अन्त
ख- भाषा का उत्पत्ति स्थान, भाषा के समय
भाषा के भेद योग्य भाषा
- १६ क- भाषा के दो भेद
ख- पर्याप्त भाषा के दो भेद
- १७ " दस भेद
- १८ मृषा भाषा के " .
- १९ क- अपर्याप्त भाषा के दो भेद
ख- सत्यामृषा भाषा के दस भेद
- २० असत्या मृषाभाषा के बारह भेद
- २१ क- भासक-अभासक जीव
ख- जीव के भाषक-अभाषक होने का हेतु
- २२ चौबीस दण्डक के जीव भाषक-अभाषक
- २३ क- भाषा के चार भेद
ख- चौबीस दण्डक के जीवों की चार प्रकार की भाषा
- २४-५२ ग्रहण करने योग्य और अयोग्य भाषा द्रव्य
- २६ भाषा द्रव्यों का सान्तर निरन्तर ग्रहण
- २७ भिन्न, अभिन्न भाषा द्रव्यों का निकलना
- २८ भाषा के पांच भेद
- २९ पांच भेदों का अल्प-बहुत्व
- ३० चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा भाषा द्रव्यों का ग्रहण
- ३१

- ३२ मोलह वचन
 ३३ भाषा के चार भेद
 आराधक निराधक की भाषा
 ३४ चार प्रकार की भाषा के भाषकों और अभ्यासकों का अर्थ
 बहुत्व

द्वादसम शरीर पद

- १ क पाच शरीरों के नाम
 ख चौबीस दण्डक में जीवों के शरीर
 २ प्रत्येक शरीर के दो दो भेद
 ३ क चौबीस दण्डक में प्रत्येक शरीर के बड़ मुन्न का अर्थ-बहुत्व

त्रयोदशम परिणाम पद

- १ क परिणाम के दो भेद
 ख जीव परिणाम के दस भेद
 २ क गति परिणाम के चार भेद
 ख ही द्रव्य पाच भेद
 ग कषाय चार भेद
 घ भेषज छ भेद
 ङ-योग तीन भेद
 च उपयोग दो भेद
 छ गान पाच भेद
 ज्ञान परिणाम के तीन भेद
 ज दान तान भेद
 झ पारिव पाच भेद
 ञ वेद तीन भेद
 ३ चौबीस दण्डक में दस परिणाम

४	अजीव परिणाम के	दस भेद
५	क- वध "	दो भेद
	रक्षबंध और स्निग्ध बंध की व्याख्या	
ख-	(१) गति परिणाम के	दो भेद
	(२) "	"
ग-	सस्यान परिणाम के	पांच भेद
घ-	भेद "	पांच भेद
ङ-	वर्ण "	पांच भेद
च-	गघ "	दो भेद
छ-	रस "	पांच भेद
ज-	स्पर्श "	आठ भेद
झ-	अगुरु लघु "	एक भेद
ञ-	शब्द "	दो भेद

चतुर्दशम-कषाय पद

१	क- कषाय के	चार भेद
	ख- चौबीस दण्डक में	चार कषाय
२	क- क्रोध के	चार स्थान
	ख- चौबीस दण्डक में क्रोध के	"
३	क- क्रोध की उत्पत्तिके	चार निमित्त
	ख- चौबीस दण्डक में क्रोध की उत्पत्ति के	चार निमित्त
४	क- क्रोध के	चार भेद
	ख- चौबीस दण्डक में क्रोध के	चार भेद
५	क- क्रोध के	चार भेद
	ख- चौबीस दण्डक में क्रोध के	"
	ग- इसी प्रकार माना, माया और लोभ का कथन	

- ६ चौबीस दण्डक में तीन बान की अपेक्षा से अष्टकर्म प्रकृतियों का उपचय, वय, वेदना और निजरा का विभिन

पंचदसम इन्द्रिय पद

प्रथम उद्देशक

पचीस द्वारों के नाम

पाँच इन्द्रियों के नाम

पाँच इन्द्रियों के भस्मान

क- " का वाह्यत्व

ख " का विस्तार

" के प्रदेश

" के प्रदेशावशोष का परिमाण

" की सवसाहता और प्रदेशों की अपेक्षा से अल्प बहुत्व

" के कर्मका और गुरु गुण का परिमाण

" के कर्मका और गुरु गुण का अल्प बहुत्व

७ १२ चौबीस दण्डक में पाँच इन्द्रियों के आठ द्वारों का कर्मन

१३ पाँच इन्द्रियों में प्राप्यकारी और अप्राप्यकारी का कर्मन

१४ पाँच इन्द्रियों का विषय क्षेत्र

निर्जरा पुद्गल

१५ क भारणान्तिक समुद्धानि वेति धनधार के निर्जरा पुद्गल की गृह्यता और व्यापकता

ख दृष्टत्व को निर्जरा पुद्गल की भिन्नता आदि का अभाव, लपान का हेतु

१६ १८ चौबीस दण्डक के जीवा द्वारा निर्जरा पुद्गलों का जानना, देखना और बाहार करना

प्रतिविम्ब दर्शन

- १६ कांच आदि में प्रतिविम्ब का दर्शन
आकाश से स्पर्श
- २० क- संकुचित और विस्तृत वस्त्र का आकाश प्रदेशों से स्पर्श
ख- खड़े या पड़े स्तंभ का आकाश प्रदेशों से स्पर्श
- २१ क- धर्मास्तिकाय आदि से लोक का स्पर्श
ख- धर्मास्तिकाय आदि से जम्बूद्वीप-यावत्-स्वयंभूरमण समुद्र का स्पर्श
- २२ क- लोक का धर्मास्तिकाय आदि से स्पर्श
ख- लोक का स्वरूप

द्वितीय उद्देशक

बारह अधिकारों के नाम

- १-३५ चौबीस दण्डक में बारह अधिकारों का कथन

षड् दसम प्रयोग प्रद

- १ प्रयोग के पन्द्रह भेद
- २ चौबीस दण्डक में पन्द्रह प्रयोग
- ३-५ चौबीस दण्डक में पन्द्रह प्रयोगों के विभिन्न अंग गति प्रवाद
- ६ क- गति प्रवाद के पांच भेद
ख- प्रयोग गति के पन्द्रह भेद
ग- चौबीस दण्डक में प्रयोग गति के पन्द्रह भेदों का कथन
- ७ ततगति की व्याख्या
- ८ बंधन छेदन गति की व्याख्या
- ९-१३ उपपात गति के भेद प्रभेद
- १४ विहायो गति के सत्तरह भेद
- प्रत्येक भेद की व्याख्या और भेद-प्रभेद

सप्तदसम लेश्या पद

प्रथम उद्देशक

सात अधिकारा के नाम

१ ११ चौबीस दण्डक म सात अधिकारा का कथन^१

द्वितीय उद्देशक

१२ ६ लेश्याओं के नाम

१३ चौबीस दण्डका म ६ लेश्याओं का कथन ;

१४ २२ ६ लेश्याओं की अपेक्षा चौबीस दण्डक के लेश्यों का अर्थ बहुत

२३ २५ चौबीस दण्डक म ६ लेश्या की अपेक्षा में अल्प व्युत्पन्न और महोत्पन्न का अल्प-बहुत्व

तृतीय उद्देशक

२६ क चौबीस दण्डक म उत्पत्ति

ल उत्पन्न

२७ २८ ६ लेश्याओं की अपेक्षा में चौबीस दण्डक में उत्पत्ति और उत्पन्न

२९ लेश्याओं की अपेक्षा में उदाहरणपूर्वक नैरधिकों के अवधिमान का क्षेत्र

३० ६ लेश्या वाले लेश्यों में पांच ज्ञान का कथन

चतुर्थ उद्देशक

३१ उद् अधिकारा के नाम

३२ ३३ क ६ लेश्याओं के नाम

१ मान अधिकारा म म कवच एक लेश्या अधिकार का हय पद से संबंध है शेषसाहस्य नसार उच्छवाय कर्म, वर्ण बदला विषा और शायु अन्य पदों म कथन किया जाता ता संगत प्रतीत होता

स- ६ लेश्याओं के रूप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श का एक दूसरों में परिणमन

३४-४० ६ लेश्याओं के वर्ण

४१-४६ ६ लेश्याओं का आस्वाद

४७ क- „ के गंध

स- दोष ६ अधिकारों का कथन

४८ ६ लेश्याओं के परिणाम

४९ „ के प्रदेश

५० „ के स्थान

५१-५३ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से ६ लेश्या स्थानों का अल्प-वहुत्व

पंचम उद्देशक

५४ क- ६ लेश्याओं के नाम

स- ६ लेश्याओं के रूप, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श का परिणमन-दृष्टान्त

५५ ६ लेश्याओं के परिणमन के हेतु

षष्ठ उद्देशक

५६ क- ६ लेश्याओं के नाम, अट्टाई द्वीप के [कर्मभूमि, अकर्म भूमि और अन्तर्द्वीपों के] मनुष्यों में ६ लेश्या

५७ ६ लेश्या की अपेक्षा में अट्टाई द्वीप के मनुष्यों में गमन स्थिति के भागे

अष्टादसम कायस्थिति पद

बायीस अधिकारों के नाम

१ और की नीचे रूप में संस्थिति

२ क- नैरयिक की नैरयिक रूप में संस्थिति
विशेष की विशेष रूप में „

- मनुष्य का मनुष्य रूप में सन्निवृत्ति
 देव की देव रूप में
 सिद्ध की सिद्ध रूप में ,
- स अनुपति प्राप्त जीवों की अपर्याप्त एव पर्याप्त रूप में सन्निवृत्ति
 ग सर्वद्रव्य—दावन—अद्रव्य को मद्रव्य—दावन—
 अद्रव्य रूप में सन्निवृत्ति
- घ सर्व द्रव्य अपर्याप्त का अपर्याप्त रूप में और सर्व द्रव्य
 पर्याप्त की पर्याप्त रूप में सन्निवृत्ति
- ङ सहाय की सहाय रूप में और अहाय की अहाय रूप में
 सन्निवृत्ति
- च सूक्ष्म की सूक्ष्म रूप में और बाह्य की बाह्य रूप में सन्निवृत्ति
 छ- समोशी की असोशी रूप में और असोशी की असोशी
 रूप में सन्निवृत्ति
- ज सर की सरेदी रूप में और अवेरी की अवेरी रूप में सन्निवृत्ति
- झ सर्वपाय की सर्वपायी रूप में और अरुपायी की अरुपायी
 रूप में सन्निवृत्ति
- ञ मनेनी की मनेनी रूप में और अनेनी की अनेनी रूप में
 सन्निवृत्ति
- ट दृष्टि ज्ञान दान समस्त साकारानाकारोपबुद्ध आहारक
 अनाहारक मांसक अमांसक परित अपरित पर्याप्त अपर्याप्त
 सुख ३ सती ३ भवनिद्रि ३ पर्याप्तिकाप—दावन—
 अरुण समय परम अनरम अचिकारों की सन्निवृत्ति

एकोनविंशतितम सम्यक्त्व पद

- १ चोरीय दण्डक में तीन दृष्टि
 स गिटों में एक दृष्टि

विंशतितम अन्तक्रिया-पद

अधिकारों के नाम

- १ क- जीव अन्तक्रिया करता है, नहीं भी करता है
ख- चौबीस दण्डकों में अन्तक्रिया का कथन
ग- प्रत्येक दण्डक की प्रत्येक दण्डक में अन्तक्रिया
- २ चौबीस दण्डक में अनन्तरागत या परम्परागत की अन्तक्रिया
- ३ चौबीस दण्डक में अनन्तरागतों की एक समय में जघन्य उत्कृष्ट अन्तक्रिया ।

४-११ क चौबीस दण्डक में उद्वर्तन, अनन्तर, उत्पत्ति

ख- केवलि प्रज्ञप्त धर्म का श्रवण

ग- बोधि, श्रद्धा, प्रतीति, रुचि

घ- मतिज्ञानादि की प्राप्ति

ङ- शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण व्रत की आराधना

च- अवधि ज्ञान की प्राप्ति,

छ- मुण्डित होना

ज- चक्रवर्ति, बलदेव, वासुदेव, माण्डलिक, चक्ररत्नादि में उत्पत्ति

झ- तीर्थंकर पद की प्राप्ति का कथन

१२ क- असंयत भव्य द्रव्य देव

ख- अविराधित संयम वाले

ग- विराधित संयमवाले,

घ- अविराधित-देश विरतिवाले

ङ- विराधित-देश विरतिवाले

च- असंजी

छ- तापस

ज- कांदर्पिक

झ- चरकादिक परिव्राजक

य- कित्तिविध

अ- निर्देय

ट- भाजोविक

ड- आभियोपिह

इ- दान भण्ड स्वनिह्नी

इतए जषय, उत्पृष्ट तपान का कथन

१३ क धार प्रचार का अमजी आयुष्य^१

ख अमजी आयुष्य का प्रमाण

ग अमजी आयुष्यवानो का अल्प-बहुत्व

एक विंशतितम शरीर पद

१ अधिकांश क नाम

१ क पाच प्रचार के शरीर

ख औदारिक शरीर के भेद प्रभेद

२ औदारिक शरीर के सम्मान

३ औदारिक शरीर की जषय उत्पृष्ट अवगाहना

४ वैक्रिय शरीर के भेद प्रभेद

५ वैक्रिय शरीर के सम्मान

६ वैक्रिय शरीर की अवगाहना

७ क आहारक शरीर के भेद प्रभेद

ख आहारक शरीर के सम्मान

ग आहारक शरीर की अवगाहना

८ क संव्रम शरीर के भेद

ख संव्रम शरीर के सम्मान

१ अमजी आयुष्य अमज्ञा अवस्था में कथनेवाला जरक, निर्देय, मनुष्य और द्रव का आयुष्य

- ६ क- तैसज शरीर की अवगाहना
 १० पांच शरीरों के पुद्गलों के आने की दिशाओं का कथन
 ११ पांच शरीरों का परस्पर सम्बन्ध
 १२ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा पांच शरीरों का अल्प-बहुत्व
 १३ पांच शरीर की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना का अल्प-बहुत्व

द्वाविंशतितम-क्रिया-पद

आश्रय

- १ क- पांच क्रियाओं के नाम
 ख- पांच क्रियाओं की व्याख्या
 ग- पांच क्रियाओं के भेद
 १ जीव के सक्रिय या अक्रिय होने के कारण
 २ जीवीन दण्डक में प्राणातिपात-यावत्-मित्यादर्शनशून्य के विषयों का कथन
 ४ जीवीन दण्डक में [एक वचन और बहुवचन की अपेक्षा]
 प्राणातिपात-यावत्-मित्यादर्शनशून्य ने कितनी कितनी कर्म
 प्रकृतियों का बन्धन
 ५ जीवीन दण्डक में एक वचन और बहु वचन की अपेक्षा से एक
 कर्म प्रकृति के बन्धन के समय संभावित क्रियाओं की संख्या
 ६ जीवीन दण्डक में जीव से संबंधित क्रियाओं की संख्या
 ७ जीवीन दण्डक में पांच क्रियाओं का परस्पर सम्बन्ध
 ८ जीवीन दण्डक में एक क्रिया के समय अन्य क्रियाओं की
 संभावित संख्या
 ९ जीवीन दण्डक में आयोजिका क्रियाओं की संख्या
 १० जीवीन दण्डक में एक समय एक क्रिया ने दूसरी क्रिया का
 परस्पर स्पर्श
 ११ क- आरंभिका आदि पांच क्रियाओं के कर्ता

■ आरभिका आदि पाच क्रियाओं के वर्णन

- १२ क चौबीस दण्डक में आरभिकादि क्रियाएँ
- ख चौबीस दण्डक में आरभिकादि पाँच क्रियाओं का सम्पूर्ण सवय
- ग- चौबीस दण्डक में एक समय में आरभिकादि पाँच क्रियाओं की समाहित सवया
- घ चौबीस दण्डक में आरभिकादि पाँच क्रियाओं में से एक क्रिया के समय अन्य क्रियाओं की निवर्तित समावृत्ति सवय
- १३ प्राणानिवात विरति यावत् मिथ्यादर्शनशक्त्य की विरति क के विषयो का कथन
- १४ प्राणानिवात विरत यावत् मिथ्यादर्शनशक्त्य विरत हैं किन्तु कितनी कम प्रकृतियाँ का बयन
- १५ प्राणानिवातविरत-यावत् मिथ्यादर्शनशक्त्य विरत के आरभिकादि पाँच क्रियाएँ
- १६ आरभिकादि पाँच क्रियाओं का अन्त्य बहु व

तयोर्विशतितम कर्म प्रकृति पद

प्रथम उद्देशक

- १ क अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम
- ख चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियाँ
- २ क चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियों के बयन हेतुओं का क्रम
- ३ क- अष्ट कर्म बय के चार कारण
- ख- चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म बय के चार कारण
- ४ चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियों का वेदान्त
- ५ ज्ञानावरणीय के दस अनुभाव
- ६ ज्ञानावरणीय के नव अनुभाव
- ७ क ज्ञानावेदनीय के आठ अनुभाव

- ख- अशातावेदनीय के आठ अनुभाव
- ८ मोहनीय के पांच अनुभाव
- ९ आयु कर्म के चार अनुभाव
- १० क- शुभ नाम कर्म के चौदह अनुभाव
- ख- अनुभ नाम कर्म के चौदह अनुभाव
- ११ क- उच्चगोत्र के आठ अनुभाव
- ख- नीचगोत्र के आठ अनुभाव
- १२ अंतराय कर्म की प्रकृतियों के नाम

द्वितीय उद्देशक

- १३ क- अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम
- ख- ज्ञानावरणीय के पांच भेद
- १४ क- दर्शनावरणीय के दो भेद
- ख- निद्रा पंचक के पांच भेद
- ग- दर्शन चतुष्क के चार भेद
- १५ क- वेदनीय के दो भेद
- ख- शातावेदनीय के आठ भेद
- ग- अशातावेदनी के आठ भेद
- १६ क- मोहनीय के दो भेद
- ख- दर्शन मोहनीय के तीन भेद
- ग- चारित्र्य मोहनीय के दो भेद
- घ- कपाय वेदनीय के सोलह भेद
- ङ- नौ कपाय वेदनीय के नव भेद
- १७ आयुर्कर्म के चार भेद
- १८ क- नाम कर्म के विद्यालीस भेद
- ख- विद्यालीस भेदों के भेद
- १९ क- गोत्र कर्म के दो भेद

ख- उच्चगोत्र के आठ भेद

ग- नीच गोत्र के "

२० अनराग कम पाँच भेद

२१ २८ क अष्ट कर्मों की अथवा उत्कृष्ट स्थिति

ख ' का अवाधकाल'

२६ ३४ एकैन्द्रियो यावत् पञ्चेन्द्रियो के अष्ट कर्म की अथवा उत्कृष्ट द-य स्थिति

३५ उपशमादि साधो की अपेक्षा अष्ट कर्म की अथवा उत्कृष्ट स्थिति साधने वाला का कथन

३६ पात्र गणितो मे अष्टकर्म की उत्कृष्ट स्थिति साधनेवालों का कथन

चतुर्विंशतितम कर्म बंध पद

१ ३ क अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम

ख चौबीस दण्डक मे अष्टकर्म प्रकृतिमा

ग चौबीस दण्डक मे (एक जीव या अनेक जीवों द्वारा) एक कर्म प्रकृति के बंधकाल मे अथ प्रकृतियों के बंध की सम्भावित सख्या

पंचविंशतितम कर्म वेद पद

१ क अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम

ख चौबीस दण्डक मे अष्टकर्म प्रकृतिमा

ग चौबीस दण्डक में (एक जीव द्वारा या अनेक जीवों द्वारा) एक कर्म प्रकृति के बंधकाल मे अथ कर्म प्रकृतियों के वेदन की सम्भावित सख्या

षड्विंशतितम कर्म वेद बंध पद

- १ क- अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम
 ख- चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियां
 ग- चौबीस दण्डक में (जीव-द्वारा) एक कर्म प्रकृति के वेदनकाल में अन्य प्रकृतियों के वंघन की संभावित संख्या

सप्तविंशतितम कर्म वेद पद

- १ क- अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम
 ख- चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियां
 ग- चौबीस दण्डक में (एक जीव द्वारा या अनेक जीवों द्वारा) एक कर्म प्रकृति के वेदन काल में अन्य कर्म प्रकृतियों के वेदना की संभावित संख्या

अष्टाविंशतितम आहार पद

प्रथम उद्देशक

ग्यारह अधिकारों के नाम

- १ क- चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के आहार का कथन
 ख- चौबीस दण्डक के जीव आहारार्थी
 ग- चौबीस दण्डक के जीवों का आहारेच्छाकाल
 २ क- चौबीस दण्डक में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा आहार का कथन
 ख- विधान मार्गणा की अपेक्षा आहार का कथन
 ग- चौबीस दण्डक में स्पृष्ट पुद्गलों का आहार
 घ- एक दिशा-यावत्-६ दिशा से आहार का ग्रहण
 ङ- पुराने पुद्गलों को छोड़कर नये पुद्गलों का ग्रहण
 च- आत्म प्रदेशावगाढ़—समीपवर्ती आहार का ग्रहण
 छ- चौबीस दण्डक में आहार का परिणमन और श्वासोच्छ्वास

- ३ ७ चौबीस दण्डक में आहार में मृत्ति पुष्पको का आम्बान और परिचयन
- ८ क चौबीस दण्डक में एकै द्वय शरीर का-यावन पत द्वय गरीरों का आहार
- ख चौबीस दण्डक में रोम आहार और शरीर आहार
- ९ चौबीस दण्डक में मात्र आहार और मन के अनुकूल आहार

द्वितीय उद्देश्य

सैरङ्ग अधिकारी के नाम

- १० क चौबीस दण्डक में आहारक अनाहारक
- ख सिद्ध अनाहारक
- क चौबीस दण्डक में अवमिदिक आहारक-अनाहारक
- ख अवमिदिक
- ग नो-अवमिदिक नो अवमिदिक
- क चौबीस दण्डक में मनी जीव [एक जीव या अनेक जीव] आहारक या अनाहारक
- ख चौबीस दण्डको असनी जीव
- ग नो मनी नो असनी जीव आहारक अनाहारक
- ख सिद्ध अनाहारक
- ११ क चौबीस दण्डक में सनेह-यावन अन्तर्य जीव आहारक अनाहारक
- ख सिद्ध अनाहारक
- १२ चौबीस दण्डक में सम्यक् दृष्टि मिथ्या दृष्टि और मिथ्य दृष्टि आहारक अनाहारक
- १३ क चौबीस दण्डक में सम्यक् असम्यक् सम्यक् असम्यक् जीव आहारक
- ख सिद्ध अनाहारक
- १४ चौबीस दण्डक में सत्पापी यावत् अन्तर्पापी जीव आहारक अनाहारक

- १५ चौबीस दण्डक में ज्ञानी और अज्ञानी जीव आहारक-
अनाहारक
- १६ क- चौबीस दण्डक में सयोगी-यावत्-अयोगी जीव आहारक-
अनाहारक
- ख- चौबीस दण्डक में साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त जीव
आहारक-अनाहारक
- ग- चौबीस दण्डक में सवेदी-यावत्-नपुंसकवेदी जीव आहारक-
अनाहारक
- घ- अवेदी सिद्ध अनाहारक
- १७ क- चौबीस दण्डक में सशरीरी जीव-यावत्-कर्मण शरीरी आहारक
- ख- अशरीरी जीव सिद्ध अनाहारक

एकोनत्रिंशत्तम उपयोग पद^१

- १ क- उपयोग के दो भेद
- ख- साकारोपयोग के आठ भेद
- ग- अनाकारोपयोग के चार भेद
- २ चौबीस दण्डक में साकारोपयोग और अनाकारोपयोग का
कथन

त्रिंशत्तम पश्यता ^२पद

- १ क- पश्यता के दो भेद
- ख- साकार पश्यता के ६ भेद
- ग- अनाकार पश्यता के तीन भेद

१. वर्तमान काल विषयक और त्रिकाल विषयक स्पष्ट-अस्पष्ट-
ज्ञान दर्शन

२. त्रिकाल विषयक स्पष्ट ज्ञान-दर्शन

- घ जीवीस दण्डक मे साकार अनाकार पश्यता
 २ जीवीस दण्डक मे साकार अनाकार दर्शो
 ३ क केवली का एक समय मे एक उपयोग
 ग ईषतप्राग्भारा यावन रत्नप्रभा के जानने और देखने का
 भि न भि न समय
 ग परमाणु पुन्यन यावन अनन प्रदेही स्कध के जानने और
 देखने का भि न भि न समय

एकत्रिंशत्तम सङ्गी पद

- १ क जीवीस दण्डक मे ननी ममङ्गी
 ल मिद्ध नो सङ्गी नो ममङ्गी

द्वात्रिंशत्तम सयत्त पद

- १ क सामान्य जीव सयत्त यावत्त नो सयत्त नो असयत्त नो सयत्ता
 सयत्त
 ल जीवीस दण्डक मे सयत्त असयत्त सयत्तामयत्त

तयस्त्रिंशत्तम-अवधिपद

दण्ड अधिरात्री के नाम

- १ क अवधिज्ञान
 ल दो को भवप्र यविक
 ग दो को दायोपशमित
 २ ४ नारको यावन ज्यो क अवधिज्ञान का क्षेत्र
 ५ नारको यावन देवो क अवधिज्ञान का अरक्षण
 ६ नारक-यावन देव अवधि मध्यवर्ती स्पष्टतावधि और विधि
 नावधि की विचारणा
 ७ नारक यावत्त देवो का नावधि और सवविधि

- ८ नारक-यावत् देवों का आनुगामिक-यावत्-नो अनवस्थित
अवधिज्ञान

चतुस्त्रिंशत्तम परिचारणा पद

सात अधिकारों के नाम

- १ चौबीस दण्डक में अनन्तराहार-यावत्-विकुर्वणा
- २ क- चौबीस दण्डक में—इच्छापूर्वक और अनिच्छापूर्वक आहार
ख- चौबीस दण्डक में आहार रूप में गृहीत पुद्गलों का जानना
एवं देयना
- ग- जानने देयने और न जानने न देयने का हेतु
- ३ क- चौबीस दण्डक में जीवों के अध्यवसाय
- ख- चौबीस दण्डक के जीव सम्यक्त्वो-यावत्-सम्यग्मिथ्यात्वो
- ४ देवों की परिचारणा के भाग^१
- ५ परिचारणा के पांच भेद
पांच प्रकार की परिचारणा के हेतु
- ६ देवताओं के शुक्र का परिणमन
- ७ स्पर्श परिचारक देवों के मनका विकल्प
- ८ देवों में पांच प्रकार की परिचारणा का अल्प-बहुत्व

पंचत्रिंशत्तम वेदना पद

- १ क- तीन प्रकार की वेदना
चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की वेदना
- २ ख- चार प्रकार की वेदना
चौबीस दण्डक में चार प्रकार की वेदना
- ग- तीन प्रकार की वेदना

- चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की वेदना
 ए तीन प्रकार की वेदना
 चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की वेदना
 छ तीन प्रकार की वेदना
 चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की वेदना
 ३ दो प्रकार की वेदना
 चौबीस दण्डक में दो प्रकार की वेदना
 ४ दो प्रकार की वेदना
 चौबीस दण्डक में दो प्रकार की वेदना

षट्त्रिंशत्तम समुद्घात पद

सात अधिकार

- १ क सात प्रकार का समुद्घात
 ल- सात समुद्घातों का काल
 ग चौबीस दण्डक में समुद्घातों का कथन
 २ चौबीस दण्डक में एक जीव के अतीत और भविष्यत के समुद्घात
 ३ चौबीस दण्डक में अनेक जीवों के अतीत और भविष्यत के समुद्घात
 ४ चौबीस दण्डक में एक जीव के एक भाव में समुद्घातों की संख्या
 ५ ८ चौबीस दण्डक में एक जीव के एक भाव में अतीत और भविष्यत के समुद्घात
 ६ ११ चौबीस दण्डक में अनेक जीवों के एक भव में अतीत और भविष्यत के समुद्घात
 १२ १५ जीवों के सात समुद्घातों का अल्प बहुत्व
 १६ क ६ प्रकार का व्यापक्षिक समुद्घात

- ख- चौबीस दण्डको में ६ द्वाचष्टिक समुद्घात
- १७-२२ क- समुद्घात के समय पुद्गलों में व्याप्त और स्पृष्ट क्षेत्र
- ग- पुद्गलों में व्याप्त और स्पृष्ट होने का काल
- ग- पुद्गलों के निकलते समय होनेवाली क्रियायें
- २३ केवली समुद्घात से निर्जरित पुद्गलों की सूक्ष्मता और लोक व्यापकता
- २४ क- छद्मस्य द्वारा निर्जरित पुद्गलों का न देय सकना
- ग- न देय सकने का कारण
- २५ क- गद्य पुद्गलों का उदाहरण
- ख- केवली समुद्घात के बिना भी निर्वाण
- २६ क- आयोजीकरण के समय^१
- ख- केवली समुद्घात के समय
- ग- प्रत्येक समय में की जानेवाली क्रिया का वर्णन
- २७ केवली समुद्घात के समय योगों का व्यापार
- २८ केवली समुद्घात के पश्चात् योग व्यापार का निषेध
- केवली समुद्घात के पश्चात् सिद्ध पद
- २९ क- अयोगी को सिद्ध पद की प्राप्ति नहीं
- ख- योग निरोध का क्रम, सेलेशी अवस्था का काल परिमाण
- ग- अयोगी को सिद्धपद की प्राप्ति
- घ- सिद्धों के शरीरादि न होने का कारण
- ङ- अग्नि दग्ध बीज का उदाहरण

१. आत्मा को मोक्षमिमुख करने के लिये शुभ योग-व्यापार

णमो संजयाणं

गणितानुयोग प्रधान जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति उपाङ्ग

अध्ययन १

वज्रस्कार ७

उपलब्ध मूलपाठ ४१४६ अनुष्टुप श्लोक प्रमाण

गद्यसूत्र १७८

पद्यसूत्र ५२

णमो सिद्धाणं

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति विषय-सूची

प्रथम भरतक्षेत्र वक्षस्कार

- २ क- परमेष्ठी वंदना
ख- मिथिला नगरी, मणिमद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारणी देवी
ग- भ० महावीर का पदार्पण, परिपद्, धर्मकथा
- ३ गीतम गणधर की जिज्ञासा
- ३ क- जंबूद्वीप का प्रमाण, आयाम-विष्कम्भ, परिधि
ख- " का संस्थान
ग- " का स्वरूप वर्णन
- ४ क- जम्बूद्वीप की जगति के मूल का विष्कम्भ
ख- " के मध्य का "
ग- " के ऊपर का "
घ- गवाक्ष कटक-गोखडों की ऊँचाई
" " का विष्कम्भ
ङ- पद्मवर वेदिका की ऊँचाई
" का विष्कम्भ
- ५ वनखण्ड का विष्कम्भ और परिधि वर्णन
- ६ वनखण्ड में देवताओं की क्रीड़ा
- ७ जम्बूद्वीप के चार द्वार और राजधानियों का वर्णन
- ८ क- जम्बूद्वीप के विजय द्वार का स्थान
ख- " की ऊँचाई, विष्कम्भ
ग- विजया राजधानी का वर्णन
- ९ एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर

- १० क भरन धर का स्थान विगा निषय अपन विष्णु
 ग भरन क्षेत्र का आयताकार और विस्तार
 ग भरन के उत्तर-दक्षिण का सम्बन्ध
 घ भरन के १ विभाग
 ङ भरन के प्रधान दो विभाग
- ११ क अक्षिण भरन का स्थान विगा निषय आयताकार और
 विस्तार सम्बन्ध
 ग दक्षिण भरन के तीन विभाग और विस्तार
 ग दक्षिण भरन की ओर का आयाम
 घ के अनुप्रस्थ की परिधि
 ङ का स्वरूप
 च के अनुप्रस्थ का लम्बवत् सम्बन्ध गहर की
 ऊँचाई आयु और गति
- १२ क बैलाङ्ग पर्वत का स्थान विगा निषय आयत विस्तार
 ल बैलाङ्ग पर्वत की ऊँचाई अनुप्रस्थ और विस्तार
 ग की ओर का आयाम
 घ की ओर का आयाम
 ङ के अनुप्रस्थ की परिधि
 च की पश्चिम वैष्णव का विस्तार
 छ के लम्बवत् का विस्तार
 ज के पुन पश्चिम ॥ दो गुना
 झ गुफाओं का आयत विस्तार आयाम विष्णु
 ल के वपाट की ऊँचाई
 ट के नाम दो देव देवा की स्थिति
 ॥ बैलाङ्ग पर्वत के दोनों पार्श्व में दो विष्णुपर अक्षिण
 ट विष्णुपर अक्षिणों का स्थान आयत विस्तार विष्णु

द- विद्याघर श्रेणियों के दोनों पार्श्व में दो पद्मवर वेदिका, दो वनखण्ड

ण- पद्मवर वेदिकाओं की ऊँचाई, विष्कम्भ.

त- वनखण्डों का आयाम-विष्कम्भ

थ- दक्षिण में विद्याघरों के नगर

द- उत्तर में "

ध- विद्याघर राजाओं का वर्णन

न- विद्याघर श्रेणियों का वर्णन

प- आभियोगिक श्रेणियों का वर्णन

फ- व्यन्तर देवों का क्रीडास्थल

व- शक्रेन्द्र के आभियोगिक देवों के भवन

भ- भवनों का वर्णन

म- आभियोगिक देवों का वर्णन

य- " की स्थिति

र- आभियोगिक श्रेणियों से शिखर की दूरी.

ल- शिखर का आयतन-विस्तार. विष्कम्भ आयाम.

व- " की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड

श- शिखर तल का वर्णन. व्यन्तर देवों का क्रीडास्थल

प- वैताड्य पर्वत पर नौ कूट.

१३ क- सिद्धायतन कूट का स्थान

ख- " की ऊँचाई

ग- " के मूल, मध्य और ऊपर की परिधि

घ- " के मूल, मध्य और ऊपर की परिधि

ङ- पद्मवर वेदिका-वनखण्ड वर्णन

च- सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

छ- " के तीन द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ

ज- देवछदक का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

- म एक मो आठ जिन प्रतिमाओं की ऊँचाई
 ११ क दक्षिणार्ध भरतकूट का स्थान प्रमाण
 ल प्रासाद की ऊँचाई और विष्णुमय
 ग माणपीठिका का आयाम विष्णुमय और ऊँचाई
 घ सिंहासन बणन
 ङ दक्षिणार्ध भरत देव और उसकी स्थिति
 च सामानिक देव मध्यद्वीपी परिषद् सेना सेनापति धार्य
 रक्षक देव
 छ दक्षिणार्ध राजधानी का स्थान
 ज शेषकूटो का समान बणन
 भ तीन कूट स्वयमय १ कूट रत्नमय
 म दो कूट के देवों के नाम दोष १ कूर्मों के नामों के अनुसार
 देवों के नाम देवों की स्थिति
 ट देवों की राजधानियों का स्थान
 १५ क वैताडय पर्वत नाम होने का हेतु
 ल वैताडय गिरि कुमार देव और उसकी स्थिति
 ग वैताडय नाम गस्वत
 १६ क उत्तरार्ध भरत का स्थान
 ल के तीन विभाग
 ग का आयाम
 घ की बाह्य का आयाम
 ङ की जीवा का आयाम
 च के धनुष्यकी परिधि
 छ का बणन यावत् धनुष्यों की बनि
 १७ क अक्षमकूट पर्वत का स्थान
 ल की ऊँचाई और उद्वेग
 ग के धृत मध्य और ऊपर का विष्णुमय

- प- मूल मध्य और ऊपर की परिधि^१
- ट- पक्षवर वेदिका का-वनस्पष्ट वर्णन-यावत्
- च- प्रसाद की ऊँचाई विष्कम्भ आदि
- छ- देव वर्णन. राजधानी वर्णन

द्वितीय काल वक्षस्कार

१८ क- काल के दो भेद

ख- अवसपिणी काल के ६ भेद

ग- उत्सपिणी काल के ६ भेद

घ- एक मुहूर्त के द्वासीच्छ्वास

ङ- स्तोक, लव, मुहूर्त अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, शतवर्ष, सहस्रवर्ष, लक्षवर्ष, पूर्वांग, पूर्व, यावत् शीर्षं प्रहेलिका प्रमाण

च- औपमिक काल

१९ क- औपमिक काल के दो भेद

ख- पत्योपम प्रमाण

ग- परमाणु-यावत्-पत्यप्रमाण

घ- सागरोपम प्रमाण

(१) सुपम-सुपमा काल का प्रमाण

(२) सुपमा "

(३) सुपम-दुपमा "

(४) दूपम-मुपमा "

(५) दुपमा "

(६) दुपम-दुपमा "

च- उत्सपिणी काल प्रमाण

- ६ सुग्गसिन्धी-अवससिन्धी नाम प्रमाण
 ७ अवससिन्धी के सुग्गसुग्गमा काव का विस्तृत वर्णन
 २० दस सम्पत्तु वर्णन
 २१ सुग्ग सुग्गमा के मनुष्या और स्त्रियों का वर्णन बत्तीए सग्यों के नाम
 २२ ६ सुग्ग-सुग्गमा के मनुष्या की आहारेन्द्रा का वर्णन
 ल से मनुष्यों का आहार
 ग म पृष्ठी का आहार
 घ से पृष्ठी पृष्ठी का आहार
 २३ ६ म मनुष्या का निवास स्थान
 ल से वृष्ठी का आहार
 २४ ६ सुग्ग सुग्गमा के गृह प्राप्तादि अभाव
 ल से वषेन्द्रादिवा करने वाले मनुष्य
 ग म ममि ममि कुरिक्कों का अभाव
 घ से सामाजिक व्यवस्था का अभाव
 ६ से म ता आदि से राग का अभाव
 ७ से वर का अभाव
 ८ से मित्रादि का अभाव
 ९ से तीव्र राग का अभाव
 १० से विवाहादि का अभाव
 ११ में ६-महो सय ल नि का अभाव
 १२ से नटादि का अभाव
 १३ से मानों का अभाव
 १४ ॥ गाय आदि की उपयोगिता का अभाव
 १५ म अश्व आदि की उपयोगिता का अभाव
 १६ में सिंहादि स्वापदों की चूरता का अभाव
 १७ से पावों का अनुपयोग

- य- सुपम-सुपमा में विषम भूमि का अभाव
 द- " में स्थाणु कंटकादि का अभाव
 घ- " में दंसमशकादि का अभाव
 न- " में व्याधिकों का अभाव
 प- " में युद्धादि का अभाव
 फ- " में पैतृकरोंगों का अभाव
 व- " में महारोगों का अभाव
 भ- " में भूतवाघा का अभाव
 २५ क- सुपम-सुपमा में मनुष्यों की स्थिति
 ख- " " की अवगाहना
 ग- " " का संहनन
 घ- " " का सस्थान
 ङ- " " के पसलियां
 च- " में प्रसवकाल
 छ- " में शिशु पालन काल
 ज- " में मनुष्यों की मरणोत्तर गति
 झ- " में मनुष्यों की छःजातियां
 २६ सुपमा काल का वर्णन
 २७ क- सुपम-दुपमा काल का वर्णन
 ख- " के तीन विभाग
 ग- " के प्रथम-मध्यम भाग का वर्णन
 घ- " के अन्तिम भाग का वर्णन
 २८ सुपम-दुपमा काल के अन्तिम भाग में पन्द्रह कुलकर
 २९ क- (१) पांच कुलकरों की दण्डनीति
 ख- (२) " "
 ग- (३) " "
 ३० क- भ० ऋषभ देव की उत्पत्ति

- ॥ म० अष्टमभ्येस का कुमार काण
ग रामचन्द्र काण
घ बह्मर वनाभा का उद्देश
ङ चीनठ कसाभों का उद्देश
च म० अष्टमभ्येस द्वारा पुत्र का रात्र्याभिषेक
छ म० अष्टमभ्येस का मननार प्रवृत्त्या ग्रहण
ज का वैमलाच
झ का दीना-नाम का तप
ञ के नाच दीनित होनेवाले की सख्या
ट का एक वैवद्व्य
११ व म० अष्टमभ्येस का वय वय त देव दूष्य वारण
ग के उग्रमग
ग के सवमी जीवन का वनन
घ के सवमी जीवन की उपमाय
ङ के बार प्रतिबन्धों का अभाव
च के वैवत ज्ञान का वान
छ के वैवत ज्ञान का स्थान

पुतिमगात्र मगर शकट मुख उद्यान स्वप्नाच वान्य के नीचे
वावगुन पुत्रका पुत्राकी-पुत्रीवह काछ

- ज म० अष्टमभ्येस द्वारा पांच मह वन और वन जीवनिकाय का
उपदेश
झ म० अष्टम देव के मन्त्र मन्त्रपर
भ के उत्कृष्ट अमल प्रमुख अष्टमसेन
ठ के उत्कृष्ट अमलिका प्रमुख माझी सुन्नी
ड के उत्कृष्ट अमलोपासक प्रमुख अश्विन
ड के उत्कृष्ट अमलोपासिका प्रमुख सुमदा
ण के उत्कृष्ट भौवह पूर्वी मुनि

- त- भ० के ऋषभ देव उत्कृष्ट अवधिज्ञानी मुनि
 थ- „ के उत्कृष्ट केवलज्ञानी मुनि
 द- „ के उत्कृष्ट वैक्रियलब्धिवाले मुनि.
 ध- „ के उत्कृष्ट मनः पर्यवज्ञानी मुनि
 न- „ के उत्कृष्ट वादलब्धिवाले मुनि
 प- „ के उत्कृष्ट अनुत्तरीपपातिक मुनि
 फ- „ के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त करने वाले मुनि
 ब- „ के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त आर्याएं
 भ- „ के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त शिष्य-शिष्याओं की संयुक्त
 सख्या

म- „ की दो प्रकार की अन्तकृत भूमि^१

- ३२ क- भ० ऋषभ देव के पांच प्रधान जीवनप्रसंग उत्तरापाढ़ा में
 ख- „ का निर्वाण अभिजित् में
 ३३ क भ० ऋषभदेव का संहनन
 ख- „ का संस्थान
 ग- „ की ऊँचाई
 घ- „ का कुमार काल
 ङ- „ का राज्य काल
 च- „ का अनगर प्रव्रज्या काल
 छ- „ का छद्मस्थ जीवन
 ज- „ का केवली जीवन
 झ- „ का निर्वाण का
 ञ- „ का निर्वाण दिन माघकृष्ण त्रयोदशी
 ट- „ का पूर्णयुि
 ठ- „ का निर्वाण स्थान अष्टा पद पर्वत

३६ दुपमा-दुपमा काल का विस्तृत वर्णन

३७ क- उत्सर्पिणी काल

ख- दुपम-दुपमा काल का वर्णन

ग- दुपमा का काल वर्णन

३८ क- उत्सर्पिणी के दुपम काल में—पंच मेघ वर्षा

१. पुष्कर संवर्तक मेघ वर्षा वर्णन

२. क्षीर मेघ ”

३. घृत मेघ ”

४. अमृत मेघ ”

५. रस मेघ ”

३९ क- मांसाहार का सर्वथा निषेध

ख- मांसाहारियों की छाया के स्पर्श का निषेध

४० क- उत्सर्पिणी के दुपम-दुपमा काल का वर्णन

ख- उत्सर्पिणी के सुपमा काल का वर्णन

ग- ” सुपम-सुपमा काल का वर्णन

तृतीय भरत चक्रवर्ती वक्षस्कार

४१ क- भरत नाम होने का हेतु

विनीता नगरी वर्णन

ख- विनीता राजधानी के स्थान का निर्णय

ग- ” का आयात विस्तार दिशा

घ- ” का आयाम-विष्कम्भ

४२ क- भरत चक्रवर्ती वर्णन

ख- ” देह वर्णन

ग- वत्तीस प्रशस्त लक्षण

घ- भरत चक्रवर्ती की कुछ उपमाएं

- ४६ क आयुर्वेदाचार्य से चक्रवर्त्य को उन्मत्ति
 ल आयुर्वेदाचार्य के अध्ययन द्वारा चक्रवर्त्य को चंगा
 ग " का भरन से निवेदन
 घ भानु का चक्रवर्त्य को बदल
 ङ आयुर्वेद शास्त्रादि ग्रन्थों का प्रीतिमान
 च विनोदना मंगली को बचाने का आदेश
 छ भरन चक्रवर्ती का समाज गुणार
 ज भरन का चक्रवर्त्य के समीप जाना
 झ भरन के साथ राजा महाराजा आदि का तथा पीछे पुत्रों
 म सामग्री लेकर शिवियों का जाना
 न भरन द्वारा चक्रवर्त्य को पुत्रों
 ट अष्ट भागिनिक की रचना
 ड अंगरहू धर्मो प्रधानियों का करमुक्ति आदि का आदेश
- ४७ क चक्रवर्त्य का भागवतीर्ष का और प्रदान
 ल अभिषेक हरिण और सेना का सनद होने का आदेश
 ग भरन का भागवतीर्ष के समीप पहुँचना
 घ बड़ी रत्न मण्ड को स्वर्णधार (शासनी) निर्माण का आदेश
 ङ भरन का वीरध शासना में अष्टम भवन तथा
 च चौधे दिन प्राप्त भरन का अक्षरधर पर आनन्द होकर आगे
 बड़ना
- ४८ क सवण समुद्र के किनारे से भागवतीर्षाधिपति देव ■ भवन ■
 बाण का प्रयोग
 ल भागवतीर्षाधिपति देव द्वारा भरन का उत्सहार बहुमूल्य वस्त्रों
 भरन और भागवतीर्षों का सम्बन्ध
 ग भरन द्वारा भागवतीर्षाधिपति देव का उत्सहार
 घ भरन का स्वर्णधार म लौटकर आना
 ङ अष्टम भवन तथा का शारदा

च- मागधतीर्थ देव का अष्टान्हिका महोत्सव

छ- सुदर्शन चक्र का चरदामतीर्थ की और बढ़ाना

४६-४६ चरदाम और प्रभासतीर्थ का वर्णन मागधतीर्थ के समान

५० क- चक्ररत्न का सिन्धुदेवी भवन की और बढ़ना

ख- स्कन्धावार और पीपधशाला का निर्माण, अष्टम भवततप

ग- सिन्धुदेवी द्वारा भरत का सत्कारसन्मान

घ- पारणा, सिन्धुदेवी का अष्टान्हिका महोत्सव

५१ क- चक्ररत्न का वैताढ्य पर्वत की ओर बढ़ना, स्कन्धावार पीपध शाला, अष्टम भवत, वैताढ्य गिरिकुमार देवद्वारा भरत का सत्कार

ख- भरत द्वारा वैताढ्य देव का अष्टान्हिका महोत्सव

ग- चक्ररत्न का तमिस्रा गुफा की ओर बढ़ना भरत का अष्टम भवत तप

कृतमाल देव का आराधन

घ- कृतमाल देव द्वारा भरत का सत्कार, सन्मान स्त्रीरत्न के लिये चौदह प्रकार के आभूषणों का समर्पण

ङ- भरत द्वारा कृतमाल देव का अष्टान्हिका महोत्सव

५२ क- सुसेण सेनापति को सिन्धु नदी, समुद्र और वैताढ्य पर्यन्त के सभी राज्यों को आधीन करने का भरत का आदेश

ख- सुसेण का विजय प्रयाण, चर्मरत्न द्वारा सिन्धुनदी को पार करना

ग- सिंहल, बर्बर, अङ्गलोक, वलावलोक, यवनद्वीप, अरब, रोम अलसण्ड, पिकसुर, कालसुख, जोनक आदि म्लेच्छदेश और कच्छ देश आदि जनपदों को जीत कर सुसेण का ससैन्य वापिस लौटना. भरत को सब उपहार भेंट करना पश्चात् स्वयं के पटमण्डप में जाकर विश्राम करना

- ५३ क भरत का सुमन को तमिस्र गुफा के द्वार खोलने का आदेश
 ख सुमेध द्वारा कृतमाल देव की आराधनाय अष्टम भक्त तब
 ग चौथ दिन सुमेध द्वारा तमिस्र गुफा के द्वार की पूजा
 घ गुफा के द्वार पर दण्डरत्न का प्रहार
 ङ भरत को द्वार खुलने की सूचना देना
- ५४ क काकयी रत्न के आनोद से गजरत्नाकट होकर मणिरत्न और
 ख भरत का तमिस्र गुफा में प्रवेश
 ग मणि रत्न और काकयी रत्न का प्रमाण मणिरत्न और काकयी
 रत्न के अतिरत्न प्रभाव
- ५५
 ग उममन्त्रना निममन्त्रना नाम देने का हेतु
 घ भरत द्वारा उममन्त्रना और निममन्त्रना के मुख सन्मनाप
 पुन बाँधने का आदेश
 ङ तमिस्र गुफा के उत्तर द्वार का स्वयं खुलना
- ५६ क उत्तराय भरत में आपालचिन्ताओं के प्रश्नों में उत्पत्ता के
 होना
 ख चिन्तन सेना का भरत सेना से युद्ध भरत सेना की पराजय
- ५७ क मणिरत्न और दण्डरत्न लेकर सुमन सेनापती का चिन्तन
 सेना की परास्त करना
 ख अतिरत्न और दण्डरत्न का प्रमाण
- ५८ क वस्तु चिन्तना द्वारा स्व कुम्भेश्वर मेघमुख नाग कुमार की आरा
 धना
 ख नाग कुमार द्वारा भरत सेना पर भूमनात्तर वर्षा
- ५९ क मनन वर्षा में वस्तु भरत सेना की नौरक्षण चमरत्न और
 द्धवरत्न न रक्षा
 ख चम रत्न और द्धवरत्न का प्रमाण
- ६० क मणिरत्न से प्रमाण गाथापति रत्न सेना की भोजन व्यवस्था

ख- सात रात्रि की सतत वर्षा से भरत सेना की सुरक्षा

ग- विविध धान्यों के नाम

६१ क- चिन्तित भरत के सहयोग के लिये सोलह हजार देवों का आना
और मेघमुख नाग कुमार को वर्षा करने से रोकना

ख- चिलातों द्वारा आत्म समर्पण और भरत से क्षमा याचना

ग- भरत की आज्ञा से सुसेण सेनापति का सिन्धु नदी के पश्चिम
तटवर्ती प्रदेशों को आज्ञाधीन करना

६२ क- चुल्ल हिमवत गिरि की और चक्ररत्न का बढ़ना

ख- चुल्ल हिमवत देव की आराधना के लिये भरत का अप्रम तप
करना

ग- चौथे दिन प्रातः चुल्ल हिमवत देव की सीमा में शर फेंकना

घ- बहत्तर योजन पर्यन्त शर का जाना

ङ- चुल्ल हिमवत देव द्वारा भरत का सत्कार सम्मान और उत्तरी
सीमा की सुरक्षा का आश्वासन

६३ क- भरत का ऋषभकूट पर्वत के समीप पहुँचना और अग्रशिला
पर काकणी रत्न से नामांकन करना

ख- चुल्ल हिमवत देव का अप्रान्हिका महोत्सव

ग- दक्षिण में वैताढ्य पर्वत की ओर चक्ररत्न का बढ़ना

६४ क- वैताढ्य पर्वत के समीप भरत का अप्रम तप

ख- विद्याधर राज नमि-विनमि द्वारा भरत का उचित आतिथ्य,
स्त्री रत्न का समर्पण

ग- भरत द्वारा विद्याधर राज नमि-विनमि का मान संवर्धन

६५ क- खण्ड प्रपात गुफा के दक्षिण द्वार का उद्घाटन

ख- नृत्तमाल देव की आराधना

ग- भरत की आज्ञा से गंगातट वर्ती प्रदेशों को आज्ञाधीन करने के
लिये सुसेण का सफल प्रयाण

घ- उमग्न-निमग्नजला नदियों को पार करना

- ६६ द मण्ड प्रपात गुफा के उत्तर द्वार का उन्मार्जन
गुफा के पश्चिमी विनारे पर भारत के आग्नेय में स्थापार का निर्माण
- ख भरत का नवनिधि आराधनाय अष्टम तप
ग नवनिधिया की प्राप्ति अष्टाहिका महीभव
घ भरत का विनीता के लिए प्रस्थान
- ६७ क भरत के समय का वन
ख विनीता के समीप भरत का अष्टम तप
ग भरत का विनीता प्रवेश
घ सनापति आग्नेय राज्याधिकारियों तथा धनी प्रधानों का योग्य सरकार से मान
ङ भरत चक्रवर्ती की विजय-यात्रा समाप्त
- ६८ १ क भरत का राज्याभिषेक
ख अभिषेक मण्डप और अभिषेक पीठ का निर्माण
ग अष्टम तप
घ सेनापति मावन-सुरोहित आग्नेय सभी नगर प्रमुखों द्वारा भरत का अभिषिचन
ङ सोलह हजार देवियों द्वारा मुकुट और माना पहनाना
च बारह वर्ष पयस विजय महात्मन मनान रहने की घोषणा
छ अभिषेक के वक्षान तप का पारणा
ज भरत चक्रवर्ती द्वारा सबका यथाचित आदर-सत्कार
- ६८ २ क चार रत्नों का उत्पत्ति स्थान आनुपमाला
ख छत्राग्नेय तीन रत्नों का स्थान
ग सनापति आग्नेय चार रत्नों का विनीता
घ अथर्व गज आग्नेय का वताहव पवन
ङ सुमन्त रत्न का उत्पत्ति स्थान उत्तर विद्याधर अग्नी भरत चक्रवर्ती का द्वैत

६६ क-	रत्न	संख्या
ख-	निधि	"
ग-	देव	"
घ-	आज्ञाधीन राजा	"
ङ-	ऋतु कल्याणक	"
च-	जनपद कल्याणक	"
छ-	नाटक के स्थान	"
ज-	सूपकार-रसोईया	"
झ-	श्रेणी-प्रश्रेणी	"
झ-	अश्व सेना	"
ट-	गज सेना	"
ठ-	रथ सेना	"
ड-	पैदल सेना	"
ढ-	पुरवर-श्रेष्ठ नगर	"
ण-	जनपद देश	"
त-	ग्राम	"
थ-	द्रोणमुख	"
द-	पट्टण	"
ध-	कर्वट	"
न-	मंडप	"
प-	आकर	"
फ-	खेड़ा	"
ब-	संवाह	"
भ-	अन्तरोदक-द्वीप	"
म-	कुराज्य भिल्लादि का राज्य	"
य-	विनीता राजधानी के अधीन राज्य सीमा	
७० क-	भरत का आदर्श घर में आत्म दर्शन	

रा जीवन ज्ञान दान की उत्पत्ति
 ग आभरचान्द्रिहा स्याम
 घ पय मुष्टिभ मुचन
 ङ साय दीर्घ हाने वात
 च अष्टादश वचन पर अन्तिम साधना
 छ भग्न का कुमार जीवन
 महमीर राज जीवन
 कचवर्षी
 गृन्धाम जीवन
 वेदनी
 धमप
 मर्षापु
 सनेश्वना कान
 मन्त्र

भरत का निर्वाण भरत समय

७१

भरत का दासवत नाम

चतुर्थ च्युल्ल हिमवत वत्तस्कार

७२ क पुरक हिमवत वपधर पवन के स्थान का निशय
 ख की ऊचाई उद्देश और विजम्भ
 ग की बड़ा का आशाम
 घ की बीबा का आशाम
 ङ के अनुपृष्ठ की परिधि
 च का भरघान
 छ की पचवर वेनिका और वत्सल
 ज का वचन
 झ
 ञ व्यक्ती का बीडा स्थल

पद्मद्रह वर्णन

क- पद्मद्रह का आयत-विस्तार

ख- „ आयाम-विष्कम्भ

ग- „ उद्बेध

घ- „ की पद्मवर वेदिका-वनखण्ड

पद्मवर्णन

ङ- पद्म का आयाम-विष्कम्भ

च- „ का उद्बेध-ऊँचाई और अग्रभाग का परिमाण

छ- पद्म की कर्णिका का आयाम विष्कम्भ

ज- भवन का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई

भवन के तीन द्वार

द्वारों की ऊँचाई विष्कम्भ

झ- मणि पीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहुल्य

ञ- गयनीय वर्णन

ट- पद्म की घेरनेवाले पद्म

पद्मों का आयाम-विष्कम्भ, बाहुल्य, उद्बेध और ऊँचाई

ठ- पद्मों की कर्णिका का आयाम-बाहुल्य

ड- श्रीदेवी के सामानिक देवियों के पद्म

ढ- श्रीदेवी की महत्तरिकाओं के पद्म

ण- श्रीदेवी की तीन परिपद् के पद्म

त- सर्व पद्मों की संख्या

थ- पद्मद्रह नाम होने का हेतु

द- श्रीदेवी-श्रीदेवी की स्थिति

घ- पद्मद्रह शाश्वत नाम

गंगा नदी वर्णन

७४ क- गंगा नदी का उद्गम स्थान

ख- पद्मद्रह गंगावर्त कुण्ड पर्यन्त गंगा प्रवाह का परिमाण

॥ त्रिदिक्का का परिमाण

प गगावन कुण्ड ॥ गगा प्रवाह कुण्ड वर्णन गगा प्रवाह का परिमाण

क- गगा प्रवाह कुण्ड का आयाम त्रिदिक्का परिधि उद्देश

ख पचवेदिका और वनमण्ड का वनन

ग तीन ओरानों का वर्णन

ज नारणों का वर्णन

झ अष्ट भगवता का वर्णन

गगाद्वीप का वर्णन

घ गगाद्वीप का आयाम विष्णुश्च और परिधि

ट गगादेवी के भवन का आयाम विष्णुश्च और ऊँचाई

ठ मणिपीठिका का वनन

ड गगाद्वीप का गायन नाम

ढ उलगध भरत में सप्त हजार नदियों का गगा में मिलना

ण दक्षिणाध भरत में सप्त हजार नदियाँ क और मिनन में चौदह हजार नदियों का गगा में सम

त गगा का सवण समुद्र में मिलना

थ गगा नदी के उत्पन्न स्थान में प्रवाह का विष्णुश्च और उद्देश

द समुद्र मगम में गगानदी के प्रवाह का विष्णुश्च और उद्देश

ध सिंधु नदी वर्णन

सिंधु नदी में चौदह हजार नदियों का सम

न सिंधु आवर्त कुण्ड वर्णन

प सिंधु प्रवाह

फ सिंधु द्वीप

ब राहितगा नदी

राहितगा नदी में अट्ठासी हजार नदियों का सम

भ- रोहितांशा प्रपात कुण्ड में नदियों का संगम

म- रोहितांशा द्वीप

७५ क- चुल्ल हिमवन्त पर ग्यारह कूट

ख- सिद्धायतन कूट का स्थान

ग- " के मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ

घ- " के मूल, मध्य और ऊपर की परिधि

पञ्चवर वेदिका और वन खण्ड का वर्णन

ङ- सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

च- जिन प्रतिमाओं का वर्णन

छ- चुल्ल हिमवन्त कूट का स्थान, आयाम-विष्कम्भ

ज- प्रासादावतसक की ऊँचाई और विष्कम्भ

झ- सिंहासन, परिवार

ञ- चुल्ल हिमवन्त देव और उसकी स्थिति

ट- चुल्ल हिमवन्ता राजधानी का स्थान

ड- शेष कूटों का चुल्लहिमवन्त कूट के समान वर्णन

ड- चार कूटों पर देवता, शेष कूटों पर देवियां

ढ- चुल्ल हिमवन्त नाम का हेतु

ण- चुल्ल हिमवन्त देव और उसकी स्थिति

त- चुल्ल हिमवन्त देव और उसकी स्थिति

७६ क- हेमवन्त क्षेत्र का स्थान

ख- हेमवन्त क्षेत्र का आयत, विस्तार दिशा.

ग- " का सस्थान

घ- " का विष्कम्भ

ङ- " की वाहा का आयाम

च- " की जीवा का "

छ- " के धनुष्य की परिधि

ज- " में सुपम-दुपमा काल के समान सर्वदा स्थिति

ग निम्बिका का परिमाण

घ गगावत कुण्ड मे गगा प्रपात कुण्ड पर्यन्त गगा प्रवाह का परिमाण

ङ गगा प्रपात कुण्ड का आशाम विष्कम्भ, परिधि उद्देश

च पद्मदेविता और वनसण्ड का वनन

छ तीन श्लेषानो का वर्णन

ज तारणों का वर्णन

झ षष्ट भगनो का वर्णन

गगाद्वीप का वर्णन

झ गगाद्वीप का आशाम विष्कम्भ और परिधि

ट गगादेवी क भवन का आशाम विष्कम्भ और ऊँचाई

ठ मणिपीठिका का वनन

ड गगाद्वीप का घासवन नाम

ड उत्तराञ्च भरत म सात हजार नदियो का गगा मे मिलना

ण दक्षिणाञ्च भरत मे मान हजार नदिया क और मिलन स चौदह हजार नदियो का गगा मे सगम

त गगा का सगम समुद्र मे मिलना

थ गगा नदी के उदगम स्थान म प्रवाह का विष्कम्भ और उद्देश

द समुद्र सगम म गगानदी के प्रवाह का विष्कम्भ और उद्देश

ध सिंधु नदी वर्णन

सिंधु नदी म चौदह हजार नदिया का सगम

न सिंधु आषर्न कुण्ड वर्णन

प सिंधु प्रपात ' "

फ सिंधु द्वीप "

ब रोहिताग्ना नदी "

राष्ट्रिताग्ना नदी म अष्टावीस हजार नदियो का सगम

ज- रोहिता प्रताप कुण्ड का आयाम-विष्कम्भ परिधि और उद्देश

झ- रोहित द्वीप का स्थान आयाम विष्कम्भ परिधि और ऊँचाई

ञ- पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन

ट- भवन का आयाम-विष्कम्भ

ठ- अट्ठावीस हजार नदियों का रोहिता नदी में संगम

शेष वर्णन रोहितांशा नदी के समान

हरिकान्ता नदी का वर्णन

ड- हरिकान्ता नदी का स्थान

ढ- जित्तिका का परिमाण

ण- हरिकान्ता प्रपात कुण्ड का आयाम विष्कम्भ और परिधि

त- हरिकान्ता द्वीप का आयाम विष्कम्भ परिधि और ऊँचाई

शेष वर्णन सिन्धु द्वीप के समान

हरिकान्ता नदी में छप्पन हजार नदियों का संगम

८१ क- महा हिमवन्त वर्षाधर पर्वत के आठ कूट

ख- कूटों का आयाम-विष्कम्भ

ग- महाहिमवन्त देव और उसकी स्थिति

८२ क- हरि वर्ष क्षेत्र का स्थान

ख- " का विष्कम्भ

ग- " की बाहा का आयाम

घ- " की जीवा का "

ङ- " के धनुषपृष्ठ की परिधि

च- " में सुपमाकाल के समान सदा स्थिति

छ- विकटापाती वृत्त वैताड्य पर्वत का स्थान

ज- अरुण देव और उसकी स्थिति

झ- विकटापाती राजधानी का स्थान

- ७७ क शब्दावली वृत्त वैद्यारूप पर्वत का स्थान
 ल " " की ऊँचाई, उदय मस्थान
 आषाढ विष्णु और परिधि
 ग पद्मवर वेदिका और वनमण्ड वचन
 घ प्राणादावतमज की ऊँचाई आषाढ विष्णु और मिहानन
 परिवार
 ङ सम्भाराति वृत्त बँताइय नाम होने का हेतु
 च गन्गापाति देव देव की स्थिति और देव परिवार
 छ गन्गापाति राजधानी का स्थान
 ७८ क हैमवन नाम होने का हेतु
 ल हैमवन देव और उनकी स्थिति
 ७९ क महा हिमवन्त वर्षावर पर्वत का स्थान
 ल के भावन विस्तार की दिशा
 ग की ऊँचाई उदय, विष्णु
 घ की बाह्य का आषाढ
 ङ की जीवा का ,
 च के अनुगुण की परिधि
 छ पद्मवर वेदिका और वनमण्ड वचन
 ज अक्षर देव का श्रीम स्थान
 ८० क महापद्मद्व का स्थान
 ल का आषाढ विष्णु
 ग पद्म का प्रमाण
 घ ही देवी और उनकी स्थिति
 ङ महापद्म ब्रह्म का शास्त्र नाम
 रोहिता नदी वर्णन
 च उद्गम स्थान में प्रवाह का परिमाण
 छ विद्विषा का परिमाण

ठ- प्रत्येक चक्रवर्ती विजय^१ से अट्ठावीस हजार नदियों का सीतोदा में संगम

ड- सीतोदा में पचपन लाख वत्तीस हजार नदियों का मिलना

ढ- उद्गम स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्बेध

ण- समुद्र में मिलने के स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्बेध

त- पद्मवर वेदिका और वन खण्डवर्णन

थ- निपद्य पर्वत पर नो कूट

द- प्रत्येक कूट का परिमाण चुल्ल हिमवन्त कूट के समान

ब- निपद्य राजधानी का स्थान

न- निपद्य पर्वत नाम होने का हेतु

प- निपद्य देव और उसकी स्थिति

८५ क- महाविदेह क्षेत्र का स्थान

ख- " के आयत और विस्तार की दिशा

ग- महाविदेह का विष्कम्भ

घ- महाविदेह की वाहा का आयाम

ङ- " की जीवा का "

च- " के घनपृष्ठ की परिधि

छ- महाविदेह के चार विभाग

ज- " में मनुष्यों के संहनन, संस्थान, अवगाहना, और गति

झ- महाविदेह नाम होने का हेतु

ञ- महाविदेह देव और उसकी स्थिति

ट- महाविदेह का शास्वत नाम

१. दक्षिण तट के आठ विजय और उत्तर तट के आठ विजय इस

■- हरिवर्ण देव और उमकी स्थिति

८३ क- निषध वर्धधर वर्णन का स्थान

ख निषध व० प० के आयन और विस्तार की दिशा

■ निषध व० प० की ऊँचाई उद्देश और विष्कम्भ

घ निषध व० प० की बाह्य का आयाम

ङ की धीरा का आयाम

च व धनुष्य की परिधि

छ का सम्मान

ज पद्मवर वेदिका और वनलक्ष का वर्णन

झ- निमिषत्त दृढ़ का स्थान

ञ " के आयन और विस्तार की दिशा

ट- निमिषत्त दृढ़ का आयाम विष्कम्भ

ड भुक्ति देवी और उमकी स्थिति

८४ क इति नदी का स्थान

ख हरि प्रपातकुण्ड वर्णन

ग हरि द्वीप भवन वर्णन

घ- छप्पन हजार नदियों का हरि नदी में समान

द्वेप वनन हरिकान्ता नदी के समान

ङ- सीतोदा महानदा का स्थान

उद्गम स्थान से कुण्ड पवन प्रवाह का परिमाण

च सीतोदा प्रपात कुण्ड का आयाम विष्कम्भ और परिधि

छ सीतोदा द्वीप का आयाम विष्कम्भ परिधि और ऊँचाई

ज- चित्र विचित्र वृत्त वर्णन

झ निषध, दधकुरु, मूर सुव्रत, विद्युत्प्रभद्र

ञ सीतोदा में चौरासी हजार नदियों का समान

ट विद्युत् प्रभ वनम्कारपर्वत

ठ- प्रत्येक चक्रवर्ती विजय^१ से अट्ठावीस हजार नदियों का सीतोदा में संगम

ड- सीतोदा में पचपन लाख वत्तीस हजार नदियों का मिलना

ढ- उद्गम स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्बेध

ण- समुद्र में मिलने के स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्बेध

त- पद्मवर वेदिका और वन खण्डवर्णन

थ- निपथ पर्वत पर नो कूट

द- प्रत्येक कूट का परिमाण चुल्ल हिमवन्त कूट के समान

ध- निपथ राजधानी का स्थान

न- निपथ पर्वत नाम होने का हेतु

प- निपथ देव और उसकी स्थिति

८५ क- महाविदेह क्षेत्र का स्थान

ख- " के आयत और विस्तार की दिशा

ग- महाविदेह का विष्कम्भ

घ- महाविदेह की वाहा का आयाम

ङ- " की जीवा का "

च- " के घनुषृष्ठ की परिधि

छ- महाविदेह के चार विभाग

ज- " में मनुष्यों के संहनन, संस्थान, अवगाहना, और गति

झ- महाविदेह नाम होने का हेतु

ञ- महाविदेह देव और उसकी स्थिति

ट- महाविदेह का शास्वत नाम

१. दक्षिण तट के आठ विजय और उत्तर तट के आठ विजय इस प्रकार सोलह विजय

८६ क गंधमान्न वनम्बल पर्वत का स्थान

ख गंधमान्न व प के आसन और विस्तार की दिशा

ग गंधमान्न व प का आवास

घ नीलशत वर्षापर पवन के समान गंधमान्न की ऊँचाई और
विस्तार

ङ मरु पवन के समान गंधमान्न की ऊँचाई और विस्तार

च गंधमान्न वनम्बल पवन का संस्थान

छ दो पक्षीर केन्द्रों और वनम्बल का वन

ज अन्नर देवी का बड़ा स्थान

झ गंधमान्न पवन पर आन कूट

ञ कुल हिमवत पवन के मिश्रणन कूट के समान कूटों का
परिणाम

ट कूटों की दिशा

ठ प्रत्येक कूट पर देवियों का निवास

ड शालाग्रहस्तक और राजधानियाँ का वन

ॡ गंधमान्न नाम होने का हेतु

ण गंधमान्न देव और उसकी स्थिति

त गंधमान्न पार्वत नाम

८७ क उत्तरकुर पर्वत का स्थान

ख उत्तरकुर के आसन और विस्तार की दिशा

ग उत्तरकुर क्षेत्र का संस्थान

घ उत्तरकुर की जीवा का आवास

ङ उत्तरकुर के वनस्पति की परिधि

च उत्तरकुर में मुख्य मुख्य कान के समान सप्त स्थिति

८८ क समस्त पर्वतों का स्थान

ख समस्त पर्वतों की ऊँचाई और उद्देश

- ग- यमक पर्वतों के मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ
घ- „ के मूल, और ऊपर की परिधि
ङ- „ का संस्थान
च- पद्मवर वेदिका और वन खण्डों का वर्णन
छ- प्रासादावतंसकों की ऊँचाई, विष्कम्भ और सिंहासन परिवार
ज- यमक देवों के आत्म रक्षक देव
झ- यमक नाम होने का हेतु
ञ- यमक देव और उनके सामानिक देव
ट- यमक पर्वत शास्वत नाम
ठ- यमका राजधानियों का स्थान
ड- „ का आयाम-विष्कम्भ
ढ- „ की परिधि
ण- „ के प्राकारों की ऊँचाई
त- „ के प्राकारों का मूल, मध्य, और ऊपर का विष्कम्भ
थ- कपिशोर्पकों की ऊँचाई और बाह्य
द- यमिका राजधानियों के द्वार
ध- द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ
न- चार वनखण्डों का वर्णन
प- प्रासादावतंसकों का वर्णन
फ- उपकारिकालयनों का आयाम, विष्कम्भ, परिधि और बाह्य
ब- प्रत्येक के पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन
भ- प्रासादावतंसकों का परिमाण
म- सिंहासन परिवार
य- प्रासाद पंक्तियाँ
र- सुधर्मासभा, मुखमण्डप, प्रेक्षाघर, मण्डप, मणिपीठिका, स्तूप, जिन प्रतिमा, चैत्यद्वारा, मणिपीठिका. महेन्द्र ध्वज, मनो-

गिरिका गोमानगिरा भूतपटिका मणिपीठिका चत्वराम्भ
त्रिन शम्भिका गवनीय सु महेन्द्र ध्वज गङ्गापार सिद्धाय
तन मणिपीठिका देवगन्धर्व त्रिनप्रतिमा आदि का वनन

न उपमान ममा गवनीय, हृद वनन

व शम्भिकेश ममा वनन

ग शम्भिकारिक ममा वनन

घ शम्भिकारिक ममा वनन

न ममा पुष्करिणिषो और मणिपीठों का वनन

२६ क बालवन्त दृष्ट का स्थान

ख क आयन और विस्तार की निगा

ग दो पक्षर वेनिका और दो वनछण्डों का वनन

घ नीलवन्त नाग कुमार जेव

ङ नीलवन्त दृष्ट के दोना पक्षर के नील वान्त काचनम पर्वत

च काचनम पर्वत का परिमाण समक पर्वतों के समान

छ पाष हृदो क नाम

ज प्रत्येक न एक एक देव और उनकी स्थिति

झ समक राजधानियों के समान इनकी राजधानियों का वनन

२७ क जम्बूद्वीप का स्थान

ख की परिधि

ग का अन्दर बाहर का बाह्य

घ पक्षर वेनिका वनछण्ड त्रिमोषान और तोरणों का वनन

ङ मणिपीठिका की ऊचाई और बाह्य

च जम्बू सुशून की ऊँचाई और उद्गम

छ के स्थानों का बाह्य

ज की गङ्गाओं का आयतन विष्कम्भ और अयमाण

झ के चार निगाओं में चार शानाएँ

- ब- चार शालाओं के मध्य भाग में एक सिद्धायतन
- द- सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई
- ठ- " के द्वार, द्वारों की ऊँचाई-विष्कम्भ
- ड- मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहुल्य
- ढ- छंदक का परिमाण
- ण- जिनप्रतिमाओं का वर्णन
- त- पूर्व दिशा की शाला में एक भवन
- थ- शेष शालाओं में प्रासादावतंसक सिंहासनादि
- द- पद्मवर वेदिका वर्णन
- ध- एक सौ आठ जम्बू वृक्षों की ऊँचाई आदि
- न- छः पद्मवर वेदिकाओं का वर्णन
- प- अनाधृत देव के सामानिक देव
- फ- प्रत्येक सामानिक देव के जम्बू वृक्ष
- ब- अनाधृत देव की अग्रमहीपियाँ
- भ- अग्रमहीपियों के जम्बू वृक्षों का परिणाम
- म- सात सेनापतियों के सात जम्बू वृक्षों का परिमाण
- य- आत्म रक्षक देवों के जम्बू वृक्षों परिमाण
- र- जम्बू वृक्ष के वनखण्डों का वर्णन
- ल- प्रथम वन खण्ड के भवन और शयनीय का वर्णन
- व- शेष वनखण्डों के भवनों का वर्णन
- श- चार पुष्करिणियों के मध्य स्थित प्रासादों का वर्णन
- प- पुष्करिणियों के मध्य स्थित प्रासादों का वर्णन
- स- प्रासाद कूटों का वर्णन
- ह- जम्बू सुदर्शन वृक्ष के वारह नाम
- क्ष- जम्बू सुदर्शन नाम होने का हेतु
- त्र- जम्बू सुदर्शन शास्वत नाम
- ज्ञ- अनाधृता राजधानी का वर्णन घण्टिका राजधानी के समान

- ६१ क उत्तर कफ नाम होने का हेतु
 ख उत्तर कुहमेव और उसकी स्थिति
 ग उत्तरकुह आस्वत्थ नाम है
 घ माक्षवत् तो वल्ग्वम् पर्वत का स्थान
 ङ माक्षवत्त व० प० के आयन और विस्तार की निशा
 च गेय वनन वक्षमादन पवन के समान
 छ माक्षवत्त पर्वत का कूट
 ज मागर कूट पर मुभोगा देवी मुभागा राजधानी
 झ रजतकूट पर भोगमानिनी देवी और उसकी राजधानी
 ञ गेय कूटों के सहस्र नाम वाला देव
 ट देवा की राजधानियाँ
 ठ गेय वनन चु ल हिमवत् के समान
- ६२ क हरिस्मह कूट का परिमाण
 ख हरिस्मह राजधानी का वनन वनर वना राजधानी के समान
 ग माक्षवत्त नाम होने का हेतु
 घ माक्षवन्त देव और उसकी स्थिति
 ङ माक्षवत्त आस्वत्थ नाम है
- ६३ क क क्ष विजय का स्थान
 ख क आयन और विस्तार की निशा
 ग क क्ष विभा
 घ का वि कम्भ
 ङ वैताल्य पर्वत^१ से क क्ष विजय के दूर आयन
 च दक्षिणाध के क क्ष विजय का स्थान
 छ का आयन विषमम्भ

१ भरत सेश क वैताल्य पर्वत से यह वैताल्य पर्वत भिन्न है

- ज- दक्षिणार्ध के कच्छविजय का संस्थान
 झ- " के मनुष्यों का वर्णन
 ञ- वैताढ्य पर्वत का स्थान
 ट- वैताढ्य पर्वत के आयत और विस्तार की दिशा
 ठ- वैताढ्य पर्वत की बाहा, और धनुषपृष्ठ का परिमाण
 ड- विद्याधर ध्येणियों का वर्णन
 ढ- विद्याधरों के नगर
 त- उत्तरार्ध कच्छविजय का वर्णन-दक्षिणार्ध कच्छविजय के समान
 थ- सिन्धु कुण्ड का स्थान
 भरत क्षेत्र के सिन्धु कुण्ड के समान
 द- सिन्धु नदी चौदह हजार नदियों का में संगम
 घ- सिन्धु नदी का सीता नदी में संगम
 न- अरुणपर्वत पर्वत का स्थान आदि
 प- गंगा कुण्ड का वर्णन सिन्धु कुण्ड के समान
 फ- कच्छ विजय नाम होने का हेतु
 ब- क्षेमा राजधानी का वर्णन विनीता राजधानी के समान
 भ- कच्छ राजा का वर्णन भरत चक्रवर्ती के समान
 म- कच्छ देव और उसकी स्थिति
 य- कच्छ विजय का शास्वत नाम होना
 ६४ क- चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत का स्थान,
 ख- चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत की आयत और विस्तार की दिशा.
 ग- नीलवन्त वर्षधर पर्वत के समीप चित्रकूट पर्वत का आयाम-
 विष्कम्भ.
 घ- सीतानदी के समीप चित्रकूट पर्वत का आयाम-विष्कम्भ.
 ङ- चित्रकूट पर्वत का संस्थान
 च- चित्रकूट पर्वत के दोनों पार्श्व में दो पक्षवर वेदिकायें और दो
 वनखण्ड

- छ- चित्रकूट पर्वत के चार कूट
 ज- चित्रकूट देव और इसकी स्थिति
 झ- चित्रकूटा राजधानी का स्थान
 ६५ क- मुकुन्द विजय का स्थान
 ख- सेमपुरा राजधानी
 ग- मुकुन्द राजा
 घ- दीप वर्णन कच्छ विजय के समान
 ङ- गाथापति कुण्ड का रोहिताश कुण्ड के समान वर्णन
 च- गाथापति द्वीप भवन का वर्णन
 छ- गाथापति नदी
 ज- अट्टाबोस हजार नदियों का गाथापति नदी में मिलना और
 गाथापति नदी का सीतानदी में मिलना
 झ- गाथापति नदी का उद्भव और प्रवाह का विष्कम्भ
 ७० गाथापति नदी के दोनों पार्श्व से दो पचवर वेदिका और दो
 वनस्तम्भ का वर्णन
 ७१ महा कच्छविजय का स्थान
 पचकूट वनस्तम्भ पर्वत का स्थान
 पचकूट वनस्तम्भ पर्वत के आयत और विस्तार की दिशाएँ
 पचकूट व प के चार कूट
 पचकूट देव और उसकी स्थिति
 दीप वर्णन चित्रकूट पर्वत के समान
 ७२ कच्छराज्य की विजय का स्थान
 कच्छराज्य की विजय के आयत और विस्तार की दिशा
 कच्छराज्य की देव-शेष वर्णन कच्छ विजय के समान
 दहावती कुण्ड का स्थान
 दहावती नदी का सीता नदी में मिलना
 दीप वर्णन गाथापति नदी के समान

ड- आवर्त विजय का स्थान

शेष वर्णन-कच्छ विजय के समान

नलिनकूट वक्षस्कार पर्वत का स्थान

नलिनकूट व० प० की आयत और विस्तार की दिशा.

शेष वर्णन-चित्रकूट पर्वत के समान

नलिनकूट पर्वत के चार कूट

ढ- मंगलावर्त विजय का स्थान

मंगलावर्त देव

शेष वर्णन कच्छ विजय के समान.

ण- पुष्करावर्त विजय का स्थान

पुष्करावर्त देव और उसकी स्थिति

शेष वर्णन. कच्छ विजय के समान

एक शैल वक्षस्कार पर्वत का स्थान

एक शैल व० प० के चारकूट

एक शैल देव और उसकी स्थिति

त- पुष्कलावर्त विजय का स्थान

पुष्कलावर्त विजय के आयत और विस्तार की दिशा.

पुष्कलावर्ती देव और उसकी स्थिति.

शेष वर्णन-कच्छ विजय के समान.

थ- सीतामुख वन का स्थान

सीतामुख वन के आयत और विस्तार की दिशा

सीता नदी के समीप सीतामुख वन का विष्कम्भ

नीलवन्त वर्षधर पर्वत के समीप सीतामुख वन का विष्कम्भ

पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन

द- आठ राजधानियों के नाम

ध- आठ राजा

- प अभिषागिक श्रेष्ठियाँ
 क- सारह वनस्कार पवन
 द बारह नन्धियाँ
 ६६ क सीतामुनि वन (उत्तर) का स्थान
 ल उत्तर के छान्ड विग्रह
 ग उत्तर की छान्ड राजधानियाँ
 घ उत्तर के चार वनस्कार पवन
 ङ- उत्तर की तीन नन्धियाँ
 ६७ क सोमनस वनस्कार पवन का स्थान
 ल सोमनस व० प० क आयन और विस्तार की गिना
 ग निषध वनस्कार पवन के समीप सोमनस पर्वत का विष्कम्भ
 घ अन्तर देवी का ब्रीडा स्थान
 ङ सोमनस देव और उनकी स्थिति
 च सोमनस नाम का पवन
 छ सोमनस वनस्कार पवन पर सानकूट
 ज दो कुटों पर देविता नैप कुटों पर देवता
 झ शशेक देव की राजधानियाँ
 ञ दण्डक का स्थान
 ट नैप वनस उत्तरकुट के समान
 ६८ क विजयकुट और विजयकुट पवन का स्थान
 ल राजधानियाँ मेरु से दक्षिण में
 ग नैप वनस वनस्कार पवन का समान
 ६९ क निषधद्व द्व का स्थान
 ल दण्डक द्व द्व का स्थान
 ग सुषध द्व का स्थान
 घ सुनिसद्व द्व का स्थान
 ङ- विष्णुद्व द्व का स्थान

च- इन द्रहों के देवों की राजधानियां मेरु से दक्षिण में

१०० क- कूटशाल्मलि पीठ का स्थान

ख- देवकुरु देव और उसकी स्थिति

ग- शेष वर्णन—जम्बूसुदर्शन पीठ के समान

गरुड़ देव वर्णन पर्यन्त

१०१ क- विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत का स्थान

ख- विद्युत्प्रभ देव और उसकी स्थिति

ग- शेष वर्णन—मात्यवन्त पर्वत के समान

घ- विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नौ कूट

ङ- दो कूटों पर देवियां, शेष कूटों पर देवता

च- इनकी राजधानियां मेरु से दक्षिण में

छ- विद्युत्प्रभ नाम होने का हेतु

ज- विद्युत्प्रभ देव और उसकी स्थिति

क- विद्युत्प्रभ नाम शाश्वत नाम

१०२ क- दक्षिण-उत्तर के आठ विजय

ख- " आठ राजधानियां

ग- " वक्षस्कार पर्वत

घ- " अन्तर नदियां

ङ- " कूटाकूट देव

१०३ क- मेरु पर्वत का स्थान

ख- " की ऊँचाई

ग- " के मूल का उद्बेध और विष्कम्भ

घ- " के धरणितल का और ऊपर का विष्कम्भ

ङ- " के मूल धरणितल और ऊपर की परिधि

च- " की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड

छ- " के ऊपर चार वन,

ग भद्रशाल वन का स्थान

के शायन और विस्तार की शिवा

के आठ दिशा

का आयाय विष्कम्भ

की पश्चिम वेनिका और वनगण्ड

के देवताका का पीडा स्थल

सिद्धायन का आयाय विष्कम्भ और ऊर्ध्व

चार शिवाओं में चार सिद्धायन

सिद्धायनों के द्वार द्वारों की ऊर्ध्व और विष्कम्भ

मनिवीटिका का आयाय विष्कम्भ और बाह्य

देवद्वन्द्व वन वनप्रतिमा वन

चार शिवाओं की वन पुष्करिणियों का वन

१०४ क मन्त्र वन का स्थान

ख का चक्रवात विष्कम्भ

ग का अदर बाह्य का विष्कम्भ

घ मन्त्र वन में नवकूट वन

ङ गेय वन मन्त्र वन के समान

१०५ क सौमनस वन का स्थान

ख का चक्रवात विष्कम्भ

ग का अदर-बाह्य का विष्कम्भ

घ इस वन में बूट नहीं हैं

ङ शश वन मदन वन के समान

१०६ क पट्टक वन का स्थान

ख का चक्रवात विष्कम्भ

ग की परिधि

घ मेरु चुलिता का मध्य भाग

ङ- मेरु चूलिका की ऊँचाई

च- " के मूल का और ऊपर का विष्कम्भ

छ- " के मूल की और ऊपर की परिधि

ज- मेरु चूलिका के मध्य भाग में सिद्धायतन का वर्णन

झ- चार दिशाओं में चार भवन का वर्णन

ञ- शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र के प्राशादावतंसकों का वर्णन

१०७ क- पण्डक वन में चार अभिषेक शिला

ख- पण्डुशिला का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य

ग- " पर दो सिंहासन

घ- " के उत्तर के सिंहासन पर कच्छादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक

ङ- पण्डुशिला के दक्षिण के सिंहासन पर कच्छादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक

च- पण्डुकम्बल शिला का स्थान, आयाम-विष्कम्भ और बाह्य

छ- " का एक सिंहासन पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक

ज- रक्तशिला का स्थान आयाम-विष्कम्भ और बाह्य

झ- " पर दो सिंहासन

ञ- " के दक्षिण सिंहासन पर पद्मादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक

ट- रक्तशिला के उत्तर के सिंहासन पर वक्षादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक

ठ- रक्तकन्दलशिला का स्थान, आयाम-विष्कम्भ और बाह्य

ड- " के एक सिंहासन पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक

१०८ क- मेरु पर्वत के तीन काण्ड

५१

ख- प्रथम काण्ड चार प्रकार का

ग मध्यम काण्ड चार प्रकार का
घ उपरिम काण्ड एक प्रकार का
ङ तीनो काण्डो का बाह्यस्थ
च मेरु का परिमाण

१०६ क मेरु पर्वत के सोनहू नाम

ख मेरु नाम का हेतु

ग मेरुदेव और उसकी स्थिति

११० क नीलकण्ठ वर्षेधन पर्वत का स्थान

ख नीलकण्ठ व य क आयत और विस्तार की दिशा

ग गेय वनन निषध पर्वत के समान

घ नारिकाम्ना नदी का वर्णन

ङ नीलकण्ठ व य के ना कूट और कठरी द्व द्व का वर्णन

च नीलकण्ठ नाम होने का हेतु

छ नीलकण्ठ शाश्वत नाम है

१११ क रम्यकण्ठ का स्थान

ख दीप वनन हरिषध के समान

ग ता-धावन्ति वृत्त वैताड्य पर्वत का स्थान

घ गेय वनन विकटोपाति क समान

ङ रुक्मी वर्षेधन पर्वत का स्थान, महापुण्डरीक द्व द्व मरकान्ती
नदी रूपकला मन्त्री

च रुक्मी वर्षेधन पर्वत पर छाठ कूट

छ रुक्मी व य नाम होने का हेतु

गेय वनन महाहिमवन्त पर्वत के समान

ज हेमवन्त वर्ष का स्थान

हेमवन्त व य क समान वनन

झ माक्यवन्त वृत्त वैताड्य पर्वत का स्थान

ञ शन्वापाती वृत्त वैताड्य पर्वत के समान वनन

ट- हैरण्य वर्ष नाम होने का हेतु

हैरण्यवत देव और उसकी स्थिति

ठ- शिखरी वर्षधर पर्वत का स्थान

ड- पुण्डरीक द्रह और सुवर्णकूला नदी

ढ- शिखरी वर्षधर पर्वत के ग्यारह कूट

ण- शिखरी देव और उसकी स्थिति

त- शेष चुल्लीहमवन्त पर्वत के समान वर्णन

थ- एरावत वर्ष का स्थान

एरावत में चक्रवर्ती. एरावती देव, भरत के समान वर्णन

पंचम जिन जन्माभिषेक वक्षस्कार

११२ जिन जन्माभिषेक के समय अधोलोक वासी आठ दिक्कुमारियों का आगमन

११३ जिन जन्माभिषेक के समय उर्ध्वलोक वासी आठ दिक्कुमारियों का आगमन

११४ क- पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर के रुचक पर्वतों पर रहने वाली आठ दिक्कुमारियों का आगमन

ख- चार विदिशाओं के रुचक पर्वतों पर रहनेवाली चार दिक्कुमारियों का आगमन

ग- मध्य रुचक पर्वत पर रहने वाली चार दिक्कुमारियों का आगमन

दिशा कुमारियों के कर्त्तव्य

घ- नाल कर्तन, तेलमर्दन, मुगधित उवटन

ङ- गवोदक, पुष्पोदक और शुद्धोदक में स्नान

च- अग्निहोम, रक्षापोटली, पापाण गोलकों का ताड़न और आशीर्वचन, गीत गायन

११५-११७ क- जिन भगवान के जन्म समय में शक्रेन्द्र का आगमन

ख यान विमान का वषण

ग तीर्थंकर की यात्रा को अवस्थापिनी निद्रा देना

घ पाप सहेन्द्र ऋषी का विबुधन

ङ पट्टन वन में अभियेक शिनापर अभियेक करना

११८ क ईगानेन्द्र आदि सभी ईन्द्रा का मेघ पवत पर आगमन

ख यान विमान बनाने माने दम देव

ग सुधीया चण्डा महाधीया चण्डा,

११९ चमरेन्द्रा और उद्योतिष्केन्द्रा का मेघ पवत पर आगमन

१२० तीर्थोदर आदि से अभियेक

१२१ बाण गीत स्तुति आदि करके ज मीरमन्त्र मनाना

१२२ अष्टमगल भगवद् चण्डा ईन्द्र परिवार द्वारा अभियेक बाण
वृषभा की विबुधना स्तुति शृंगी से जलधान का पाठन
और कुण्डन युगत का तीक्ष्णकर माता के समीप रहना

१२३ क अभियेक के परधात तीक्ष्णकरी मेघ से जन्म भवन में लाना
लोम युगत और कुण्डन युगत का तीक्ष्णकर माता के समीप
रहना

ख तीक्ष्णकर के भवन में हिरण्य सुवर्ण जोड़ी में भण्डार भरने
के लिये शक्रदेव का वैश्वमन की आदेश

ग तीक्ष्णकर और तीर्थंकर माता का अनिष्ट न करने के लिये
घोषणा देवी द्वारा अष्टाङ्गि वा महोत्सव

षष्ठ जम्बूद्वीपगत पदार्थ संग्रह वर्णन वक्षस्कार

१२४ क जम्बूद्वीप के प्रदेशों का लवण समुद्र से स्पर्श

ख लवण समुद्र के प्रदेशों से जम्बूद्वीप का स्पर्श

ग जम्बूद्वीप के जीवों का लवण समुद्र में पक

घ लवण समुद्र के जीवों का जम्बूद्वीप में जन्म

१२५ क जम्बूद्वीप भण्डारवर्ती दम पदार्थ

ख-	जम्बूद्वीप के भरत प्रमाण खण्ड
ग-	जम्बूद्वीप के वर्ग योजन
घ-	में वर्ष क्षेत्र
ङ-	में वर्षधर पर्वत
च-	में मेरु पर्वत
छ-	में चित्रकूट
ज-	में विचित्रकूट
झ-	में यमक पर्वत
ञ-	में कंचन पर्वत
ट-	में वक्षस्कार पर्वत
ठ-	में दीर्घ वैताद्य पर्वत
ड-	में वैताद्य पर्वत
ण-	में वर्षधर कूट
त-	में वक्षस्कार कूट
थ-	में वैताद्य कूट
द-	में मंदर कूट
ध-	में तीर्थ
न-	में विद्याधर श्रेणियाँ
प-	में अभियोग देव श्रेणियाँ
फ-	में चक्रवर्ती विजय
ब-	में राजधानियाँ
भ-	में तमिस्रा गुफा
म-	में खण्ड प्रपात गुफा
य-	में कृतमाल देव
र-	में नृत्यमाल देव
ल-	में रूपभकूट

- ग मे सेनवाही महानदिया
 ग म कुण्डवाही महानदिया
 स मे नन्वियो की समुत्पन्न सख्या
 (१) जम्बूद्वीप के मरुत एरवत मे चार महानदिया
 (२) चार महानदियों का परिवार
 (३) जम्बूद्वीप के मरुत हरिष्यवत मे चार महानदिया
 (४) चार महानदियों का परिवार
 (५) जम्बूद्वीप के हरिष्य रम्यक वष में चार महानदिया
 (६) चार महानदियों का परिवार
 (७) जम्बूद्वीप के महाविदेह म का महानदिया
 (८) दोनो महानदियों का परिवार
 (९) जम्बूद्वीप मे मेरु से दक्षिण मे बहनेवाली नन्विया
 (१०) उत्तर
 (११) जम्बूद्वीप में पूर्वाभिमुख बहने वाली नदिया
 (१२) पश्चिमाभिमुख
 (१३) म बहनेवाली नन्विया की समुत्पन्न सख्या

सप्तम ज्योतिष्क वर्णन वक्षस्कार

- १२६ क जम्बू द्वीप मे चन्द्र
 ल सूर्य
 ग नक्षत्र
 घ तारा

सूर्य वर्णन पञ्चदश अधिकार

- १२७ क जम्बूद्वीप में सूर्यमण्डल
 ल सूर्य मण्डलों की दूरी
 ग नक्षत्र समुद्र म
 १२८ सब आभ्यन्तर मण्डल म सब बाह्यमण्डल की दूरी

१२६ प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी

१३० प्रत्येक सूर्य मण्डल का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और बाह्य

१३१ क- मेरु से प्रथम मण्डल की दूरी

ख- „ द्वितीय मण्डल की दूरी

ग- मेरु से प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी

घ- „ अन्तिम सूर्यमण्डल की दूरी

ङ- „ अन्तिम सूर्यमण्डल से दूसरे सूर्य मण्डल की दूरी

च- „ „ तीसरे „

छ- अन्तिम सूर्य मण्डल से प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी

१३२ क- जम्बूद्वीप में प्रथम सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

ख- „ द्वितीय „ „

ग- „ तृतीय „ „

घ- „ अन्तिम „ „

ङ- जम्बूद्वीप के अन्तिम से द्वितीय मण्डल की दूरी

च- „ अन्तिम से तृतीय „

छ- प्रत्येक सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ-परिधि

१३३ क- प्रथम सूर्यमण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्यदर्शन की दूरी का परिमाण

ख- द्वितीय „

ग- तृतीय „

घ- अन्तिम सूर्यमण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्यदर्शन की दूरी का परिमाण

ङ- अन्तिम से द्वितीय में „ „

च- अन्तिम सूर्यमण्डल से तृतीय सूर्य मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्य दर्शन का प्रमाण

छ- प्रत्येक अयन, मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्य दर्शन की दूरी का प्रमाण

- १३४ क प्रथम सूर्य मण्डल मे दिन रात्रि का अर्धय उत्कृष्ट परिमाण
 ख द्वितीय सूर्य मण्डल मे दिन रात्रि का अर्धय उत्कृष्ट परिमाण
 ग इस प्रकार प्रत्येक सूर्यमण्डल मे दिन रात्रि का अर्धय उत्कृष्ट
 दूरी का परिमाण
 अर्धतम सूर्य मण्डल मे दिन रात्रि का अर्धय उत्कृष्ट परिमाण
 विपरीत रश्मि मे
- १३५ अ प्रथम सूर्य मण्डल मे सूर्य के ताप क्षेत्र का संस्थान और अर्ध
 कार क्षेत्र का संस्थान
 ख अर्धतम सूर्य मण्डल के ताप क्षेत्र का संस्थान और अर्धकार
 क्षेत्र का संस्थान
- १३६ क जम्बूद्वीप मे प्रातः मध्याह्न और सायंकाल ॥ सूर्योदय की
 प्रमाण
- १३७ क जम्बूद्वीप मे सूर्य वर्तमान क्षेत्र में गति करता है
 ख जम्बूद्वीप मे सूर्य वर्तमान क्षेत्र का स्थान करता है
 ग साधारण अधिकारों का कथन
- १३८ जम्बूद्वीप मे सूर्य वर्तमान क्षेत्र मे किया करता है-यावन वर्तमान
 क्षेत्र का स्थान करता है ।
- १३९ जम्बूद्वीप मे सूर्य का उच्च अक्ष और निम्न ताप क्षेत्र
- १४० क मानुषोत्तर पवन पश्चिम ज्योतिषी देवों का उत्पत्ति स्थान
 ख मानुषोत्तर पवन पश्चिम ज्योतिषी देवों की मेरु प्रदक्षिण
- १४१ क ज्योतिषी देवों के अथवा मरुत के पश्चान् सामानिक देवों द्वारा
 व्यवस्था
 ख इन्द्र का अर्धय उत्कृष्ट उपपन्न विरहनाम
 ग मानुषोत्तर पवन के पश्चान् ज्योतिषी देवों का उत्पत्ति स्थान
 ताप क्षेत्र गति अभाव
 घ इन्द्र के अभाव मे सामानिक देवों द्वारा व्यवस्था
 ङ इन्द्र का अर्धय उत्कृष्ट उपपन्न विरहनाम

चन्द्र वर्णन मत्त अधिकार

१४२ क- सर्व चन्द्रमण्डल

ख- जम्बूद्वीप में चन्द्रमण्डल

ग- लवण समुद्र में चन्द्रमण्डल

१४३ प्रथम चन्द्रमण्डल से अन्तिम चन्द्रमण्डल का अन्तर

१४४ प्रत्येक चन्द्रमण्डल का अन्तर

१४५ चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

१४६ क- मेरु से प्रथम चन्द्र मण्डल का अन्तर

ख- " द्वितीय "

ग- " तृतीय "

घ- " अन्तिम "

ङ- " अन्तिम से द्वितीय मण्डल का अन्तर

च- " अन्तिम से तृतीय

छ- प्रत्येक चन्द्रमण्डल का अन्तर

१४७ क- प्रथम चन्द्र मण्डल का आयाम विष्कम्भ और परिधि

ख- द्वितीय चन्द्रमण्डल का आयाम विष्कम्भ और परिधि

ग- तृतीय चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

घ- अन्तिम चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

ङ- अन्तिम से द्वितीय चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

च- अन्तिम से तृतीय चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

छ- इस प्रकार प्रत्येक चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

१४८ क- प्रथम चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

ख- द्वितीय चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्रगति

ग- तृतीय चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति वृद्धि

ङ- अन्तिम चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

च- अन्तिम से द्वितीय चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

छ- अन्तिम से तृतीय से चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

ज इस प्रकार प्रत्येक चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की होनगति
नक्षत्र वर्णन मन्त्र अधिकार

४६ क नक्षत्र मण्डल

स जम्बू द्वीप में नक्षत्रमण्डल

ग तथैव तन्मूले नक्षत्रमण्डल

घ प्रथम और अन्तिम नक्षत्रमण्डल का अन्तर

ङ प्रत्येक नक्षत्रमण्डल का अन्तर

च नक्षत्रमण्डल का आधार विष्णुमन्त्र और परिधि

छ मेरु पर्वत से प्रथम नक्षत्रमण्डल का अन्तर

ज मेरु पर्वत से अन्तिम नक्षत्रमण्डल का अन्तर

झ प्रथम नक्षत्रमण्डल का आधार विष्णुमन्त्र और परिधि

ञ अन्तिम नक्षत्रमण्डल का आधार विष्णुमन्त्र और परिधि

ट प्रथम मण्डल में एक मुहूर्त में नक्षत्र की गति

ठ अन्तिम मण्डल में एक मुहूर्त में नक्षत्र गति

ड चन्द्रमण्डलों के माध्यम नक्षत्रमण्डलों का योग

ढ एक मुहूर्त में मण्डल का अवगाहन

ण एक मुहूर्त में मूल द्वारा मण्डल का अवगाहन

त एक मुहूर्त में नक्षत्रों द्वारा मण्डल का अवगाहन

११० क जम्बू द्वीप में दो भूयों की उन्नति माप

ख दो चन्द्रों की

ग शेष वर्णन मण्डली पा० १ उद्देशक २ के समान

घ जम्बूद्वीप के चन्द्र भूयों का कथन मण्डल

सर्वस्वर के भेद प्रमेय

१११ क सर्वस्वर के भेद

(१) नक्षत्र सर्वस्वर के बाह्य भेद

(२) मूल सर्वस्वर के पाच भेद

- (२-१) चन्द्र संवत्सर के चौबीस पर्व
 (२-२) " " "
 (२-३) " " छद्बीस पर्व
 (२-४) " " चौबीस "
 (२-४) " " छद्बीस "
 (३) प्रमाण संवत्सर के पांच भेद
 (४) लक्षण " पांच भेद
 (५) शनैश्चर संवत्सर के अष्टावीस भेद
 मास

१५२ क- प्रत्येक संवत्सर के बारह मास

ख- लौकिक मासों के नाम

ग- लोकोत्तर मासों के नाम

पक्ष

घ- मास के दो पक्ष

ङ- एक पक्ष के पन्द्रह दिन

च- पन्द्रह दिनों के नाम

छ- पन्द्रह तिथियों के नाम

ज- एक पक्ष की पन्द्रह रात्रियाँ

झ- पन्द्रह रात्रियों के नाम

ञ- पन्द्रह रात्रियों की तिथियों के न

अहोरात्र

ट- एक अहोरात्र के तीस मुहूर्त

ठ- तीस मुहूर्तों के नाम

करण

१५३ क- करण ग्यारह

ख- चर, स्थिर करण

ग- शुक्ल पक्ष के करण

	घ	कृष्ण पक्ष के करण		
१५४	क	आदि सप्तमर	ख	आदि अयन
	ग	आदि ऋतु	घ	आदि मास
	ङ	आदि पक्ष	च	आदि अहोरात्र
	छ	आदि मूर्त	ज	आदि करण
	झ	अक्षर नक्षत्र		
	ञ	पाच सप्तमर के युग		
	ट	के अयन		
	ठ	के ऋतु		
	ड	के मास		
	ढ	के पक्ष		
	ण	के अहोरात्र		
	त	के मूर्त		

योग

१५५ क दश योग
नक्षत्र

ख अठावीस नक्षत्र

१५६ क चन्द्र के साथ दक्षिण से योग करने वाले ६ नक्षत्र

ख चन्द्र के साथ उत्तर से योग करने वाले बारह नक्षत्र

ग चन्द्र के सप्त दक्षिण और उत्तर से प्रमद योग करने वाले सात नक्षत्र

घ चन्द्र के साथ दक्षिण में प्रमद योग करने वाले दो नक्षत्र

ङ चन्द्र के साथ सदा प्रमद योग करने वाले एक नक्षत्र

१५७ नक्षत्रों के देवता

१५८ अठावीस नक्षत्रों के तारे

१५९ क अठावीस नक्षत्रों के गोत्र

ख अठावीस नक्षत्रों के संस्थान

२६० क- चन्द्र के साथ अठावीस नक्षत्रों का योग काल

ख- सूर्य के साथ अठावीस नक्षत्रों का योग काल

२६१ क- नक्षत्रों के वारह कुल

ख- नक्षत्रों के वारह उपकुल

ग- नक्षत्रों के चार कुलोपकुल

घ- वारह पूर्णिमायें

ङ- वारह अमावस्याएँ

च- वारह पूर्णिमाओं में नक्षत्रों का योग

छ- " कुलों का योग

ज- " उपकुलों का योग

झ- " कुलोपकुलों का योग

ञ- " वारह अमावस्याओं में नक्षत्रों का योग

ट- " " कुलों का योग

ठ- " " उपकुलों का योग

ड- " " कुलोपकुलों का योग

ढ- ६ पूर्णिमा और ६ अमावस्या के नक्षत्र

पौरुषी प्रमाण

२६२ क- वर्षा ऋतु के प्रथम मास को पूर्ण करने वाले चार नक्षत्र-प्रत्येक

नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण

ख- वर्षा ऋतु का द्वितीय मास पूर्ण करने वाले चार नक्षत्र-प्रत्येक

नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण

ग- वर्षा ऋतु का तृतीय मास पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र-प्रत्येक

नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण

घ- वर्षा ऋतु का चतुर्थमास पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र-प्रत्येक

नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण

ङ- हेमन्त ऋतु का प्रथम मास पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र-प्रत्येक

नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण

- क हेमन्त ऋतु का द्वितीय मास पूष करने वाले चार नक्षत्र
प्रसरण नक्षत्र के तिन तथा वीर्यपी प्रमाण
- ख हेमन्त ऋतु का तृतीय मास पूष करनेवाले तीन नक्षत्र प्रसरण
नक्षत्र के तिन तथा वीर्यपी प्रमाण
- ग ह्रस्व ऋतु का चतुर्थ मास पूष करने वाले तीन नक्षत्र प्रसरण
नक्षत्र के तिन तथा वीर्यपी प्रमाण
- घ वीर्य ऋतु का प्रथम मास पूष करने वाले तीन नक्षत्र प्रसरण
नक्षत्र के तिन तथा वीर्यपी प्रमाण
- च वीर्य ऋतु का द्वितीय मास पूष करने वाले तीन नक्षत्र प्रसरण
नक्षत्र के तिन तथा वीर्यपी प्रमाण
- ट वीर्य ऋतु का तृतीय मास पूष करने वाले चार नक्षत्र प्रसरण
नक्षत्र के तिन तथा वीर्यपी प्रमाण
- ड वीर्य ऋतु का चतुर्थ मास पूष करने वाले तीन नक्षत्र प्रसरण
नक्षत्र के तिन तथा वीर्यपी प्रमाण

सोमह चरित्र

ह चरित्र-सूर्य के नीचे तारापत्र

व समय

ण ऊपर

त तारा समय और ऊपर होने का कारण

१६३ एक चरित्र का परिवार

१६४ के मेक पवन से ज्योतिषचक्र का अन्तर

ख लोहान्तरे ज्योतिषचक्र का अन्तर

ग धरणीन्तरे तारापत्र का अन्तर

घ धरणीन्तरे म मूय का अन्तर

ङ चरित्र का

च सर्वोपरि तारापत्र

छ मूय विमान से चरित्र विमान का अन्तर

ज- सूर्य विमान से सर्वोपरि तारे का अन्तर

झ- चन्द्र विमान से सर्वोपरि तारे का अन्तर

१६५ क- मण्डल में गति करनेवाले नक्षत्र

ख- मण्डल से बाहर गति करने वाले नक्षत्र

ग- मण्डल से नीचे " नक्षत्र

घ- मण्डल से ऊपर " नक्षत्र

ङ- चन्द्र विमान का आयाम-विष्कम्भ

च- सूर्य विमान का "

छ- ग्रह विमान का "

ज- नक्षत्र विमान का "

झ- तारा विमान का "

१६६ क- पूर्व दक्षिण पश्चिम और उत्तर दिशा में चन्द्र विमान का वहन करने वाले देव

ख- सूर्य विमान का वहन करनेवाले देव

ग- ग्रह विमान का वहन करनेवाले देव

घ- नक्षत्र विमान का वहन करनेवाले देव

ङ- तारा विमान का वहन करनेवाले देव

१६७ ज्योतिषी देवों की शीघ्र गति

१६८ ज्योतिषी देवों में अल्प ऋद्धि वाले और महान् ऋद्धि वाले

१६९ जम्बूद्वीप में एक तारे से दूसरे तार का जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर

१७० क- चन्द्र की चार अग्रमहीपियाँ

ख- प्रत्येक अग्रमहीपी का परिवार

ग- प्रत्येक अग्रमहीपी की वैक्रीय शक्ति

घ- चन्द्र का चन्द्र विमान में मैथुन सेवन ज करने का कारण

ङ- प्रत्येक ग्रह की चार-चार अग्रमहीपियाँ

च- प्रत्येक अग्रमहीपी का परिवार

पनो निम्नगण

गणितानुयोगमय चन्द्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति

अध्ययन	१११
प्राप्तुन	२०१२०
प्राप्तुन प्राप्तुन	३११३१
उपलब्ध मूल पाठ	२२०० दलोक परिमाण
उपलब्ध मूल पाठ	२२०० दलोक परिमाण
गद्य-सूत्र	१०८१०८
पद्य-गाथा	१०३११०३

बीसवीं प्राभृत प्राभृत

- ५४ पाँच प्रकार के सवत्सर
 ५५ नव सवत्सर के मास
 ५६ क पाँच प्रकार का युग सवत्सर
 ख चन्द्रादि पाँच सवत्सर के पत्र
 ५७ पाँच प्रकार का प्रमाण सवत्सर
 ५८ क पाँच प्रकार का तन्मय सवत्सर
 ख पाँच प्रकार का तन्मय सवत्सर
 ग अष्टादश प्रकार का तन्मय सवत्सर

द्विबीसवीं प्राभृत प्राभृत

- ५९ क तन्मयों के द्वार, तन्मय पाँच प्रतिपत्तिर्वा
 ख तन्मय निरूपण

बाबीसवीं प्राभृत प्राभृत

- ६० क दो चन्द्र और दो सूर के साथ योग करनेवाले तन्मयों का युग
 परिमाण
 ६१ तन्मय का सीमा विष्कम्भ
 ६२ प्राग्विक और उभयकाल में चन्द्र के साथ योग करने वाले तन्मय
 ६३ पाँच सवत्सर के एक युग की वामठ पूजिमा और वामठ प्रमाण
 स्वाशा म चन्द्र-युग का प्रमाण विभागों में सजमण
 ६४ पाँच सवत्सर की पूजिमाशा में युग का प्रमाण विभागों में
 सजमण
 ६५ पाँच सवत्सर की प्रमाणस्वाशा म चन्द्र का प्रमाण विभागों में
 सजमण
 ६६ पाँच सवत्सर का प्रमाणस्वाशा में युग का प्रमाण विभागों में
 सजमण
 ६७ पाँच सवत्सर की पूजिमाशा में चन्द्र युग के साथ तन्मयों का

- ६८ पाँच संवत्सर की अमावस्याओं चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग
- ६९ जिस क्षेत्र में चंद्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग हो उसी क्षेत्र में पुनः चंद्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग हो तो उस काल का परिमाण
- ७० क- दोनों चंद्र समान नक्षत्र के साथ योग करते हैं
ख- दोनों सूर्य समान नक्षत्र के साथ योग करते हैं
ग- इसी प्रकार ग्रहादि का योग

इग्यारहवाँ प्राभृत

- ७१ पाँच संवत्सरों का आदि अन्त और नक्षत्रों का योग

बारहवाँ प्राभृत

- ७२ पाँच संवत्सरों के मुहूर्त
- ७३ पाँच संवत्सरों के दिन-रात
- ७४ पाँच संवत्सरों का आदि और अन्त
- ७५ क- छ ऋतुओं का प्रमाण
ख- छ क्षय तिथियाँ
ग- छ अधिक तिथियाँ
- ७६ क- एक युग में सूर्य और चन्द्र की आवृत्तियाँ
ख- प्रत्येक आवृत्ति का परिमाण
- ७७ पाँच संवत्सरों में सूर्य और चन्द्र की आवृत्ति के समय नक्षत्रों का योग-तथा योग काल
- ७८ क- पाँच प्रकार के योग
ख- पाँच योगों का क्षेत्र निर्देश

तेरहवाँ प्राभृत

- ७९ कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्र की होनि-वृद्धि

जपन्म उत्पष्ट मूत्रं अहोरात्र के मूत्रों की हानि रुद्धि का हेतु

तृतीय प्राभृत-प्राभृत

१४ भरत और ऐरवत क्षेत्र के सूर्य का उदोन क्षेत्र.

चतुर्थ प्राभृत प्राभृत

१५ क आदित्य सप्तमर के दोनो अवनामे प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम पर्यन्त एक सूर्य की गति का अन्तर

ख अन्तर के सम्बन्ध मे ६ अन्य प्रतिपत्तिर्वा मान्यताएँ

ग स्व मान्यता का महेतुक समयन

पञ्चम प्राभृत-प्राभृत

१६ १७ क प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम मण्डल पर्यन्त मूत्र द्वारा द्वीप समुद्रों के अवगाहन के सम्बन्ध मे पांच अन्य प्रतिपत्तिर्वा

ख ११ मान्यता का कथन

षष्ठ प्राभृत-प्राभृत

१८ क आदित्य सप्तमर के दिन मे—एक अहोरात्र मे (प्रत्येक मण्डल मे) मूत्र द्वारा स्पर्शित क्षेत्र के सम्बन्ध मे अन्य मात प्रतिपत्तिर्वा

ख स्वमत समयन

सप्तम प्राभृत-प्राभृत

१९ क मूत्र मण्डलों के सम्बन्ध के सम्बन्ध मे अन्य आठ प्रतिपत्तिर्वा स्व मान्यता का निरूपण

अष्टम प्राभृत-प्राभृत

२० क सूर्यमण्डलों के आवागमन और बाह्यत्व के सम्बन्ध मे अन्य तीन प्रतिपत्तिर्वा

ख- आदित्य संवत्सर के प्रत्येक अयन में प्रत्येक मण्डल के आयाम विष्कम्भ और वाहल्य की भिन्नता से अहोरात्र के मुहूर्तों की हानि वृद्धि.

द्वितीय-प्राभृत

प्रथम प्राभृत प्राभृत

१ क- सूर्य की तिरछी गति के सम्बन्ध में अन्य आठ प्रतिपत्तियाँ स्वमत का स्पष्टीकरण

द्वितीय-प्रभृत-प्राभृत

२; सूर्य का एक मण्डल से दूसरे मण्डल में संक्रमण इस सम्बन्ध में सम्बन्ध में अन्य दो प्रतिपत्तियाँ

तृतीय-प्राभृत-प्राभृत

३ क- एक मुहूर्त में सूर्य की गति का परिमाण इस सम्बन्ध में अन्य चार प्रतिपत्तियाँ

ख- स्व मान्यता का विशद समर्थन

तृतीय प्राभृत

२४ क- सूर्य का ताप क्षेत्र और चन्द्र का उद्योत क्षेत्र इस विषय में अन्य बारह प्रतिपत्तियाँ

ख- स्वमत निरूपण

चतुर्थ प्राभृत

२५ क- चद्र और सूर्य का संस्थान दो प्रकार का

ख- विमान-संस्थान और प्रकाशित क्षेत्र का संस्थान

ग- दोनों प्रकार के संस्थानों के सम्बन्ध में अन्य सोलह प्रतिपत्तियाँ

घ- स्वमत से प्रत्येक मण्डल में उद्योत और ताप-क्षेत्र का संस्थान तथा अन्धकार क्षेत्र के संस्थान का निरूपण

८ सूर्य के उत्थ्वं व अधो एव नियंक ताप क्षेत्र का परिमाण
पंचम प्राभृत

२६ क- सूर्य की उदया-स्ताप का प्रतिपादन इस विषय में अन्य बीस प्रतिप्रतिपादा

ख- स्वमत का प्रतिपादन

षष्ठ प्राभृत

२७ क सूर्य की ओज सन्धिति-अवयव व अन्य पञ्चीस प्रतिप्रतिपादा

ख अवगाहित मण्डल की अपेक्षा अवन्धित और अनवगाहित मण्डल की अपेक्षा अनवस्थित ओज सन्धिति इस प्रकार स्वमत साधन कथन

सप्तम प्राभृत

२८ क- सूर्य में प्रकाशित स्कूल और मूल्य बदार्थ
इस विषय में अन्य बीस प्रतिप्रतिपादा

ख स्व मत प्रतिपादन

अष्टम प्राभृत

२९ क सूर्य की उदयदिशा के सम्बन्ध में अन्य तीन प्रतिप्रतिपादा

॥ स्वमत में—भिन्न भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा मूर्धोदय की भिन्न-भिन्न दिशाओं का कथन

ग दक्षिणायन और उत्तरायण में सूर्य की उदय दिशा तथा अवयव उत्कृष्ट अक्षराय का परिमाण

घ जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध और उत्तरायण में जम्बू अथवा आदि का कथन

ङ जम्बूद्वीप के क्षेत्रायन में पूर्व-पश्चिम में दिन समय दिन है उन समय दक्षिण उत्तर में रात्रि है

- च- लवण समुद्र के दक्षिण उत्तर में जिस समय दिन है उस समय पूर्व-पश्चिम में रात्रि है
- छ- भिन्न भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल का कथन
- ज- वातकी खण्ड में दिन-रात्रि तथा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी
- झ- कालोद में लवणोद के समान
- व- पुष्करार्ध में दिन रात्रि तथा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी

नवम पौरुषी छायाप्रमाण प्राभृत

- ६८ पाँच संवत्सर की अमावस्याओं चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग
- ६९ जिस क्षेत्र में चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग हो उसी क्षेत्र में पुनः चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग हो तो उस काल का परिमाण
- ७० क- दोनों चन्द्र समान नक्षत्र के साथ योग करते हैं
 ग- दोनों सूर्य समान नक्षत्र के साथ योग करते हैं
 ग- इसी प्रकार ग्रहादि का योग

इग्यारहवाँ प्राभृत

- ७१ पाँच संवत्सरों का आदि अन्त और नक्षत्रों का योग

बारहवाँ प्राभृत

- ७२ पाँच संवत्सरों के मुहूर्त
- ७३ पाँच संवत्सरों के दिन-रात
- ७४ पाँच संवत्सरों का आदि और अन्त
- ७५ क- छ प्रभुओं का प्रमाण
 ग- छ क्षय तिथियाँ
 ग- छ अधिक तिथियाँ
- ७६ क- एक युग में सूर्य और चन्द्र की आवृत्तियाँ
 ग- प्रत्येक आवृत्ति का परिमाण
- ७७ पाँच संवत्सरों में सूर्य और चन्द्र की आवृत्ति के समय नक्षत्रों का योग-तथा योग काल
- ७८ क- पाँच प्रकार के योग
 ग- पाँच योगों का क्षेत्र निर्देश

तेरहवाँ प्राभृत

- ७९ कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्र की दानि-वृद्धि

८० वागठ पूषिमा और वासठ अमावस्याओं में चन्द्र सूर्यो के साथ राहु का योग

८१ प्रत्येक वर्ष में चन्द्र की मण्डल गति

चौदहवाँ प्रामृत

८२ कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्रिका और अक्षरार का प्रमाण

पन्द्रहवाँ प्रामृत

८३ चन्द्राणि ज्योतिषी देवा की गति

८४ चन्द्राणि ज्योतिषी देवा की एक महीना में गति

८५ क नक्षत्रमास में चन्द्र सूर्य ग्रहाणि की मण्डल गति

ख चन्द्रमास में चन्द्र सूर्य ग्रहाणि की मण्डल गति

ग ऋतु मास में

घ आश्वि मास में

ङ अभिषेकमास में

८६ क चन्द्र सूर्य ग्रहाणि की एक अहोरात्र में मण्डल गति

ख चन्द्र सूर्य ग्रहाणि की एक युग में मण्डल गति

सोलहवाँ प्रामृत

८७ क चन्द्रिका के पर्याय

ख आश्वि के

ग अक्षरार के

सत्तरहवाँ प्रामृत

८८ क चन्द्र सूर्य का अवतार मरण

ख चन्द्राणि का उपवास ज्ञान

इस विषय में अन्य पञ्चीस प्रतिपत्तिर्वा

ग स्वमत का प्रतिपादन

अठारहवाँ प्राभृत

- ८६ क- भूमि से चन्द्र सूर्यादि की ऊँचाई का परिमाण
इस सम्बन्ध में अन्य पच्चीस प्रतिपत्तियाँ
- ख- स्वमत का यथार्थ प्रतिपादन
- ग- ज्योतिषी देवों की एक-दूसरे से दूरी का अन्तर
- ८७ क- चन्द्र सूर्य के विमान के नीचे ऊपर और सम विभाग में ताराओं के विमान
- ख- नीचे, ऊपर और समविभाग में ताराविमानों के होने का हेतु
- ८८ एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का परिवार
- ८९ क- मेरु पर्वत से ज्योतिषचक्र का अन्तर
- ख- लोकान्त से ज्योतिषचक्र का अन्तर
- ९० जम्बूद्वीप में सर्वाभ्यन्तर, सर्वबाह्य, सर्वोपरि और सबसे नीचे चलने वाले नक्षत्र
- ९१ क- चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के विमानों के संस्थान
- ख- चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के विमानों का आयाम-विष्कम्भ और बाह्यत्व
- ग- चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा विमानों का वहन करनेवाले देवों की संख्या और उनका दिशाक्रम से रूप
- घ- पाँच ज्योतिष्क देवों में शीघ्र या मन्द गति
- ङ- पाँच ज्योतिष्क देवों का गति की अपेक्षा से अल्प-बहुत्व
- ९२ जम्बूद्वीप में एक तारा विमान से दूसरे तारा विमान का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर
- ९३ क- चन्द्र की अग्रमहीपियाँ, प्रत्येक अग्रमहीपी का परिवार प्रत्येक अग्रमहीपी की विकुर्वणा शक्ति, चन्द्रावतंसक विमान की सुधर्मा सभा में जिन अस्थियों का सम्मान
- ख- सूर्य की अग्रमहीपियाँ आदि चन्द्र वर्णन के समान
- ९४ क- ज्योतिषी देव-देवियों की जघन्य- उत्कृष्ट स्थिति

अ चन्द्र विमान के देव-देवियों की अषय उद्गृह स्थिति
 ग सूर्य विमान के देव-देवियों की अषय उद्गृह स्थिति
 घ ग्रह विमान के देव-देवियों की अषय उद्गृह स्थिति
 ङ तारा विमान के देव-देवियों की अषय उद्गृह स्थिति

६८ पाँच ज्योतिषी देवों का अषय-उद्गृह

उन्नीसवाँ प्राकृत

६९ अ चन्द्र मूत्र नारे लोक की प्रकाशित वस्तु है या लोक के विमान
 की इस सम्बन्ध में अथ वारह प्रविशतिवा

स स्वमन्त्र का सम्बन्ध विष्णु

ग लवण समुद्र का सम्बन्ध आशाम विष्णु और परिधि

घ लवण समुद्र में चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारे

ङ धानकी लवण का सम्बन्ध आशाम विष्णु और परिधि

च धानकी लवण में चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारे

छ काना का सम्बन्ध आशाम विष्णु और परिधि

ज काना में चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारे

झ पुष्कर द्वीप का सम्बन्ध आशाम विष्णु और परिधि

ञ पुष्कर द्वीप में चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारे

ट पुष्कराक्ष का सम्बन्ध आशाम विष्णु और परिधि

ठ पुष्कराक्ष में चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारे

ड मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र आदि की उत्पत्ति और गति

ढ इन्द्र के अश्वान में व्यवस्था इन्द्र का अषय उद्गृह विरह काम

ण मनुष्य क्षेत्र के बाहर चन्द्र आदि की उत्पत्ति और गति

त इन्द्र के अश्वान

१०० १०३ पुष्कराक्ष का सम्बन्ध आशाम विष्णु और परिधि

स पुष्कराक्ष में चन्द्र आदि

ग स्वयम्भूरमण पयस्य द्वीप समुद्रों का आशाम विष्णु और परिधि

णमो तत्त्वोसहिपत्ताणं
धर्मकथानुयोगमय निरयावलिकादि

पाँच उपाँग

श्रुत स्कंध	१
अध्ययन	५२
वर्ग	५
मूल पाठ	११०० श्लोक प्रमाण

निरयावलिकादि पाँच उपांग-विषय सूची

प्रथम निरयावलिका वर्ग

प्रथम काल अध्ययन

- १ क- उत्पानिका-राजगृह-गुप्तमान चैत्य-अनोक वृक्ष
- ख- आर्य मुषर्मा का समवसरण, धर्मकथा
- ग- भ० जन्म की जिज्ञासा
उपाङ्गों के सम्बन्ध में भ० महावीर का कथन
- घ- उपाङ्गों के पाँच वर्ग
- ङ- प्रथम वर्ग के दस अध्ययन
- च- प्रथम अध्ययन का वर्णन
- छ- चम्पा नगरी, पूर्ण भद्र चैत्य, श्रेणिक, चेलगा
हूणिक राजा, पदमावती देवी.
- ज- कानीदेवी का पुत्र काल कुमार
- झ- काल कुमार का रथ-मुगल संश्राम में बुझाये गमन
- ञ- काल कुमार के सम्बन्ध में काली देवी के संकल्प
- ट- भ० महावीर का समवसरण, धर्मदेसना
- ठ- कानीदेवी की काल कुमार के सम्बन्ध में जिज्ञासा
- ड- भ० महावीर का समाधान
- ण- चैत्रा राजा के दास प्रहार से काल कुमार की मृत्यु
- प- शोक विह्वल कालीदेवी का स्व-म्यान गमन
- त- भ० गौतम की जिज्ञासा
कालकुमार की मृत्यु के पश्चात् गति ?
- थ- भ० महावीर द्वारा समाधान

द्वितीय सुकाल अध्ययन

काल के समान सुकाल का वर्णन

तृतीय से दशम अध्ययन पर्यन्त

शेष आठ राजकुमारों का कालकुमार के समान वर्णन

द्वितीय कल्पावतंसिका वर्ग

प्रथम पद्य अध्ययन

- १ क- उत्थानिका दस अध्ययनों के नाम
- ख- प्रथम अध्ययन का वर्णन
- ग- काल कुमार की रानी पद्मावती के सुपुत्र पद्म कुमार की भ० महावीर के समीप अणगार प्रव्रज्या
- घ- रत्नत्रय की साधना
- ङ- सौधर्म के चंद्रिम विमान में उत्पत्ति
- च- देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म, वैराग्य साधना, शिवपद

द्वितीय से दशम अध्ययन पर्यन्त

- क- शेष नो का पद्म के समान वर्णन
- ख- शेष नो की दीक्षा पर्याय
- ग- क्रम से उपर के देवलोकों में उतरति
- घ- मयका महाविदेह में जन्म और निर्वाण

तृतीय पुष्पिका वर्ग

प्रथम चन्द्र अध्ययन

- १ क- उत्थानिका—दश अध्ययनों के नाम
- ख- प्रथम अध्ययन-राजगृह-गुणशील चैत्य-श्रेणिक राजा
- ग- भ० महावीर का पदार्पण, धर्म परिपद, प्रवचन
- घ- ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र का जम्बूद्वीप अवलोकन
- ङ- भ० महावीर के दर्शनार्थ आगमन, नृत्य, दर्शन, स्वस्थान गमन

- द काग कुमार का चौथी नरक में गमन
- ध गमन का हेतु ?
- न चेलणा का दोहदा
- द अभयकुमार द्वारा दाह्न की पूर्ति
- फ चेलणा का गमनात् के लिए प्रयत्न
- ब पुत्र जन्म उकरडी पर शिशु को उलबाना शिशु की उगती पर मुग की चौथ का प्रहार अग्निक द्वारा शिशु को उकरडी से मगवाना शिशु को अगुला का पकना अगुली की चिकित्सा
- भ कूणिक नाम देना पालन पोषण शिशा विवाह
- म कूणिक का अग्निक को ब दी बनाने का तथा अपने राज्याभिषेक का समर्थ
- य काल आदि दस भाग्यो को राज्य विभाग देने का प्रलोभन
- र अग्निक को ब दी बनाना—कूणिक का रा याभिषेक
- न बनना का कूणिक को पुत्र हत्ता ल मुनाना
- ब अग्निक को ब धन मुक्त करने के लिये जाना
- श अग्निक का तानपुट विष में आत्मघात
- ष भनपुर सहित बन्तकुमार और सेवनक गय हस्ती की जल थोडा से पचावती को ईर्ष्या
- त पचावती की प्रेरणा से हार हाथी लौटाने की बह्म से कूणिक की माग
- ह वैहल का विन्हेह जनपद की बशासी राजधानी में राजा चेटक में सरक्षण चाहना
- चेटक और कूणिक का युद्ध
- काल आदि का कूणिक को सहयोग
- काग कुमार की मृत्यु अनुप नरक में उत्पत्ति
- नरक से उद्घातन के पश्चात् महाविन्हेह ॥ कर्म बराग्य प्रख्या साधना और निवर्ण

ज- जातिभोज, ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब भार सौंपना, चान प्रस्थ-
तापस बनना

झ- अनेक प्रकार के चानप्रस्थ तापस

ञ- सोमिल का दिशा प्रोक्षिका प्रव्रज्या स्वीकार करना

ट- सोमिल का अभिग्रह

ठ- सोमिल का काष्ठमुद्रा से मुग बांधना

ड- सोमिल के समीप एक देव का आगमन—दुष्प्रव्रज्या कथन,

ढ- दुष्प्रव्रज्या के सम्बन्ध में देव से प्रश्न

ण- देव द्वारा समाधान

त- सोमिल का पुनः श्रावक धर्म आराधन

थ- शुक्रावतंसक विमान में उपपात

द- देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

चतुर्थ बहुपुत्रिका अध्यायन

१ क- उत्पानिका—राजगृह—गुणशीलचैत्य, श्रेणिक राजा, महावीर
का समवसरण, धर्म-देशना

ख- बहुपुत्रिका देव का आगमन

ग- भ० गौतम की जिज्ञासा

घ- भ० महावीर द्वारा पूर्वभव वर्णन—वाराणसी नगरी,—आम्र-
शालवन, भद्र साधवाह, सुभद्रा भार्या

ङ- सुभद्रा का दार्तध्यान, वंछ्यापन से व्याकुलता

च- सुव्रता आर्या का पदार्पण

छ- एक साधवी संघ का गिदार्थ जाना, सुभद्रा की निर्ग्रथ
प्रवचन में सचि उत्पन्न होना

ज- गृहस्थ धर्म की स्वीकृति

झ- अनगार प्रव्रज्या लेने का संकल्प

ञ- सुभद्रा की अनगार प्रव्रज्या, संयम साधना

ट- सुभद्रा की शिशु पालन पोषण में अभिरुचि

५. श्रीपति वरुण के आश्रय, शिष्ट कर्तव्य

भ मङ्गल-नक्षत्र है अथवा धीरे स्थिति

द्वितीयो हि राजस्य अध्ययनपर्यन्तः

३. लक्ष्मी का धुना के सामान वर्णन

पंचमः सहि दसा वर्गः

सूतम् निषङ्ग अप्ययन

1. क. कुलानिवा-बारह अक्षरों के नाम

॥ प्रत्यक्ष अभ्यासम् वर्जितम् ॥

॥१॥ सगरी, रैबनच पर्यंत, सुदय अथ उद्याय

भारतीय संघ का संस्थापन

॥ शुभं कर्म भाग्यं कारिणी हिमवतः पर्वतः ॥

५. अमरेंद्र शास्त्री, ऐश्वरी राणी, निषड कुमार

क. भारत को अधिक तेजी से आधुनिक बनाने के लिए

॥ १५४ ॥ अर्धं भवतु, भवतु धर्मं चैव स्वीकृतं

11. भारतीय आभूषण व्यवसाय के विकास की प्रणाली

५) लक्ष्मीनारायण काशी-मन्त्रालय—लक्ष्मीनारायण, मन्त्र,

विहीनता, निम्नस्तर असाध्य, मजिदर मशरुदा यथायथ

सहायक प्रा. प्रो. हरभाषणी के.पी. श्रीराम स्वामी

६- शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना।

अनर्गल विषयः — नमः नमः नमः

उ. संसदीय कार्य में मनोरंजन विभाग में उपपाठ, स्थिति, क्षेत्रीय से सम्बन्ध

क- निषदः कुषाणरक्ष्यः स ज्ञ-स

द निषत्त का प्रवर्ज्या सने का संकल्प

का भ० अष्टि नेमिनाथ का

अभिलेखित पत्राचार आदेशित नमूना-
 अभिलेखित पत्राचार आदेशित नमूना-  3

ज- सौधमंकल्प के पूर्णभद्र विमान में उपपात

झ- पूर्णभद्र देव की स्थिति

देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

षष्ठ अध्ययन से दशम अध्ययन पर्यन्त

क- पांच अध्ययनों का वर्णन-पूर्णभद्र अध्ययन के समान

ख- मणिभद्र गाथापति—मणिवति नगरी

ग- दत्त गाथापति—चदना नगरी

घ- शिव गाथापति—मिथला नगरी

ङ- बल गाथापति—हस्तिनापुर

च- अनाधृत गाथापति—काकदी नगरी

चतुर्थ पुष्पचूला वर्ग

प्रथम भूता अध्ययन

१- क उत्पानिका-दश अध्ययनों के नाम

ख- प्रथम अध्ययन राजगृह, गुणशील चैत्य, भ० महावीर का सम
वसरण-धर्मदेशना

ग- सौधमं कल्प मे श्री देवी का भागमन, नाट्य दर्शन

घ- भ० गोतम द्वारा पूर्वभव पृच्छा

ङ- महावीर द्वारा पूर्व भव का वर्णन

च- राजगृह, जितशत्रु कूणिक-राजा

छ- सुदर्शन गाथापति, प्रिया भार्या, भूता-पुत्री

ज- भूता का अविवाहित रहना

झ- भ० पाश्वनाथ का समवसरण-धर्म कथा, भूता का धर्म श्रवण,
वैराग्य, अनगार प्रव्रज्या

ञ- भूता की शरीर सुश्रूपा

ट- भूता का अलग उपाश्रय में निवास, स्वच्छन्द जीवन, आमण्य
विराघना

- ट मुभद्रा का भिन्न उपाश्रय से निशाम स्वच्छ जीवन आगच्छ
 विराघना सौधमकप म उपपात
 ड बहुपुत्रिका देवी का नाम प्रस्थान
 ढ बहुपुत्रिका देवी की स्थिति
 ण देवनोक से ध्ववन
 त जम्बूद्वीप भरत विध्यगिरि, विभक्त सन्निवेश शाहण कुल के
 जम सोमा नाम देना सुवा होने पर राष्ट्रकूट विवाह
 थ सोमा का वत्तोम पुत्री के पानन पोषण म ध्वयिग होना
 द सोमा का अनगार प्रवृत्ता सेने का सकप
 ध सुवना आर्षा का पराषण
 न सोमा का धम श्वण शमनोरानिका वना
 द सुवना आर्षा का विहार
 फ सुवना का पुन पनाषण
 ब सोमा की अनगार प्रवृत्ता—समय साधना
 भ शक के सामनिक देवरूप म उपपात
 म देवनोक से ध्ववन महाविदेह मे ज न और निर्वाण

पञ्चम पूणभद्र अध्ययन

- १ क उ पानिका राजपूह गुणगील चय म० महावीर का समय
 सरण धमदेशना—
 ख पूणभद्र देव का आभमन नाटय प्रस्थान
 ग भ० गोतम की विज्ञप्ता
 घ भ० म श्वीर द्वारा पुनभव वनन
 ङ जम्बूद्वीप भरत मणिवतिक नगरी चोत्तारण च य
 थ पूणभद्र साधारण
 ॥ बहुधन स्वविरो का आभमन मध ध्ववन वराग्य अनगार
 प्रवृत्ता समय साधना

त- निपट का सर्वार्थ सिद्ध मे उपपात, स्थिति, च्यवन

थ- महाविदेह में जन्म और निर्वाण

द- उपसंहार—शेष इग्यारह अध्ययनो का वर्णन—निपट अध्ययन के समान

ध- एक श्रुतस्कध-पाँच वर्ग

चार वर्गों में दश-दश उद्देशक व पाँचवें वर्ग में बारह उद्देशक

णमो समणार्णं

चरणानुयोगमय दशवैकालिक

अध्ययन	१०
चूलिका	२
उद्देशक	१४
उपलब्ध मूल पाठ	७०० श्लोक प्रमाण
पद्य-सूत्र	५१४
गद्य-सूत्र	३१



अध्ययन	गाथा
१ द्रुमपुष्पिका	५
२ श्रामण्य पूर्वक	११
३ क्षुल्लकाचार	१५
४ धर्मप्रज्ञप्ति या पद जीवनिता	२८ सूत्र २३
५ पिरडैपणा	१५०
६ महाचार	६८
७ वान्य शुद्धि	५७
८ आचार-प्रणिधि	६३
९ विनय-समाधि	६२ सूत्र ७
१० समिधु	२६
१ प्रथमा चूलिका रति वाक्या	१८ सूत्र १
२ द्वितीया चूलिका विविक्त चर्या	१६

चरणानुयोगमय दशवैकालिक

विषय-सूची

प्रथम द्रुमपुष्पिका अध्ययन

(धर्म प्रशंसा और माधुकरी वृत्ति)

- १ धर्म का स्वरूप और लक्षण तथा धार्मिक पुरुष का महत्व.
१-५ माधुकरी वृत्ति.

द्वितीय श्रामण्यपूर्वक अध्ययन

(संयममें धृति और उसकी साधना)

- १ श्रामण्य और मदन काम.
२-३ त्यागी कौन.
४-५ कामराग निवारण या मनोनिग्रह के साधन.
६६ मनोनिग्रह का चिन्तन सूत्र, अगन्धनकुल के सर्प का उदाहरण
१० रथनेमि का समय में पुनः स्थिरी करण.
११ संबुद्ध का कर्तव्य

तृतीय क्षुल्लकाचार-कथा अध्ययन

(आचार और अनाचार का विवेक)

- १-१० निर्ग्रन्थ के अनाचारों का निरूपण.
११ निर्ग्रन्थ का स्वरूप.
१२ निर्ग्रन्थ की ऋतुचर्या.
१३ महर्षि के प्रक्रम का उद्देश्य.
१४-१५ संयम साधना का गौण व मुख्यफल.

चतुर्थं पट् जीवनिक्का धम्मयन (जीव-सयम और आत्म-सयम)

- सूत्र
- १ जीवाजीवाभिगम
- २ ३ पट्जीवनिक्काय का अवक्रम, पट्जीवनिक्काय नाम निर्देन
- ४ ७ पृथ्वी पानी धूम्रि और वायु की चेनना का निरूपण
- ८ वनस्पति की चेनना और उसके प्रकारों का निरूपण
- ९ जमजीवो के प्रकार सनय
- १० जीववध न करने का उपदेश
- १ चारित्र्य धर्म
- ११ प्राणातिपात विरमण—अहिंसा महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पट्ठति
- १२ मृपाषाद विरमण—सत्य महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पट्ठति
- १३ अदत्तादान-विरमण—अधोप महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पट्ठति
- १४ अग्रहणय विरमण—अग्रहणय महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पट्ठति
- १५ परिग्रह विरमण—अपरिग्रह महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पट्ठति
- १६ रात्रिभोजन विरमण—व्रत का निरूपण और स्वीकार पट्ठति
- १७ पाच महाव्रत और रात्रि भोजन विरमण व्रत के स्वीकार का हेतु
- ३ यतना
- १८ पृथ्वीकाय की हिंसा के विविध साधनों से बचने का उपदेश
- १९ अरकाय

- २० तेजस्काय की हिमा के विविध साधनों से बचने का उपदेश
 २१ वायुकाय " " "
 २२ वनस्पतिकाय " " "
 २३ अगस्त्य की हिमा में बचने का उपदेश.

४ उद्देश

गाथा

- १ अयतनापूर्वक चलने में हिमा, बंधन और परिणाम.
 २ अयतनापूर्वक गड़े रहने में हिमा बंधन और परिणाम.
 ३ " बैठने में " "
 ४ " सोने में " "
 ५ अयतनापूर्वक भोजन करने में हिमा, बन्धन और परिणाम.
 ६ " धोने में हिमा " "
 ७ प्रवृत्ति में अहिमा की जिज्ञासा.
 ८ " " का निरूपण.
 ९ आत्मीय-शुद्धि सम्पन्न व्यक्ति और अवंध.
 १० ज्ञान और दया (मयम) का पौर्याण्य और अज्ञानी की भर्त्सना.
 ११ श्रुति का माहात्म्य और श्रेयम् के आचरण का उपदेश.

५ धर्म-फल

- २२-२५ कर्ममे-मुक्ति की प्रक्रिया-आत्म-शुद्धि का आरोह क्रम.
 संयम के ज्ञान का अधिकारी.
 गति-विज्ञान.
 बंधन और मोक्ष का ज्ञान.
 आसक्ति व वस्तु-उपभोग का त्याग.
 संयोग का त्याग.
 मुनिपद का स्वीकरण.
 चारित्रिक भावों की वृद्धि.

पूवगचित कमरज का निवरण
केवलज्ञान और केवल दान की संप्राप्ति
लोक-जनोक का प्रत्यक्षीकरण
योग निरोध

गलेसी अवस्था की प्राप्ति
कर्मों का सम्पूर्ण क्षय
सास्वन सिद्धि की प्राप्ति

- २६ सुगति की दुस्रमता
२७ सुगति की सुसभता
२८ यत्नता का उपदेश और उपनहार

पञ्चम पिण्डवणा अभ्ययन

प्रथम उद्देशक

(एषणा गवेषणा, ग्रहणवणा और भोगवणा की शुद्धि)

(१) गवेषणा

- ११ भोजन पानी की ग्रवेषणा के निये कब बहूँ और कँमे जाय ?
४ विषम माग से जाने का नियेध
५ विषम माग से जाने से होनेवाले दोष
६ सामान के अभाव से विषम माग से जाने की विधि
७ अगार आदि के अतिक्रमण का नियेध
८ वर्षा आदि से बिना के निये जाने का नियेध
९१ वेषणा के पाटे में बिनाग्न करने का नियेध और बहूँ होनेवाले दाया का निरूपण
१२ आरम विराधना के स्थलों में जाने का नियेध
१३ गमन की विधि
१४ अविधि-गमन का नियेध
१५ दाया स्थान के अन्वेषण का नियेध

- १६ मन्त्रणागृह के समीप जाने का निषेध
 १७ प्रतिक्रुष्ट आदि कुलो से भिक्षा लेने का निषेध
 १८ साणी (चिक) आदि को खोलने का विधि-निषेध.
 १९ मल-मूत्र की बाधा को रोकने का निषेध.
 २० अधिकारमय स्थान में भिक्षा लेने का निषेध.
 २१ पुष्प, चीज आदि बिगड़े हुए और अशुभोपलिप्त आगण में जाने का निषेध-एपणा के नवें दोष—"लिप्त" का वर्जन.
 २२ भेष, वस्त्र आदि को लाचकर जाने का निषेध
 २३-२६ गृह-प्रवेश के बाद अवलोकन, गमन और स्थान का विवेक

(२) ग्रहणैपणा

भक्तपान लेने की विधि

- २७ आहार-ग्रहण का विधि-निषेध
 २८ एपणा के दसवें दोष "छिदित" का वर्जन.
 २९ जीव-विराधना करते हुए दाता से भिक्षा लेने का निषेध
 ३०-३१ एपणा के पाँचवें (सहृत् नामक) और छठे (दायक नामक) दोष का वर्जन
 ३२ पुर कर्म दोष का वर्जन
 ३३-३५ असमृष्ट और समृष्ट का निरूपण पश्चात् कर्म का वर्जन
 ३६ समृष्ट हस्त आदि से आहार लेने का निषेध
 ३७ उद्गम के पन्द्रहवें दोष "अनिमृष्ट" का वर्जन
 ३८ निमृष्ट-भोजन लेने की विधि
 ३९ गर्भवती के लिए बनाया हुआ भोजन लेने का विधि निषेध—
 एपणा के छठे दोष "दायक" का वर्जन
 ४०-४१ गर्भवती के हाथ से लेने का निषेध
 ४२-४३ स्तन्य-पान कराती हुई स्त्री के हाथ से भिक्षा लेने का निषेध
 ४४ एपणा के पहले दोष "शक्ति" का वर्जन

- ४५ ४६ उदगम के बारहव दोष उदमिन का वजन
 ४७ ४८ दानाय किया हुआ आहार लेने का निषेध
 ४९ ५० पुण्याय किया हुआ आहार लेने का निषेध
 ५१ ५२ वनोपक के लिए किया हुआ आहार लेने का निषेध
 ५३ ५४ शयन के लिए किया हुआ आहार लेने का निषेध
 ५५ औद्देशिक आदि दोष युक्त आहार लेने का निषेध
 ५६ भोजन के उदगम की परीक्षा विधि और शुद्ध भोजन लेने का विधान
 ५७ ५८ एषणा के सातव दोष उमिथ का वजन
 ५९ ६० एषणा के तीसरे दोष निशिप्त का वजन ()
 ६१ ६४ दाघर दोष युक्त निष्ठा का निषेध
 ६५ ६६ अक्षिर शिला काष्ठ आदि पर पैर रखकर जाने का निषेध और उसका कारण
 ६७ ६८ उदगम के तेरहव दोष मासापहून का वजन और उसका कारण
 ६९ ७० सचित्त क " मूत्र आदि लेने का निषेध
 ७१ ७२ सचित्त रज ममूत आहार आदि लेने का निषेध
 ७३ ७४ जिनमें खाने का थोड़ा भाग हो और फटना अधिक पड़े ऐसी वस्तुएं लेने का निषेध
 ७५ तत्काय धोवन लेने का निषेध एषणा के आठव दोष अपरिणत का वजन
 ७६ परिणत धोवन लेने का विधान
 ७७ ७८ धोवन की उपयोगिता में सदेह होने पर चमकर लेने का विधान
 ७९ प्यास शयन के लिए अनुपयोगी जन लेने का निषेध
 ८० अमास मली से लव्य अनुपयोगी जन लेने का निषेध
 ८१ अनुपयोगी जन के परछने की विधि

(३) भोगैषणा

भोजन करने की आपवादिक विधि:—

- ८२-८३ भिक्षा-काल में भोजन करने की विधि,
 ८४-८६ आहार में पड़े हुए तिनके आदि की परठने की विधि
 ८७ उपाश्रय में भोजन करने की विधि
 स्थान—प्रतिलेखन पूर्वक भिक्षा के विशोधन का संकेत
 ८८ उपाश्रय में प्रवेश करने की विधि, इर्यापथिकी पूर्वक कायो-
 त्सर्ग करने का विधान
 ८९-९० गोचरी में लगने वाले अतिचारों की यथाक्रम स्मृति
 और उनकी आलोचना करने की विधि
 ९१ सम्यग् आलोचना न होने पर पुनः पुनः प्रतिक्रमण का विधान
 ९२ कायोत्सर्ग काल का चिन्तन
 ९३ कायोत्सर्ग पूरा करने की और उसकी उत्तरकालीन विधि
 ९४-९५ विश्राम-कालीन चिन्तन, साधुओं का भोजन लिए निमंत्रण,
 सह भोजन
 ९६ एकाकी भोजन, भोजनपात्र और खाने की विधि
 ९७-९९ मनोज्ञ या अमोनज्ञ भोजन में समभाव रखने का उपदेश
 १०० मुधादायी और मुधाजीवी की दुर्लभता और उनकी गति
 पिण्डैषणा (दूसरा उद्देशक)
- १ जूठन न छोड़ने का आदेश
 २-३ भिक्षा में पर्याप्त आहार न आने पर आहार-भवेपणा विधान
 ४ यथा समय कार्य करने का निर्देश
 ५ अकाल भिक्षाचारी श्रमण को उपालम्भ
 ६ भिक्षा के लाभ और अलाभ में समता का उपदेश
 ७ भिक्षा की गमन विधि, भक्तार्थ एकत्रित पशुपक्षियों को लांघ-
 कर जाने का निषेध

८ गोबरराश बन्ने और कषा आदि बहने का निषेध

९ अगना आदि को उत्तपर मिता के लिए घर से जाने का निषेध

१० ११ भिक्षारी आदि को नाथर मिता के लिए घर से जाने का निषेध और उसके दोषों का निरूपण उनके

१२ १३ लोह जाने पर प्रवेग का विधान

१४ १७ अरियाली को कुचरकर देने वाले से मिता लेने का निषेध

१८ १९ अपरव सजीव पशु आदि लेने का उपदेश

२० एक बार भुने हुए गमी पान्य को लेने का निषेध

२१ २४ अपरव सजीव पशु आदि लेने का उपदेश

२५ सामुदायिक भिक्षा का विधान

२६ अग्नि भाव से मिता लेने का उपदेश

२७ २८ अगना के प्रति कोष न करने का उपदेश

२९ ३० अशुद्धि पुष्क याचना करने व न देखेतर कठोर वचन बहने का निषेध

उत्पान्न के ग्राह्य शेष पुनः सम्भव का निषेध

३१ ३२ रस मानुषता और सज्जनित दुष्टपरिणाम

३३ ३४ विज्ञान में सरस आधार और मण्डली में विरस आधार करने वाले की मनोभावना का चित्रण

३५ पूजायिता और सज्जनित शेष

३६ मद्यपान करने का निषेध

३७-४१ स्तन्य उत्ति से मद्यपान करने वाले भुक्ति के दोषों का प्रमाण

४२ ४४ गुणानुग्रही की मकर माधवा और अराधना का निरूपण

४५ प्रणीतम् और मद्यपानवर्ती तपस्वी के बन्ध्याण का उपमान

४६ ४९ तप आदि में सर्वविध माया रूपा में होने वाली दुर्गति का निरूपण और उसके वचन का उपदेश

५० विद्वत्पणा का उपसहार सयाचारी के मध्यम व लन का उपदेश

षष्ठ महाचार कथा अध्ययन

- १-२ निर्ग्रन्थ के आचार-गोचर की वृत्त्या
 ३-६ निर्ग्रन्थों के आचार की दुश्चरता और सर्वसामान्य आचरणी-
 यता का प्रतिपादन
 ७ आचार के अठारह स्थानों का निर्देश

पहला स्थान :— अहिंसा

- ८-१० अहिंसा की परिभाषा, जीव-वध न करने का उपदेश, अहिंसा के
 विचार का व्यावहारिक आधार

दूसरा स्थान :— मर्यादा

- ११-१२ मृषावाद के कारण और मृषा न बोलने का उपदेश मृषावाद
 वर्जन के कारणों का निष्पन्न

तीसरा स्थान :— अर्चय

- १३-१४ अदत्त ग्रहण का निषेध

चौथा स्थान :— अन्नचर्य

- १५-१६ अन्नह्यचर्य सेवन का निषेध

पांचवां स्थान :— अपरिग्रह

- १७-१८ सन्निधि का निषेध, सन्निधि चाहने वाले श्रमण की गृहस्थ से
 तुलना

- १९ धर्मोपकरण रखने के कारणों का विधान

- २० परिग्रह की परिभाषा

- २१ निर्ग्रन्थों के अनमत्त्व का निष्पन्न

छठा स्थान :— रात्रि-भोजन का त्याग

- २२ एक भक्त भोजन का निर्देशन

- २३-२५ रात्रि-भोजन का निषेध और उसके कारण

सातवां स्थान :— पृथ्वीकाय की यतना

दोष-दर्शनपूर्वक पृथ्वीकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

आठवीं स्थान—अपकाय की यत्ना

२६ ३१ अमण अपकाय की हिंसा नहीं करते

दोष-दर्शनपूर्वक अपकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

नववीं स्थान—तेजस्काय की यत्ना

३२ अमण अग्नि की हिंसा नहीं करते

३३-३५ तेजस्काय की अमानवता का निरूपण

दोष—दर्शनपूर्वक तेजस्काय की हिंसा का निषेध और उसका निरूपण

दसवीं स्थान—वायुकाय की यत्ना

३६ अमण वायु का समारम्भ नहीं करते

३७ ३८ विभिन्न भाषणों में वायु उत्पन्न करने का निषेध

दोष-दर्शनपूर्वक वायुकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

ग्यारहवीं स्थान—वनस्पतिकाय की यत्ना

४०-४२ अमण वनस्पतिकाय की हिंसा नहीं करते

दोष-दर्शनपूर्वक वनस्पतिकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

बारहवीं स्थान—व्रमकाय की यत्ना

४३ ४५ अमण व्रमकाय की हिंसा नहीं करते

दोष-दर्शनपूर्वक व्रमकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

तेरहवीं स्थान—अकल्प

४६-४७ अकल्पनीय वस्तु सने का निषेध

४८-४९ नित्यादि लेने में उत्पन्न होनेवाले दोष और उसका निषेध

चौदहवो स्थान—गृहि भाजन

५०-५२ गृहस्थ के भाजन में भोजन करने से उत्पन्न होनेवाले दोष और उसका निषेध

पन्द्रहवाँ स्थान—पर्यंक

५३ आसन्दी, पर्यंक आदि पर बैठने, मोने का निषेध

५४ आसन्दी आदि विषयक निषेध और अपवाद

५५ आसन्दी और पर्यंक के उपयोग के निषेध का कारण

सोलहवाँ स्थान—निषद्या

५६-५९ गृहस्थ के घर में बैठने से होनेवाले दोष, उसका निषेध और अपवाद

सत्तरहवाँ स्थान—स्नान

६०-६२ स्नान से उत्पन्न दोष और उसका निषेध

६३ गात्रोद्द्वर्तन का निषेध

अठारहवाँ स्थान—विभूषावर्जन

६४-६६ विभूषा का निषेध और उसके कारण

६७-६८ उपसंहार

आचारनिष्ठ धर्म की गति

सप्तम वाक्य शुद्धि अध्ययन (भाषा-विवेक)

१ भाषा के चार प्रकार, दो के प्रयोग का विधान और दो के प्रयोग का निषेध

२ अव्यक्तव्य सत्य, सत्यासत्य, मृषा और अनाचीर्ण व्यवहार भाषा बोलने का निषेध

३ अनवद्य आदि विशेषणयुक्त व्यवहार और सत्य भाषा बोलने का विधान

४ सन्देह में डालने, वाली भाषा या भ्रामक भाषा के प्रयोग का निषेध

५ सत्यामृषाभाषा को मत्स्य कहने का निषेध

- ६७ निम्न होना सन्धि हो उसका दिन निश्चयात्मक भाषा में बोलने का नियम
- ६ अन्तः विषय को निश्चयात्मक भाषा में बोलने का नियम
- ६ दक्षिण भाषा का प्रतिपक्ष
- १० नि गतिन भाषा बोलने का विधान
- ११ १२ पश्य और हिमात्मक मयभाषा का नियम
- १४ तुच्छ और अस्मानजनक सम्बोधन का नियम
- १५ पारिवारिक समर्थ—सूचक भाषा में स्त्रियों का सम्बोधन करने का नियम
- १६ गौरव वाचक या चातुता—सूचक भाषा में स्त्रियों को सम्बोधन करने का नियम
- १७ नाम और गोत्र द्वारा स्त्रियों को सम्बोधन करने का विधान
- १८ पारिवारिक समर्थ—सूचक भाषा में पुरुषों का सम्बोधन करने का नियम
- १९ गोत्र-वाचक या चातुता—सूचक भाषा में पुरुषों को सम्बोधन करने का नियम
- २० नाम और गोत्र द्वारा पुरुषों को सम्बोधन करने का विधान
- २१ स्त्री या पुरुष का सन्दर्भ हानवर सम्बन्धित आतिथ्यक भाषा द्वारा निर्देश करने का विधान
- २२ अधीनिकर और उपनिर्दिष्ट वचन द्वारा सम्बोधन करने का नियम
- २३ पारिवारिक अवस्थाया के निर्देश के उपपुत्र भाषा के प्रयोग का विधान
- २४ २५ गाद और बल के बारे में बोलने का विवेक
- २६ २७ दण और वृत्तावयवों के बारे में बोलने का विवेक
- २४ ३५ औपनि (अनाज) के बारे में बोलने का विवेक
- २६ ३६ मन्त्रि (जीमन्तार) के बारे में बोलने का विवेक

- ४०-४२ सावद्य प्रवृत्ति-के सम्बन्ध में बोलने का विवेक
 ४३ विषय आदि के सम्बन्ध में वस्तुओं के उत्कर्ष सूचक शब्दों के प्रयोग का निषेध
 ४४ चिन्तनपूर्वक भाषा बोलने का उपदेश
 ४५-४६ लेने देने की परामर्शदात्री भाषा के प्रयोग का निषेध
 ४७ अमंयति को गमनागमन आदि प्रवृत्तियों का आदेश देने वाली भाषा के प्रयोग का निषेध
 ४८ अमाधु को साधु कहने का निषेध
 ४९ गुण सम्पन्न संयति को ही साधु कहने का विधान
 ५० किसी की जय-पराजय के बारे में अभिलाषात्मक भाषा बोलने का निषेध
 ५१ पवन आदि होने या न होने के बारे में अभिलाषात्मक भाषा बोलने का निषेध
 ५२-५३ मेघ, आकाश और राजा के बारे में बोलने का विवेक
 ५४ सावधान्यमोदनी आदि विशेषणयुक्त भाषा बोलने का निषेध
 ५५-५६ भाषा विषयक विधि निषेध
 ५७ परीक्ष्यभाषी और उससे प्राप्त होनेवाले फल का निरूपण

अष्टम आचार-प्रणिधि अध्ययन (आचार का प्रणिधान)

- १ आचार-प्रणिधि के प्ररूपण की प्रतिज्ञा.
- २ जीव के भेदों का निरूपण
- ३-१२ पञ्जीविकाय की यतना-विधि का निरूपण.
- १३-१६ आठ सूक्ष्म-स्थानों का निरूपण और उनकी यतना का उपदेश
- १७-१८ प्रतिलेखन और प्रतिष्ठापन का विवेक.
- १९ गृहस्थ के घर में प्रविष्ट होने के बाद के कर्तव्य का उपदेश.

- २० २१ दृष्ट और श्रुत के प्रयोग का विवेक और गृह्ययोग—गृह्य को धरेनु प्रवृत्तिर्जों से भाग लेने का निषेध
- २२ गृह्य को मित्रा की सरसता नीरमता तथा प्राप्ति और अप्राप्ति के निर्देश करने का निषेध
- २३ भोजनगृही और अप्राप्त भोजन का निषेध
- २४ स्नान-प्राण के सग्रह का निषेध
- २५ दहावृत्ति आदि विगेषणयुक्त मुनि के श्रिये कोष न करने का उपदेश
- २६ प्रिय शब्दों से राग न करने और कर्कश शब्दों से सम्मने का उपदेश
- २७ शारीरिक कष्ट सहने का उपदेश और उसका परिणाम दशन
- २८ रात्रि भोजन परिहार का उपदेश
- २९ अस्व साम में शांत रहने का उपदेश
- ३० पर तिरस्कार और आत्मोत्कष न करने का उपदेश
- ३१ वतमान पात्रके मवरण और उसकी पुनरावृत्ति न करने का उपदेश
- ३२ अनाचार को न छिपाने का उपदेश
- ३३ अनाचार वचन के प्रति शिष्य का कृतव्य
- ३४ जीवन की क्षणभंगुरता और भोग निवृत्ति का उपदेश
- ३५ धर्माचरण की लक्ष्यता शक्ति और स्वास्थ्य मध्य न दशा में धर्माचरण का उपदेश
- कथाय
- ३६ कथाय के प्रकार और उनके त्याग का उपदेश
- ३७ कथाय का अर्थ
- ३८ कथाय विजय के उपाय
- ४० विनय, आचार और इन्द्रिय सयम में प्रवृत्त रहने का उपदेश

४१ निद्रा आदि दोषों को वर्जने और स्वाध्याय में रत रहने का उपदेश.

४२ अनुत्तर अर्थ की उपलब्धि का मार्ग.

४३ बहुश्रुत की पर्युपासना का उपदेश.

४४-४५ गुरु के समीप बैठने की विधि.

४६-४८ वाणी का विवेक.

४९ वाणी की स्खलना होने पर उपहास करने का निषेध.

५० गृहस्थ को नक्षत्र आदि का फल बताने का निषेध.

५१ उपाश्रय की उपयुक्तता का निरूपण,
ब्रह्मचर्य की साधना और उसके साधन.

५२ एकान्त स्थान का विधान, स्त्री-कथा और गृहस्थ के साथ परिचय का निषेध, साधु के साथ परिचय का उपदेश.

५३ ब्रह्मचारी के लिये स्त्री की भयोत्पादकता.

५४ दृष्टि-संयम का उपदेश.

५५ स्त्री मात्र से वचने का उपदेश.

५६ आत्म-गवेपित और उसके घातक तत्त्व.

५७ कामगगवर्धक अंगोपांग देखने का निषेध.

५८-५९ पुद्गल-परिणाम की अनित्यता दर्शनपूर्वक उसमें आसक्त न होने का उपदेश.

६० निष्क्रमण-कालीन श्रद्धा के निर्वाह का उपदेश.

६१ तपस्वी, संयमी, और स्वाध्यायी के सामर्थ्य का निरूपण

६२ पुराकृत-मल के विशोध का उपाय.

६३ आचार-प्रणिधि के फल का प्रदर्शन और उपसंहार.

नवम विनय-समाधि अध्ययन

(प्रथम उद्देशक) :

(विनय से होनेवाला मानसिक स्वास्थ्य.)

१ आचार-शिक्षा के बाधक तत्त्व और-उनसे ग्रस्त श्रमण की दशा का निरूपण.

२४ अल्प प्रज्ञ वयस्क या अल्पधन की अवहेलना का फल

५ १० आचार्य की प्रमत्तता और अवहेलना का फल उनकी अवहेलना की भयकरता का उपमापूवक निरूपण और उनको प्रमत्त रखने का उपदेश

११ अतः त ज्ञानी का भी आचार्य की उपासना करने का उपदेश

१२ धर्मपथ शिक्षक गुरु के प्रति विनय कर्त्तव्य का उपदेश

१३ विशोधि व स्थान और अनुशासन के प्रति पूजा का भाव

१४ १५ आचार्य का गरिमा और भिक्षु परिपद में आचार्य का स्थान

१६ आचार्य की आराधना का उपदेश

१७ आचार्य की आराधना का फल

नवम समाधि अध्ययन

(द्वितीय उद्देशक)

(अविनीत सुविनीत की आपदा सम्पदा)

१ २ दुःख के उत्पत्ति पूर्वक धर्म के मूल और परम का निर्माण

३ अविनीत आत्मा का सत्कार धमण

४ अनुशासन के प्रति कोप और तज्ज्वलित अहित

५ ११ अविनीत और सुविनीत की अपना और सम्पदा का गुणतात्मक निरूपण

१२ शिक्षा प्रवृत्ति का हेतु आज्ञानुवर्तिता

१३ गृहस्थ के शिल्पकला सम्बन्धी अध्ययन और नियम का उदाहरण

१४ शिल्पाचार्य कृत याचना का मद्भन

१५ मानस के उपरान्त भी गुरु का सत्कार आदि की प्रवृत्ति का निरूपण

१६ धर्माचार्य के प्रति आज्ञानुवर्तिता की सहजता का निरूपण

१७ गुरु के प्रति नम्र व्यवहार की विधि

१८ अविधिपूर्वक स्पर्श होने पर समान याचना की विधि,

- १६ अविनीत शिष्य की मनोवृत्ति का निरूपण.
- २० विनीत की मूढम-दृष्टि और विनय पद्धति का निरूपण.
- २१ शिक्षा का अधिकारी.
- २२ अविनीत के लिये मोक्ष की असंभवता का निरूपण.
- २३ विनय-कोविद के लिये मोक्ष की सुलभता का प्रतिपादन.

नवम विनय-समाधि अध्ययन

(तृतीय उद्देशक) : पूज्य कौन ? पूज्य के लक्षण और उसकी अर्हता का उपदेश.

- १ आचार्य की सेवा के प्रति जागरूकता और अभिप्राय की आराधना.
- २ आचार के लिए विनय का प्रयोग, आदेश का पालन और आशातना का वर्जन.
- ३ रात्रिकों के प्रति विनय का प्रयोग, गुणाधिक्य के प्रति नम्रता, वन्दनशीलता और आज्ञानुवर्तिता.
- ४ भिक्षा-विशुद्धि और लाभ-अलाभ में समभाव.
- ५ सतोष-रमण.
- ६ वचनरूपी कांटों को सहने की क्षमता.
- ७ वचनरूपी कांटों की सुदुस्सहता का प्रतिपादन.
- ८ दीर्घमनस्य का हेतु मिलने पर भी सीमनस्य को बनाए रखना.
- ९ सदोष भाषा का परित्याग.
- १० लोलुपता आदि का परित्याग.
- ११ आत्म निरीक्षण, मध्यस्थता.
- १२ स्तब्धता और क्रोध परित्याग.
- १३ पूज्य-पूजन, जितेन्द्रियता और सत्य-रतता.
- १४ आचार-निष्णातता
- १५ गुरु की परिचर्या और उसका फल.

विनय-समाधि अध्ययन

चतुर्थ उद्देशक

- १ ३ समाधि के प्रकार
- ४ विनय समाधि के चार प्रकार
- ५ धृष्ट—
- ६ तप—
- ७ आचार

भाषा

- १ ७ समाधि चतुष्टय की आराधना और उसका फल
- संभिक्षु (भिक्षु कौन ? भिक्षु के संशय और उसकी अहंता का उपदेष्टा)
- १ वित्त समाधि स्त्री सुम्नता और वाग भोग का अनासेवन
- २ ४ जीव हिंसा संचित व अहिंसित आहार और वचन-वाचन का परिमाण
- ५ अष्टा आत्मोक्त्यवधि महावन-स्पृश और आश्रय का सद्वर्ण
- ६ कषाय त्याग ध्रुव-योगिता अविचलता और वृद्धि योग का परिवर्जन
- ७ सम्यग दृष्टि समृद्धता लक्ष्मिन्ता और प्रवृत्ति गोपन
- ८ मनिधि वजन
- ९ साधनिक निमग्नपुत्रक भोजन और भाज्योत्तर स्वाध्याय रतता
- १० कन्दह कारक कषा का वजन प्रशान्त भाव आदि
- ११ सुख दुःख से समभाव
- १२ प्रतिभा स्वीकार उपनयनात्त व निमग्नता और शरीर की अनाशक्ति
- १३ देह विसर्जन सहिष्णुता और अनिदानता
- १४ परीक्षित विजय और आनन्द रतता

- १५ संयम, अध्यात्म-रतता और मूत्रार्थ-विज्ञान
- १६ अमूच्छा, अज्ञान-भिक्षा, त्रय-विषय व्रजन और निस्संगता
- १७ वाणी का संयम और आत्मोत्कर्ष का त्याग
- १८ अलोलुपता, उच्छचारिता और ऋद्धि आदि का त्याग
- १९ मद-व्रजन
- २० नैर्घोष की घोषणा और कुशीललिङ्ग का व्रजन
- २१ भिक्षु की गति का निरूपण

प्रथमा रतिवाक्या चूलिका

(संयम में अस्थिर होने पर पुनः स्थिरीकरण का उपदेश)

- १ संयम में पुनः स्थिरीकरण के १८ स्थानों के अवलोकन का उपदेश और उनका निरूपण
 - २-८ भोग के लिये संयम की छोड़नेवाले की भविष्य की अनभिज्ञता और पश्चात्तापपूर्ण मनोवृत्ति का उपमापूर्वक निरूपण
 - ९ श्रमण-पर्याय की स्वर्गीयता और नारकीयता का सकारण निरूपण
 - १० व्यक्ति-भेद से श्रमण-पर्याय में मुख्य-दुःख का निरूपण और श्रमण-पर्याय में रमण करने का उपदेश
 - ११-१२ संयम-भ्रष्ट श्रमण के होनेवाले ऐहिक और पारलौकिक दोषों का निरूपण
 - १३ संयम-भ्रष्ट की भागासक्ति और उसके फल का निरूपण
 - १४-१५ संयम में मन की स्थिर करने का चिन्तन-सूत्र
 - १६ इन्द्रिय द्वारा अपराजेय मानसिक संकल्प का निरूपण
 - १७-१८ विषय का उपसंहार
- द्वितीया विविक्त चर्या चूलिका
(विविक्त चर्या का उपदेश)
- १ चूलिका के प्रवचन की प्रतिज्ञा और उसका उद्देश्य

- २ अनुश्रुत गमन की बहुमताभिमत दिशान्वर भुमण के लिये प्रति-
सात गमन का उपदेश
- ३ अनुश्रुत और प्रतिसात क अश्विचारी, ससार और मुक्ति की
परिभाषा
- ४ साधु के विषे चर्चा, गुण और निवृत्ता की आवश्यकता का
निरूपण
- ५ अनिकलवाग आदि चर्चा का निरूपण
- ६ आजीवन और अपमान सलङ्गि वर्जन आदि भिक्षा विगुडि के
अर्गों का निरूपण व उपदेश
- ७ प्रमण के लिये आहार विगुडि और कायोत्सर्ग आदि का उपदेश
- ८ स्थान आदि के प्रतिवध व नाव आदि व समत्व न करने का
उपदेश
- ९ गुरुत्व की वैधान्य आदि करने का निषेध और वमनिपट्ट
मुनियन के साथ रहने का विधान
- १० विशिष्ट सङ्गन युक्त और धून-मध्यन्त मुनि के लिए एकाकी
विहार का विधान
- ११ चानुर्मास और भागवत्प के बाद पुन चानुर्मान और सामकन्य
करने का व्यवधान बाल, सुव और उसके धर्म व अनुसार चर्चा
करने का विधान
- १२ १३ आरम निगीक्षण का समय विन्नन मूत्र और परिमाण
- १४ दुःप्रवृत्ति होने की सम्भूत आने का उपदेश
- १५ प्रतिगुड जीवी जागरण भाव के जीनेवाले की परिभाषा
- १६ आत्म रक्षा का उपदेश और अरुतिन तथा गुरुधिन आत्मा की
गति का निरूपण

श्री जैन २३० तेरापन्नी महाम्मा कलकला द्वारा प्रकाशित
दशवैकान्तिक द्वितीय भाग से यह सूची साधार उद्धृत की है

णमो लोशुत्तम।णं

सर्वानुयोगमय उत्तराध्ययन सूत्र

अध्ययन	३६
उपलब्ध मूल पाठ	२१०० श्लोक प्रमाण
पद्य सूत्र	१६५६
गद्य सूत्र	८६

१ विनयधनुः	४८	२ परीतद्व	४९ सूत्र ४
३ चानुरगीय	२०	४ यमस्कृत	१३
५ चक्राम मर्या	३२	६ शुक्लक निर्मयीय	१० सूत्र १
७ क्षीरभीय	३०	८ काविलिङ्ग	१०
९ ममि प्रमत्ता	२२	१० द्रुम पत्रक	३७
११ बहुधन पृथ्व	३२	१२ इतिहारीय	४०
१३ विजयभूमीय	३५	१४ इन्द्रादीय	२३
१५ म भिष्टु	१२	१६ मरुत्तर्य समाधि	१० सूत्र १०
१७ पापधमयाय	२१	१८ मयलीय	२४
१९ मृताशुशीय	२२	२० महा निर्मयीय	९०
२१ समुद्रपाभीय	२७	२२ रश्मिमीय	२१
२३ बेरी गौतमीय	८६	२४ समिति	२०
२५ यशीय	४२	२६ मयाचारी	२३
२७ मालु कीय	१०	२८ मोक्षमार्ग गति	३९
२९ सम्यक्स पराक्रम १ सूत्र ७४		३० नव मार्ग	३७
३१ चर्या विधि	२१	३२ प्रमाद स्थान	१११
३३ कर्म प्रकृति	२२	३४ श्रेयसा चर्चन	२१
३५ चर्यागार	२१	३६ आत्मानिचविभक्ति	२२६

उत्तराध्ययन विषय-सूची

प्रथम विनय अध्ययन

- १ विनय उत्थानिका
- २ विनीत के लक्षण
- ३ अयनीत के लक्षण
- ४ क- दुःशील को कृमीकर्णी कुतिया की उपमा
ख- बहुभागी का सर्वत्र अनादर
- ५ दूःशील का ग्राम दूकर की उपमा
- ६ क- आत्महित के लिए विनय आवश्यक है
ख- विनय से शील की प्राप्ति
- ७ बुद्ध पुत्र का सर्वत्र आदर
- ८ क- सार्थक अध्ययन के लिये प्रेरणा
ख- निरर्थक अध्ययन का निषेध
- ९ क- कठोर अनुशासन के समय क्षमा रखना
ख- बाल दुश्चरित्र की संगनिका निषेध
- १० क- क्रोध और बहुभाषन का निषेध
ख- यथा समय स्वाध्याय तथा ध्यान करने का विधान
- ११ दोष छिपाने का निषेध, गुरुजनों के समक्ष प्रगट करने का विधान
- १२ क- अविनयी को अड़ियल टट्टू की उपमा
ख- विनयी को अश्व की उपमा
ग- गुरुजनों के अभिप्रायानुसार आचरण करने का आदेश
- १३ क- अविनयी मृदु स्वभाव वाले गुरुजनों को कठोर बना देता है
ख- विनयी कठोर स्वभाव वाले गुरुजनों को मृदु बना लेता है
- १४ क- अकारण बोलने का और मिथ्या बोलने का निषेध

- ग गान करने का तथा निष्प्रभुति में शक्त रहने का विधान
 १७ आम दमन निषेह का उल्लेख
 १८ दमन की परिभाषा
 १७ प्रतिबुद्ध आचरण का निषेध
 १८ १९ गुरुजनों के समीप बैठने के विधि
 २० २२ गुरुजनों के बुलावे पर गीर्घ उपस्थित होने का विधान
 २० क विनयी का सुवाच की प्राप्ति
 ग गुरुजनों के पूछने पर यथाय कहने का विधान
 २४ २५ न वा विवेक
 २६ अकली स्त्री के समीप बैठने का तथा उसके साथ प्राणप
 सलाप का निषेध
 २७ २८ गुरुजनों के कठोर अनुशासन से स्वरहित
 ३० बैठने का विवेक
 ३१ ३२ गवेषणा घृणयणा और साधयणा मन्त्र की विवेक
 ३३ क विनया को अन्ते अक्षर की ओर अविनयी की अद्वयता यह
 की उपमा।

- ग गुरुजनों की विनयी से मुक्त अविनयी से मुक्त
 ३५ ४६ गुरुजनों के कठोर अनुशासन से स्वरहित
 ४५ उपलब्ध—विनयी की सत्य प्रतीति
 ४६ विनयी का मान नून का वाच
 ४७ ४८ विनयी की उन्नयनात् न सुग

द्वितीय परिषद् अध्यायन

- १ ३ क भ० महावीर द्वारा परिषद् की उपस्था
 ग भावीय परिषद् के नाम
 १ परिषद् की वचन सुनने के विधि प्रवृत्ति
 २ ३ (१) सुधा परिषद् का वचन
 ४ ५ (२) विद्या परिषद् का

६-७	(३) शीत	परिपह	का	वर्णन
८-९	(४) उष्ण	"	"	"
१०-११	(५) दश मशक	"	"	"
१२-१३	(६) अचैन	"	"	"
१४-१५	(७) अरति	"	"	"
१६-१७	(८) स्त्री	"	"	"
१८-१९	(९) चर्या	"	"	"
२०-२१ (१०)	निपद्या	"	"	"
२२-२३ (११)	शय्या	"	"	"
२४-२५ (१२)	आनोन	"	"	"
२६-२७ (१३)	वध	"	"	"
२८-२९ (१४)	याचना	"	"	"
३०-३१ (१५)	अताभ	"	"	"
३२-३३ (१६)	रोग	"	"	"
३४-३५ (१७)	तृण स्पर्श	"	"	"
३६-३७ (१८)	जल्ल-मल	"	"	"
३८-३९ (१९)	सत्कार	"	"	"
४०-४१ (२०)	प्रज्ञा	"	"	"
४२-४३ (२१)	अज्ञान	"	"	"
४४-४५ (२२)	दर्शन	"	"	"

उपसंहार—परिपह सहने के लिये प्रेरण

तृतीय चातुरङ्गीय अध्ययन

- १ चार अंगों की दुर्लभता
- २-७ (१) मनुष्य भव की दुर्लभता
- ८ (२) श्रुति—धर्म श्रवण की दुर्लभता
- ९ (३) श्रद्धा की दुर्लभता

- १० (४) वीर्य आवरण की दुनभत्ता
 ११ चार अंगों की प्राप्ति का चार लीनिक पद
 १२ क " इह लीनिक ,
 म पून मिलन अग्नि का उदाहरण
 १३ कम बंध के बंधना को जानने का पद
 १४ १५ चार अंगों की प्राप्ति का वैकल्पिक पद-देव गति
 १६ १६ " मानव भव
 २० उपसंहार—चार अंगों की प्राप्ति से सिद्ध पद

अनुयं प्रमादाप्रमाद अध्ययन^१

- १ अप्रमाद का उपदेश
 २ ५ क घनाशन म पाप कर्मों का बंध
 ल चार का उदाहरण
 ॥ शीरक का उदाहरण
 ६ ७ क अप्रमाद का उपदेश
 ल भारण्ड पत्ता का उदाहरण
 ८ क स्वच्छता का विशेष
 ल अप्रमत्त का गिनिन एवं कवचधारी भवन की उपमा
 ९ प्रमत्त का अस्मिन् समय म दुःखी होना
 १० अप्रमाद का उपदेश
 ११ १२ राग द्वेष एवं कथाम की निवृत्ति के लिये उपदेश
 समभाव की साधना के लिये उपदेश
 पंचम अंकाम-भरण अध्ययन
 १ भरण विषयक श्रवण
 २ भरण के दो भेद

१ इस अध्ययन का दूसरा नाम अस्तस्कृत अध्ययन है

- ३ क- देहधारियों का बालमरण अनेक वार
 ख- " उत्कृष्ट पण्डित मरण एक वार
- ४ बाल-व्यक्ति क्रूर कर्म करनेवाला होता है
- ५-६ बाल-व्यक्ति का पुनर्जन्म में अविश्वास
- ७ बाल-व्यक्ति की काम-भोगों में आसक्ति
- ८ बाल-व्यक्ति द्वारा त्रस-स्यावर जीवों को अर्थ-अनर्थ हिंसा
- ९ क- बाल-व्यक्ति के लक्षण
 ग- बाल-व्यक्ति मद्यमास के आहार को श्रेष्ठ मानता है
- १० क- बाल-व्यक्ति की आसक्ति
 ख- शिशुनाग—अलसिया का उदाहरण
- ११ बाल-व्यक्ति की तरुण अवस्था में परलोक गति
- १२ बाल-व्यक्ति की नरक गति
- १३ बाल-व्यक्ति को अन्तिम समय में पश्चात्ताप
- १४-१५ विषम पथगामी शाकटिक का उदाहरण
- १६ क- बाल-व्यक्ति की अकाम-मृत्यु
 ख- धूतकार का उदाहरण
- १७ क- बाल-व्यक्तियों के अकाम-मरण का वर्णन समाप्त
 ख- पण्डितों के सकाम-मरण का वर्णन प्रारम्भ
- १८ सयत व्यक्तियों का पण्डित मरण
- १९ सभी भिक्षुओं का और सभी गृहस्थों का पण्डित मरण नहीं होता
- २० भिक्षु और गृहस्थ के संयमी जीवन की तुलना
- २१ भिक्षुओं की भी दुर्गति
- २२ सुव्रत गृहस्थ की सुगति-देवगति
- २३-२४ गृहस्थ का जाल पण्डित मरण और सुगति
- २५ संवृत भिक्षु की दो गति
- २६-२७ दिव्य जीवन का वर्णन
- २८ भिक्षु और गृहस्थ की देवगति

- २६ दीलवान बहुधृत अंतिम समय में उद्विग्न नहीं होते
- ३० ३२ पण्डितों का तीन सकाम मरणों में से एक सकाम मरण
घट्ट क्षुल्लक निग्रन्थ अध्ययन^१
- १ अज्ञानियों का दुःखमय जीवन
- २ मैत्री भावना का उपदेश
- ३-४ अशरण भावना का उपदेश
- ५ त्याग का फल [वैकल्पिक फल]
- ६ अशरण भावना
- ७ हिंसा निषेध
- ८ अस्तादान का निषेध
- ९ १० अविद्यावाद से मुक्ति की भ्रातृ माया
- ११ केवल भाषा ज्ञान या मन्त्रविद्या से मुक्ति नहीं
- १२ आसक्ति से दुःख
- १३ वीरता ग्रहण करने के लिए उपदेश
- १४ १५ केवल व्रतनय के लिये निर्दोष आहारादि से देह धारण करें
- १६ क अत्यन्त सग्रह का भी निषेध
- १७ कभी का उदाहरण
- १८ गवेषणा का उपदेश
- १९ उपसंहार—ज्ञान पुत्र वैद्यानीक अ० महावीर का यह उपदेश
सप्तम और अष्टम अध्ययन
- १ ३ महामात्र के निमित्त जान जाने वाले मेघ(मेघे) का उदाहरण
- ४ ६ मेघों के समान बाल व्यक्ति की मरु
- १० क कार्त्तिकी का उदाहरण
- ॥ चास का उदाहरण
- ११-१३ देवताओं और मनुष्यों के नाम भोगों की सुखता

- १४-१५ गीत गानियों का उदाहरण
 १६ चार गानियों की लान-दानि ने चुनना
 १७-१८ दान व्यक्तियों की दो गति
 १९ दान और पण्डित की चुनना का उपदेश
 २० सुप्रसन्न जी—समृद्ध गति
 २१-२२ भिक्षु और गृहस्थ को तीन व्यक्तियों के उदाहरण का चिन्तन करने के निम्न-उपदेश
 २३ क- समुद्र का उदाहरण
 ग- देव और मानव भोगों की चुनना
 २४ योग धर्म स्थिति का निम्न
 २५-२६ काम भोगों ने अनिष्ट और निष्ठ की गति
 २७-२८ उपसंहार-क- दान और पण्डित, धर्म और अर्थ की चुनना
 ग- दान और पण्डित की गति

अष्टम कापिलीय अध्ययन

- १ दुर्गति-निर्देश के उपाय की जिज्ञासा
 २ भिक्षु का लक्षण
 ३ समाधान के निम्न मुनि का कथन
 ४ भिक्षु का लक्षण
 ५ क- दान व्यक्तियों की धानवित
 ग- नक्षत्र का उदाहरण
 ६ क- काम-भोगों का त्याग अति कठिन
 ग- सुप्रसन्न गृहस्थ और नाथु का भवनागर-लेखन
 ग- सांप्रदायिक का उदाहरण
 ७ दान-व्यक्तियों की दुर्गति
 ८-१० क- प्राणवय निषेध
 ख- पानी के प्रवाह का उदाहरण
 ११ एषणा समिति

- १२ दृष्टव्यता
- १३ दृष्टव्यता [नवम सामुद्रिक, स्वप्न और अग विद्या के प्रयोग का निषेध]
- १४ १५ क विद्या प्रयोग करने वाला की अंगुली में उत्पत्ति
ल भय भ्रमण
ग बोधी की दुष्प्रकृति
- १६ १७ गोमी की दगा
- १८ १९ स्त्री की आत्मविद्या का निषेध
- २० उपमहर्षि-कपिल का आख्यान यम आराधना की उभय लोच आराधना
नवम नमि प्रसन्नता अध्ययन
- १ नमि राजा का आनिस्मरण
- २ पुन को राज्य भार देकर नमि राजा का अभिनिष्क्रमण
- ५ मिथिला में कोणाह्वन
- ३ ४ नमि राजा का गृहस्थाग
- ६ ७ मिथिला की गंगा पर ध्यान देने के लिये ब्राह्मण रूप में राजा की प्रायना
- ८ १० नमि राजा का उत्तर
- ११ १२ विरहान्त से दण्ड अल पुर की ओर ध्यान देने के लिये इन्द्र का निवेदन
- १३ १७ नमि राजा का उत्तर
- १८ २० क नगर की सुरक्षा के लिये प्रायना
ख नमि राजा का उत्तर
- २१ राजाओं के दमन के लिये इन्द्र की प्रायना
- २२ २६ नमि राजा का उत्तर
- २७ ३८ यज्ञ और ब्रह्म भोज करने के लिये इन्द्र की प्रायना
- २९ नमि राजा का उत्तर

- ४० गृहस्थाश्रम में गृहस्थधर्म की आराधना करते रहने के लिये प्रार्थना
- ४१ नमि राजा का उत्तर
- ४२-४३ गृहस्थ जीवन में ही धर्म आराधना करने के लिए प्रार्थना
- ४४-४५ नमि राजा का उत्तर
- ४६-४७ कौश की श्रद्धि के लिये प्रार्थना
- ४८-५० नमि राजा का उत्तर
- ५१ प्राप्त भोगों का परित्याग न करने के लिये प्रार्थना
- ५२-५४ प्रीतिदि कपायवानों की दुर्गति
- ५५-६१ ग्राह्यण रत्न त्याग कर इन्द्र ने नमि राजा से क्षमा याचना तथा प्रार्थना, नमि राजा की प्रत्युत्तर
- ६२ उपसंहार-नमि राजा के समान बुद्ध पुरुषों की भोगों से निवृत्ति

दशम द्रुम-पत्रक अध्ययन

- १ मनुष्य जीवन को द्रुम-पत्र की उपमा
- २ " को कुशाग्र बिन्दु की उपमा
- ३ पुराकृत कर्मरज को दूर करने के लिये उपदेश
- ४ मनुष्य भव की दुर्लभता
- ५-१४ पृथ्वीकाय-यावत्-नरक पर्यंत भव ग्रहण
- १५ शुभाशुभ कर्मों से भवभ्रमण
- १६ आर्य जीवन दुर्लभ
- १७ परिपूर्ण इन्द्रियाँ दुर्लभ
- १८ धर्म श्रवण दुर्लभ
- १९ श्रद्धा दुर्लभ
- २० आचरण दुर्लभ
- २१-२६ श्रोत्रेन्द्रियादि सर्व बलों की हानि
- २७

- २८ व- मोह विषय का उपदेश
 ख गारदीय कमल का उदाहरण
 २९ ३० त्यक्त भोगों को पुन न ग्रहण करने का उपदेश
 ३१ अश्रमाद का उपदेश
 ३२ मार्ग का उदाहरण
 ३३ भारत बाहुक का उदाहरण
 ३४ समुद्र तट का उदाहरण
 ३५ मित्रपद की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहने का उपदेश
 ३६ सन्तुष्टि देने का विधान
 ३७ उपसंहार राग-द्वय का लय करने के लिये उपदेश

ग्यारह वाँ बहुभूत पूज्य अध्ययन

- | | | |
|-------|---------------------------|------|
| १ | अणवार आचार-कथन प्रतिज्ञा | |
| २ | अविनीत के लक्षण | |
| ३ | त्रिज्ञामु के पाँच अवगुण | |
| ४ ५ | त्रिज्ञामु के आठ गुण | |
| ६ ६ | अविनीत के लक्षण | |
| १० १३ | सुविनीत के लक्षण | |
| १४ | योग्य त्रिज्ञामु के लक्षण | |
| १५ | बहुभूत की दस वय की | उपमा |
| १६ | " श्रेष्ठ अक्ष की | " |
| १७ | " अस्वागोही नीर की | " |
| १८ | " गजराज की | " |
| १९ | " लघुभराज की | " |
| २० | " सिंह की | " |
| २१ | " वानुदेव की | " |
| २२ | " चण्डनी की | " |

- २३ बहुश्रुत को इन्द्र की उपमा
 २४ " दिवाकर की "
 २५ " चन्द्र की "
 २६ " कोष्ठागार की "
 २७ " मुदशंन जंघ की "
 २८ " शीता नदी की "
 २९ " मेरु की "
 ३० " स्वयम्भूरमण-भमुद्र की "

३१ - क- बहुश्रुत को समुद्र की उपमा

ख- बहुश्रुत को उत्तम गति प्राप्ति

३२ उपसंहार—श्रुत के अध्ययन ने शिवपद •

वारह वां हरिकेशी अध्ययन

- १ स्वपाक कुलोत्पन्न हरिकेशी श्रमण
 २-३ हरिकेशी का भिक्षार्थ ब्रह्म-यज्ञ में गमन
 ४-८ - ब्राह्मणों द्वारा हरिकेशी, का उपहाम और अनादर
 १० श्रमणचर्या के सम्बन्ध में तिन्दुक यक्ष का कथन
 ११ ब्राह्मणों का भिक्षा न देने का निश्चय
 १२-१३ तिन्दुक यक्ष द्वारा पुण्यक्षेत्र का प्रतिपादन
 १४-१५ तिन्दुक यक्ष द्वारा पापक्षेत्र का प्रतिपादन
 १६ ब्राह्मणों द्वारा भिक्षा न देने के निश्चय का दुहराना
 १७ भिक्षा न देने पर यज्ञ की अमफलता के सम्बन्ध में तिन्दुक यक्ष का उद्घोष
 १८-१९ ब्रह्म-कुमारों द्वारा मुनिपर प्रहार
 २०-२३ क्रुद्ध ब्रह्म कुमारों को कौशल राज कन्या भद्रा का निवेदन
 २४-२५ तिन्दुक यक्ष द्वारा ब्रह्म कुमारों की दुर्दशा
 २६-२८ भद्रा राजकन्या द्वारा मुनि की तेजोलव्धि का परिचय

- २६-३१ यज्ञ प्रभुत्व की क्षमा याचना
 ३२ मुनि द्वारा तिन्दुक यज्ञ का परिचय
 ३३ यज्ञ प्रभुत्व द्वारा पुन क्षमा याचना
 ३४-३५ यज्ञ प्रभुत्व का हरिकेशी धमण को भिक्षादान
 ३६ दान के समय देवी द्वारा दिव्य वर्षा
 ३७ दिव्य वर्षा से शास्त्रार्थों को आश्चर्य
 ३८-३९ भाव शुद्धि के बिना बाह्य शुद्धि ही विफलता के सम्बन्ध
 में हरिकेशी धमण के विचार
 ४० आरम्भ शुद्धि एवं अष्ट यज्ञ से सम्बन्ध में यज्ञ प्रभुत्व की
 जिज्ञासा
 ४१-४७ हरिकेशी द्वारा अश्वारुत स्नान एवं अश्वारुत यज्ञ का
 प्रतिपादन

तेरह वाँ चित्तसम्भूति अध्ययन

सम्भूत में हरिकेशपुर में विद्वान किया, नक्षिनी प्रथम विमान
 में उत्पन्न हुआ वहाँ से स्वयं-भर कर कम्पितपुर में शुक्तिनी
 की कुत्ती से महादत्त की उत्पत्ति

- १ कम्पितपुर में महादत्त की उत्पत्ति
 २ क पुरिमन्तनपुर में चित्त की उत्पत्ति
 ३ चित्त का दीक्षित होना
 ४ चित्त और महादत्त [सम्भूत] का कम्पितपुर में मिलना
 ४ क चित्त मुनि द्वारा पूर्व जन्म के वृत्तान्तों का वर्णन
 ६-१४ महादत्त की चित्तमुनि से याचना
 १५-२६ क चित्त मुनि का महादत्त को उपदेश
 ख- वृत्तु को सिंह की उपमा
 ग लक्षण भावना का उपदेश
 २७ ३० क- महादत्त की योगों से आगति

ग- स्वर्ग की दीवट में फेंके हुए गज की तपमा देना

२१-२२ क- शत्रुदत्त को पुनः श्राप कर्मों के लिये प्रेरित करना

ग- चित्त मुनि का जाना

२४ शत्रुदत्त की नरक में उन्नति

२५ चित्त की मुक्ति

चौदहवाँ इषुकारोप अध्ययन

१-३ क- पुरोहित पुरुषों का प्रथमय

ग- दयुताण राजा, कम्पलावती रानी, भृगु पुरोहित, जमा भार्या
और दो पुत्र इन ६ का जिनोतन मार्गाहुनरण

४-७ क- पुरोहित पुरुषों को जाति स्मरण

ग- मनार में विरक्षित

ग- माना-विनाओं में प्रव्रज्या के लिये अनुमति मांगना

८-११ क- वृद्धत्व के आवश्यक कृत्य पूर्ण करके प्रव्रज्या लेने का पिता
का सुझाव

१२-१५ पुरोहित पुरुषों का अविलम्ब प्रव्रज्या ग्रहण करने का हृदय
नकल्प

१६ पुरोहित का पुनः पुरुषों को समझाना

१७ पौद्गलिकः सुख की प्राप्ति प्रव्रज्या का उद्देश्य नहीं अस्तित्व
आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति प्रव्रज्या का उद्देश्य है

१८ पिता द्वारा आत्मा के अभाव का प्रतिपादन

१९ पुरुषों द्वारा आत्मा के अस्तित्व की सिद्धि

२० अज्ञान अवस्था में की हुई भूल की पुनरावृत्ति न करने का
नकल्प

२१-२५ पुरुषों द्वारा जीवन को सफल करने का निश्चय

२६ वृद्ध होने पर नृदीक्षा का पिता का प्रस्ताव

२७-२८ नविष्य को अनिश्चय समझकर अविलम्ब प्रव्रजित होने
का निश्चय

- २६ ३० भृगु पुरोहित का जमा भार्या को समझाना
 ३१ दृष्टावस्था में दीक्षित होने के लिये जमा भार्या का निषेधन
 ३२ दीक्षा का चतुर्थ मुक्ति है
 ३३ जमा द्वारा भिगुवर्या की कठिनाईया का वर्णन
 ३४ ३५ क भृगु पुरोहित का दृष्ट निश्चय
 ल भोगों को मर्ने कचुप और मरम्य जाण की उपमा
 ३६ जमा का भी दीक्षित होने का निश्चय
 ३७ ४० कम नाचनी रानी का राजा को उत्प्रेषण
 ४१ ४८ क आत्मा को पत्नी की और भोगों का पित्रे की उपमा
 ल अरण्य से दग्ध पशुओं का देखकर अष्ट पशुओं का प्रमुदिन होने का लपक से गग द्वय का स्वरूप समझना
 ग भागा को आमिष की उपमा
 घ स्वयं को उरण की और दूरतु को पण्ड की उपमा
 ङ बन्धन मुक्त गजराज के समान स्वस्थान निवास को प्राप्त करने का प्रस्ताव
 ४६ ५४ राजा आदि दृष्टा का दीक्षित होना
 पण्डित या सभिक्षु अध्ययन
 भिक्षु के लक्षण
 १ क निर्दान न करना
 ल प्रशंसा न चाहना
 ग- काम भोगों की चाहना न करना
 घ अज्ञान कुन से साह्यरादि की श्रमणा करना
 २ क निरसन होकर निवचना
 ल आसक्ति न करना
 ३ लालन और वध परीषद् सहन करना
 ४ क अत्यन्त उपकरण रखना

- ख- शीत-उष्ण और दंस भोजन परीपह सहना
 ५ पूजा-प्रतीष्ठा न चाहना
 ६ क- मोह जीतना
 ख- स्त्री से विरक्त रहना
 ग- हँसी मजाक न करना
 ७ आहार के लिये विद्या प्रयोग न करना
 ८ " मन्त्रादि का प्रयोग न करना
 ९ क्षत्रिय आदि की प्रशंसा न करना
 १० लौकिक कामनाओं के लिये किसी का परिचय न करना
 ११ शयनासनादि के न देने वाले पर द्वेष न करना
 १२ ग्लान-बाल और वृद्ध श्रमण की बुद्ध आहारादि से परिचर्या करना
 १३ शीत और नीरस आहार लेना
 १४ मधुर-सगीत और भयावह शब्दों में राग-द्वेष न करना
 १५ विविध वादों-विचारों-से विचलित न होना
 १६ अशिल्प जीवी आदि प्रशस्त गुणों का धारक होना

सोलह वाँ ब्रह्मचर्य समाधि अध्ययन

- १ क- भ० महावीर द्वारा दस ब्रह्मचर्य समाधिस्थानों का प्ररूपण
 ख- स्त्री-पशु पण्डक रहित शयनासन का सेवन करना, सेवन न करने में होने वाली हानियाँ
 २ स्त्री कथा न करना, करने से होने वाली हानियाँ
 ३ स्त्री के साथ एक आसन पर न बैठना
 ४ स्त्री के अगोपागो की ओर दृष्टि न डालना
 ५ स्त्री के हास्य विलासादि का भित्ति के पीछे से भी न सुनना
 ६ भुक्त भोगों का स्मरण न करना
 ७ उत्तेजक पदार्थों का आहार न करना

- ८ अनियोज्य मं आहार्यादि का न करना
- ९ शृणार न करना
- १० मनोज्ञ गन्ध्यादि का सेवन न करना
- ११ उक्त दम स्थाना की दम बाधाएँ
- ११ ११ ब्रह्मचारी के लिये दम स्थाना का सेवन तान्त्रिक विधि के स्थान है
- १४ ब्रह्मचारी के लिये सभी गन्ध स्थाना का निषेध
- १५ १६ ब्रह्मचर्य की महिमा
- १७ उपसंहार—ब्रह्मचर्य म विनियम की प्राप्ति

तत्परहृ श्री पाप धमण अध्ययन

- १ निर्दय धम की जानवर के भी स्वच्छ इ पूजने वाला
- २ शयनासन से प्रसन्न, अध्ययन म विमुख
- ३ अस्थिर आहार और अस्थिर निद्रा-गते वाला
- ४ जिनसे ज्ञान प्राप्त किया उनही ही निद्रा करने वाला
- ५ अधिनयी और अभिमानी
- ६ प्राणिमा का उत्पीड़न क्रोधादि वनस्पतिमा का सहारक
- ७ अयमाजिन सत्कारक आदि का उग्र भोगना
- ८ अविवेक से चलने वाला
- ९ अविविध से प्रतियोगन करने वाला
- १० गुदजनो का निरस्कार करने वाला
- ११ मायावी बहुभाषी अधिमानी लोभी विषयी लोभुष, द्वयी
- १२ कनह प्रिय
- १३ अस्थिर चक्षुष
- १४ प्रमादन न करने वाला और अविवेक से हास फैलाने वाला
- १५ त्रिकार बद्धक आहार करने वाला और तपश्चर्या न करने वाला
- १६ अनियमित भोजी

- १७ स्वच्छन्द, पर दर्शन प्रशंसक, बार-बार गण बदलने वाला,
दुरानारी
- १८ गृहस्थों के कृत्य करनेवाला, विद्योपजीवी
- १९ मर्वदा स्वजाति के गृहस्थों से भिक्षा लेने वाला और गृहस्थ के
घर में बैठने वाला
- २० उपमंक्षार—पंचाश्रय नेवी श्रमणवेपी उभयलोक भ्रष्ट होता है
- २१ मर्वदोष वजित मुग्रत श्रमण उभयलोक का आराधक होता है
- शठारह वां संयती अध्ययन

- १-५ क- कम्पिलपुर के मंयग राजा का शिकार के लिये केसर उद्यान
में आना
- ग- बाण विद्ध एक मृग का ध्यानस्थ तपोधन अनगार गद्भाली
के समीप जाकर पडना
- ६ मृग के पीछे-पीछे राजा का आना
- ७-१० क- राजा का पश्चात्ताप करना
- ग- मुनि से क्षमा याचना
- ११-१८ राजा को मुनि का उपदेश
- १९ गद्भाली के समीप राजा संजय का दीक्षित होना
- २० संजय मुनि से किमी श्रमण विशेष के क्रुद्ध प्रश्न
- २१ सर्व प्रथम मंजय का पूर्व परिचय व अन्य प्रश्नों का उत्तर देना
- २२ क्रियावाद आदि चार वादों का सर्वत्र प्रचार व प्रसार है
- २३ यह भ० महावीर ने कहा है
- २४ पारी और धर्मी की गति
- २५ मृपावादी क्रियावादियों से मैं सावधान हूँ
- २६ सर्ववादों का विवेक है और आत्मबोध है
- २७-२८ पूर्वजन्म का ज्ञान है
- २९ सम्यक् ज्ञानोपासना करता हूँ

- ३० प्रदत्त विद्या एवं गृहस्थ मोट्टी से निवृत्त हूँ
 ३१ अथ प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता
 ३२ मियावाद की उपासना
 ३३ ५० भरत सगर, मधव सनत्कुमार गान्धि कुशु अर महापद्म
 हरिषेण अथ दशानन नमि करकपू दुषु स नगई उपायन
 स्वेन, विजय महदस आदि अनेक राजाओं का पूषकान से
 प्रव्रजित होना
 ४१ धीर पुरुष का अप्रमत्त विहार
 ५२ जिनवाणी के अवन से तीन काल स निरवा
 ५३ उपमहार—मन्वा परिग्रह भुक्त की भुक्ति
 उन्नीस वाँ मुगापुत्र अध्ययन
 १ ८ क मुष्टीन नगर वनभद्र राजा मृगा रानी
 ल मुगापुत्र को मुनि दान से पुत्र य म की स्थिति
 ६ १० मृगापुत्र का माता पिताओं से प्रव्रज्या के पिये अनुमति प्राप्त
 करना
 ११ २१ मृगापुत्र द्वारा भुक्त भोगों का यथाथ वचन
 २४ ४३ माता पिता द्वारा अमण जीवन की कठिनाइयाँ का प्रतिपान्न
 ४४ ७४ मृगापुत्र द्वारा पुत्र वैदित मरक वेदना का वचन
 ७५ माता पिता द्वारा अमण जीवन की अनुविधाओं का वचन
 ७६ ८३ मृगापुत्र द्वारा मृगचर्या का वचन
 ८४ ८७ व अनुमति प्राप्त मृगापुत्र का गृहत्याग
 ल गृह का नाम कपुक की उपमा
 ग परिग्रह को पद रन (वस्य क लगो हुई) की उपमा
 ८८ ९५ व मृगापुत्र के सामान्य जीवन का वचन
 ल एवं मान की मत्तमना और निवर्ण
 ९६ ९८ उपमहार—

क- शृगापुत्र के नगान पठित जनों की भोगों में निवृत्ति

ख- शृगापुत्र का वर्णन मुनिरुज्जीव को प्रशन्न बनाना

बीस वां महानिर्ग्रन्थीय अध्ययन

१ क- सिद्धों और सप्तों को नमस्कार

ख- सत्य धर्मकथा सुनने के लिये प्रेरणा

२-८ क- मगधाधिप श्रेणिक का मण्डिकुटा चैत्य में धूमने के लिये जाना

ख- चैत्य में मुनिदर्शन का होना

ग- मुनि ने श्रेणिक के कुट्ट प्रश्न

६ मुनि का अपने आपको अनाथ कहना

१०-११ मुनि के कथन ने श्रेणिक को आश्चर्य, नाथ होने के लिये निवेदन

१२-१५ क- मुनि ने श्रेणिक को अनाथ कहा

ख- अनाथ कहने से श्रेणिक को आश्चर्य, श्रेणिक ने अपना परिचय दिया

१६-३५ क- मुनि द्वारा स्वयं की अनाथता का दिग्दर्शन

ख- गृहस्थ जीवन में हुई चक्षुशून्य की वेदना का वर्णन

ग- उपचारों की अमफलता

घ- अनगार प्रयत्न करने के सकल्प से वेदना की उपशान्ति

ङ- अनगार बनने पर सनाथ होना

३६-३७ गुण दुःख का कर्ता भोक्ता आत्मा

अनाथता के अनेक प्रकार

३८-५० क- श्रमण जीवन में शिष्याचार

ख- श्रमण होने पर भी भोगासक्ति

ग- पाँच ममत्तियों का सम्यक् पालन न करना

घ- व्रतभंग, अनियमित जीवन

ङ- द्रव्यलिङ्ग—केवल साधुवेश

च- अमयत जीवन

छ विषयासक्ति

ज विद्योपग्रीवी होना

झ मदीय आहार का सेवन व्यवसाय सर्वभक्षी होना

ञ- अन्तिम समय में पञ्चात्ताप और दुःख

५१ कुत्तील को छोड़कर महानिर्वृत्ति के पक्षधर बनने का उपदेश

५२ मयम साधना से शिवपद

५३ उपसंहार—महानिर्वृत्ति के जीवन का विस्तृत वर्णन

५४ ५६ अनापी निर्वृत्ति से धैर्य की लम्बा याचना, स्वस्थान समन

६० मुनि जीवन की विह्वल पक्षी जीवन से तुलना

हकबीस का समुद्रप्रासीय अध्ययन

१ अम्पा निवासी पाणिन आश्रम में महावीर का शिष्य

२ पालित का विद्वान्मनस ज्ञान

३ पालित का विवाह गमजती स्त्री का साथ लेकर स्वदेश के लिये प्रस्थान करना

४ समुद्र में प्रसन्न, समुद्रपाल नाम

५ ७ अम्पा में समुद्रपाल का सर्वजन अध्ययन और विवाह

८ १० अम्पा भूमि की ओर से आने हुए चोर को देखकर समुद्रपाल को ईराग्य प्रसन्नता ग्रहण

११ २२ समुद्रपाल की मयम साधना

२३ समुद्रपाल की केवल ज्ञान

२४ समुद्रपाल का समार समुद्र में पार होना

आसीस का रहनसनीय अध्ययन

१ शीरीपुर में समुद्रदेव राजा

२ समुद्रदेव के दो भार्या और दो पुत्र

३ शीरीपुर में समुद्र विजय राजा

४ शिवा के पुत्र अरिष्टनेमि

- ५ अरिष्टनेमि के लिये केशव द्वारा राजिमती की याचना
 ६-१४ यियाह-मण्डप के समीप अरिष्टनेमि ने वध के लिये एकत्रित
 पशु-पक्षियों का बाड़ा देगा
 १५-१६ अरिष्टनेमि का सारथी से प्रश्न
 १७ सारथी का उत्तर
 १८-२० अरिष्टनेमि का आत्महित चिन्तन, सारथी को पारितोषिक
 २१-२७ अरिष्टनेमि का दीक्षा महोत्सव और रैवतक पर्वत पर
 तप-साधना
 २८-३२ राजिमती की प्रव्रज्या
 ३३-४० क- राजिमती का रैवतक पर्वत पर स्थित भ० अरिष्टनेमि के
 दर्शन लिये जाना
 ग- मार्ग में वर्षा होना
 ग- आर्द्र वस्त्रों को नुनवाने के लिये गुफा में जाना
 घ- गुफा में स्थित रथनेमि का मंथन से विचलित होना
 ४१-४६ राजिमती का रथनेमि को उपदेश
 ४७-४९ रथनेमि का समय में स्थिर होना
 ५० राजिमती और रथनेमि को केवल ज्ञान और निर्वाण प्राप्ति
 ५१ उपसंहार—इम प्रकार भोगों में निवृत्त पण्डित पुरुषोत्तम
 होता है

तेवीसर्वा केशी-गौतम अध्ययन

- १-४ सावत्यी के तिनदुक उद्यान में भ० पार्श्वनाथ के शिष्य
 केशी श्रमण का आगमन
 ५-८ भ० वर्धमान महावीर के शिष्य गौतम का सावत्यी के
 कोष्ठक चैत्य में ठहरना
 ९-१३ दोनों के शिष्यों में अचेल-सचेल और चार याम, पाँच याम
 के सम्बन्ध में जिज्ञासा

- १४ २० केशी धम्मण और भ० गौतम का भिन्न तथा चर्चा
- २१ २८ क केशी धम्मण का प्रथम प्रश्न—चार धाम और पाँच धाम धम्म की भिन्नता का मुख्य हेतु क्या है ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- २६ ३३ क केशी धम्मण का द्वितीय प्रश्न—अ० पाण्डनाथ और भ० महावीर के अनुयायी धम्मों की विभिन्न देगभूषा क्या ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ३४ ३८ क केशी धम्मण का तृतीय प्रश्न—अनुभूति पर विश्वास प्राप्ति का धम्म कौनसा है ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ३६ ४३ क केशी धम्मण का चतुर्थ प्रश्न—स्नेह अथवा मे मुक्ति किस प्रकार होती है ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ४४ ४८ क केशी धम्मण का पंचम प्रश्न—गुण्य का छेदन किस प्रकार ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ४६ ५३ क केशी धम्मण का षष्ठ प्रश्न—कषाय अग्नि का शमन किस प्रकार ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ५४ ५८ क केशी धम्मण का सप्तम प्रश्न—मन का दमन किस प्रकार ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ५६ ६३ क केशी धम्मण का अष्टम प्रश्न—स माय गमन किस प्रकार ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ६४ ६८ क केशी धम्मण का नवम प्रश्न—जन्म जरा मरण से मुक्ति किस प्रकार ?
- स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ६६ ७३ क केशी धम्मण का दशम प्रश्न—संगार समुत् से पार करने वाली धोका व नाविक कौन ?

ख- भ० गौतम द्वारा समाधान

७४-७८ क- केशी कुमार श्रमण का एकादशम प्रश्न—सम्पूर्ण लोक का प्रकाशक कौन ?

ख- भ० गौतम द्वारा समाधान

७९-८४ क- केशीकुमार श्रमण का द्वादशम प्रश्न—शाश्वत स्थान कौन सा ?

ग- भ० गौतम द्वारा समाधान

८५-८७ केशी श्रमण का पंच महाव्रत धारण

८८ उपसंहार—केशी गौतम के समागम से श्रुत और शील का उत्कर्ष

८९ जन नाधारण में श्रद्धा की अभिवृद्धि

चौबीसवाँ समिति अध्ययन

१-३ अष्ट प्रवचन माता-पाँच समिति, तीन गुप्ति

४-८ क- इयाँ समिति के चार भेद

ख- यतन के चार भेद

९-१० क- भाषा समिति के आठ दोष

ख- „ के दो विशेषण

११-१२ एषणा समिति के तीन भेद

१३-१४ आदान समिति के दो भेद

१५-१६ परिष्ठापनिका समिति के चार भेद

२०-२१ मन गुप्ति के चार भेद

२२-२३ वचन गुप्ति के चार भेद

२४-२५ काय गुप्ति के पाँच भेद

२६-२७ उपसंहार—समिति गुप्ति की परिभाषा, अष्ट प्रवचन माता की सम्यक् आराधना से मुक्ति

पच्चीसवाँ यज्ञ अध्ययन

१-३ जय घोष मुनि का वाराणसी के बाहर उद्यान में ठहरना

- ४ उमी नारायणी मे विजयघोष का यज्ञ करना
- ५ मामोपवास के पारलो के लिये जयघोष का विजयघोष के यज्ञ मे जाना
- ६ विजय घोष का भिक्षा न देना
- ७-८ यज्ञान्न के अधिकारियो का वर्णन
- ९-१२ क- जयघोष का समभाष
ख- विजयघोष क कनिषथ प्रश्न
- १३-१५ समाधान के लिये विजयघोष की प्रार्थना
- १६ जयघोष द्वारा समाधान
- १७ भ० काश्यप, भ० ऋषभदेव की महिमा
- १८ यज्ञवादी ब्राह्मणो की दशा
- १९-२९ भारतविक ब्राह्मण का वर्णन
- ३० ऋषि विहित यज्ञ का वर्णन
- ३१ ३२ भ्रमण, ब्राह्मण, मुनि और तापस की व्याख्या
- ३३ दर्माधम व्यवस्था का मूल आधार कम
- ३४ कर्ममूलक व्यवस्था का प्रतिपादक ही सत्त्वा ब्राह्मण
- ३५ मुनी ब्राह्मण से ही स्व पर का कल्याण
- ३६ ४० क विजय घोष की अवधार से भिक्षा व लिये प्रार्थना
ख जयघोष का विजयघोष को विरति का उपदेश
- ४१ भोगी और भोग मुक्त की गति
- ४२ ४३ भोगी और भोग मुक्त को दो गोलो की उपमा
- ४४ ४५ उपमाद्वार—विजयघोष की धर्मण प्रवृत्त्या, जयघोष-विजयघोष की सिद्धि
- इन्डोसर्वा समाचारी अध्ययन
- १ धर्मण समाचारी का कथन
- २ ४ समाचारी के दस भेद

- ५-७ दम ममाचारियों के कर्तव्य
 ८-१० द्विधम-ममाचारी
 ११ दिन के चार भाग
 १२ चार भागों में श्रमण के कृत्य
 १३-१६ पौष्पी प्रमाण
 १७ रात्रि-ममाचारी, रात्रि के चार भाग
 १८ चार भागों में श्रमण के कर्तव्य
 २१-२२ द्विधम-ममाचारी-प्रथम भाग में करने ये
 २३-२५ प्रति लेखना की विधि
 २६ प्रतिलेखना के ६ दोष
 २७ प्रति लेखना के अन्य दोष
 २८ प्रति लेखना के तीन पदों के आठ भाग
 २९ प्रति लेखना के समय निषिद्ध कृत्य
 ३० प्रमत्त प्रतिलेखक विराधक
 ३१ अप्रमत्त प्रतिलेखक आराधक
 ३२ तृतीय पौष्पी में भिक्षा
 ३३-३४ आहार लेने के ६ कारण
 ३५ आहार त्याग के ६ कारण
 ३६ भिक्षा-क्षेत्र का उत्कृष्ट प्रमाण
 ३७ चतुर्थ पौष्पी के कर्तव्य
 ३८ शय्या की प्रतिलेखना का समय
 ३९ मलमूत्र विसर्जनार्थ भूमि का अवलोकन
 ४० दैवसिद्ध अतिचारों-दोषों का चिन्तन
 ४१ " " की आलोचना
 ४२ कायोत्सर्ग
 ४३ स्तुति मंगल पाठ-काल विवेक
 ४४ रात्रि-ममाचारी—चार भाग के कर्तव्य

- ४५ चतुर्थ विभाग के विशेष कृत्य
 ४६ नाय विवेक
 ४७ नायात्म्य
 ४८ रात्रि-अतिचारा—दोषों—का चिन्तन
 ४९ रात्रि अतिचारोंकी आलोचना
 ५०-५१ नायोत्सर्ग-तत्र चिन्तना त्रिच स्तुति
 ५२ सिद्ध-स्तुति
 ५३ उपसंहार—ममाचारों की भारापना से शिवपद की प्राप्ति
 सत्तावीसवीं खण्डकीय अध्ययन

- १ गर्गाचार्य का व्याख्यात्मक परिचय
 २ बाह्य और योग सधम-बह्य की तुलना
 ३-८ कुट्ट रूपम और कुट्ट शिष्य की तुलना
 ९ १३ कुष्ट शिष्यों के लक्षण
 १४ गर्गाचार्य की कला
 १५ गर्गाचार्य की सारथि से तुलना
 १६ क कुट्ट शिष्यों की गर्भ की उपमा
 ख गर्गाचार्य द्वारा कुट्ट शिष्या का परिचय
 १७ गर्गाचार्य का एकाकि विहार

अठ्ठावीसवीं मोक्षमार्ग गति अध्ययनः

- १ ३ मोक्षमार्ग के चार कारण
 ज्ञान
 ४ ज्ञान के पाँच भेद
 ५ ज्ञान की परिभाषा
 ६ द्रव्य और पर्याय का लक्षण
 ७ षट् द्रव्यात्मक श्लोक

- क- धर्म, अधर्म और आकाश एक द्रव्यात्मक
ख- काल, जीव और पुद्गल अनेक द्रव्यात्मक

९-१२ पङ् द्रव्य के लक्षण

१३ पर्याय के लक्षण

दर्शन

१४ नव तत्त्व के नाम

१५ सम्यक्त्व की व्याख्या

१६-२७ सम्यक्त्व के दस भेद

२८ सम्यक्त्वी के तीन प्रमुख कर्तव्य

२९-३० ज्ञानादि चार का परस्पर अनुबन्ध

३१ सम्यक्त्वी के अष्ट कृत्य

चारित्र्य

३२ चारित्र्य के पाँच भेद

३३ चारित्र्य की व्याख्या

तप

३४ तप के दो भेद, प्रत्येक के ६-६ भेद

३५ ज्ञानादि चार का फल

३६ उपसंहार- तप संयम से कर्मक्षय

उनत्तीसवाँ सम्यक्त्व-पराक्रम अध्ययन

१ क- भ० महावीर द्वारा सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन का प्रतिपादन

ख- अराधना से सिद्धि

२ अध्ययन के विषय

३ संवेग का फल

४ निर्वेद का फल

५ धर्म श्रद्धा का फल

६ गुरु और स्वधर्मी सुश्रुपा का फल

- ७ आनोचना का फल
- ८ आत्मनिन्दा का फल
- ९ गृही का फल
- १० सामाधिक का फल
- ११ अनुविशतिगता का फल
- १२ बन्धना का फल
- १३ प्रतिबन्धन का फल
- १४ कामोत्सर्ग का फल
- १५ प्रत्याभ्यास का फल
- १६ इतव स्तुति मगल का फल
- १७ बाल प्रतिशेषना समयज्ञ होने का फल
- १८ प्रायश्चित्त का फल
- १९ क्षमापना का फल
- २० स्वाध्याय का फल
- २१ वाचना का फल
- २२ पुण्यना का फल
- २३ परिवर्तना-आवृत्ति का फल
- २४ अनुप्रेक्षा का फल
- २५ धर्म कथा का फल
- २६ भूत की आराधना का फल
- २७ मन की एकाग्र करने का फल
- २८ समय का फल
- २९ तप का फल
- ३० व्यवदान कर्मक्षय-का फल
- ३१ सुख शांति का फल
- ३२ अप्रतिबद्धता का फल
- ३३ विविक्त शय्यासन सेवन का फल

- ३४ विनिवर्तना का फल
- ३५ मंगोप-व्यवहार-त्याग का फल
- ३६ उपधि त्याग का फल
- ३७ आहार त्याग का फल
- ३८ वषाद्य त्याग का फल
- ३९ योगप्रय के त्याग का फल
- ४० क्षीर त्याग का फल
- ४१ महायज्ञ के त्याग का फल
- ४२ आहार त्याग का फल
- ४३ सद्भाव-प्रवृत्ति-के त्याग का फल
- ४४ प्रतिष्पता-श्रमण वेपथूपा का फल
- ४५ वैधानृत्य मेवा का फल
- ४६ सर्वगुण संपन्नता का फल
- ४७ धीतरागता का फल
- ४८ क्षमा का फल
- ४९ मुक्ति-निर्लोभता का फल
- ५० ऋजुता का फल
- ५१ श्रुता का फल
- ५२ सत्य विचारों का फल
- ५३ सत्य-वैयर्थ्य-प्रिया का फल
- ५४ सत्य योगों का फल
- ५५ मन के निग्रह का फल
- ५६ वचन के निग्रह का फल
- ५७ काया के निग्रह का फल
- ५८ मन के शान्त करने का फल
- ५९ विवेक पूर्वक बोलने का फल
- ६० विवेक पूर्वक की गई कार्यात्मिका क्रियाओं का फल

- ६१ ज्ञान युक्त होने का फल
 ६२ यदा युक्त होने का फल
 ६३ चारित्र्य युक्त होने का फल
 ६४ श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह का फल
 ६५ शृंगु इन्द्रिय निग्रह का फल
 ६६ घ्राणन्द्रिय निग्रह का फल
 ६७ त्रिह्वा इन्द्रिय निग्रह का फल
 ६८ स्पर्शन्द्रिय निग्रह का फल
 ६९ क्रोध विजय का फल
 ७० मान विजय का फल
 ७१ माया विजय का फल
 ७२ लोभ विजय का फल
 ७३ मिथ्या दान गम्य विजय का फल
 ७४ दार्ढ्य के सबका निरोध का फल—रम क्षय का फल
 ७५ उपमहार—सम्यक् पराक्रम अध्ययन का अ० महावीर द्वारा प्रकपण

तीसवा तप मार्ग अध्ययन

- १ तप से कम तप
 २ आश्रय गुमागुम कम निरोध के लिए ६ वना का आचरण
 ३ आश्रय निरोध के लिए आवश्यक कुर्य
 ४ आवश्यक कुर्या से कमगत
 ५ ६ जवागम का उपाहरण
 ७ तप के दो भेद प्रत्येक के ६ ६ भेद
 ८ बाह्य तप के ६ भेद
 ९ अतगत के दो भेद
 १० ११ इत्तरिक अन्यकानिक-अनजन के ६ भेद

१२ यावज्जीवन-अनशन के दो भेद

१३ प्रकारान्तर से दो-दो भेद

१४ ऊनोदर तप के पाँच भेद

१५ द्रव्य ऊनोदर तप

१६-१९ क्षेत्र ऊनोदर तप

२०-२१ काल ऊनोदर तप

२२-२३ भाव ऊनोदर तप

२४ पर्यव ऊनोदर तप

२५ भिक्षाचर्या के सात भेद

२६ रस-परित्याग तप

२७ कायवर्षेण तप

२८ प्रति संलीनता तप

२९ क- याज्ञ तप का वर्णन समाप्त

ख- आभ्यन्तर तप वर्णन प्रारम्भ

३० आभ्यन्तर तप के ६ भेद

३१ प्रायश्चित्त के दस भेद

३२ विनय तप

३३ वैयावृत्य-परिचर्या-तप के दस भेद

३४ स्वाध्याय के पाँच भेद

३५ विधि-निषेध से ध्यान के चार भेद

३६ कायोत्सर्ग तप

३७ उपसंहार—तप से निर्वाण

इकतीसवाँ चरण-विधि अध्ययन

१ चारित्र्य से भव-मुक्ति

२ निवृत्ति-प्रवृत्ति की व्याख्या

३ राग-द्वेष से निवृत्ति

- ४ दण्ड, शर्मा और अन्य से निवृत्ति
- ५ उपमर्ग सङ्ग
- ६ विकषा, वषाय, सत्ता और दुष्परिणाम से निवृत्ति
- ७ क वनो और ममिनिया मे प्रवृत्ति
 - ख इन्द्रियो क विषया मे और क्रियाओ से निवृत्ति
- ८ क लेख्य और आहार के ६ कारणो से निवृत्ति
 - ख ६ काय के आरम्भ से निवृत्ति
- ९ क विश्व अवग्रह प्रतिमाओ मे प्रवृत्ति
 - ख मय स्थानो से निवृत्ति
- १० क मद स्थानो से निवृत्ति
 - ख ब्रह्मचर्य गुणितयो और विलु घर्षो मे प्रवृत्ति
- ११ उपासक और भिक्षु प्रतिमाओ मे प्रवृत्ति
- १२ क्रियास्थान भूतलाम और परमाध्यात्मिक से निवृत्ति
- १३ क गाथा पोटकक मे प्रवृत्ति
 - ख समयओ से निवृत्ति
- १४ क ब्रह्मचर्य और ज्ञाना अध्ययनों मे निवृत्ति
 - ख असमाधि स्थानो से निवृत्ति
- १५ सवन दोषों से और परिपक्वो से निवृत्ति
- १६ क मूत्रहनाङ्ग के अध्ययनो के स्वाध्याय मे प्रवृत्ति
 - ख देव विषयक निवृत्ति
- १७ क भावनाओ मे प्रवृत्ति
 - ख दण्ड बन्ध और व्यवहार के अध्ययनों मे प्रवृत्ति निवृत्ति
- १८ क- अनन्तर मृणा मे प्रवृत्ति
 - ख आचार प्रवृत्ति के अध्ययना मे प्रवृत्ति निवृत्ति
- १९ पापधुन और माह स्थानो से निवृत्ति
- २० क निदानिगया मे प्रवृत्ति
 - ख आगमनामा मे निवृत्ति

- २१ उपसंहार—चरणविधि की अराधना से भाव-मुक्ति
वत्तीसवाँ प्रमाद स्थान अध्ययन
- १ दुःख से मुक्त होने की विधि का श्रवण
२-५ समाधिमरण के साधन
६-७ दुःख के कारण
८ दुःख का समूलनाश
९ मोह से मुक्त होने के उपायों का कथन
१० रस सेवन का निषेध, रस और काम का सम्बन्ध
रस को फल की और काम को पक्षी की उपमा
११ इन्द्रियो की विषयाभिलाषा को दावाग्नि की उपमा
राग शत्रु को जीतने के उपाय, राग को व्याधि की उपमा
एकान्त शयन आदि को औषधि की उपमा
१३ ब्रह्मचारी के लिये निषिद्ध स्थान, ब्रह्मचारी को मूषक की
उपमा और स्त्री को बिडाल की उपमा
१४ स्त्री को विकृत दृष्टि से देखने का निषेध
१५ ब्रह्मचारी के हितकारी
१६ ब्रह्मचारी के लिये एकान्तवास प्रशस्त है
१७ मनोहर स्त्रियो का त्याग दुष्कर है
१८ स्त्री-त्याग को समुद्र की उपमा
शेष वस्तुओं के त्याग को नदी की उपमा
१९ दुःख का मूल कान और उसके विजेता-वीतराग
२० काम को किपाकफल की उपमा
२१ विषयों से विरक्त होने का उपदेश
२२-३४ चाक्षुष विषयों से विरक्त, पद्म-पत्र के समान अलिप्त रहने का
उपदेश
३५-४७ श्रोत्रेन्द्रिय के विषयों से विरक्त

४८ ६० आलोडिय के विषयो मे विरचिन

६१ ७१ त्रिंदा इडिय के विषयो मे विरचिन

७४ ८६ एगडिय के विषयो मे विरचिन

८७ ९६ भाव विरचिन

१०० उपमहार—दु न के हेर इडिया के विषय दु ल त मुक्त बीनराग

१०१ दु न का मूत्र विषय सही भविष्य राग डव है

१०२ १०३ पानमिष विचार

१०४ १०५ माधवान भाषक के कत्तर

१०६ विरकन घर अच्छे बुरे पगधों का प्रभाव सही होना

१०७ सक्क विजय स मृगा विजय

१०८ बीनराग के संख्या समान

१०९ जीवायुक्त की मक्ति

११० मुक्त आत्मा का सास्वन भुष

१११ दु न मुक्ति के उपमा का पाता

तत्तीमर्षी कम प्रकृति अभ्ययन

१ अष्ट कर्मों के कथन का सरल

२ ३ अष्टकर्मों का नाम

४ (१) ज्ञानावरणीय कम की उत्तर प्रकृतियां

५ ६ (२) दानावरणीय कम की उत्तर प्रकृतियां

७ (३) केन्द्रीय कम की उत्तर प्रकृतियां

८ ११ (४) मोहनीय कम की उत्तर प्रकृतियां

१२ (५) आमु कम की उत्तर प्रकृतियां

१३ (६) नामकम की उत्तर प्रकृतियां

१४ (७) गोत्रकम की उत्तर प्रकृतियां

१५ (८) अन्तराय कम की उत्तर प्रकृतियां

१६ अष्ट कर्मों के प्रदेज क्षेत्र काल और भाव के कथन का सरल

१७ अष्ट कर्मों के प्रदेश

१८ अष्ट कर्मप्रदेशों का क्षेत्र

अष्ट कर्मों की स्थिति

१९-२० ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्म की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

२१ मोहनीय कर्म की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

२२ आयुकर्म की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

२३ नाम और गोत्र कर्म की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति

२४ अष्ट कर्मों का अनुभाग-रस

२५ उपसंहार—कर्मविपाक ज्ञाता

चोतीसवाँ लेख्या अध्ययन

१ कर्म-लेख्याओं के कथन का संकल्प

२ लेख्या सम्बन्धि इग्यारह अधिकार

३ लेख्याओं के नाम

लेख्याओं के वर्ण

४ कृष्ण लेख्या का वर्ण

५ नील लेख्या का वर्ण

६ कापोत लेख्या का वर्ण

७ तेजो लेख्या का वर्ण

८ पद्म लेख्या का वर्ण

९ शुक्ल लेख्या का वर्ण

लेख्याओं के रस

१० कृष्ण लेख्या का रस

११ नील लेख्या का रस

१२ कापोत लेख्या का रस

१४ पद्म लक्ष्मी का रम

१५ शुभन लक्ष्मी का रम

लक्ष्मीओं की गंध

१६ तीन अग्रगण्य लक्ष्मीओं की गंध

१७ तीन प्रगण्य लक्ष्मीओं की गंध

लक्ष्मीओं का स्पर्श

१८ तीन अग्रगण्य लक्ष्मीओं का स्पर्श

१९ तीन प्रगण्य लक्ष्मीओं का स्पर्श

लक्ष्मीओं के परिच्छाद

२० लक्ष्मी लक्ष्मी के परिच्छादों की सहा

लक्ष्मीओं के लक्षण

२१ २२ कृष्ण लक्ष्मी का लक्षण

२३ २४ नील लक्ष्मी का लक्षण

२५ २६ बाणेश लक्ष्मी का लक्षण

२७ २८ तेजो लक्ष्मी का लक्षण

२९ ३० पद्म लक्ष्मी का लक्षण

३१ ३२ शुभन लक्ष्मी का लक्षण

लक्ष्मीओं के स्थान

३३ लक्ष्मी लक्ष्मी के स्थान

लक्ष्मीओं की स्थिति

३४ कृष्ण लक्ष्मी की जघन्य उ कृष्ण स्थिति

३५ नील लक्ष्मी की जघन्य उ कृष्ण स्थिति

३६ बाणेश लक्ष्मी की जघन्य उ कृष्ण स्थिति

३७ तेजो लक्ष्मी की जघन्य उ कृष्ण स्थिति

३८ पद्म लक्ष्मी की जघन्य उ कृष्ण स्थिति

३९ शुभन लक्ष्मी की जघन्य उ कृष्ण स्थिति

चार गतियों में लेश्याओं की स्थिति

४० चार गतियों में लेश्या-स्थिति कहने का संकल्प

नरक गति में लेश्याओं की स्थिति

४१ नरक गति में कापोत लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

४२ „ नील लेश्या की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

४३ „ कृष्ण लेश्या की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

४४ त्रिच और मनुष्य गति में लेश्याओं की स्थिति

४५ कृष्ण में पक्ष पर्यन्त लेश्याओं की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

४६ शुक्ल लेश्या की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

४७ देवगति में लेश्याओं की स्थिति

४८ देवगति में कृष्ण लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

४९ „ नील लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

५० „ कापोत लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

५१-५३ „ तेजो लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

५४ „ पक्ष लेश्या की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

५५ „ शुक्ल लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

लेश्याओं की गति

५६ तीन अधर्म लेश्याओं की गति

५७ तीन धर्म लेश्याओं की गति

५८-६० लेश्याओं की परिणति में परलोक गमन

६१ उपसंहार—लेश्याओं के अनुभाव का ज्ञाता

पैतृसर्वा अनगार अध्ययन

१ बुद्ध कथित मार्ग कहने का संकल्प

२-३ संयत के संगों—बन्धनों का ज्ञान

४ साधु निवास के अयोग्य स्थान

५ अयोग्य स्थान में न ठहरने का कारण

- ६७ साधु के निवास योग्य स्थान
 ८६ अथ कृत स्थान से ठहरने का कारण
 १० १२ क भोजन बनाने का निषेध
 ल निषेध का हेतु
 १३ १५ कथं विक्रय का निषेध
 १६ भिक्षावृत्ति का विधान
 १७ आहार भक्षण विधि
 १८ सम्मान कामना का निषेध
 १९ साधना विधि
 २० अन्तिम साधना
 २१ उपसंहार निर्वाण पथ का पथिक

छत्तीसवाँ जीवाजीवविभक्ति अध्ययन

- १ जीवाजीव विभक्ति के ज्ञान से सयम साधना
 २ लोक अलोक का स्वरूप

अजीव विभाग

- ३ जीव-अजीव की द्वाय क्षेत्र काल और भाव प्रकृष्टता
 ४ क अजीव के दो भेद
 ल अक्षयी अजीव के दस भेद
 ग क्षयी अजीव के चार भेद
 ५ १ अक्षयी अजीव के दस भेद
 ७ पम अपम आकाश और काल का क्षेत्र
 ८ पम अपम और आकाश अनादि अनन्त
 ९ क काल—सत्तति अपेक्षा अनादि अनन्त
 ल आदेश अपेक्षा सादि सात्त
 १० क्षयी अजीव के चार भेद
 ११ १२ क एकस्य और परमाणु का लक्षण

ग- स्कन्ध और परमाणु का क्षेत्र

ग- ,, की अपेक्षाकृत स्थिति

१३ रूपी अजीव द्रव्य की स्थिति

१४ रूपी अजीव द्रव्य का अन्तरकाल

१५-४६ रूपी अजीव द्रव्य के पाँच परिणाम

जीव विभाग

४७ जीव विभाग का कथन

४८ जीव के दो भेद

४९ सिद्धों के अनेक भेद

५० सिद्धों की अवगाहना

५१ एक समय में सिद्ध होने वालों की संख्या

५२ ,, लिङ्ग की अपेक्षा से सिद्ध होने वालों की संख्या

५३ ,, अवगाहना की अपेक्षा से सिद्ध होने वालों की संख्या

५४ ,, क्षेत्र की अपेक्षा से सिद्ध होने वालों की संख्या

५५-५६ सिद्धों का वर्णन

५७-५९ ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी-सिद्धस्थान का आयत विस्तार और

६० सिद्ध स्थान की रचना

६१ लोकान्त का परिमाण

६२-६६ क- संसार की स्थिति, जीव के दो भेद

ख- स्यावर जीवों के तीन-भेद

७०-७७ पृथ्वीकाय के भेद

७८ पृथ्वीकाय की व्यापकता

७९ द्रव्य और पर्याय की अपेक्षा पृथ्वीकाय की स्थिति

८० पृथ्वीकाय के जीवों की अधन्य उत्कृष्ट स्थिति

८१ पृथ्वीकायिक जीवों की कायस्थिति

- ८२ ६१ अण्डाण और अपकायिक जीवों का वर्णन
 ६२ १०६ वनस्पतिनाम और वनस्पति वर्णिक जीवों का वर्णन
 १०७ वन जीवों के तीन भेद
 १०८ ११६ तेजस्काय और तेजस्वाधिक जीवों का वर्णन
 ११७ १२५ वायुकाय और वायुकायिक जीवों का वर्णन
 १२६ उदाह वन जीवों के चार भेद
 १२७ १३५ द्वी द्वि जीवों का वर्णन
 १३६ १४४ त्री द्वि जीवों का वर्णन
 १४५ १५४ चतुरि द्वि जीवों का वर्णन
 १५५ क पक्षि द्वि जीवों का वर्णन
 ल पक्षि द्वि जीवों के चार भेद
 १५६ १६६ नरयिक जीवों का वर्णन
 १७० १६३ पक्षि द्वि त्रि जीवों का वर्णन
 १६४ २०२ मनुष्यों का वर्णन
 २०३ २४८ चार प्रकार के देवों का वर्णन
 २४९ अण्डाण
 २५० नदों की अपेक्षा से जीव अश्वीय का वर्णन
 २५१ ससेखना का विधान
 २५२ ससेखना के तीन भेद
 २५३ २५६ उत्कृष्ट ससेखना का वर्णन
 २५७ अशुभ भावनाओं से दुर्गति और विरावना
 २५८ दुर्लभ बोधि जीव
 २५९ सुलभ बोधि जीव
 २६० दुर्लभ बोधि जीवन
 २६१ जिन वचनों पर खड़ा करने का फल
 २६२ जिन वचनों पर अखड़ा करने का फल
 २६३ आलोचना सुनने के योग्य अधिकारी

२६४	कंदर्प भावना वर्णन
२६५	अभियोग भावना वर्णन
२६६	किल्बिष भावना वर्णन
२६७	आसुरी भावना वर्णन
२६८	मोह भावना वर्णन
२६९	उपसंहार—छत्तीस उत्तराध्ययनों के कथन के पश्चात् भ० .
	महावीर को निर्वाण की प्राप्ति

एतमो बुद्धाणं

द्रव्यानुयोगमय नन्दीसूत्र

अध्ययन	१
मूल पाठ	७०० श्लोक परिमाण
गद्य सूत्र	२७
पद्य गाथा	६७

नन्दीसूत्र विषय-सूची

गाथा १-३ वीर स्तुति

४-१६ मंघ स्तुति

४ क- सघ को नगर की उपमा

५ ख- मंघ को चक्र की उपमा

६ ग- सघ को रथ की उपमा

७-८ घ- सघ को कमल की उपमा

९ ङ- सघ को चन्द्र की उपमा

१० च- सघ को सूर्य की उपमा

११ छ- सघ को समुद्र की उपमा

१२-१८ ज- सघ को मेरु की उपमा

१९ झ- उपसंहार

२०-२१ चतुर्विधाति जिन वदना

२३ द्वयारह गणधर वदना

२४ जिन शासन स्तुति

२५-५० स्थविरावली

५१ श्रोता की चौदह उपमा

५२-५४ तीन प्रकार की परिपद

सूत्र १ ज्ञान के पाँच भेद

२ ज्ञान के दो भेद

३ प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद

४ इन्द्रिय प्रत्यक्ष के पाँच भेद

ग- देश अवधिज्ञान वाले

सूत्र १७ मनःपर्यव ज्ञान वाले

१८ मनःपर्यव ज्ञान के दो भेद

गाथा ६५ ख- मनःपर्यव ज्ञान का विषय

ग- मनःपर्यव ज्ञान का क्षेत्र

घ- मनःपर्यव ज्ञान होने का हेतु

सूत्र १९ क- केवल ज्ञान के दो भेद

ख- भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

ग- सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

घ- सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

ङ- अयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

च- अयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

सूत्र २० छ- सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद

सूत्र २१ ज- अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञान के पन्द्रह भेद

झ- परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान के अनेक भेद

ञ- परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान के संक्षेप में चार भेद

सूत्र २२

गाथा ६६ केवल ज्ञान का विषय

केवल ज्ञान की नित्यता

सूत्र २३

गाथा ६७ केवल ज्ञान का कथन योग्य अंश

केवल ज्ञान का अकथन योग्य अंश

सूत्र २४ क- परोक्ष ज्ञान के दो भेद

ख- मति-श्रुत का साहचर्य

ग- मति-श्रुत की पूर्वापरता

२५ क- मति-ज्ञान और मति अज्ञान के पात्र

ख- श्रुत-ज्ञान और श्रुत अज्ञान के पात्र

- १ मो इन्द्रिय प्रत्यक्ष के तीन भेद
- ६ अवधि ज्ञान के दो भेद
- ७ भव प्रत्यक्षिक अवधिज्ञान वाले दो
- ८ सायोपशमिक अवधिज्ञान वाले दो
- ९ सायोपशमिक अवधिज्ञान के छ भेद

- १० क अननुपात्मिक अवधिज्ञान के दो भेद
- ख अलगत अवधिज्ञान के तीन भेद
- ग प्रत्येक भेद की व्याख्या
- घ मध्यगत अवधिज्ञान की व्याख्या
- ङ अलगत और मध्यगत की विशेषता
- ११ अनानुपात्मिक अवधिज्ञान की व्याख्या
- १२ वधमान अवधिज्ञान की व्याख्या

शाखा ५५ क अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र

५६ ख अवधिज्ञान का उत्तुष्ट क्षेत्र

५७ ग अवधिज्ञान का मध्यम क्षेत्र

५८ ६० घ क्षेत्र और कान की अपेक्षा अवधि ज्ञान का विस्तार

६१ ङ क्षेत्र और कान की रुद्धि का नियम

६२ च कान और क्षेत्र की मूल्यता

सूत्र ६३ हीयमान अवधिज्ञान की व्याख्या

६४ प्रतिपानि अवधिज्ञान की व्याख्या

६५ अप्रतिपानि अवधिज्ञान की व्याख्या

६६ अप्रतिपानि अवधिज्ञान के चार भेद

शाखा ६३ अवधिज्ञान के अनेक भेद

६४ क नियमित अवधिज्ञान वाले

ख पूर्ण अवधिज्ञान वाले

ग- देश अवधिज्ञान वाले

सूत्र १७ मनःपर्यव ज्ञान वाले

१८ मनःपर्यव ज्ञान के दो भेद

गाथा ६५ ख- मनःपर्यव ज्ञान का विषय

ग- मनःपर्यव ज्ञान का क्षेत्र

घ- मनःपर्यव ज्ञान होने का हेतु

सूत्र १९ क- केवल ज्ञान के दो भेद

ख- भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

ग- सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

घ- सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

ङ- अयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

च- अयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

सूत्र २० छ- सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद

सूत्र २१ ज- अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञान के पन्द्रह भेद

झ- परस्पर सिद्ध केवल ज्ञान के अनेक भेद

ञ- परस्पर सिद्ध केवल ज्ञान के संक्षेप में चार भेद

सूत्र २२

गाथा ६६ केवल ज्ञान का विषय

केवल ज्ञान की निश्चयता

सूत्र २३

गाथा ६७ केवल ज्ञान का कथन योग्य अंश

केवल ज्ञान का अकथन योग्य अंश

सूत्र २४ क- परोक्ष ज्ञान के दो भेद

ख- मति-श्रुत वा साहचर्य

ग- मति-श्रुत की पूर्वापरता

२५ क- मति-ज्ञान और मति अज्ञान के पात्र

ख- श्रुत-ज्ञान और श्रुत अज्ञान के पात्र

- ५ नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष के तीन भेद
- ६ अवधि ज्ञान के दो भेद
- ७ भव प्रत्यक्ष अवधिज्ञान वाले दो
- ८ क्षायोपशमिक अवधिज्ञान वाले दो
- ९ क्षायोपशमिक अवधिज्ञान के छह भेद

- १० क आनुगामिक अवधिज्ञान के दो भेद
 - ख- अतन्त अवधिज्ञान के तीन भेद
 - ग प्रत्येक भेद की व्याख्या
 - घ मध्यम अवधिज्ञान की व्याख्या
 - ङ अतन्त और मध्यम की विशेषता
- ११ अनानुगामिक अवधिज्ञान की व्याख्या
- १२ अधमान अवधिज्ञान की व्याख्या

गाथा ५५ क अवधिज्ञान का जघन क्षेत्र

५६ ख अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र

५७ ग अवधिज्ञान का मध्यम क्षेत्र

५८ ६० घ क्षेत्र और काल की अपेक्षा अवधि ज्ञान का विस्तार

६१ ङ क्षेत्र और काल की दृष्टि का नियम

६२ च काल और क्षेत्र की सूक्ष्मता

सूत्र १३ हीयमान अवधिज्ञान की व्याख्या

१४ प्रतिगति अवधिज्ञान की व्याख्या

१५ सप्रतिपत्ति अवधिज्ञान की व्याख्या

१६ सप्रतिपत्ति अवधिज्ञान के चार भेद

गाथा ६३ अवधिज्ञान के श्लोक भेद

६४ क नियमित अवधिज्ञान वाले

ख मूल अवधिज्ञान वाले

३६-

गाथा ८२ मति ज्ञान के चार भेद

८३ अवग्रह आदि चारों की परिभाषा

८४ अवग्रह आदि चारों की स्थिति

८५ शब्द और रूप अप्राप्यकारी

गंध, रस और स्पर्श प्राप्यकारी

८६ सम श्रेणि और विषमश्रेणि में सुनने योग्य शब्द

८७ मति-ज्ञान के समानार्थक शब्द

सूत्र ३७ श्रुतज्ञान के चौदह भेद

३८ क- अक्षर श्रुत के तीन भेद

ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ग- अनक्षर श्रुत के अनेक भेद

३९ संज्ञि और असंज्ञि श्रुत के तीन भेद, प्रत्येक भेद की व्याख्या

४० नम्यक् श्रुत की व्याख्या

४१ मिथ्या श्रुत की व्याख्या

४२ क- मादि सान्त और अनादि अनन्त श्रुत के चार भेद

ख- मादि सान्त और अनादि अनन्त श्रुत के वैकल्पिक दो भेद

ग- ज्ञानावरण से अनावृत आत्म-प्रदेशों के आवृत होने पर अजीव होने की आशङ्का

घ- मेघाच्छादित चन्द्र-सूर्य का उदाहरण

४३ व- गमिक, अगमिक श्रुत

ख- श्रुतज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

ग- अगवाह्य श्रुत के दो भेद

घ- आवश्यक के छः भेद

ङ- आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद

च- उत्कानिक श्रुत के अनेक भेद

छ- जालिक श्रुत के अनेक भेद

- २६ क आधिनियोजित ज्ञान क हो भे
 ल अशून निधिन आधिनियोजित ज्ञान के चार भ
 गाय २८ चार प्रकार की बुद्धि
 २९ अंगति की बुद्धि की व्याख्या
 ३० ३२ अंगति की बुद्धि क सत्तावीस दृष्टान्त
 गाय ३३ विनयवा बुद्धि क लक्षण
 ३४ ३५ विनयवा बुद्धि की पद्धि बयाएँ
 ३६ कमला बुद्धि के लक्षण
 ३७ कमला बुद्धि की बहार बयाएँ
 ३८ पारिणामि की बुद्धि का लक्षण
 ३९ ४१ पारिणामि की बुद्धि क स्वकीय उद्गारण
 मूल २६ धूननिभिन्न मतिज्ञान क चार भे
 २७ अवग्रह के दो भेद
 २८ व्यञ्जनावग्रह के चार भेद
 २ अवधिग्रह क छ भेद
 १० अवग्रह क पाँच समानाधिकार
 ३१ ईहा क छ भेद
 ३२ अवाय क छ भेद
 ३३ धारणा क छ भेद
 ३४ अवग्रह ईहा अवाय और धारणा की कान मर्मांश
 ३५ क व्यञ्जनावग्रह के दो दृष्टान्त
 ल प्रतिमाधिक दृष्टान्त का वर्णन
 ग मालक दृष्टान्त का वर्णन
 घ गच्छ रूप वम रम रम्य और स्वप्न के अवग्रह ईहा
 अवाय तथा धारणा का कर्म

३६-

गाथा ८२ मति ज्ञान के चार भेद

८३ अवग्रह आदि चारों की परिभाषा

८४ अवग्रह आदि चारों की स्थिति

८५ शब्द और रूप अप्राप्यकारी

गंध, रस और स्पर्श प्राप्यकारी

८६ मम श्रेणि और विषमश्रेणि में सुनने योग्य शब्द

८७ मति-ज्ञान के ममानार्थक शब्द

सूत्र ३७ श्रुतज्ञान के चौदह भेद

३८ क- अक्षर श्रुत के तीन भेद

ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ग- अनक्षर श्रुत के अनेक भेद

३९ संज्ञि और असंज्ञि श्रुत के तीन भेद, प्रत्येक भेद की व्याख्या

४० सम्यक् श्रुत की व्याख्या

४१ मिथ्या श्रुत की व्याख्या

४२ क- सादि सान्त और अनादि अनन्त श्रुत के चार भेद

ख- सादि सान्त और अनादि अनन्त श्रुत के वैकल्पिक दो भेद

ग- ज्ञानावरण से अनावृत आत्म-प्रदेशों के आवृत होने पर अजीव होने की आशङ्का

घ- मेघाच्छादित चन्द्र-सूर्य का उदाहरण

४३ क- गमिक, अगमिक श्रुत

ख- श्रुतज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

ग- अंगवाह्य श्रुत के दो भेद

घ- आवश्यक के छः भेद

ङ- आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद

च- उत्कालिक श्रुत के अनेक भेद

छ- कालिक श्रुत के अनेक भेद

४४ ब्रह्म प्रविष्ट युत के १२ भेद

४५ ५५ व्याचारसूत्र यावन विपाक का वर्णन

५६ क दृष्टिवाद के पांच विभाग

ख- परिवर्त के सात विभाग

ग सूत्र के बाबीस विभाग

घ पूथ चौदह

ङ- अनुयोग के दो विभाग

च धूर्तों की भूलिखा

छ दृष्टिवाद का संक्षिप्त परिचय

५७ क गणिपिटक के विषय

ख गणिपिटक की विराधना का फल

ग गणिपिटक की आराधना का फल

घ गणिपिटक की नित्यता

गाथा ६४ ६५ अष्टगुणयुक्त की युत का लाभ

६६ अनुयोग ध्यात्वा विधि

६७ ध्यात्वा प्रवण करने वाले के सात कर्तव्य

णमो अणुयोगवराणं वेराणं

द्रव्यानुयोग प्रधान अनुयोगद्वार सूत्र

द्वार	४
उपलब्ध मूलपाठ	१८६६ श्लोक प्रमाण
राघ सूत्र	१५२
पद्य सूत्र	१४३

अनुयोग-द्वार विषय-सूची

- १ पाँच ज्ञान
- २ श्रुतज्ञान उद्देश आदि चार भेद
- ३ अनङ्ग प्रविष्टिक अनुयोग
- ४ उत्कालिक अनुयोग
- ५ आवश्यक के श्रुतस्कंध और अध्ययन
- ७ क- आवश्यक के निक्षेप कहने का संकल्प
- ख- श्रुत के निक्षेप कहने का संकल्प
- ग- स्कंध के निक्षेप कहने का संकल्प
- घ- अध्ययन के निक्षेप कहने का संकल्प
- ८ आवश्यक के चार निक्षेप
- ९ नाम आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण
- १० स्थापना आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण
- ११ नाम और स्थापना की विशेषता
- १२ द्रव्य आवश्यक के दो भेद
- १३ द्रव्य आवश्यक की व्याख्या
- १४ द्रव्य आवश्यक के सप्त नय
- १५ नो आगम (भाव रहित) द्रव्य आवश्यक के तीन भेद
- १६ ज-शरीर (आवश्यक जानने वाले का मृत शरीर) द्रव्याव-
श्यक की व्याख्या और उदाहरण
- १७ भव्य शरीर (भाविशरीर से आवश्यक जानेगा) द्रव्यावश्यक
की व्याख्या और उदाहरण
- १८ ज-शरीर, भव्य शरीर व्यतिरिक्त (भिन्न) द्रव्यावश्यक के

- १६ लौकिक द्रव्यावश्यक की व्याख्या
- २० कृत्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की व्याख्या
- २१ लोकौत्तर द्रव्य आवश्यक की व्याख्या
- २२ भाव आवश्यक के दो भेद
- २३ आगम भाव आवश्यक की व्याख्या
- २४ नौ आगम भाव आवश्यक के तीन भेद
- २५ लौकिक भाव आवश्यक की व्याख्या
- २६ कृत्रावचनिक भाव आवश्यक की व्याख्या
- २७ लोकौत्तर भाव आवश्यक की व्याख्या
- २८ क लोकौत्तर भाव आवश्यक के पर्याप्तवाची
ख आवश्यक की परिभाषा
- २९ धुन के चार निमित्त
- ३० नाम धुन की व्याख्या और उदाहरण
- ३१ क- स्थापना धुन की व्याख्या और उदाहरण
ख- नाम और स्थापना की विभावना
- ३२ द्रव्य धुन के दो भेद
- ३३ क आगम स द्रव्य धुन की व्याख्या
ख " , व्याख्या विचारणा
- ३४ नौ आगम स द्रव्य धुन के तीन भेद
- ३५ ज शरीर द्रव्य धुन की व्याख्या और उदाहरण
- ३६ भव्य शरीर द्रव्य धुन की व्याख्या और उदाहरण
- ३७ क ज शरीर और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य धुन की व्याख्या
ख उनके पाँच भेद
ग प्रत्येक भेद की व्याख्या
- (१) कीटज द्रव्य धुन मूल के पाँच भेद
(२) बाणज द्रव्य धुन-मूल-के पाँच भेद
- ३८ भाव धुन के दो भेद

- ३६ आगम भाव श्रुत की व्याख्या
 ४० नौ आगम भाव श्रुत के दो भेद
 ४१ नौ आगम लौकिक भाव श्रुत की व्याख्या
 ४२ नौ आगम लोकोत्तर भाव श्रुत "
 ४३ श्रुत के पर्यायवाची
 ४४ स्वयं के चार निक्षेप
 ४५ नाम-व्यापना-सूत्र ३०, ३१ के समान
 ४६ क- द्रव्य स्वयं के दो भेद
 ग- आगम द्रव्य स्वयं की व्याख्या और भेद
 घ- ज-शरीर, भव्य शरीर, व्यतिरिक्त द्रव्यस्वयं के तीन भेद
 ४७ मन्त्रित द्रव्य स्वयं अनेक प्रकार का
 ४८ अचित्त द्रव्य स्वयं अनेक प्रकार का
 ४९ मिश्र द्रव्य स्वयं अनेक प्रकार का
 ५० ज-शरीर, भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यस्वयं के वैकल्पिक
 तीन भेद
 ५१ कृत्स्न-पूर्ण द्रव्यस्वयं अनेक प्रकार का
 ५२ अकृत्स्न-अपूर्ण-द्रव्यस्वयं अनेक प्रकार का
 ५३ अनेक द्रव्य वाले स्वयं की व्याख्या
 ५४ भावस्वयं के दो भेद
 ५५ आगम भावस्वयं की व्याख्या
 ५६ नौ आगम भावस्वयं की व्याख्या
 ५७ स्वयं के पर्यायवाची
 ५८ आवश्यक के छः अध्ययनों के विषय
 ५९ क- आवश्यक के छः अध्ययन
 ग- प्रथम अध्ययन के चार अनुयोग-द्वार
 ६० क- उपक्रम के छः निक्षेप
 ग- द्रव्य उपक्रम के दो भेद

ग न-शरीर, मध्य शरीर स्थितिरिक्त इध्य उपक्रम के तीन भेद

६१ क- सविन इध्य उपक्रम के तीन भेद

ग- प्रत्यक्ष के दो दो भेद

६२ इतिह उपक्रम की व्याख्या

६३ अनुवाद उपक्रम की व्याख्या

६४ अगद उपक्रम की व्याख्या

६५ अविन इध्य उपक्रम की व्याख्या

६६ मिथ इध्य उपक्रम की व्याख्या

६७ दोष उपक्रम की व्याख्या

६८ वास उपक्रम की व्याख्या

६९ क घात उपक्रम के दो भेद

ग नो आगम आत उपक्रम के दो भेद

ग प्रावक भेद की व्याख्या

७० उपक्रम के वैकल्पिक ६ भेद

७१ आनुपूर्वी के दस भेद

७२ क इध्य आनुपूर्वी के दो भेद

ग आगम इध्यानुपूर्वी की व्याख्या और नय विचारणा

ग- नो आगम इध्यानुपूर्वी के तीन भेद, प्रत्येक भेद की व्याख्या

घ- न शरीर, मध्य शरीर स्थितिरिक्त इध्यानुपूर्वी के दो भेद

ङ- अनौपनिषिक्ती इध्यानुपूर्वी के दो भेद

७३ नैगम और व्यवहार नय से अनौपनिषिक्ती इध्यानुपूर्वी के पांच भेद

७४ अर्थपद प्ररूपणा, इध्यानुपूर्वी की व्याख्या

७५ अर्थपद प्ररूपणा का प्रयोजन

७६ नैगम व्यवहार नय से अर्थपद प्ररूपणा के छह भेद

७७ नय कथन का प्रयोजन

७८ नैगम-व्यवहार नय से अर्थ कथन के आठ विकल्प

- ७६ नैगम-व्यवहार नय मे समवतार की व्याख्या
 ८० अनुगम के नो भेद
 ८१ क- नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी द्रव्यों की सत् पद प्ररूपणा
 ख- नैगम-व्यवहार नय से अनानुपूर्वी द्रव्यों की सत् पद प्ररूपणा
 ग- नैगम-व्यवहार नय मे अवयवतव्य द्रव्यों की सत् पदप्ररूपणा
 ८२ नैगम-व्यवहार नय मे आनुपूर्वी अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों का प्रमाण
 ८३ नैगम-व्यवहार नय मे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी, और अवयवतव्य द्रव्यों का क्षेत्र प्रमाण
 ८४ नैगम-व्यवहार नय मे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों की क्षेत्र स्पर्शना
 ८५ नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों की काल मर्यादा
 ८६ नैगम-व्यवहार नय मे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी व अवयवतव्य द्रव्यों का अन्तर काल
 ८७ नैगम-व्यवहार नयसे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों का क्षेत्र द्रव्यों की अपेक्षा परिमाण
 ८८ नैगम-व्यवहार-नयसे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों की छः भावों में विचारणा
 ८९ नैगम-व्यवहार-नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों के देश-प्रदेश और उभय की अल्प-बहुत्व
 ९० संग्रह नय की अपेक्षा से अनीपधिकी द्रव्यानुपूर्वी के पाँच भेद
 ९१ संग्रह नय से आनुपूर्वी-अनानुपूर्वी और अवयवतव्य स्कंध प्रदेशों की अर्थपद प्ररूपणा
 ९२ क- अर्थ-पद प्ररूपणा का प्रयोजन
 ख- संग्रह नय सप्तभंगी का
 ग- भंग कथन का प्रयोजन

- ६३ सप्तह नय से भग दान
- ६४ सप्तह नय से समवनार की व्याख्या
- ६५ क सप्तह नय से अनुपम के आठ भेद
ख सप्तह नय से आठ भेदों की व्याख्या
- ६६ अनौपनिषिणी ब्रह्मानुपूर्वी के तीन भेद
- ६७ क पूर्वानुपूर्वी की व्याख्या
ख परवानुपूर्वी की व्याख्या
ग अनानुपूर्वी की व्याख्या
- ६८ क अनौपनिषिणी ब्रह्मानुपूर्वी के वैदिक तीन भेद
ख प्रत्येक भेद की व्याख्या
- ६९ क्षेत्रानुपूर्वी के दो भेद
- १०० अनौपनिषिणी क्षेत्रानुपूर्वी के दो भेद
- १०१ क नैगम-व्यवहार नय से अनौपनिषिणी क्षेत्रानुपूर्वी के पाँच भेद
ख प्रत्येक भेद प्रभेद की व्याख्या
- १०२ क नैगम-व्यवहार नय से अनौपनिषिणी क्षेत्रानुपूर्वी के पाँच भेद
ख प्रत्येक भेद प्रभेद की व्याख्या
- १०३ क अनौपनिषिणी क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद
ग नियमोक्त क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद
घ दध्यभाक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद
ङ- अनौपनिषिणी क्षेत्रानुपूर्वी के वैदिक तीन भेद
- १०४ कानानुपूर्वी के दो भेद
- १०५ अनौपनिषिणी कानानुपूर्वी के दो भेद
- १०६ नैगम व्यवहार नय से अनौपनिषिणी कानानुपूर्वी के पाँच भेद
- १०७ १११ प्रत्येक भेद प्रभेद की व्याख्या
- ११२ सप्तह नय से अनौपनिषिणी कालानुपूर्वी के पाँच भेद
- ११३ ११४ प्रत्येक भेद की व्याख्या
- ११५ चत्वीर्जनानुपूर्वी के तीन भेद

- ११६ गणना-आनुपूर्वी के तीन भेद
 ११७ संस्थान-आनुपूर्वी के तीन भेद
 ११८ समाचारी आनुपूर्वी के तीन भेद
 ११९ भाव आनुपूर्वी के तीन भेद
 १२० नाम आनुपूर्वी के दस भेद
 १२१ एक नाम आनुपूर्वी की व्याख्या
 १२२ क- दो नाम आनुपूर्वी के दो भेद
 ख- दो नाम आनुपूर्वी के वैकल्पिक दो भेद
 १२३ क- तीन नाम आनुपूर्वी के तीन भेद
 ख- द्रव्य नाम आनुपूर्वी के छः भेद
 ग- गुणनाम आनुपूर्वी के पाँच भेद
 घ- पर्यवनाम आनुपूर्वी के अनेक भेद
 १२४ चार नाम आनुपूर्वी के चार भेद
 १२५ पाँच नाम आनुपूर्वी के पाँच भेद
 १२६ क- छः नाम आनुपूर्वी के छः भेद
 ख- औदयिक भाव आनुपूर्वी के दो भेद
 ग- प्रत्येक भेद की व्याख्या
 घ- औपशमिक भाव आनुपूर्वी के भेद
 ङ- प्रत्येक भेद की व्याख्या
 च- क्षायिक भाव आनुपूर्वी के दो भेद
 छ- प्रत्येक भेद की व्याख्या
 ज- क्षायोपशमिक भाव आनुपूर्वी के दो भेद
 झ- प्रत्येक भेद की व्याख्या
 ञ- परिणामिक भाव आनुपूर्वी के दो भेद
 ट- प्रत्येक भेद प्रभेद की व्याख्या
 ठ- सांनिपातिक भाव आनुपूर्वी की व्याख्या

४ सानिपातिक भाव आनुपूर्वी के द्विक नयोमी-वाचत्-पञ्चक
सयोगी भावे

१२७ क- सात नाम आनुपूर्वी के सात भेद

■ सात स्वरो की व्याख्या

१२८ क आठ नाम आनु पूर्वी के आठ भेद

■ आठ विभक्तियों की व्याख्या

१२९ क- नव नाम आनुपूर्वी के नौ भेद

■ नौ काव्य रसों की उदाहरण सहित व्याख्या

१३० क दस नाम आनुपूर्वी के दस भेद

■ गुणनिष्पन्न नाम आनुपूर्वी की व्याख्या

ग- निर्गुण निष्पन्न नाम आनुपूर्वी की व्याख्या

घ- आशान्ति पद आनुपूर्वी की व्याख्या

ङ- प्रतिपक्ष पद आनुपूर्वी की व्याख्या

च- प्रधान पद आनुपूर्वी की व्याख्या

छ- अनादिसिद्ध नाम आनुपूर्वी की व्याख्या

ज- नाम आनुपूर्वी की व्याख्या

झ- अवयव आनुपूर्वी की व्याख्या

ञ- सयोग आनुपूर्वी के चार भेद

ट- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ठ- प्रमाण आनुपूर्वी के चार भेद

ड- नाम प्रमाण की व्याख्या

ढ- स्थापना प्रमाण के सात भेदों की व्याख्या

ण- द्रव्य प्रमाण के छ भेद

त- भाव प्रमाण के चार भेद

थ- समान के सात भेद

द- सद्विद के आठ भेद

ध- धातु के अनेक भेद

न- निरुक्त की व्याख्या

१३१ प्रमाण के चार भेद

१३२ क- द्रव्य प्रमाण के दो भेद

ख- प्रदेश निष्पन्न की व्याख्या

ग- विभाग निष्पन्न के पाँच भेद

घ- मान प्रमाण के दो भेद

ङ- उन्मान प्रमाण की व्याख्या

च- अवमान प्रमाण की व्याख्या

छ- अवमान प्रमाण का प्रयोजन

ज- गणित प्रमाण की व्याख्या

झ- गणित प्रमाण का प्रयोजन

१३३ क- क्षेत्र प्रमाण के दो भेद

ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ग- अंगुल प्रमाण के तीन भेद

घ- आत्मांगुल प्रमाण की व्याख्या

ङ- आत्मांगुल प्रमाण का प्रयोजन

च- उत्सेधांगुल के अनेक भेद

छ- उत्सेधांगुल प्रमाण का प्रयोजन

चोवीस दण्डक के जीवों की अवगाहना

ज- प्रमाणांगुल की व्याख्या

झ- प्रमाणांगुल प्रमाण का प्रयोजन

ञ- प्रमाणांगुल के तीन भेद

ट- प्रत्येक भेद की व्याख्या

१३४ काल प्रभाव के दो भेद

१३५ प्रदेश निष्पन्न काल प्रमाण की व्याख्या

१३६ विभागनिष्पन्न काल प्रमाण की व्याख्या

१३७ क- समय की व्याख्या

स आबन्निवा-मायन् नीवप्रहेनिका एवञ्च गणना कान

॥ बीजमित्त कान के दो भेद

प वत्स्योपम के तीन भेद

द प्रत्येक भेद की व्याख्या

न सागरोपम का की व्याख्या

१३९ वत्स्योपम सागरोपम का दू प्रयोजन

१४० बीबीम दण्डक क बीजा की स्थिति

१४० क दोन वत्स्योपम के दो भेद

न व्यवहारित दोन वत्स्योपम एवं सागरोपम की व्याख्या और उभका प्रयोजन

१४१ क द्रव्य के दो भेद

स अजीव द्रव्य क दो भेद

ग अकरी अजीव द्रव्य के दस भेद

घ कपी अजीव द्रव्य के चार भेद

ङ अनन्त जीवद्रव्य

१४२ बीबीम दण्डक म पाँच तरीरो की बड़ मुक्त विचारणा

१४६ क भाव प्रमाण के तीन भेद

स प्रत्येक भेद प्रभेद का बचन

ग जीव गुण प्रमाण के तीन भेद

घ ज्ञान गुण प्रमाण के चार भेद

ङ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और आगम प्रमाण की व्याख्या

१४४ क दशन गुण प्रमाण के चार भेद

स चारित्र गुण प्रमाण के पाँच भेद

१४५ क नय प्रमाण के तीन भेद

स प्रत्यक्ष दृष्टान्त

ग वसति दृष्टान्त

घ प्रवेग दृष्टान्त

१४६ क- संख्या प्रमाण के आठ भेद

ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ग- संख्यात असंख्यात और अनन्त की व्याख्या

१४७ क- वक्तव्यता के तीन भेद

ख- स्वसमय, परसमय और उभयसमय की नयों से व्याख्या

१४८ आवश्यक के छः अर्थाधिकार

१४९ आवश्यक के छः समवतार (चिन्तन)

१५० क- निक्षेप के तीन भेद

ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या

१५१ क- अनुगम के दो भेद

ख- नियुक्ति अनुगम के तीन भेद

ग- प्रत्येक भेद की व्याख्या

१५२ सात नय की व्याख्या

पमो वायणारियाणं

चरणानुयोगमय बृहत्कल्प सूत्र

उद्देशक	६
अधिरार	८१
उपलब्ध मूल पाठ	४०३ ग्लोष
मूल मंग्या	२०६

बृहत्कल्प विषय-सूचि

प्रथम उद्देशक

एषणा समिति

एषणा ग्रहणैषणा आहार कल्प

१-५ कदलीफल के सम्बन्ध में विधि निषेध

एषणा-परिभोगैषणा उपाश्रय कल्प

६-६ ग्राम-यावत्-राजधानी में रहने की काल मर्यादा

१०-११ ग्राम-यावत्-राजधानी में निर्ग्रन्थी निवास सम्बन्धी विधि-निषेध

१२-१३ दुकान-यावत्-दो दुकानों के मध्य के स्थान में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी निवास सम्बन्धी विधि-निषेध.

१४-१५ कपाट रहित स्थान में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी निवास सम्बन्धी विधि-निषेध

एषणा-परिभोगैषणा पात्र कल्प

१६-१७ प्रश्रवण पात्र [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी] सम्बन्धी विधि निषेध

एषणा-परिभोगैषणा वस्त्रकल्प

१८ चिलमिलिका-परदा [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी] सम्बन्धी विधि निषेध

एषणा स्थान आचार कल्प

१९ जलाशय तट पर [निर्ग्रन्थियों के लिए] निषिद्ध कृत्य

एषणा-गवेषणा वसति उपाश्रय कल्प

२०-२१ चित्र सहित और चित्र रहित वसति में निर्ग्रन्थी निवास सम्बन्धी विधि निषेध

एषणा-परिभोगैषणा वसति-निवास

२२-२३ स्त्री के साथ निर्ग्रन्थी वसति निवास सम्बन्धी विधि-निषेध

२४ पुरुष के साथ निर्ग्रन्थ वसति निवास सम्बन्धी विधि-निषेध

- २५ गृहस्थ के निवास स्थान में निग्रथ निग्रथी निवास निषेध
 २६ गृहस्थ रहित स्थान में निग्रथ निग्रथी के निवास का विधान
 २७ केवल स्त्री निवासवाले स्थान में निग्रथ निवास निषेध
 २८ केवल पुरुष निवास वाले स्थान में निवास विधान
 २९ केवल पुरुष निवासवाले स्थान में निग्रथी निवास निषेध
 ३० केवल स्त्री निवास वाले स्थान निग्रथी निवास विधान
 ३१ ३२ प्रतिबद्ध—कस्या ठहरने के स्थान में निग्रथ निग्रथी निवास सम्बन्धी विधि निषेध
 ३३ ३४ गृहमध्य मागवास स्थान में निग्रथी निग्रथी निवास सम्बन्धी विधि निषेध
 सप्त व्यवस्था
 ३५ कलह उपशमन समापाचना
 [आराधना विराधना]
 ईया समिति विहार विषयक कल्प
 ३६ वर्षा ऋतु में निग्रथ निग्रथियों के विहार का निषेध
 प्रायश्चित्त सूत्र
 ३८ क राजा रहित राज्य में और शत्रु राज्य में निग्रथ निग्रथियों के जाने आने का निषेध
 ख जाये आये तो प्रायश्चित्त
 पण्डिता समिति आहार वस्त्र पात्र रजोहरण
 ३९ ४० क आार गवेषणा
 ख वस्त्र पात्र और रजोहरण ग्रहणपण्डा
 ग गोचरा ने लिये गये हुए निग्रथ निग्रथियों को वस्त्र पात्र रजोहरणा निवृत्त की विधि
 घ स्वाध्याय भूमि के निमित्त गये हुए गव उपरोक्त के समान
 ङ स्थानित गौच भूमि के निमित्त गये हुए

आहार ग्रहणपणा

- ४३ रात्रि तथा सन्ध्याकाल में [निग्रन्थ-निग्रन्थियों के] आहार लेने का निषेध । शय्या, संस्तारक ग्रहणपणा
- ४४ रात्रि तथा सन्ध्याकाल में [निग्रन्थ-निग्रन्थियों को] पूर्वं याचित एवं प्रेक्षित शय्या संस्तारक लेने का विधान.
वस्त्र पात्र रजोहरण ग्रहणपणा
- ४५ रात्रि तथा सन्ध्या काल में [निग्रन्थ-निग्रन्थियों को] वस्त्र पात्र और रजोहरण लेने का निषेध.
- ४६ नुराये हुये वस्त्र पात्र रजोहरण लीटावे तो लेने का विधान.
इया समिति-विहार कल्प
- ४७ रात्रि तथा सन्ध्याकाल में निग्रन्थ निग्रन्थियों के विहार का निषेध
पण्डिता समिति—आहार गवेपणा
- ४८ सामूहिक भोज में निग्रन्थ-निग्रन्थियों को आहार के लिये जाने का निषेध
संघ व्यवस्था
- ४९-५० क. रात्रि में तथा सन्ध्या में स्वाध्याय भूमि के निमित्त
ग. रात्रि में तथा सन्ध्या में शौच-भूमि के निमित्त निग्रन्थ-निग्रन्थियों को अकेले जाने का निषेध.
इया समिति विहार कल्प
- ५१ निग्रन्थ-निग्रन्थियों के विहार क्षेत्र की मर्यादा.
द्वितीय उद्देशक
पण्डिता समिति-वसति कल्प
वसति गवेपणा
- १-१० क- शाली आदि धान्यवाले स्थान में निग्रन्थ-निग्रन्थी निवास संबंधी विधि-निषेध

ग मुरा आदि के भाण्टवाले स्थान मे

ग पानी-पान वाले स्थान मे

घ- दीपक, अग्नि आदि जलनेवाले स्थान मे

ङ- दूध दही आदि खाद्य पेय वाले स्थान मे—

अमणि ग्रहर्णयथा

११ निग्रन्धियो के निचे निषिद्ध निवास स्थान

१२ निग्रन्धियो व निचे बिहित निवास स्थान

सथ व्यवस्था

१३ सागारिक—ठहरने के लिए स्थान देने वाले स्थान स्वामी का नियम

१४-२८ आहार ग्रहर्णयथा—निग्रन्ध निग्रन्धियो के निचे सागारिक मकान मालिक के आहार सम्बन्धी विधि निषेध वस्त्र परिभोगयथा

२९ निर्धन्धियो क लेने के योग्य पाथ प्रकार का वस्त्र रजोहरण परिभोगयथा

३० निग्र य निग्रन्धियो क लेने योग्य पाथ प्रकार के रजोहरण सूतीय उद्देशक

सथ व्यवस्था

१ निग्रन्धी के उपाधय व निर्धन्ध के बैठने आदि का निषेध

२ निग्र य के उपाधय व निग्रन्धी क बैठने आदि का निषेध एवम् ममिनि चर्म कल्प

३ १ निर्धन्ध निर्धन्धियो क जम सम्बन्धी विधि निषेध वस्त्र कल्प ग्रहर्णयथा परिभोगयथा

७ १० निग्र य निग्रन्धियो के वस्त्र सम्बन्धी विधि निषेध

११ निग्रन्धियो के निचे गुप्ताङ्ग आन्त्रादक आग्न्य तर वस्त्र वीचीन आदि रखने का निषेध

- १२ निर्ग्रन्थियों के लिए आभ्यन्तर वस्त्र रखने का विधान
- १३-१४ निर्ग्रन्थी की वस्त्र ग्रहण विधि
- १५-१६ निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों की दीक्षा के समय वस्त्र पात्र रजोहरण लेने की मर्यादा
- १७ वर्षाकाल में [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को] वस्त्र लेने का निषेध
- १८ हेमन्त और ग्रीष्म में [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को] वस्त्र लेने का विधान
- १९ रात्रियों के लिये [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों की] वस्त्र लेने की मर्यादा
- २० रात्रियों के लिये शय्या संस्तारक लेने की मर्यादा
संघ-व्यवस्था
- २१ रात्रियों का वन्दना करने की मर्यादा
- २२ गृहस्थ के घर में
क- बैठने आदि के सम्बन्ध में [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के] विधि निषेध
ख- प्रश्नोत्तर आदि के सम्बन्ध में
- २३-२७ निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के शय्या संस्तारक लेने देने सम्बन्धि नियम
- २८ निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों की भूल हुई वस्तुओं के परिभोग सम्बन्धि नियम
पूषणा समिति—वसति कल्प
- २९-३१ स्वामी रहित स्थानों में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के ठहरने की विधि
- ३२ क- प्रायश्चित्त सूत्र, आहार ग्वेपणा
मेना जिविरों के समीपवर्ती ग्रामों से आहार लाने की विधि
ख- रात्रि में रहने का निषेध
ग- रहे तो प्रायश्चित्त
- ३३ निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों के भिक्षाचर्या क्षेत्र की मर्यादा
चतुर्थ उद्देशक

- २ प्रायश्चित्त सूत्र—प्रायश्चित्त प्रायश्चित्त के अविचारो
- ३ प्रायश्चित्त सूत्र—पुन दीक्षा के अयोग्य
- ४ दीक्षा के अयोग्य
- ५ साम्प्रदायिक ज्ञान प्राप्ति करने के अयोग्य
- ६ साम्प्रदायिक ज्ञान प्राप्ति करने के योग्य
- ७ त्रिहो समयमाना अति बडिना है
- ८ त्रिहो समयमाना बरन है
- ९.१० प्रायश्चित्त सूत्र—अथ योग्य महायज्ञो के होने हुए हस्त अथ-
हस्त के विषय अवस्था के विद्वन्वी निर्धन्य की और निर्धन्य
निर्धन्य की सेवा चाहे तो शुद्ध प्रायश्चित्त
पूरणा स्वामिनि—परिभोग्यता
- ११ प्रायश्चित्त सूत्र—जन्तुनातिक्रान्त आहार का सेवन करे तो मनु
प्रायश्चित्त
- १२ प्रायश्चित्त सूत्र—क्षेत्राभिवान्त आहार का सेवन करे तो मनु
प्रायश्चित्त
- १३ शकालपद अथवा आहार सम्बन्धी विधि निषेध
- १४ क औद्देशिक आहार की औद्देशी
सब स्पष्टम्।
ल आवश्यक प्रतिक्रमण करने की मर्यादा
मथ सक्रमण
- १५.१६ क भिक्षु अथवा भिक्षुणी के गच्छ बदलने की विधि
ल गणावच्छेदक के गच्छ बदलने की विधि
ग आचार्य उपाध्याय के गच्छ बदलने की विधि
अन्य मथ के साथ आहार पानी का व्यवहार
- १८ २० क भिक्षु अथवा भिक्षुणी अथवा भिक्षु क साथ आहार पानी का
व्यवहार करना चाहे तो उसकी विधि

स- इसी प्रकार गणावच्छेदक

ग- इसी प्रकार आचार्य उपाध्याय

अन्य गण का अध्यापन

१-२३ क- भिक्षु अथवा भिक्षुणी अन्यगण के आचार्य-उपाध्याय को [प्रयतिनी आदि को] अध्यापन कराना चाहें तो उसकी विधि

स- इसी प्रकार गणावच्छेदक

ग- इसी प्रकार आचार्य उपाध्याय

२४ मृत साधु सम्बन्धी विधि

कलह-उपशमन

२५ क- किसी के साथ कलह होने पर क्षमा याचना से पूर्व-आहार करने का निषेध

स- किसी के साथ कलह होने पर क्षमा याचना से पूर्व-स्वाध्याय करने का निषेध

ग- किसी के साथ कलह होने पर क्षमा याचना से पूर्व-शौच के लिए जाने का निषेध

घ- किसी के साथ कलह होने पर क्षमा याचना से पूर्व-विहार करने का निषेध

ङ- प्रायश्चित्त के लिये अन्यत्र जाने की विधि

वैद्यावृत्त्य-विधि

२६ परिहार विद्युद्ध चारित्र्य-तप-करने वाले की सेवा विधि
इर्या समिति—नदी पार करने की मर्यादा

२७ पांच महानदियों को पार करने की विधि व मर्यादा
संघ व्यवस्था

२८-३६ तृणकुटी—पर्णकुटी आदि में

[वर्षा, हेमन्त और ग्रीष्म ऋतु में] रहने की विधि

- २ प्रायश्चित्त सूत्र—पारचिक प्रायश्चित्त के अधिकारी
- ३ प्रायश्चित्त सूत्र—पुन दीप्ता के अयोग्य
- ४ दीप्ता के अयोग्य
- ५ शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने के अयोग्य
- ६ शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने के योग्य
- ७ जिह्ने समझाना अनिश्चित है
- ८ जिह्ने समझाना सरल है
- ९ १० प्रायश्चित्त सूत्र—अथ योग्य सहायकों के होने का दण्ड अथ
स्था में विषय अवस्था में निषेध निषेध की और निषेध
निषेधों की मर्यादा चाहें तो गुरु प्रायश्चित्त
पूरणा समिति—परिभीर्भावस्था
- ११ प्रायश्चित्त सूत्र—कामातिशय का आहार का सेवन करे तो सप्त
प्रायश्चित्त
- १२ प्रायश्चित्त सूत्र—क्षेत्रा तथात आहार का सेवन करे तो सप्त
प्रायश्चित्त
- १३ नकारात्मक अथवा आहार सम्बन्धी विधि निषेध
- १४ क औद्योगिक आहार की भीमरी
सप्त व्यवस्था
अथ आवश्यक प्रतिबन्धन करने की मर्यादा
गण सप्तमस्य
- १५ १६ क मिश्र अथवा मिश्रणी के गुरु वर्णन की विधि
स गणवर्णक के गुरु वर्णन की विधि
ग आचार्य उपाध्याय के गुरु वर्णन की विधि
अन्य गुरु के साथ आहार पानी का व्यवहार
- १८ २० क मिश्र अथवा मिश्रणी अथवा गुरु के साथ आहार पानी का
व्यवहार करना चाहें तो उसकी विधि

- २२-२३ निग्रन्धी के आतापना लेने सम्बन्धी विधि निषेध
 २४ निग्रन्धी के लिये दस अभिषेहों का निषेध
 २५ निग्रन्धी के लिये भिक्षु प्रतिमाओं की आराधना का निषेध
 २६-३४ निग्रन्धी के लिये कतिपय आसनों से कार्यान्तर्ग करने का निषेध
 ण्यपणा ममिति—यस्य कल्प
 ३५-३६ निग्रन्ध निग्रन्धियों के आंकुचन पट्ट सम्बन्धी विधि निषेध शय्या आसन परिभोगपणा
 ३७-४० निग्रन्ध निग्रन्धियों के शयनासन सम्बन्धी विधि-निषेध पात्र परिभोगपणा
 ४१-४२ निग्रन्ध-निग्रन्धियों के तुम्बा पात्र सम्बन्धी विधि निषेध प्रमार्जनिका—परिभोगपणा
 ४३-४४ निग्रन्ध निग्रन्धियों के प्रमार्जनिका सम्बन्धी विधि निषेध रजोहरण परिभोगपणा
 ४५-४६ निग्रन्ध निग्रन्धियों के रजोहरण सम्बन्धी विधि-निषेध
 रोग-चिकित्सा
 ४७-४८ निग्रन्ध निग्रन्धियों के मानव मूत्र लेने सम्बन्धी विधि-निषेध
 ४९-५३ क- निग्रन्ध निग्रन्धियों के कालातिश्रान्त आहार सम्बन्धी विधि-निषेध
 ख- निग्रन्ध निग्रन्धियों के कालातिश्रान्त विलेपन-सम्बन्धी विधि निषेध
 ग- निग्रन्ध निग्रन्धियों के कालातिश्रान्त अभ्यङ्ग सम्बन्धी विधि निषेध
 घ- निग्रन्धियों के कालातिश्रान्त कल्कादि सम्बन्धी विधि-निषेध
 संघ व्यवस्था-वैयावृत्य
 ५४ परिहार कल्प स्थित की स्थविर सेवा सम्बन्धी विशेष नियम

पञ्चम उद्देशक

१ ४ चतुर्थं महाव्रत—प्रायश्चित्त सूत्र—देवी देवी वैश्वि से रूप परिवर्तित कर निग्रन्ध निग्रन्धी के माग मधुन नवन करे और निर्ग्रन्ध निग्रन्धी उसका अनुमोदन करे ता गुरु प्रायश्चित्त

मर व्यवस्था—कसह उपशमन

प्रायश्चित्त सूत्र—कसह उपशमन स पूर्व यजान्तर सज्जन का प्रायश्चित्त

पुण्यात्ममिति परिभोगैरणा

६ १० घने बादलो मे आकाश साञ्छादि हो उस समय यदि सूर्योन्ध स पूष या सूर्यास्त पवचान् आहार से लिया हो ॥ उसका गुरु प्रायश्चित्त

२१ १२ मन्त्रोप आहार के परछने (दानने) की विधि

चतुर्थं महाव्रत- प्रायश्चित्त सूत्र

निर्ग्रन्थियों के विशेष नियम

१६ १४ निग्रन्धी पशु पनिया के स्पर्श का अनुमोदन करे ता गुरु प्रायश्चित्त

सप्त व्यवस्था

१५ निग्रन्धी के अकेली रहने का नियम

१६ १८ क आहार-पाली के निवे निग्रन्धी को अकेली जाने का निषेध

ख स्वाध्याय के लिये

ग शौच के लिये

घ अकेली निग्रन्धी के विहार करने का निषेध

१९ निग्रन्धी के नभ्य रहने का नियम

२० निग्रन्धी के करपात्र का निषेध

२१ निर्ग्रन्धी के अनाहत देह रहने का निषेध

जीतकल्पसूत्र विषय-सूची

गाथा १ क- प्रवचन चन्दना

ख- अभिधेय-प्रायश्चित्त का संक्षिप्त वर्णन

२-३ प्रायश्चित्त का माहात्म्य

४ प्रायश्चित्त के दश भेद

५-८ आलोचना प्रायश्चित्त के योग्य दोष

९-१२ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त के योग्य दोष

१३-१५ आलोचना और प्रायश्चित्त के योग्य दोष

१६-१७ विवेक प्रायश्चित्त के योग्य दोष

१८-२२ व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त के योग्य दोष

२३-२७ ज्ञानातिचारों के प्रायश्चित्त

२८-३० दर्शनातिचारों के प्रायश्चित्त

३१ प्रथम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त

३२-३३ द्वितीय, तृतीय और पंचम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त

३४ रात्रि भोजन विरंति के अतिचारों का प्रायश्चित्त

३५-३६ उपवास प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार

३७-३८ आयम्विल प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार

३९ एकासन प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार

४०-४२ पुरिमार्घ प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार

४३-४४ निर्विकृति प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार

४५-५६ तप प्रायश्चित्त योग्य कर्म

५७-६३ सामान्य तथा विशेष दोष के अनुसार प्रायश्चित्त

६४-६५ द्रव्य के अनुसार तप प्रायश्चित्त

६६ क्षेत्र के अनुसार तप प्रायश्चित्त

पूषणा समिति—आहार कल्प

५५ निष-यी को एक घर से आहार मिलने पर दूसरे घर के लिये आना या नहीं इसका निषय

घट्ट उद्देशक

भाषा समिति

१ निष य निषयिषयो क अवयवव्य न कद्ने योग्य ६ वचन

मय स्थवस्था—प्रावरिचत्त त्रिधान

२ निष-य निषयिषो को प्रावरिचत्त देने के ६ प्रसङ्ग

चिकित्सा निमित्त वैषाण्य

३ ६ निष य निषयिषों की ओर निष-यी निष-य की विशेष प्रसङ्ग के परिचर्या करे तो भयवान की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता

७ १२ निविष्ट विशेष प्रसङ्गों के निष-यी की सहायता करे तो भयवान की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता

१३ कल्प मर्यादा के पतिषन्धु—विवागक—६ कारण

१४ कल्प स्थिति चारित्र्य ६ प्रकार का है



जीतकल्पसूत्र विषय-सूची

- गाथा १ क- प्रवचन वन्दना
 ग- अभिधेय-प्रायश्चित्त का संक्षिप्त वर्णन
- २-३ प्रायश्चित्त का माहात्म्य
- ४ प्रायश्चित्त के दश भेद
- ५-८ आलोचना प्रायश्चित्त के योग्य दोष
- ९-१२ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त के योग्य दोष
- १३-१५ आलोचना और प्रायश्चित्त के योग्य दोष
- १६-१७ विवेक प्रायश्चित्त के योग्य दोष
- १८-२२ व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त के योग्य दोष
- २३-२७ ज्ञानातिचारों के प्रायश्चित्त
- २८-३० दर्शनातिचारों के प्रायश्चित्त
- ३१ प्रथम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त
- ३२-३३ द्वितीय, तृतीय और पंचम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त
- ३४ रात्रि भोजन विरति के अतिचारों का प्रायश्चित्त
- ३५-३६ उपवास प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार
- ३७-३८ आयम्विन प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार
- ३९ एकासन प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार
- ४०-४२ पुरिमार्ग प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार
- ४३-४४ निर्विकृति प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार
- ४५-४६ तप प्रायश्चित्त योग्य कर्म
- ४७-४८ सामान्य तथा विशेष दोष के अनुसार प्रायश्चित्त
- ४९-५० द्रव्य के अनुसार तप प्रायश्चित्त
- ५१ क्षेत्र के अनुसार तप प्रायश्चित्त

- ६७ कान के अनुसार तप प्रायश्चित्त
 ६८ मानसिक तप वा के अनुसार तप प्रायश्चित्त
 ६९ मोक्षार्थ अमोक्षाय आदि सामान्य एवं विविष्ट श्रमणों
 अनुसार प्रायश्चित्त मन्त्रा
 ७० श्रमणा के सामान्य ४ अनुसार प्रायश्चित्त देना
 ७१ ७२ कल्पस्थित और कल्पानीन की भिन्न २ प्रकार का
 प्रायश्चित्त
 ७३ जीनय ३ विधि
 ७४ ७५ प्रतिसेवना के अनुसार प्रायश्चित्त
 ८० ८२ द्वै प्रायश्चित्त योग्य होय
 ८३ ८६ मूल प्रायश्चित्त योग्य होय का सेवन
 ८७ ८९ अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त के योग्य होय का सेवन
 ९४ १०२ अनवस्थाप्य और पाराधिक का वक्तमान में निषेध
 १०३ उपसंहार



णमो अभयदयाणं

चरणानुयोगमय व्यवहार सूत्र

उद्देशक

१०

उपलब्ध मूल पाठ

३७३ अनुष्टुप् दल्लोक प्रमाण

सूत्र संख्या

२६७

उद्देशक

सूत्र संख्या

१

३४

२

३०

३

२६

४

३२

५

२१

६

६

७

२३

८

१४

९

४५

१०

३०

२६७

६७ बान के अनुसार तब प्रायश्चित्त

६८ मानसिक मङ्गल के अनुसार तब प्रायश्चित्त

६९ जीनकला अमानक आनि माया व एव विनिष्ट धर्मको
अनुसार प्रायश्चित्त देना

७० धर्मका के सामर्थ्य के अनुसार प्रायश्चित्त देना

७१ ७२ कल्पविष्णु और कल्पानीन को भिन्न २ प्रकार का
प्रायश्चित्त

७३ जीनकला विधि

७४ ७५ प्रतिवेचना के अनुसार प्रायश्चित्त

८० ८२ छे- प्रायश्चित्त योग्य दोष

८३ ८६ सूत्र प्रायश्चित्त योग्य दोष का सवन

८७ ८९ अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त के योग्य दोष का सवन

९४ १०० अनवस्थाप्य और पारायिक का वर्तमान में निषेध

१०३ उपसंहार



णमो अभयदयाणं

चरणानुयोगमय व्यवहार सूत्र

उद्देशक

10

उपलब्ध मूल पाठ

२७३ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण

सूत्र संख्या

२५७

उद्देशक	सूत्र संख्या
१	३४
२	३०
३	२६
४	३२
५	२१
६	६
७	२३
८	१४
९	४५
१०	३०
	<hr/> २६७

व्यवहार सूत्र विषय-सूची

प्रथम उद्देशक

- १-२० निष्कपट और मकपट की आलोचना का प्रायश्चित्त
 २१ पारिवारिक और अपारिवारिक का एक साथ निवास
 २२-२७ परिहार कलत्र स्थित का सेवा के लिये अन्यत्र जाना
 २४-३२ गण प्रवेश
 क- गण में निकले हुए भिक्षु का पुनः गण प्रवेश
 ग- " " गणावच्छेदक का पुनः गण-प्रवेश
 ग- " " शाचार्य उपाध्याय का पुनः गण-प्रवेश
 घ- पार्श्वस्थ भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश
 ङ- वपलन्द भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश
 च- कुशील भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश
 छ- अवगन्त भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश
 ज- संगत, भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश

३३ पदचान्नापी की पुनः दीक्षा

३४ आलोचना सुनने वाले योग्य व्यक्ति के अभाव में जिनके सामने
 आलोचना करना उनका निर्देश

द्वितीय उद्देशक

१-४ प्रायश्चित्त काल में प्रमुख पद

- क- दो में एक दोषी
 ग- दो में दोनों दोषी
 ग- अनेक में एक दोषी
 घ- अनेक में सब दोषी

- १ गण परिहार कल्पस्थित का नाश सेवन
 २ १७ गण न निकालने का नियम
 ३ गणान परिहार कल्पस्थित को
 ४ परिहार-कल्पस्थित को
 ५ पाराचिक प्रायश्चित्तस्थित को
 ६ विहित भिक्षु को
 ७ दण्ड-मत्तभिक्षु को
 ८ पाराचिक भिक्षु को
 ९ उन्मत्त को
 १० उपसन्न वीजित भिक्षु को
 ११ नौषाध
 १२ प्रायश्चित्त मदी
 १३ भवन पान प्रयास्यान भिक्षु को
 १४ विद्व प्रयोगन भिक्षु को
 गणावच्छेदक पद
 १८ २१ नाश मदा को प्रमुख पद
 २ क भिक्षु-वैपी अनवरदाप्य को न देना
 ३ गृह वैपी को देना
 ४ भिक्षु-वैपी पाराचिक प्रायश्चित्त वैपी का न देना
 ५ गृह वैपी को देना
 ६ य मम की सम्मति से दोनों को देना
 २४ वृत्तक का निवृत्त करना
 २५ मातृमत्त का मण्ड याग आर पुन गण प्रवेश से पुन मण्डिरी
 द्वारा नाश का निवृत्त
 आचार्य उपाध्याय पद
 २६ गण की सम्मति से एक पक्षीय भिक्षु को आचार्य उपाध्याय पद
 देना

परिहारकृत्य और आहार-व्यवहार

- २७ पारिवारिक और अतिथिगत या परम्परा-व्यवहार
 २८ पारिवारिक को स्थिति में भी आज्ञा में आहार देना
 स्वयं निवेद्य
 २९ स्थितियों के बिना परिहार सम्बन्धित आहार पावे
 ३० परिहार सम्बन्धित अन्य के पास का उपयोग न करे

तृतीय उद्देशक

१-२ मग प्रमुग बनने का संकल्प

क- स्थितियों को पूछकर मग प्रमुग बने

ख- बिना पूछे न बने

ग- बिना पूछे बने को प्राग्विभन

३-१० संघ प्रमुग पद

उपाध्याय पद

क- श्रुत चारित्र्य सम्पन्न तीन वर्ष के दीक्षित को देना

ख- श्रुत चारित्र्य रहित को न देना

आचार्य-उपाध्याय पद

ग- श्रुत चारित्र्य सम्पन्न तीन वर्ष के दीक्षित को देना

घ- श्रुत चारित्र्य रहित को न देना

आचार्य, उपाध्याय और गणावच्छेदक पद

ङ- श्रुत चारित्र्य सम्पन्न आठ वर्ष के दीक्षित को देना

च- श्रुत चारित्र्य रहित को न देना

छ- योग्य नव-दीक्षित को देना

ज- समय में पतित योग्य व्यक्ति के पुनः संगमी बनने पर देना

११-१२ प्रमुग के आधीन रहना

क- तस्य निर्धेय को आचार्य उपाध्याय की शृंगु के परचान् अथ
आचार्य-उपाध्याय की निष्ठा-आधीन रहना

ख- तस्य निर्धेय को उरराज्य प्रकार से रहना साथ ही प्रवर्तिनी
को निष्ठा में रहना

१३ २२ मधुन मेरी भिक्षु और प्रमुख पद

२३ २४ मयाचार्य भिक्षु और प्रमुख पद

अनुर्य उद्देशक

विहार-मर्यादा

१ २ हेमन्त और शीत में आचार्य उपाध्याय का एक अन्य निर्धेय
महिन विहार

३-४ गणावच्छेदक का दो अन्य निर्धेय महिन विहार

वर्षावास-मर्यादा

५ ६ दो अन्य निर्धेय महिन आचार्य उपाध्याय का वर्षावास

७-८ तीन अन्य निर्धेय महिन गणावच्छेदक का वर्षावास

संघ सम्मेलन

हेमन्त और शीत में

क- राम गणन-मन्त्रिण में मन्त्रिण अनेक आचार्य उपाध्यायों
का हेमन्त और शीत में एक एक निर्धेय महिन रहना

ख- गणावच्छेदक का दो दो निर्धेयों के साथ रहना
गणावश्य में

१० क- राम व वन मन्त्रिण में आचार्य उपाध्यायों का दो दो निर्धेयों
महिन वर्षावास

ख- गणावच्छेदकों का तीन तीन निर्धेयों महिन वर्षावास

११ १२ प्रमुख निर्धेय की शृंगु के परचान् प्रमुख पद

क- हेमन्त और शीत में

ख- वपविान में

ग- प्रमुख निर्ग्रन्थ के बिना रहने पर प्रायश्चित्त

१३ घ- गण प्रवृत्त के आदेशानुसार प्रमुख पद देना

ङ- गण का विरोध होने पर प्रमुख पद का त्याग न करे तो प्रायश्चित्त

१४ च- अपध्यानी आचार्य-उपाध्याय के आदेशानुसार प्रमुख पद देना

छ- गण का विरोध होने पर प्रमुख पद का त्याग न करे तो प्रायश्चित्त

१५-१७ यावज्जीवन का सामायिक चारित्र्य

क-ग- उपस्थापना काल में उपस्थापना न करे तो आचार्य-उपाध्याय को प्रायश्चित्त

ग- कारणवश उपस्थापना न करे तो प्रायश्चित्त नहीं

१८ अन्य गण का आराधन

प्रमुख निर्ग्रन्थ की निश्चा में रहना

बहुश्रुत की निश्चा में रहना

१९ स्वधर्मियों का साथ रहना

क- स्थविर को पूछ कर अनेक स्वधर्मों साथ रहें

ख- बिना पूछे न रहे

ग- बिना पूछे रहे तो प्रायश्चित्त

२०-२३ अकेले विचरने का प्रायश्चित्त

क- पाँच रात्रि पर्यन्त का प्रायश्चित्त

ख- पाँच रात्रि से अधिक का प्रायश्चित्त

ग- स्थविर के मिलने पर पाँच रात्रि पर्यन्त के प्रायश्चित्त की आलोचना

घ- स्थविर के मिलने पर पाँच रात्रि से अधिक के प्रायश्चित्त की आलोचना

प्रवर्तिनियों का चार-चार निर्ग्रन्थियों सहित तथा गणावच्छेदिनियों का पाँच-पाँच निर्ग्रन्थियों सहित निवास

वर्षावास में

ग्राम यावत्-सन्निवेश में प्रवर्तिनियों का चार-चार निर्ग्रन्थियों सहित तथा गणावच्छेदिनियों का पाँच-पाँच निर्ग्रन्थियों सहित वर्षावास

११-१४ प्रमुख निर्ग्रन्थी की मृत्यु के पश्चात् प्रमुख पद

क- हेमन्त और ग्रीष्म में

ख- वर्षावास में

ग- बिना प्रमुख निर्ग्रन्थी के रहने पर प्रायश्चित्त

घ- रुग्ण प्रवर्तिनी के आदेशानुसार प्रवर्तिनी पद देना

ब- अपेक्ष्याना प्रवर्तिनी के आदेशानुसार प्रवर्तिनी पद देना

१५-१६ आचार प्रकल्प का विस्मरण और प्रमुख पद

क- प्रमाद से आचार प्रकल्प विस्मृत तरुण श्रमण को प्रमुख पद न देना

ख- शारीरिक विपत्ति से आचार-प्रकल्प विस्मृत तरुण को प्रमुख पद देना

ग-घ- तरुण निर्ग्रन्थी के 'क-ख' के समान दो विकल्प

ङ- आचार प्रकल्प स्थविर को प्रमुख पद देना

च- विस्मृत आचार प्रकल्प का पुनः कण्ठस्थ करना अनिवार्य

१६ आलोचना

क- आलोचना मुनने योग्य प्रमुख निर्ग्रन्थ के समीप आलोचना करना

ख- योग्य के अभाव में परस्पर आलोचना करना

२० वैद्यावृत्य-सेवा

क- निर्ग्रन्थ की निर्ग्रन्थी सेवा

ख- निर्ग्रन्थी की निर्ग्रन्थी सेवा

२१ सप्तमं चिकिंसा

- क निग्रह की सप्तदश चिकिंसा
- ख निग्रही की सप्तम चिकिंसा
- ग जिनकल्पी का आचार

दण्ड उद्देशक

१ माह विषय और मक्षपणा

- क पुत्र जना की आना मे स्व सम्बन्धिया के दूर भि राख जाना
- ख आचार मेमे की विधि

२ अतिशय

आचार्य उपाध्याय के पांच अतिशय

३ मणावन्द्येक ५ दो अतिशय

४ ७ अल्पभय और बहुभय

- क निग्रह और निग्रही की सबब छे सूत्र के पना के साथ रन्ना
- ख छे सूत्र के जाना के बिना रन्ना

५ ६ प्रायश्चित्त सूत्र मङ्गल्य महाभन

गुरु मय कर्म जाने की चानुसीविह अनुष्ठानिक प्रायश्चित्त

- १० ११ क अथ मय की निग्रही का प्रायश्चित्त ई दे बिना न भिताना
- ख प्रायश्चित्त देकर भिताना

सप्तम उद्देशक

१ क अथ मय व निग्रहा का भिताना

ख अथ मय का निग्रही का निर्मा अथी म भिताना

२ ३ मन्त्रध विच्छेद

मन्त्रध विच्छेद करना

ख इगी प्रकार निग्रही का मन्त्रध विच्छेद करना

४ ५ अनित्य करना

क निग्रह द्वारा निग्रही की दोषा

ग- निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ की दीक्षा

६-७ विहार

क- निर्ग्रन्थ का विहार

ग- निर्ग्रन्थी का विहार

८-९ क्षमा याचना

क- निर्ग्रन्थ की निर्ग्रन्थ से क्षमा याचना

निर्ग्रन्थ को निर्ग्रन्थी से क्षमा याचना

स्वाध्याय तथा वाचना देना

१०-११ विकट काल में स्वाध्याय करने का निषेध

१२-१३ अस्वाध्याय काल में स्वाध्याय करने का निषेध

१४ क- शारीरिक अस्वाध्याय होने पर स्वाध्याय करने का निषेध

ख- वाचना देने का विधान

उपाध्याय पद

१५ साध्वी को उपाध्याय पद देना

आचार्य पद

१६ साध्वी को आचार्य पद देना

मृत शरीर

१७ निर्ग्रन्थ के मृत शरीर को निर्ग्रन्थ एकान्त निर्जीव भूमि में छोड़े

वसती निवास

१८-१९ निर्ग्रन्थ की अवस्थिति में गृह या गृह विभाग के बेचने या किराये देने पर निर्ग्रन्थ के ठहरने के नियम

२० मकान मालिक की विधवा पुत्री या उसके पुत्र की भी आज्ञा लेना

२१ शून्य स्थानों में पथिक की आज्ञा लेना

२२-२३ राज्य परिवर्तन

नये राजा का राज्याभिषेक होने पर नये राजा की आज्ञा लेना

अष्टम उद्देशक

१ स्वप्नि निवाम

स्वप्निरा की आपत्तुसार वमण वा वसति विभाग में निवाम

२-४ शय्या-सन्तारक

सभी श्रुतियों में आपमार के शय्या सन्तारक बना

५ क स्वप्निर्ग क उपकरण

ख शय्या सन्तारक

लीगये हुए उपकरणों की दूसरी बार आनंद रना

ग शय्या सन्तारक अवयव ने आने के नियम

१० ११ आनानाता की अनुपस्थिति में ठहरने की ओर आना लेने की विधि

१२ १४ भूले हुए उपकरण की खोजना

क गृहस्थ के घर में

ख स्वाध्याय स्थान में

ग गीर्वाण स्थान में

घ मात में भूले हुए उपकरणों की खोजना

१५ अधिष्ठ पात्र

अथ निम्न च निम्न की के लिये स्वप्निर की आना ॥ पात्र बना

१६ आहार-विभक्तिकारक

क आहार का प्रमाण

ख प्रमाण में अधिष्ठ आहार जानने का निम्न

नवम उद्देशक

गृह स्थाना—

१-३० आहार गृहस्थों की शय्या और शय्या आहार

३१ ३४ मित्र प्रतिमा

क सप्त मन्त्रमित्रा मित्र प्रतिमा

ख- अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा

ग- नव नवमिका " "

३५ मानव मूत्र सेवन विधि

क- लघु मोक प्रतिमा

ख- महा मोक प्रतिमा

३६-३६ शय्यातर—

गृहस्वामी का ग्राह्य-अग्राह्य आहार
भिक्षु प्रतिमा

४० अन्न दाति-धारा की संख्या

४१ पानि दाति-धारा की संख्या

४२-४३ अभिग्रह

क- तीन प्रकार के अभिग्रह

ख- " " के "

ग- " " के "

दशम उद्देशक

१ भिक्षु प्रतिमा

क- यव मध्य चन्द्र प्रतिमा

ख- वज्र मध्य चन्द्र प्रतिमा

२ व्यवहार

पांच प्रकार का व्यवहार

३-१० श्रमण-परीक्षा

क- परोपकार करना और अभिमान करना श्रमण की चतुर्भंगी

ख- गण का उपकारना और " " " "

ग- गण का संग्रह करना और " " " "

घ- गण की शोभा बढ़ाना और " " " "

ङ- गण की शुद्धि करना और " " " "

- च वेप याग और धम-याग
 ■ धम त्याग और दध त्याग
 ज शिवधर्मी और दृढधर्मी अमण की अनुभूती
 ११ १२ आचार्य
 क प्रव-या उपस्थापना आचार्य चतुसमी
 ल उद्घाता वाचना
 १३ अ-तेवाभा शिष्य
 शिष्य की अनुभूती
 १४ स्वधिर
 तीन प्रकार के स्वधिर
 १५ शिष्य
 अल्पकालिक सामायक चारिष वाले तीन प्रकार के शिष्य
 १६ १७ दीक्षार्थी
 सप्तु वय का दीक्षार्थी
 १८ १९ आगर्मा का अध्ययन काल
 २४ वैशाख्य सेवा
 क दण प्रकार की वसाहय
 ल वसाहय का पन



दशाश्रुतस्कंध विषय-सूची

• प्रथमा दशा

- १ उत्थानिका
२-२१ स्थविरोक्त वीम असमाधिस्थान

द्वितीया दशा

- १-३५ स्थविरोक्त इकवीस सबल दोष

तृतीया दशा

- १-३५ स्थविरोक्त तैतीस आशातना

चतुर्थी दशा

- १-१६ स्थविरोक्त आठ गणि सम्पदा

विनय शिक्षा के चार भेद

शिष्य-विनय के चार भेद

• उपकरण उत्पादन के चार भेद

सहायता के चार भेद

गुणानुवाद के चार भेद

गणभार वहन के चार भेद

पंचमी दशा

- १-२८ क- वाणिज्य ग्राम, दूतिपलाश चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी

रानी, भ० महावीर का समवसरण

ख- स्थविरोक्त दस चित्त समाधि स्थान

ग- दस चित्तसमाधि स्थान

• षष्ठी दशा

- १-२८ क- ~~विष्णु~~ इग्यारह उपासक प्रतिमा

अक्रियावादी, और विद्यावादी का वर्णन

सप्तमी दशा

१ ३४ र्थाविरोक्त वारह मिथु प्रतिमा

अष्टमी चर्म वषा दशा

१ भ० महावीर के पांच वस्त्राण

नवमी दशा

१ ४० क- चवानगरी धुल मद्र चैत्य

कीलिक राजा धारिणी देवी

भ० महावीर का समवसरण

ख तीस महामोहनीय स्थानों का वर्णन

दशमी आयती दशा

१ ४० क राजगृह, गुणशील चैत्य

अधिक भवसार

ख भ० महावीर का उदायन

घ अधिक का उपरिधार भ० महावीर के दशन के लिये जाता

घ अधिक और चेतना को देखकर निग्रय निग्रयियों के मन

में जो मकल्प पैदा हुए उनका वर्णन

ङ नव निगान कर्मों का वर्णन

च- निदान करने वालों की गति

■ निदान रहित समय का वर्णन

ज निग्रय निग्रयियों की आलोचना यावत् आराधना



णमो आचार्यकृष्णधराणं धेराणं

चरणानुयोगमय निशीथ सूत्र

उद्देशक

२०

उल्लङ्घ मूलपाठ

८१२ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण

गद्य सूत्र

१४०५



उद्देशक	सूत्र संख्या	उद्देशक	सूत्र संख्या
१	५८	११	६२
२	५६	१२	४२
३	७६	१३	७४
४	१११	१४	४५
५	७७	१५	१५४
६	७७	१६	५०
७	६१	१७	१५१
८	१७	१८	६४
९	२८	१९	३६
१०	४७	२०	५३
			<hr/>
			१४०५

निशीथसूत्र विषय-सूचि

प्रथम उद्देशक

- १-६ प्रह्लादचर्य-महाव्रत-प्रायश्चित्त
वीर्यपात करना
- १० सुगंध
सुगंधित पुष्प आदि सूघना
प्रथम महाव्रत प्रायश्चित्त
- ११-१४ अन्न्यतीर्थ तथा गृहस्थ से कार्य करवाने का प्रायश्चित्त
- क- मार्ग आदि का निर्माण कार्य करवाना
 - ख- पानी की नाली का निर्माण कार्य करवाना
 - ग- छोका, डोरी का निर्माण कार्य करवाना
 - घ- सूती, ऊनी डोरियों का निर्माण कार्य करवाना
- एपणा समिति का प्रायश्चित्त
- १५-३८ मूई, कैची, नखहरणी और कर्ण-शोधनी सम्बन्धी नियमों का भंग करना
- ३९ पात्र का परिकर्म करना
- ४० दण्डादिका परिकर्म करना
- ४१-४६ पात्र का परिकर्म करना
- ४७-५६ वस्त्र का परिकर्म करना
- ५७ घर में धुआँ कराना
- ५८ सदोष आहार लेना
- द्वितीय उद्देशक
- १-८ रजोहरण
अनावृत दारु दण्डवाले रजोहरण संबंधी प्रायश्चित्त

पारिहारिक का अन्यतीर्थी गृहस्थ और अपारिहारिक के साथ रहना

४०-४३ क- भिक्षाचर्या में

ख- स्वाध्याय स्थल में

ग- शौच स्थल में

घ- विहार में

एषणा समिति परिभोगैषणा-प्रायश्चित्त

४४-४६ पानी विषयक प्रायश्चित्त

४७-४९ गृहस्वामी का आहार लेना

५०-५८ शय्या-सस्तारक विषयक प्रायश्चित्त

५९ मदोप प्रतिलेखना का प्रायश्चित्त

तृतीय उद्देशक

एषणा समिति-प्रायश्चित्त

१-१२ आहार की याचना सम्बन्धी प्रायश्चित्त

१३ एक घर में दुमरी बार भिक्षार्थ जाना

१४ सामूहिक भोज में भिक्षार्थ जाना

१५ सम्मुख लाया हुआ आहार लेना

ब्रह्मचर्य-महाव्रत-प्रायश्चित्त

१६-२१ पैरों का संस्कार करना

२२-२७ शरीर का संस्कार करना

२८-४० चिकित्सा करना

४१-६७ प्रत्येक अंग उपांग का संस्कार करना

६८ कपड़े आदि से मस्तक ढकना

६९ वशीकरण यंत्र करना

७०-७७ मल-मूत्रादि त्याग सम्बन्धी अविवेक करना

- ६ राज
समिति से न अर्थात् सदन
प्रथम मन्त्रालय प्रायश्चित्त
- १० माग अर्थात् का निर्माण काय करना
- ११ दानी की नानी का निर्माण काय करना
- १२ द्वारा डोरो का निर्माण काय करना
- १३ मूर्त् अर्थात् की डार्मियों का निर्माण काय करना
- १४ १७ मूर्त् कभी नगहरणा और कण गारती सद्दधी दिपमा
का भग करन
- १८ १९ द्वितीय महाजन प्रायश्चित्त
भारा समिति प्र श्रित्त
- २० तृतीय महाजन प्रायश्चित्त
- २१ प्रह्लादय महाजन प्रायश्चित्त
हस्तात्ति मन्त्रालय का प्रायश्चित्त
एवम्मा समिति प्रायश्चित्त
- २२ अष्टमह वम रमना
- २३ अष्टमह वम रमना
- २४ अष्टमह वम रमना
- २५ वान परिवसन करना
- २६ मन्त्रालय परिउम करना
- २७ ३१ स्थविरा की क्षाप्ता व विना क्षाप्ति वात्र रमना
एवम्मा समिति परिभोगयणा प्रायश्चित्त
- ३२ ३६ आहार नियमक प्रायश्चित्त
- ३७ रुद्रय एक स्थान पर रमना
- ३८ दानार की प्रणमा करना
एवम्मा समिति प्रायश्चित्त
- ३९ रव सम्प्रधियो व आहार सेना

- २५-३३ दण्डे आदि का रगना
 ३४ नये ग्राम आदि में भिक्षार्थ जाना
 ३५ नई खानों में भिक्षार्थ जाना
 ३६-५६ विविध प्रकार के वाद्य बनाना
 ६०-६२ सदोष शय्या का उपयोग करना
 ६३ विपरीत समाचारी वालों के साथ व्यवहार करना
 ६४-६६ वस्त्र पात्र और दण्ड आदि को जीर्ण होने से पहले डाल देना
 ६७-७७ रजोहरण का अनुचित उपयोग करना
 निर्ग्रन्थी के माथ निर्ग्रन्थ का व्यवहार

षष्ठ उद्देशक

- १-७७ मैथुन के सकल्प से निर्ग्रन्थी के साथ अमर्यादित व्यवहार करना

सप्तम उद्देशक

- १-८१ मैथुन के सकल्प से निर्ग्रन्थी के माथ अमर्यादित व्यवहार करना

अष्टम उद्देशक

- १-९ अकेली स्त्री के साथ अमर्यादित व्यावहार करना
 १० स्त्री परिपद में असमय धर्म कथा कहना
 ११ निर्ग्रन्थी के साथ अनुचित व्यवहार करना
 १२ स्वजन परिजनों से सम्पर्क रखना
 १३-१५ राज्य परिजनों से सम्पर्क रखना
 १६ खाद्य पद ग्रह करना
 १७ त्याज्य

नवम

- राज्य
 आना आना

चतुर्थ उद्देशक

- १ १८ राजानि को बग करना
 १९ अमरुट पत्र फल या धान्य खाना
 २० छात्रार्थ के दिये बिना आहार खाना
 २१ छात्रार्थ उपार्जनाय के दिये बिना वृष आदि विहृति पदार्थ खाना
 २२ निषिद्ध कुण्ड जान बिना भिक्षाय जाना
 २३ २४ निर्मंथी के उपार्जन म अत्रिधि स प्रवेश करना
 २५ २६ बलह करना
 २७ खनि हुसना
 २८ २७ पादचर्य आदि का वस्त्र देना
 २८ २८ आहार विषयक प्रायश्चित्त
 ४० ४८ ग्राम रक्षक आनि का बग करना
 ४९ १०१ क एक दूसरे के परा का परिक्रम करना
 ख एक दूसरे के गरीर का संस्कार करना
 १०२ ११० मन-भूषादि सम्बन्धी अविवेक करना
 १११ पश्चिहार कल्पस्थित क नाथ आहार व्यवहार करना

पञ्चम उद्देशक

- १ १२ सविन-सजीव शून्य क मून मे निषिद्ध बात करना
 १२ १३ धान्यताधिक या गूदम्य स काथ करवाना
 क वस्त्र गिनाना
 ख मर्यादा न अधिक सम्पदा चीजा वस्त्र बनाना
 १४ पत्तों को नील या उत्पन्न पानी स धोकर खाना
 १५ २१ भोटाने की शत्रु करके भागे हुए पदार्थ निश्चय समय पर न खाना
 २४ अत्यधिक मम्मे छोरे बनाना

- २५-३३ दण्डे आदि का रंगना
 ३४ नये ग्राम आदि में भिक्षार्थ जाना
 ३५ नई स्नानों में भिक्षार्थ जाना
 ३६-५६ विविध प्रकार के वाद्य बनाना
 ६०-६२ सदोष शय्या का उपयोग करना
 ६३ विपरीत समाचारी वालों के साथ व्यवहार करना
 ६४-६६ वस्त्र पात्र और दण्ड आदि को जीर्ण होने से पहले डाल देना
 ६७-७७ रजोहरण का अनुचित उपयोग करना
 निर्ग्रन्थी के साथ निर्ग्रन्थ का व्यवहार
 पष्ठ उद्देशक
 १-७७ मैथुन के संकल्प से निर्ग्रन्थी के साथ अमर्यादित व्यवहार करना
 सप्तम उद्देशक
 १-९१ मैथुन के संकल्प में निर्ग्रन्थी के साथ अमर्यादित व्यवहार करना
 अष्टम उद्देशक
 १-९ अकेली स्त्री के साथ अमर्यादित व्यवहार करना
 १० स्त्री परिपद में असमय धर्म कथा कहना
 ११ निर्ग्रन्थी के साथ अनुचित व्यवहार करना
 १२ स्वजन परिजनों से सम्पर्क रखना
 १३-१५ राज्य परिवार से सम्पर्क रखना
 १६ खाद्य पदार्थों का संग्रह करना
 १७ त्याज्य आहार लेना
 नवम उद्देशक
 १-६ राज्य कुल का आहार लेना
 १० ६ दोषायतनों में जाना आना

चतुर्थ उद्देशक

- १-१८ राजादि को वश करना
 १९ अन्नघट पत्र पत्र या धान्य खाना
 २० आचार्य के दिये बिना आहार खाना
 २१ आचार्य-उपाध्याय के दिये बिना दूध आदि विटृति पदार्थ खाना
 २२ निषिद्ध कुल जाने बिना भिक्षार्थ जाना
 २३-२४ निषेधी के उपाध्य में अविधि से प्रवेश करना
 २५-२६ कहना करना
 २७ अति हसना
 २८ ३७ पाशवंस्य आदि को वश देना
 ३८-३९ आहार विषयक प्राप्तिवस्तु
 ४०-४८ प्राप्त रक्षक आदि को वश करना
 ४९ १०१ क एक दूसरे के पैरों का परिकर्षण करना
 ल एक दूसरे के शरीर का स्पर्श करना
 १०२ ११० मग सूत्रादि न्यूनगंधी अविशेष करना
 १११ परिहार कम्पस्थित के साथ आहार व्यवहार करना

पंचम उद्देशक

- १-१२ सचिन-सजीव वृक्ष के मूल में निषिद्ध कार्य करना
 १२ १३ अन्त्योष्णिक या शुद्धस्थ से कार्य करवाना
 क- वस्त्र धिनाना
 ख मर्यादा में अधिक लम्बा चौड़ा वस्त्र बनाना
 १४ फलों को शीत या उष्ण पानी से धोकर खाना
 १५-२३ लौटाने की धन करके साथे हुए पदार्थ नियत समय पर न लौटाना
 २४ अत्यधिक लम्बे होरे बनाना

- ६ धर्म की निन्दा करना
 १० अधर्म की प्रशंसा करना
 ११-६३ अन्यतीर्थिक अथवा गृहस्थ से कार्य करवाना
 क- पैरो का परिकर्म करवाना
 ख- शरीर का सस्कार करवाना
 ग- कपड़े आदि से मस्तक ढकना
 ६४-६५ स्वयं अथवा अन्य को भयभीत करना
 ६६-६७ ,, ,, आश्चर्यान्वित करना
 ६८-६९ स्वयं अथवा अन्य के साथ विपरीत आचरण करना
 ७० प्रशंसा करना
 ७१ दुश्मन के राज्य में जाना आना
 ७२ दिवा भोजन की निन्दा करना
 ७३ रात्रि भोजन की प्रशंसा करना
 ७४-७७ भोजन सम्बन्धी चतुर्भंगी
 ७८ रात्रि में आहारादि रखना
 ७९ रात्रि में रखे हुए—आहार का खाना पीना
 ८० मांस आहार लेना
 ८१ नैवेद्य खाना
 ८२ स्वच्छन्द श्रमण श्रमणी की प्रशंसा करना
 ८३ स्वच्छन्द श्रमण श्रमणी को वंदना करना
 ८४-८५ अयोग्य को दीक्षा देना
 ८६ क- अयोग्य से सेवा कराना
 ख- अयोग्य की सेवा करना,
 ८७-९० जिन कल्पी के साथ न रहना, चतुर्भंगी
 ९१ रात्रि में रखी हुई पिप्पली आदि का खाना
 ९२ बाल मरण मरना

- ८ ६ स्त्रियों के अगोपागो को देखना
 १० मंसि आहार लेना
 ११ राजा के चने जाने पर राजा के निवास स्थान में रहना
 १२ १७ यात्रियों से आहार लेना
 १८ राज्याधिक के समय नगर में जाना आना
 १९ निर्दिष्ट हम राजधानियों में दारम्वार आना आना
 २० २८ राज्याधिक परिवारों से आहार लेना

वृद्धम उद्देशक

- १-४ गुरुजनो का अचिनय करना
 ५ जन-नकाय-वनस्पति समुत्पन्न आहार करना
 ६ आथाकर्म सदोष आहार करना
 ७ ८ पयोतिष से वतमान और भविष्य बताना
 ९ १० किसी ॥ शिष्य को बहकाना अथवा भगाना
 ११-१२ दीक्षार्थी को मिथ्या परामर्श देना
 १३ आगत्युक्त धमण धमणीया से आने का कारण जाने बिना तीन दिन से अधिक साथ रखना
 १४ लड़ भगडकर आये अनुपज्ञान धमण धमणी को प्रायश्चित्त दिये बिना तीन दिन से अधिक साथ रखना
 १५ ३० दोषानुमार प्रायश्चित्त न करना तथा दोषानुमार प्रायश्चित्त न देने वालों के साथ आहारादि व्यवहार करना
 ३१ ३४ सद्विध्य समय में आहार करना
 ३५ सद्विध्य अन्न पानी को निगलना
 ३६ ३९ रोमी धमण धमणी की परिचर्या न करना
 ४०-४७ वर्णदान सम्बन्धी नियमों का भंग करना

इग्यारहवाँ उद्देशक

- १ ८ पात्र सम्बन्धी मर्यादाओं का भंग करना

- ६ धर्म की निन्दा करना
 १० अधर्म की प्रशंसा करना
 ११-६३ अन्वयार्थिक अथवा गृहस्थ से कार्य करवाना
 क- पैरों का परिकर्म करवाना
 ग- शरीर का संस्कार करवाना
 ग- कपड़े आदि से मस्तक ढकना
 ६४-६५ स्वयं अथवा अन्य को भयभीत करना
 ६६-६७ „ „ आश्चर्यान्वित करना
 ६८-६९ स्वयं अथवा अन्य के साथ विपरीत आचरण करना
 ७० प्रशंसा करना
 ७१ दुश्मन के राज्य में जाना आना
 ७२ दिवा भोजन की निन्दा करना
 ७३ रात्रि भोजन की प्रशंसा करना
 ७४-७७ भोजन सम्बन्धी चतुर्भंगी
 ७८ रात्रि में आहारादि रखना
 ७९ रात्रि में रखे हुए—आहार का खाना पीना
 ८० मांस आहार लेना
 ८१ नैवेद्य खाना
 ८२ स्वच्छन्द श्रमण श्रमणी की प्रशंसा करना
 ८३ स्वच्छन्द श्रमण श्रमणी को बदनाम करना
 ८४-८५ अयोग्य को दीक्षा देना
 ८६ क- अयोग्य से सेवा कराना
 ख- अयोग्य की सेवा करना,
 ८७-९० जिन कल्पी के साथ न रहना, चतुर्भंगी
 ९१ रात्रि में रखी हुई पिप्पली आदि का खाना
 ९२ बाल मरण मरना

बारहवाँ उद्देशक

- १ २ किसी प्राणी को बाँधना अथवा बंधन मुक्त करना
 ३ प्रत्यास्थान मज्जु करना
 ४ वनस्पति मिश्रित आहार खाना पीना
 ५ केसोवाला चम रसना
 ६ गृहस्थ के वस्त्र में डूबे हुए पीड़ो का उपयोग करना
 ७ निष ची क वस्त्रा को अ वसीधि अथवा गृहस्थ स सितवाना
 ८ छ काय की हिमा करना
 ९ हरे वृक्ष पर चढ़ना
 १० १३ गृहस्थ के वस्त्र आदि उपयोग में लेना तथा गृहस्थ की चिकित्सा करना
 १४ १५ तदीय आहार लेना
 १६ २८ विविध प्रकार के दर्शनीय स्थल या पत्थर देखना
 २० कासातिव्रान्त आहार खाना पीना
 २१ क्षेवामिवात आहार खाना पीना
 ३२ ३८ रात्रि में विलेपन लगाना
 ४० गृहस्थ में अपना भार उठवाना
 ४१ गृहस्थ के अधिकार में आहार आदि रात में रखना
 ४२ महा तन्त्रियों को बारम्बार पार करना

तेरहवाँ उद्देशक

- १ ११ अथोष्ण स्थान में कायोत्सग करना
 कायोत्सग करना
 १२ अ-वतीची या गृहस्थ को नित्य आदि मिश्राना
 १३ १६ अ-व तीची या गृहस्थ का अधिष्य करना
 १७ २६ को भवादि के प्रयोग स्ताना
 २७ .. गुप्त माण बंधाना

- २८-२९ अन्यतीर्थी या गृहस्थ को घातुएँ या खजाना बताना
 ३०-३७ किसी पदार्थ में प्रतिबिम्ब देखना
 ३८-४१ स्वस्थ होते हुए चिकित्सा कराना
 ४२-५० पार्श्वस्थ आदि को वन्दना करना
 ,, की प्रशंसा करना
 चौदहवाँ उद्देशक
 १-४५ पात्र-सम्बन्धी नियमों का भंग करना
 पन्द्रहवाँ उद्देशक
 १-४ भिक्षु भिक्षुणी को कठोर शब्द कहना तथा उनके साथ अप्रिय व्यवहार करना
 ५-१२ सचित्त फल-अग्नि आदि से नहीं पकाया हुआ अखण्ड फल खाना
 १३-६५ क- अन्यतीर्थी अथवा गृहस्थ से पैरों का संस्कार करवाना
 स- ,, ,, शरीर ,,
 ग- कपड़े आदि से अपना मस्तक ढ़कवाना
 ६६-७४ निषिद्ध स्थानों पर मल मूत्र त्यागना
 ७५-७६ अन्यतीर्थी अथवा गृहस्थ को आहार देना या उनसे लेना
 ७७-७८ अन्यतीर्थी अथवा गृहस्थ को वस्त्र पात्र आदि देना या उनसे लेना
 ७९-८८ पार्श्वस्थ आदि को आहार, वस्त्र, पात्र, रजोहरण देना या उनसे लेना
 ८९ निषिद्ध वस्त्र लेना
 १००-१५४ विभूषा निमित्त किसी भी कार्य का करना
 सोलहवाँ उद्देशक
 १-३ वसति विषयक नियमों का भंग करना
 ४-११ सचित्त इक्षु आदि खाना

- १२ वन वासियो तथा वनचरो से (वाक्वियो) से आहार लेना
- १३ १४ समयो का समयमी और असमयी को समयो कहना
- १५ समयमिया के गण से असमयमियो के गण म जाना
- १६ २४ कलह करके बाये हुए अमण अमणियो से व्यवहार करना
- २५-२६ कुमाग या कुप्रदेश म जाना
- २७ ३२ जि सकुलो से व्यवहार रखना
- ३३ ३५ निषिद्ध स्थानो पर आहार करना
- ३६ ३७ अ पनीचिक अथवा गृहस्थ स्त्रियो के साथ भोजन करना
- ३८ आचार्य उपाध्याय क दम्प्या सत्सरक को टुकराना
- ३९ प्रमाण मे अधिक उपकरण रखना
- ४० ५० निषिद्ध स्थानों पर मल मूत्र डालना
- सतरहवाँ उद्देशक
- १ १४ कुतूहल के लिये कई कार्य करना
- १५ ११० अचतीयी अथवा गृहस्थ से कार्य करवाना
- क निग्र य निग्र य के पैरा का परिक्रम करावे
- शरीर
- का मस्तक ढकवाये
- ल निग्र य निग्रम्भी के पैरा का परिक्रम करावे
- के शरीर ता
- का मस्तक ढकवाये
- १२१ निग्र य का निग्रय का स्थान न देना
- १२२ निग्रयो का निग्र यी को स्थान न देना
- १२३ १३१ आहार सम्ब धी नियमा का भंग करना
- १३२ पाना
- १३३ अपने आपको आचार्य पन् न योग्य कहना
- १३४ मनोविना क लिये गायन आदि कार्य करना
- १३५ १३६ विविध वाञ्छ गुणना

अठारहवाँ उद्देशक

- १-२० नौका आरोहण सम्बन्धी नियमों का पालन न करना
२१-६६ वस्त्र विषयक नियमों का पालन न करना

उन्नीसवाँ उद्देशक

- १-४ खरीद कर दी हुई प्रासुक वस्तु का लेना
५ रोगी निर्ग्रन्थ के लिये प्रमाण से अधिक प्रासुक आहार लेना
६ प्रासुक आहार लेकर दूसरे गाँव जाना
७ प्रासुक खाद्य को पानी में गाल कर खाना पीना
८ चार सन्ध्याओं में स्वाध्याय करना
९-१० नियत संख्या से अधिक श्रुत विषयक प्रश्न पूछना
११ चार महोत्सव दिनों में स्वाध्याय करना
१२ चार प्रतिपदाओं में स्वाध्याय करना
श्रुत स्वाध्यायविषयक नियमों का पालन न करना

वीसवाँ उद्देशक

- १-२० क- निष्कपट और सकपट आलोचना का प्रायश्चित्त
ख- " " " "



निशीथ-निर्देशित प्रायश्चित्त

उद्देशक	प्रायश्चित्त	उद्देशक	प्रायश्चित्त
१	गुरुमासिक	११	गुरु क्षीमाधिक
२	सप्तमासिक	१२	सप्त क्षीमाधिक
३		१३	
४		१४	
५		१५	
६	गुरु क्षीमाधिक	१६	
७		१७	
८		१८	
९		१९	
१०		२०	समुत्तर

प्रायश्चित्त संबंधी विशेष विवरण

उद्देशक—१

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करनेपर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट ३० निर्विकृतिक।

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करनेपर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट ३० आचाम्ल।

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का मोहोदय से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट ३० उपवास।

उद्देशक—२

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट २७ एकाग्र।

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट २७।

आचाम्ल

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का मोहोदय से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट २८। उपवास

उद्देशक—६

छठे उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ उपवास। मध्यम ४ पण्ड भक्त।

उत्कृष्ट १२० उपवास या चार मास का छेद।

छठे उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ पण्ड भक्त या चार दिन का छेद।

मध्यम ४ अण्डम भक्त या ६ दिन का छेद।

उत्कृष्ट १२० उपवास या चार मास का छेद।

छे उद्गक मे निर्दिष्ट दोषा का माहात्म्य ॥ भवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ अष्टम भवन पारणा मे आचाम्न या ६० त्नि का छे ॥

मध्यम १५ अष्टम भवन पारणा मे आचाम्न या ६० त्नि का छे ॥
उत्कृष्ट १२० उपवास पारणा मे आचाम्न या गुन महाप्रदारीय

उद्गक—१२

बारहव उद्गक मे निर्दिष्ट दोषा का परवण या अनुपयोग मे भवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ आचाम्न । मध्यम ६० निविकृतिक ।

उद्ग १६० उपवास

बारहव उद्गक मे निर्दिष्ट दोषा का आनुरता या उपयोग पूर्वक भवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ उपवास । मध्यम ६ पटु भक्त ।

उत्कृष्ट १०० उपवास पारणा मे विकृति स्याद ।

बारहव उद्गक मे निर्दिष्ट दोषा का माहात्म्य ४ भवन करने पर प्रायश्चित्त

जघन्य ४ पटु भक्त । मध्यम ४ अष्टम भक्त । उद्ग १०८ उपवास पारणा मे आचाम्न

क द्वितीय तलाय अनुप और पचम उद्गक ॥ निर्दिष्ट दोषा का प्रायश्चित्त समान है ।

ग पटु मे उद्गकमे उद्गक पचम ६ उद्गक मे निर्दिष्ट दोषों का प्रायश्चित्त समान है ।

ग बारहव मे उद्गकमे उद्गक पचम ८ उद्गक मे निर्दिष्ट दोषों का प्रायश्चित्त समान है ।

जमो गिदाण

चरणानुयोगमय आवश्यक सूत्र

आययन	६
मृगत पाठ	१०० इतोइ. प्रमाण
गण मूत्र	०१
पण मूत्र	१

समणेण सावएण य, अवस्सकायव्वयं हवइ जम्हा ।
अंतो अहो-निसिस्स य, तम्हा आवस्सयं नाम ॥

- ११ स्व
- १२ विराजना
- १३ चतुर्विध कर्माय सम्बन्धी अनिवार्य क
- १४ मना
- १५ विद्वत्ता
- १६ ध्यान
- १७ पञ्चविध विद्या सम्बन्धी अनिवार्य क प्रतिरूपण का पाठ
- १८ कामगुण
- १९ महाभूत
- २० समिति
- २१ पञ्चविध जीवनिकाय
- २२ सन्ध्या
- २३ मन्त्रविन्द भय
- २४ अष्ट मन्त्रस्थान
- २५ त्वं ब्रह्मचर्य गुप्ति
- २६ दण्ड शमनधर्म
- २७ ग्यान्तु उपसर्गक प्रतिमा
- २८ बारह भिक्षु प्रतिमा
- २९ तेजह विद्या स्थान
- ३० चीन्हा भूतशम
- ३१ पन्तह परमाध्यात्मिक
- ३२ गाथा पोन्थक
- ३ सन्तह अक्षयम
- ३४ अठारह अरहन्तचय
- ५ उन्नीस ज्ञाना शमकथा आश्रयित
- ३६ बीस अनमावि
- ३७ इक्कीस गवत दोष

३८ वाईस परिपह	"	"
३९ तेईस सूत्रकृताग अध्ययन	"	"
४० चौवीस देव	"	"
४१ पच्चीस महाव्रत भावना	"	"
४२ छद्दीस दशा. कल्प. व्यवहार के अध्ययन	"	"
४३ सत्ताईस अनगार गुण	"	"
४४ अट्ठाईस आचार प्रकल्प	"	"
४५ उनतीस पापश्रुत	"	"
४६ तीस महामोहनीय स्थान	"	"
४७ इकतीस सिद्धगुण	"	"
४८ बत्तीस योग सग्रह	"	"
४९ तेतीस आशातना	"	"
५० शेष मर्व अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ		
५१ धर्म आराधना करने की प्रतिज्ञा का पाठ		
५२ ऐर्यापथिकी पापक्रिया के प्रतिक्रमण का पाठ		

पंचन कायोत्सर्ग अध्ययन

- १ कायोत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा का पाठ
- २ कायोत्सर्ग के आगारों का पाठ

षष्ठ प्रत्याख्यान अध्ययन

- ३ नमस्कार सहित प्रत्याख्यान का पाठ
- २ पौरुषी प्रत्याख्यान का पाठ
- ३ पूर्वार्ध प्रत्याख्यान का पाठ
- ४ एकाशन प्रत्याख्यान का पाठ
- ५ एकस्थान प्रत्याख्यान का पाठ
- ६ आचाम्ल प्रत्याख्यान पाठ
- ७ अभवत प्रत्याख्यान पाठ

८ चरित्र प्रत्याख्यान पाठ

९ अभिषेक का पाठ

१० विवृति प्रत्याख्यान का पाठ

११ प्रत्याख्यान पारने का पाठ

अमणोपासक—आवश्यक सूत्र

प्रथम सामायक आवश्यक

१ सामायिक ढल स्वीकार करने का पाठ

द्वितीय चतुर्विंशति स्तव आवश्यक

तृतीय वन्दन आवश्यक

(ये दोनों आवश्यक अमण आवश्यक के समान हैं)

चतुर्थ प्रतिक्रमण आवश्यक

१ ज्ञानानिचारा का पाठ

२ दानानिचारी का पाठ

३ द्वादश ज्ञानानिचारा के पाठ

४ सत्सेवना का पाठ

५ अठारह वापस्थानों का पाठ

६ समापना का पाठ

पंचम कायोत्सर्ग आवश्यक

(अमण आवश्यक के समान)

षष्ठ प्रत्याख्यान आवश्यक

१ समुच्चय प्रत्याख्यान पाठ

धर्मकथानुयोग प्रधान कल्प सूत्र

अध्ययन	१
मूल पाठ	१२१५ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	३१२
पद्य सूत्र गाथा	१४

तेणं कालेणं तेणं समणं समणे भगवं बहूणं समणीणं, महावीरे
रायणिहे नयरे गुणसिलणं उज्जाणे. बहूणं समणाणं. बहूणं
सावयाणं, बहूणं सावियाणं, बहूणं देवाणं, बहूणं देवीणं मज्झमणं
चेव. एवं भासइ. एवं पणवेइ. एवं परुवेइ. पज्जोसग्गहा कप्पो नामं
अज्झयणं सअट्ठं. महेउयं. मकारणं. समुत्तं. मअट्ठं. सटभय.
मवागरणं. भुज्जो भुज्जो उवदंसेइ त्ति वेमि ।

- ८ चरिम प्रत्याख्यान पाठ
- ९ अभिग्रह का पाठ
- १० त्रिभुजि प्रत्याख्यान का पाठ
- ११ प्रत्याख्यान पारने का पाठ

अमणोपासक-आवश्यक सूत्र

प्रथम सामायिक आवश्यक

- १ सामायिक व्रत स्वीकार करने का पाठ

द्वितीय चतुर्विंशति स्तव आवश्यक

तृतीय वन्दन आवश्यक

(ये दोनों आवश्यक धमन आवश्यक के समान हैं)

चतुर्थ प्रतिक्रमण आवश्यक

- १ ज्ञानानिधारा का पाठ
- २ दानानिधारी का पाठ
- ३ दारुण दानानिधारा के पाठ
- ४ सत्सेवना का पाठ
- ५ अठारह वापस्थानों का पाठ
- ६ समापना का पाठ

पञ्चम कायोदसग आवश्यक

(धमन आवश्यक के समान)

षष्ठ प्रत्याख्यान आवश्यक

- १ समुच्चय प्रत्याख्यान पाठ

कल्पसूत्र विषय-सूची

परमेश्वरी नमस्कार

भगवान महावीर

- १ भ० महावीर के पाँच कल्याण
- २ क- आपाड़ शुक्ला पट्टी की रात्रि में देवलोक से च्यवन
ख- चतुर्थ आरक के ७५ वर्ष अवशेष
ग- माह्णकुण्ड ग्राम का कोडाल गोत्रीय ऋषभदत्त ब्राह्मण,
जालंवर-गोत्रिया देवानन्दा ब्राह्मणी
घ- मध्यरात्रि में गर्भावतरण
- ३-४ भ- भ० महावीर के तीन ज्ञान
ख- देवानन्दा के चौदह स्वप्न
- ५-६ ऋषभदत्त से स्वप्न दर्शन के सम्बन्ध में देवानन्दा का निवेदन
- ७-१० ऋषभदत्त का स्वप्नफल कथन
- ११-१२ देवानन्दा द्वारा स्वप्नफल धारणा
- १३-१४ शक्रेन्द्र का अवधिज्ञान द्वारा भ० महावीर का गर्भावतरण
१५ शक्र स्तय, शक्र संकल्प
- १६-१७ तीर्थंकर उत्पत्तिकुल का चिन्तन
- १८ क- ब्राह्मणकुल में अवतरण एक आश्चर्यजनक घटना
ख- घटना का मूल हेतु
- १९-२४ शक्र का स्वकर्तव्य चिन्तन
२५ हरिणगमेपी को गर्भ साहारण का आदेश
- २६-२८ क- हरिणगमेपी का वैक्रय
ख- देवानन्दा के गर्भ का साहारण
ग- क्षत्रियकुण्डग्राम, काश्यप गोत्रीय सिद्धार्थ क्षत्रिय,

- वाणिज्य मोत्रिया विगना दानविवाही
- घ विगना को अवस्थापिनी निग
- च हरिषयनपी का स्वस्थान के निग प्रस्थान और गक न गभ साहरण क सम्बन्ध म निवन्त
- २६ आश्विन कृष्ण चषोणी विगामीका रात्रि म गभ साहरण
- २७ भ० महावार का अवधिज्ञान
- ३१ ४७क दवाना का स्वगभ साहरण का बीच विगना के चीन्ह स्वप्न
- ४८ विगना का निद्राय को जगना
- ४९ ५७ विगना की स्वप्न फन पुच्छा
- ५१ ५४ निद्राय का स्वप्नफन कथन
- ५२ विगना की स्वप्न फन धारणा
- ५६ विगना की घम जागरणा
- ७ ६६क बाह्य उपस्थान गाना के सजान का आग्न
- ख निद्राय के आवश्यक दैनिक कृत्य
- ग बाह्य उपस्थान गाना म आगमन
- घ विगना के निचे तथा स्वप्न पाठको के निचे भगमना की व्यवस्था
- ङ स्वप्न पाठको को आगमन
- ६७ ६८ स्वप्न पाठको का आगमन
- ७० ७१ स्वप्न पाठको म निद्राय की स्वप्नफन पुच्छा
- क स्वप्न-पाठको का स्वप्न फन कथन
- ७२ ७४ख बयानीस स्वप्न तीम म्नास्वप्न सब वर्ततर स्वप्न
- ग तीयकर और चकवर्ती को भाता के चीन्ह स्वप्न
- ७५ वामुक्क माना के सात स्वप्न
- ७६ वरुक्क माना के चार स्वप्न
- ७७ मांडनिक माना का स्वप्न

- ७८ त्रिशला के चौदह स्वप्नों का फल-पुत्र लाभ
 ७९ युवा पुत्र का चक्रवर्ती या धर्मचक्रवर्ती होना
 ८०-८२ क- सिद्धार्थ की स्वप्न-फल धारणा
 ग- स्वप्न-पाठकों को प्रीतिदान
 ग स्वप्न-पाठकों का विमर्जन
 ८३-८७ क- सिद्धार्थ का त्रिशला को स्वप्न पाठकों के कथन से अवगत कराना
 ग- त्रिशला का स्वस्थान गमन
 ८८ तिर्यक् जृम्भक देवों द्वारा राज्य कुल में निधान की वृद्धि
 ८९-९० सिद्धार्थ और त्रिशला का सकल्प,
 वर्धमान नाम रखने का निश्चय
 ९१ माता की अनुसम्पा के लिये गर्भ में भ० महावीर का स्थिर होना
 ९२ भ० महावीर के निश्चल होने से त्रिशला का चिन्तित होना
 ९३ क- भ० महावीर को त्रिशला के मनोगत भावों का अवधिज्ञान में जानना
 ख- भ० महावीर द्वारा स्वशरीर का स्पर्शन
 ९४ क- त्रिशला की प्रमन्नता
 स- भ० महावीर का अभिग्रह
 ९५ सिद्धार्थ द्वारा त्रिशला के दोहद की पूर्ति, त्रिशला का गर्भ-पोषण, संरक्षण
 ९६ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन भ० महावीर का जन्म
 ९७ जन्मोत्सव के लिये देव-देवियों का आगमन
 ९८ सिद्धार्थ के भवन में देवों द्वारा हिरण्य आदि की दिव्य वर्षा
 ९९-१०२ सिद्धार्थ द्वारा दस दिवस पर्यन्त पुत्र जन्मोत्सव
 क- वन्दिमोचन
 ख- मान उन्मान की वृद्धि

- घ नगर की गफाई आदि
 छ- दण्ड विषय, ऋणमुक्ति
 १०३ यज्ञ दान आदि कृत्य
 १०४ क- प्रथम दिन शिशु म्रियति
 छ- तृतीय दिन चन्द्र भूय दर्शन
 ग छट्ठे दिन धमजागरणा
 घ द्वादशहरे दिन अगुष्टि मे निवृत्ति
 छ द्वादशहरे दिन जाति भोज
 १०५ १०७ वधमान नाम देना
 १०८ भ० महावीर के पुत्र निष्पन्न तीन नाम
 १०९ क भ० महावीर के पिता के तीन नाम
 ल भ० महावीर की माता के तीन नाम
 ग भ० महावीर के (विजय) चाचा का नाम
 घ भ० महावीर के बड़े भ्राता का नाम
 छ भ० महावीर की बहिन का नाम
 ज भ० महावीर की भार्या का नाम
 छ भ० महावीर की पुत्री क दो नाम
 ज भ० महावीर की दोहित्री के दो नाम
 ११० १११ क भ० महावीर की गीत वध की वय होने पर लोकाधिक
 देवी का आगमन

- ११६ क- आभरणादि का त्याग
 ख- पंचमुष्टि लोच
 ग- छट्ठ तप
 घ- एक देव-दूष्यवस्त्र का धारण करना
 ङ- एकाकी भ० महावीर की अनगार प्रव्रज्या
- ११७ क- भ० महावीर का देव दूष्य धारण काल
 ख- भ० महावीर का अचेलक होना
 क- भ० महावीर का बारह वर्ष पर्यन्त उपसर्ग सहन करना
 ख- भ० महावीर की समिति-गुप्ति आराधना
 ग- भ० महावीर की इकवीस उपमा
 घ- प्रतिबन्ध के चार भेद
 ङ- अठारह पाप से सर्वथा विरति
- ११६ भ० महावीर का ग्रीष्म-हेमन्त में ग्राम नगर में ठहरने का काल
- १२०-१२१ दीक्षा काल से तेरहवें वर्ष में जू'भक ग्राम के बहार वृजु-
 वालिका नदी के तट पर चैत्य के समीप बैसाख शुक्ला दसमी
 के दिन भ० महावीर को केवल ज्ञान
- १२२ भ० महावीर के वर्षावास
- १२३ भ० महावीर का अन्तिम वर्षावास मध्यपावा में
- १२४ कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन भ० महावीर का निर्वाण
- १२५-१२६ देवताओं द्वारा भ० महावीर का निर्वाण-महोत्सव
- १२७ इन्द्रभूति गौतम गणधर को केवलज्ञान
- १२८ क- कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन अठारह गणराजाओं का
 आहार त्याग कर पीपध करना
 ख- राजाओं द्वारा दीपोद्योत
 भस्मराशि नामक महाग्रह का भ० महावीर के जन्म नक्षत्र
 के साथ संक्रमण
- १३०-१३१ भस्म-राशि महाग्रह का प्रभाव

- १३२-१३३ क- निर्वाण रात्रि मे कुण्डलो की उत्पत्ति
 ल- निर्वाणो का भक्त प्रत्याभ्यास
 ग- कुण्डलो की उत्पत्ति का पञ्चादश
- १३४ भ० महावीर के अनुयायी श्रमण
 १३५ भ० महावीर की अनुयायी श्रमणियाँ
 १३६ भ० महावीर के अनुयायी श्रमणापागक
 १३७ भ० महावीर की अनुयायी श्रमणोपासिकायें
 १३८ भ० महावीर के अनुयायी चतुर्दशपूर्वो मुनि
 १३९ भ० महावीर के अनुयायी अवधिज्ञानी मुनि
 १४० भ० महावीर के अनुयायी वैश्वामित्रि घारी मुनि
 १४१ भ० महावीर के अनुयायी मन पर्यवज्ञानी मुनि
 १४२ भ० महावीर के अनुयायी सादमन्त्रि वाले मुनि
 १४३ क भ० महावीर के मुक्त होने वाले शिष्य
 ल मुक्त होने वाली श्राविकायें
 १४४ अनुत्तर विमानो मे उत्पन्न होने वाले मुनि
 १४५ भ० महावीर के पञ्चाशत् मुक्त होने वाले मुनि
 १४६ क भ० महावीर का गृहवास काल
 ल भ० महावीर का सुषस्थकाल
 ग भ० महावीर का कवनज्ञान मुक्त जीवन
 घ भ० महावीर का श्रमण जीवन
 ङ भ० महावीर की सर्वायु
 च भ० महावीर का निर्वाण काल
- १४८ कल्पसूत्र का लेखन काल
 भ० पार्श्वनाथ
 १४९ भ० पार्श्वनाथ के पंच कल्याण
 १५० क चैत्र वृष्णा चतुर्थी के दिन प्राणत देवलोह से भ० पार्श्व-
 नाथ की आत्मा का ज्यवन

- ख- जम्बूद्वीप, भरत, वाराणसी नगरी, अश्वसेन राजा, वामा रानी
- ग- वामारानी की कुक्षी में भ० पार्श्वनाथ का अवतरण
- १५१ क- भ० पार्श्वनाथ के तीन ज्ञान
- ख- स्वप्न दर्शन आदि सर्व वृत्तान्त
- १५२ पौष कृष्णा दसमी के दिन भ० पार्श्वनाथ का जन्म
- १५३ देवताओं द्वारा भ० पार्श्वनाथ का जन्मोत्सव
- १५४ पार्श्व कुमार नाम देने का हेतु
- १५५ भ० पार्श्वनाथ की तीस वर्ष की वय होने पर लोकान्तिक देवों का आगमन
- १५६ भ० पार्श्वनाथ द्वारा वर्षादान
- १५७ पौष कृष्णा एकादशी के दिन भ० पार्श्वनाथ की तीन मी पुरुषों के साथ अनगर प्रव्रज्या
- १५८ त्रियासी दिन का उपसर्ग सहन काल
- १५९ भ० पार्श्वनाथ की समिति गुप्ति आराधना
- भ० पार्श्वनाथ को चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन केवल ज्ञान
- १६० भ० पार्श्वनाथ के आठ गण और आठ गणधर
- १६१ भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी श्रमण
- १६२ भ० पार्श्वनाथ की अनुयायी श्रमणियाँ
- १६३ भ० पार्श्वनाथ के श्रमणोपासक
- १६४ भ० पार्श्वनाथ की श्रमणोपासिकाएं
- १६५ भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी चौदह पूर्वी मुनि
- १६६ क- भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी अवधिज्ञानी मुनि
- ख- भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी केवलज्ञानी मुनि
- ग- भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी वैक्रिय लब्धि सम्पन्न मुनि
- घ- भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी मनः पर्यव ज्ञानी मुनि
- ङ- भ० पार्श्वनाथ के मुक्त होने वाले शिष्य

च मुक्त होने वाली आधिकार्य

छ भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी विपुलभन्ती मन पर्यंत जानी मुनि

ज भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी बादमाज्य सम्पन्न मुनि

झ भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले मुनि

१६७ भ० पार्श्वनाथ के पदचाल मुक्त होनेवाले मुनि

१६८ के भ० पार्श्वनाथ का गृहस्थ जीवन

ख भ० पार्श्वनाथ का लघुमय जीवन

ग भ० पार्श्वनाथ का कथनमान मुक्त जीवन

घ भ० पार्श्वनाथ का धर्म जीवन

च भ० पार्श्वनाथ का सर्ववि

ज धारण गुप्ता अष्टमी के दिन सम्पन्न तीन शिखर पर शीलीष पुष्टि के साथ भ० पार्श्वनाथ का निर्वाण

१६९ कल्प मूल का जन्म काल

भ० नैमनाथ

१७० भ० अरिष्ट नैमनाथ के पाँच कल्याण

१७१ क नानिक कृष्ण द्वारणी के दिन अपराधित विमान से भ० अरिष्ट नैमनाथ की धारणा का चरित्र

ख जम्बूद्वीप भरत तीर्थपुर नगर, समुद्रविजय राजा, शिवादेवी

ग शिवा देवी की कुली से भ० अरिष्टनैमि की भारता का धर्ममन्त्र

घ चौदह स्वर्ण वस्त्रपानन आदि

१७२ ज धारण गुप्ता पंचमी के दिन भ० अरिष्ट नैमनाथ का जन्म

ख अरिष्ट नैमनाथ नाम देने का हेतु

ग अरिष्ट नैमनाथ की तीन शो वप की वय होन पर लोका-
निक दवा का आगमन

घ तीर्थ प्रवर्तन के नियम प्राप्ति

ड- भ० अरिष्टनेमि द्वारा वर्षोदान

१७३ श्रावण शुक्ला पष्ठी के दिन भ० अरिष्टनेमिनाथ की अनगार प्रव्रज्या

१७४ भ० अरिष्ट नेमिनाथ का चौपन दिन का कायोत्सर्ग
आश्विन कृष्णा अमावस्या के दिन उज्जयन्त शैल शिखर पर
भ० अरिष्ट नेमिनाथ को केवल ज्ञान

१७५ भ० अरिष्ट नेमिनाथ के अठारह गण और गणधर

१७६ भ० अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी श्रमण

१७७ भ० अरिष्ट नेमिनाथ की अनुयायी श्रमणियां

१७८ भ० अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी श्रमणोपासक
भ० अरिष्ट नेमिनाथ की अनुयायी श्रमणोपासिकाएँ

१७९ भ० अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी चौदह पूर्वो मुनि

१८० क- भ० अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी अवधि-ज्ञानि मुनि

ख- " " केवल ज्ञानी मुनि

ग- " " वैक्रेय लब्धि सम्पन्न मुनि

घ- " " विपुल मति मुनि

ड- भ० अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी वादलब्धि सम्पन्न मुनि

च- भ० अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी अनुत्तर विमानो में उत्पन्न
होनेवाले मुनि

छ- भ० अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी सिद्ध होनेवाले मुनि

ज- भ० अरिष्ट नेमिनाथ की अनुयायी सिद्ध होनेवाली आशिकाएँ

१८१ भ० अरिष्ट नेमिनाथ के पश्चात् मुक्त होनेवाले मुनि

१८२ क- भ० अरिष्ट नेमिनाथ का कुमार जीवन

ख- " " छद्मस्थ जीवन

ग- " " केवलज्ञान युक्त जीवन

घ- " " पूर्णायु

ड- " " आपाठ शुक्ला अपृमी

१० उक्तानां न निम्नर पर निर्वर्ति

- १८३ म० अग्निर् नमिनाथ व पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १८४ म० नमिनाथ व पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १८५ म० मुनि मुद्रा व पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १८६ म० मन्विनाथ व पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १८७ म० अरनाथ व पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १८८ म० ब्रह्मनाथ के पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १८९ म० नाथिनाथ व पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १९० म० पदनाथ के पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १९१ म० अनन्धनाथ व पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १९२ म० विमलनाथ व पदवान् ब्रह्मसूत्र का वाचना काय
 १९३ म० कामुपुत्र
 १९४ म० धर्मोत्तम नाथ
 १९५ म० गीतनाथ
 १९६ म० मुनिधि नाथ
 १९७ म० धर्म प्रभ
 १९८ म० मुनिनाथ
 १९९ म० पदप्रभ
 २०० म० मुनि नाथ
 २०१ म० अमिनाथ
 २०२ म० मन्मथ नाथ
 २०३ म० अमिनाथ
 म० श्रुतमदेव

२०४ २०५ म० श्रुतमदेव के पाँच ब्रह्मसूत्र

२०६ व आषाढ कृष्ण चतुर्थी के दिन भगवान की आत्मा का देव लोक से उद्धार

ख- जम्बूद्वीप, भरत, इक्ष्वकुभूमिका, नाभिकुलकर, मरुदेवा भार्या

ग- मरुदेवा भार्या की कुक्षि में भगवान की आत्मा का अवतरण

२०७ क- भ० ऋषभदेव को तीन ज्ञान

ख- मरुदेवा के चौदह स्वप्न

ग- प्रथम स्वप्न ऋषभ का

घ- नाभि कुलकर द्वारा स्वप्न फल कथन

२०८ चैत्र कृष्णा अष्टमी को भ० ऋषभदेव का जन्म

२०९ जन्मोत्सव आदि

२१० भ० ऋषभदेव के पाँच नाम

२११ क- भ० ऋषभदेव का कुमार जीवन

ख- भ० ऋषभदेव का राज्य काल

ग- भ० ऋषभदेव द्वारा कला व शिल्पकर्मों का उपदेश

घ- सो पुत्रों का राज्याभिषेक

ङ- लोकान्तिक देवों का आगमन

च- वर्षादान

छ- चैत्र कृष्णा अष्टमी को चार हजार पुरुषों के साथ भ० ऋषभदेव की अनगर प्रव्रज्या

२१२ एक हजार वर्ष पश्चात् फाल्गुन कृष्णा एकादशी को पुरिमताल नगर के बाहर शकटमुख. उद्यान में न्यग्रोध (वड़) वृक्ष के नीचे भ० ऋषभदेव को केवलज्ञान

२१३ भ० ऋषभदेव के गण और गणधर

२१४ भ० ऋषभदेव के अनुयायी श्रमणों की संख्या

२१५ भ० ऋषभदेव की अनुयायी श्रमणियों की संख्या

२१६ " के श्रमणोपासकों की संख्या

२१७ " की श्रमणोपासिकाओं की संख्या

२१८ " के चौदह-पूर्वी मुनि

का उज्ज्वलान्तराल गिराकर पर निर्वाण

- १८३ भ० अरिष्ट नमिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १८४ भ० नमिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १८५ भ० मुनि मुद्रा के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १८६ भ० मन्त्रिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १८७ भ० अरुनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १८८ भ० कपुनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १८९ भ० गान्धिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १९० भ० धमनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १९१ भ० अनन्तनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १९२ भ० विमलनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
 १९३ भ० वामुनाथ
 १९४ भ० श्यामनाथ
 १९५ भ० गीतनाथ
 १९६ भ० मुनिनाथ
 १९७ भ० शत्रुघ्न
 १९८ भ० सुपाशनाथ
 १९९ भ० पद्मनाथ
 २०० भ० सुमति नाथ
 २०१ भ० मन्मथनाथ
 २०२ भ० सम्भव नाथ
 २०३ भ० अश्विनाथ

भ० अष्टभदेव

२०४ २०५ भ० कपमदेव के पश्चात् कल्याण

२०६ क आषाढ कृष्ण चतुर्थी के दिन भगवान की आत्मा का देव लोक से गमन

ख- जम्बूद्वीप, भरत, इक्ष्वकुभूमिका, नाभिकुलकर, मरुदेवा भार्या

ग- मरुदेवा भार्या की कुक्षि में भगवान की आत्मा का अवतरण

२०७ क- भ० ऋषभदेव की तीन ज्ञान

ख- मरुदेवा के चौदह स्वप्न

ग- प्रथम स्वप्न वृषभ का

घ- नाभि कुलकर द्वारा स्वप्न फल कथन

२०८ चैत्र कृष्णा अष्टमी को भ० ऋषभदेव का जन्म

२०९ जन्मोत्सव आदि

२१० भ० ऋषभदेव के पाँच नाम

२११ क- भ० ऋषभदेव का कुमार जीवन

ख- भ० ऋषभदेव का राज्य काल

ग- भ० ऋषभदेव द्वारा कला व शिल्पकर्मों का उपदेश

घ- मो पुत्रों का राज्याभिषेक

ङ- लोकांतिक देवों का आगमन

च- वर्षादान

छ- चैत्र कृष्णा अष्टमी को चार हजार पुरुषों के साथ भ० ऋषभदेव की अनगर प्रव्रज्या

२१२ एक हजार वर्ष पश्चात् फाल्गुन कृष्णा एकादशी को पुरिमताल नगर के बाहर शकटमुख उद्यान में न्यग्रोध (वड़) वृक्ष के नीचे भ० ऋषभदेव का केवलज्ञान

२१३ भ० ऋषभदेव के गण और गणधर

२१४ भ० ऋषभदेव के अनुयायी श्रमणों की संख्या

२१५ भ० ऋषभदेव की अनुयायी श्रमणियों की संख्या

२१६ " के श्रमणोपासकों की संख्या

२१७ " की श्रमणोपासिकाओं की संख्या

२१८ " के चौदह-पूर्वा मुनि

- २१६ भ० अष्टमदेव के अनुयायी अवधिज्ञानी मुनि
 २२० वचनज्ञानी मुनि
 २२१ वसिष्ठजी के सम्पन्न मुनि
 २२२ विष्णुमणि मन पदक ज्ञानी मुनि
 २२३ वासुदेव सम्पन्न मुनि

२२४ क मुक्त होनेवाले गिण्य

ख मुक्त होनेवाली आधिकार

२२५ अनुत्तर विमानों में उड़ान होनेवाले मुनि

२२६ भ० अष्टमदेव के ९ बात मुक्त होनेवाले गिण्यो की परम्परा

२२७ क भ० अष्टमदेव का कुमार जीवन

ख राय काल

ग गृहस्थ काल

घ स्वयंसेवक जीवन

ङ वेदज्ञान युक्त जीवन

च धर्म जीवन

छ सत्य

ज निर्वाण काल

झ माघ कृष्ण त्रयोदशी को निर्वाण

२२८ य० अष्टमदेव के पश्चात् कल्याण मूत्र का वाचना काल

भ० महावीर

१ भ० महावीर के नौ गण इन्द्रावरुण गणधर

२ ३ क भी गण होने का कारण

ख गणधरों के योग

ग गणधरों ने जिन मुनियों को वाचना दी उनकी संख्या

४ क इन्द्रावरुण गणधरों का आश्रम जान

ख निर्वाण स्थान

ग- इग्यारह गणवरों का निर्वाण काल

५-२० क- मुधर्मा का शिष्य परिवार

गया १४ ग- स्थविरावली-स्थविरो के कुल, गोत्र, शाखा आदि

वर्षावास समाचारी

१ भ० महावीर का वर्षावास निश्चय

२ पचास दिन पश्चात् वर्षावास निश्चित करने का हेतु

३-८ भ० महावीर का अनुमरण

६ वर्षावास में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों का अवग्रह क्षेत्र

१० वर्षावाम में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों का भिक्षाचर्या क्षेत्र

११ गहरे जलवाली नदियों के पार करने का निषेध

१२-१३ अल्प जलवाली नदियों को पार करने की विधि

१४-१६ ग्लान के निमित्त लार्ड हुई वस्तु ग्लान को ही देने का विधान

१७ स्वस्थ सबल साधक को बारम्बार नौ प्रकार की विकृति लेने का निषेध

१८-१९ ग्लान के निमित्त आवश्यक वस्तु लाने की विधि

२० क- एक ही बार भिक्षा लाने का नियम

ग- आचार्यादि के निमित्त दूसरी बार भिक्षा लाने का विधान

२१ उपवास के पारणा के दिन आवश्यक हो तो दो बार भिक्षा लाने का विधान

२२-२४ क- दो उपवास और तीन उपवास के पारणा के दिन मूत्र २१ के ममान

ग- उत्कृष्ट तप के पारणा के दिन स्वेच्छानुसार भिक्षाकाल

२५ नित्यभोजी और तपस्वियों के लेने योग्य पानी

२६ आहार-पानी की (दात) अण्ड घाग की मंग्या

२७ क- उपवाधय के पार्श्ववर्ती घरों से भिक्षा लेने का निषेध

ग- गृह मंग्या के तीन विलम्ब

२८ वर्षा में (अत्यल्प वर्षा में) भिक्षा के लिये जाने का निषेध

- २१६ भ० ऋषभदेव के अनुसार श्री अर्वाज्ञानी मुनि
 २२० चवत्तगानी मनि
 २२१ चक्रियल ३ मध्य न मुनि
 २२२ विपुनमनि मन पयव ज्ञानी मुनि
 २२३ चान्तच्छि सम्पन्न मुनि
 २२४ क मुचन होनेवाले गिण्य
 ल मुचन होनेवाली आधिकार्य
 २२५ अनुत्तर विमाना म ऊर व होनेवाले मुनि
 २२६ भ० ऋषभ व के पदवान मुचन होनेवाले गिण्यों की परम्परा
 २२७ क भ० ऋषभदेव का कुमार जीवन
 ल रा प वार
 ग शुद्धवाग काल
 घ छपम्प जीवन
 ङ नेवत्तगान युक्त जीवन
 च धम्म जीवन
 छ मवाधु
 ज निर्वाण काम
 झ माघ कृष्ण गयोन्गी हो निर्वाण
 २२८ भ० ऋषभदेव के पदवान कल्पसूच का वाचना काम
 भ० महावीर
 १ भ० महावीर के नौ गण इम्मारह गणधर
 २ क नौ गण होने का कारण
 ल गणधरो के गोत्र
 ग गणधरो ने जिन मुनियों को वाचना दी उनकी संख्या
 ४ क इम्मारह गणधरो का ज गम नाम
 ल निर्वाण स्थान

छ- „ स्नेह सूक्ष्म

४६ क- आचार्यादि मे पूछकर भिक्षा के लिये जाने का विधान

ख- पूछकर जाने का कारण

४७ क- स्वाध्याय के लिये आचार्यादि से पूछ कर जाने का विधान

ख- शौच के लिये आचार्यादि से पूछ कर जाने का विधान

ग- आचार्यादि से पूछ कर ही विहार करने का विधान

४८ क- आवश्यकता हो तो आचार्यादि से पूछ कर ही विक्रति भेषन का विधान

ख- पूछने का हेतु

४९ क- आचार्यादि से पूछ कर ही चिकित्सा कराने का विधान

ख- पूछने का हेतु

५० आचार्यादि से पूछ कर ही तपश्चर्या करने का विधान

५१ क- आचार्यादि से पूछ कर ही सलेखना-भक्त प्रत्याख्यान करने का विधान

ख- पूछने का कारण

५२ क- वस्त्रादिको धूप मे मुखाकर भिक्षा के लिये जाने का निषेध

ख- „ „ „ „ स्वाध्याय के लिये „

ग- „ „ „ „ कायोत्सर्ग करने का निषेध

५३-५४ विना आमन शयन के सोने बैठने का निषेध

५५ क- मग-मूत्रादि मे निवृत्त होने के लिये तीन स्थान

ख- तीन स्थान देगने का हेतु

५६ तीन पात्र लेने का विधान

५७ लोच का विधान

लोच के विकल्प

५८-५९ क- क्षमा याचना

ख- उपशम भाव से आराधना

- २६ सुते आना के निचे भोजन करने का निषेध
- ३० पाणिपात्र भिन्नु को वर्षा मे भिन्नाय जाने का निषेध
- ३१ क पात्रधारी भिन्नु भिन्नुषी को अधिक वर्षा मे भिन्नाय जाने का निषेध
- ख पात्रधारी भिन्नु भिन्नुषी को अल्प वर्षा मे भिन्नाय जाने का विधान
- ३२ वर्षा मे ठहरने के स्थान
- ३३-३५ दूर प्रवेश से पूरु पश्चिम आहार से ही लेने का विधान
- ३६ क एक एक कर वर्षा हो तो भोजन करने की विधि
- ख मायकाल मे पूरु ही उपाध्य मे आने का विधान
- ३७ एक एक कर वर्षा हो तो निद्राय निद्रायी को एक स्थान पर रुकने का निषेध
- ३८ निद्राय निद्रायी के एकत्र रुकने के अनेक विरुद्ध
- ३९ एकत्र रुकने को चतुर्भुजी
- ४०-४१ क बिना पूछे आहार लाने का निषेध
- ख निषेध का हेतु
- ४२ क पानी से गरीर गीला हो तो भोजन करने का निषेध
- ख गील रहनेवाले स्थान
- ४३ पानी सुखने पर भोजन करने का विधान
- ४४ क आठ मूत्र
- ख पाँच पत्रक
- ४५ क पाँच पत्रक मूत्र
- ख बीज मूत्र
- ग हरित मूत्र
- घ पुष्प मूत्र
- ङ अण्ड मूत्र
- च लवण मूत्र

- ग अनुपशम भाव मे विराघना
 घ साधुता का गार
- ६० तीन उपाधय की याचना
 ६१ शिक्षाचर्या के लिये दिशा ३
 ६२ दान धर्म के लिये भाव
 का परिमाण
- ६३ उपसहार—समाचारी की आरा
 ६४ भ० महावीर का अनुविध सय के
 का प्रवचन



दस प्रकीर्णक विषय-सूची

१ चतुदशरण प्रकीर्णक

१ आवश्यक के छः अध्ययन

२ सामायिक आवश्यक मे चारित्र्य शुद्धि

३ चतुर्विंशति जिन स्तव से दर्शन शुद्धि

४ वन्दना आवश्यक मे ज्ञान शुद्धि

५ प्रतिक्रमण मे ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य शुद्धि

६ कायोत्सर्ग से तप शुद्धि

७ पञ्चमखाण मे धीर्य शुद्धि

८ चौदह स्वप्न

९ उपोद्घात

१० गण के कर्तव्य त्रय

११-२३ अहंत् शरण

२४-३० मिद्व शरण

३१-४१ साधु शरण

४२-४८ धर्म शरण

४९-५४ दुःकृत गहा

५५-६१ मुकृत अनुमोदन

६२-६३ उपमहार

२ आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक

१ बान पण्डित मरण की व्याख्या

२ देशयति की व्याख्या

३ पाच अणुव्रत

दस प्रकीर्णक विषय-सूची

१ चतुश्शरण प्रकीर्णक

- १ आवश्यक के छः अव्ययन
- २ सामायिक आवश्यक से चारित्र्य शुद्धि
- ३ चतुर्विंशति जिन स्तव से दर्शन शुद्धि
- ४ वन्दना आवश्यक से ज्ञान शुद्धि
- ५ प्रतिक्रमण से ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य शुद्धि
- ६ कायोत्सर्ग से तप शुद्धि
- ७ पञ्चपखाण से वीर्य शुद्धि
- ८ चौदह स्वप्न
- ९ उपोद्घात
- १० गण के कर्तव्य त्रय

११-२३ अहंत् शरण

२४-३० मिद्ध शरण

३१-४१ साधु शरण

४२-४८ धर्म शरण

४९-५४ दुष्कृत गहरी

५५-६१ सुकृत अनुमोदन

६२-६३ उपसहार

२ आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक

१ बाल पण्डित मरण की व्याख्या

२ देशयति की व्याख्या

३ पाच अणुव्रत

१८ २२	आलोचना नि दा, गहाँ
२३	निश्चय की बुद्धि
२४ २६	समय की बुद्धि नहीं
३० ३२	आलोचना नि दा प्रत्यक्ष
३३ ३४	सब विरति
३५	सुख साराधना
३६	सुख प्रत्याम्भान
३७	अनृति
३८	जन ग रोदन
३९ ४०	सब ज म भरण
४१ ४२	पण्डित मरण की भावना
४३ ४४	अशरण भावना
४५ ४६	पण्डित मरण की भावना
४७ ४८	काम भोगी से अनृति
४९	नि दा गहाँ
५०	भुक्ति
५१	सुख की प्रतीक्षा से
५२ ५३	पच मठागत रक्षा
५४ ५५	सम्बन्ध धारण
५६ ५७	आत्म प्रयासन का निदि
५८ ५९	निम्न रहित होकर मरण की प्रतीक्षा करना
६०	सम्बन्ध सेप का सामर्थ्य
६१ ६२	पण्डित मरण
६३ ६४	आराधना की कठिनता
६५	आराधना की श्रद्धा
६६	वास्तविक संचार

- ६८ इन्द्रिय रूप चीर
- ८६-१०० कर्म क्षय
- १०१ ज्ञानी और अज्ञानी के कर्म क्षय में अन्तर
- १०२ अन्तिम समय में द्वादशाङ्ग श्रुत चिन्तन असम्भव
- १०३-१०६ क- संवेग की वृद्धि
ख- संवेगी के कर्तव्य
- १०७ मोक्ष मार्ग
- १०८ श्रमण व संयत
- १०९-११२ सर्व-प्रत्याख्यान
- ११३-११६ चार मंगल, चार शरण, पाप-प्रत्याख्यान
- १२० आराधक
- १२१-१२७ चिन्तन-मनन
- १२८ तप का आराधन
- १२९ आराधन ध्वज
- १३० वास्तविक सधारे से सर्वथा कर्मक्षय
- १३१ आराधक की तीन भव से मुक्ति
- १३२-१३५ पताका हरण
- १३६ भाव जागरण
- १३७ क- चार प्रकार की आराधना
ख- तीन प्रकार की आराधना
- १३८-१३९ क- उत्कृष्ट आराधना से उसी भव से मोक्ष
ख- जघन्य आराधना से सात आठ भव से मोक्ष
- १४० क्षमा याचना
- १४१ धीर और अधीर की मृत्यु
- १४२ उपसंहार-सम्यक् आराधना का फल

४ भक्त-परिज्ञा प्रकीर्णक

- १ क महावीरवदना
 ख भक्त परिज्ञा का कथन
 २ त्रिन गायन स्तुति
 ३ ज्ञान सम्पादक
 ४ ४ वास्तविक सुख
 ६ ६ त्रिनामा का आराधन
 ६ पण्डित भरण के तीन भेद
 १० भक्त परिज्ञा के दो भङ्ग
 ११ भक्त परिज्ञा का कथन
 १२ १५ भक्त परिज्ञा की उपाधेयता
 १६ दुःख भय समुद्र
 १७ १८ भय समुद्र निरन्त्रे का भङ्ग
 १६ गुरु का आशेष
 २० गुरु वचना
 २१ २२ सम्यक् आशोधना
 २३ २८ महाज्ञान स्थापना
 २६ भगवन् आराधना
 ३० गुरु भय और स्वधर्मी की पूजा
 ३१ इन्द्र का अनुपयोग
 ३२ ३४ सामायिक चारित्र की धारणा
 ३५ भक्त-परिज्ञा का आराधना
 ३६ आराधना दोषों की आशोधना
 ३७ क अन्तिम प्रत्याख्यान
 ख तीन आहार का त्याग या भवर्षी त्याग
 ३८ ३६ चिन्तन मनन

- ४० मुग विरेचन
 ४१ दीतल ववाय का पान
 ४२ मधुर विरेचन
 ४३ यावज्जीवन के लिये तीन आहार का त्याग
 ४४ आचार्य या सघ से निवेदन
 ४५-४६ चार आहार का त्याग
 ४७-५० क्षमा याचना
 ५१-५८ आचार्य का उपदेश
 ५९ क- मिथ्यात्व का त्याग
 ख- सम्पत्त्य में दृढता
 ग- नमस्कार सूत्र का जाप
 ६०-६२ मिथ्यात्व का फल
 ६३ अप्रमाद का उपदेश
 ६४ चार प्रकार का प्रशस्तराग
 ६५-६६ दर्शन भ्रष्ट और चारित्र्य भ्रष्टमें अन्तर
 ६७ अविरत का तीर्थकर नाम कर्म सम्पादन
 ६८-६९ सम्यक् दर्शन महिमा
 ७०-७५ भक्ति मार्ग
 ७६-८१ नमस्कार सूत्र आराधना का फल
 ८२-८३ ज्ञान महिमा
 ८४-८५ चंचल मन का बधन-ध्यान
 ८६-८८ श्रुत-महिमा
 ८९ हिंसा का त्याग
 ९० दयाधर्म की आराधना
 ९१ अहिंसा की महिमा
 ९२-९३ जीव हिंसा स्वहिंसा है
 ९४ हिंसा का फल

७	ममम्वजीव	की नरकमति और उसका हेतु
८		के वरुण स्थिति
९	व	वा घम ध्वज
	ध	का गमनामनादि

भाषा

१८ २१ ममम्वजीव वजन

मम पाठ व ममम्व जीव का वजन

सूत्र १०

२२ २३ ल म्नी पुरुष आदि होने का हेतु

सूत्र ११

२४ क तान प्रकार से प्रमथ

ल उद्भूत घम स्थिति

२५ जन्म और मरण समय का दुःख और उसका विस्मरण

२६ प्रमथ वीहा

२७ ३० ममम्व जीव की दशा

३१ दश दशात्रा क नाम

३२ (१) बाल दशा

३३ (२) भीमा दशा

३४ (३) मदा दशा

३५ (४) वला दशा

३६ (५) प्रज दशा

३७ (६) हायनी दशा

३८ (७) प्ररचा दशा

३९ (८) प्रमथारा दशा

४० (९) मु मुभी दशा

४१ (१०) सायनी दशा

४२ ४४ दश दशात्रों का प्रकारान्तर से वजन

४५-४७ धर्माचरण का उपदेश
४८-४९ पुण्य करने के निमित्त प्रेरक वचन

गद्य पाठ

सूत्र १३ अप्रमाद का उपदेश
१४ युगल-मनुष्यों का उपदेश
१५ छः सदन, छः सम्मान

गाथा

५०-५५ अवमपिणी काल (ह्रानकाल) का प्रभाव

गद्यपाठ ५६ क- सो वर्ष की आयु में तन्दुल आहार का परिमाण
ख- मागधप्रस्थ का मान
घ- तन्दुल आहार का प्रमाण
ङ- अन्य भोज्य द्रव्य का प्रमाण

५७-५८ व्यवहार कालगणना
५९-६९ एक अहोरात्र के श्वासोच्छ्वास
७० एक मास
७१ एक वर्ष के
७२-७३ सौ वर्ष के

७४ क- एक अहोरात्र के मुहूर्त
ख- एक मास के मुहूर्त

७५ सौ वर्ष के ऋतु

७६-७८ क्षतायु क्षय का क्रम
७९-८० धर्माचरण का उपदेश
८१-८२ आयु क्षय का रूपक

गद्यपाठ

सूत्र १६ क- प्रिय शरीर का
ख- प्रत्येक अंगोपांग
ग- शिरा आदि का

घ- रोगों की उत्पत्ति का हेतु

ङ- धरीरस्थ रक्तदि का प्रमाण

गद्य पाठ

सूत्र १७

८३-८४

मानव धरीर का अन्तरङ्ग वर्णन

सूत्र १८

८५-८५

देह की अपविष्टता का वर्णन

८६-१२१ क- व्यक्ति की राग दृष्टि

ख- राग निवारण का उपदेश

गद्य पाठ

सूत्र १९

स्त्रियों की विकृत दगा का वर्णन

स्त्रियों के विकृत जीवन के सूचक ८३ नाम

स्त्री वाचक शब्दों का विवरण

१२२ १२६

स्त्रियों के कुटिल हृदय का वर्णन

१३०

मोहान्ध को उपदेश देना निरर्थक

१३१

मोह की निरर्थकता

१३२ १३५

धर्माचरण के नियम उपदेश

१३६

धर्म का फल

१३७ १३८

उपसंहार

६ सस्तारक प्रकीर्णक

१ १५

संधारे (अंतिम भाषणा) की महिमा

१६ ३०

संधारा करने वालों का अनुमोदन

३१-३२

प्रगस्त संधारा

३३ ३५

अप्रगस्त संधारा

३६ ४३

पञ्चस्य संधारा

४४ ५०

संधारे से लाभ

५१-५५	मथारं मथारा
५६-८८	अनीन में मथारा करनेवाली महान् आत्माओं का संक्षिप्त जीवन
८९-९०	मागारी मथारा
९१-९२	क्षमा याचना
९३-९८	चिन्तन-मनन
९९-१०२	ममत्त्व त्याग
१०३-१०६	क्षमा याचना
१०७-१०८	मथारे में कर्म क्षय
१०९-११३	मथारा करनेवाले को उपदेश
११४-११६	मथारा करने से कर्म क्षय
११७	तीन भव में मोक्ष
११८-१२२	मथारे की महिमा
१२३	उपमहार

७ गच्छाचार प्रकीर्णक

१	महावीर वन्दना-आदि वाक्य—
२	उन्मार्गगमियों का भव भ्रमण
३-७	श्रेष्ठ गच्छ में रहने का फल
८-९	आचार्य लक्षण जिज्ञासा
१०-११	अधम आचार्य के लक्षण
१२-१३	आचार्य अन्य के आचार्य समक्ष आलोचना करे
१४	श्रेष्ठ आचार्य
१५-१६	निकृष्ट आचार्य
१७	श्रेष्ठ और निकृष्ट आचार्य
१८	निकृष्ट शिष्य
१९	प्रमादी श्रमण का उद्बोध

२०-२२	श्रेष्ठ आचार्य
२३ २४	निकृष्ट आचार्य
२५ २६	श्रेष्ठ आचार्य
२७ २८	निकृष्ट आचार्य
२९ ३१	चनिष्ट आचार्य का त्याग
३२ ३६	साधन पालित मुनि (साधु याचक से भिन्न तृतीय त्यागी वर्ग)
३७	निकृष्ट आचार्य का नाम भी न लेना
३८	आचार्य का वनस्थ
३९	माता विराधर आचार्य
४०	गन्ध सदान का प्रमाण
४१ ४२	गीताय उपमन्या
४३	अगीतार्य परिचय
४४ ४५	गीताय आराधना
४६-४७	अगीतार्य परिचय
४८	अश्रेष्ठ गन्ध का अनुपमन निषिद्ध
४९	श्रेष्ठ गन्ध से लाभ
५०-५१	श्रेष्ठ मुनि के सदान
५२	आहार करने के छ बारण
६० ६२	श्रेष्ठ गन्ध का वनन
६३ ७०	साधन का अमर्यादित मगन का निषेध
७१ ७५	अष्ट गन्ध का वर्णन
७६	उपायय प्रमाणन
७७ ८४	श्रेष्ठ गन्ध का वनन
८५	मुनगुण अष्ट मुनि
८६ ८७	अष्ट गन्ध
८८-८९	निकृष्ट गन्ध
९०	श्रेष्ठ गन्ध

६१-६६	निकृष्ट गच्छ
६७-१०२	श्रेष्ठ गच्छ
१०३	निकृष्ट गच्छ
१०४-१०५	श्रेष्ठ गच्छ
१०६	निकृष्ट गच्छ
१०७-११६	निकृष्ट माध्वी गच्छ
११७	श्रेष्ठ माध्वी गच्छ
११८-१२२	निकृष्ट माध्वी गच्छ
१२३	श्रेष्ठ माध्वी गच्छ
१२४-१२६	अमाध्वी लक्षण
१२७-१२८	श्रेष्ठ माध्वी लक्षण
१२९	निकृष्ट माध्वी लक्षण
१३०-१३१	श्रेष्ठ माध्वी लक्षण
१३२-१३४	निकृष्ट माध्वी लक्षण

८ गणिविद्या प्रकीर्णक

१	आदि वाक्य
२	नौ प्रकार के बल
३-७	विहार के लिए शुभाशुभ तिथियाँ
८	शिष्य का निष्क्रमण
९	तिथियों के नाम
१०	दीक्षा के लिए श्रेष्ठ तिथियाँ
११	नौ नक्षत्रों में गमन करना शुभ
१२-१४	प्रस्थान के लिये उपयुक्त नक्षत्र
१५	निषिद्ध नक्षत्र
१६-२०	निषिद्ध नक्षत्रों का फल
२१	पादपोषण करने के नक्षत्र

- २२ रोगा मूत्र म निषिद्ध नग्न
 २३ ज्ञान वृद्धि करने वाच नग्न
 २४ मोक्ष के लिए ध्येष्ट नग्न
 २५ साध के लिये अनिष्ट नग्न
 २६ क रोगा क लिये ध्येष्ट नग्न
 ल गभी और वाचक १८ देने के लिये ध्येष्ट नग्न
 २७ स्थिर वाच के लिए ध्येष्ट नग्न
 २८ शीघ्र वाच सप्ताह के लिए ध्येष्ट नग्न
 २९ ज्ञान सप्ताह के लिए ध्येष्ट नग्न
 ३० ३१ मृदु वाचों के लिए ध्येष्ट नग्न
 ३४ ३५ तप प्रारम्भ करने के लिए ध्येष्ट नग्न
 ३६ सत्तारक ग्रहण करने के लिए ध्येष्ट नग्न
 ३७ ४० सध के वाचों के लिए ध्येष्ट नग्न
 ४१ ४७ करण के नाम गुप्त वाचों के लिए करण
 ४८ ५२ छाया महत्त
 ५३ ५५ गुप्त वाचों के लिए ध्येष्ट योग
 ५६ तीन प्रकार के शकुन
 ५७ ६० तीन प्रकार के शकुनो म विष जाने वाले वाच
 ६१ ६८ प्रशस्त और अप्रशस्त सप्त
 ६९ मिथ्या और सत्य निमित्त
 ७० ७३ तीन प्रकार के निमित्त
 ७४ निमित्त की मत्स्या
 ७५ ७६ प्रशस्त निमित्तों से प्राप्त काय
 ७७ ७८ अशस्त निमित्तों से नष्ट वाचों का निषेध
 ७९ ८१ नव बलों से उत्तरोत्तर बलवान
 ८२ उपसहार

६ देवेन्द्रस्तव प्रकीर्णक

- १ जिन वन्दना
 २ पति द्वारा भ० वर्धमान की स्तुति
 ३ पत्नि का स्तुति श्रवण
 ४-६ पति पत्नि की संयुक्त वर्धमान वंदना
 ७ वत्तीस देवेन्द्रों के सम्बन्ध में पत्नि की जिज्ञासा
 ८-१० वत्तीस देवेन्द्रों के सम्बन्ध में छः प्रश्न
 क- वत्तीस इन्द्र कौन २ से ?
 ख- वत्तीस इन्द्रों के रहने स्थान ?
 ग- वत्तीस इन्द्रों की स्थिति
 घ- वत्तीस इन्द्रों के अधिकार में भवन या विमान
 ङ- भवनों और विमानों की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, वर्ण आदि
 च- वत्तीस इन्द्रों के अवधि ज्ञान का क्षेत्र
 भवनवासी देवों का वर्णन
 ११-१६ बीस भवनेन्द्रों के नाम
 २०-२७ भवन संख्या
 २८-३१ भवनेन्द्रों की स्थिति
 ३२-४२ भवनेन्द्रों के नगर और भवन
 ४३-४४ त्रायस्त्रिंशक देव, लोकपाल, परिषद और सामानिक देव, सब इन्द्रों के सामानिक देव (संख्या में) समान हैं ।
 ४५ भवनेन्द्रों की अग्रमहीपियां
 ४६-५० भवनेन्द्रों के आवास स्थान और उत्पात पर्वत
 ५१-६५ भवनेन्द्रों का बल-वीर्य
 व्यन्तर देवों का वर्णन
 ६६-६७ आठ प्रकार के व्यन्तर देव

- ६८ ७२ व्यतर देवो के महद्विक सोनह इन्द्र
 ७३ न तीनो लोक मे व्य नरे द्रा के स्थान
 ७४ ७८ ख अधोलोक मे भवन न के स्थान
 ७४ ७८ व्यनरे द्रो के भवना का जय य मध्यम और उकृत
 विस्तार
 ७९ व्य नरे द्रा की स्थिति

ज्योतिषी देवो का वर्णन

- ८० ८१ पाच ज्योतिषी दव
 ८२ ज्योतिषी देवो के विमानों का स्थान
 ८३ ८६ धरणिमल मे ज्योतिषी देवा की ऊचाई
 ८७ ९२ ज्योतिषी देवा के मण्डल मण्डलों का आद्याम विष्कम्भ
 बाह्य परिधि
 ९३ ज्योतिषी देवा क विमानो को रहन करने वाले देवो
 की सख्या
 ९४ ९५ ज्योतिषी देवों की गति
 ९६ ज्योतिषी देवो की ऋद्धि
 ९७ सब आभ्यन्तर सब बाह्य सर्वोपरि और सबमे सीधे
 भ्रमण करने वाले नक्षत्र
 ९८ १०० तार न के अन्तर
 १०१ १०४ चन्द्र क साथ योग करने वाले नक्षत्र
 १०५ १०८ सूर्य के साथ योग करने वाले नक्षत्र
 १०९ ११० अम्बुद्वीप मे च द्र आदि पाच ज्योतिषी देव
 १११ ११२ सवण समुद्र मे
 ११३ ११४ घातकी मण्ड मे
 ११५ ११७ कालोद समुद्र मे

- ११८-१२० पुष्करवर द्वीप में चन्द्र आदि पांच ज्योतिषी देव
 १२१-१२३ पुष्करार्ध द्वीप में " "
 १२४-१२६ मनुष्य लोक में " "
 १२७ क- मनुष्य लोक के बाहर चन्द्र आदि पांच ज्योतिषी देव
 ख- ज्योतिषी देवों की गति का संस्थान
 १२८-१३६ ज्योतिषी देवों की पक्तियाँ
 १३७ क- चन्द्र सूर्य और मण्डलों में प्रदक्षिणावर्त गति
 ख- नक्षत्र और ताराओं के अवस्थित मण्डल
 १३८-१३९ ज्योतिषों देवों की गति का मनुष्यों पर प्रभाव
 १४०-१४१ चन्द्र सूर्य का ताप क्षेत्र
 १४२-१४६ चन्द्र की हानि वृद्धि का कारण
 १४७-१४८ चर स्थिर ज्योतिषी देव
 १४९-१५२ मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र सूर्य
 १५३ चन्द्र सूर्य का नक्षत्रों में योग
 १५४-१५६ क- चन्द्र सूर्य का अन्तर
 ख- सूर्य में सूर्य का अन्तर
 ग- चन्द्र में चन्द्र का अन्तर
 १५७-१५८ एक चन्द्र का परिवार
 १५९-१६२ ज्योतिषी देवों की स्थिति
 १६३-१६५ वारह देवलोकों के बाह्य इन्द्र
 १६६ अहमिन्द्र ग्रैवेयक देव
 १६७-१६८ ग्रैवेयक देवों में उपपात
 १६९-१७३ वारह देवलोकों की विमान संस्था
 १७४-१७६ विमानिक देवों की स्थिति
 १८०-१८६ ग्रैवेयक देव और अनुत्तर देवों की स्थिति
 १८७-१८८ विमानों के संस्थान
 १८९-१९० विमानों का आधार

१६१ १६३	देवताओं के लेखा
१६४ १६८	देवताओं की व्यवसाहना
१६९ २०२	देवताओं का प्रविचार (मथुन)
२०३	देवताओं की गंध
२०४ २१७	विमानों की अवस्थिति
२१८ २२०	भवनो और विमानों का अाप बहुत
२२१ २२४	अनुत्तर देवा का वणन
२२५ २३२	देवताओं की आहारे-छा और न्यामो-छवात
२३३ २४०	देवताओं के अवधिज्ञान का लेख
२४१ २४७	विमानों की ऊचाई आदि का वणन
२४८ २७३	देवताओं का सामान्य परिचय तथा प्रामादों का वणन
२७४ २७६	ईपत्प्रामादों का वणन
२८० ३०२	सिद्धों का वणन (सौपनामिक क समान)
३०३ ३०६	जिने = महिमा
३०७	उपमहार

१० मरण समाधि प्रकीर्णक

१	मरणपरण आदि वाक्य
२ ७	अमृतमृत मरण की विज्ञाना
८ ११	अमृतमृत मरण का कथन
१२ १४	आलोचन है यह आराधक है
१५	तीन प्रकार की आराधना
१६ ३५	द्वान आराधक आराधक का अ १ समार
३६ ३७	आहार करने के छ कारण
३८	आहार न करने के छ कारण
३९ ४	आराधक का नाम
४४ ४६	पट्टिन मरण के लिये उपदेश

- ४७ आराधना से शुद्धि
 ४८-५२ शल्य रहित की शुद्धि
 ५३-५४ संवृत और असंवृत की निर्जरा
 ५५ मौन और संयम में भाव शुद्धि
 ५६ विष्णु चारित्र्य में दुःख क्षय
 ५७-५८ निःशल्य होने से विष्णु चारित्र्य
 ५९ पाँच नविलिप्त भावनाओं का त्याग
 ६० एक असंविगष्ट भावना का समादर
 ६१ क- कन्दर्प भावना
 ६२ ग- कलिवपक भावना
 ६३ ग- अभियोगी भावना
 ६४ घ- आश्रयी भावना
 ६५ छ- सांगोही भावना
 ६६ असंविगष्ट भावना से शुद्ध
 ६७-७७ बाल मरण वर्णन
 ७८ निःशल्य आलोचक है वह आराधक है
 ७९-८५ आलोचना आदि चौदह प्रकार की विधि
 ८६-८७ क- आचार्य के गुण
 ख- अट्टारह स्थान
 ग- आठ स्थान
 ८८-८९ उपस्थापना के दस स्थान
 ९०-९३ आचार्य के गुण
 ९४-१२६ क- सशल्य है वह आराधक नहीं
 ख- निःशल्य है वह आराधक है
 ग- आलोचना के दस दोष
 घ- ज्ञान प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करने का उपदेश
 १२७-१२८ बारह प्रकार के तप का आचरण

पिण्ड निर्युक्ति विषय-सूचि

गाथा	१	ग- पिण्ड निर्जीव के भाव भेद
गाथा	२	पिण्ड शब्द के पर्याय
गाथा	३	पिण्ड के चार भवसा दर्शनप्रकार
गाथा	४-५	पिण्ड के द्वा-निर्देश
गाथा	६	नाम पिण्ड की व्याख्या
गाथा	७	गन्धपिण्ड की व्याख्या
गाथा	८-९	रूपपिण्ड के तीन भेद
		ग- प्रत्येक के दो भेद
गाथा	१०-११	क- पृथ्वीकाय के तीन भेद
		ग- अचित्त-मज्जीम-पृथ्वीकाय के दो भेद
गाथा	१२	मिश्र पृथ्वीकाय की व्याख्या
गाथा	१३	अचित्त-निर्जीव-पृथ्वीकाय
गाथा	१४-१५	अचित्त पृथ्वीकाय में प्रयोजन
गाथा	१६-१७	क- अप्पाय के वेद, तीन भेद
		ग- सञ्चित अप्पाय के दो भेद
गाथा	१८	मिश्र अप्पाय
गाथा	१९	मिश्र अप्पाय के सम्यन्ध में तीन विभिन्न मत
गाथा	२०	तीनों मतों का निराकरण
गाथा	२१	आगम सम्मत मत का प्रतिपादन
गाथा	२२	अचित्त अप्पाय की व्याख्या
गाथा	२३	अचित्त अप्पाय से प्रयोजन
गाथा	२४	क- वर्षाकाल के प्रारम्भ में वस्त्र धोने का विधान
		क- अन्य ऋतुओं में वस्त्र धोने का विधान

	ग	अय ऋतुभा म वस्त्र धोने म नमनेवाने दीप
गाथा २५		वर्षाकाल क प्रारम्भ म वस्त्र न धोने से लगनेवाले दीप
गाथा २६		धोने योग्य उपधि का परिमाण
गाथा २७		आधाय द्वार गान माधु क वस्त्र सभी ऋतुओं में धोने का विधान
गाथा २८		सदय समीप रखने योग्य उपधि की विधि
गाथा २९ ३०	क	अय वस्त्रों की परीक्षा
	ख	परीक्षा के पश्चात् धोने का विधान
गाथा ३१		वस्त्र परीक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न मत
गाथा ३२		नीष्ठादक लेने की विधि
गाथा ३३		वस्त्र धान का भ्रम
गाथा ३४		वस्त्र धोने की विधि
गाथा ३५ ३६	क	तेजस्वाय के तीन भेद
	ख	सचित्त तेजस्वाय क दो भेद
	ग	मिथ तेजस्वाय
गाथा ३७		अचित्त तेजस्वाय
गाथा ३८		वायुकाय क तीन भेद
गाथा ३९ ४०	क	सचित्त वायु के दो भेद
	ख	अचित्त वायुकाय
गाथा ४१	क	अचित्त वायुकाय की क्षेत्र एवं काम वर्गीक
	ख	मिथ वायुकाय
गाथा ४२		अचित्त वायुकाय स प्रयोजन
गाथा ४३	क	वनस्पतिकाय तीन भेद
	ख	अचित्त वनस्पतिकाय क दो भेद
गाथा ४४		मिथ वनस्पतिकाय
गाथा ४५		अचित्त वनस्पतिकाय

गाथा १६६	आधाकम खातिम स्वातिम का उगाहरण
गाथा १७० १७१	निष्ठित और कृत्त गन्ध का अर्थ
गाथा १७ १७६	कृत्त की छाया के सम्बन्ध में कल्प अक्षय्य का निबन्ध
गाथा १७७ १७८	निष्ठित और कृत्त की चतुर्भुजी
गाथा १७९	अतिव्याप्ति चार दोष
गाथा १८०	आधाकम आहार का लिए निबन्धन
गाथा १८१ १८२	क आधाकम आहार ग्रहण करने से अतिव्याप्ति दोष
	ख अतिव्याप्ति दोष का उगाहरण
गाथा १८३ १८४	आधाकम आहार ग्रहण करने से आधाकम व्याप्ति चार दोष
गाथा १८६	अक्षय्य आधाकम विषय ५ गार
गाथा १९०	आधाकम अभा य है
गाथा १९१ १९४	अक्षय्य और अभा य का उगाहरण
गाथा १९५	आधाकम आहार से स्पृष्ट आहार भी अक्षय्य है
गाथा १९६	आधाकम आहारवान् वाच से मुक्त आहार भी अक्षय्य है
गाथा १९७ २००	आप दम आहार का विधि पुत्रक और अविधि पुत्रक दोष
गाथा २०४ ६	अक्षय्य का आधाकम आहार का निबन्ध
गाथा २०७	आपदगति का पुत्र आहार अक्षय्य परिणाम
गाथा २०८	मुक्त आहार से न पर अक्षय्य आहारि जाया से मनुष्य कर्मों का कर्म
गाथा २०९ २११	मुक्त आहार से न पर अक्षय्य आहार विधाने

गाथा २१२-२१६	क- आज्ञाकेआराधक का सदोष आहार भी निर्दोष ख- आज्ञा विराधक का निर्दोष आहार भी सदोष.
गाथा २१७	आध्यात्म भोजी की दुर्गति का उदाहरण.
गाथा २१८	औद्देशिक आहार के दो भेद.
गाथा २१९	विभाग औद्देशिक के चारह भेद.
गाथा २२०-२२१	औष औद्देशिक का उदाहरण.
गाथा २२२-२२७	औष औद्देशिक आहार का ज्ञान.
गाथा २२८	विभाग औद्देशिक.
गाथा २२९-२३०	औद्देशिक आदि चार भेदों की व्याख्या.
गाथा २३१	क- उद्दिष्ट औद्देशिक के दो भेद. ख- प्रत्येक भेद के चार चार भेद.
गाथा २३२	अच्छिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार.
गाथा २३३	छिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार.
गाथा २३४-२३६	कल्प्य और अकल्प्य उद्दिष्ट आहार.
गाथा २३७	उद्दिष्ट औद्देशिक आहार.
गाथा २३८-२३९	कृत औद्देशिक आहार.
गाथा २४०	कर्म औद्देशिक आहार.
गाथा २४१-२४२	कल्प्य और अकल्प्य कर्म औद्देशिक आहार.
गाथा २४३	क- पूतिकर्म के चार भेद. ख- द्रव्य पूतिकर्म का उदाहरण. ग- भाव पूतिकर्म के दो भेद.
गाथा २४४	द्रव्य पूति की व्याख्या.
गाथा २४५-२४६	द्रव्य पूति का उदाहरण.
गाथा २४७-२४८	भाव पूति की व्याख्या.
गाथा २४९	क- भावपूति के दो भेद ख- वादर भावपूति के दो भेद
गाथा २५०	भक्त-पान पति की व्याख्या

गाथा ८६	द्रव्य और भाव उदगम का स्वल्प
गाथा ८७ ६०	द्रव्य उदगम का उदाहरण
गाथा ८१	क दान शुद्धि से चारित्र्य शुद्धि ख उदगम शुद्धि से चारित्र्य शुद्धि
गाथा ८२ ८३	सामान्य उदगम दोष
गाथा ८४	आध्यात्म सम्बन्ध २ चार द्वार
गाथा ८५	आध्यात्म के समानाधिकान्त
गाथा ८६	इस आधा की व्याख्या
गाथा ८७	भाव आत्मा की व्याख्या
गाथा ८८	द्रव्य अथ वस्तु की व्याख्या
गाथा ८९	भाव अथ वस्तु की व्याख्या
गाथा १०० १०२	आध्यात्म में अन्तर्भाव
गाथा १०१	आत्मज्ञ की व्याख्या
गाथा १०४	द्रव्य आत्मज्ञ और भाव आत्मज्ञ
गाथा १०५	चारित्र्य का नाश से ज्ञान दान का नाश तथा इस सम्बन्ध में निश्चय दृष्टि और व्यवहार दृष्टि
गाथा १०६	क द्रव्य आत्मज्ञ ख भाव आत्मज्ञ के दो भेद
गाथा १०७	भाव आत्मज्ञ की व्याख्या
गाथा १०८ ११०	क परकृत वस्तु का आत्मकमकल्प में परिणत होना ख कृत उपमा का विनयवचना से विरोध ग भावकृत से कम श्रेष्ठ
गाथा १११	आध्यात्म आहार ग्रहण करने से कम श्रेष्ठ
गाथा ११२	प्रतिभेदना प्रतिषेधना सवासन और अनुमोदन की कथना गुह्यता लपुना
गाथा ११३	प्रतिषेधना आदि चार द्वार
गाथा ११४ ११५	प्रतिषेधना की व्याख्या

गाथा ११६	प्रतिश्रवणा की व्याख्या.
गाथा ११७	संवास और अनुमोदन की व्याख्या
गाथा ११८-१२४	प्रतिसेवना और प्रतिश्रवणा के उदाहरण.
गाथा १२५-१२६	सवास का उदाहरण.
गाथा १२७-१२८	अनुमोदन का उदाहरण,
गाथा १२९-१३०	आधाकर्म शब्द के समानार्थक शब्दों की अर्थ विषयक चतुर्भंगी.
गाथा १३१-१३२	चतुर्भंगी के उदाहरण.
गाथा १३३-१३४	आधाकर्म शब्द के सवध में चतुर्भंगी.
गाथा १३५	आधाकर्म शब्द के समानार्थक शब्द.
गाथा १३६	आधाकर्म आहार ग्रहण करने से आत्मा की अधो-गति.
गाथा १३७	साधर्मिक के निमित्त बनाहुआ आहार आधा-कर्म है.
गाथा १३८	साधर्मिक के वारह भेद.
गाथा १३९-१४१	वारह प्रकार के लक्षण.
गाथा १४२-१४३	नाम साधर्मिक सवधी कल्प्य अकल्प्य विधि.
गाथा १४४	स्थापना साधर्मिक और द्रव्य साधर्मिक सवधी विधि.
गाथा १४५	क्षेत्र साधर्मिक संबन्धी कल्प्य अकल्प्य विधि.
गाथा १४६-१५६	प्रवचन आदि सात पदों के इकवीस भग और उनके उदाहरण.
गाथा १६०	आधाकर्म का स्वरूप समझाने के लिए अशन आदि की व्याख्या.
गाथा १६१	अशनादि सम्बन्धी चतुर्भंगी.
गाथा १६२-१६७	आधाकर्म अशन का उदाहरण
गाथा १६८	आधाकर्म पेय का उदाहरण.

गाथा १६१	आपाकम आग्निं स्वाग्निं का उन्नाहरण
गाथा १७० १७१	निग्निं और वृत्त गन् का अर्थ
गाथा १७० १७६	वृत्त की व्याख्या क मन्त्रार्थ म कल्प्य अर्थार्थ का निषेध
गाथा १७७ १७८	निग्निं और वृत्त का अनुभवी
गाथा १७९	अतिशयानि चार दोष
गाथा १८०	आपाकम आगार क विष्णु निमज्ज
गाथा १८१ १८२	क आपाकम आहार ग्रहण करने से अतिशयानि दोष
	ख अतिशयानि दोष का उन्नाहरण
गाथा १८३ १८८	आपाकम आगार ग्रहण करने से आशंभा आग्नि चार दोष
गाथा १८९	अकल्प्य आपाकम विषयक ५ गार
गाथा १९०	आपाकम अभाय है
गाथा १९१ १९४	अकल्प्य और अभा ३ क उन्नाहरण
गाथा १९५	आपाकम आहार म शृङ्ख आगार भी अकल्प्य है
गाथा १९६	आपाकम आगारवान वात म गुड आहार भी अकल्प्य है
गाथा १९७ २०३	आपाकम आहार का विधि पूरा और अतिवि पूरा मन्त्र
गाथा २०४ २	मन्त्र ३ ग १ गारम आगार का निषेध
गाथा २०७	आपाकम का मून आगार अ म परिणाम
गाथा २०८	गुड आगार गन् पर म अन्नाग्नि आगार
	वाथा २ अनुभवी कर्मों का वर्ण
गाथा २०९ २११	गुड आहार स्वामी की अनुड आगार धिने पर भा गार न

- गाथा २१२-२१६ क- आज्ञाके आराधक का सदोष आहार भी निर्दोष
 ग- आज्ञा विराधक का निर्दोष आहार भी सदोष.
 गाथा २१७ आधाकर्म भोजी की दुर्गति का उदाहरण.
 गाथा २१८ औद्देशिक आहार के दो भेद.
 गाथा २१९ विभाग औद्देशिक के चारह भेद.
 गाथा २२०-२२१ औष औद्देशिक का उदाहरण.
 गाथा २२२-२२७ औष औद्देशिक आहार का ज्ञान.
 गाथा २२८ विभाग औद्देशिक.
 गाथा २२९-२३० औद्देशिक आदि चार भेदों की व्याख्या.
 गाथा २३१ क- उदिष्ट औद्देशिक के दो भेद.
 ग- प्रत्येक भेद के चार चार भेद.
 गाथा २३२ अछिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार.
 गाथा २३३ छिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार.
 गाथा २३४-२३६ कल्प्य और अकल्प्य उदिष्ट आहार.
 गाथा २३७ उदिष्ट औद्देशिक आहार.
 गाथा २३८-२३९ कृत औद्देशिक आहार.
 गाथा २४० कर्म औद्देशिक आहार.
 गाथा १४१-२४२ कल्प्य और अकल्प्य कर्म औद्देशिक आहार.
 गाथा २४३ क- पूतिकर्म के चार भेद.
 ग- द्रव्य पूतिकर्म का उदाहरण.
 ग- भाव पूतिकर्म के दो भेद.
 गाथा २४४ द्रव्य पूति की व्याख्या.
 गाथा २४५-२४६ द्रव्य पूति का उदाहरण.
 गाथा २४७-२४८ भाव पूति की व्याख्या.
 गाथा २४९ क- भावपूति के दो भेद.
 ग- वादर भावपूति के दो भेद
 गाथा २५० भवत-पान पूति की व्याख्या

गाथा २५१	उपकरण पुनि क भय
गाथा २५२ २५६	मित्र भवन पान पुति
गाथा २५७ २६१	सुदमपुनि की व्याख्या
गाथा २६२	दो प्रकार के द्रव्य
गाथा २६३ २६५	सूत्रपुनि का परिहार गद्य नहीं है ।
गाथा २६६ २६८	द्रव्यपुति के कल्प्य लक्ष्य का विधान
गाथा २६९	आधारम और पुनि की भिन्नता
गाथा २७०	आधारम और पुतिकम का जानने की विधि
गाथा २७१	मित्रजन क भोन भेद
गाथा २७२	वाचस्पतिक मित्र जानने की विधि
गाथा २७३	वाचस्पतिक मित्र और साधु मित्र जानने की विधि
गाथा २७४ २७५	अकल्प्य मित्रजान की अपसरता का उदाहरण
गाथा २७६	वाचस्पतिक की विधि
गाथा २७७	स्थापना गद्य क दो भेद
गाथा २७८	परस्पर न स्थापना के अनेक भेद
गाथा २७९	स्वस्थान स्थापना और परस्वान स्थापना के दो भेद
गाथा २८०	दो प्रकार क द्रव्य
गाथा २८१ २८३	परस्पर स्थापित का उदाहरण
गाथा २८४	प्राश्रुतिका
गाथा २८५ क	प्राश्रुतिका के दो भेद
	ख प्रथम प्राश्रुतिका के दो दो भेद
गाथा २८६ २८८	प्राश्रुतिका के उदाहरण
गाथा २८९	प्राश्रुतिका आहार करनेवाले की शुद्धि
गाथा २९० २९३	प्राश्रुतिका की व्याख्या
गाथा २९४ २९६ क	प्राश्रुतिका के दो भेद
	ख वाचस्पतिक

- गाथा ३००-३०२ प्रगटीकरण के उदाहरण
- गाथा ३०३-३०४ कल्प्य और अकल्प्य प्रकाश करण
- गाथा ३०५ पात्र बुद्धि
- गाथा ३०६ क- प्रीतिकृत के दो भेद
 ग- प्रत्येक प्रीतिकृत के दो दो भेद
 ग- परद्रव्य प्रीत के तीन भेद
- गाथा ३०७ आत्मप्रीत के दो भेद
- गाथा ३०८ आत्मप्रीत दोष की व्याख्या
- गाथा ३०९-३११ क- परभाव प्रीत दोष की व्याख्या
 ग- परभाव प्रीत दोष के सहभावी तीन दोषों का उदाहरण
- गाथा ३१२-३१५ आत्मभाव प्रीत के अनेक भेद
- गाथा ३१६ प्रामित्य दोष के दो भेद
- गाथा ३१७-३२० लौकिक प्रामित्य दोष का उदाहरण
- गाथा ३२१ लोकोत्तर प्रामित्य के दो भेद
- गाथा ३२२ लोकोत्तर प्रामित्य का अपवाद
- गाथा ३२३ क- परिवर्तित दोष के दो भेद
 ग- प्रत्येक परिवर्तित दोष के दो दो भेद
- गाथा ३२४-३२६ लौकिक परिवर्तित का उदाहरण
- गाथा ३२७-३२८ लोकोत्तर परिवर्तित की व्याख्या
- गाथा ३२९ क- अभ्याहृत के दो भेद
 ग- प्रत्येक अभ्याहृत दोष के दो दो भेद
- गाथा ३३० नो निशीथ अभ्याहृत के भेदानुभेद
- गाथा ३३१-३३२ जलमार्ग अभ्याहृत के अनेक भेद
- गाथा ३३३-३३५ क- स्व ग्रामे अभ्याहृत के दो भेद
 ग- नो गृहांतक अभ्याहृत के अनेक भेद
- गाथा ३३६ निशीथ अभ्याहृत की व्याख्या

गाथा	२५१	उपकरण पुनि क भय
गाथा	२५२ २५६	मिथ्र भवन-पान पुनि
गाथा	२५७ २६१	मूढमपुनि की व्याख्या
गाथा	२६२	दो प्रकार क वाय
गाथा	२६३ २६४	मूढमपुनि का परिहार दहन नहीं है ।
गाथा	२६६ २६८	इष्टपुति के कल्प्य अकल्प्य का विमान
गाथा	२६६	आधाकर्म और पुति का भिन्नता
गाथा	२७०	आधाकर्म और पुनिकर्म क जानन की विधि
गाथा	२७१	मिथ्रज्ञान क तान २३
गाथा	२७२	मात्राधिक मिथ्र जानन की विधि
गाथा	२७३	पालडा मिथ्र और मानु मिथ्र जानने की विधि
गाथा	२७४ २७५	अकल्प्य मिथ्रज्ञान की व्यवहरता का उदाहरण
गाथा	२७६	पात्रगुद्धि की विधि
गाथा	२७७	स्थापना दास के दो भेद
गाथा	२७८	परस्मान स्थापना के अनेक भेद
गाथा	२७९	स्वस्मान स्थापना और परस्मान स्थापना के दो भेद
गाथा	२८०	दो प्रकार क इन्द्र
गाथा	२८१ २८३	परपरा स्थापिन का उदाहरण
गाथा	२८४	प्राभृतिका
गाथा	२८५ क	प्राभृतिका के दो भेद
	ख	प्रत्येक प्राभृतिका क दो दो भेद
गाथा	२८६ २८७	प्राभृतिका क उदाहरण
गाथा	२८१	प्राभृतिका आहार करनेवान की दुषति
गाथा	२८२ २८७	प्राभृतिकरण की व्याख्या
गाथा	२८८ २८९ क	प्राभृतिकरण के दो भेद
	ख	पात्र गुद्धि

गाथा ३६३	अविशोधि कोटि का उद्गम
गाथा ३६४	अविशोधि कोटि उद्गम के दो भेद
गाथा ३६५-३६६	विशोधिकोटि उद्गम के चार भेद
गाथा ३६७-४००	विशोधि कोटि की चतुर्भंगी
गाथा ४०१	क- कोटिकरण के दो भेद
	ख- उद्गम कोटि के छः भेद
गाथा ४०२	विशोधि कोटि के अनेक भेद
गाथा ४०३	उद्गम और उत्पादन की भिन्नता
गाथा ४०४	क- उत्पादन के चार भेद
	ख- द्रव्य उत्पादना के तीन भेद
	ग- भाव उत्पादना के सोलह भेद
गाथा ४०५	सचित्त द्रव्योत्पादना
गाथा ४०६	क- अचित्त द्रव्योत्पादना
	ख- मिश्र द्रव्योत्पादना
गाथा ४०७	भाव उत्पादना के दो भेद
गाथा ४०८-४०९	अप्रशस्त भावोत्पादना के सोलह भेद
गाथा ४१०	क- पाच प्रकार की धात्रिया
	ख- प्रत्येक धात्री के दो दो भेद
गाथा ४११	धात्री शब्द की व्युत्पत्ति
गाथा ४१२-४२०	क्षीर धात्री श्लेष का वर्णन
गाथा ४२१-४२७	मज्जन धात्री आदि श्लेष धात्री श्लेष
गाथा ४२८	दूती श्लेष के दो भेद
गाथा ४२९	क- प्रत्येक दूती श्लेष के दो दो भेद
	ख- छन्न दूती के दो भेद
गाथा ४३०	स्वग्राम और परग्राम प्रकट दूती
गाथा ४३१	स्व ग्राम-परग्राम लोकोत्तर छन्न दूती
गाथा ४३२	स्व ग्राम लोकोत्तर-लोकोत्तर छन्न दूती

गाथा ४३३-४३४	प्रमट परधाम दूती का उदाहरण
गाथा ४३५	निमित्तदोष
गाथा ४३६	निमित्तदोष का उदाहरण
गाथा ४३७	आजीविका के पाच भेद
गाथा ४३८	पाच भेदों की व्याख्या
गाथा ४३९ ४४०	क- धानि उपजीविका ख- जानि उपजीविका का उदाहरण
गाथा ४४१	कुल आजीविका
गाथा ४४२	शिष्य आजीविका
गाथा ४४३	पाच प्रकार के वनीषक
गाथा ४४४	वनीषक दम्प का निरुक्त
गाथा ४४५	पाच प्रकार के धमन
गाथा ४४६	धमन वनीषक
गाथा ४४७	धमन वनीषक की दोष कथना
गाथा ४४८	ब्राह्मण वनीषक
गाथा ४४९	कृषण वनीषक
गाथा ४५०	अनियि वनीषक
गाथा ४५१ ४५२	श्वान वनीषक
गाथा ४५३	ब्राह्मण वनीषक आदि की दोष कथना
गाथा ४५४	काकादि वनीषक
गाथा ४५५	अपाय प्रणमा दास
गाथा ४५६	क- चिरिन्मा दोष ख- चिरिन्मा के तीन भेद
गाथा ४५७ ४५८	चिरिन्मा के तीनों के भेदों की व्याख्या
गाथा ४५९	चिरिन्मा में दोषों की सम्भावना
गाथा ४६१	बोपादि पाच प्रकार के विण्ड
४६२-४६४	बोपरिण्ड का उदाहरण

गाथा ४६५-४७३	मानपिण्ड का उदाहरण
गाथा ४७४-४८०	मायापिण्ड का उदाहरण
गाथा ४८१-४८३	तोमपिण्ड का उदाहरण
गाथा ४८४	क- संस्तव के दो भेद
	ख- प्रत्येक भेद के दो दो भेद
गाथा ४८५	पूर्व संस्तव और पश्चात् संस्तव
गाथा ४८६	परिचय करने की विधि
गाथा ४८७	पूर्व संस्तव का उदाहरण
गाथा ४८८	पश्चात् संस्तव का उदाहरण
गाथा ४८९	पूर्व-पश्चात् संस्तव के दोष
गाथा ४९०	वचन संस्तव की व्याख्या
गाथा ४९१	पूर्व संस्तव की व्याख्या
गाथा ४९२	पश्चात् संस्तव की व्याख्या
गाथा ४९३-४९६	विद्या और मंत्र दोष के उदाहरण
गाथा ५००	क- चूर्ण योग और मूलकर्म दोष
	ख- चूर्ण योग और मूलकर्म के उदाहरण
गाथा ५०१	चूर्ण दोष
गाथा ५०२	योग के दो भेद
गाथा ५०३-५०५	आहार्य पाद-लेपन योग का उदाहरण
गाथा ५०६-५०७	मूलकर्म का उदाहरण
गाथा ५०८-५०९	विवाह दोष का उदाहरण
गाथा ५१०-५११	गर्भपात का उदाहरण
गाथा ५१२	मूलकर्म दोष की दोष रूपता
गाथा ५१३	ग्रहणपणा की विवृद्धि
गाथा ५१४	गवेपणा और ग्रहणपणा की भिन्नता का कथन
गाथा ५१५	क- संकित और अपरिणत ए दो दोष साधु स्वयं लगाता है

- गाथा ५३५ . तेजस्काय वायुकाय और त्रसकाय अक्षित का निषेध
- गाथा ५३६ ख- प्रारम्भ के तीन भंग अशुद्ध और एक भंग शुद्ध
- गाथा ५३७ क- अचित्त पृथ्वीकाय अक्षित की चतुर्भंगी
- ख- अगर्हित का ग्रहण और गर्हित का निषेध
- गाथा ५३८ अगर्हित अक्षित का निषेध
- गाथा ५३९ गर्हित अक्षित का निषेध
- गाथा ५४० -क- निक्षिप्त के दो भेद
- ख- प्रत्येक भेद दो-दो भेद
- गाथा ५४१ पृथ्वीकाय अक्षित के ६ भेद
- इसी प्रकार जेप पांच कायअक्षित के ६-६ भेद
- सब मिलकर षट्काय अक्षित के भेद
- गाथा ५४२-५४३ नचित्त पृथ्वीकाय अक्षित के भंगों का वर्णन
- गाथा ५४४ सचित्त पृथ्वीकाय अक्षित के ४३२ भांगे बनाने की विधि
- गाथा ५४५-५४८ कल्प्य और अकल्प्य अक्षित सचित्त
- गाथा ५४९ तेजस्काय अक्षित के सात भेद
- गाथा ५५०-५५१ सात भेदों की व्याख्या
- गाथा ५५२-५५३ अचित्त तेजस्काय अक्षित के यतनापूर्वक लेने की विधि
- गाथा ५५४-५५५ क- सोलह भंगों का विवरण
- ख- प्रथम भग-शुद्ध और जेप भंग अशुद्ध
- गाथा ५५६ क- अत्युष्ण इक्षुरस आदि लेने से दो प्रकार की विगद्यना
- ग- वायुकाय निक्षिप्त के दो भेद
- गाथा ५५७ क- वनस्पतिकाय और वनकाय निक्षिप्त का वर्णन
- ख- अनंतर निक्षिप्त लेने का निषेध

	ग	परम्पर निमित्त नेने का नियम
गाथा ५५८		सचित्त अचित्त और मिश्र पिहित की चतुर्भंगी
गाथा ५५९		अवान्तर भग ४३२ बनावे की विधि
गाथा ५६०-५६१		अनन्तरा पिहित और परंपरा पिहित का वजन
गाथा ५६२		अचित्त पिहित की चतुर्भंगी
गाथा ५६३	घ	सचित्त अचित्त मिश्र और साधारण से सहन
	ग	तीन चतुर्भंगी
गाथा ५६४		चार सौ बत्तीस ब्रह्मा नर भग
गाथा ५६५		सहन की व्याख्या
गाथा ५६६		सचित्त अचित्त की चतुर्भंगी
गाथा ५६७		आह और शुष्क की चतुर्भंगी
गाथा ५६८		अन्न और अदिक की चतुर्भंगी
गाथा ५६९-५७१		कल्प और अकल्प सहन की चतुर्भंगी
गाथा ५७२-५७७		दायक के चारोंप भद
गाथा ५७८	क	अवसाद से ४५ दायका से सेना
	ख	२४ दायका से अवसाद से भी न सना
गाथा ५७९		वातक से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८०		कृद्ध से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८१		मत्त और उ मत्त से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८२		कम्पित हाथवागो से भोजन उबर घस्त से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८३		अव और गतिन कृष्ट वात से आहारान्त्रिक लेने का निषेध
गाथा ५८४		पादुका पहने हुए से बड़ से और हस्तपाद छिन से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८५		नपुंसक क हाथ से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८६		सभिषी और बालवत्सा से आहारादि लेने का

गाथा ५८७	भोजन करती हुई से तथा मंथन करती हुई से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८८	आठ प्रकार की निषेध दान्त्यों से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८९-५९०	पाच प्रकार की दान्त्यों से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५९१	पट्टकाय व्यग्रहस्ता से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५९२	इस संवद में एक आचार्य का मत
गाथा ५९३	दो प्रकार की दान्त्यों से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५९४	साधारण तथा चोरी की वस्तु लेने का निषेध
गाथा ५९५	प्राभृतिका अवाय और स्थापित द्रव्य लेने का निषेध
गाथा ५९६	उपयोग युक्त और उपयोग रहित दाता की व्याख्या
गाथा ५९७-६०४	निषिद्ध दाताओं से अपवाद में आहारादि लेने का विधान
गाथा ६०५-६०८	मित्र द्रव्यों के अनेक भेद
गाथा ६०९	क- अपरिणत द्रव्य के भेद
	ख- द्रव्य अपरिणत के ६ भेद
गाथा ६१०	द्रव्य अपरिणत की व्याख्या
गाथा ६११	भाव अपरिणत दाता
गाथा ६१२	भाव अपरिणत ग्रहिता
गाथा ६१३-६२२	क- लेपकृत द्रव्य लेने का विधान
	ख- लेपकृत द्रव्य के संबंध में प्रश्नोत्तर

गाथा ६२३	अनेपथाल इव्य
गाथा ६२४	अप लपथाले इव्य
गाथा ६२५	अहु लपथाले इव्य
गाथा ६२६	समृष्ट असमृष्ट भावशेष और निरवशेष के सात भेद
गाथा ६२७	क छान्ति की तीन अनुसंगी
	ख चार सौ वत्तीस अथवा तरभग
गाथा ६२८	छान्ति ग्रहण करने से समनेवाले दोष
गाथा ६२९	क धार्मिकता के चार विशेष
	ख द्रव्य धार्मिकता का उन्नाहरण
	ग भाव धार्मिकता के पांच भेद
गाथा ६३० ६३३	द्रव्य धार्मिकता के दो उदाहरण
गाथा ६३४	धार्मिकता का उपदेश
गाथा ६३५	ग भाव धार्मिकता के दो भेद
	ख अग्रगति भाव धार्मिकता के पांच भेद
गाथा ६३६	क समीक्षा के दो भेद
	ख द्रव्य समीक्षा के दो भेद
गाथा ६३७ ६३८	सात समीक्षा की व्याख्या
गाथा ६३९	भाव समीक्षा की व्याख्या
गाथा ६४० ६४१	द्रव्य समीक्षा के अष्टांग
गाथा ६४२ ६४३	आहार का प्रमाण
गाथा ६४४ ६४५	प्रमाण नीचे के पांच भेद
गाथा ६४६	अल्पनाएँ के गुण
गाथा ६४७	निः अति की व्याख्या
गाथा ६४८	मिनाहार की व्याख्या
गाथा ६४९	कात के तीन भेद
गाथा ६५० ६५१	गीतिका उन्वयान और साधारण कात के

	आहार और पानी के विभाग
गाथा ६५५	सांगार और सधूम दोष
गाथा ६५६-६५६	अगार और घूम की व्याख्या,
गाथा ६६०	आहार करने का प्रयोजन
गाथा ६६१	क- आहार करने के ६ कारण
	ख- आहार न करने के ६ कारण
गाथा ६६२-६६४	आहार करने के ६ कारणों का विवेचन
गाथा ६६५	आहार त्यागने का उपदेश
गाथा ६६६-६६८	आहार त्यागने के ६ कारणों का विवेचन
गाथा ६६९	एषणा के सैंतालीस दोष
गाथा ६७०-६७१	उपसहार

जस्सारद्धा एए कहवि समत्तंति विग्घरहियस्स ।
 सो लक्खिज्जइ भव्वो, पुव्वरिसी एवं भासंति ॥
 तम्हा जिणपण्णत्ते, अणंतगमपज्जवेहि संजुत्ते ।
 सज्झाए जहाजोगं, गुरुपसाया अहिज्झज्जा ॥



महानिशीह-सुयक्खंध

(महानिशीथ-श्रुतस्कन्ध)

यह ग्रंथ अभी मुद्रित नहीं हुआ है। मुनिराज श्री पुण्यविजयजी के द्वारा तैयार की गयी प्रेम-कापी पर से यह विवरण तैयार किया गया है।

प्रथम अध्ययन 'सल्लुद्धरण'

पृष्ठ १ शास्त्र का प्रयोजन

आरम्भ में तीर्थ और अर्हंतों को नमस्कार। तत्पश्चात् 'सुयं' में वाक्य से विषय प्रारम्भ। तुरन्त ही ऐसा कथन कि छद्मस्थ साधु और साध्वी महानिशीथ श्रुतस्कन्ध के अनुसार आचरण करने वाले हों तो एकाग्रचित्त होकर आत्मा में अभिरमण करते हैं।

पृ० २ वैराग्य-वर्धक गाथाएँ जिनमें निःशल्यता प्राप्त करने पर भार दिया है

शार्दूल विक्रीडित छन्द का प्रयोग-(गाथा १२)

पृ० ४ 'हय नाण' इत्यादि आवश्यक निर्युक्ति को उद्धृत गाथाएँ (गाथा ३५ इत्यादि)

पृ० ६ शास्त्रोद्धार की विधि प्रतिमा-वंदन और श्रुतदेवता विद्या का लेखन—इससे मंत्रित होकर सोने पर स्वप्न की सफलता

पृ० ६ निःशल्य होकर सबको क्षमापना करना।

पृ० ७ इससे केवल की भी प्राप्ति (गाथा ६४)

पृ० ७ दूषित आलोचना के दृष्टांत (गाथा ७३ आदि)

पृ० १० मोक्ष प्राप्त करनेवाली नि गत्य धमनिया के नाम

पृ० १४ अपने अपराध छुपाने वाला की दुवृत्ति

पृ० १९ दशवर्कालिक की गाथा (गाथा १६६)

प्रथम अध्ययन के अन्त में मैंने इस अच्छा नहीं लिखा ऐसा मुझ पर दोष नहीं दिया और क्योंकि मेरे समक्ष जो आत्मा प्रति है पर बुद्धि है । ऐसा लिखा है ।

द्वितीय अध्ययन 'कम्मविद्यागवागरण'

प्रथम उद्देश (पृ० २० में सम्पूर्ण हुआ है)

(द्वितीय से पंचम उद्देश तक पर्व में सुप्त सम्पूर्ण हुआ है)

पृ० २० जीवा का दुःख वचन

छठा उद्देश

पृ० २६ शारीरिक और अन्तर दुःखों का वचन । आश्विनशर के विशेष से दुःखों का वचन

सातवाँ उद्देश

पृ० २६ स्त्रीवचन का उद्देश

स्त्रीवचन सम्मधी नीतम महावीर संवा

पृ० ३३ अथमादि पुण्या की स्त्री अभिवादा तथा शिवियों ॥ काम गण का वचन

पृ० ४२ परिशुद्ध नीव

अमण और आवाक धम के दो पद्य

तृतीय अध्ययन (तृतीय उद्देश)

पृ० ४६ प्रारम्भ में लिखा है कि उपर्युक्त दोनों अध्ययनों का समावेश माध्याम वाचना में है

दशवर्काल के धार अध्ययन (३९) योग्य के लिए ही है ।

अयोग्य व्यक्ति के लिए नहीं है

- पृ. ४६ इन चार अव्ययनों के लिए निर्दिष्ट तपस्या
- पृ. ५० सांगोपांग श्रुत का सार—ये चार अव्ययन हैं
- पृ. ५० मभी श्रेय में विघ्न होता है अतएव मंगल करणीय हैं.
- पृ. ५१ मंत्र, तंत्र, आदि अनेक विद्याओं के नाम
- पृ. ५२ पांच मंगलों के उपधान का प्रश्न
- पृ. ५४ उपधान विधि
- पृ. ५६ नमस्कार सूत्र के पदादि
(देखिए “नमस्कार स्वाध्याय” पृ० ६०, ८१) (यह पुस्तक बंबई से प्रकाशित है)
- पृ. ५७ नमस्कार सूत्र का अर्थ
- पृ. ६३ जिनपूजा की चर्चा
- पृ. ६८ तीर्थंकर स्तव में वर्धमान की कथा के प्रमंगों का संक्षेप
- पृ. ७० पंचमंगल की नियुक्ति भाष्य और चूर्ण का उल्लेख
- पृ. ७० “ये सब व्युत्तिन्न हो गये थे। वज्रस्वामी ने उद्धार कर मूल सूत्र में लिया” है। “आचार्य हरिभद्र द्वारा खंडित प्रति के आधार से उद्धार हुआ है चुटित मानूम पड़े तो दोष नहीं देना।”—ऐसा उल्लेख है
- पृ. ७१ सिद्धसेन दिवाकर, बृद्धवादी, (वृद्धवादी), जङ्गलसेन, (यक्षसेन) देवगुप्त, यज्ञोवर्धन क्षमाश्रमण के शिष्य रविगुप्त, नेमिचन्द्र, जिनदाम गणि क्षमाश्रमण, सत्यश्री प्रमुख युग-प्रधान आचार्यों द्वारा महानिशीथ का बहुत मान हुआ है
- पृ. ७१ पंचनमस्कार के पश्चात् इरियावहिय आदि कहना—
ऐसा निर्देश—
- पृ. ७४ क्रम से द्वादश अंगों की भी तपस्या विधि और उससे लाभ इत्यादि
(पृ० ८६ में तृतीय उद्देश समान ऐसा उल्लेख आता है, किन्तु प्रथम-दूसरे के विषय में कोई निर्देश नहीं है)

- पृ ८६ यहाँ लिखा है कि यहाँ अक्षरप्रति भ्रष्ट है अतएव तम्य
यहाँ अन्य वाचनार्थों से संशोधन करें
- पृ ८६ अत्र न लिखा है—तद्व्यभवा ॥ उद्देश १६ ॥

चतुर्थ अध्ययन

- पृ ९६ पुनः के दृष्टा तन्त्र सुधति का वधान
- पृ ९९ माधुओं के विनयेन विधिविचारों की गणना
- पृ ९८ प्रश्न-वाक्य का वृद्ध विवरण का उल्लेख
- पृ १०० निविदाचार के समयन में दोष
निविदाचार में अनमय
- पृ १०२ चौथे अध्ययन का भार यह है कि कुशीन समर्थ से अनन्त
संसार होना है और कुशीन समर्थ छोड़नेवाले की मिडि
मिलती है ।
- पृ १०२ हरिभट्ट का मत है कि चौथे अध्याय के विनये ही वाचनार्थ
प्रज्ञा गाय नहीं है परन्तु वृद्धवाद के अनुसार हम सब
नहीं करनी चाहिए । स्थानाद आदि में वही भी हम
अध्ययनेन न मूल वाचन का समर्थन नहीं किया गया है
यह भी हरिभट्टाचार्य ने लिखा है ।

पंचम अध्ययन पञ्चमीयसार

- पृ १०३ मन्त्र में कैसे रहना—दमनी चर्चा
- पृ १०६ मन्त्र की मर्यादा दुर्गात्म आचार्य नष्ट रहेगी ।
- पृ १०६ मन्त्र के स्वल्प का वजन और तत्कालीन निविदाचारों का
उल्लेख
- पृ ११६ अन्तिम होनेवाले माधु मादकी भावना और आदिता इन धार
द्वारा मर्यादा गान्त ।
- पृ ११७ मन्त्रधन (मन्त्रधन) की आत्म तत्कालीन बताया गया है
- पृ ११८ सीधवाचा में माधु का अन्वय

- पृ० १२६ कलगी के ममप्र में “सिरिष्पभ” अनगार का प्रादुर्भाव
 पृ० १२७ योग्य-अयोग्य अणगार का विवेक
 पृ० १३३ दस आश्चर्य का वर्णन
 पृ० १३६ द्रव्यस्तव करने वाला असयत
 पृ० १३८ जिनालयों का संरक्षण आवश्यक
 पृ० १३९ उमके जीर्णोद्धार संबंधी चर्चा,
 पृ० १३९ सावद्याचार्य का महानिशीथ की ६३वीं गाथा की व्याख्या करने में हिचकिचाना । कारण यह था कि किसी नमय आर्या ने नमस्कार करते समय उनका स्पर्श किया था ।
 पृ० १४२ उत्सर्ग-अपवाद मार्ग का अयोग्य के समक्ष निरूपण करने के कारण उन्होंने (सावद्याचार्य ने) अनंत ससार बाँधा तथा उनके अनेक भव

षष्ठ अध्यायन—गीयत्थ विहार

- पृ० १४७ दशपूर्वी नदिपेण वेश्यागृह मे
 पृ० १४८ इसमे दोष-मेवन होने पर गुरु को लिंग (वेप) सौंप देना और प्रायश्चित्त करना—इसका समर्थन
 पृ० १४२ प्रायश्चित्त की विधि
 पृ० १४५ मेघमाला का दृष्टांत
 पृ० १४६ आरंभ-त्याग का उपदेश
 पृ० १४७ आरंभ-त्याग की अशक्यता के विषय में ईसर का दृष्टान्त,
 पृ० १४८ ईसर गीसालक हुआ यह निरूपण
 पृ० १४९ रज्जा आर्यिका का दृष्टांत
 प्राशुत पानी की निंदा के कारण दुर्विपाक
 पृ० १६३ अगीतार्य के विषय में लक्षणाया का दृष्टान्त

द्वितीय चूलिका

- पृ० १७७ विधिपूर्वक धर्माचरणे की प्रशंसा

- १८१ चैत्रवदन भवनी प्रायश्चित्त
स्वाध्याय मे वाषा देन वावे क लिप प्रायश्चित्त
- १८३ प्रतिक्रमण तथा पञ्चव्येष्टा के प्रायश्चित्त
- १८४ पाण्डितायिका मे तथा मुहणनग के प्रायश्चित्त
- १८४ ज्ञानब्रह्म सम्बन्धी प्रायश्चित्त
- १९० भिला सम्बन्धी प्रायश्चित्त
- १९० धर्मो मतल ' गथा
- १९४ प्रायश्चित्त सूत्र के बिन्दु की चर्चा
- १९८ विद्या मन्त्रों की चर्चा वा जगदि से रक्षा करना है
- २०१ प्रायश्चित्त विशेष की चर्चा
- २०२ आलाचनादि प्रायश्चित्त
- २०८ हिमा सम्बन्धी मुमह की चर्चा
- २२० यकठारहित रहने मे मसार के विषयी मे राजकुम बालिका की चर्चा
- २३३ मुमह सिद्धि श्री का पुत्र वा —यह विदेश
- २४१ २८१ लि केमि से समाप्ति । २४२४ अन्त्याप



